THE BOOK WAS DRENCHED

Brown Colour Book

UNIVERSAL LIBRARY
OU_178531
UNIVERSAL LIBRARY

शब्दसंख्या ११,३३५

देवनागरी

उर्दू-हिन्दी कोश

सम्पादक

रामचन्द्र वर्मा

सहायक सम्पादक 'हिन्दी-शब्द-सागर' और

सम्पादक 'संक्षिप्त शब्द सागर'

[संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण]

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

सर्वोदय साहित्य मन्दिर

प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, बम्बई नं० ४.

मुद्रक—
कन्हैयालाल शाह
ओरिएंट प्रिंटिंग हौस,
नवीवाडी, बम्बई २

संकेताक्षरोंकी सूची

अ०=अरबी भाषा
अनु०=अनुकरण शब्द
अल्पा०=अल्पार्थक प्रयोग
अव्य०=अव्यय
इब०=इबरानी भाषा
उप०=उपसर्ग
क्रि०=क्रिया
क्रि०अ०=क्रिया अकर्मक
क्रि०स०=क्रिया सकर्मक
तु०=तुरकी भाषा
दे०=देखो
देश०=देशज
पुं०=पुल्लिंग
पुर्त्त०=पुर्त्तगाली भाषा
प्रत्य०=प्रत्यय
फा०=फारसी भाषा
बहु०=बहुवचन
भाव०=भाववाचक
मि०=मिलाओ
मुहा०=मुहावरा
यू०=यूनानी भाषा
यौ०= यौगिक अर्थात् दो या अधिक शब्दोंके पद
वि०=विशेषण
व्या०=व्याकरण
सं०=संस्कृत
स०=सकर्मक
सर्व०=सर्वनाम
स्त्रि०=स्त्रियोंद्वारा प्रयुक्त
स्त्री०=स्त्री-लिंग
हिं०=हिन्दी भाषा

भूमिका

किसी भाषाके शब्द-कोश उसके साहित्यकी सर्वांगीण उन्नतिमें वही स्थान रखते हैं जो किसी राज्यकी उन्नति और विकासमें उसका अर्थिक विभाग रखता है। जिस प्रकार किसी राज्यकी सुदृढ़ता, उसके प्रत्येक विभागकी स्वास्थ्यपूर्ण प्रगति, शक्ति और आधार बहुत कुछ उसके कोशकी अवस्थापर अवलम्बित है उसी प्रकार किसी भाषाका विकासकर निर्माण, उसके समस्त अंगोंकी ताज़गी, सुडौलपन, चिरकालस्थिरता और विस्तार बहुत कुछ उसके शब्द-भाण्डारों या शब्द-कोशोंपर ही निर्भर करता है। किसी भाषाकी वास्तविक स्थिति और उन्नति जितनी पूर्णतासे एक शब्द-कोशमें प्रतिबिम्बित होती है, उतनी भाषाके किसी अन्य क्षेत्रमें नहीं। समस्त प्रकाशमय ज्ञान शब्दरूप ही है और किसी भाषाके समस्त शब्दोंके रूपका परिचय उसके कोशोंद्वारा ही मिलता है, इसलिए किसी भाषाके स्वरूपका ज्ञान जितनी आसानीसे एक कोशद्वारा हो सकता है उतना किसी अन्य साधनसे नहीं हो सकता।

कोश लिखनेकी कला किस प्रकार प्रारम्भ हुई,—भिन्न भिन्न भाषाओंमें पहले पहल कोश किस प्रकार तैयार किये गये,—इस कलाका विस्तार किन रेखाओंपर हुआ और होता जा रहा है, यदि इसका क्रमबद्ध इतिहास लिखा जाय तो जहाँ वह बहुत मनोरंजक होगा वहाँ उसके द्वारा हमें उन सिद्धान्तों और पद्धतियोंका भी परिचय प्राप्त हो सकेगा जिनके आधारपर इसका निर्माण और विकास हुआ है। हमारे यहाँ संस्कृतके जो प्राचीन कोश मिलते हैं

उनमें किसी शब्दका पता लगानेके लिए सबसे पूर्व उसके अन्तिम अक्षरको देखना पड़ता है। इस प्रकारके कोशोंके अन्तमें शब्दोंकी कोई अनुक्रमणिका नहीं है और न कोई उसकी विशेष आवश्यकता प्रतीत होती है। इन कोशोंमें वर्णमालाके क्रमसे शब्दोंको इस प्रकार लिया गया है कि वे जिस शब्दके अन्तमें आते हैं उनको अक्षर-क्रमसे लिखा गया है। इनमें वर्णक्रमसे पहले एक अक्षरके शब्द, फिर दो अक्षरके, फिर तीन अक्षरके, और फिर इसी प्रकार शब्दोंका उल्लेख किया गया है। जहाँ एकाक्षर शब्द समाप्त हो जाते हैं वहाँ नीचे उनकी समाप्ति लिख दी जाती है और द्व्यक्षर-शब्दोंके प्रारम्भकी सूचना दे दी जाती है और आगे भी इसी प्रकार किया जाता है। उदाहरणार्थ, यदि आप 'अमृत' शब्दको देखना चाहें तो वह आपको 'त' के त्र्यक्षरोंके 'अ' में मिलेगा। मेदिनी कोश, विश्वप्रकाश कोश, अनेकार्थ-संग्रह इसी प्रकारके कोश हैं। अमर कोशमें इससे भिन्न पद्धतिको अख्तियार किया गया है। उसमें विषयानुसार शब्दोंका विभाग और क्रम रखा गया है और बादमें वर्णमालाके अक्षर-क्रमसे शब्दोंकी सूची दे दी गई है जिससे सुगमताके साथ शब्दोंका पता लगाया जा सकता है।

यह तो हुई संस्कृतके प्राचीन कोशोंकी कथा। इसी तरह अन्य भाषाओंके कोशोंकी भिन्न भिन्न पद्धतियाँ हैं। इस समय कोश-निर्माणकी जिस पद्धतिका अद्भुत विकास हुआ है उसका नाम है ऐतिहासिक पद्धति। इसके अनुसार प्रत्येक शब्दका सिलसिलेवार पूरा इतिहास देना पड़ता है। अक्षर-क्रमसे पहले शब्द, फिर उसका उच्चारण, उसके बाद उसकी व्युत्पत्ति या वह स्रोत जिसके कारण शब्दका प्रादुर्भाव हुआ, फिर उसके अर्थ पूर्ण उद्धरणोंके साथ इस प्रकार दिये जाते हैं कि अमुक सन्‌में इस शब्दका यह अर्थ था, फिर अमुक सन्‌में यह हुआ,—इस तरह क्रमशः सामयिक निर्देश देते हुए उसके समस्त अर्थोंका प्रामाणिक प्रदर्शन किया जाता है। एक शब्द भाषामें किस समय प्रविष्ट हुआ, किस प्रकार प्रविष्ट हुआ, और उसके अर्थोंका विकास किस समय और क्या हुआ, इसका पूर्ण विस्तार और प्रमाणोंके द्वारा सरलताके साथ विवेचन करनेका प्रयत्न किया जाता है जिसमें उस शब्दके स्वरूपका स्पष्टता और विस्तारके साथ परिचय प्राप्त होता है। इसप्रकार इस

पद्धतिपर प्रस्तुत किये गये कोशोंमें प्रत्येक शब्दका पूर्ण इतिहास मिल जाता है। इस तरहके कोशोंको बनानेमें कितना परिश्रम करना पड़ता है, कितना समय और धन इसमें सर्फ होता है इसकी सहजमें ही कल्पना की जा सकती है। परन्तु इस प्रकारके कोशोंसे शब्दोंके स्वरूपका पूर्ण शुद्धता और विस्तारके साथ जो सुस्पष्ट और पूरा परिचय प्राप्त होता है वह वैज्ञानिक होता है और उसमें किसी प्रकारके सन्देहकी गुंजाइश नहीं रहती।

किसी भी कोशमें सबसे अधिक आवश्यकता शुद्धता और प्रामाणिकताकी है। जिस कोशमें शुद्धता और प्रामाणिकता न हो वह शब्दोंके यथार्थ स्वरूपको नहीं समझा सकता। पहले शब्दोंका शुद्ध,प्रामाणिक और विज्ञानसंगत संग्रह और फिर उनका शुद्ध और प्रामाणिक समझमें आनेवाला सरल अर्थ और व्यवहार अन्य समस्त विस्तारोंको छोड़कर भी इतने अधिक जरूरी हैं कि उनकी किसी प्रकार उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसी प्रामाणिकता और शुद्धताके कारण कोशकारका कार्य बड़ा उत्तरदायित्वपूर्ण है और यदि वह सतत अध्यवसाय, कठोर परिश्रम, गहन अध्ययन और अनुशीलनके द्वारा इस अपने उत्तरदायित्वको पूर्णतया निभाता है तो वह स्वयं एक प्रामाणिक कोशकार हो जाता है जिसका प्रमाण सन्देहके अवसरोंपर विश्वासके साथ दिया जा सकता है।

प्रसन्नताकी बात है कि हिन्दी और इससे सम्बद्ध भाषाओंके कोशोंकी तरफ हमारा ध्यान आकर्षित होने लगा है। यह इस बातकी पहचान है कि हम लोग अपनी भाषा तथा उससे सम्बद्ध भाषाओंके स्वरूपको अच्छी तरह जानना चाहते हैं। इसके परिणामस्वरूप पहले जो कोश तैयार हो रहे हैं उनमें बहुत-सी त्रुटियाँ होनी अनिवार्य हैं परन्तु ज्यों ज्यों प्रामाणिकता और शुद्धताकी माँग बढ़ती जायगी त्यों त्यों इन समस्त कोशोंके द्वारा ऐसे शुद्ध और प्रामाणिक कोश तयार होंगे जो शब्दोंका सही और पूर्ण परिचय दे सकेंगे और इस तरह वे हमारी भाषाकी एक स्थिरसम्पत्ति बनकर हमारे साहित्यकी प्रगति और उन्नतिमें सहायक हो सकेंगे।

उर्दू और हिन्दीका सम्बन्ध बहुत पुराना है। हम यहाँ इन दोनों भाषाओंके ऐतिहासिक विस्तारमें नहीं जाना चाहते। यद्यपि उर्दू ज़बानका समस्त ढाँचा हिन्दीका है और पुरानी उर्दूमें हिन्दीके शब्दोंका बहुत कसरतसे प्रयोग किया गया है, तो भी इस बातसे इन्कार नहीं किया जा सकता कि वर्त्तमान हिन्दीके आधुनिक रूपके विकासमें उर्दूका बड़ा हाथ है। दोनों भाषाओंके रूपमें पूरी समानता होते हुए भी उनमें धीमे धीमे इतना फ़र्क़ पड़ गया है और पड़ता जा रहा है कि दोनों भाषाओंको बिलकुल एक कर देना आजकलकी अवस्थाओंमें कुछ असाध्य-सा ही प्रतीत होता है। जो लोग इन दोनों भाषाओंमें एकरूपता उत्पन्न करनेका प्रयत्न कर रहे हैं उनका यह विश्वास है कि यदि हिन्दी-उर्दू-मिलवाँ ज़बान लिखी जाय अर्थात् यदि उर्दूवाले हिन्दीके शब्दोंका और हिन्दीवाले प्रचलित उर्दूके शब्दोंका बिना तकल्लुफ़ इस्तेमाल करें तो संभव है कि इन दोनों ज़बानोंमें यकआहंगी' पैदा हो जाय और इस प्रकार धीमे धीमे इस तरहकी भाषा पूर्ण विकसित हो जाय जिससे हिन्दी और उर्दूका झगड़ा हमेशाके लिए मिट जाय। इस उद्देश्यको सामने रखकर कई व्यक्तियों और संस्थाओंने इस बातको अमलमें लानेका प्रयत्न भी आरम्भ कर दिया है। परन्तु इसके लिए सबसे ज़्यादह ज़रूरी चीज़ है दोनों भाषाओंका प्रामाणिक ज्ञान और इस प्रकारके आयोजन जिनके द्वारा ये दोनों भाषाएँ निकट आ सकें और इस निकटताको लानेके लिए कोश एक बहुत बड़ा साधन है। जबसे इन बातोंका आग़ाज़ हुआ है बहुत-से हिन्दीसे अनभिज्ञ उर्दू जाननेवाले लोग इस तरहके हिन्दी-शब्दकोशकी तलाशमें हैं जो हो तो उर्दू लिपिमें परन्तु जिसके द्वारा हिन्दी शब्दोंका ज्ञान हो सके और इसी प्रकार उर्दूसे अनभिज्ञ हिन्दी जाननेवाले इस तरहके उर्दू-कोशकी खोजमें हैं जो हो तो नागरी लिपिमें परन्तु जिसके द्वारा उन्हें उर्दूके शब्दोंका यथार्थ परिचय प्राप्त हो सके। इस बातमें तो कोई सन्देह नहीं कि इस प्रकार दोनों भाषाओंका पारस्परिक ज्ञान दोनों भाषाओंको जहाँ निकट ला सकेगा वहाँ शायद उपर्युक्त प्रवृत्तिको जाग्रत करने और फैलानेमें भी सहायक सिद्ध हो सकेगा जिससे शायद रफ़्ता रफ़्ता दोनों भाषाओंकी दूरी और पृथकता मिट सकेगी।

यह ‘उर्दू-हिन्दी कोश’ भी एक इसी तरहका साहसपूर्ण प्रयत्न है।

हो सकता है कि इस कोशमें बहुत-सी त्रुटियाँ हों, क्योंकि कोशका कार्य सरल और स्वल्प-परिश्रम-साध्य नहीं है तो भी इस विषयमें दो सम्मतियाँ नहीं हो सकतीं कि इस कोशके द्वारा उर्दू-शब्दोंके जाननेका एक ऐसा आधार प्रस्तुत कर दिया गया है जिसमें आवश्यकतानुसार परिवर्धन और संशोधन हो सकते हैं और जिसे एक प्रामाणिक उर्दू-कोशके रूपमें परिणत किया जा सकता है। हर एक भाषाकी कुछ न कुछ अपनी विशेषताएँ होती हैं और जब एक भाषाका कोश दूसरी भाषामें लिखा जाता है तो उन विशेषताओंके ज्ञान करानेकी भी आवश्यकता होती है। उर्दूकी बहुत-सी विशेषताओंके विषयमें सम्पादक महोदयने अपनी प्रस्तावनामें बहुत कुछ लिखा है। हमारी सम्मतिमें अच्छा होता यदि कोशकार महोदय 'अलिफ़' (ا) और 'ऐन' (ع) का जो हिन्दीमें 'अ' के अन्तर्गत हो जाते हैं, भेद बतलानेके लिए कोई ऐसा साङ्केतिक चिह्न दे देते जिससे यह स्पष्टतया मालूम पड़ जाता कि अमुक शब्द 'अलिफ़' से और अमुक 'ऐन' से लिखा जाता है। इसी प्रकार 'सीन' (س), 'स्वाद' (ص), 'ते' (ت) और 'तोए' (ط) आदिके शब्दोंमें भी भेद रखनेके लिए साङ्केतिक चिह्नोंकी आवश्यकता थी। यद्यपि कोशके सिवा अन्यत्र इन शब्दोंको साङ्केतिक चिह्नोंके साथ लिखनेकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं अनुभव होती तो भी इस भाषाके कोशमें हर शब्दके साथ इस तरहके भेदोंको बतलाना जरूरी है। इससे एक तो भाषाके शुद्ध रूपसे परिचिति हो जाती है, दूसरे भाषाकी बनावट और उसमें जो हमारी भाषासे पृथक्‌ता और विशेषता है उसका भी अच्छी तरह ज्ञान हो जाता है। इसके साथ कहीं कहीं शब्दोंके उच्चारणोंको भी लिखनेकी आवश्यकता थी। आशा है कि अगले संस्करणोंमें इन बातोंकी ओर ध्यान दिया जायगा।

हिन्दीको समस्त भारतकी राष्ट्रभाषा बनानेका प्रयत्न हो रहा है। इसमें जिस तरह उर्दूमेंसे अरबी फारसी शब्दोंका सम्मिश्रण हो रहा है—क्योंकि इन दोनों भाषाओंमें बहुत कुछ समानताएँ हैं—उसी प्रकार ज्यों ज्यों हिन्दी भाषाका भारतीय व्यापक रूप विस्तृत होगा त्यों त्यों इसमें गुजराती, मराठी, बङ्गाली, आदि भाषाओंके शब्द भी मिश्रित होंगे। यदि उर्दूकी हिन्दीके साथ एक तरहकी समानता है तो इन भाषाओंकी भी हिन्दीके साथ दूसरी तरहकी

समानता है। इसलिए इन भाषाओंके शब्दोंका मिलना भी हिन्दीमें अनिवार्य है क्योंकि ज्यों ज्यों भिन्न प्रान्तोंके लोग हिन्दीको अपनाएँगे उसमें कुछ न कुछ उनका प्रान्तीय असर अवश्य मिलेगा। क्या ही अच्छा हो यदि इसी प्रकार इन भाषाओंके प्रामाणिक कोश भी हिन्दीमें सुलभ हो जाएँ। इससे वे भाषाएँ भी हिन्दीके निकट आ जाएँगी और,—यदि नागरीद्वारा एक लिपिका प्रश्न हल हो गया तो इससे उन भाषाओंके ज्ञानमें भी सुभीता हो जायगा और इन भाषाओंका उत्तम साहित्य भी हिन्दीमें आसानीसे प्रविष्ट होकर हिन्दीमें [illegible] अंशकी वृद्धिके साथ उसके क्षेत्रको विस्तृत और व्यापक बना सकेगा।

उस्मानिया कालेज,
औरंगाबाद सिटी
जून २५, १९३६

वंशीधर, विद्यालंकार

*

प्रस्तावना

कोई डेढ़ वर्ष पूर्व जब मेरे प्रिय मित्र श्रीयुत नाथूरामजी प्रेमी मदरासकी ओर भ्रमण करने गये थे, तब वहाँके अनेक हिन्दी-प्रेमियों तथा प्रचारकोंने आपसे एक ऐसा कोश प्रकाशित करनेके लिए कहा था जिसमें उर्दू भाषामें प्रयुक्त होनेवाले अरबी, फारसी आदिके सब शब्दोंके अर्थ हिन्दीमें हों। वहाँसे लौटकर प्रेमीजीने मुझे एक ऐसा कोश प्रस्तुत करनेके लिए लिखा। मैंने इसकी तैयारीमें हाथ तो प्रायः उसी समय लगा दिया था, परन्तु बीचमें कई और आवश्यक काम आ जानेके कारण इसकी तैयारीमें लगभग एक वर्षका समय लग गया। और तब छः-सात मासका समय इसकी छपाईमें लगा; क्योंकि इसका एक प्रूफ बम्बईसे मेरे पास काशी आता था; और इसलिए एक फार्मके छपनेमें आठ-दस दिन लग जाते थे। अन्तमें अब जाकर यह कोश प्रस्तुत हुआ है और हिन्दी पाठकोंके सामने उपस्थित किया जाता है।

जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ, यह कोश वास्तवमें उन मदरासी भाइयोंकी आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए बनानेका विचार था जिनमें इधर दस बारह वर्षोंसे हिन्दी भाषाका प्रचार खूब जोरोंसे हो रहा है और जिनमें अब लाखों हिन्दी-जाननेवाले उत्पन्न हो गये हैं। आन्ध्र, तामिल, तेलगू और मलयालम आदि भाषाएँ बोलनेवाले जब हिन्दी पढ़ते हैं, तब स्वभावतः उन्हें फारसी, अरबी आदिके भी बहुत-से ऐसे शब्द मिलते हैं जिनका ठीक ठीक अर्थ जाननेमें उन्हें बहुत कठिनता होती है। अतः आरम्भमें विचार केवल यही था कि उर्दू कवियोंकी कविताओंमें जितने शब्द आते हैं, केवल उन्हीं शब्दोंका एक छोटा-सा कोश बनाया जाय। पर जब मैंने इस कोशके लिए शब्द-संग्रहका काम आरम्भ किया, तब मुझे ऐसा जान पड़ा कि उर्दू पद्यके अतिरिक्त उर्दू गद्यमें प्रयुक्त होनेवाले शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये जायँ तो इस कोशसे दक्षिण भारतके हिन्दी-प्रेमियोंकी आवश्यकताके साथ साथ उत्तर भारतके भी हिन्दी

पाठकोंकी एक बहुत बड़ी आवश्यकता पूरी हो जायगी। पहलेसे कोई हिन्दी-उर्दू-कोश वर्तमान नहीं था और इस प्रकारके कोश बार बार नहीं बनते, इसलिए मेरे कई मान्य और विद्वान् मित्रोंने भी यही सम्मति दी कि उर्दूमें व्यवहृत होनेवाले सभी प्रकारके शब्द इस कोशमें ले लिये जायँ और यह कोश सर्वांगपूर्ण कर दिया जाय। इसी लिए इस कोशमें उर्दू कवियोंकी ग़ज़लोंमें मिलनेवाले शब्दोंके सिवा साहित्यके अन्यान्य अंगों, यथा—व्याकरण, गणित, धर्मशास्त्र और कानून आदि, के सब शब्द भी सम्मिलित करने पड़े। इस प्रकार जो कोश छोटे आकारके दो ढाई सौ पृष्ठोंमें पूरा करनेका विचार था, वह अन्तमें बड़े आकारके प्रायः सवा चार सौ पृष्ठोंमें जाकर पूरा हुआ और इसकी तैयारीमें पाँच छः महीनेके बदले डेढ़ वर्ष लग गया। पर मेरे लिए सन्तोषका विषय यही है कि उर्दूका एक सर्वांगपूर्ण कोश,—अनेक प्रकारकी त्रुटियोंके रहते हुए भी,—तैयार हो गया।

यदि वास्तविक दृष्टिसे देखा जाय तो उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं है। वह हिन्दीका ही एक ऐसा रूप है जिसमें बहुधा अरबी, फारसी और तुर्की आदिकी ही अधिकांश संज्ञाएँ और विशेषण आदि रहते हैं। उर्दू भाषाकी उत्पत्ति और स्वरूप आदिके सम्बन्धमें हिन्दीमें यथेष्ट चर्चा हो चुकी है, अतः यहाँ विस्तारपूर्वक उनका विवेचन करनेकी आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

स्वयं 'उर्दू' शब्द तुर्की भाषाका है और उसका मूल अर्थ है—लश्कर या छावनीका बाज़ार। बादमें इस शब्दका प्रयोग ऐसे बाज़ारोंके लिए भी होने लगा था जिसमें सब तरहकी चीजें बिकती थीं। भारतकी अन्यान्य विशेषताओं और विलक्षणताओंमें एक यह उर्दू भाषा भी है। भाषाशास्त्रकी दृष्टिसे इसके जोड़की भाषा शायद सारे संसारमें ढूँढ़े न मिलेगी। भाषाका मुख्य लक्षण 'क्रिया' है और उर्दू एक ऐसी भाषा है जो अपनी स्वतन्त्र और निजी क्रियाओंसे रहित है; और इसी लिए कहना पड़ता है कि उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं है। परन्तु फिर भी वह भाषा मानी जाती है और इसके कई कारण हैं। एक तो उसकी एक स्वतन्त्र लिपि है जो अरबी और फारसी लिपियोंके योगसे बनी है। दूसरे उसमें साहित्य और विशेषतः काव्य-साहित्य है, जो प्रचुर भी है और उत्तम भी। तीसरे उत्तर भारतके

कुछ विशिष्ट प्रान्तोंके मुसलमान उसे रोज़की बोल-चालके काममें लाते हैं। और चौथे वह उत्तर भारतके कुछ प्रान्तोंकी कचहरीकी भाषा है। और इन्हीं सब बातोंसे उर्दू एक स्वतन्त्र भाषा गिनी जाती है।

उर्दूका आरम्भ तो लश्करों और बाज़ारोंमें बोली जानेवाली मिश्रित भाषासे हुआ था; पर आगे चलकर उसे मुसलमान बादशाहों, नवाबों और सरदारों आदिका आश्रय प्राप्त हो गया और उसमें प्रायः फारसी और अरबी कविताओंके अनुकरणपर यथेष्ट कविताएँ होने लगीं और वह राजदरबारों तथा महलों आदिमें बोली जाने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि सैकड़ों वर्षोंके इस प्रकारके व्यवहारसे वह एक बहुत घुटी-मँजी और पालिशदार बढ़िया भाषा हो गई। उसमें अनेक ऐसे गुण आगये जिन गुणोंके योगसे कोई भाषा चलती हुई, सुन्दर और चटकीली हो जाती है। मुसलमानी कालमें तो इसे राजाश्रय प्राप्त था ही; उसीके अनुकरणपर अँगरेजी शासन-कालमें भी उत्तर भारतके संयुक्त प्रान्त और पंजाब आदि कुछ प्रदेशोंमें इसे राजाश्रय मिल गया, जिससे मुसलमानोंके सिवा बहुतसे हिन्दुओंके लिए भी इसकी शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक और अनिवार्य हो गया। इसलिए उन्नीसवीं शताब्दीके अन्त-तक इसकी दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति होती रही और मुसलमानोंके सिवा बहुत-से हिन्दू कवियों और लेखकोंने भी अपनी रचनाओंद्वारा इस भाषाका साहित्य यथेष्ट अलंकृत और उन्नत किया। पर इधर पन्द्रह-बीस वर्षोंसे सारे भारतमें राष्ट्रीयताकी जो नई लहर उठी है, उससे उर्दूको बहुत बड़ा धक्का पहुँच रहा है जिससे इसके पक्षपाती और पोषक बहुत कुछ सशंकित हो रहे हैं। परन्तु इन सब बातोंसे यहाँ हमारा कोई मतलब नहीं है। हमारा मतलब सिर्फ़ इस बातसे है कि उर्दू एक स्वतन्त्र भाषा बन गई है और उसमें बहुत-सा अच्छा साहित्य भी वर्तमान है, और इसलिए उर्दू भाषा और साहित्य भी बहुत कुछ अध्ययन करनेकी चीज़ें हैं।

हम ऊपर कह चुके हैं कि उर्दू एक बहुत मँजी हुई और चलती भाषा है और अब तक कुछ लोगोंका यह विचार है,—और एक बड़ी सीमातक ठीक ठीक विचार है,—कि शुद्ध, बढ़िया और मुहावरेदार हिन्दी लिखनेमें उर्दू भाषाके

ज्ञानसे बहुत बड़ी सहायता मिलती है। जिस हिन्दीको हम राष्ट्रभाषा मानकर अपना अभिमान प्रकट करते हैं, दुर्भाग्यवश अभी तक उसका ठीक ठीक स्वरूप ही हम लोग निश्चित नहीं कर पाये हैं। सब लोग अपने अपने ढंगसे और मनमाने तौरपर जो कुछ जीमें आता है, वह सब हिन्दीके नामसे लिख चलते हैं; और शुद्ध चलती हुई मुहावरेदार भाषा लिखनेकी आवश्यकताका अनुभव कुछ इने-गिने मान्य लेखकोंको ही होता है। और नहीं तो हिन्दीके क्षेत्रमें भाषाके विचारसे अधिकांश स्थलोंमें केवल धाँधली ही मची हुई दिखाई देती है। यह ठीक है कि हिन्दीका प्रचार बहुत तेजीके साथ और बहुत दूर दूरके प्रान्तोंमें हो रहा है और अनेक भिन्न भाषा-भाषी लोग भी हिन्दीकी ओर प्रवृत्त हो रहे हैं, और उन सब लोगोंसे हम अभी यह आशा नहीं कर सकते कि वे शुद्ध और बढ़िया हिन्दी लिखेंगे। परन्तु फिर भी हम हिन्दी-भाषियोंका यह कर्तव्य है कि हम अपनी भाषाका स्वरूप स्थिर करें और अन्यान्य भाषा-भाषियोंके सामने उसका ऐसा आदर्श स्वरूप उपस्थित करें जो उनके लिए मार्ग-दर्शकका काम दे। अपनी भाषाका स्वरूप स्थिर करनेमें हम उर्दू भाषासे भी बहुत कुछ शिक्षा और सहायता ले सकते हैं।

पर शायद कुछ विषयान्तर हो गया। ख़ैर।

उर्दू साहित्यका पद्य-भाग बहुत बड़ा तथा पुराना और गद्य-भाग अपेक्षाकृत छोटा और हलका है। आरम्भमें सैकड़ों वर्षोंतक उर्दूमें केवल ग़जलें ही कही जाती थीं और उनका ढंग बिल्कुल अरबी-फारसीकी कविताओंका-सा होता था। उसके अधिकांश गद्य-साहित्यकी रचना बीसवीं शताब्दीके आरम्भ अथवा अधिकसे अधिक उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तसे होने लगी है और शृंगार-रसकी कविताओंको छोड़कर नये ढंगकी और नये विषयोंकी कविताएँ तो और भी हालमें होने लगी हैं। विशेषतः जबसे दक्षिण हैद्राबादके उस्मानिया विश्व-विद्यालयमें उर्दू भाषा शिक्षाका माध्यम बनी है, तबसे उसमें उच्च कोटिके गद्य-साहित्यका निर्माण और भी अच्छे ढंगसे और तेजीके साथ होने लगा है।

उर्दू भाषा बहुत ही मँजी और चलती हुई होती है; और इसलिए हम हिन्दीभाषियोंसे अनुरोध करते हैं कि वे उर्दूका अध्ययन करके उससे

अपनी भाषाका स्वरूप स्थिर करनेमें सहायता लें। इसके सिवा उर्दू काव्योंमें सुन्दर और सूक्ष्म विचारों तथा कल्पनाओंकी भी बहुत अधिकता है। उर्दूमें बहुतसे बड़े बड़े और उच्च कोटिके कवि हो गये हैं; और चाहे तुलनात्मक दृष्टिसे उनके विचार तथा कल्पनाएँ कुछ लोगोंको उतनी उच्च कोटिकी न जँचें, जितनी उच्च कोटिके हिन्दी कविताओंके विचार और कल्पनाएँ जँचती हैं, परन्तु फिर भी उर्दू काव्योंमें काव्योचित गुण यथेष्ट मात्रामें मिलते हैं; उनके पढ़नेमें एक विशेष प्रकारका आनन्द आता है; और इस दृष्टिसे भी हम हिन्दी पाठकोंसे उर्दू साहित्यका अनुशीलन करनेका अनुरोध करते हैं।

उर्दू भाषा और साहित्यके सम्बन्धमें इस प्रकार संक्षेपमें कुछ बातें बतलाकर अब हम कुछ ऐसी बातें भी बतला देना चाहते हैं जिनका जानना इस कोशका उपयोग करनेवालोंके लिए आवश्यक है। उर्दू वर्णमालामें ऋ, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, भ, और ष के लिए कोई वर्ण नहीं हैं और इसी लिए इस कोशमें इन अक्षरोंसे आरम्भ होनेवाले शब्द भी नहीं मिलेंगे। इनके सिवा ट और ड के सूचक वर्ण तो उसमें हैं, परन्तु इन वर्णोंसे आरम्भ होनेवाले शब्दोंका ही अभाव है; और वे भी इस कोशमें नहीं मिलेंगे। उर्दूवाले अल्प-प्राण वर्णोंके साथ 'ह' या 'हे' (ہ) लगाकर ही उनसे महाप्राण अक्षर बना लेते हैं। महाप्राण अक्षरोंमेंसे केवल 'ख' के लिए उनके यहाँ 'ख़े' (خ) और 'फ' के लिए 'फ़े' (ف) है।

जिस समय मेरे सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि अरबी-फारसी आदिके शब्द इस कोशमें किस प्रकार लिखकर रखे जायँ, तो कई विचारणीय बातें मेरे सामने आईं और मुझे बहुत कुछ कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। मैं चाहता था कि कोई ऐसा सिद्धान्त निकल आवे जो सब जगह समान रूपसे काम दे। परन्तु इस प्रकारका कोई ऐसा सिद्धान्त मैं स्थिर नहीं कर सका। सबसे बड़ी कठिनता मेरे सामने यह थी कि अक्षरोंके साथ अनुस्वारका प्रयोग किया जाय या पंचम वर्णका। 'अङ्गुश्त', 'अन्सर' और 'हिन्दसा' लिखा जाय या 'अंगुश्त' 'अंसर' या 'हिंदसा'। बहुत कुछ सोच-विचार करनेपर अन्तमें मैंने यही उचित समझा कि जो शब्द हिन्दीमें अधिकतर जिस रूपमें लिखे जाते हों और जिन रूपोंसे शब्दोंके प्रचलित उच्चारणोंका ठीक ठीक ज्ञान हो सके, वही रूप रखे

जायँ; और इसी लिए मैंने यह स्थिर किया कि 'क' वर्ग और 'च' वर्गके साथ तो अनुस्वार रखा जाय और शेष वर्णोंके साथ आधा 'न' अर्थात् 'न्' रखा जाय। और अधिकतर इसी सिद्धान्तके अनुसार शब्दोंके रूप रखे गये हैं। पर इसमें भी कहीं कहीं अपवाद हैं। जैसे—'अंक़रीब' 'इंकसार' या 'अंक़ा' लिखनेसे काम नहीं चल सकता था और इनसे पाठकोंको शब्दोंके ठीक ठीक उच्चारणोंका पता नहीं लग सकता। इसी लिए विवश होकर 'अन्क़रीब' 'इन्कसार' और 'अन्क़ा' आदि रूप भी रखने पड़े हैं। इसके विपरीत 'शाहन्शाह' न लिखकर 'शाहंशाह' लिखा गया है, क्योंकि साधारणतः लोग 'शाहंशाह' ही लिखते हैं, 'शाहन्शाह' कोई नहीं लिखता। पंचम वर्ण और अनुस्वार-सम्बन्धी कठिनताके अतिरिक्त शब्दोंके रूप स्थिर करनेमें और भी कठिनाइयाँ थीं, और उन सब कठिनाइयोंसे भी तभी बचत हो सकती थी, जब शब्दोंके वही रूप लिये जाते जो अधिकतर हिन्दीमें लिखे जाते हैं। इसके सिवा इसमें एक और लाभ भी था। अरबी-फारसीके बहुत-से शब्द ऐसे भी हैं जिनका हिन्दीमें बहुत कम प्रयोग होता है अथवा अभीतक बिलकुल नहीं हुआ है। पर फिर भी ऐसे शब्दोंको इस कोशमें स्थान देना आवश्यक था। और इस सिद्धान्तका पालन करनेसे यह लाभ है कि उन शब्दोंके सम्बन्धमें हिन्दी पाठक यह जान जायँगे कि इन्हें किस रूपमें लिखना चाहिए। इसीलिए आरम्भमें तो शब्दोंके प्रचलित रूप रखे गये हैं और तब कोष्ठकमें, जहाँ व्युत्पत्ति बतलाई गई है, वहाँ, यथा-साध्य शुद्ध रूप देनेका प्रयत्न किया गया है। जैसे वज़ारत, वादा, वकूफ़, शायर, फ़सल आदि रूप आरम्भमें रखकर व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें इनके शुद्ध रूप विज़ारत, वअदः, वुक़ूफ़, शाइर और फ़स्ल आदि दिये गये हैं। अरबी फारसीमें जहाँ शब्दोंके अन्तमें 'हे' (ه) या 'ह' होता है, वहाँ हिन्दीमें विसर्ग रखा गया है; और जहाँ अन्तमें 'ऐन' (ع) या 'अ' होता है, वहाँ अथवा जहाँ हम्ज़ा (ء) होती है, वहाँ लुप्ताकार (ऽ) रखा गया है। परन्तु जहाँ प्रचलित रूप दिखलाये गये हैं, वहाँ इन दोनोंके स्थान-पर केवल आकारकी मात्रा (ा) का ही प्रयोग किया गया है। जैसे आरम्भमें 'जमा' रूप दिया है और व्युत्पत्तिके साथ 'जमऽ' रूप रखा है। अरबी-फारसीके जिन शब्दोंके अन्तमें 'नून' (ن) या 'न' होता है, उनमेंसे

कुछका उच्चारण तो पूरे ' न ' के समान होता है और कुछका आधा अर्थात् अर्ध-चन्द्र ‿ वाले उच्चारणके समान होता है। फिर फारसीका एक प्रत्यय ' गीं ' है जो शब्दोंके अन्तमें लगता है। पर इसका उच्चारण कहीं तो ' गीं ' होता है, जैसे—अन्दोहगीं; और कहीं ' गीन ' भी होता है; जैसे—ग़मगीन।

अरबी-फारसी शब्दोंको हिन्दीमें लिखनेमे एक और कठिनता होती है। हिन्दीमे ऐसे बहुतसे शब्द प्रायः अक्षरोंके नीचे बिन्दी लगाकर लिखे जाते हैं; जैसे—क़ानून, महफ़ूज़ आदि। पर छापेमें कहीं कहीं और विशेषतः कुछ संयुक्त अक्षरोंके नीचे इस प्रकार बिन्दी लगाना कठिन हो जाता है। छापेमें बिन्दी लगा हुआ ' ग ' अर्थात् ' ग़ ' तो होता है, पर आधा ' ग ' अर्थात् ' ग् ' बिन्दी लगा हुआ नहीं होता। और इसी लिए ' इग्लाम ' आदि शब्द लिखनेमें कठिनता होती है और विशेष युक्तिसे ' ग् ' के नीचे बिन्दी लगाई जाती है। जहाँ तक हो सका है, ऐसे अक्षरोंके नीचे भी बिन्दी लगानेका प्रयत्न किया गया है। पर यदि कहीं भूलसे बिन्दी छूट गई हो, तो छापेखानेवालोंकी कठिनता और असमर्थताका ध्यान रखकर पाठकोंको स्वयं ही प्रसंगसे ऐसे शब्दोंके ठीक उच्चारण समझ लेना चाहिए।

एक बात और है। मुख्य शब्दके साथ तो व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें उसका शुद्ध रूप दे दिया गया है, परन्तु यौगिक शब्दोंके साथ इसलिए ऐसा नहीं किया गया है कि इससे विस्तार बहुत कुछ बढ़ जाता। उदाहरणके लिए ' नज़ारा ' शब्दके आगे उसका शुद्ध अरबी रूप ' नज़्ज़ारः ' तो दे दिया गया है, पर ' नज़ाराबाज़ी ' मेंव्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें केवल ' अ० + फा० ' ही लिख दिया गया है। ऐसे अवसरोंपर पाठकोंको यह नहीं समझ लेना चाहिए कि शुद्ध रूप ' नज़ारा ' ही है, बल्कि ' नज़ारा ' शब्दका शुद्ध रूप जाननेके लिए स्वयं उस शब्दका व्युत्पत्तिवाला कोष्ठक देखना चाहिए जहाँ लिखा है—' अ० नज़्ज़ारः। '

कुछ शब्द ऐसे हैं जो अरबीके हैं और अरबीमे उनका स्वतन्त्र अर्थ होता है। पर वही शब्द फारसीमें भी प्रचलित हैं और फारसीमें उनका अर्थ बिल्कुल अलग और अरबीवाले अर्थसे भिन्न होता है। ऐसे शब्द आरम्भमें तो एक ही स्थानपर लिखे गये हैं, पर जहाँ एक भाषाका अर्थ समाप्त हो जाता है, वहाँ फिरसे संज्ञा, विशेषण आदि लिखकर व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें

मूल भाषाका संकेत कर दिया गया है। इससे पाठक समझ सकेंगे कि यह शब्द अरबी भाषामें इस अर्थमें और फारसी भाषामें इस अर्थमें प्रयुक्त होता है।

किसी भाषाके जीवित होनेके और लक्षणोंमेंसे एक लक्षण यह भी है कि वह दूसरी भाषाओंके शब्दोंको लेकर उन्हें अपनी भाषाकी प्रकृतिके अनुरूप बना सके—उन्हें हज़म कर सके। यह बात अरबी, फारसी और उर्दूमें भी अनेक स्थलोंपर पाई जाती है। अरबीवालोंने तुर्की, यूनानी और इब्रानी आदि भाषाओंके अनेक शब्द ग्रहण कर लिये हैं और उन्हें अपने साँचेमें ढाल लिया है। कीमिया, क़ैमूस और उस्तुरलाब आदि ऐसे शब्द हैं जो यूनानीसे लेकर अरबी बनाये गये हैं। फारसी भाषासे भी कुछ शब्द लेकर अरबी बनाये गये हैं। शब्दोंकी व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकोंमें इस प्रकारकी बातें, जहाँतक हो सका है, स्पष्ट कर दी गई हैं। इसी प्रकार फारसीवालोंने भी अरबीके कुछ शब्दोंको लेकर अपने साँचेमें ढाल लिया है। अरबीके कुछ शब्दोंमें फारसीके प्रत्यय भी लगे हुए दिखाई देते हैं। जैसे अरबी 'ख़्वान' से फारसी 'ख़्वानचा' और 'ख़ैर' से 'ख़ैरियत'। इसी प्रकार शुद्ध हिन्दीके कुछ शब्दोंको भी उर्दूवालोंने ऐसा रूप दे दिया है कि वे देखनेमें फारसी-अरबीके जान पड़ते हैं। हिन्दी 'देग' से 'देग़' और 'कन्नौज' से 'क़न्नौज'। संस्कृतके 'सम्मुख' शब्दसे उर्दूवालोंने 'सरमुख' बना लिया है और इसका प्रयोग अधिकतर वही करते हैं। कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो फारसी और संस्कृतमें समान रूपसे लिखे और बोले जाते हैं और उनके अर्थ भी समान ही होते हैं; जैसे 'कलम' और 'क़लम'। और कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके फारसी और संस्कृत रूपोंमें बहुत ही थोड़ा अन्तर होता है; जैसे 'हफ़्ता' और 'सप्ताह'; और इसका कारण यही है कि दोनोंका मूल एक ही है। जिस प्रकार हिन्दीमें देशज शब्द होते हैं, उसी प्रकार उर्दूमें भी कुछ देशज शब्द हैं और उनका व्यवहार अधिकतर उर्दूवाले ही करते हैं; और प्रायः ऐसे रूपमें करते हैं कि साधारणतः वे शब्द देखनेमें अरबी फारसीके ही जान पड़ते हैं। इस प्रकारके शब्दोंमें लाले, हवेली, रकाब और रफ़ी आदि हैं। अरबी-फारसीके कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनसे हिन्दीवालोंने कुछ शब्द बना लिये हैं और जिनका प्रयोग

अधिकतर हिन्दीवाले ही करते हैं। जैसे 'नज़र' से 'नज़रहाया' और 'नफ़र' से 'नफ़री'। इस प्रकारके शब्दोंको भी इस कोशमें स्थान दिया गया है।

अरबी-फारसीके कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनमें सिर्फ़ ज़ेर-ज़बर या स्वरसूचक चिह्नोंके लगनेसे ही अर्थमें बहुत कुछ अन्तर हो जाता है। साधारण उर्दू जाननेवाले भी बहुतसे ऐसे लोग मिलेंगे जो 'मुमतहन' और 'मुमतहिन' का अन्तर न जानते हों। पर वास्तवमें 'मुमतहन' का अर्थ है—परीक्षा या इम्तहान देनेवाला; और 'मुमतहिन' का अर्थ है—परीक्षा या इम्तहान लेनेवाला। इसी प्रकार 'मुअद्दब' का अर्थ है 'वह जिसका अदब किया जाय'; और 'मुअद्दिब' का अर्थ है 'वह जो अदब करे।' अतः हिन्दीवालोंको इस प्रकारके शब्दोंका प्रयोग बहुत सावधानीसे करना चाहिए। इसी प्रकारकी एक और कठिनता लिंगके सम्बन्धमें भी हो सकती है। कई ऐसे शब्द होते हैं जिनका एकवचनमें कुछ और लिंग रहता है और बहुवचनमें कुछ और। अरबीका 'फ़ज़ीलत' शब्द स्त्री-लिंग है, परन्तु उसका बहुवचन 'फ़ज़ायल' पुल्लिंग है। इस प्रकारके शब्दोंके प्रयोगोंमें भी बहुत कुछ सावधानताकी आवश्यकता है।

इस कोशमें शब्दोंके अर्थ देते समय इस बातका ध्यान रखा गया है कि अर्थ जहाँतक हो सके ऐसे हों, जिनसे पाठकोंको उनके ठीक ठीक आशयके अतिरिक्त यह भी ज्ञात हो जाय कि उनका मूल क्या है अथवा वे किस शब्दसे बने हैं। जैसे 'फ़िदाई' का अर्थ दिया है—फ़िदा होने या जान देनेवाला। इससे पाठक सहजमें समझ सकते हैं कि 'फ़िदाई शब्द' 'फ़िदा' से बना है। इसी प्रकार 'मतलूब' का अर्थ दिया है—जो तलब किया या माँगा गया हो। 'मतरूक' का अर्थ दिया है—जो तर्क या अलग कर दिया गया हो। 'मुलक्कब' का अर्थ दिया है—जिसको कोई लकब या नाम दिया गया हो। इस प्रकार और शब्दोंके सम्बन्धमें भी समझ लेना चाहिए। इसके सिवा प्रायः विशेषणोंके साथ उनसे सम्बन्ध रखनेवाली संज्ञाएँ भी उनके आगे इसलिए कोष्ठकमें दे दी गई हैं कि जिसमें व्यर्थका विस्तार न हो। जैसे 'ख़बरगीर' के साथ ही उसकी संज्ञा 'ख़बरगीरी' 'ख़िदमतगार' के साथ संज्ञा 'ख़िदमतगारी', 'गिलकार' के साथ संज्ञा 'गिलकारी', 'दिलचस्प' के साथ संज्ञा 'दिलचस्पी', 'फ़िक्रमन्द' के साथ संज्ञा 'फ़िक्र-

मन्दी ' आदि। प्रायः बहुतसे शब्द अरबी और फारसीके योगसे बनते हैं। ऐसे शब्दोंके बीचमें एक छोटी लकीर (जिसे हाइफन कहते हैं और जिसका रूप—यह है) दे दी गई है और व्युत्पत्तिवाले कोष्ठकमें बतला दिया गया है कि इस शब्दका पहला अंश किस भाषाका और दूसरा किस भाषाका है। जैसे 'क़ानून-दाँ' के आगे लिखा है—अ० + फा०। इसका अभिप्राय यह है कि इसमेंका 'क़ानून' शब्द तो अरबीका है और 'दाँ' शब्द फारसीका है जो प्रत्यय रूपमें उसके साथ लगा है। यह व्यवस्था इसलिए रखी गई है जिसमें पाठकोंको प्रत्येक शब्दके सम्बन्धमें थोड़ेसे स्थान-व्ययसे ही अधिकसे अधिक ज्ञान प्राप्त हो जाय।

अब हम संक्षेपमें उर्दू और फारसीके व्याकरणोंके सम्बन्धकी कुछ ऐसी मुख्य मुख्य बातें भी बतला देना चाहते हैं जो अनेक अवसरोंपर पाठकोंके लिए बहुत कुछ उपयोगी हो सकती हैं। यह तो सिद्ध ही है कि हिन्दीसे उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं है और इसी लिए हिन्दीसे स्वतन्त्र उसका कोई व्याकरण भी नहीं हो सकता। और आज-कल तो अधिकांश भाषाओंके व्याकरण प्रायः अँगरेजी व्याकरणके ही साँचेमें ढलने लग गये हैं; इसलिए एक भाषाके व्याकरणकी बहुत-सी बातें दूसरी भाषाओंकी उन्हीं बातोंसे बहुत कुछ मिलती-जुलती होती हैं। संज्ञा, विशेषण, क्रिया और क्रिया-विशेषण आदिके प्रकार और उप-प्रकार आदि प्रायः सभी बातोंमें समान होते हैं। फिर ऐसी अवस्थामें जब कि उर्दू वास्तवमें हिन्दीका ही एक विशिष्ट प्रकार हो और उसमें केवल हिन्दीकी ही समस्त क्रियाओंका ज्योंका त्यों उपयोग होता हो, तब उसका कोई हिन्दीसे स्वतन्त्र व्याकरण भी नहीं हो सकता। परन्तु फिर भी जिस प्रकार हिन्दीमें संस्कृत व्याकरणकी कुछ बातें थोड़े बहुत परिवर्तनके साथ आवश्यक और अनिवार्य रूपसे लेनी पड़ती हैं, उसी प्रकार उर्दूवालोंको भी अपने व्याकरणमें अरबी और फारसीके व्याकरणोंकी कुछ बातें रखनी पड़ती हैं; और यहाँ हम संक्षेपमें उन्हींमेंसे कुछ मुख्य मुख्य बातोंका उल्लेख कर देना चाहते हैं।

पहली बात एक-वचनसे बहुवचन बनानेके सम्बन्धकी है। फारसीमें शब्दोंके बहुवचन बनानेके दो नियम हैं। प्राणिवाचक शब्दोंके अन्तमें 'आन' प्रत्यय बढ़ानेसे उसका बहुवचन बनता है। जैसे 'मुर्ग़'से 'मुर्ग़ान'

'ज़न'से 'ज़नान' 'दोस्त'से 'दोस्तान'। निर्जीव या जड़ पदार्थोंके अन्तमें उनका बहुवचन बनानेके लिए 'हा' प्रत्यय लगाते हैं। जैसे 'बार'से 'बारहा', 'सद'से 'सदहा' आदि। परन्तु उर्दूवाले फारसीके इन प्रत्ययोंका प्रयोग कभी कभी फारसी शब्दोंके अतिरिक्त अरबी शब्दोंके साथ भी कर देते हैं। जैसे 'साहब'से 'साहबान' और 'अज़ीज़'से 'अज़ीज़ाँ' आदि।

उर्दूमें अरबीके बहुवचनोंका भी बहुधा प्रयोग होता है। अरबीमें बहुवचनको 'जमा' कहते हैं और फारसीमें भी बहुवचनके लिए इसी शब्दका प्रयोग होता है। अरबीमें जमा या बहुवचन दो प्रकारके होते हैं—जमा सालिम और जमा मुकस्सर। जमा सालिम वह है जिसमें मूल शब्दका रूप सालिम या ज्योंका त्यों रहता है और उसके अन्तमें केवल बहुवचनका सूचक कोई प्रत्यय लगा देते हैं। इसमें प्राणिवाचक पुल्लिंग शब्दोंके अन्तमें 'ईन' प्रत्यय बढ़ानेसे बहुवचन बनता है। जैसे 'मुसलिम'से 'मुसलमीन', 'हाज़िर'से 'हाज़रीन' 'नाज़िर'से 'नाज़रीन' आदि। प्राणिवाचक स्त्री-लिंग शब्दोंके अन्तमें और अप्राणिवाचक शब्दोंके अन्तमें 'आत' प्रत्यय लगानेसे उनका बहुवचन बनता है। जैसे 'मस्तूर'से 'मस्तूरात' 'ख़याल'से 'ख़यालात', 'महकमा'से 'महकमात।'

जमा मुकस्सर वह है जिसमें वाहिद या एकवचनके रूपमें कुछ परिवर्तन हो जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
हाकिम	हुक्काम	सफ़ी	असफ़ियाऽ
किताब	कुतुब	वली	औलियाऽ
मसजिद	मसाजिद	हर्फ़	हुरूफ़
मकतब	मकातिब	शेर	अशआर
हुक्म	अहकाम	क़िस्म	अक़साम
शरीफ़	अशराफ़	अमीर	उमरा
ख़बर	अख़बार	तालिब	तुलबा
अमर	उमूर	वज़ीर	वुज़रा
मक़बरा	मक़ाबिर		

परन्तु यह नहीं समझना चाहिए कि इस प्रकार एक-वचन शब्दोंसे बहुवचन

बनानेका अरबीमें कोई विशेष नियम नहीं है और ये सब बहुवचन मनमाने ढंगपर बना लिये जाते हैं। वास्तवमें इनके सम्बन्धमें बँधे हुए नियम हैं; परन्तु विस्तार-भयसे वे सब नियम यहाँ नहीं दिये गये हैं। यहाँ संक्षेपमें यही बतला देना यथेष्ट होगा कि ये बहुवचन 'वज़न' के आधारपर बनते हैं। अरबीमें शब्दोंके बहुतसे 'वज़न' बने हुए हैं जो हमारे यहाँके पिंगलके गणोंसे बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं; और यह निश्चय कर दिया गया है कि यदि एकवचन शब्द अमुक 'वज़न' का हो तो उसका बहुवचन अमुक वज़नका होगा। जैसे यदि एकवचन 'फ़ाइल' के वज़नका हो तो उसका बहुवचन 'फुअला' के वज़नपर होगा। जैसे 'ख़बर' से 'अख़बार' और 'शजर' से 'अशजार' आदि।

इसके सिवा अरबीके कुछ शब्द ऐसे हैं जो वास्तवमें बहुवचन हैं, पर उर्दू-हिन्दीमें जिनका प्रयोग एकवचनके रूपमें होता है। जैसे कायनात, ख़ैरात, वारदात, तहक़ीक़ात, तसलीमात, औलाद, रिआया, अख़बार, उसूल आदि। और कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो वास्तवमें हैं तो एकवचन, पर जिनका प्रयोग बहुवचनके रूपमें होता है; जैसे दाम, दस्तख़त आदि।

अरबी फारसीके बहुवचनोंके सम्बन्धमें एक विशेषता यह भी है कि उनमें कुछ शब्दोंके बहुवचनके भी बहुवचन बना लिये जाते हैं जिन्हें जमा-उल्जमा कहते हैं। जैसे 'दवा' का बहुवचन 'अदविया' होता है और फिर उसका भी बहुवचन 'अदवियात' बना लिया जाता है। इसी प्रकार 'लाज़िमा' से 'लवाज़िमा' और फिर उससे भी 'लवाज़िमात' बना लेते हैं। इसी प्रकार 'जौहर' से 'जवाहिर' और 'जवाहिर' से 'जवाहिरात' तथा 'इस्म' से 'इस्माऽ' और 'इस्माऽ' से 'आसामी' भी बना लेते हैं। और विलक्षणता यह है कि जो आसामी शब्द जमाकी भी जमा है, उसका प्रयोग हिन्दी-उर्दूमें एकवचनके समान होता है।

इसी प्रकार क्रियाओं या क्रियात्मक संज्ञाओंसे जो कर्तृवाचक तथा कर्मवाचक शब्द बनते हैं, उनके लिए वज़नोंके आधारपर ही नियम बने हैं। साधारणतः क्रियाओंसे जो कर्तृवाचक शब्द बनते हैं, वे 'फ़ाइल' के वज़नपर होते हैं और कर्मवाचक शब्द 'मफ़ऊल' के वज़नपर होते हैं जैसे 'तलब' से कर्तृवाचक 'तालिब', और कर्मवाचक 'मतलूब' शब्द

बनता है। इसी प्रकार 'इश्क़' से क्रमशः 'आशिक़' और 'माशूक़' शब्द बनते हैं।' क्रियात्मक संज्ञाओंसे, जिन्हें अरबीमें 'मसदर' कहते हैं, इसी प्रकारके नियमोंके अनुसार कर्तृवाचक शब्द बनते हैं; जैसे 'इमतहान' से 'मुमतहिन', 'इन्तजाम' से 'मुन्तज़िम', 'इन्तज़ार' से 'मुन्तज़िर' आदि। क्रियात्मक संज्ञाओंसे 'फ़ईल' के वज़नपर विशेषण भी बनाये जाते हैं। जैसे 'अलालत' से 'अलील' और 'ज़राफ़त' से 'ज़रीफ़' आदि। परन्तु इन सब नियमोंका पूरा पूरा विवेचन करनेके लिए एक स्वतन्त्र पुस्तककी आवश्यकता होगी, इसलिए हम इस दिग्दर्शन मात्रसे ही सन्तोष करते हैं।

प्रायः व्यंजनान्त पुल्लिंग शब्दोंके अन्तमें 'हे' (ه) या 'ह' लगाकर उसका स्त्रीलिंग रूप बनाते हैं। हिन्दीमें इसका उच्चारण वस्तुतः विसर्ग (:) के समान होना चाहिए, पर हिन्दीवाले उसके स्थानपर प्रायः 'ा' का प्रयोग करते हैं। जैसे 'वालिद' से 'वालिदः' या 'वालिदा', 'साहब' से 'साहबः' या 'साहबा' आदि। कुछ विशिष्ट शब्दोंके अन्तमें 'म' प्रत्यय लगानेसे भी उनका स्त्रीलिंग रूप बन जाता है: जैसे 'खान' से 'खानम' और 'बेग' से 'बेगम' आदि।

अरबी-फारसीके कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके अर्थ-भेदसे लिंगमें भी भेद हो जाता है। जैसे 'अर्ज़' शब्द 'चौड़ाई' अर्थमें तो पुल्लिंग है और 'निवेदन' के अर्थमें स्त्रीलिंग है। 'आब' शब्द पानीके अर्थमें पुल्लिंग है और 'चमक' के अर्थमें स्त्री-लिंग है।

अरबीके जिन मसदरों या क्रियात्मक संज्ञाओंके अन्तमें 'त' होता है उनका प्रयोग स्त्रीलिंगके रूपमें होता है। जैसे—इनायत, शफ़कत, .क़ुदरत आदि। इसी प्रकार फारसीके शकारान्त शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—ख़्वाहिश, कोशिश, रंजिश, बख़्शिश आदि।

हिन्दीकी भाँति अरबी-फारसीमें भी बहुतसे प्रत्यय और उपसर्ग होते हैं। प्रत्ययको 'लाहिक़ा' कहते हैं और इसका बहुवचन 'लवाहिक़' होता है। उपसर्गको 'साबिक़ा' कहते हैं और इसका बहुवचन 'सवाबिक़' होता है। इन सबके सम्बन्धमें अनेक नियम भी हैं। यहाँ प्रत्ययों और उपसर्गोंकी सूची देनेके लिए स्थान नहीं है और न उनके पूरे पूरे नियम आदि ही दिये जा सकते

हैं। यह विषय व्याकरणका है और इसके लिए व्याकरणोंसे सहायता ली जा सकती है। पं० कामताप्रसाद गुरुकृत 'हिन्दी व्याकरण' में फारसी-अरबीके समस्त प्रत्ययों और उपसर्गोंकी एक विस्तृत सूची और उनसे संबंध रखनेवाले सब नियम आदि भी दिये गये हैं। इस कोशमें भी यथास्थान बहुतसे प्रत्ययों और उपसर्गोंके अर्थ तथा प्रयोग आदि दिये गये हैं। यहाँ केवल यही बतला देना यथेष्ट होगा कि अरबीकी अपेक्षा फारसीमें उपसर्गों और प्रत्ययों आदिकी संख्या बहुत अधिक है और उर्दूमें अधिकतर फारसीके ही प्रत्यय और उपसर्ग देखनेमें आते हैं। अरबी उपसर्गोंमें अल्, ग़ैर, बिल और ला आदि मुख्य हैं और इनके उदाहरण क्रमशः अलविदा, ग़ैर-क़ानूनी, बिल्जब्र, और ला-वारिस आदि हैं। फारसी उपसर्गोंमें कम, खुश, दर, ना, बर, बा, बे और हम आदि हैं। अरबी प्रत्ययोंमें अन् और आत मुख्य हैं और इनके उदाहरण हैं—अमूमन्, तक़रीबन्, इरादतन् तथा ख़यालात, सवालात, लवाज़िमात आदि। फारसीमें प्रत्ययोंकी संख्या बहुत अधिक है और उनसे अनेक प्रकारके अर्थ और भाव सूचित होते हैं। जैसे—आना (ज़नाना, मालिकाना), आवर (ज़ोरावर), ईन (संगीन), ईना (देरीना, रोज़ीना), नाक (ग़मनाक, खौफ़नाक), गीर (आलमगीर, जहाँगीर), दार (दूकानदार, मकानदार), बान (दरबान, बाग़बान), नामा (इकरार-नामा, सुलहनामा), मन्द (अक्लमन्द, दौलतमन्द), वार (माहवार, तारीख़वार), कुन (कारकुन), ख़ोर (हलालख़ोर, हरामख़ोर), नुमा (कुतुबनुमा, क़िबलानुमा), नवीस (अरज़ीनवीस), नशीन (तख़्तनशीन, बालानशीन), बन्द (कमरबन्द, इज़ारबन्द), पोश (ज़ीनपोश, पापोश, सरपोश), बरदार (हुक्म-बरदार, फरमाँ-बरदार,) बाज़ (इश्क़बाज़, नशेबाज़), बीन (दूरबीन, तमाशबीन), खाना (कारख़ाना, दौलतख़ाना), गाह (ईद-गाह, चरागाह, बन्दरगाह), ज़ार. (गुलज़ार, बाज़ार), आदि आदि।

अन्तमें मैं उन कोशकारोंको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनके रचे हुए कोशोंसे मुझे इस कोशके संकलनमें सहायता मिली है। इन कोशोंमें फ़रहंग आसफ़िया (चार भाग, रचयिता स्वर्गीय मौलवी सैयद अहमद साहब देहलवी), लुग़ाते किशोरी रचयिता मौलवी सैयद तसद्दुक हुसेन साहब रिज़वी), न्यू हिन्दुस्तानी

इंग्लिश डिक्शनरी (New Hindustani English Dictionary) रचयिता डा० एस० डब्ल्यू० फ़ैलन, पीएच० डी०) का मैं विशेष रूपसे आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त समय समय पर ग़यास उल् लुग़ात और करीम उल् लुग़ातसे भी मुझे विशेष सहायता मिलती रही है और उनके रचयिताओंके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना भी मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। स्व-संकलित संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागरसे भी इस कोशके प्रणयनमें बहुत कुछ सहायता ली गई है।

३ सरस्वती फाटक, काशी।
२४ मई, १९३६

रामचन्द्र वर्म्मा

दूसरे संस्करणकी प्रस्तावना

उर्दू–हिन्दी कोशका यह दूसरा संस्करण पाठकोंके सामने रखा जाता है। हर्षका विषय है कि इसके पहले संस्करणका हिन्दी जगतमें यथेष्ट आदर हुआ और चार ही वर्षों बाद उसका यह दूसरा संस्करण प्रकाशित करनेकी आवश्यकता हुई। हिन्दीमें किसी पुस्तकका और विशेषतः इस प्रकारके कोशका पहला संस्करण चार वर्षोंमें समाप्त हो जाना कुछ कम सन्तोषकी बात नहीं है। इससे एक तो इस कोशकी उपयोगिता सिद्ध होती है और दूसरे यह सिद्ध होता है कि उर्दू भाषा और उसके शब्दोंसे परिचित होनेकी प्रवृत्ति लोगोंमें दिनपर दिन बढ़ रही है। भाषाके क्षेत्रमें इसे एक शुभ लक्षण ही समझना चाहिए।

इस दूसरे संस्करणमें बहुत कुछ संशोधन और परिवर्द्धन किया गया है। पहले संस्करणमें समय समयपर जो त्रुटियाँ दिखाई दी थीं अथवा जिनकी सूचनाएँ मित्रों और पाठकोंसे मिली थीं, उन सबको दूर करनेका प्रयत्न किया गया है और इस प्रकार इस कोशकी प्रामाणिकता और शुद्धताका मान बढ़ाया गया है। परिवर्द्धनके क्षेत्रमें भी बहुत कुछ काम किया गया है और इस संस्करणमें पहलेसे लगभग एक हज़ार और अधिक नये शब्द बढ़ाये गये हैं।

यह तो किसी प्रकार कहा ही नहीं जा सकता कि अब यह कोश सभी दृष्टियोंसे पूर्ण और निर्दोष हो गया है। कोश तो एक ऐसी इमारत है जिसे हमेशा बढ़ाते रहनेकी ज़रूरत होती है और जो हमेशा पूरी पूरी मरम्मत भी माँगती रहती है। इसलिए कोश निर्दोष भले ही हो जाय, पर वह कभी पूर्ण नहीं हो सकता। नित्य नये नये शब्द बनते और प्रचलित होते रहते हैं। अतः जीवित भाषाके कोशके हर संस्करणमें कुछ न कुछ वृद्धिकी सदा गुंजाइश बनी रहती है। अब रही शुद्धता और प्रामाणिकता। उसका दावा इसलिए नहीं किया जा सकता कि एक मनुष्यके काममें और वह भी विशेषतः मेरे जैसे सामान्य मनुष्यके काममें त्रुटियोंका रह जाना कोई आश्चर्यकी बात नहीं। साथ ही कोई दृढ़तापूर्वक अपनी सर्वज्ञता भी

प्रतिपादित नहीं कर सकता। भ्रम या अज्ञानवश भूल कर बैठना मनुष्यका धर्म-सा ही है।

पर साथ ही एक निवेदन और है। कई सज्जनोंने और विशेषतः दक्षिण भारतके कुछ उत्साही हिन्दी-प्रेमियोंने गत तीन-चार वर्षोंमें समय समयपर मेरे पास इस कोशके सम्बन्धमें कई तरहकी शिकायतें भेजी थीं। उनमें वाजिब शिकायतें तो शायद ही एक दो थीं। बाकी अधिकांश शिकायतोंका कारण यही था कि वे सज्जन या तो कोशका ठीक तरहसे उपयोग करना नहीं जानते थे और या उन्होंने पहले संस्करणकी प्रस्तावना ध्यानपूर्वक नहीं पढ़ी थी। एक सज्जनने तो कोई दो सौ शब्दोंकी एक लम्बी-चौड़ी सूची बनाकर मेरे पास भेजी थी और लिखा था कि ये सब शब्द आपके कोशमें नहीं हैं। आप इनके अर्थ मुझे लिख भेजिए। परन्तु उनकी उस सूचीके मिलान करनेपर मुझे पता चला कि उनमेंसे केवल पाँच या छः शब्द इस कोषमें नहीं हैं। बाकी सबके सब यथा-स्थान मौजूद निकले! केवल दो-तीन शब्द ऐसे थे जो किसी कारणसे अपने स्थानसे ऊपर नीचे हो गये थे। इस बार वे सब शब्द भी और कुछ दूसरे शब्द भी जो आगे-पीछे हो गये थे, यथा-स्थान कर दिये गये हैं।

इस कोशका उपयोग करनेवालोंके सामने एक बहुत बड़ी कठिनता इस कारण आती है कि दुर्भाग्यवश हिन्दी लिखनेवाले अपनी भाषा और अपने शब्दोंका ठीक ठीक स्वरूप स्थिर नहीं कर सके हैं। हिन्दीमें ऐसे सैकड़ों शब्द हैं जो दो दो और तीन तीन प्रकारसे लिखे जाते हैं। फिर अरबी और फारसीके शब्दोंका तो पूछना ही क्या है। मुझे प्रथम श्रेणीके कई लेखकोंके लेखों और ग्रन्थोंमें एक ही शब्द दो दो तीन तीन रूपोंमें और कुछ शब्द तो चार-चार रूपोंमें भी लिखे हुए मिले हैं! किसी शब्दके इस प्रकारके सभी रूपोंका संग्रह न तो सम्भव ही है और न वांछनीय ही। यहाँ आकर मैं अपनी पूरी पूरी असमर्थता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता। निवेदन यही है कि चटपट और बिना समझे-बूझे ही यह निश्चय नहीं कर लेना चाहिए कि अमुक शब्द इसमें नहीं है। जहाँ तक हो सका है, प्रायः प्रयुक्त होनेवाले सभी शब्द इसमें ले लिये गये हैं। और फिर भी यदि कुछ शब्द रह गये होंगे तो अगले संस्करणमें बढ़ा दिये जायँगे।

हैदराबाद उस्मानिया यूनीवर्सिटीके श्री० वंशीधरजी विद्यालंकारने इस कोशके पहले संस्करणकी भूमिकामें यह सूचना उपस्थित की थी कि " अलिफ " और " ऐन " तथा " ते " और " तोए " सरीखे कुछ अक्षरोंका पार्थक्य दिखलानेके लिए कुछ नये संकेत निश्चित किये जाने चाहिएँ। सूचना है तो बहुत उपयोगी, पर इसे कार्यरूपमें परिणत करनेमें बहुत-सी कठिनाइयाँ हैं। देवनागरीमें जो उच्चारण " स " का है, वह या उससे मिलता जुलता उच्चारण सूचित करनेवाले उर्दूमें तीन अक्षर हैं—से, सीन और साद। और " ज " का उच्चारण सूचित करनेवाले चार अक्षर हैं—ज़ाल, ज़, ज़ाद, और ज़ो। और साधारण " ज " के लिए जो जीम है, वह तो है ही ही। यदि ये संकेत नये बनाये जायँ तो इनके लिए टाइप भी नये बनवाने पड़ेंगे। अथवा एक दूसरा उपाय यह हो सकता था कि जहाँ कोष्ठकमें उर्दू शब्दोंकी व्युत्पत्ति दी गई है, वहाँ एक कोष्ठकमें उर्दू लिपिमें उनके मूल रूप भी दे दिये जाते। यह बात पहले ही संस्करणमें मेरे ध्यानमें आई थी। परन्तु प्रकाशक महोदय उसके लिए तैयार नहीं हुए। और मैंने भी कई कारणोंसे ऐसा करना बिलकुल निरर्थक समझा। क्योंकि मैं जानता था कि जो सज्जन इन अक्षरोंके भेद जानना चाहेंगे, वे अवश्य ही उर्दू लिपिसे परिचित होने चाहिएँ; और वे अरबी-फारसीके कोश देखकर अपना भ्रम दूर कर सकते हैं। और जो लोग उर्दू लिपिसे परिचित नहीं हैं, उनके लिए इस प्रकारका भ्रम-जाल खड़ा करना मुनासिब नहीं।

अन्तमें मैं यह भी निवेदन कर देना चाहता हूँ कि अपनी भूलोंका सुधार करनेके लिए मैं सदा तैयार हूँ और रहूँगा। जिन सज्जनोंको सचमुच इस कोशमें कोई त्रुटि या न्यूनता दिखाई दे, वे, कृपया मुझे सूचित करें। अगले संस्करणमें उनका सुधार हो जायगा। स्वयं मेरी दृष्टिमें ही अब भी इसमें कुछ बातोंकी कमी है। अगले संस्करणमें वह कमी भी पूरी करनेका प्रयत्न किया जायगा।

२२ अगस्त, १९४०. **रामचन्द्र वर्म्मा**

उर्दू-हिन्दी कोष

अंगबीं–संज्ञा स्त्री० (फा०) शहद। मधु।

अंगुश्त–संज्ञा पु० (फा०) उँगली।

अंगुश्त-नुमा–वि० (फा०) जिसकी ओर लोगोंकी उँगलियां उठें। किसी काममें, विशेषतः किसी बुरे काममें, प्रसिद्ध।

अंगुश्त-नुमाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ किसीकी ओर, विशेषतः कोई बुरा काम करनेवालेकी ओर, लोगोंकी उँगलियां उठना। २ किसीकी ओर उँगली उठाना।

अंगुश्तरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) अँगूठी। मुद्रिका।

अंगुश्ताना–संज्ञा पुं० (फा०) १ उँगलीपर पहननेकी लोहे या पीतलकी एक टोपी जिसे दरज़ी सीते समय एक उँगलीमें पहन लेते हैं। २ हाथके अंगूठेकी एक प्रकार की मुँदरी। आरसी। अड़सी।

अंगूर–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक लता और उसके फलका नाम जो बहुत मीठा और रसीला होता है। दाख। द्राक्षा। मुहा०- **अंगूरका मड़या या अंगूरकी टट्टी** = अंगूरकी बेलके चढ़ने और फैलनेके लिए बाँस की फट्टियोंका बना मंडप। २ एक प्रकारकी आतिशबाज़ी। ३ ३ ज़ख्मके भरनेके समय उसमें दिखाई पड़नेवाली लाली।

अंगूरी–वि० (फा०) अंगूरसे बना हुआ। अंगूरके रंगका।

अंगेज़–वि० (फा०) उत्तेजित करनेवाला। भड़कानेवाला। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें।)

अंजबार–संज्ञा पु० दे० "अंजुबार।"

अंजाम–संज्ञा पुं० (फा०) १ अन्त। समाप्ति। २ परिणाम। फल।

मुहा०–**अंजाम देना** = (काम) पूरा करना। समाप्ति तक पहुँचाना। यौ०– **अंजामकार** = अन्तमें। आखिर। अन्ततोगत्वा।

अंजीर–संज्ञा पु० (फा०) गूलरकी जातिका एक दस्तावर फल।

अंजुबार–संज्ञा पु० (फा०) एक प्रकारका पौधा जिसकी पत्तियाँ आदि दवाके काममें आती हैं।

अंजुम–संज्ञा पु० (अ०) नज्मका बहुवचन। सितारे। तारे।

अंजुमन–संज्ञा स्त्री० (फा०) सभा। मजलिस।

अकड़बाज़–वि० (हिं० अकड़ना + फा० बाज़) (संज्ञा **अकड़बाज़ी**) १ अभिमानी। घमंडी। २ लड़ाका।

अक़्दस–वि०(अ०)१ पवित्र।२श्रेष्ठ।
अक़ब–संज्ञा पु० (अ०) पिछला भाग। पीछा। मुहा० -**अक़बमें**–पीछे। अन्तमें।
अकबर–वि० (फा०) (बहु० अकाबिर) बहुत बड़ा। महान्।
अकबरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी मिठाई।
अक़रक़रहा–संज्ञा पु० (अ०)अकरकरा नामक प्रसिद्ध ओषधि।
अकब –संज्ञा पु० (अ०) १ बिच्छू। २ वृश्चिक राशि।
अक़ारिबा–संज्ञा पु० (अ०)'अक़रब' का बहु०। (अ० 'क़रीब' से)। रिश्तेदार। सम्बन्धी।
अक़रुबा–संज्ञा पु० दे० 'अक़ारिबा'।
अक़लन्–क्रि० वि० (अ० अक़लन्।) समझमें।
अक़लीम–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० अकालीम) देश। प्रान्त।
अकल्ल–वि० (अ०) थोड़ा। कम।
अक़लियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अल्प-मत। २ अल्पसंख्यक समाज।
अक़वाम–संज्ञा स्त्री० (अ०) "क़ौम" का बहुवचन।
अकसर–क्रि० वि० दे० 'अक्सर'।
अक़साम–संज्ञा पु० (अ०) १ क़िस्मका बहुवचन। प्रकार। २ क़सनका बहुवचन। शपथ।
अकसीर–वि० दे० 'अक्सीर'।
अक़ायद–संज्ञा पु० (अ०) अ० 'अक़ीदा' का बहुवचन।
अक़ारिब–वि०(अ० क़रीब का बहु०) रिश्तेदार। सम्बन्धी।
अक़ालीम–संज्ञा स्त्री० अ० 'अक़लीम' का बहुवचन।
अक़िरबा–संज्ञा पुं० दे० 'अक़रिबा'।
अक़ीक़–संज्ञा पुं (अ०) एक प्रकारका लाल पत्थर जिसपर मोहर खोदी जाती है।
अक़ीक़ा–संज्ञा पुं० (अ० अक़ीक़) नवजात शिशुका मुंडन जो मुसलमानोंमें जन्मसे छठे दिन होता है।
अक़ीदत–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी धर्मकी वह मूल बात जिसे मान लेने पर मनुष्य उस धर्ममें सम्मिलित हो जाता है। २ धार्मिक विश्वास।
अक़ीदा–संज्ञा पुं० (अ० अक़ीदः) (बहु० अक़ायद) १ मनमें होनेवाला दृढ़ विश्वास। २ धर्म। मजहब।
अक़ीम–वि० (अ०) (स्त्री० अक़ीमा) निःसन्तान। बाँझ।
अक़ील–संज्ञा पुं० (अ०) (स्त्री० अक़ीला) अक़्लमन्द। बुद्धिमान्।
अक़ूबत–संज्ञा स्त्री० (अ० उक़ूबत) दंड। सजा।
अक़्द–संज्ञा पुं० (अ०) १ सम्बन्ध स्थापित करना। जोड़ना। २ विवाह। शादी। ३ विक्रय। बेचना। ४ इक़रार।
अक़्द-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) विवाहका इक़रारनामा।
अक़्द-बन्दी–संज्ञा स्त्री०(अ०+फा.) १ क़रार करना। निश्चय करना। २ विवाह सम्बन्ध स्थापित करना।
अक़्दस-वि० (अ०) परम पवित्र।
अकल संज्ञा पु० (अ०) खाना।

भोजन । यौ०—अक्ल व शुब = खाना-पीना ।

अक़्ल—संज्ञा स्त्री (अ०) बुद्धि । समझ । प्रज्ञा ।

अक़्ल-मन्द—वि० (अ०+फ़०) समझदार । बुद्धिमान् ।

अक़्ल-मन्दी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) समझदारी । बुद्धिमत्ता ।

अक़्ली—वि० (अ०) १ अक्ल या बुद्धिसम्बन्धी । २ तर्कसिद्ध । उचित । वाजिब ।

अक्स—संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रतिबिंब । छाया । परछाहीं । २ चित्र । तस्वीर ।

अक्सर—क्रि० वि० (अ०) प्रायः । बहुधा । अधिकतर । (वि०) बहुत । अधिक ।

अक्सरियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बहुमत । २ बहुसंख्यक समाज ।

अक्सी—वि० (अ० अक्स) छाया-सम्बन्धी । जैसे—अक्सी तस्वीर= छायाचित्र । फोटो ।

अक्सीर—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह रस या धातु जो किसी धातुको सोना या चाँदी बना दे । रसायन । कीमिया । २ सब रोगोंको नष्ट करनेवाली दवा । वि० अव्यर्थ । बहुत गुणकारी ।

अख़गर—संज्ञा पुं० (फ़ा०) आगकी चिनगारी ।

अख़ज़—संज्ञा पुं० (अ०) १ ले लेना । ग्रहण करना । २ उद्धृत करना ।

अख़ज़र—वि० (अ०) हरा । यौ०—बहरे उल्-अख़ज़र—अरबसे भारततकका समुद्र ।

अख़नी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) मांसका रसा । शोरबा ।

अख़बार—संज्ञा पुं० (अ० 'ख़बर' का बहु०) समाचार-पत्र । संवादपत्र । ख़बरका कागज ।

अख़बार-नवीस—संज्ञा पुं० (अ० + फ़ा०) अख़बार लिखनेवाला । सम्पादक ।

अख़लाक़—संज्ञा पुं० (अ० 'ख़ुल्क़'का बहु०) १ आचार । २ आदत । ढंग । ३ मुरव्वत । शील । ४ नीति ।

अख़लाक़ी—वि० (अ०) १ अख़लाक़ या शीलसंबंधी । २ नीतिसंबन्धी । नैतिक ।

अख़वान—संज्ञा पुं० (अ० 'अख़' का बहु०) भाई । सहोदर । भ्राता ।

अख़ीर—संज्ञा पुं० वि० दे० 'आख़िर' ।

अख़ूर—संज्ञा पुं दे० 'आख़ोर' ।

अख़्तर—संज्ञा पुं० (अ०) तारा । सितारा ।

अगर—अव्य० (फ़ा०) यदि । जो ।

अगरचे—अव्य० (फ़ा० अगरचेः) यद्यपि । यदि ऐसा है ।

अग़राज़—संज्ञा स्त्री० (अ०) 'ग़रज़' का बहु० । १ मतलब । अभिप्राय । २ आवश्यकताएँ ।

अग़लब—क्रि० वि० (अ०) बहुत करके । बहुत सम्भव है कि ।

अग़ल-बग़ल—क्रि० वि० (अ० बग़ल) इधर-उधर । आस-पास ।

अज़—अव्य० (फ़ा०) से । (विभक्ति)

जैसे–अज़ जानिब या अज़ तरफ़ = तरफ़से। अज़ रूए = रूसे। अनुसार।

अज़कार–संज्ञा पुं० (अ०) १ 'ज़िक्र' का बहुवचन। २ ईश्वरकी प्रशंसा। ३ उपासना।

अज़-ख़ुद–क्रि० वि० (फा०) स्वयं। आपसे आप।

अज़-ग़ैबी–वि० (फा०) १ छिपा हुआ। गुप्त। २ रहस्यपूर्ण।

अजज़ा–संज्ञा पुं० (अ० अजज़ाऽ= 'जुज़' का बहु०) १ किसी चीज़के टुकड़े या अंग। २ भाग। अंश।

अज़दहा–संज्ञा पुं०(फा०) बहुत बड़ा साँप। अजगर।

अज़दहाम–संज्ञा पुं (अ० इज़दिहाम) लोगोंका झुंड। भीड़।

अजदाद–संज्ञा पुं०(अ०) बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा। यौ० आबा व अजदाद = पूर्वज। पुरखा।

अजनबी–संज्ञा पुं० (अ०) परदेशी। २ दूसरे शहर या देशसे आया हुआ आदमी। ३ अपरिचित। अज्ञात। ४ अनजान। ना-वाक़िफ़।

अजनास–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ 'जिन्स' का बहु०। २ अनेक प्रकार-की वस्तुएँ। ३ घर-गृहस्थीकी सामग्री। असबाब।

अजब–वि० (अ०) विलक्षण। अद्भुत। विचित्र। अनोखा।

अज़-बर–क्रि० वि० (फा०) केवल स्मरण शक्तिसे। ज़बानी। जैसे–अज़बर सारी ग़ज़ल कह सुनाई।

अज़-बस–अव्य० (फा०) बहुत। अधिक।

अजम–संज्ञा पुं० (अ० अज्म) अरब-के आस-पासके ईरान और तूरान आदि देश।

अज़मत–संज्ञा स्त्री० (अ०) बड़-प्पन। बुज़ुर्गी। महत्ता।

अजमी–संज्ञा पुं० (अ०) अजम देशका निवासी। ईरानी।

अजर–संज्ञा पुं० दे० 'अज्र'।

अज़रक़–वि० दे० 'अर्ज़क़'।

अजराम–संज्ञा पु० (अ० जिर्म = शरीरका बहु०) १ शरीर। २ पिंड। यौ०–अजरामे फ़लकी = आकाशमें घूमनेवाले पिंड। (ग्रह, नक्षत्र आदि)

अज़-रूए–क्रि० वि० (फा०) अनुसार। जैसे-अज़रूए ईमान = ईमानसे।

अजल–संज्ञा० स्त्री० (अ०) मृत्यु। मौत। यौ०–अजल-रसीदा या अजल-गिरिफ़्ता = १ जिसकी मौत आई हो। २ शामतका मारा।

अज़ल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आरम्भ। २ मूल। उद्गम। ३ अनादि काल। यौ०–रोज़े अज़ल = १ सृष्टिकी उत्पत्तिका दिन। २ किसीके जन्मका दिन जब कि उसके भाग्यका निश्चय होता है।

अज़ला–संज्ञा पु० अ० 'ज़िला' का बहुवचन।

अज़ली–वि० (अ०) सदासे रहने-वाला। शाश्वत।

अजल्ल–वि० (अ०) १ बड़ा। बुज़ुर्ग। २ सुप्रतिष्ठित।

अज़लल—वि (अ०) बहुत नीच या घृणित ।

अज़-सरे-नौ-क्रि० वि० (फा०) नये सिरेसे । बिलकुल आरम्भसे ।

अजसाम-संज्ञा पुं० अ० 'जिस्म' का बहु० ।

अज़-हद—वि (फा०) हदसे ज़्यादा । बहुत अधिक ।

अज़हर—वि० (अ०) ज़ाहिर । प्रकट ।

अज़ाँ क्रि० वि० (फा० अज़+आँ) इससे । इसलिये । यौ०-बाद- अज़ाँ-इसके बाद ।

अज़ाज़ील-संज्ञा पुं० (अ०) शैतान। दुष्ट आत्मा ।

अज़ान-संज्ञा स्त्री० (अ०) नमाज़की पुकार जो मसजिदोंमें होती है । बाँग । क्रि० प्र०-देना ।

अज़ाब-संज्ञा पुं० (अ०) १ दुःख । कष्ट । २ संकट। विपत्ति । ३ पाप। दुष्कर्म ।

अजायब–वि० (अ०) 'अजीब' का बहु० ।

अजायब-खाना-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) अद्भुत-पदार्थ-संग्रहालय ।

अज़ीज़–वि० (अ०) १ माननीय । प्रतिष्ठित। २ प्रिय । प्यारा । यौ०-**अज़ीज-उलक़द्र**=प्रिय। प्यारा। ३ सम्बन्धी । रिश्तेदार । संज्ञा पुं०-सम्बन्धी सुहृद ।

अज़ीज़दारी-संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) रिश्तेदारी । सम्बन्ध ।

अजीब–वि० (अ०) विलक्षण । अद्भुत । यौ०-अजीब व ग़रीब= बहुत अद्भुत । परम विलक्षण ।

अज़ीम-संज्ञा पुं० (अ०) वृद्ध और पूज्य । वि० । बहुत बड़ा। विशाल-काय। महान्। यौ०-अज़ीम-उश्शान= बहुत शानदार ।

अज़ीयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी-को पहुँचाई जानेवाली पीड़ा। अत्याचार।

अज़ूका-संज्ञा पुं० (अ० अज़ूक-मि० सं० आजीविका) १ खानेकी सामग्री। भोजन । २ अन्न वेतन ।

अजूबा-संज्ञा पुं० (अ० अजूब) १ विलक्षण पदार्थ । २ करामात । वि० विलक्षण। अद्भुत ।

अज़ो—संज्ञा पुं०(अ० अज़्व) १ शरीर-का अंग। अवयव। २ अंश, हिस्सा।

अज़ज़-संज्ञा पुं० (अ०) १ आजि-ज़ी। नम्रता। २ लाचारी ।

अज्म—संज्ञा पुं० (अ०) ईरान और तूरान आदि देश । अजम ।

अज़्म—संज्ञा पुं० (अ०) अक्षरोंपर नुक़ते या बिन्दियाँ लगाना।

अज़्म-संज्ञा पुं० (अ०) दृढ़ विचार । पक्का निश्चय । यौ०-**अज़्म-बिलजज़्म**=दृढ़ निश्चय ।

अज़्मत—संज्ञा स्त्री० दे० 'अज़मत'।

अज्र-संज्ञा पुं० (अ०) १ पारिश्रमिक। २ पुरस्कार। ३ बदलेमें दिया जाने वाला धन या किया जानेवाला उपकार। फल। ४ खर्च। व्यय। लागत।

अतका–संज्ञा पुं०(तु० अतकः) दाई या धायका पति।

अतफ़ाल-संज्ञा पुं० (अ० 'तिफ़्ल'

का बहु०) १ लड़के । बालक । बाल-बच्चे । सन्तान । यौ०--**अयाल व अतफ़ाल**=स्त्री-पुत्र आदि ।

अतराफ़-संज्ञा पुं०(अ०) 'तरफ़' का बहु० ।

अतलस-संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारका बहुत मुलायम रेशमी कपड़ा ।

अतवार-संज्ञा पुं० (अ० 'तौर' का बहु०) १ तौर-तरीका । रंग-ढंग । २ चाल-चलन । रहन सहन ।

अता-संज्ञा पुं० (अ०)प्रदान । दान । यौ०--**अतानामा**=दान-पत्र ।

अताई-संज्ञा पुं० (अ० अता) १ वह जो अपने ईश्वरदत्त गुणोंके कारण आपसे आप कोई काम सीख ले । २ बिना किसी शिक्षककी सहायताके स्वयं कोई काम करनेवाला ।

अताब-संज्ञा पुं० देखो 'इताब' ।

अताबक-संज्ञा पुं० (फा०)१ स्वामी। मालिक । २ राजा या प्रधान मन्त्री-की एक उपाधि ।

अतालीक़-संज्ञा पुं० (तु०) १शिष्टा-चार सिखानेवाला । २ उस्ताद । गुरु । शिक्षक ।

अतालीक़ी-संज्ञा स्त्री० (तु०) अतालीक या शिक्षकका कार्य या पद ।

अतिब्बा-संज्ञा पुं० (अ०) 'तबीब' का बहु० ।

अतिया-संज्ञा पुं० (अ० अतियः) (बहु० अतयात) प्रदान की हुई वस्तु ।

अतूफ़त-संज्ञा स्त्री० (अ०) दया । मेहरबानी ।

अत्तार-संज्ञा पुं० (अ०) १ इत्र बनाने और बेचनेवाला । २ औषधे आदि बेचनेवाला ।

अत्तारी-संज्ञा स्त्री० (अ०) अत्तार-का काम या पेशा ।

अत्फ़- संज्ञा पुं० (अ०) १ इच्छा । ख्वाहिश । २ कृपा । मेहरबानी । ३ संयोजक अव्यय । जैसे-और ।

अदक़-वि० (अ०) बहुत कठिन । मुश्किल ।

अदद-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ संख्या । गिनती । २ संख्याका चिह्न या संकेत ।

अदन-संज्ञा पुं० (अ०) स्वर्गके उपवन ।

अदना-वि० (अ०) १ नीचे दरजे-का । २ तुच्छ । बहुत छोटा । ३ बहुत सामान्य । यौ०--**अदना व आला** = छोटे और बड़े, सब ।

अदब-संज्ञा पुं० (अ०)शिष्टाचार । कायदा । बड़ोंका आदर-सम्मान ।

अदम-संज्ञा पुं० (अ०) १न होना । अभाव । नास्तित्व । जैसे-अदम पैरवी, अदम मौजूदगी, अदम सबूत । २ परलोक ।

अदरक-संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० आर्द्रक) एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसालेके काममें आती है ।

अदल–संज्ञा पुं० (अ० अद्‌ल) १ न्याय। इन्साफ। २ न्यायशीलता।
अदवात–संज्ञा स्त्री० (अ० अदात का बहु०) यंत्र। औजार।
अदविया–संज्ञा स्त्री० (अ०) 'दवा' का बहु०।
अदवियात–संज्ञा स्त्री० (अ०) 'दवा' का बहु०।
अदा–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हाव-भाव। नखरा। २ ढंग। तर्ज। संज्ञा स्त्री० (अ०) चुकता करना। बेबाक करना। मुहा०–अदा कराना=पालन या पूरा करना। जैसे–फर्ज अदा करना।
अदाए–संज्ञा स्त्री० (अ०) पूरा करना। संपन्न करना। जैसे–अदाए खिदमत। अदाए शहादत।
अदा-बंदी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) ऋण आदि चुकानेके लिए समय निश्चित करना।
अदायगी–संज्ञा स्त्री० (अ० अदा) अदा होना। चुकाया जाना। (ऋण या देन आदि)
अदालत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ न्याय। इन्साफ। २ न्यायालय। कचहरी।
अदालती–वि० (अ०) अदालत-संबंधी। अदालतका।
अदावत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० अदावती) दुश्मनी। शत्रुता।
अदीब-संज्ञा पुं० (अ०) विद्या और साहित्यका ज्ञाता। साहित्यज्ञ। वि० सुशील। नम्र।
अदीम–वि० (अ०) १ जो न रह गया हो। नष्ट। २ अप्राप्य। ३ रहित। जैसे–**अदीम-उल्-फुरसत** = जिसे बिलकुल फुरसत या अवकाश न हो।
अदू–संज्ञा पुं० (अ०) दुश्मन। वैरी। शत्रु।
अनवर–वि० (अ०) १ बहुत चम-कीला। चमकदार। २ शोभाय-मान।
अनवाअ–संज्ञा पुं० (अ० अनवाऽ) 'नौऽअ' का बहु०। प्रकार। भेद। किस्में।
अनादिल–संज्ञा स्त्री० (अ० 'अन्द-लीब' का बहु०) बुलबुलें।
अनायत–संज्ञा स्त्री० (अ०) कृपा। दया। मेहरबानी।
अनार–संज्ञा पुं० (फा०) एक पेड़ और उसके फलका नाम। दाड़िम।
अनारदाना–संज्ञा पुं० (फा०) १ खट्टे अनारका सुखाया हुआ दाना। २ रामदाना।
अनासर–संज्ञा पुं० (अ०) 'अन्सर' का बहु०।
अनीस–संज्ञा पुं० (अ०) १ दोस्त। मित्र। २ प्रेम करने या सहानुभूति दिखलानेवाला।
अनक़रीब–क्रि० वि० (अ०) १ क़रीब क़रीब। प्रायः। २ बहुत थोड़े समयमें। निकट भविष्यमें।
अन्का–संज्ञा पुं० देखो 'उन्का'।
अन्दर–अव्य० (फा०) भीतर। में।
अन्दरून–वि० (फा०) अन्दर।

भीतर। संज्ञा पुं० घरके अन्दरके कमरे।

अन्दरूनी--वि०(फा०) अन्दरका। भीतरी।

अन्दाख़्ता--वि० (फा० अन्दाख़्तः) १ फेंका हुआ। २ छितराया हुआ। ३ छोड़ा हुआ। त्यक्त।

अन्दाज़--संज्ञा पुं० (फा०) १ अटकल। अनुमान। कूत। तख़मीना। मान। नाप-जोख। २ ढब। ढंग। तौर। तर्ज। ३ मटक। भाव। चेष्टा। वि० फेंकनेवाला।

अन्दाज़न--क्रि० वि०(फा० अन्दाज़) अन्दाज या अनुमानसे।

अन्दाज़ा- संज्ञा पुं० (फा० अन्दाज़ः) अटकल। अनुमान। कूत। तख़मीना।

अन्दाम -संज्ञा पुं० (अ०) शरीर। बदन। जिस्म।

अन्देश--वि० (फा०) चिन्ता करने-वाला। ध्यान रखनेवाला। (यौगिक-शब्दोंके अन्तमें। जैसे आक़बत-अन्देश, दूर-अन्देश।)

अन्देशा-संज्ञा पुं० (फा० अन्देशः) १ चिन्ता। सोच। फिक्र। २ शक। सन्देह। दुबिधा। ३ भय। आशंका।

अन्दोह--संज्ञा पुं० (फा०) दुःख। रंज। ग़म।

अन्दोह-गीं-वि० (फा०) दुःखी। रंजमें पड़ा हुआ।

अन्दोह-नाक-वि० दे० 'अन्दोह-गीं'।

अन्ना-संज्ञा स्त्री० (तु०) माता। माँ।

अन्वान--संज्ञा पुं० दे० 'उन्वान'।

अन्सब-वि० (अ०) बहुत उचित। बहुत वाजिब।

अन्सर-संज्ञा पुं० (अ० उन्सर) (बहु० अनासिर) मूल तत्त्व।

अफ़आल-संज्ञा पुं० (अ०'फ़ेल' का बहु०) कार्य समूह। कार्रवाइयाँ। कृत्य।

अफ़ई-संज्ञा पुं० (अ०) काला नाग। विषधर सर्प।

अफ़कार-संज्ञा स्त्री० (अ०) 'फ़िक्र' का बहु०।

अफ़गन-वि० (फा०) गिरानेवाला। जैसे शेर-अफ़गन।

अफ़ग़ान-संज्ञा पुं० (फा०)अफ़ग़ा-निस्तानका रहनेवाला। काबुली।

अफ़गार-वि० (फा०) घायल। जख्मी।

अफ़ज़ल-वि० (अ०) सबमें अच्छा। सर्वश्रेष्ठ। बहुत उत्तम।

अफ़ज़ा-वि० (फा०) बढ़ाने या वृद्धि करनेवाला। (यौगिक शब्दोंके अंत-में। जैसे-रौनक-अफ़ज़ा।)

अफ़ज़ाइश-संज्ञा स्त्री० (फा०) वृद्धि। अधिकता। बढ़ोतरी।

अफ़ज़ूँ-वि० (फा०) बढ़ा हुआ। यौ०-**रोज़ अफ़ज़ूँ**=नित्य बढ़ने-वाला।

अफ़ज़ूनी--संज्ञा स्त्री० (फा०) बढ़ने की क्रिया या भाव। वृद्धि।

अफ़यून--संज्ञा स्त्री० (अ०) अफ़ीम नामक प्रसिद्ध मादक वस्तु।

अफ़राज़-वि० (फा०) शोभा आदि बढ़ानेवाला।

अफ़राज़ी-संज्ञा स्त्री० (फा०) बढ़ानेकी क्रिया।

अफ़राद-संज्ञा पुं० स्त्री० (अ०) 'फ़र्द' का बहु०।

अफ़रोख़्ता-वि० (फा० अफ़रोख़्तः) १ उग्र रूपमें आया हुआ। भड़का हुआ। २ प्रज्वलित। जलता हुआ।

अफ़लाक-संज्ञा पुं० (अ०) फ़लक' का बहु०।

अफ़लातून-संज्ञा पुं० (अ०) १ सुप्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटोका अरबी नाम। २ बहुत अधिक अभिमान करनेवाला।

अफ़वाज-संज्ञा स्त्री० (अ०) 'फ़ौज' का बहु०।

अफ़वाह-संज्ञा स्त्री० (अ०) उड़ती ख़बर। बाज़ारू ख़बर। किंवदंती।

अफ़शाँ-संज्ञा पुं० (फा०) १ जलकण। पानीकी बूँदें। २ बादलके कटे हुए छोटे छोटे टुकड़े जो स्त्रियोंके मुख पर शोभाके लिए छिड़के जाते हैं।

अफ़शा-वि० दे० 'इफ़शा'।

अफ़शानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) छिड़कनेकी क्रिया या भाव। यौ०-**अफ़शानी कागज़**-वह कागज़ जिसपर सोनेका वरक़ छिड़का होता है।

अफ़सर-संज्ञा पुं० (फा०) १ टोपी। २ हाकिम। अधिकारी। ३ सरदार। प्रधान।

अफ़साना-संज्ञा पुं० (फा० अफ़सानः) कहानी। किस्सा।

अफ़सुर्दा-वि० (फा० अफ़सुर्दः) १ मुरझाया हुआ। कुम्हलाया हुआ। २ खिन्न। उदास। ३ ठिठुरा हुआ।

अफ़सूँ-संज्ञा पुं० (फा०) १ मंत्र। २ जादू। इंद्रजाल।

अफ़सोस-संज्ञा पुं० (फा०) १ शोक। रंज। दुःख। २ पश्चात्ताप। खेद। पछतावा। यौ० **अफ़सोस-सद-अफ़सोस** = बहुत ही अधिक अफ़सोस। बहुत दुःख।

अफ़ाका-संज्ञा पुं० (फा० इफाक़ः) रोग आदिमें कमी होना।

अफ़ीफ़ वि० (अ०) (स्त्री० अफ़ीफ़ा) दुष्कर्मोंसे बचनेवाला। सदाचारी।

अफ़ू-संज्ञा पुं० (अ० अफ्व) क्षमा करना। माफ़ी।

अफ़ूनत-संज्ञा स्त्री० (अ० उफ़नत) बदबू। सड़ायँध। दुर्गन्ध।

अबख़रा-संज्ञा पुं० (अ०) पानीकी भाप।

अबतरी-वि० (अ०) १ जिसकी दशा बिगड़ी हुई हो। दुर्दशा-ग्रस्त। ख़राब। अव्यवस्थित।

अबतरी-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दुर्दशा। ख़राबी। २ अव्यवस्था।

अबद-संज्ञा स्त्री० (अ०) अनन्त या असीम होनेका भाव। अनन्तता।

अबदन-क्रि० वि० (अ०) सदा। हमेशा।

अबदी-वि० (अ०) सदा बने रहनेवाला। अमर या अविनश्वर।

अबयात-संज्ञा स्त्री० (अ० 'बैत' का बहु०) १ शेरों या कविताओंका समूह। २ फ़ारसी कविताका एक छन्द।

अबर-संज्ञा पुं० दे० 'अब्र'

अबरा-संज्ञा पुं० (फा०) पहननेके दोहरे कपड़ोंमें ऊपर रहनेवाला कपड़ा। अस्तरका उलटा।

अबराज़-क्रि० स० (अ०) १ प्रकट करना। २ रहस्य खोलना।

अबरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका बहुत चिकना और रंगीन कागज़।

अबरेशम-संज्ञा पुं० (फा०) १ कच्चा रेशम। २ रेशमके कीड़ेका कोया।

अबलक-वि० (अ०) जिसमें दो रंग हों। चितकबरा, दो-रंगा। पुं०-वह घोड़ा जिसका रंग सफेद और काला हो।

अबवाब--संज्ञा पुं० (अ०) १ बाब (परिच्छेद) का बहु०। अध्याय। २ मुसलमानोंके .... जनतापर लगनेवाले विशिष्ट कर। ३ करकी मदें।

अबस-क्रि० वि० (अ०) व्यर्थ। बेफ़ायदा। नाहक। वि० जिसका कोई फल न हो। व्यर्थ।

अबहार-संज्ञा पुं० (अ०) १ 'बहर' का बहु०। २ समुद्र, नदी आदि।

अबा-संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारका बड़ा चोगा।

अबाबील--संज्ञा स्त्री० (अ०) काले रंगकी एक चिड़िया। कृष्णा। कन्हैया।

अबियात-संज्ञा स्त्री० (अ०) 'बेत' का बहु०।

अबीर--संज्ञा पुं० (अ०) (वि० अबीरी) एक प्रकारकी रंगीन बुकनी या अबरकका चूर्ण जिसे लोग होलीमें इष्ट-मित्रोंपर डालते हैं।

अबू-संज्ञा पुं० (अ०) पिता। बाप।

अब्जद-संज्ञा पुं० (अ०) १ वर्णमाला। २ अरबी वर्णमालाका एक विशिष्ट क्रम। ३ अरबीमें वर्णमालाके अक्षरों-द्वारा अंक सूचित करनेकी प्रणाली।

अब्द-संज्ञा पुं० (अ०) दास। गुलाम। सेवक।

अब्दाल--संज्ञा पुं० (अ० 'बदील' का बहु०) १ धार्मिक व्यक्ति। २ एक प्रकारके मुसलमान वली या महात्मा। ३ मुहम्मद साहबके उत्तराधिकारी।

अब्बा--संज्ञा पुं० (फा० बाबा) पिताके लिए सम्बोधन।

अब्बा-जान--संज्ञा पुं० देखो 'अब्बा।'

अब्बास--संज्ञा पुं० (अ०) १ शेर। सिंह। मुहम्मद साहबके चाचाका नाम।

अब्बासी--संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका लाल रंग। वि० लाल।

अब्र--संज्ञा पुं० (फा०) बादल। मेघ।

अब्रू--संज्ञा स्त्री० (फा०) आँखके ऊपरके बाल। भौंह।

अब्रे-मुरदा--संज्ञा पुं० (फा०) मुरदा बादल। स्पंज।

अब्लक़ा-संज्ञा स्त्री० (अ० अब्लक़:) मैनाकी तरहकी एक चिड़िया ।
अम-संज्ञा पुं० (अ०) पिताका भाई । चाचा ।
अमजद-वि० (अ०) बड़ा और विशेष पूज्य ।
अमदन-क्रि० वि० दे० 'अम्दन' ।
अमन-संज्ञा० पुं० (अ०) १ शांति । चैन । आराम । २ रक्षा । बचाव । यौ०-अमन-अमान=शांति ।
अमनियत-संज्ञा स्त्री० (फा०) शांति । आराम ।
अमर--संज्ञा पुं० देखो 'अम्र' ।
अमराज़-संज्ञा पुं० (अ०) 'मर्ज़'का बहु० ।
अमरूद-संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध फल । प्यारा । अमरूत ।
अमल-संज्ञा पुं० (अ) १ व्यवहार । कार्य । आचरण । २ अधिकार । शासन । हुकूमत । ३ नशा । ४ आदत । बान । लत । ५ प्रभाव । असर । ६ भोग-काल । समय । वक्त ।
अमला-संज्ञा पुं (अ० अमल) १ कार्याधिकारी । कर्मचारी । यौ०—**अमला फेला** = कचहरीके कर्मचारी । २ टूटे हुए मकानकी ईटें, पत्थर और लकड़ी आदि ।
अमलाक-संज्ञा स्त्री०दे०'इमलाक' ।
अमली-वि० (अ०) १ अमलसम्बन्धी । २ कार्य-सम्बन्धी । ३ कार्यरूपमें । संज्ञा पुं० नशेबाज़ ।
अमवाज-संज्ञा स्त्री० (अ०) 'मौज' का बहुबचन ।
अमवात-संज्ञा स्त्री० (अ०अम्वात) 'मौत'का बहु० । मौतें ।
अमान-संज्ञा पुं० (अ०) १ आपत्तियों आदिसे रक्षा । २ शरण । ३ शान्ति । यौ०-अमन अमान = शन्ति ।
अमानत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अपनी वस्तु किसी दूसरेके पास कुछ कालके लिए रखना । २ वह वस्तु जो इस प्रकार रक्खी जाय । थाती । धरोहर । मुहा०—**अमानतमें खयानत** = किसी की धरोहर बेईमानीसे अपने काममें लाना ।
अमानत नामा--संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसपर लिखा हो कि अमुक वस्तु अमुक व्यक्तिको अमानतके तौरपर दी गई है ।
अमानी-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह भूमि जिसकी जमींदार सरकार हो । खास । २ वह जमीन या कोई कार्य जिसका प्रबन्ध अपने ही हाथमें हो । ३ लगानकी वह वसूली जिसमें फसलके विचारसे रिआयत हो । ४ ठेकेपर नहीं बल्कि तनख्वाह देकर नौकरोंसे काम कराना ।
अमामा-सं० पुं० दे० "अम्मामा"
अमारी--संज्ञा स्त्री० दे० 'अम्मारी'
अमीक-वि० (अ०) गहरा । गंभीर ।
अमीन-संज्ञा पु० (अ०) वह अदालती कर्मचारी जिसके सपुर्द

ज़मीनकी नाप और कुर्की आदि होती है।

अमीनी—संज्ञा स्त्री० (अ०) अमीन-का काम या पद।

अमीर—संज्ञा पुं० (अ०) १ कार्याधिकार रखनेवाला। सरदार। २ धनाढ्य। दौलतमंद। ३ उदार।

अमीर उल् उमरा—संज्ञा पु० (अ०) अमीरोंका सरदार।

अमीर-उल-बहर—संज्ञा. पु० (अ०) जलसेनाका सेनापति। नौ-सेनापति।

अमीरज़ादा—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ बड़े अमीरका लड़का। २ शाहज़ादा। राजकुमार।

अमीराना—वि० (अ० अमीरसे फा०) अमीरोंका-सा। धनवानोंका-सा।

अमीरी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ धनाढ्यता। दौलत-मंदी। २ उदारता।

अमूद—संज्ञा पुं० (अ०) सीधी खड़ी लकीर।

अमूम—वि० (अ० उमूम) साधारण। आम।

अमूमन—क्रि० वि० (उमूमन्) साधारणतः। आम तौरपर।

अमूर—संज्ञा पुं० अ० 'अम्र' का बहु०।

अमूरात—संज्ञा पु० देखो 'उमूर'।

अम्द—संज्ञा पुं० (अ०) विचार। इरादा।

अम्दन—क्रि० वि० (अ०) जान-बूझकर। इच्छापूर्वक। इरादेसे।

अम्बर—संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रसिद्ध सुगंधित वस्तु जो व्हेल मछलीकी आँतोंमें मिलती है। २ एक प्रकारका इत्र।

अम्बार—संज्ञा पु० (फा० अंबार) ढेर। राशि। अटाला।

अम्बारखाना—संज्ञा पु० (फा०) भंडार। कोश।

अम्बारी—संज्ञा स्त्री० दे० 'अम्मारी'।

अम्बिया—संज्ञा पुं० (अ० 'नबी' का बहु०) नबी और पैग़म्बर लोग।

अम्बोह—संज्ञा पुं० (फा०) जन-समूह। भीड़।

अम्म—संज्ञा पुं० (अ०) चाचा।

अम्मज़ादा—संज्ञा पु० (अ०+फा०) चचेरा भाई।

अम्मामा—संज्ञा पु० (अ० अम्मामः) पगड़ी।

अम्मारा—वि० (फा०अम्मारः) १ उग्र। कठोर। २ स्वेच्छाचारी।

अम्मारी—संज्ञा स्त्री० (अ०) ऊँट या हाथीकी पीठपर कसा जाने-वाला हौदा।

अम्मू—संज्ञा पु० (अ०) (स्त्री अम्मः—पिताकी बहन) पिताका भाई। चाचा।

अम्र—संज्ञा पु० (अ०) १ काम। कार्य। २ घटना। ३ विषय। ४ समस्या। ५ विधि। आज्ञा। यौ०—**अम्र व निही**=विधि और निषेध। करने और न करनेके, सम्बन्धकी आज्ञाएँ।

अम्साल—संज्ञा स्त्री०(अ०) 'मिसाल' का बहु०

अयाँ—वि० (अ०) साफ़ दिखाई पड़नेवाला। स्पष्ट। ज़ाहिर।

अया—अव्य० देखो 'आया'।

अयादत—संज्ञा स्त्री०(अ०)किसी रोगीके पास जाकर उसके स्वास्थ्यका हाल पूछना। बीमार-पुरसी।

अयाल—संज्ञा पुं० (अ०) परिवारके लोग। बाल-बच्चे आदि। यौ०—**अयाल व इत्फ़ाल**—परिवारके लोग और बाल-बच्चे। संज्ञा पुं० (फा०) घोड़े या सिंहकी गरदनपरके बाल। केसर।

अयालदार—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) बाल-बच्चेवाला आदमी।

अयालदारी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) घर-गृहस्थी।

अयूब—संज्ञा पुं० (अ०) 'ऐब' का बहु०।

अय्याम—संज्ञा पुं० (अ० 'यौम' का बहु०) १ दिन। २ काल। समय। ३ स्त्रियोंका रज-काल। मुहा०—**अय्याममें होना**=रजस्वला होना।

अय्यूब—संज्ञा पुं० (अ०) एक पैगम्बर जो बहुत बड़े सहनशील और ईश्वर-निष्ठ थे। यौ०—**सब्रे-अय्यूब**=हज़रत अय्यूबका-सा चरम सीमाका सब्र या सन्तोष।

अरक़—संज्ञा पुं० (अ०) स्वेद। पसीना। संज्ञा पुं० देखो 'अर्क़'।

अरक़गीर—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ एक प्रकारकी टोपी। २घोड़ेकी जीनके नीचे रखा जानेवाला कपड़ा। चारजामा।

अरक़रेज़ी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) ऐसा परिश्रम जिसमें पसीना आ जाय। बहुत परिश्रम।

अरकान—संज्ञा पुं० (अ० 'रुक्न' का बहु०) १ स्तंभ। खंभे। २ तत्त्व। ३ चरण। पद। यौ० **अरकाने दौलत**=राज्यके स्तम्भ या प्रमुख व्यक्ति।

अरगजा—संज्ञा पुं० (फा० अर्गजः) एक सुगन्धित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदिको मिलानेसे बनता है।

अरग़नून—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका बाजा जो अंग्रेजी अरगन बाजेकी तरहका होता है।

अरग़वान—संज्ञा पुं० (फा० अर्ग़वान)। एक पौधा जिसके फूल और फल बैंगनी रंगके होते हैं।

अरग़वानी—वि० (फा० अर्ग़वानी) बैंगनी रंग।

अरग़ून—संज्ञा पुं० दे० 'अरग़नून'।

अरज़—संज्ञा स्त्री० दे० 'अर्ज़'।

अरजल—संज्ञा पुं० (अ० अर्जल) वह घोड़ा जिसके अगले पैरका नीचेवाला भाग सफेद हो। ऐसा घोड़ा ऐबी माना जाता है।

अरज़ल—वि० (अ०) नीच। कमीना।

अरज़ाल—संज्ञा पुं० (अ० 'रज़ील'का बहु०) छोटे दरजेके और खराब आदमी।

अरज़ी—संज्ञा स्त्री० दे० 'अर्ज़ी।'

अरब—संज्ञा पुं० (अ०) १ एशिया

खंडका एक प्रसिद्ध मरुदेश । २ इस देशका निवासी ।

अरबा–वि० (अ० अरबऽ) चार । तीन और एक । यौ०–हद्द **अरबा**= चौहद्दी । संज्ञा पुं० घनफल ।

अरबाब–संज्ञा पुं० (अ० 'रब्ब' का बहु०) १ स्वामी । मालिक । २ ज्ञाता या कर्त्ता आदि । जैसे-**अरबाबे-सुखन**=कवि लोग ।

अरबिस्तान–संज्ञा पुं० (अ०)अरब देश ।

अरबी–वि० (अ०) अरब देशका । अरबसंबंधी । संज्ञा स्त्री० अरब देशकी भाषा ।

अरम–संज्ञा पुं० दे० 'इरम' ।

अरमगान संज्ञा पुं० (फा० अर्मगान) भेंट । उपहार ।

अरमान–संज्ञा पुं० (फा०) इच्छा । लालसा । चाह । हौसला ।

अरवाह–संज्ञा स्त्री० (अ० 'रूह' का बहु०) १ आत्माएँ । २ फरिश्ते । देवदूत ।

अरसलान–संज्ञा पुं०(तु० अर्सिलान) १ सिंह । २ सेवक । दास । गुलाम ।

अरसा–संज्ञा पुं० (अ० अरसः) १ समय । काल । २ विलम्ब । देर ।

अरस्तू–संज्ञा पुं० (यू०) यूनानका एक प्रसिद्ध विद्वान् और दार्शनिक । अरिस्टॉटल ।

अराज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ० आराज़ी) १ पृथ्वी । भूमि । २ जोती बोई जाने वाली जमीन । खेत ।

अराबची–संज्ञा पुं०(फा०)गाड़ीवान ।

अराबा–संज्ञा पुं० (फा० अराबः) बैलगाड़ी आदि ।

अरायज़–संज्ञा स्त्री० (अ०'अर्ज़' का बहु०) निवेदनपत्र । अर्जियाँ ।

अरीज़–वि० (अ०) ज़ियादा अरज़-वाला । चौड़ा ।

अरीज़ा–वि० (अ० अरीजः) जो अर्ज़ किया गया हो । निवेदित । (संज्ञा-पुं०) निवेदनपत्र । अरजी ।

अर्क़–संज्ञा पुं० (अ०) १ भभके आदिसे खींचा हुआ किसी पदार्थका रस जो औषधके काममें आता है । आसव । २ रस । ३ दे० 'अरक़' और उसके यौगिक ।

अर्ज़–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ सम्मान । प्रतिष्ठा । इज्जत । पद । ओहदा । ३ मूल्य । ४ आदर ।

अर्ज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ पृथ्वी । भूमि । जमीन । २ चौड़ाई । यौ०–**अर्ज़ व तूल**=चौड़ाई और लम्बाई । संज्ञा स्त्री०–विनती । निवेदन । प्रार्थना ।

अर्ज़–संज्ञा पुं० (फा०) १ मूल्य । दाम । २ सम्मान । प्रतिष्ठा । यौ०· अर्ज़ां ।

अर्ज़क़–वि० (अ०) नीला । नील वर्णका । यौ० अर्ज़क़-चश्म=वह जिसकी आँखें नीली हों ।

अर्ज़मन्द–वि० (फा०) सम्मान्य और अच्छे पदपर प्रतिष्ठित ।

अर्ज़ल–संज्ञा पुं० दे० 'अरजल' ।

अर्ज़ां–वि० (फा०) सस्ता । कम दामका ।

अर्ज़ानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सस्तापन।

अर्ज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) निवेदन-पत्र। प्रार्थनापत्र। वि० (अ०) १ अर्ज या पृथ्वीसंबंधी। २ लौकिक।

अर्ज़ी-नवीस–संज्ञा पु० (अ०+फा०) वह जो दूसरोंकी अर्जियाँ या प्रार्थनापत्र लिखता हो।

अर्श–संज्ञा पु० (अ०) मुसलमानोंके अनुसार आठवाँ या सबसे ऊँचा स्वर्ग जहाँ खुदा रहता है। मुहा०–**अर्शपर चढ़ाना**=बहुत बढ़ाना। बहुत तारीफ करना। **अर्शपर दिमाग होना**=बहुत अभिमान होना।

अर्श-मुअल्ला–संज्ञा पु० (अ०) सबसे ऊँचा और आठवाँ स्वर्ग। अर्श।

अल–प्रत्य० (अ० अल्) एक प्रत्यय जो शब्दोंके पहले लगकर उसपर जोर देता है। जैसे–अलगरज़।

अलगरज़–क्रि० वि० (अ०) तात्पर्य यह कि। सारांश यह कि।

अलगोज़ा–संज्ञा पु० (अ० अलगोजः) एक प्रकारकी बाँसुरी।

अलबत्ता–अव्य० (अ०) १ निस्सन्देह। बेशक। २ हाँ। बहुत ठीक। ३ लेकिन। परन्तु।

अलफ़ाज़–संज्ञा पु० (अ० 'लफ्ज़'का बहु०) १ शब्द-समूह। २ पारिभाषिक शब्द।

अलम–संज्ञा पु० (अ०) १ सेनाके आगे चलनेवाला सबसे बड़ा झंडा। २ पहाड़। पर्वत

अलमास–संज्ञा पु० (फा०) हीरा।

अलल्ख़सूस–क्रि० वि० (अ०) खास करके। विशेष रूपमें।

अलल् हिसाब–क्रि० वि० (अ०) बिना हिसाब किये। अचिन्तमें। यों ही (धन देना)।

अलविदा–संज्ञा स्त्री० (अ०) रमजान मासका अंतिम शुक्रवार।

अलवी–संज्ञा पु० (अ०) वे सैयद जो अलीकी सन्तान हों।

अलस्सबाह–क्रि० वि० (अ०) बहुत सबेरे। तड़के।

अलहदगी–संज्ञा स्त्री० (अ०) अलहदा या जुदा होनेका भाव। पार्थक्य।

अलहदा–वि० (अ०) (भाव० अलहदगी) अलग। जुदा। पृथक्।

अलहम्द–उल्लिल्लाह–(इ०) ईश्वरकी प्रार्थना हो।

अलाक़ा–संज्ञा पु० दे० 'इलाक़ा'।

अलानिया–क्रि० वि० (अ० अलानियः) खुल्लम-खुल्ला। खुले आम। स्पष्ट रूपमें।

अलामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ निशानी। चिह्न। २ पहिचान।

अलालत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ 'अलील' का भाव। २ बीमारी। रोग।

अलावा–क्रि० वि० दे० 'इलावा'।

अलीम–वि० (अ० 'इल्म'से) इल्म या जानकारी रखनेवाला। जानकार। वि० (अ०) कष्टदायक। (अलमसे)

अलील– वि० (अ०) रुग्ण। बीमार रोगी।

अल्-अब्द–संज्ञा पु० (अ०) ईश्वरका सेवक (प्रायः पत्रोंकी समाप्तिपर

लोग अपने हस्ताक्षरसे पहले लिखते हैं ।)

अल-अमान–(अ०) ईश्वर हमारी रक्षा करे । परमात्मा हमें बचावे ।

अलक़्त–वि० (अ०) १ काटा हुआ। २ रद्द किया हुआ । ३ समाप्त किया हुआ ।

अल्क़ाब–संज्ञा पु० (अ०) १ 'लक़ब' का बहु० । उपाधियाँ । यौ०–**अलक़ाब व आदाब**=सम्बोधनकी उपाधियाँ ।

अल-क़िस्सा–क्रि० वि० (अ०) तात्पर्य यह कि । संक्षेपमें यह कि ।

अलग़रज़–क्रि० वि० (अ०) तात्पर्य यह कि । मतलब यह कि ।

अलग़रज़ी–वि० दे० 'ग़रज़ी' ।

अल-ग़र्ज़–क्रि० वि० देखो 'अल् ग़रज़' ।

अलतमिश–संज्ञा पु० (तु०) सेनानायक । फौजका अफसर ।

अल्ताफ़–संज्ञा पु० (अ०) 'लुत्फ़' का बहु० । मेहरबानी । कृपा । अनुग्रह ।

अल-मस्त–वि० (फा०) १ नशेमें चूर । २ मस्त । मत्त)

अलमस्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०) मत्तता । मस्ती ।

अल्लामा–संज्ञा पु० (अ०अल्लामः) बहुत बड़ा बुद्धिमान् और विद्वान् ।

अल्लाह–संज्ञा पु० (अ०) ईश्वर । परमात्मा । यौ०–**अल्लाह ताला**=सर्वश्रेष्ठ ईश्वर ।

अल्लाह-बेली–(अ०) ईश्वर सहायक है । (प्रायः विदाई या अड़चनके समय)

अल्लाहो-अकबर–(अ०) ईश्वर महान है । (प्रायः प्रार्थना और आश्चर्यके समय इसका उपयोग होता है ।)

अलविदाऽ–संज्ञा पु० (अ०) रमजान मासका अन्तिम शुक्रवार । अव्यय । अच्छा, अब विदा । सलाम ।

अल् हक़–क्रि० वि० (अ०) वस्तुतः । सचमुच । अव्य०–हाँ, ठीक है ।

अल्-हम्दु–संज्ञा स्त्री० (अ०)कुरानका आरम्भिक पद ।

अल् हम्दुलिल्लाह–(अ०) ईश्वर धन्य है । परमात्माको धन्यवाद है ।

अवाख़िर–वि० (अ० 'आख़िर' का बहु०) अन्तिम । अन्तके ।

अवाम–संज्ञा पु० (अ०) आम लोग । जन साधारण ।

अवाम-उन्नास–संज्ञा पु०दे०'अवाम'

अवायल–वि० (अ०) "अव्वल" का बहु० । प्राथमिक । आरम्भिक । जैसे–**अवायल उम्र**=आरम्भिक जीवन ।

अवारजा–संज्ञा पु० (फा० अवारिजः) १ रोजकी बातें या जमा-खर्च आदि लिखनेकी बही । रोज-नामचा । २ खाता ।

अव्वल–वि० (अ०) १ पहला । २ प्रधान । मुख्य । सर्वश्रेष्ठ । सर्वोत्तम ।

अव्वलन–क्रि० वि० (अ०) पहले। आरम्भमें।

अव्वलीन–वि० बहु० (अ०) १ पहलेवाले। २ प्राचीन। पुराने।

अशअश–संज्ञा पुं० (फा०) प्रसन्नता-का सूचक शब्द।

अशआर–संज्ञा पुं० (अ०) 'शअर' या 'शेर' का बहु०। कविताओंके चरण। पद्य-समूह।

अशकाल–संज्ञा स्त्री० (अ०) 'शक्ल' का बहु०।

अशख़ास–संज्ञा पुं० (अ०) १ शख़्स-का बहु०–मनुष्योंका समूह। लोग। जन-समूह।

अशजार–संज्ञा पुं० (अ०) 'शजर' का बहु०। वृक्षसमूह। पेड़ों या दरख़्तोंका झुंड।

अशद–वि० (अ० अशद्द) बहुत तेज़ या अधिक। अत्यन्त। सख़्त।

अशफ़ाक़–संज्ञा पुं० (अ०) 'शफ़क़' का बहु०।

अशर–संज्ञा पुं० (अ०) १ दसवाँ भाग। २ भूमिकी आयका दशमांश जो मुसलमान बादशाह राज-करके रूपमें लेते थे। यौ०– अशे-अशीर–१ सौवाँ भाग। २ बहुत कम। अति अल्प।

अशरफ़–संज्ञा पुं० (फ़ा०) बहुत बड़ा शरीफ। बहुत सज्जन।

अशरफ़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सोने-का सिक्का। स्वर्ण-मुद्रा। मोहर।

अशरा–संज्ञा पुं० (अ० अशरः) दस दिन। जैसे-**अशरा मुहर्रम**–मुहर्रम-के दस दिन।

अशराफ़–संज्ञा पुं० (अ०) 'शरीफ़' का बहु०। भलेमानस। नेक आदमी सज्जन लोग।

अशराफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) भल-मनसाहत। सज्जनता। शराफ़त।

अशिया–संज्ञा स्त्री० (अ०) 'शै' का बहु०-चीज़ें। वस्तुएँ।

अश्क–संज्ञा पुं० (फा०) आँसू। अश्रु।

अश्ग़ाल–संज्ञा पुं० (अ०) 'शग़ल' का बहु०।

असग़र–वि० (अ०) बहुत छोटा।

असद–संज्ञा पुं० (अ०) १ सिंह। शेर। २ सिंह राशि।

असनाद–संज्ञा स्त्री० (अ०) 'सनद' का बहु०। प्रमाण-पत्र।

असब–संज्ञा पुं० (अ०) शरीरका पट्ठा या अगला भाग।

असबाब–संज्ञा पुं० (अ०) 'सबब' का बहु०। १ कारण-समूह। बहुतसे सबब। २ सामान। सामग्री। जैसे– **असबाबे जंग**–युद्धसामग्री; **असबाबे खानादारी**=गृहस्थीका सामान।

असम–संज्ञा पु० (अ०) (बहु० आसाम) १ पाप। गुनाह। २ अपराध।

असमार–संज्ञा पु० (अ०) 'समर' का बहु०। फल।

असर–संज्ञा पु० (अ०) प्रभाव।

असरार–संज्ञा पुं० (अ०) 'सर' का बहु०। भेद। गुप्त बात। रहस्य।

असल–संज्ञा पु० (अ० अस्ल) १ जड़। बुनियाद। २ मूलधन। वि० दे० 'असली'।

असलह–संज्ञा पु० (अ०) हथियार। शस्त्र।

असलहे-खाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) शस्त्रागार।

असला–क्रि० वि० (अ० अस्ला) १ बिलकुल। जरा भी। कुछ भी। २ कदापि। हरगिज़।

असलियत–संज्ञा स्त्री० (अ० अस्ल) 'असल' का भाव। वास्तविकता।

असली–वि० (अ० अस्ल) १ सच्चा। खरा। २ मूल। प्रधान। ३ बिना मिलावटका। शुद्ध।

असवद–वि० (फा०) यौ०- **वहरे-असवद**।

असहाब–संज्ञा पु० (अ०) साहबका बहु०।

असा–संज्ञा पु० (अ०) १ सोंटा। डंडा। २ चांदी या सोनेका मढ़ा हुआ डंडा।

असामी–संज्ञा स्त्री० (अ० आसामी) १ व्यक्ति। प्राणी। २ जिससे किसी प्रकारका लेन-देन हो। ३ वह जिसने लगान पर जोतनेके लिए जमींदारसे खेत लिया हो। रैयत। काश्तकार। जोता। ४ मुद्दालेह। देनदार। ५ अपराधी। मुलजिम। ६ वह जिससे किसी प्रकारका मतलब गाँठना हो।

असालत–संज्ञा स्त्री० (अ०) 'असल' का भाव। वास्तविकता। असलियत। **मुहा०–असालतमें फ़र्क होना**= दोगला होना। वर्णसंकर होना।

असालतन्–क्रि० वि० (अ०) **स्वयं** व्यक्ति रूपमें। खुद।

असास-उल-बैत–संज्ञा पु० (अ०) घर-गृहस्थीके सब सामान।

असीर–संज्ञा पु० (फा०) वह जो क़ैदमें हो। बन्दी।

असीरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) असीर या कैद होनेकी अवस्था। कैद।

असील–वि० (अ०) १ उच्च वंश-का। बड़े खानदानका। २ सुशील। शान्त स्वभावका।

असूल–संज्ञा पु० दे० 'उसूल'

अस्कर–संज्ञा पु० (अ०) वि० अस्करी। १ सेना। फौज। लश्कर। २ रातका अन्धकार।

अस्तग़फ़िर उल्लाह–(अ०) मैं ईश्वरसे क्षमा माँगता हूँ। ईश्वर मुझे क्षमा करे।

अस्तबल–संज्ञा पु० (अ०) घोड़ोंके रहनेकी जगह। अश्वशाला।

अस्तर–संज्ञा पु० (फा०) १ खच्चर। २ नीचेकी तह या पल्ला। ३ दोहरे कपड़ेमें नीचेका कपड़ा। भितल्ला। ४ चंदनका तेल जिसे आधार बनाकर इत्र बनाए जाते हैं। जमीन। ५ वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ साड़ीके नीचे लगाकर पहनती हैं। अँतरौटा। अंतरपट।

अस्तरकारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दीवारपर पलस्तर लगाना। २ कपड़ेमें अस्तर लगाना।

अस्तुरा–संज्ञा पु० दे० 'उस्तरा'

अस्नाय–संज्ञा पुं० (अ०) बीचका समय। दो घटनाओंके मध्यका काल।

अस्प–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० अश्व) घोड़ा।

अस्पगोल–संज्ञा पुं० दे० 'इस्पगोल'

अस्फंज–संज्ञा पुं० (यू० इस्फंज) मुरदा। बादल। स्पंज।

अस्मत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० अस्मतवर।) १ सदा सब पापोंसे अपने आपको बचाना। २ स्त्रीका (पातिव्रत।)

अस्माऽ–संज्ञा पुं० 'इस्म'का बहु०।

अस्र–संज्ञा पुं० (अ०) १ काल। समय। जैसे–**हम अस्र**=सम-कालीन। २ युग। ३ दिनका चौथा पहर।

अस्ल–संज्ञा पुं० दे० 'असल'।

अस्लम–वि० (अ०) १ बचा हुआ। २ रक्षित। ३ पूरा। पूर्ण।

अहक़र–वि० (अ०) बहुत तुच्छ। (अत्यन्त विनम्रता दिखलानेके लिए अपने सम्बन्धमें प्रयुक्त।)

अहकाम–संज्ञा पुं० (अ०) हुक्मका बहु०। १ आज्ञाएँ। २ आज्ञापत्र आदि।

अहद–संज्ञा पुं० (अ० अह्द) १ पक्का निश्चय। करार। प्रतिज्ञा। यौ०–**अहद-पैमान** = आपसमें पक्का निश्चय। करार। २ शासन। राज्य। ३ शासन-काल। संज्ञा पुं० (अ० अहद) १ इकाई। एक। २ संख्या। अदद।

अहद-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) प्रतिज्ञा-पत्र।

अहद-शिकन–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह जो कोई करार करके उसके मुताबिक काम न करे। प्रतिज्ञा तोड़ना।

अहद-शिकनी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) करारके मुताबिक काम न करना। प्रतिज्ञा तोड़ना।

अहदियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) इकाई। एकत्व। एक होना।

अहदी–संज्ञा पुं० (अ०) बहुत बड़ा आलसी।

अहबाब–संज्ञा पुं० (अ०) 'हबीब'का बहु०। दोस्त। मित्र। यार लोग।

अहमक़–संज्ञा पुं० (अ०) (क्रि०वि० अहमकाना) बेवकूफ। मूर्ख।

अहमद–वि० (अ०) बहुत प्रशंसनीय। संज्ञा पुं० हजरत मुहम्मदका नाम।

अहमदी–संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमान।

अहरन–संज्ञा स्त्री० (फा०) निहाई जिसपर रखकर सुनार और लोहार आदि कोई चीज पीटते हैं।

अहरार–वि० (अ०) १ उदार। २ दाता। दानी। संज्ञा पुं०। आजकल मुसलमानोंका एक राजनीतिक दल जिसके विचार अपेक्षाकृत अधिक उदार हैं।

अहल–वि० (अ० अह्ल) योग्य। लायक। संज्ञा पुं० १ व्यक्ति। आदमी। २ लोग। ३ परिवार या साथके लोग। ४ मालिक। स्वामी।

अहल-अल्लाह–संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वरनिष्ठ। धर्मात्मा।

अहलकार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) काम-धन्धा करनेवाले कर्मचारी।

अहलमद–संज्ञा पुं० (अ० अहलेमद) अदालतके किसी विभागका प्रधान मुन्शी या कर्मचारी।

अहलिया–संज्ञा स्त्री० (अ० अह्लियः) पत्नी। जोरू।

अहले-कलाम–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ लिखने-पढ़नेवाले लोग। २ साहित्यसेवी।

अहले-किताब–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो किसी धर्म-ग्रंथमें प्रतिपादित धर्मका अनुयायी हो। २ वह जो किसी ऐसे धर्मका अनुयायी हो जिसका उल्लेख कुरानमें हो।

अहले-खाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) घरके लोग। बाल-बच्चे। सं० स्त्री० –घरकी मालिक। गृहस्वामिनी।

अहले-ज़बान–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) भाषाके पण्डित। भाषा-विज्ञ।

अहले-ज़िम्मा–संज्ञा पुं० (अ०) १ वे काफ़िर या विधर्मी जो किसी मुसलमान बादशाहके राज्यमें रहते हों और अपने धार्मिक कृत्य छिपाकर करते हों। २ प्रजा। रिआया।

अहले-रोज़गार–संज्ञा पुं० (अ+फा०) १ रोजगार या व्यवसाय करनेवाले। व्यवसायी। २ नौकरी करनेवाले लोग।

अहवाल–संज्ञा पुं० (अ) १ 'हाल' का बहु०। २ विवरण।

अहसन–वि० (अ०) बहुत नेक। बहुत अच्छा।

अहसास–संज्ञा पुं० दे० 'एहसास'।

अहाता–संज्ञा पुं० (अ० इहातः) १ घेरा हुआ खुला स्थान या मैदान। बाड़ा। २ हलका। मंडल।

अहाली–संज्ञा पुं० (अ०) 'अहल'का बहु०। परिवारके अथवा साथ रहनेवाले लोग। बन्धु-बान्धव। यौ०–**अहाली-मवाली** = साथ रहनेवाले और नौकर-चाकर आदि।

आँ–सर्व० (फा०) वह। यौ०–**आँकि**=वह जो।

आँब–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० आम्र)। आम नामक वृक्ष या उसका फल।

आइन्दा–वि० (फा० आइन्दः या आयन्दः) आनेवाला। आगंतुक। संज्ञा पुं०–भविष्यकाल। भविष्य। क्रि० वि०। आगे। भविष्य।

आईन–संज्ञा पुं० (अ०) १ क़ायदा। नियम। २ क़ानून। ३ सजावट। शृंगार।

आईनबन्दी–संज्ञा स्त्री० (अ+फा०) किसी राजा आदिके आगमनके समय नगरमें होनेवाली सजावट।

आईना–संज्ञा पुं० (फा० आईन) १ शीशा। दर्पण। २ शीशेके झाड़ फानूस आदि।

आईना-साज़–संज्ञा पुं० (फा०) वह जो आईना या शीशा बनाता है।

आईना-साज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) आईने या शीशे बनानेका काम।

आईमा-संज्ञा पुं० (अ०) दानमें मिली हुई भूमि जिसका कर न देना पड़े। यौ०-**आईमादार**।

आक़-वि० (अ०) माता पिताका विरोध या द्रोह करनेवाला (पुत्र)। मुहा०-**आक़ करना**=पुत्रको उत्तराधिकारसे वंचित करना।

आक़-नामा-संज्ञा पुं (अ०+फ़ा०) वह लेख जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपने किसी अयोग्य पुत्रको उत्तराधिकारसे वंचित करता है।

आक़बत-संज्ञा स्त्री० (अ० आक़िबत) १ मरनेके पीछेकी अवस्था। २ परलोक।

आक़बत-अन्देश-संज्ञा पुं० (अ० +फ़ा०) वह जो आक़बत या परिणामका ध्यान रखता है। परिणामदर्शी। दूर-दर्शी।

आक़बत-अन्देशी-संज्ञा स्त्री०(अ० +फ़ा०) परिणाम-दर्शिता।

अक़रक़रहा-संज्ञा पुं० (अ०) एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काममें आती है। अकरकरा।

आक़ा-संज्ञा पुं० (अ०) १ साहब। मालिक। स्वामी। २ ईश्वर।

आक़िब-वि० (अ०) १ पीछे आनेवाला। परवर्त्ती। २ सहायक।

आक़िबत-संज्ञा स्त्री०-देखो 'आक़बत'।

आक़िल-वि० (अ०) (स्त्री० आकिलः) अक्लवाला। अक्लमंद। बुद्धिमान्।

आक़िलाना-क्रि० वि० (अ०) बुद्धिमत्तापूर्ण।

आख़िज़-वि० (अ०) १ लेनेवाला। ग्रहण करनेवाला। २ पकड़नेवाला। ३ उद्धृत करनेवाला।

आख़िर-वि० (अ०) (बहु० अवाख़िर) अन्तिम। पीछेका। क्रि० वि०-अन्तमें। अन्तको। संज्ञा पुं०-१ अन्त। समाप्ति। २ परिणाम। फल।

आख़िरकार-वि० (अ०+फ़ा०) अन्तमें। अन्ततोगत्वा।

आख़िरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मृत्युका दिन। अन्तका दिन। २ सृष्टिके अन्तका समय। क़यामत। प्रलय। परलोक।

आख़िरी-वि० (अ०) अन्तिम। अन्तका। पिछला।

आख़िरुल् अमर-अव्यय (अ०) अन्तको। अन्तमें। वि० (अ०) अन्तिम। पिछली।

आख़िर-उल्-ज़माँ-संज्ञा पु०(अ०) समयका अन्त।

आख़ून-संज्ञा पुं० (फ़ा० आखुँद) शिक्षक। उस्ताद।

आख़ोर-संज्ञा पुं० (फ़ा० आख़ूर) १ घोड़ोंके रहनेकी जगह। २ कूड़ा-करकट।

आख्ता-वि० (फ़ा० आख्तः) जिसके अंडकोश चीरकर निकाल लिये गए हों।

आग़ा-संज्ञा पुं० (तु०) १ बड़ा भाई। अग्रज। २ साहब। महाशय। ३

मालिक। स्वामी। ४ काबुलकी तरफ़के मुगलोंकी एक उपाधि।

आग़ाज़–संज्ञा पुं० (अ०) शुरू। आरम्भ।

आगाह–वि० (फा०) १ जिसे पहलेसे किसी बातकी सूचना मिल गई हो। २ जानकार। वाकिफ़।

आगाही–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ पहलेसे मिलनेवाली सूचना। २ जानकारी। परिचय। ज्ञान।

आग़ोश–संज्ञा स्त्री० (फा०) गोद। कोड़।

आग़ोशी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ गोदमें लेना। २ गले लगाना।

आचार–संज्ञा पुं० (फा०) मसालोंके साथ तेल आदिमें रखा हुआ फल। अथाना। अचार।

आज–संज्ञा पुं० (अ०) हाथी-दाँत।

आज़म–वि० (अ० अअज़म) बहुत बड़ा। महान्।

आज़माइश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ परीक्षा। जाँच। परख। २ परीक्षा-रूपमें किया जानेवाला प्रयत्न।

आज़माना–क्रि० वि० (फा०आज़-माइश) परीक्षा करना। परखना।

आज़मूदा–वि० (फा० आजमूदः) जाँचा या आजमाया हुआ। परीक्षित।

आज़मूदा-कार–वि० (फा०) १ अनुभवी। २ चतुर। चालाक।

आज़ा–संज्ञा पुं० (अ०अअज़ा)(वि० आजाई) अज़ु या अज़ोका बहु०। शरीरके अंग और जोड़।

आज़ाए-तनासुल–पुं० (अ०) पुरुषकी इंद्रिय। लिंग।

आज़ाए-रईसा–संज्ञा पुं० (अ०) शरीरके मुख्य अंग; जैसे हृदय, मस्तक, यकृत आदि।

आज़ाद–संज्ञा पुं० (फा०) १ जो बद्ध न हो। छूटा हुआ। मुक्त। बरी। २ बेफिक्र। बेपरवाह। ३ स्वतन्त्र। स्वाधीन। ४ निडर। निर्भय। ५ स्पष्टवक्ता। हाज़िर-जवाब। ६ सूफ़ी सम्प्रदायके फ़क़ीर जो स्वतंत्र विचारके होते हैं।

आज़ादगी–संज्ञा स्त्री० दे० "आज़ादी"।

आज़ादी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ स्वतन्त्रता। स्वाधीनता। २ रिहाई। छुटकारा।

आज़ार–संज्ञा पुं० (फा०) १ दुःख। कष्ट। २ बीमारी। रोग।

आजिज़–वि० (अ०) (क्रि० वि० आजिज़ाना) १ दीन। विनीत। २ परेशान। तंग।

आजिज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रार्थना। विनती। २ दीनता।

आज़िम–वि० (अ०) अज़म या इरादा करनेवाला। विचार करनेवाला।

आज़िर–वि० (अ०) १ उज्र करनेवाला। २ क्षमा माँगनेवाला।

आज़ुर–संज्ञा (पुं०) फारसी वर्षका नवाँ महीना।

आज़ुर्दगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अप्रसन्नता। नाराज़गी। २ मानसिक क्लेश। दुःख।

आजुर्दह–संज्ञा पुं०(फा०) १ सताया हुआ । २ दुखी । ३ चिन्तित ।

आनश–संज्ञा स्त्री० दे० "आतिश"।

आतिफ़–वि० (अ०) कृपा करनेवाला। अनुग्रह करनेवाला ।

आतिफ़त–संज्ञा स्त्री० (फ़०) दया। कृपा । मेहरबानी ।

आतिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अग्नि । आग । २ प्रकाश । ३ क्रोध । गुस्सा । यौ०–**आतिशका परकाला**=बहुत चलता हुआ और तेज आदमी ।

आतिश-अंगेज़-वि०आग लगानेवाला।

आतिश-कदा–संज्ञा पुं० (फा०) वह मन्दिर जिसमें पवित्र अग्नि पूजाके लिये रहती हो । अग्नि-मन्दिर ।

आतिशखाना–संज्ञा पुं० (फा०) वह मन्दिर जिसमें पवित्र अग्नि प्रतिष्ठित हो ।

आतिश-ज़दगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) आग लगाना । अग्नि-कांड ।

आतिश-ज़न–संज्ञा पुं० (फा०) १ ककनुस नामक कल्पित पक्षी । २ चकमक पत्थर ।

आतिश–ज़बाज़–वि० (फा०+अ०) बहुत तेजका। गरम मिजाजवाला। क्रोधी ।

आतिशदान–संज्ञा पुं० (फा०) अँगीठी, जिसमें आग रखते हैं ।

आतिश-परस्त–संज्ञा पुं० (फा०) अग्नि-पूजक ।

आतिश-परस्ती-संज्ञा स्त्री० (फा०) अग्नि-पूजा ।

आतिश-बाज़–संज्ञा पुं० (फा०) वह जो आतिशबाज़ी बनाता हो ।

आतिश-बाज़ी–संज्ञा स्त्री०(फा०) १ आगसे खेलना । २ बारूदके बने खिलौने जिन्हें जलानेसे तरह-तरहकी और रंग-बिरंगी चिनगारियाँ निकलती हैं ।

आतिश बार–वि० (फा०) (संज्ञा आतिशबारी) आग बरसानेवाला ।

आतिश-मिज़ाज़–वि० (फा०) गुस्सेवर । क्रोधी ।

आतिशी–वि० (फा०) आतिश या आगसे संबंध रखनेवाला ।

आतिशी शीशा–संज्ञा पुं० (फा०) वह शीशा जिसपर सूर्यकी किरणोंके पड़नेसे अग्नि उत्पन्न होती है। सूर्यकान्त । सूरजमुखी शीशा।

आतू–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) पढ़ानेवाली । शिक्षिका ।

आतून–संज्ञा स्त्री० देखो "आतू"।

आदत–संज्ञा स्त्री०(अ०) १स्वभाव। प्रकृति । २ अभ्यास । बान । टेव।

आदतन्–क्रि० वि० (अ०) आदत या अभ्यासके कारण ।

आदम–संज्ञा पुं० (अ०)१ मुसलमानी धर्मके पहले पैग़म्बर (अवतार) जो मनुष्य-मात्रके आदि पुरुष माने जाते हैं। २ आदमी। मनुष्य।

आदम-खोर–संज्ञा पुं०(अ+फा०) वह जो मनुष्योंको खाता है । मनुष्य-भक्षक ।

आदम-ज़ाद–संज्ञा पुं० (अ०+फा०)

१ वह जो मनुष्यसे उत्पन्न हुआ है। मानवजाति।

आदमी–संज्ञा पुं० (अ० आदम) १ आदमकी संतान। मनुष्य। २ मानवजाति। मुहा०–**आदमी बनना**=सभ्यता सीखना। अच्छा व्यवहार सीखना। २ नौकर। चाकर। सेवक।

आदमीयत–संज्ञा स्त्री० (अ+फा० प्रत्य०) मनुष्यता। मनुष्यत्व।

आदा–संज्ञा पुं० (अ० "उदू" का बहु०) शत्रुलोग।

आदाद–संज्ञा स्त्री० (अ० "अदद" का बहु०) संख्याएँ।

आदाब–संज्ञा पुं०(अ० "अदब' का बहु०) १ अच्छे ढंग। शिष्टाचार। २ नियम। ३ अभिवादन। सलाम। बन्दगी। क्रि० प्र०–बजा लाना। मुहा०–**आदाब अर्ज़ करना**= नम्रतापूर्वक अभिवादन करना। यौ०–**आदाब व अलक़ाब**=पद और मर्यादा आदिके सूचक शब्द।

आदिल–वि० (अ०) अदल या न्याय करनेवाला। न्यायशील।

आदी–वि० (अ०) जिसे किसी बात-की आदत हो। अभ्यस्त।

आन–संज्ञा स्त्री० (अ० मि० सं० आणि) १ समय। २ क्षण। पल। ३ ढंग। तर्ज़। अकड़। ऐंठ। ठसक। अदा। विशेषतः प्रेमिकाकी) यौ०–**आन बान** १ शोभा। २ ठसक। अदा।

आनन-फानन–क्रि० वि० (अ०) १ तत्काल। २ एकाएक।

आफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ विपत्ति। आपत्ति। २ कष्ट। दुःख। ३ मुसीबतके दिन। मुहा०–**आफ़त उठाना**=१ दुख सहना। विपत्ति भोगना। २ हलचल मचा-ना। यौ०-**आफ़तका परकाला**= १ किसी कामको बड़ी तेजीसे करने वाला। कुशल। २ हलचल मचाने-वाला। मुहा०–**आफ़त खड़ी करना**=विपद उपस्थित करना। **आफ़त मचाना** = हलचल करना। उधम मचाना। दंगा करना। **आफ़त लाना**=१विपद उपस्थित करना। २ बखेड़ा खड़ा करना।

आफ़ताब–संज्ञा पुं० (फा०) १ सूरज। सूर्य। २ धूप।

आफ़ताब–संज्ञा पु०(फा०आफ़ताब:) पानी रखनेका टोंटीदार लोटा। आबताबा।

आफ़ताबी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक प्रकारका छत्र। सूरजमुखी। २ एक प्रकारकी आतिशबाजी।

आफ़रीदगार–संज्ञा पु० (फा०) सृष्टिकर्ता। ईश्वर।

आफ़रीदा–वि०(आफ़रीद:)उत्पन्न। जात।

आफ़रीन–अव्य० (फा०) शाबाश। वाह वाह। धन्य हो।

आफ़रीनश–संज्ञा स्त्री० (फा०) सृष्टि करना। उत्पन्न करना।

आफ़ाक़–संज्ञा पु० (अ०) १ "उफ़क़" का बहु०। आस्मानके किनारे। २ संसार। दुनिया।

आफ़ात—संज्ञा स्त्री० (अ० "आफ़त" का बहु०) आफतें। मुसीबतें। विपत्तियाँ।

आफ़ियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) आराम। सुख-चैन। यौ०—**खर-आफ़ियत**=कुशल-मंगल।

आब—संज्ञा पु० (फा० मि० सं० अप्) पानी। जल। संज्ञा स्त्री० १ चमक। तड़क-भड़क। कान्ति। पानी। २ शोभा। रौनक़। छबि। ३ तलवारका पानी। ४ इज्जत। प्रतिष्ठा।

आब-कार—संज्ञा पु० (फा०) वह जो शराब बनाता या बेचता हो। कलाल।

आब-कारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वह स्थान जहाँ शराब चुआई या बेची जाती हो। शराब खाना। कलवरिया। २ मादक वस्तुओंसे संबंध रखनेवाला सरकारी मुहकमा।

आब-ख़ाना—संज्ञा पु० (फा०)शौच त्याग करनेका स्थान। पाखाना।

आब-ख़ोर—संज्ञा पु० (फा०) घाट। किनारा। तट।

आब-ख़ोरद—संज्ञा पु० (फा०) १ अन्न-जल। २ खाने-पीनेकी चीज़।

आब-ख़ोरा—संज्ञा पु० (फा० आब-खोर) पानी पीनेका कटोरा।

आब-गीना—संज्ञा पु० (फा०) १ दर्पण। शीशा। २ हीरा। ३ पानी पीनेका गिलास या कटोरा।

आबगीर—संज्ञा पुं० (फा०) १ पानीका गड्ढा। २ तालाब।

आब-जोश—संज्ञा पु० (फा०) १ मांस आदिका शोरबा। रसा। २ एक प्रकारका मुनक्का।

आब-ताब—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चमक-दमक। तड़क-भड़क। रौनक़। २ शोभा। वैभव।

आब-दस्त—संज्ञा पु० (फा०) १ पानीसे हाथ-पैर धोना। २ मल-त्यागके उपरान्त जलसे गुदा धोना। पानी छूना।

आब-दान—संज्ञा पु० (फा०) १ पानी रखनेका बर्तन। २ तालाब।

आब-दाना—संज्ञा पु० (फा०) १ अन्न-पानी। दाना-पानी। अन्न-जल। २ जीविका। रोज़ी। ३ रहनेका संयोग।

आबदार—संज्ञा पु० (फा०) पानी रखनेवाला नौकर। वि० चमक-दार। जिसमें आब हो।

आब-दारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चमक-दमक। शोभा। २ आबदार-का पद या काम।

आब-दीदा—वि० (फा० आबदीद:) जिसकी आँखोंमें आँसू भरे हों। अश्रपूर्ण।

आबनाए—संज्ञा स्त्री० (फा०) जल-डमरू-मध्य।

आबनूस—संज्ञा पु० (फा०) (वि० आबनूसी) एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी काली, बहुत मजबूत और भारी होती है।

आब-पाशी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ खेतमें पानी देना। सींचना। २ पानीका छिड़काव करना।

आब-रवाँ—संज्ञा पु० (फा०) बहता हुआ पानी। संज्ञा स्त्री०— एक प्रकारकी महीन और बढ़िया मलमल।

आबरू—संज्ञा स्त्री० (फा०) इज़्ज़त। प्रतिष्ठा। बड़प्पन। मान।

आबला—संज्ञा पु० (फा० आब्लः) फफोला। छाला।

आब-शार—संज्ञा पु० (फा०) १ पानीका झरना। सोता। २ जल-प्रपात।

आब-हवा—संज्ञा स्त्री० (फा०) सरदी-गरमी या स्वास्थ्य आदिके विचार-से किसी देशकी प्राकृतिक स्थिति। जल-वायु।

आबाद—वि० (फा०) १ बसा हुआ। २ सब प्रकारसे सुखी और प्रसन्न।

आबादकार—संज्ञा पु० (फा०) पड़ती जमीनको आबाद करनेवाला।

आबादानी—संज्ञा स्त्री० (फा० आबाद) १ बसा हुआ और सुख-सम्पन्न स्थान। २ सभ्यता। संस्कृति। ३ सम्पन्नता और वैभव।

आबादी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बस्ती। २ जन-संख्या। मर्दुम-शुमारी। ३ वह भूमि जिसपर खेती होती हो।

आबान—संज्ञा पु० (फा०) फारसी वर्षका आठवाँ महीना।

आबा-वइज़दाद—संज्ञा पु० (अ०) १ बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा। २ कुल। वंश।

आबिद—संज्ञा पुं० (अ०) इबादत या पूजा करनेवाला। पूजक। भक्त।

आबिस्तगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) गर्भवती होना।

आबिस्तनी—संज्ञा स्त्री० दे० "आबिस्तगी"।

आबी—वि० (फा०) आब या जल-सम्बन्धी। जलका। संज्ञा स्त्री० एक प्रकारकी रोटी।

आबे-अंगूरी—संज्ञा पु० (फा०) अंगूरकी बनी शराब।

आबे-इशरत—संज्ञा पु० (फा०+अ०) शराब। मद्य।

आबे कौसर—संज्ञा पु० (फा०) बहिश्त या स्वर्गकी कौसर नामक नदीका जल जो सबसे अच्छा और स्वादिष्ट माना जाता है।

आबे-खिज्र—संज्ञा पु० (फा०) अमृत।

आबे-नुक़रा—संज्ञा पुं० (फा०) पारा। पारद।

आबे-बक़ा—संज्ञा (फा०) अमृत।

आबे बाराँ—संज्ञा पुं० (फा०) वर्षा-का जल।

आबे-शोर—संज्ञा पुं० (फा०) १ खारा पानी २ समुद्रका पानी।

आबे-हयात—संज्ञा पु० (फा०) अमृत।

आबे-हराम—संज्ञा पु० (फा०+अ०) १ अपवित्र और अपेय जल। २ शराब। मद्य।

आम—वि० (अ०) साधारण। मामूली। संज्ञा पु० जनसाधारण। जनता।

आमद—संज्ञा स्त्री० (फा०) १

आगमन । आना । आमदनी । यौ०-**आमदो-रफ़्त**- १ आवागमन । आना और जाना । २ मेल-जोल । ३ आमदनी । आय । यौ०-**आमदो-खर्च**=आय-व्यय ।

आमदनी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ आय । प्राप्ति । आनेवाला धन । २ व्यापारकी वस्तुएं जो और देशोंसे अपने देशमें आवें । रफ्तनीका उल्टा । आयात ।

आम फ़ह्म-वि० (अ०+फा०) जनसाधारणके समझने योग्य । सरल ।

आमादगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) आमादा या तैयार होना । तत्परता । सन्नद्धता ।

आमादा-वि० (फा० आमादः) (संज्ञा आमादगी) तत्पर । सन्नद्ध । तैयार ।

आमास-संज्ञा पुं० (फा०) शरीरका कोई अंग सूजना । सूजन । वरम ।

आमिल-संज्ञा पुं० (अ०) १ अमल या पालन करनेवाला । २ हाकिम । अधिकारी । ३ कारीगर । दक्ष । ४ जादू टोना करनेवाला ।

आमीन-अव्य० (अ०) १ ईश्वर करे, ऐसा ही हो । तथास्तु । २ ईश्वर हमारी रक्षा करे ।

आमेज़िश-संज्ञा स्त्री० (फा०) मिलानेकी क्रिया । मिलाना । मिलावट ।

आमोख़्ता-संज्ञा पुं०(फ०आमोख़्तः) पढ़ा हुआ पाठ । मुहा०-**आमोख़्ता करना या पढ़ना**=पढ़ा हुआ पाठ फिरसे दोहराना ।

आम्मः-वि० (अ०) १ आम । सार्वजनिक । २ प्रसिद्ध । मशहूर ।

आयत-संज्ञा स्त्री०(अ०) १ निशान । चिह्न । संकेत । २ कुरानका कोई वाक्य ।

आयद-वि० (फा०) १ प्रवृत्त । २ प्रयुक्त होने योग्य ।

आयन्दा-वि० (फा०) देखो "आइन्दा" ।

आया-अव्य० (फा०) क्या । क्या या नहीं । जैसे-आप बतलावें कि आया आप जायँगे या नहीं । संज्ञा-स्त्री० (पुर्त०) बच्चोंकी देख-रेख करनेवाली स्त्री । दाई । धाय ।

आर-संज्ञा पुं० (अ०) १ शरम । लज्जा । २ प्रतिष्ठा । बदनामी ।

आरज़ा-संज्ञा पुं० (अ० आरिज़ः) (बहु० अवारिज़) बीमारी । रोग ।

आरज़ी-वि० (अ०) १ जो वास्तविक या आवश्यक न हो । यों ही । २ आकस्मिक ।

आरज़ू-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ इच्छा । वांछा । २ अनुनय । विनय । विनती ।

आरज़ू-मन्द-वि० (फा०) (संज्ञा आरज़ूमन्दी) आरज़ू या कामना रखनेवाला । इच्छुक ।

आरद-संज्ञा पु० (फा०) आटा ।

आरा-प्रत्य० (फा०) सजानेवाला । शोभा बढ़ानेवाला । (यौगिक शब्दोंके अंतमें जैसे-**जहान-आरा**)

आराइश–संज्ञा स्त्री० (फा०) सजावट। सज्जा।

आराई–संज्ञा स्त्री० (फा०) सजानेकी क्रिया।

आराज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ० अर्जका बहु०) १ जमीन। भूमि। २ वह ज़मीन जिसमें खेती-बारी होती है।

आराबा–संज्ञा पुं० (फा० आराबः) बैलगाड़ी। छकड़ा।

आराम–संज्ञा पुं० (फा०) १ चैन। सुख। २ चंगापन। सेहत। स्वास्थ्य। विश्राम। थकावट मिटाना। दम लेना। मुहा०–**आराम करना**=सोना। **आराममें होना**=सोना। **आराम लेना**=विश्राम करना। **आरामसे**=फ़ुरसतमें। धीरे धीरे।

आराम-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ आराम करनेकी जगह। विश्राम करनेका स्थान। २ सोनेकी जगह। शयनागार। विश्रान्ति-गृह।

आराम-तलब–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह जो हर तरहका आराम चाहता हो। २ विलास-प्रिय। ३ सुस्त। निकम्मा।

आराम-तलबी–संज्ञा स्त्री० (फा०) हर तरहका आराम चाहना।

आरामी–संज्ञा पुं० दे० "आराम-तलब"।

आरास्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सजावट। सज्जा।

आरास्ता–वि० (फा० आरास्तः) सजाया हुआ। सुसज्जित।

आरिज़–संज्ञा पुं० (अ०) गाल। वि० १ घटित होनेवाला। होनेवाला। जैसे:–मर्ज़ आरिज़ हुआ। २ बाधक। रोकनेवाला।

आरिन्दा–वि० (फ़ा० आरिन्दः) लानेवाला। संज्ञा पुं० भारवाहक। मजदूर।

आरिफ़–वि० (अ०) (स्त्री० आरिफ़ा) (बहु० उरफ़ा) १ जानने या पहिचाननेवाला। २ सब्र या सन्तोष करनेवाला। संज्ञा पुं०–साधु। महात्मा।

आरियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) कोई चीज़ कुछ समयके लिये मँगनी माँगना।

आरियतन–क्रि० वि० (अ०) मँगनीके तौरपर। माँगकर।

आरियती–वि० (अ०) मँगनी माँगा हुआ।

आरी–वि० (अ०) १ नंगा। नग्न। २ खाली। रिक्त। ३ थका हुआ। शिथिल। ४ निस्सहाय। दीन। संज्ञा पुं०–वह गद्य जिसमें न अनुप्रास हो और न शब्द एक वज़नके हों।

आरे-बले–संज्ञा पुं० (फा०) "हाँ हाँ" कहना, पर काम न करना। टाल-मटोल।

आल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लड़कीकी संतान। नाती आदि। २ सन्तान। वंशज। ३ वंश। कुल। संज्ञा पुं० (फा०) १ लाल रंग। २ खेमा। ३ एक प्रकारकी शराब।

आलत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ औज़ार आदि । उपकरण । २ पुरुषकी इंद्रिय ।

आलम–संज्ञा पुं०(अ०) १ दुनिया । संसार । २ अवस्था । दशा । ३ जन-समूह ।

आलम-गीर–(अ० फा०) १ संसार-विजयी । जगत्-विजयी । २ संसार-व्यापी । औरंगज़ेब बादशाहकी पदवी ।

आलमे ख़्वाब-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) सोनेकी हालत । निद्रित अवस्था ।

आलमे-ग़ैब–संज्ञा पुं० (अ०) परलोक ।

आलमे-फ़ानी–संज्ञा पुं० (अ०) यह लोक जो नश्वर है ।

आलमे-बाला–संज्ञा पुं० (अ०) स्वर्ग । बहिश्त ।

आलमे-बेदारी–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) जाग्रत अवस्था । जागनेकी हालत ।

आलमे-सिफ़ली–संज्ञा पुं० (अ०) पृथ्वी । संसार ।

आला–संज्ञा पुं० (अ० आलः) १ औज़ार । २ उपकरण । वि० (अ० अअ्ला) सबसे बढ़िया । श्रेष्ठ ।

आलाइश–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) शरीरमें रहने वाला मल या और कोई दूषित पदार्थ ।

आलात–संज्ञा पुं० (अ०) "आलत" का बहु० । औज़ार वग़ैरह । उपकरण ।

आलाम–संज्ञा पुं० (अ०) "अलम" का बहु० । दुख । रंज ।

आलिम–वि० (अ०) इल्मवाला । विद्वान् । पंडित ।

आलिमाना–वि० (अ० आलिमानः) आलिमों या विद्वानोंका-सा ।

आली–वि० (अ०) बड़ा । उच्च । श्रेष्ठ ।

आली-जनाब–वि० (अ०) उच्च पदपर होनेवाला । बहुत श्रेष्ठ । (व्यक्तिके लिए।)

आली हज़रत–वि० (अ०) उच्च पदपर होनेवाला । परम श्रेष्ठ । (व्यक्तिके लिए)

आलुफ़्ता–संज्ञा पुं०(फा० आलुफ़्तः) १ स्वतंत्र प्रकृतिका व्यक्ति । २ बाहरी । पराया । ग़ैर ।

आलूचा–संज्ञा पुं० (फा० आलूचः) १ एक पेड़ जिसका फल पंजाब इत्यादिमें ज्यादा खाया जाता है । २ इस पेड़का फल । मोटिया बादाम । गर्दालू ।

आलूदगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अपवित्रता । मलिनता । गंदगी । २ लिथड़ा या लतपथ होना ।

आलूदा–वि० (फा० आलूदः) लतपथ । लिथड़ा हुआ । जैसे:–**खून आलूदा**=खूनमें लिथड़ा हुआ ।

आलू बुख़ारा–संज्ञा पु० (फा०) आलूचा नामक वृक्षका सुखाया हुआ फल ।

आवाज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शब्द । नाद । ध्वनि । २ बोली । वाणी । स्वर । मुहा०–**आवाज़**

उठाना=विरुद्ध कहना। **आवाज़ देना**=ज़ोरसे पुकारना। **आवाज़ बैठना**=कफ़के कारण स्वरका साफ न निकलना। गला बैठना।
आवाज़ भारी होना=कफके कारण कंठका स्वर विकृत होना।

आवाज़ा–संज्ञा पुं० (फ़ा० आवाज़) १ नामवरी। प्रसिद्धि। २ ताना। व्यंग। क्रि० प्र० कसना। ३ जन-श्रुति। अफवाह।

आवारगी–संज्ञा० स्त्री० (फ़ा०) आवारा-पन। शोहदा-पन।

आवारा–संज्ञा पुं० (फ़ा० आवार:) १ व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा। २ बे ठौर-ठिकानेका। उठल्लू। ३ बदमाश। लुच्चा।

आवुर्द–वि० (फ़ा०) जो प्राकृतिक नहीं, बल्कि यों ही किसी प्रकार आया या लाया गया हो। आगन्तुक। कृत्रिम।

आवुर्दा–वि० (फ़ा० आवुर्द:) १ लाया हुआ। २ कृपापात्र।

आवेज़–वि० (फ़ा०) लटकता हुआ। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें)

आवेज़ाँ–वि० (फ़ा०) लटकता या झूलता हुआ।

आवेज़ा–संज्ञा पुं० (फ़ा० आवेज़:) कानोंमें पहननेका एक प्रकारका लटकन।

आश–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ मांस। २ भोजन।

आशना–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ मित्र। दोस्त। यार। जार। २ प्रेमी या प्रेमिका। वि० परिचित। ज्ञात।

आशनाई–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ मित्रता। दोस्ती। २ परिचय। जान-पहचान। ३ अनुचित सम्बन्ध।

आशिक़–संज्ञा पुं० (अ०) इश्क या प्रेम करनेवाला। प्रेमी। अनुरक्त।

आशिक़-मिज़ाज–वि० (अ०) (भाव आशिक-मिज़ाजी) जिसके मिज़ाज या स्वभावमें ही आशिकी हो। सदा इश्क या प्रेम करनेवाला। विलासी।

आशिक़ाना–वि० (अ० "आशिक" से फ़ा०) आशिकोंका-सा। प्रेम-पूर्ण।

आशिक़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) आशिक होनेकी क्रिया या भाव। प्रेम। आसक्ति।

आशियाँ–संज्ञा पुं० देखो "आशियाना"।

आशियाना–संज्ञा पुं (फ़ा० आशियान:) पक्षीका घोंसला।

आशुफ़्तगी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ दुर्दशा। २ घबराहट। विकलता। बेचैनी।

आशुफ़्ता–वि० (फ़ा० आशुफ्त:) संज्ञा (आशुफ़्तगी) १ दुर्दशा-ग्रस्त। २ घबराया हुआ। विकल। (प्रेमी) यौ० **आशुफ़्ता हाल, आशुफ़्ता मिज़ाज।**

आशोब–संज्ञा पुं (फ़ा०) १ घबराहट। विकलता। २ सूजन।

आश्कार–वि० (फ़ा०) प्रत्यक्ष। खुला हुआ। स्पष्ट। प्रकाशित।

आश्कारा–क्रि० वि० (फा०) खुले आम । सबके सामने । विशेष दे० "आशकार" ।

आसमान–संज्ञा पुं० दे० "आस्मान"।

आसाइश–संज्ञा स्त्री० (फा०) आराम । सुख । आनन्द ।

आसान–वि० (फा०) सहज । सरल । मुश्किल या कठिनका उलटा ।

आसानियत–संज्ञा स्त्री० दे० "आसानी" ।

आसानी–संज्ञा स्त्री० (फा) सरलता । सुगमता ।

आसाम–संज्ञा पुं० (अ० "असम" का बहु०) १ पाप । गुनाह । २ अपराध ।

आसामी–संज्ञा पुं० (अ०) १ इस्मऽका बहु० । २ देखो "असामी"

आसार–संज्ञा पुं० (अ०) १ "असर" का बहु० । निशान । चिह्न । २ लक्षण । ३ इमारतकी नींव । ४ दीवारकी चौड़ाई ।

आसिम–वि०(अ०) (स्त्री०आसिमा) सद्‌गुणी । सदाचारी । सुशील ।

आसिया–संज्ञा स्त्री० (फा०) आटा पीसनेकी चक्की ।

आसी–वि० (अ०) १ गुनहगार । पापी । २ अपराधी । मुजरिम ।

आसूदगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सुख और शान्ति । २ सम्पन्नता । ३ तुष्टि ।

आसूदा–वि०(फा०आसूदः)। १सुखी और सम्पन्न। २ बेफिक्र । निश्चिंत ।

आसीमा–वि० (फा० आसीमः) चकित । भौंचक्का । यौ०–**सरासीमा**=भौंचक्का ।

आसेब–संज्ञा पुं० (फा०) १ भूत । प्रेत । २ विपत्ति । कष्ट । ३ हानि । क्षति।

आस्तान–संज्ञा पुं०(फा० मि० सं० स्थान) १ ड्योढ़ी । दहलीज । २ प्रवेशद्वार । ३ फकीरोंके रहनेका स्थान ।

आस्ताना–संज्ञा पुं० देखो "अस्ताना"

आस्तीन–संज्ञा स्त्री० (फा०) पहननेके कपड़ेका वह भाग जो बाँहको ढँकता है । बाँह । मुहा०–**आस्तीनका साँप**=वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे ।

आस्मान–संज्ञा पुं० (फा०) १ आकाश । गगन । २ स्वर्ग । देवलोक । मुहा०–**आस्मानके तारे तोड़ना**=कोई कठिन या असंभव कार्य करना। **आस्मान टूट पड़ना**=किसी विपत्तिका अचानक आ पड़ना । वज्रपात होना । **आस्मानपर चढ़ना**=गरूर करना । घमंड दिखाना । । **आस्मान सिरपर उठाना**=१ ऊधम मचाना । उपद्रव मचाना । **दिमाग आस्मानपर होना**=बहुत अभिमान होना ।

आस्मानी–वि० (फा०) १ आस्मानका । आकाशीय । जैसे:–आस्मानी गजब ।यौ०–**आस्मानी किताब**=आस्मानसे आई हुई किताब । जैसे-बाइबिल कुरान आदि । २ आकस्मिक । ३ आस्मानके

रंगका । नीला । संज्ञा पुं० आस्मानका-सा रंग । नील । संज्ञा स्त्री०—ताज़ी ।

आहंग—संज्ञा पुं० (फा०) १ विचार । इरादा । २ उद्देश्य । ३ ढंग । तरीका । ४ संगीत ।

आह—संज्ञा स्त्री० (अ०) कष्टसूचक निःश्वास । ठंढी या गहरी साँस । मुहा०—**किसीकी आह पड़ना**= किसीकी ठंढी साँसका दुःखद प्रभाव पड़ना । अव्यय—अफसोस । दुःख है ।

आहन—संज्ञा पुं० (फा०) लोहा ।

आहन-गर—संज्ञा पुं० (फा०) लोहे-का काम करनेवाला । लोहार ।

आहनी—वि० (फा०) लोहेका ।

आहिस्तगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ "आहिस्ता" का भाव । २ धीमा-पन । ३ मुलायमियत । कोमलता ।

आहिस्ता—क्रि० वि० (फा० आहि-स्तः) १ धीरे धीरे । २ कोमलता-से । मुलायमियतसे । ३ कम-कमसे । वि० १ धीमा । मद्धिम । २ कोमल । मुलायम ।

आहू—संज्ञा पु० (फा०) हिरन ।

इंजील—संज्ञा स्त्री० (यू०) ईसाइ-योंकी धर्म पुस्तक ।

इआदत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दोह-राना । २ रोगीको देखने और उसका हाल पूछनेके लिए उसके पास जाना ।

इआनत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मदद । सहायता । २ दया । कृपा । अनुग्रह ।

इक़तदार—संज्ञा पुं० (अ.इक़्तिदार) १ अधिकार । इख्तियार । २ सामर्थ्य । शक्ति ।

इक़तबास—संज्ञा पुं० (अ०इक़्तिबास) १ प्रज्वलित करना । जलाना । २ किसीसे ज्ञान प्राप्त करना । ३ किसीका लेख या वचन बिना उसके नामके उल्लेखके उद्धृत करना ।

इकबारगी--क्रि० वि० (फ़ा०) एक साथ । एकाएक । एकदमसे । अचानक । सहसा ।

इक़बाल—संज्ञा पुं० (अ०) १ किस्मत । भाग्य । २ प्रताप । ३ धन । सम्पत्ति । दौलत । ४ कबूल करना । मानना । स्वीकार ।

इक़बाल-मन्द—वि० (अ० + फा०) संज्ञा । इक़बालमन्दी । इक़बाल-वाला । प्रतापशाली ।

इकराम—संज्ञा पुं० (ख०) प्रदान । बख्शिश । पुरस्कार । इनाम । यौ० —**इनाम व इकराम**—परितोषिक और पुरस्कार ।

इक़रार—संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रतिज्ञा । वादा । २ कोई काम करनेकी स्वीकृति ।

इक़रार-नामा—संज्ञा पुं० (अ०+ फा०) वह पत्र जिसपर किसी प्रकारका इक़रार और उसकी शर्तें लिखी हों । प्रतिज्ञापत्र ।

इक़रारी—वि० (अ०) १ इक़रार-सम्बन्धी । इक़रार करनेवाला ।

३ अपना अपराध आदि मान लेने-वाला।

इक़साम-संज्ञा पुं० दे० "अक़साम"।

इक़्तफ़ा-संज्ञा पुं० (अ०) १ काफी समझना। यथेष्ट समझना। २ सन्तुष्ट रहना।

इख़तताम-संज्ञा पुं० (अ०) खातमा। अन्त।

इख़फ़ा-संज्ञा पुं० (अ०) छिपाना।

इख़राज-संज्ञा पुं० (अ०) बाहर निकालना।

इख़राजात-संज्ञा पुं० (अ०) खर्चका बहु०) खर्च। व्यय।

इख़लाक़-संज्ञा पुं० दे० "अख़लाक़"।

इख़लास-संज्ञा पुं० (अ०) १ दोस्ती। मित्रता। २ सच्चा प्रेम।

इख़लास-मन्द-वि० (अ०+फा०) १ शुद्ध-हृदय। २ प्रेम करनेवाला। मिलनसार।

इख़्तराअ-संज्ञा पुं० (अ० इख़्तिराऽ) १ कोई नई बात निकालना या पैदा करना। नई तर्ज निकालना। २ ईजाद। आविष्कार।

इख़्तलात-संज्ञा पुं० (अ० इख़्ति-लात) १ मेल-जोल। घनिष्ठता। २ प्रेम। अनुराग।

इख़्तलाफ़-संज्ञा पुं० (ख० इख़्ति-लाफ़। १ खिलाफ़ होनेकी क्रिया या भाव। २ विरोध। ३ बिगाड़। अनबन।

इख़्तसार-संज्ञा पुं० (अ० इख़्तिसार) संक्षेप। खुलासा।

इख़्तियार-संज्ञा पुं० (अ०) १ अधिकार। २ अधिकार-क्षेत्र। ३ सामर्थ्य। काबू। ४ प्रभुत्व। स्वत्व।

इख़्तियारी-वि० (अ०) १ जो अपने इख़्तियारमें हो। २ ऐच्छिक।

इग़माज़-संज्ञा पुं० (अ०) (वि० इग़माज़ी) ध्यान न देना। उपेक्षा।

इग़लाम-संज्ञा पुं० (अ०) अप्रा-कृतिक रीतिसे लड़कोंके साथ व्यभिचार करना। लौंडेबाजी।

इग़लामी-वि० (अ० इग़लाम) इग़लाम या लौंडेबाजी करनेवाला।

इग़वा-संज्ञा पुं० (अ०) बहकाना। भ्रममें डालना।

इज़तनाब-संज्ञा पुं० (अ० इजति-नाब) १ परहेज करना। बचना। दूर रहना। २ संयम।

इजतमाअ-संज्ञा पुं० (अ० इजतमाऽ) इकट्ठा होना। जमा होना।

इज़तराब-संज्ञा पुं० (अ० इज-तिराब) १ घबराहट। २ विक-लता। बेचैनी।

इज़तहाद-संज्ञा पुं० (अ० इजतिहाद) १ अ० "जहद" का बहुबचन। २ कोई नई बात निकालना। ३ देखो "जहाद"

इज़दिवाज-संज्ञा पुं० (अ०) विवाह। शादी।

इज़दहाम-संज्ञा पु० (फा० इजदि-हाम) बहुत बड़ी भीड़। जन-समूह।

इजमाअ-संज्ञा पु० (अ०) १ इकट्ठा-होना। २ एकमत होना।

इजमाल-संज्ञा पु० (अ०) १ बिखरी हुई चीजोंको मिलाकर इकट्ठा

और ठीक करना । २ संक्षेप करना । ३ संक्षिप्त रूप । ४ किसी ज़मीन आदिपर होनेवाला बहुतसे लोगोंका सम्मिलित अधिकार ।

इजमाली–वि० (अ०) बहुतसे लोगोंका मिला-जुला । सम्मिलित ।

इजरा–संज्ञा स्त्री० (अ० इजराऽ) १ जारी करना । प्रचलित करना । २ कार्यरूपमें परिणत करना ।

इज़राईल–संज्ञा पु० (अ०) प्राण लेनेवाले फरिश्तेका नाम । मृत्युके देवदूत ।

इजलाल–संज्ञा पुं०(अ०)१ बुजुर्गी । बड़प्पन । २ प्रतिष्ठा । सम्मान । ३ शान ।

इजलास–संज्ञा पु०(अ०) १ बैठना । २ कचहरीका काम करनेके लिए बैठना । ३ न्यायालय । कचहरी ।

इज़हार–संज्ञा पु० (अ०) १ ज़ाहिर या प्रकट करना । २ वर्णन करना । ३ वक्तव्य । बयान ।

इजाज़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हुक्म । आज्ञा । २ परवानगी ।

इजाबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ स्वीकृति । मानना । मंजूरी । स्वीकार । २ मल-त्याग करना ।

इज़ाफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ एक वस्तुका दूसरी वस्तुके साथ सम्बन्ध स्थापित करना । २ अपना काम ईश्वरपर छोड़ना । ३ शरण देना । ४ ऊपरसे या बादमें बढ़ाया हुआ अंश ।

इज़ाफ़ा–संज्ञा पु० (अ० इज़ाफ़ः) अधिकता । वृद्धि ।

इज़ाफ़ी–वि० (अ०) ऊपरसे बढ़ाया हुआ ।

इज़ार–संज्ञा स्त्री० (फा०)पाजामा ।

इज़ारबन्द–संज्ञा पु० (फा०) नाला जो पाजामेके नेफेमें डाला जाता है और जिससे उसे कमरमें बाँध लेते हैं । मुहा०–**इज़ारबन्दका ढीला**=हर स्त्रीसे संभोग करनेके लिये तैयार रहनेवाला । ऐयाश ।

इजारा–संज्ञा पु० (अ० इजारः) १ किसी पदार्थको उजरत या किरायेपर देना । २ ठेका । ३ अधिकार । इख़्तियार । स्वत्व ।

इजारा-दार–संज्ञा पु० (अ०+फा०) वह जिसने कोई ज़मीन आदि इजारे या ठेकेपर ली हो ।

इजारानामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह काग़ज़ जिसपर इजारेकी शर्त्तें आदि लिखी हों ।

इज़ाला–संज्ञा पुं० (अ०) १ नष्ट करना । २ न रहने देना । दूर करना । जैसे–**इज़ाले बिक्र करना**=कुमारीका कौमार्य नष्ट करना । **इज़ाले हैसियते उर्फ़ी**= हतक इज़्ज़त । मान-भंग ।

इजूज़–संज्ञा पुं० (अ०) आजिज़ी । नम्रता ।

इज़्ज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) इज्जत । यौ०–**इज़्ज़ व जाह**=प्रतिष्ठा और वैभव ।

इज़्ज़त–संज्ञा स्त्री० (अ०)मान । मर्यादा । प्रतिष्ठा ।

इज्न—संज्ञा पुं० (अ०) १ मालिकका अपने गुलामको कोई व्यापार करनेकी आज्ञा देना। २ विवाहके सम्बन्धमें वर और कन्याकी स्वीकृति। यौ०—**इज्न-आम**=मुरदेकी नमाज पढ़नेके बाद लोगोंको अपने अपने घर जानेकी परवानगी। **इज्न-नामा**=वसीयतनामा।

इतमीनान—संज्ञा पुं० (अ०) विश्वास। दिल-जमई। संतोष।

इतराफ़—संज्ञा स्त्री० (अ०)"तरफ़" का बहु०। १ ओर। तरफ। दिशा। २ आसपासकी दिशाएँ।

इतलाक़—संज्ञा पुं० (अ०) १ तोड़ना। मुक्त करना। २ प्रयुक्त करना। लगाना। ३ तलाक देना।

इताअत—संज्ञा स्त्री० (अ०) ताबेदारी करना। हुक्म मानना। आज्ञा-पालन।

इताब—संज्ञा पुं० (अ०) १ कोप। अप्रसन्नता। २ डाँट-फटकार।

इत्तफ़ाक़—संज्ञा पुं० (अ०) बहु० इत्तफ़ाकात) १ आपसमें मिलना। २ एकता। संयोग। मुहा० **इत्तफ़ाक़से**=संयोगसे। यौ०—इत्तफ़ाक़-राय=एक-मन।

इत्तफ़ाक़न्—क्रि० वि० (अ०) इत्तफ़ाक़से। संयोगसे।

इत्तफ़ाक़िया—क्रि० वि० (फा० इत्तफ़ाक़ियः) इत्तफ़ाक़से। संयोगसे। आकस्मिक।

इत्तफ़ाक़ी—वि० (अ०) इत्तफ़ाक़ या संयोगसे होनेवाला।

इत्तलाअन्—क्रि०वि० (अ०) इत्तला-के तौरपर।

इत्तला-नामा—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसके द्वारा कोई इत्तिला या सूचना दी जाय। सूचना-पत्र।

इत्तसाल—संज्ञा पुं० (अ०इत्तिसाल) १ संयुक्त या संलग्न होना। मिलना। २ किसी कामका लगातार होना। ३ सम्बन्ध। लगाव।

इत्तहाद—संज्ञा पुं० (अ०) १ एका। एकता। २ मित्रता। दोस्ती।

इत्तहाम—संज्ञा पुं० (अ०इत्तिहाम) १ तोहमत लगाना। दोष लगाना। व्यर्थ बदनाम करना। २ भ्रममें डालना।

इत्तिला—संज्ञा स्त्री० (इत्तिलाअ) खबर। सूचना। विज्ञप्ति।

इत्र—संज्ञा पुं० (अ०) फूलोंकी सुगंधिका सार। पुष्पसार।

इत्रयात—संज्ञा स्त्री० (अ०) सुगंधित वस्तुएँ। खुशबूदार चीजें।

इदखाल—संज्ञा पुं० (अ०) दाखिल होने या करनेकी क्रियाका भाव।

इदबार—संज्ञा पुं० (अ०) १ नहूसत। २ बद-किस्मती। ३ दुर्भाग्य। ४ अभाग्य।

इदराक—संज्ञा स्त्री० (अ०)समझ। अक्ल। बुद्धि।

इद्दत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गिनती।

गणना । २ विधवाओं और परित्यक्ता स्त्रियोंके लिये वह निश्चित काल जिसके पहले वे दूसरा विवाह न कर सकें।

इनसान—संज्ञा पुं० देखो "इन्सान"।

इनहदाम-संज्ञा पुं० (अ०इन्हिदाम) १ गिरना। ढहना। मटियामेट होना। २ नष्ट होना।

इनहराफ़—संज्ञा पु० (अ० इन्हिराफ़) १ टेढ़ा होना। २ दूर या अलग होना। ३ विरोधी होना। बग़ावत। विद्रोह।

इनहसार—संज्ञा पुं० (अ० इन्हिसार) १ चारों ओरसे घेरा जाना। २ बन्धन। ३ निर्भरता।

इनाद—संज्ञा पुं० (अ०) बैर। शत्रुता। दुश्मनी।

इनान—संज्ञा स्त्री (अ०) लगाम। बाग।

इनाबत—संज्ञा स्त्री० (अ०) पश्चात्तापपूर्वक ईश्वरकी ओर प्रवृत्त होना।

इनाम—संज्ञा पुं० (अ० इनआम) पुरस्कार। उपहार। बख़शीश। यौ०—**इनाम इकराम**=इनाम जो कृपापूर्वक दिया जाय।

इनाम दार-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह जिसे माफी ज़मीन मिली हो।

इनायत—संज्ञा स्त्री० (अ०) दूसरेके कार्यके लिये स्वयं कष्ट भोगना। संज्ञा स्त्री० (अ० अनायत) कृपा। दया। मेहरबानी।

इन्क़ज़ा- संज्ञा पुं० (अ० इन्क़िज़ाऽ) समाप्त होना। बीतना। जैसे :— **इन्क़ज़ाए मीयाद**=मीयाद या अवधिका बीत जाना।

इन्क़लाब—संज्ञा पु० (अ०) जमानेका उलट-फेर। समयका फेर। बहुत बड़ा परिवर्तन। क्रांति।

इन्कशाफ़—संज्ञा पु० (अ० इन्किशाफ़) रहस्य आदि खुलना। उद्घाटन।

इन्कसार—संज्ञा पुं० (अ०) स्त्री० इन्कसारी। नम्रता। दीनता। आजिज़ी।

इन्कार—संज्ञा पुं० (अ०) अस्वीकार। नामंजूरी। "इकरार" का उलटा।

इन्क़िसाम-संज्ञा पुं० (अ०) बँटवारा। विभाग। बाँट।

इन्ज़मद—संज्ञा पु० (अ० इन्जिमाद) जमनेकी क्रिया। जमना। (जल आदिका)

इन्ज़ाल—संज्ञा पु०(अ०) १ स्खलन। २ वीर्य-पात।

इन्तक़ाम—संज्ञा पु० (अ०इन्तिक़ाम) किये हुए अपकारका बदला। प्रतिशोध।

इन्तक़ाल—संज्ञा पु० (इन्तिक़ाल) १ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाना। स्थान-परिवर्तन। २ इस लोकसे दूसरे लोकमें जाना। मरण। मृत्यु।

इन्तखाब—संज्ञा पु० (अ०) १ चुनाव। निर्वाचन। २ अच्छे अंश छाँटकर अलग करना। ३ पसन्द। ४ पटवारीके खातेकी नकल जिसमें खेतके मालिक

और जोतनेवालेका विवरण रहता है ।

इन्तज़ाम—संज्ञा पुं० (अ० इन्तिज़ाम) प्रबंध । बन्दोबस्त । व्यवस्था ।

इन्तज़ाम-कार—संज्ञा पु० (अ०+फा०) इन्तज़ाम या प्रबंध करनेवाला । व्यवस्थापक । प्रबंधकर्ता ।

इन्तज़ार—संज्ञा पु० (अ०) किसीके आने या किसी कामके होनेका आसरा । प्रतीक्षा ।

इन्तज़ारी—संज्ञा स्त्री० दे० "इन्तज़ार" ।

इन्तशार—संज्ञा पु०(अ० इन्तिशार) १ मुन्तशिर होना । इधर-उधर फैलना । बिखरना । २ परेशानी । ३ दुर्दशा ।

इन्तहा—संज्ञा स्त्री० (अ० इन्तिहा) १ चरम सीमा । २ समाप्ति । अन्त । ३ परिणाम । फल ।

इन्दमाल—संज्ञा पु०(अ० इन्दिमाल) १ घावका भरना । २ अच्छा होना । ३ सुधार ।

इन्दराज—संज्ञा पु० (अ० इन्दिराज) दर्ज होने या लिखे जानेकी क्रिया ।

इन्दिया—संज्ञा पु० (अ० इन्दियः) १ विचार । २ अभिप्राय ।

इन्दोख़्ता—वि० (फा०) मिला हुआ । प्राप्त । संज्ञा पु० प्राप्ति । लाभ ।

इन्फ़ाज़—संज्ञा पु० (अ०) १ जारी करना । प्रचलित करना । २ रवाना करना । भेजना ।

इन्फ़िसाल—संज्ञा पु० (अ०) मुकदमेका फैसला । निर्णय ।

इन्शा—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लेख आदि लिखना । लेखन-क्रिया । लेखशैली ।

इन्शा—अल्लाह-तआला—क्रि० वि० (अ०) यदि ईश्वरने चाहा तो । यदि ईश्वरकी इच्छा हुई तो ।

इन्शा-परदाज़—संज्ञा पु० (अ०+फा०) लेखक ।

इन्शा-परदाज़ी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) लेख आदि लिखनेकी क्रिया अथवा कला ।

इन्सदाद—संज्ञा पु० (इन्सिदाद) रोकनेके लिए किया जानेवाला काम ।

इन्सान—संज्ञा पु० (अ०) मनुष्य ।

इन्सानियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) मनुष्यता । मनुष्यत्व । भलमनसाहत ।

इन्सानी—वि० (अ० इन्सान) मनुष्यसंबंधी । मनुष्यका ।

इन्सराम - संज्ञा पु० (अ० इन्सिराम) १ कटना । अलग होना । २ पूर्णता या समाप्तिको पहुँचना । ३ व्यवस्था । प्रबंध ।

इन्साफ़—संज्ञा पु० (अ०) १ न्याय । अदल । २ फैसला । निर्णय ।

इफ़तताह—संज्ञा पु० (अ०) शुरू या जारी करना । खोलना ।

इफ़रात—संज्ञा स्त्री० (अ०) बहुत अधिकता । विपुलता । वि० बहुत अधिक ।

इफ़लास—संज्ञा पु० (अ०) दरिद्रता । गरीबी ।

इफ़लाह—संज्ञा पुं० (अ०) भलाई। उपकार।

इफ़शा—वि० (फा०) प्रकट। जाहिर।

इफाक़त—सज्ञा स्त्री० [illegible]

इफ़ाक़ा—संज्ञा पु० (अ० इफ़ाक़ः) रोग आदिमें कमी होना।

इफ़्तख़ार—संज्ञा (अ० इफ़्तिख़ार) १ फ़ख़्र या अभिमान करना। २ प्रतिष्ठा। इज्ज़त।

इफ़्तरा—संज्ञा (अ० इफ़्तिरा) झूठा कलंक। तोहमत।

इफ़्तराक़—संज्ञा पु० (अ०) अलग होना। पृथक् होना।

इफ़्तार—संज्ञा पु० (अ०) दिन-भर रोजा रखने या उपवास करनेके उपरान्त सन्ध्याको जल-पान करना।

इफ़्तारी—संज्ञा स्त्री० (अ०) रोजा खोलने या इफ़्तार करनेके समय खाई जानेवाली चीजें।

इफ़्फ़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बुरे कामोंसे बचना। सदाचार। २ परस्त्री-गमन या पर-पुरुष-गमनसे बचना।

इबरत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बुरे कामसे मिलनेवाली शिक्षा। २ नसीहत।

इबरत-अंगेज़—वि० (अ०+फा०) जिससे कुछ इबरत या शिक्षा मिले।

इबरा—संज्ञा० पु० (अ०) छोड़ना। बरी करना।

[illegible]

वह पत्र जिसके अनुसार कोई छोड़ा या बरी किया जाय।

इबलाग़—क्रिया० स० (अ०) १ पहुँचाना। २ भेजना।

इबलीस—संज्ञा पु० (अ०) शैतान।

इबा—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कमली। कम्बल। २ एक प्रकारका बड़ा चोगा या पहनावा।

इबादत—संज्ञा स्त्री० (अ०) ईश्वरकी उपासना। पूजा।

इबादत-खाना—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) इबादतगाह। मन्दिर।

इबादत-गाह—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) इबादत या उपासना करनेकी जगह। मन्दिर।

इबारत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लेख। मजमून। २ लेख-शैली। संज्ञा स्त्री० (अ०) उर्वरता। उपजाऊपन।

बारत-आराई—संज्ञा स्त्री० (अ०) शब्द-चित्रण।

इब्तदा—सज्ञा स्त्री० (अ०) १ आरम्भ। शुरू। २ उद्गम। विकास।

इब्तदाई—वि० (फा०) इब्तदा या आरम्भका। आरम्भिक।

इब्तिसाम—संज्ञा पु० (अ०) १ हँसना। मुसकराना। २ फूलका खिलना।

इब्न—संज्ञा पु० (अ०) बेटा। पुत्र।

इब्नत—संज्ञा स्त्री० (अ०) बेटी। पुत्री। कन्या।

इमकान—संज्ञा पु० (अ० इम्कान)

[illegible]

सम्भावना । २ शक्ति । सामर्थ्य ।

इम-रोज–क्रि० वि० (फा०) आजके दिन । आज ।

इमला—संज्ञा पुं० (अ० इम्ला) शब्दोंको उनके ठीक रूपमें और शुद्ध लिखना । वर्ण-विचार ।

इमलाक–संज्ञा पुं० (अ० इम्लाक) सम्पत्ति । जायदाद ।

इम-शब–क्रि० वि० (अ०) आजकी रात ।

इमसाक–संज्ञा पुं० (अ० इम्साक) १ बन्द करना । रोकना । २ वीर्यको स्खलित न होने देना । स्तम्भन ।

इमसाल–अव्यय (अ०) इस वर्ष ।

इमाद–संज्ञा पुं० (अ०) १ स्तम्भ । खंभा । २ पूरा भरोसा ।

इमाम–संज्ञा पुं० (अ०) १ पथ-प्रदर्शक । नेता । २ मुसलमानोंमें धर्म-शास्त्रका ज्ञाता और विद्वान् । धार्मिक नेता ।

इमाम-ज़ामिन–संज्ञा पुं० (अ०) संरक्षक । इमाम । यौ०–**इमाम-ज़ामिनका रुपैया**=वह रुपया या सिक्का जो इमाम जामिनके नामपर किसी विदेश जानेवालेके हाथमें इसलिए बाँधा जाता है कि वह सब विपत्तियोंसे बचा रहे ।

इमाम-बाड़ा–संज्ञा पुं० (अ०+हिं०) वह स्थान जहाँ मुसलमान ताजिये दफन करते या मुहर्रमका उत्सव मनाते हैं ।

इमामा–संज्ञा पुं० देखो "अम्मामा" ।

इमारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) बड़ा और पक्का मकान । भवन । संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह प्रदेश जो किसी अमीरके शासनमें हो । २ शासन । राज्य । ३ अमीरी । सम्पन्नता । ४ वैभव । शान-शौकत ।

इम्तना–संज्ञा पुं० (अ० इम्तिनाऽ) मना करना । मनाही ।

इम्तनाई–वि० (अ० इम्तिनाई) मनाहीसे सम्बन्ध रखनेवाला । जैसे-**हुक्म इम्तिनाई**=मनाहीकी आज्ञा ।

इम्तहान–संज्ञा पुं० (अ०) परीक्षा ।

इम्तियाज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ तमीज करना । २ गुण-दोषके विचारसे पृथक् करना । पह-चानना ।

इम्दाद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मदद या सहायता करना । २ सहायता । मदद । ३ वह धन जो सहायता-रूपमें दिया जाय ।

इम्बिसात–संज्ञा पुं० (अ० इम्बि-सात) १ प्रसन्नता । आनन्द । २ फूल आदिका खिलना ।

इरक़ाम–संज्ञा पुं० (अ० रक़मका बहु०) १ लिखना । २ संख्या । अंक ।

इरफ़ान–संज्ञा पुं० (अ०) १ बुद्धि । २ ज्ञान । ३ विज्ञान ।

इरम–संज्ञा पुं० (अ०) वह स्वर्ग जो शद्दादने इस लोकमें बनाया था ।

इरशाद–संज्ञा पुं (अ० इर्शाद) १ हिदायत करना। रास्ता बतलाना। २ हुक्म। मुहा०—**इरशाद करना या रमाना**=हुक्म देना। कहना।

इरसाल–संज्ञा पुं० (अ० इर्साल) भेजनेकी क्रिया। रवाना करना।

इराक़–संज्ञा पुं० (अ०) (वि० इराक़ी) अरबका एक प्रदेश।

इरादत संज्ञा स्त्री० देखो "इरादा"

इरादतन्–क्रि० वि० (अ०) जान-बूझकर।

इरादा–संज्ञा पुं० (अ० इरादः) विचार। संकल्प।

इर्तबात–संज्ञा पुं० (अ० इर्तिबात) रब्त या मेल-जोल। दोस्ती।

इर्तकाब–संज्ञा पु० (अ० इर्तिकाब) १ ग्रहण करना। पसन्द करके लेना। २ करना।

इर्द-गिर्द–क्रि० वि० (अ०) आस-पास। चारों ओर। इधर-उधर।

इलज़ाम–संज्ञा पु० (अ०) १ दोष। अपराध। २ अभियोग। दोषारोपण।

इलतजा–संज्ञा स्त्री० (अ०इल्तिजा) प्रार्थना। विनय। निवेदन।

इलतफ़ात–संज्ञा स्त्री० (अ० इल्तिफ़ात) १ दया। कृपा। २ प्रवृत्ति। ३ अनुराग।

इलमास–संज्ञा पु० (फा०) हीरा।

इलहाक़–संज्ञा पु० (अ०) सम्मिलित करना। मिलाना।

इलहान–संज्ञा पु० (अ० "लहन" का बहुवचन) १ उत्तम स्वर। २ संगीत।

इलहाम–संज्ञा पु० (अ०) १ मनमें ईश्वरकी ओरसे कोई बात प्रकट होना। २ दैववाणी। आकाशवाणी।

इलहियात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ईश्वरीय वस्तुएँ या बातें। २ अध्यात्म।

इलाक़ा–संज्ञा पु० (अ० अलाक़ः) १ मनका किसी वस्तुसे सम्बन्ध। लगाव। २ हार्दिक प्रेम। ३ कई मौजोंकी जमीन्दारी। ४ अधिकार-क्षेत्र।

इलाज–संज्ञा पु० (अ०) १ चिकित्सा। २ औषध। ३ उपाय। तरकीब।

इलावा–क्रि० वि० (अ० अलावः) सिवा। अतिरिक्त।

इलाह–संज्ञा पु० (अ०) ईश्वर।

इलाही–संज्ञा पु० (अ०) ईश्वर। परमात्मा। यौ०—**इलाही तौबा**=हे ईश्वर, तू पापोंसे हमारी रक्षा करे।

इलाही-गज़–संज्ञा पु०(अ०+फा०) अकबर बादशाहका चलाया हुआ एक प्रकारका गज जो ३३$\frac{3}{5}$ इंच लम्बा होता और इमारतके काममें आता है।

इलाही सन्–संज्ञा पु० (अ०) अकबर बादशाहका चलाया हुआ सन् या संवत्।

इलियास–संज्ञा पुं० (अ०) एक

पैग़म्बर जो हज़रत ख़िज्रके भाई थे ।

इल्तजा–संज्ञा स्त्री० (अ० इल्तिजा) प्रार्थना । विनय । निवेदन ।

इल्तबास–संज्ञा पुं०(अ०इल्तिबास) १ जटिलता । पेचीलापन। २ दो शब्दोंके उच्चारण तो एक होना परन्तु उनके अर्थ भिन्न भिन्न होना।

इल्तमास–संज्ञा पु० (अ०इल्तिमास) निवेदन । प्रार्थना ।

इल्तवा–संज्ञा पुं० (अ० इल्तवा) मुलतबी होना । स्थगित होना ।

इल्म–संज्ञा पु० (अ०) १ ज्ञान । जानकारी । २ विद्या । ३ विज्ञान ।

इल्म-दाँ–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ इल्म या विद्या जाननेवाला । विद्वान् । २ विज्ञानवेत्ता ।

इल्मियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) विद्वत्ता । पाण्डित्य ।

इल्मी–वि० (अ०) इल्म या विद्या-सम्बन्धी ।

इल्मे-अख़लाक़–संज्ञा पु० (अ०) सभ्यताका विज्ञान । नीतिशास्त्र । नीति।

इल्मे-अदब-संज्ञा पु०(अ०)साहित्य।

इल्मे इलाही–संज्ञा पु० (अ०) ब्रह्म-विद्या । अध्यात्म ।

इल्मे-उरूज़–संज्ञा पु० (अ०) छन्द-शास्त्र ।

इल्मे-क़याफ़ा–संज्ञा पुं० (अ०) सामुद्रिक शास्त्र ।

इल्मे कीमिया–संज्ञा पुं० (अ०) रसायन-शास्त्र ।

इल्मे-ग़ैब–संज्ञा पुं० (अ०) १ ग़ैब

या परोक्षकी विद्या । २ अध्यात्म । ३ ज्योतिष ।

इल्मे-जमादात–संज्ञा पु० (अ०) धातु-विद्या । खनिज-विज्ञान ।

इल्मे-तबई–संज्ञा पुं० (अ०) पदार्थ-विज्ञान ।

इल्मे-तवारीख़–संज्ञा पुं० (अ०) इतिहास-विद्या ।

इल्मे दीन–संज्ञा पुं० (अ०) धर्म-शास्त्र ।

इल्मे-नबातात-संज्ञा पुं० (अ०) वनस्पति-विद्या ।

इल्मे-नुजूम–संज्ञा पुं० (अ०) ज्योतिष-शास्त्र ।

इल्मे-फ़िक़्क़ा–संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानी धर्म शास्त्र ।

इल्मे-बहस–संज्ञा पुं० (अ०) तर्क-शास्त्र ।

इल्मे-मजलिस–संज्ञा पुं० (अ०) समाजमें व्यवहार करनेकी विद्या । सभा-चातुरी ।

इल्मे-मन्तक़–संज्ञा पुं०(अ०)न्याय-शास्त्र ।

इल्मे मादनियात–संज्ञा पुं०(अ०) खनिज-विद्या ।

इल्मे-मूसीक़ी-संज्ञा पुं०(अ०) संगीत शास्त्र ।

इल्मे-हिन्दसा–संज्ञा पुं० (अ०) गणित-विद्या ।

इल्मे-हैयत–संज्ञा पुं० (अ०)खगोल विद्या ।

इल्लत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कारण । सबब । २ अभियोग । [illegible]

राध । ५ त्रुटि । कमी । ६ रद्दी और वाहियात चीज ।

इल्लती–वि० (अ० इल्लत) जिसे कोई बुरी आदत या लत लग गई हो ।

इल्ला–अव्य० (अ०) १ परन्तु । लेकिन । २ नहीं तो । ३ अतिरिक्त । सिवा ।

इल्लिल्लाह–(अ०) हे ईश्वर, सहायता कर ।

इशरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) आनन्द-मंगल । सुख-भोग । यौ०–**ऐश व इशरत**=भोग और आनन्द ।

इशवा–संज्ञा पुं० (फा० इशवः) नाज-नखरा । चोचला । अदा ।

इशा–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ रातका पहला पहर । मुहा०–**इशाकी नमाज़**=१ वह नमाज जो रातके पहले पहरमें पढ़ी जाती है । २ रातका अन्धकार ।

इशाअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रसिद्ध करना । फैलाना । २ प्रकाशन ।

इशारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) इशारा या संकेत करना ।

इशारतन्–क्रि०वि० (अ०) इशारे या संकेतसे ।

इशारा–संज्ञा पुं० (अ० इशारः) १ सैन । संकेत । २ संक्षिप्त कथन । ३ बारीक सहारा । सूक्ष्म आधार । ४ गुप्त प्रेरणा ।

इश्क़–संज्ञा पुं० (अ०) मुहब्बत । प्रेम । चाह

इश्क़-पेचाँ–संज्ञा पुं० (अ०) लाल फूलकी एक लता ।

इश्क़-बाज़–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) इश्क करनेवाला । आशिक । प्रेमी ।

इश्क़बाज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रेम करना । २ व्यभिचार करना ।

इश्तबाह–संज्ञा पुं० (अ०) शुबहा । शक । संदेह ।

इश्तबाही–वि० (अ०) सन्दिग्ध । जिसपर शक हो ।

इश्तराक–संज्ञा पुं०(अ० इश्तिराक) १ हिस्सा । साझा । शरकत । २ संग-साथ ।

इश्तहा–संज्ञा स्त्री० (अ० इश्तिहा) १ क्षुधा । भूख । २ ख्वाहिश । इच्छा ।

इश्तहार–संज्ञा पुं० (अ० इश्तिहार विज्ञापन ।

इश्तिआल–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रज्वलित होना । भड़कना । २ उग्र रूप धारण करना ।

इश्तिआलक–संज्ञा स्त्री० दे० "इश्तिआल"

इश्तियाक़–संज्ञा पुं०(अ०)१ शौक । २ विशेष अभिलाषा । ३ अनुराग ।

इसपंद–संज्ञा पुं० दे० "इसबंद" ।

इसबंद–संज्ञा पुं० (फा०) काला दाना नामक बीज जो प्रायः भूत-प्रेत आदिको भगानेके लिये जलाते हैं ।

इसराईल–संज्ञा पुं० (अ०) याकूब पैगम्बरका एक नाम ।

इसराफ़–संज्ञा पुं० (अ०) धनका अपव्यय । फजूल-खर्ची ।

इसराफ़ील—संज्ञा पुं० (अ०) वह फ़रिश्ता जो क़यामतके दिन सूर या नरसिंहा बजावेगा ।

इसरार—संज्ञा पु० (अ०) हठ । आग्रह ।

इसलाह—संज्ञा स्त्री० दे० 'इस्लाह' ।

इसहाल—संज्ञा पु० (अ०) बार बार पाखाना होना । दस्त आना ।

इसियाँ—संज्ञा पुं० (अ०) गुनाह । अपराध । पाप ।

इस्क़ात—संज्ञा पुं० (अ०) गिराना । पतन करना । जैसे—**इस्क़ाते हमल**=गर्भ-पात । पेट गिराना ।

इस्तआनत—संज्ञा स्त्री० (अ०) सहायता । मदद ।

इस्तआरा—संज्ञा पुं० (अ० इस्तआरः) रूपक नामक अर्थालंकार । उपमेयमें उपमानके साधर्म्यका आरोप करके उपमानके रूपमें उसका वर्णन करना ।

इस्तक़बाल—संज्ञा पुं० (अ० इस्ति क़बाल) १ स्वागत । अगवानी । २ (व्याकरणमें) भविष्यत्काल ।

इस्तक़रार—संज्ञा पुं० (अ० इस्ति-क़रार) १ स्थिर होना । ठहरना । २ शान्तिपूर्वक या सुखसे रहना । ३ निश्चित करना । पक्का करना ।

इस्तक़लाल—संज्ञा पुं० (अ० इस्ति-क़लाल) १ दृढ़ता । मजबूती । २ धैर्य । ३ दृढ़ निश्चय । अध्यवसाय ।

इस्तक़ामत—संज्ञा स्त्री० (अ० इस्ति-क़ामत) १ दृढ़ता । मजबूती । २ स्थिरता । ठहराव ।

इस्तख़ारा—संज्ञा पु० (अ० इस्तिख़ारः) १ ईश्वरसे मंगल-कामना करना और किसी विषयमें मार्ग दिखलानेके लिए कहना । २ शकुन-विचार ।

इस्तग़फ़ार—संज्ञा पुं० (अ० इस्ति-ग़फ़ार) दया या क्षमाके लिए प्रार्थना करना । त्राण चाहना ।

इस्तग़ासा—संज्ञा पु० (अ० इस्ति-ग़ासः) १ फ़रियाद करना । न्यायकी प्रार्थना करना । २ अभियोग । दावा ।

इस्तदलाल—संज्ञा पुं० (अ० इस्ति-दलाल) दलील । तर्क ।

इस्तदुआ—संज्ञा स्त्री० (अ० इस्ति-दुआ) विनती । निवेदन ।

इस्तफ़सार—संज्ञा पु० (अ० इस्ति-फ़सार) १ हाल पूछना । अवस्था आदिके सम्बन्धमें प्रश्न करना । २ पूछना । प्रश्न करना ।

इस्तफ़हाम—संज्ञा पु० (अ० इस्ति-फ़हाम) पूछना । दरियाफ़्त करना ।

इस्तफ़हामिया—वि० (अ० इस्तफ़-हामियः) प्रश्नसम्बन्धी । संज्ञा पु० प्रश्नचिह्न—जो इस प्रकार लिखा जाता है '?'

इस्तमरार—संज्ञा पुं० (अ० इस्ति-मरार) १ स्थायी होनेका भाव । स्थायित्व । २ निरन्तर रहनेवाला अधिकार । ३ वह निश्चित लगान जिसमें कमी-बेशी न हो सके ।

इस्तमरारी—वि० (अ० इस्तिमरारी)

१ सदा एक-सा रहनेवाला। स्थायी। २ जिसमें कमी-बेशी न हो सके। जैसे-**इस्तमरारी बन्दोबस्त**=भूमिके लगानकी वह व्यवस्था जिसमें कमी-बेशी न हो सके।

इस्तराहत—संज्ञा स्त्री० (अ०इस्ति-राहत) आराम। सुख।

इस्तवा—संज्ञा पुं० दे० "उस्तवा"

इस्तस्ना—संज्ञा स्त्री० (इस्तिस्ना) १ वह जो किसी प्रकार अलग हो। २ अपवाद। ३ अस्वीकार। न मानना।

इस्तहक़ाक़—संज्ञा पु० (अ० इस्तिहक़ाक) हक। अधिकार। स्वत्व।

इस्तहकाम—संज्ञा पु० (अ० इस्तिहकाम) १ मजबूती। पुष्टता। दृढ़ता। २ समर्थन।

इस्तादगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) खड़े होनेकी क्रिया या भाव।

इस्तादा—वि० (फा० इस्तादः) खड़ा हुआ।

इस्तिंजा—संज्ञा पु० (अ०) १ पानीसे धोकर अपवित्रता दूर करना। धोकर शुद्ध करना। २ मूत्र त्याग करना। ३ मूत्र-त्यागके उपरान्त इन्द्रियको जलसे धोना या मिट्टीके ढेलेसे पोंछना।

इस्तिलाह—संज्ञा स्त्री०(अ०) बहु० इस्तिलाहत। किसी शब्दका साधारण अर्थसे भिन्न और विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होना। परिभाषा।

इस्तिलाही—वि० (अ०) इस्तिलाह या परिभाषा-सम्बन्धी। पारिभाषिक।

इस्तिस्ना—संज्ञा स्त्री० दे० 'इस्तस्ना'

इस्तीफ़ा—संज्ञा पुं० (अ०इस्तअफ़ा) नौकरी छोड़नेकी दरख्वास्त। त्यागपत्र।

इस्तीसाल—संज्ञा पुं० (अ०) जड़से उखाड़ना। नष्ट करना।

इस्तेदाद—संज्ञा स्त्री० (अ० इस्तिअदाद) १ सामर्थ्य। शक्ति। २ विद्या-सम्बन्धी योग्यता। ज्ञान। ३ दक्षता। निपुणता।

इस्तेमाल—संज्ञा पुं० (अ० इस्तअमाल) प्रयोग। उपयोग।

इस्तेमाली—वि० (अ०इस्तअमाल) १ इस्तेमाल किया हुआ। पुराना। २ काममें लाया जानेवाला। ३ प्रचलित।

इस्पगोल—संज्ञा पुं० (फा०) एक पौधेके गोल बीज जो दवाके काममें आते हैं। इसबगोल।

इस्म—संज्ञा पुं० (अ०) १ नाम। संज्ञा। २ (व्याकरणमें) संज्ञा। यौ०—**इस्म बा-मुसम्मा**=यथा नाम, तथा गुण।

इस्म नवीसी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) १ लोगोंके नाम लिखना। २ अदालतमें अपने गवाहोंकी सूची उपस्थित करना।

इस्मवार—वि० (अ०+फा०) एक एक नामके साथ (दिया हुआ विवरण आदि)।

इस्मा—संज्ञा पुं० अ० "इस्म"का बहु।

इस्मे अदद–संज्ञा पुं०(अ०) संख्या-वाचक विशेषण।

इस्मे आज़म–संज्ञा पुं०(अ०) ईश्वर-का नाम जिसके उच्चारणसे शैतान और भूत-प्रेत दूर रहते हैं।

इस्मे-ज़मीर–संज्ञा पुं० (अ०) व्या-करणमें सर्वनाम।

इस्मे-जलाली–संज्ञा पुं०(अ०) ईश्व-रका नाम।

इस्मे-फ़रज़ी–संज्ञा पुं०(अ०) फ़रजी या कल्पित नाम।

इस्मे-फ़ायल–संज्ञा पुं०(अ०) व्या-करणमें कर्त्ता।

इस्मे-सिफ़त–संज्ञा पुं०(अ०) व्या-करणमें विशेषण।

इस्लाम-संज्ञा पुं० (अ०) वि० इस्लामी। १ ईश्वरके मार्गमें प्राण देनेको प्रस्तुत होना। २ मुसलमानोंका मत या धर्म। ३ मुसलमान होना।

इस्लाह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ किसी लेख, काव्य या इसी प्रकारके दूसरे कामोंमें किया जानेवाला सुधार। संशोधन। २ गाल और ठोड़ीपरके बाल। मुहा०–**इस्लाह बनाना**=हजामत बनाना।

ई–सर्व० (फा०) यह।

ईज़द–संज्ञा पुं० (फा०) ईश्वर।

ईज़दी–वि०(फा० ईज़िदी) ईश्वरीय। परमात्माका।

ईज़ा–संज्ञा स्त्री० (अ०) दुःख। कष्ट। पीड़ा। तकलीफ़।

ईजाद–संज्ञा स्त्री०(अ०) नई बात पैदा करना या पता लगाकर निकालना। आविष्कार।

ईजाब–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रस्ताव। २ प्रार्थना। यौ०-**ईजाब व क़बूल**=प्रार्थना और उसकी स्वीकृति।

ईज़िद–संज्ञा पुं० (फा०) ईश्वर।

ईज़िदी–वि० (फा०) ईश्वरीय।

ईद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मुसल-मानोंका एक प्रसिद्ध त्यौहार। २ प्रसन्नता और आनन्दका दिन। शुभ दिन। मुहा०–**ईदका चाँद होना**=बहुत कम दिखाई पड़ना या भेंट करना।

ईद-उल्-जुहा-संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानोंका बकरीद नामक त्यौहार।

ईद-उल फ़ितर–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानोंका ईद नामक त्यौहार।

ईदगाह-संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) वह विशिष्ट स्थान जहाँ ईदके दिन सब मुसलमान एकत्र होकर नमाज़ पढ़ते हैं।

ईदी–संज्ञा स्त्री० (अ०) ईदके दिन दिया जानेवाला उपहार या पुरस्कार।

ईफ़ा–संज्ञा पुं० (अ०) १ वचन पालन करना। पूरा करना। २ देना। चुकाना।

ईमा–संज्ञा० पुं० (अ०) इशारा। संकेत।

ईमान-संज्ञा पुं० (अ०) १ धर्म-सम्बन्धी विश्वास। आस्तिक्य-बुद्धि। २ चित्तकी उत्तम वृत्ति। अच्छी नीयत। ३ धर्म। ४ सत्य।

ईमानदार—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ धर्मपर विश्वास रखनेवाला। २ विश्वासपात्र। दयानतदार। ३ लेन-देन या व्यवहारमें सच्चा। ४ सत्य और न्यायका पक्षपाती।

ईमानदारी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) ईमानदार होनेकी क्रिया या भाव।

ईरान-संज्ञा पुं० (फा०) फारस देश।

ईरानी—संज्ञा पुं० (फा०) १ ईरानका निवासी। संज्ञा स्त्री० ईरानकी भाषा। वि० ईरानका।

ईसवी—वि० (अ०) ईसासम्बन्धी। ईसाका। जैसे—सन् १९३६ ईसवी।

ईसा—संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रसिद्ध महात्मा जो ईसाई धर्मके प्रवर्त्तक थे। क्राइस्ट।

ईसाई—संज्ञा पुं० (अ०) ईसाके चलाये हुए धर्मको माननेवाला। क्रिस्तान।

ईसार—संज्ञा पुं० (अ०) १ ग्रहण करना। २ बुजुर्गी। बड़प्पन। ३ त्याग और तपस्या।

उक़बा—संज्ञा पुं० (अ० उक्बा) १ सृष्टिका अन्तिम काल। २ पर-लोक।

उक़ला—संज्ञा पुं (अ० अक़ीलका बहु०) बुद्धिमान् लोग।

उक़ाब—संज्ञा पुं० (अ०) गिद्ध पक्षी।

उक़्दा—संज्ञा पुं० (अ० उक्द:) १ गिरह। गांठ। २ गूढ़ विषय। मुश्किल बात जो जल्दी समझमें न आवे। कठिन समस्या।

उक़्दा-कुशा वि० (अ०+फा०) (संज्ञा० उक्दा-कुशाई) १ कठिन समस्याओंकी मीमांसा करनेवाला। २ ईश्वरका एक विशेषण।

उज़बक—संज्ञा पुं० (तु०) तातारियोंकी एक जाति। वि०—मूर्ख। उजड्ड। गंवार।

उजरत—संज्ञा स्त्री०(अ०) १ बदला। एवज। २ मजदूरी। पारिश्रमिक।

उजलत—संज्ञा स्त्री० (अ० इजलत) शीघ्रता। जल्दी।

उज़्म—संज्ञा पुं० (अ०) बड़प्पन। बुजुर्गी। बड़ापन।

उज़्मा—संज्ञा पुं० (अ० "अज़ीम"का बहु०) बुजर्ग या बड़े लोग।

उज़्र—संज्ञा पुं० (अ०) १ बाधा। विरोध। आपत्ति। २ किसी बातके विरुद्ध विनयपूर्वक कुछ कहना। ३ बहाना। ४ क्षमा-याचना। यौ०—

उज़्र माज़रत=क्षमा-प्रार्थना।

उज्रख्वाह—वि० (अ० + फा०) उज्रदार।

उज़्रदार—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा उज्रदारी) उज्र करनेवाला।

उज़्रबेगी—संज्ञा पुं० (अ०) वह अधिकारी जो बादशाहोंके सामने लोगोंके प्रार्थना-पत्र उपस्थित करता हो।

उतारिद—संज्ञा पुं०(अ०) बुध ग्रह।

उदूल—संज्ञा पुं० (अ०) १ मार्ग-च्युत होना। २ विमुख होना। ३ न मानना। जैसे—उदूल-हुक्मी=आज्ञा न मानना।

उन्क़ा—संज्ञा पु० (अ०) एक कल्पित पक्षी। वि०—१ अप्राप्य। २ दुष्प्राप्य।

उन्नाब—संज्ञा पु० (अ०) एक प्रकारका बेर जो औषधके काममें आता है।

उन्नाबी—संज्ञा पु० (अ०) एक प्रकार का गहरा लाल रंग। वि० गहरे लाल रंगका।

उन्वान—संज्ञा पु० (अ०) १ पत्रके ऊपरका पता। सिरनामा। २ शीर्षक। ३ भूमिका। ४ ढंग। तर्ज़।

उन्स—संज्ञा पु० (अ०) प्यार। प्रेम।

उन्सर—संज्ञा पु० (अ०) मूल-तत्त्व।

उन्सरी—वि० (अ०) मूल-तत्त्व-सम्बन्धी।

उफ़—अव्य० (अ०) १ दुःख या कष्टसूचक अव्यय। मुहा०—**उफ़ तक न करना**=बहुत कष्ट पहुँचनेपर भी चू तक न करना। २ आश्चर्य-सूचक अव्यय।

उफ़क़—संज्ञा पु० दे० "उफ़ुक़"

उफ़ुक़—संज्ञा पु० (अ०) आस्मानका किनारा। क्षितिज।

उफ़्ताँ व ख़ेज़ाँ—क्रि० वि० (फा०) बहुत कठिनतासे उठते-बैठते हुए। गिरते-पड़ते।

उफ़्तादा—वि० (अ० उफ़्तादः) (संज्ञा उफ़्तादगी) १ खाली पड़ा हुआ। २ बिना जोता-बोया (खेत आदि)। ३ गिरा पड़ा।

उबूर—संज्ञा पु० (अ०) १ किसी रास्तेसे होकर जाना। २ नदी या समुद्र आदिको पार करना। यौ०—**उबूर दरियाए शोर**=द्वीपान्तर। काला पानी। ३ पारदर्शिता। पारंगतता।

उमक़—संज्ञा पु० (अ०) गहराई। गम्भीरता।

उमरा—संज्ञा पु० (अ०) "अमीर" का बहु०।

उमूमन्—क्रि० वि० देखो "अमूमन्"।

उमूर—संज्ञा पु० (अ०) "अम्र" का बहु०।

उमूरात—संज्ञा पु० देखो "उमूर"।

उम्दगी—संज्ञा स्त्री० (अ०) उम्दा होनेका भाव। अच्छाई। बढ़ियापन।

उम्दा—वि० (अ० उम्दः) अच्छा। बढ़िया। उच्च कोटिका।

उम्म—संज्ञा स्त्री० (अ०) माता। माँ।

उम्म-उल्-सिब्यिया-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बच्चोंकी माता। २ शैतानकी पत्नी। ३ एक प्रकारकी मिरगी (रोग)।

उम्मत—संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी धर्म विशेषतः पैगम्बरी धर्मके समस्त अनुयायी। जैसे—मुसलमान यहूदी आदि। मुहा०—**छोटी उम्मत**=१ वर्णसंकर जाति। २ नीच जाति।

उम्मती—संज्ञा पु० (अ०) किसी उम्मत या पैगम्बरी धर्मका अनुयायी व्यक्ति। यौ०—**ला-उम्मती**=वह जो किसी धर्मको न मानता हो। नास्तिक।

उम्मी–संज्ञा पु० (अ०) १ वह जिसका पिता बचपनमें मर गया हो और जिसका पालन-पोषण केवल माता या दाईने किया हो। २ अशिक्षित। ३ मुहम्मद साहब जिन्होंने किसीसे शिक्षा नहीं पाई थी। ४ वह जो किसी उम्मतमें हो। किसी धर्म विशेषतः पैगम्बरी धर्मका अनुयायी।

उम्मीद्–संज्ञा स्त्री० दे० 'उम्मेद'।

उम्मेद्–संज्ञा स्त्री० (फा०उम्मेद) आशा। भरोसा। आसरा।

उम्मेदवार–संज्ञा पु० (फा०) १ आसा या आसरा रखनेवाला। २ काम सीखने या नौकरी पानेकी आशासे किसी दफ्तरमें बिना तनख्वाह काम करनेवाला आदमी। ३ किसी पदपर चुने जानेके लिए खड़ा होनेवाला आदमी।

उम्मेदवारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ आशा। आसरा। २ काम सीखने या नौकरी पानेकी आशासे बिना तनख्वाह काम करना। ३ स्त्रीके प्रसव होनेकी आशा।

उम्र–संज्ञा स्त्री० (अ०)१ अवस्था। वयस। २ जीवनकाल। आयु।

उम्र-तबई–संज्ञा स्त्री० (अ०) मनुष्यका स्वाभाविक जीवन-काल जो अरबोंमें १२० वर्ष माना जाता था।

उरदाबेगनी-संज्ञा स्त्री० (तु०उर्दा बेग) वह स्त्री जो राज महलोंमें सशस्त्र होकर पहरा दे।

उरियाँ–वि० (अ०) नंगा। नग्न।

उरियानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) नंगापन। नग्नता। विवस्त्रता।

उरूज–संज्ञा पु० (अ०) १ ऊपरकी ओर चढ़ना। २ उन्नति। ३ शीर्षबिन्दु। ४ विकास।

उरूस–संज्ञा पु० (अ०) दूल्हा। संज्ञा स्त्री० दुलहिन। वधू। (अधिकतर वधूके अर्थमें ही प्रयुक्त होता है।

उरूसी–संज्ञा स्त्री० (अ०) निकाहकी पद्धतिसे होनेवाला विवाह।

उरेब–वि० (फा०) १ टेढ़ा। २ तिरछा। धूर्त्तता-पूर्ण। चालाकीका।

उर्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) फारसी वर्षका दूसरा महीना।

उर्दू–संज्ञा स्त्री० तु०) १ लश्कर या छावनीका बाजार। २ वह बाजार जहा सब तरहकी चीजें बिकती हो। ३ हिंदी भाषाका वह रूप जिसमें अरबी, फारसी और तुर्की आदिके शब्द अधिक हों और जो फारसी लिपिमें लिखी जाय।

उर्दू-ए-मुअल्ला-संज्ञा स्त्री (तु० +अ०) १ लश्करकी छावनी। २ कचहरी या राज दरबारकी भाषा। ३ उच्च कोटिकी और परिष्कृत उर्दू भाषा।

उर्फ़–संज्ञा पु० (अ०) उपनाम।

उर्फ़ी–वि० (अ०) प्रसिद्ध। मशहूर।

उर्स–संज्ञा पु० (अ०)१ विवाह आदि अवसरोंपर होनेवाला भोजन।

२ वह भोजन जो किसीकी मरण-तिथिपर लोगोंको दिया जाय। ३ मरण-तिथिपर होनेवाला उत्सव।

उल्-उल्-अज़्म–वि० (अ०) हौसलेमन्द। साहसी।

उल्-उल्-अज़्मी–संज्ञा स्त्री० (अ०) ऊँचा हौसला। बड़ा साहस।

उलफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ० उल्फ़त) (वि० उलफ़ती) १ प्रेम। प्यार। मुहब्बत। २ दोस्ती। मित्रता।

उलमा–संज्ञा पुं० (अ० उल्मा) आलिमका बहु०। विद्वान् लोग।

उलवी–वि० (अ०) स्वर्ग या आकाशसे सम्बन्ध रखनेवाला।

उलुग़–संज्ञा पुं० (तु०) महापुरुष। बड़ा बुजुर्ग।

उलूम–संज्ञा पुं० (अ०) "इल्म" का बहु०।

उशबा–संज्ञा पुं० (फा० उशबः) खून साफ करनेकी एक प्रसिद्ध दवा।

उश्तुर–संज्ञा पुं०(फा०मि०सं०उष्ट्र) ऊँट।

उश्शाक़–संज्ञा पुं०(अ०)"आशिक" का बहु०।

उसलूब–संज्ञा पुं० (अ०) तरीका। ढंग। यौ०–**खुश-उसलूब**= जिसके तौर या ढंग अच्छे हों।

उसूल–संज्ञा पुं० (अ०) सिद्धान्त।

उस्तख़्वाँ (न)–संज्ञा पुं० (फा०) हड्डी। हाड़। अस्थि।

उस्तरा–संज्ञा पुं० (फा०) बाल मूँड़नेका औज़ार। छुरा। अस्तुरा।

उस्तवा–संज्ञा पुं० (अ० इस्तिवा) समतल होनेका भाव। हमवारी। बराबरी। यौ०–**ख़ते उस्तवा** (**इस्तवा**) = भूमध्य-रेखा। विषुवत्-रेखा।

उस्तवार–वि० (फा० उस्तुवार) १ पक्का। दृढ़। मजबूत। २ समतल। हमवार। ३ सीधा। सरल।

उस्तवारी–संज्ञा स्त्री० (फा० उस्तुवारी) १ दृढ़ता। मजबूती। २ समतल होनेका भाव। हमवारी। ३ सरलता। सिधाई।

उस्ताद–संज्ञा पुं० (फा०) गुरु। शिक्षक। अध्यापक।

उस्तादी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शिक्षककी वृत्ति। गुरुआई। २ चतुराई। ३ विज्ञता। ४ चालाकी। धूर्तता।

उस्तुरलाब–संज्ञा स्त्री०(यू०)नक्षत्र-यंत्र।

ऊद–संज्ञा पुं० (अ०) अगर नामक सुगंधित लकड़ी।

ऊद-सोज़–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पात्र जिसमें रखकर सुगन्धिके लिये ऊद या अगर जलाते हैं।

ऊदा–वि० (फा०) आसमानी (रंग)।

ऊदी–वि० (अ०) ऊद या अगर-सम्बन्धी। अगरका।

एजाज़–संज्ञा पुं० दे० "ऐजाज"।

एतक़ाद–संज्ञा पुं० (अ० एतिक़ाद) पक्का विश्वास। पूरा एतबार।

एतकाफ़–संज्ञा पुं० (अ० एतिकाफ़) संसारसे सम्बन्ध छोड़कर मसजिदमें एकान्तवास करना।

एतदाल–संज्ञा पुं० (अ० एतिदाल) १ मध्यम मार्ग। २ संयम। परहेज़।

एतनाई–संज्ञा स्त्री०(अ०एअतिनाऽ) १ सहानुभूति दिखलाना। २ दया करना। यौ०–**बे एतनाई**=सहानुभूतिका अभाव। उदासीनता। लापरवाही।

एतबार–संज्ञा पुं० (अ० एतिबार) विश्वास। प्रतीति।

एतबारी–वि० (अ०) जिसपर एतबार किया जाय। विश्वसनीय।

एतमाद–संज्ञा पुं० (अ० एतिमाद) (वि० एतिमादी) १ विश्वास। २ भरोसा। निर्भरता।

एतराज़–संज्ञा पुं० (अ० एतिराज़) (बहु० एतराज़ात) १ सन्देह। शंका। शक। २ आपत्ति। उज्र।

एतराफ़–संज्ञा पुं० (अ० एतिराफ़) इकरार करना। मानना।

एलची–संज्ञा पुं० (तु०) राजदूत।

एलचीगीरी–संज्ञा स्त्री० (तु०+फा०) एलचीका काम या पद। राजदूत।

एवज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो किसीके बदलेमें या स्थानपर हो। यौ०–**एवज़ मुआवज़ा** = १ अदला-बदली। २ बदला। प्रतिकार।

एवज़ी–वि० (अ०) किसीके एवज़में या स्थानपर काम करनेवाला। स्थानापन्न।

एहतमाम–संज्ञा पुं० (अ० इह्तिमाम) १ प्रयत्न। कोशिश। २ प्रबन्ध। व्यवस्था। इन्तज़ाम। ३ निरीक्षण। देखरेख। ४ अधिकार-क्षेत्र।

एहतमाल–संज्ञा पुं० (अ०) (वि० एहतमाली) १ बरदाश्त करना। २ बोझ उठाना। ३ गुमान। आशंका। भय।

एहतराज़–संज्ञा पुं० (अ०इह्तराज़) अलग या दूर रहना। बचना।

एहतराम–संज्ञा पुं०(अ०इह्तिराम) आदर। सम्मान।

एहतशाम–संज्ञा पुं० (अ०इह्तिशाम) १ प्रतिष्ठा। २ वैभव। ३ शान-शौकत।

एहतसाब–संज्ञा पुं०(अ०इह्तिसाब) १ हिसाब लगाना। गणना करना। २ प्रजाकी रक्षाकी व्यवस्था। ३ परीक्षा। आज़माइश करना।

एहतियाज–संज्ञा पुं० (अ० इह्तियाज) हाजत या आवश्यकता होना।

एहतियात–संज्ञा स्त्री० (अ०इह्तियात) १ गुनाह या पापसे बचना। बुरे या अनुचित कामसे बचना। परहेज़ करना। २ रक्षा। बचाव। ३ सचेत रहनेकी क्रिया। सतर्कता।

एहतियातन–क्रि० वि० (अ०) एहतियातके खयालसे। सतर्कताके विचारसे।

एहमाल–संज्ञा पुं० (अ० इह्माल) ध्यान न देना। उपेक्षा करना।

एहमाली–वि० (अ० इह्माली)

१ ध्यान न देनेवाला। २ निकम्मा। सुस्त।

एहसान—संज्ञा पु० (अ०) १ किसीके साथ की हुई नेकी। उपकार। २ कृतज्ञता। निहोरा।

एहसान-फ़रामोश-संज्ञा पु० (अ०+फा०) एहसान या उपकार-को भुला देनेवाला। कृतघ्न।

एहसान फ़रामोशी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) कृतघ्नता।

एहसान-मन्द—वि० (अ०+फा०) एहसान या उपकार माननेवाला। कृतज्ञ।

एहसास—संज्ञा पुं० (अ० इहसास) १ हाथसे छूना। २ मालूम करना। अनुभव करना। ३ ज्ञान होना।

ऐज़न्—वि० (अ०) जैसा ऊपर है, वैसा ही। वही। उक्त।

ऐजाज़—संज्ञा पुं० (अ० इअजाज) १ आजिज करना। परेशान करना। २ किसी महात्माका वह अद्भुत कार्य जिसे देखकर सब लोग दंग रह जायँ। करामात। मोअजिज़ा।

ऐज़ाज़—संज्ञा पुं० (अ० इअज़ाज़) इज्जत। सम्मान। आदर।

ऐदाद—संज्ञा स्त्री० (अ० अअदाद) "अदद" का बहु०। संख्याएँ।

ऐन—संज्ञा स्त्री० (अ० मि० सं० अयन) आँख। नेत्र। वि० (अ०) १ ठीक। उपयुक्त। सटीक। २ बिलकुल। पूरापूरा।

ऐन-उल्-माल—संज्ञा पु० (अ०) १ मूल धन। पूँजी। २ खर्च आदि बाद देकर होनेवाला लाभ। ३ भूमिकर। मालगुज़ारी।

ऐनक—संज्ञा स्त्री० (अ०) आँखोंपर लगानेका चश्मा। उप-चक्षु।

ऐब—संज्ञा पु० (अ०) (बहु० अयूब) १ दोष। अवगुण। २ बुराई। खराबी।

ऐबक—संज्ञा पुं० (फा०) १ प्रिय। प्यारा। २ दास। सेवक। ३ दूत। हरकारा।

ऐब-गो—वि० (अ०+फा०) दूसरोंकी निन्दा करनेवाला।

ऐब-गोई—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) दूसरोंकी निन्दा करना।

ऐब-जो—वि० (अ०+फा०) दूसरोंके ऐब ढूँढ़नेवाला।

ऐब-जोई—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) दूसरोंके ऐब ढूँढ़ना।

ऐबदार—वि० दे० "ऐबी"।

ऐब-पोश—संज्ञा पु० (अ०+फा०) किसीके दोषोंको छिपानेवाला।

ऐब-पोशी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) दूसरेके दोषोंको छिपाना।

ऐबी—वि० (अ० ऐब) जिसमें कोई ऐब या दोष हो।

ऐमाल—संज्ञा पु० (अ०) "अमल"का बहु०। कार्य-समूह। कृत्य। कारवाइयाँ।

ऐमाल-नामा—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह बही जिसमें लोगोंके भले और बुरे कार्य लिखे जायँ।

ऐयाम—संज्ञा पुं० (अ० यौमका बहु०) १ दिन। २ फसल। ऋतु।

ऐयार–संज्ञा पुं० (अ०) १ बहुत बड़ा धूर्त्त और चालाक। २ वह जो भेस बदलकर चालाकीसे काम निकाले।

ऐयारी–संज्ञा स्त्री० (अ०) धूर्त्तता।

ऐयाश–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो बहुत ऐश करे। २ कामुक। लंपट।

ऐयाशी–संज्ञा स्त्री० (अ०) कामुकता। लंपटता।

ऐराफ़–संज्ञा पुं० (अ०) एक दीवार जो मुसलमान स्वर्ग और नरकके बीचमें मानते हैं।

ऐराब–संज्ञा पुं० (अ० इअराब) अरबी लिपिमें अ, इ, उ के सूचक चिह्न या मात्राएँ जो अक्षरोंके ऊपर नीचे लगती हैं। लग मात।

ऐलान–संज्ञा पुं० (अ० इअलान) १ राजाज्ञा। २ घोषणा। ३ मुनादी।

ऐलाम–संज्ञा पुं० (अ० अअलाम) घोषणा। यौ०–**ऐलाम-नामा**=घोषणापत्र।

ऐवान–संज्ञा पुं० (फ़ा०) राजप्रासाद। महल।

ऐश–संज्ञा पुं०(अ०)१ आराम। चैन। २ भोग-विलास। यौ०–**ऐश व इशरत**=भोग-विलास।

ऐसाब–संज्ञा पुं० (अ० अअसाब) शरीरके रग-पट्ठे।

ऐसार–संज्ञा पुं० (अ०) धनवान् या सम्पन्न होना।

ओहदा–संज्ञा पुं० (अ० उहदः) पद।

ओहदेदार–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) किसी अच्छे पदपर काम करनेवाला।

औक़ात–संज्ञा स्त्री० (अ० "वक़्त" का बहु०) १ वक़्त। २ समय। मुहा०–**औक़ात बसर करना**=१ समय व्यतीत करना। २ निर्वाह करना। जीविका चलाना। ३ हैसियत। बिसात।

औक़ात-बसरी–संज्ञा स्त्री०(अ०+फ़ा०) १ समय व्यतीत करना। २ जीविकाका साधन।

औज–संज्ञा पुं (अ०) १ शीर्ष-बिन्दु। सबसे ऊंचा पद। २ ऊंचाई।

औज़ार–संज्ञा पुं० (अ०) वे यंत्र जिनसे लोहार, बढ़ई आदि कारीगर अपना काम करते हैं। हथियार।

औबाश–संज्ञा पुं० (अ०) कमीना। लुच्चा। बदमाश। आवारा।

औबाशी–संज्ञा स्त्री० (अ०) लुच्चापन। आवारगी।

औरंग–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ राजसिंहासन। २ बुद्धि। समझ। ३ छल। कपट। ४ दीपक।

औरंगज़ेब–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ वह जिससे राजसिंहासनकी शोभा हो। २ एक प्रसिद्ध मुगल-सम्राट्।

औरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ स्त्री। महिला। २ पत्नी। जोरू।

औराक़—संज्ञा पु० (अ०) "वर्क़" का बहु० ।

औला—वि० (अ०) सबसे बढ़कर । श्रेष्ठ ।

औलाद—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ संतान । संतति । २ वंश परम्परा । नस्ल ।

औलिया—संज्ञा पुं० (अ० "वली" का बहु०) सन्त और महात्मा लोग ।

औवल—वि० दे० "अव्वल" ।

औसत—संज्ञा स्त्री० (अ०) बराबरका परता । समष्टिका सम विभाग । सामान्य ।

औसान-संज्ञा पुं०(अ०)१ शान्ति । २ समझ । ३ होश हवास । मुहा०—**औसान खता होना**=होश-हवास ठिकाने न रह जाना ।

औसाफ़-संज्ञा पुं० (अ०) १ 'वस्फ़' का बहु० । २ गुण । ३ खासियत ।

(क)

कंगुरा—संज्ञा पुं दे० "कँगूरा" ।

कँगूरा—संज्ञा पु० (फा० कंगुर:) १ शिखर । चोटी । २ किलेकी दीवारमें थोड़ी थोड़ी दूरपर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँसे सिपाही खड़े होकर लड़ते हैं । बुर्ज । ३ कँगूरेके आकारका छोटा रवा (गहनोंमें) ।

कअब—संज्ञा पु० (अ०) १ किसी अंकको उसी अंकसे दो बार गुणा करनेसे आनेवाला गुणन-फल । घन । २ लम्बाई, चौड़ाई और गहराई या मुटाईका विस्तार । ३ जुआ खेलनेका पाँसा ।

क़अर—संज्ञा पु० (अ०) १ गहराई । गम्भीरता । २ खाड़ी । ३ गड्ढा ।

कचकोल—संज्ञा स्त्री० दे० 'कजकोल'

कज—संज्ञा पु० (फा०) टेढ़ापन । वक्रता । वि०—टेढ़ा । वक्र ।

कजक—संज्ञा पु० (फा०) हाथी चलानेका अंकुश ।

कजकोल—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भिक्षा-पात्र । २ वह पुस्तक जिसमें दूसरोंकी अच्छी उक्तियोंका संग्रह हो ।

कज-खुल्क़—वि० (फा०) (संज्ञा कज-खुल्क़ी) कठोर स्वभाववाला । खराब मिजाजका ।

कज-निहाद—वि० (फा०) (संज्ञा-कज निहादी) दुष्ट स्वभाववाला ।

कज फ़हम—वि० (फा०) (संज्ञा कज-फ़हमी) हर बातका उलटा अर्थ लगानेवाला ।

कज-बहस—संज्ञा स्त्री०(फा०+अ०) व्यर्थ हुज्जत या बहस करनेवाला । कठहुज्जती । संज्ञा स्त्री० व्यर्थकी बहस । हुज्जत ।

कज-बीं—वि० (फा०) (संज्ञा कज-बीनी) हर बातको टेढ़ी या बुरी दृष्टिसे देखनेवाला ।

कज-रफ़्तार—वि० (फा०) टेढ़ा-मेढ़ा चलनेवाला । वक्र-गति ।

कज-रफ़्तारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) टेढ़ी-मेढ़ी चाल । वक्र-गति ।

कज-रवी—संज्ञा स्त्री० दे० "कज-रफ़्तारी"।

कज-रौ—वि० दे० "कज-रफ़्तार"।

क़ज़लबाश—संज्ञा पुं० (तु०) १ सैनिक। योद्धा। २ मुग़लोंकी एक जाति।

क़ज़ा—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मृत्यु। मौत। २ भाग्य। किस्मत। यौ०—**क़ज़ा व क़द्र**=भाग्य। किस्मत। ३ सम्पन्न अथवा पालन करना। ४ उचित समय-पर होनेसे छूट जाना। रह जाना। नागा।

क़ज़ा-ए-इलाही—संज्ञा स्त्री० (अ०) स्वाभाविक रूपमें होनेवाली मृत्यु।

क़ज़ाए-नागहानी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) आकस्मिक मृत्यु।

क़ज़ा-ए-हाजत—संज्ञा स्त्री० (अ०) मल-मूत्र आदिका परित्याग।

क़ज़ा-कार—क्रि० वि० (अ०+फ़ा०) १ संयोगसे। इत्तिफ़ाक़से। २ अचानक।

क़ज़ात—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ काजीका कार्य या पद। २ झगड़ा। टंटा।

क़ज़ारा—क्रि० वि० (फ़ा०) १ अचानक। सहसा। २ संयोगसे। इत्तिफ़ाक़से।

क़ज़ा व क़द्र—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ भाग्य। किस्मत। २ भाग्य और सामर्थ्यके देवदूत।

कजावा—संज्ञा पुं० (फ़ा० कजावः) ऊँटकी काठी।

क़ज़िया—संज्ञा पुं० (अ० क़ज़ियः) १ विवादास्पद विषय। झगड़ा। २ मुकदमा। व्यवहार। मुहा०—**क़ज़िया पाक होना**=विवादका अन्त होना।

कजी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा० कज) टेढ़ापन। वक्रता।

क़ज़ीब—संज्ञा पुं० (अ०) १ वृक्षकी शाखा। २ तलवार। ३ कोड़ा। ४ पुरुषकी इन्द्रिय। लिंग।

क़ज़्ज़ाक़—संज्ञा पुं० (तु०) डाकू। लुटेरा।

क़ज़्ज़ाक़ी—संज्ञा स्त्री० (अ०) लुटेरापन। वि० लुटेरोंका-सा। डाकुओंका-सा।

क़त—संज्ञा पुं० (अ०) १ कोई चीज विशेषत. कलमकी नोक तिरछी करना। २ कलमका अगला भाग। ३ कागजका मोड़। संज्ञा स्त्री० (अ० क़तऽ) १ खण्ड। भाग। २ काटना। यौ०—**क़ता-बुरीद**=काट-छाँट। ३ बनावट। तराश।

क़तअन्—अव्य० (अ०) हरगिज़। कदापि।

क़तई—वि० (अ०) अन्तिम। आख़िरी। जैसे—कतई फैसला, कतई हुकुम।

क़तई-गज़-संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) दरज़ियोंका गज़।

कतखुदा—संज्ञा पु० (फ़ा०) घरका मालिक। गृह-स्वामी।

कतखुदाई—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) विवाह। शादी। ब्याह।

क़त-गीर—संज्ञा पुं० दे० "क़तज़न"

क़त-ज़न—संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) हड्डी या लकड़ीका वह टुकड़ा

जिसपर रखकर कलमका क़त काटते हैं।

क़तब-संज्ञा पु० (अ० कतबः) लेख।

क़तरा-संज्ञा पु० (अ० क़तरः) (बहु० क़तरात) १ पानी आदिकी बूँद। २ टुकड़ा। खंड।

क़तरात-संज्ञा पु० (अ०) "क़तरा" का बहु०।

क़तल-संज्ञा पु० दे० "क़त्ल"।

क़तला-संज्ञा पु० (अ० क़तलः) १ टुकड़ा। खंड। २ फाँक।

क़ता-वि० (अ० क़तऽ) १ कटा या काटा हुआ। संज्ञा स्त्री० (अ० क़तऽ) १ विभाग। खंड। २ बनावट। ३ शैली। ढंग। यौ०—**क़ता-दार**=अच्छी बनावटका। संज्ञा स्त्री० दे० "क़िता"।

क़ता-कलाम-संज्ञा पु० (अ० क़तऽ+कलाम) बात काटना। किसीको बोलनेसे रोककर स्वयं कुछ कहने लगना।

क़ता-नज़र-क्रि० वि० (अ०) अलावा। सिवा। अतिरिक्त।

क़तादार-वि० (अ०+फा०) जिसकी क़ता या बनावट अच्छी हो।

कतान-संज्ञा पु० (फा०) १ अलसी नामक पौधा। २ एक प्रकारकी बहुत महीन मलमल। कहते हैं कि यह चन्द्रमाकी चाँदनीमें रखनेपर टुकड़े टुकड़े हो जाती है। ३ एक प्रकारका बढ़िया रेशमी कपड़ा।

क़तार-संज्ञा स्त्री० (अ० क़ितार) पंक्ति। श्रेणी।

कतारा-संज्ञा पु० (फा० कतारः) कटारी।

क़तील-वि० (अ०) जो क़त्ल किया या मार डाला गया हो। निहत।

क़त्तामा-संज्ञा स्त्री० (अ० क़त्तामः) १ बहुत अधिक विलासिनी स्त्री। २ दुश्चरित्रा। पुंश्चली। छिनाल। कुलटा।

क़त्ताल-वि० (अ०) बहुतसे लोगों-को क़त्ल करने या मार डालनेवाला।

क़त्ल-संज्ञा पु० (अ०) हत्या। वध।

यौ०—**क़त्लकी रात** = वह रात जिसके सबेरे हसन और हुसेन मारे गये थे। मुहर्रमकी नवीं तारीख।

क़त्ल-गाह-संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ लोग क़त्ल किये या फाँसीपर चढ़ाये जाते हों।

क़त्ल-आम-संज्ञा पु० (अ०) सर्व-साधारणका वध। सर्व-संहार।

कद-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ परिश्रम। २ आग्रह। ३ बैर। दुश्मनी। यौ०—**कद्दो जहद**=बहुत अधिक परि-श्रम। संज्ञा पु० (फा०) मकान। घर।

क़द-संज्ञा पु० (अ०) ऊँचाई। डील। यौ०—**क़दे आदम**=आद-मीके बराबर ऊँचा। **क़द व क़ामत**=डील डौल। **पस्ता क़द**= नाटा। ठिंगना।

क़द आवर-वि० (अ०+फा०) लंबे क़दवाला। लंबा।

कदखुदा-संज्ञा पु० (फा०) घरका मालिक। गृह-स्वामी।

कदखुदाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) विवाह। शादी।

क़दम–संज्ञा पु० (अ०) १ पैर। पाँव। मुहा०–**क़दम उठाना**=१ तेज़ चलना। २ उन्नति करना। **क़दम चूमना**=अत्यंत आदर करना। **क़दम छूना**=१ प्रणाम करना। २ शपथ खाना। **क़दम बढ़ाना या क़दम आगे बढ़ाना**=तेज़ चलना। **क़दम-ब-क़दम-चलना**=१ अनुकरण करना। २ उन्नति करना। **क़दम रंजा फरमाना**=पदार्पण करना। जाना। **क़दम रखना**=प्रवेश करना। दाखिल होना। आना। यौ०–**सब्ज़ क़दम**–वह जिसके कहीं जानेपर खराबी ही खराबी हो। जिसका पैरा अच्छा न हो।

क़दमचा–संज्ञा पुं० (अ० क़दम+फा० प्रत्यय चः) पाखाने आदिमें बना हुआ पैर रखनेका स्थान।

क़दम-बाज़–वि० (अ०+फा०) वह घोड़ा जो कदम चले।

क़दम-बोस–वि० (अ०) बड़ोंके पैर चूमनेवाला।

क़दम-बोसी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बड़ोंके पैर चूमना। बड़ोंकी सेवामें उपस्थित होना।

क़दम-रसूल–संज्ञा पुं० (अ०) रसूल या मुहम्मद साहबके पद चिह्न।

क़दम-शरीफ–संज्ञा पु० (अ०) १ क़दम-रसूल। २ शुभ चरण। ३ अशुभ चरण (व्यंग्य)।

क़द्र–संज्ञा स्त्री० (अ० क़द्र) १ मान। मात्रा। मिक़दार। २ मान। प्रतिष्ठा। बड़ाई। यौ०–**क़द्र मंज़िलत**=प्रतिष्ठा और उत्तम स्थिति।

क़द्रदाँ–वि० (अ० क़द्र+फा० दाँ) क़द्र जानने या करनेवाला। गुणग्राहक।

क़द्रदानी–संज्ञा स्त्री० (अ० क़द्र+फा० दानी) क़द्र जानना या करना। गुण-ग्राहकता।

क़द्र-शनास–वि० (अ० क़द्र-शिनास) संज्ञा क़द्र-शनासी।) क़द्र समझनेवाला। गुण-ग्राहक।

क़द्रे–वि० (अ० क़द्रे) किसी क़द्र। थोड़ा-सा। अल्प।

क़द्रे-क़लील–वि०(अ० क़द्रे क़लील) थोड़ा-सा। अल्प।

क़द्ह–संज्ञा पु० (अ०) १ प्याला। २ भिक्षा-पात्र। ३ जिरह। ४ खंडन। यौ०–**रद्द व क़द्ह**–१ तर्क-वितर्क। कहा सुनी। तकरार।

कदा–संज्ञा पु० (फा० कदः) मकान। घर। शाला। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें; जैसे–बुत-कदा, मै-कदा।)

क़दामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) क़दीम या पुराना होनेका भाव। प्राचीनता।

क़दीम–वि० (अ० बहु० क़ुदमा) पुराना।

क़दीमी–वि० (अ० क़दीम) पुराना।

क़दीर–वि० (अ०) बलवान। शक्तिशाली।

कद्दू–संज्ञा पु० (फा०) कद्दू या घीया नामकी तरकारी।

कदूरत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गंदापन । मैलापन । २ मन-मुटाव । वैमनस्य ।

क़दे-आ म—वि० (अ०) आदमीके बराबर ऊँचा । पुरसा-भर ।

क़द्दावर—वि० दे० 'क़द-आवर' ।

कद्दू—संज्ञा पु० दे० 'कदू' ।

कद्दू-कश—संज्ञा पु० (फा० कदूकश) लोहे, पीतल आदिकी छेददार चौकी जिसपर कद्दूको रगड़कर उसके महीन टुकड़े करते हैं ।

कद्दू-दाना—संज्ञा पु० (फा० कदू-दानः) पेटके भीतरके छोटे छोटे सफ़ेद कीड़े जो मलके साथ गिरते हैं ।

क़द्र—संज्ञा पु० दे० 'कदर' । (विशेष-'क़द्र' के यौगिक शब्दोंके लिये दे० 'क़दर' के यौगिक शब्द ।)

कन—वि० (फा०) खोदनेवाला । (प्रायः यौगिक शब्दोंके अन्तमें आता है । जैसे-गोर-कन, कान-कन ।)

कनआन—संज्ञा पु० (अ०) १ हज़रत नूहके पुत्रका नाम जो काफ़िर था । एक प्राचीन नगरका नाम जहाँ हज़रत याकूब रहते थे ।

क़नाअत-संज्ञा स्त्री० (अ०) सन्तोष । सब्र ।

क़नात—संज्ञा स्त्री० (अ०) मोटे कपड़ेकी वह दीवार जिससे किसी स्थानको घेरकर आड़ करते हैं ।

कनाया—संज्ञा पु० दे० "किनाया" ।

कनीज़—संज्ञा स्त्री० (फा०) दासी । सेविका । लौंडी ।

क़न्द—संज्ञा पु० (फा०) १ चीनी । शक्कर । २ जमाई हुई चीनी । मिस्री संज्ञा स्त्री०(अ०) चीनी । शर्करा । वि० बहुत मीठा ।

कन्दन—संज्ञा पुं० (फा०) १ खोदना । २ खोदकर बेल बूटे बनाना ।

कन्दा—वि० (फा० कन्दः) १ खोदा हुआ । २ खोदकर बेल-बूटोंके रूपमें बनाया हुआ । ३ छीला हुआ । जैसे—**पोस्त-कन्दा**=जिसका छिलका उतारा गया हो ।

कन्दाकार—वि० (फा० कन्दःकार) (संज्ञा—कन्दाकारी) खोदकर बेल-बूटे बनानेवाला ।

क़न्दील—संज्ञा स्त्री० (अ०) मिट्टी, अबरक या कागज आदिकी बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है ।

कफ़—संज्ञा पुं० (फा०) १ झाग । फेन । २ श्लेष्मा । संज्ञा स्त्री० (फा० कफ्फ) हाथकी हथेली । ३ पैरका तलवा । मुहा०--**कफ़ अफ़सोस मलना**=पछताकर हाथ मलना ।

कफ़गीर--संज्ञा पुं (फा०) कलछी ।

कफ़चा—संज्ञा पुं० (फा० **कफ़चः**) १ साँपका फन । २ कलछी ।

कफ़न—संज्ञा पुं० (अ०) वह कपड़ा जिसमें मुर्दा लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है । मुहा० **कफ़नको कौड़ी न होना या न रहना**= अत्यन्त दरिद्र होना । कफ़नको कौड़ी न रखना=जो कमाना, वह सब खा लेना । **कफ़न सरसे**

बाँधना=मरनेके लिये तैयार होना। **क़फ़न फ़ाड़कर बोलना**=बहुत ज़ोरसे चिल्लाकर बोलना।

कफ़नी—संज्ञा स्त्री॰(फा॰) १ वह कपड़ा जो मुर्देके गलेमें डालते हैं। २ साधुओंके पहननेका कपड़ा।

क़फ़स—संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ पिंजड़ा जिसमें पक्षी रखे जाते हैं। २ शरीरका पिंजर। ३ शरीर।

कफ़ारा—संज्ञा पु॰ दे॰ "कफ्फ़ारा"।

कफ़ालत—संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) जमानत।

कफ़ील—संज्ञा पु॰ (अ॰) जमानत करनेवाला। जामिन।

कफ़े-पाई—संज्ञा स्त्री॰(फा॰) जूता।

कफ़्फ़ारा—संज्ञा पु॰(अ॰ कफ़्फ़ारः) पापोंका प्रायश्चित्त।

कफ़्श—संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) जूता। उपानह। पादत्राण।

कफ्शखाना—संज्ञा पु॰ दे॰ "गरीबखाना।"

कफ्शे-पा—संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) जूता।

कबक—संज्ञा पु॰ दे॰ "कब्क"।

क़बर—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "क़ब्र"।

क़बरिस्तान—संज्ञा पुं॰ (अ॰) वह स्थान जहाँ मुरदे गाड़े जाते हैं।

क़बल—वि॰ (अ॰ क़ब्ल) पहलेका। पूर्वका। क्रि॰ वि॰-पहले। पूर्व।

क़बा—संज्ञा पुं॰ (अ॰) एक प्रकारका लम्बा ढीला पहनावा।

कबाब—संज्ञा पुं॰ (फा॰) सीखोंपर भूना हुआ मांस।

कबाब-चीनी—संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ मिर्चकी जातिकी एक लिपटनेवाली झाड़ी जिसके गोल फल खानेमें कड़ुए और ठंडे मालूम होते हैं। २ इस लताका गोल फल या दाना।

कबाबी—संज्ञा पु॰ (फा॰) १ वह जो कबाब बनाता या बेचता हो। २ मांसाहारी। जैसे—शराबी कबाबी। वि॰ कबाबसम्बन्धी।

क़बायल—संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ "क़बीला"का बहुवचन। २ परिवारके लोग। बाल-बच्चे।

क़बाला—संज्ञा पुं॰ (अ॰ क़बालः) वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरेके अधिकारमें चली जाय। जैसे—बयनामा।

क़बाहत—संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ बुराई। खराबी। २ दिक्क़त। तरद्दुद।

कबीर—वि॰ (अ॰) बड़ा। श्रेष्ठ।

कबीरा—संज्ञा पुं॰ (अ॰ कबीरः) बहुत बड़ा पाप।

क़बील—संज्ञा पु॰ (अ॰) जाति। वर्ग।

क़बीला—संज्ञा पुं॰ (अ॰ क़बीलः) १ समूह। गिरोह। २ एक पूर्वजके सब वंशजोंका समूह। एक खानदानके सब लोगोंका वर्ग। ३ जोरू। पत्नी।

कबीसा—वि॰ (अ॰ कबीसः) बीचमें पड़नेवाला। यौ॰—**साले कबीसा**-वह वर्ष जिसमें अधिक मास हो। लौंदका साल।

क़बीह—वि॰ (अ॰) बुरा। खराब।

कबूतर–संज्ञा पु० (फा०) एक प्रसिद्ध पक्षी। कपोत।

कबूतर-खाना–संज्ञा पु० (फा०) कबूतरोंके रहनेकी जगह।

कबूतर-बाज़–वि० (फा०) (संज्ञा) कबूतर-बाज़ी) वह जो, कबूतर पालता और उड़ाता हो।

कबूद–वि० (फा०) नीला।

क़बूल–वि० (अ० क़ुबूल) स्वीकार। अंगीकार। मंजूर।

क़बूलना–क्रि० स० (अ० क़ुबूल) स्वीकार करना। सकारना। मंजूर करना।

क़बूल-सूरत–वि० (अ० क़ुबूल-सूरत) सुन्दर आकृतिवाला।

क़बूलियत-संज्ञा स्त्री० (अ० क़ुबूलियत) वह दस्तावेज़ जो पट्टा लेनेवाला पट्टेकी स्वीकृतिमें ठेका लेनेवाले या पट्टा लिखनेवालेको लिख दे।

कबूली–संज्ञा स्त्री० (अ० क़बूल) १ कबूल करनेकी क्रिया या भाव। २ चनेकी दाल और चावलकी एक प्रकारकी खिचड़ी।

कब्क–संज्ञा पुं० (फा०) चकोर पक्षी।

कब्के-दरी=संज्ञा पुं० दे० "कब्क।"

कब्क रफ़्तार–वि० (फा०) चकोरकी तरह सुन्दर चालसे चलनेवाला।

क़ब्ज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ मलका रुकना। मलरोध। २ अधिकार।

कब्ज़-उल्-वसूल–संज्ञा स्त्री०(अ०) प्राप्तिका सूचक पत्र। रसीद।

क़ब्ज़ा-संज्ञा पुं० (अ० कब्ज़ः) १ मूठ। दस्ता। मुहा०–**कब्ज़े-पर हाथ डालना**=तलवार खींचनेके लिये मूठपर हाथ ले जाना। २ किवाड़ या सन्दूकमें जड़े जाने वाले लोहे या पीतलकी चद्दरके बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े। नर-मादगी। पकड़। ३ दखल। अधिकार।

कब्ज़ादारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) कब्ज़ा होनेकी अवस्था।

क़ब्ज़ियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) मलका पेटमें रुकना। मलरोध। कोष्ठबद्धता।

क़ब्र–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह गड्ढा जिसमें मुसलमानों और ईसाइयों आदिके मुर्दे गाड़े जाते हैं। २ वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढेके ऊपर बनाया जाता है। मुहा०–**क़ब्रमें पैर लटकाना**=मरनेके करीब होना।

क़ब्रिस्तान–संज्ञा पु० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ शव गाड़े जाते हैं।

कब्ल–वि० दे० "क़बल"।

कमंगर–संज्ञा पु० (फा० कमानगर) कमान या धनुष बनानेवाला।

कमंगरी–संज्ञा स्त्री० (फा०–कमान-गरी) १ कमान बनानेका पेशा या हुनर। २ हड्डी बैठानेका काम। ३ मुसौवरी।

कम–वि० (फा०) १ थोड़ा। न्यून। अल्प। मुहा०–**कमसे कम**=अधिक नहीं तो इतना अवश्य। यौ०–**कमोबेश**=थोड़ा बहुत। लगभग।

कम-अक्ल–वि० (फा०) (संज्ञा कम-अक़्ली) अल्प बुद्धिवाला। मूर्ख

कम-अस्ल—वि० दे० "कमज़ात"।
कम-उम्र—वि० दे० "कमसिन"।
कम-क़ीमत—वि० (फा०) थोड़े मूल्यका। सस्ता।
कम-खर्च—वि० (फा०) (संज्ञा कम-खर्ची) थोड़ा खर्च करनेवाला। मितव्ययी।
कम-खाब—संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका रेशमी कपड़ा जिसपर कलाबत्तूके बेल-बूटे बने होते हैं।
कमख्वाब—संज्ञा स्त्री० दे० 'कमखाब'।
कम-गो—वि० दे० "कम-सखुन"।
क़मची—संज्ञा स्त्री० (तु०) १ वृक्षकी टहनी। शाखा। २ छड़ी।
कम-ज़र्फ़—वि० (फा०) (संज्ञा कमज़र्फ़ी) १ ओछा। २ कमीना।
कम-ज़ात—वि० (फा०) नीच। कमीना।
कमज़ोर—वि० (फा०) दुर्बल।
कमज़ोरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) निर्बलता। दुर्बलता। ना-ताक़ती।
कमतर—वि० (फा०) कमकी अपेक्षा कुछ और कम। अल्पतर।
कमतरीन—संज्ञा पुं० (फा०) बहुत ही तुच्छ सेवक। (प्रायः प्रार्थना-पत्रके नीचे प्रार्थी अपने नामके साथ लिखता है।) वि० बहुत ही कम।
कम-नसीब—वि० (फा०) (संज्ञा **कम-नसीबी**) अभागी। दुर्भागी।
कमन्द—संज्ञा स्त्री० (फा०) वह फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर जंगली पशु आदि फँसाए जाते हैं। २ फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर ऊँचे मकानोंपर चढ़ते हैं।
कम-फ़हम—वि० दे० "कम अक्ल"।
कम बख़्त—वि० (फा०) अभागा।
कम-बख़्ती—संज्ञा स्त्री० (फा०) अभाग्य। दुर्भाग्य।
कमयाब—वि० (फा०) (संज्ञा **कमयाबी**—) जो कम मिलता हो। दुष्प्राप्य।
कमर—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शरीरका मध्य भाग जो पेट और पीठके नीचे और पेड़ू तथा चूतड़के ऊपर होता है। मुहा०—**कमर कसना या बाँधना**=१ तैयार होना। उद्यत होना। २ चलनेकी तैयारी करना। **कमर टूटना**=निराश होना। ३ किसी लंबी वस्तुके बीचका पतला भाग, जैसे कोल्हूकी कमर। ४ अँगरखे या सलूके आदिका वह भाग जो कमरपर पड़ता है-लपेट।
क़मर—संज्ञा पुं० (फा०) चन्द्रमा। चाँद।
कमर-बन्द—संज्ञा पुं० (फा०) १ लंबा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं। पटुका। २ पेटी। ३ इज़ार-बन्द। नाड़ा।
कमर-बस्ता—वि० (फा० कमरबस्तः) (संज्ञा—कमर-बस्तगी) जो किसी कामके लिये कमर बाँधे हो। तैयार।
कमरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक प्रकारकी कुरती। २ कम्बल।

क़मरी—वि० (अ०) क़मर या चन्द्रमासम्बन्धी । चन्द्रमाका । जैसे क़मरी महीना ।

कम-व-कास्त—वि० (फा०)किसी बातमें कुछ कम और किसी बातमें कुछ ज्यादा ।

कम-सखुन—वि० (फा०) (संज्ञा-कमसखुनी) कम बोलनेवाला । अल्पभाषी ।

कमसिन—वि० (फा०) (संज्ञा—कमसिनी) कम उम्रका । अल्पवयस्क ।

कमा-हक्कहू—वि० (अ०) जैसा होना चाहिये, ठीक वैसा । पूरा । यथेष्ट ।

कमान—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ धनुष । मुहा०—**कमान चढ़ना**=१ दौर दौरा होना । २ त्यौरी चढ़ना । क्रोधमें होना । ३ इन्द्र-धनुष । ४ मेहराब । ५ तोप । ६ बन्दूक ।

कमान-गर—दे० "कमंगर"

कमानचा—संज्ञा पुं० (फा० कमानचः) १ छोटी कमान या धनुष । २ एक प्रकारका बाजा । ३ मेह-राबदार छत । ४ बड़ी इमारतके साथका छोटा कमरा या मकान ।

कमान दार—संज्ञा पुं० (फा०) कमान चलानेवाला । धनुर्धर ।

कमानी—संज्ञा स्त्री० (फा० कमान) १ धातुका लचीला तार या पत्तर जो दाब पड़नेपर दब जाय और फिर अपनी जगहपर आ जाय । २ एक प्रकारकी चमड़ेकी पेटी जो आँत उतरनेपर कमरमें बाँधी जाती है ।३ कमानके आकारकी ।

कमाल—संज्ञा पुं० (अ०) १ परि-पूर्णता । पूरापन । २ निपुणता । कुशलता । ३ अद्‌भुत कर्म । अनोखा कार्य । ४ कारीगरी ।

कमालात—संज्ञा पुं० कमाल' का बहु०

कमालियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कमालका भाव । २ पूर्णता । दक्षता ।

कम-हक्कहू कमा-हक्का-वि०(अ०) जैसा कि वास्तवमें है । उचित रूपमें ।

कमी—संज्ञा स्त्री० (फा०)१ न्यूनता । कोताही । अल्पता । २ हानि ।

क़मीज़—संज्ञा स्त्री० (अ० कमीस) एक प्रकारका कुरता ।

कमीन— संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शिकारकी ताकमें किसी जगह छिपकर बैठना । २ इस प्रकार छिपकर बैठनेका स्थान ।

कमीन-गाह—संज्ञा स्त्री०(अ०+फा०) वह स्थान जहाँ शिकारी शिकारकी ताकमें छिपकर बैठता है ।

कमीना—वि० (फा० कमीनः) ओछा । नीच । क्षुद्र ।

कमीनापन—संज्ञा पुं० (फा०+हि०) नीचता । ओछापन । क्षुद्रता ।

कमीबेशी— संज्ञा स्त्री० (फा०] कम होना अथवा अधिक होना । घटती-बढ़ती ।

कमीस—संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारका कुरता । कमीज ।

कमोकास्त—वि० दे० "कम व कास्त

कम्बख़्त–वि० (फा०) अभागा। बदकिस्मत।

कम्मून–संज्ञा पु० (अ०) जीरा।

कम्मूनी–वि० (अ०) दवा आदि जिसमें जीरा भी मिला हो। जैसे– जवारिश कम्मूनी।

क़याफ़ा–संज्ञा पु० (अ० क़याफ़) आकृति। सूरत। शक्ल।

क़याफ़ा-शिनास–वि० (अ०+फा०) आकृति देखकर मनका भाव समझनेवाला।

क़याफ़ा-शिनासी–संज्ञा स्त्री०(अ० +फा०) किसीकी आकृति देखकर ही उसके मनका भाव समझ लेना।

क़याम–संज्ञा पु० (अ०) १ ठहराव। ठिकाना। २ ठहरनेकी जगह। विश्राम-स्थान। ३ ठौर ठिकाना। ४ निश्चय। स्थिरता।

क़यामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियोंके अनुसार सृष्टिका वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वरके सामने उनके कर्मोंका लेखा रखा जायगा। २ प्रलय। ३ हलचल। खलबली।

क़यास–संज्ञा पु० (अ०)१ अनुमान। अटकल। २ सोच-विचार। ध्यान।

क़यासी–वि० (अ०)अनुमान किया हुआ। अनुमित।

क़यूम–वि० (अ० क़य्यूम) १ स्थायी। दृढ़। २ ईश्वरका एक विशेषण।

कर–संज्ञा पु० (फा०) १ शक्ति। बल। २ वैभव। यौ० कर व फ़र=शान शौकत।

करख़्त–वि० (फा०) संज्ञा करख़्तगी) कड़ा। कठोर। संज्ञा पुं०–वह अंग जो सुन्न हो जाय।

करगस–संज्ञा पु० (फा०) गिद्ध। उक़ाब।

करगह–संज्ञा पु० (फा०) कपड़ा बुननेका यंत्र। करघा।

क़रज़-क़रज़ा- संज्ञा पु० (अ० क़र्ज़) ऋण। उधार। क़र्ज़।

करदा–वि० (फा० कर्द) किया हुआ। कृत। जिसने किया हो। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें)

करनफ़ल संज्ञा पुं० (अ) लौंग। लवंग।

क़रनबीक़–संज्ञा पु० (अ०क़रंबीक़) अर्क खींचनेका छोटा भबका।

करबला -संज्ञा पु० (अ०) १ अरबमें वह स्थान जहाँ अलीके छोटे लड़के हुसैन मारे और गाड़े गये थे। २ वह स्थान जहाँ मुसलमान मुहर्रममें ताजिए दफ़न करते हैं।

करम–संज्ञा पुं० (अ०) १ कृपा। अनुग्रह। २ उदारता।

करमकल्ला–संज्ञा पुं० (फा० करमकल्लाः) एक प्रकारकी गोभी। बन्द गोभी। पत्ता-गोभी।

क़रम्बीक़–संज्ञा पुं० दे० "क़रनबीक़"

करश्मा–संज्ञा पुं० (फा० करश्मः) १ अद्भुत कार्य। २ मंत्र। ताबीज़। ३ नाज़-नखरा। ४ आँखों और भौंहोंका संकेत।

क़रहा–संज्ञा पुं० (अ० क़र्हः) घाव। ज़ख्म।

क़राबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ करीब

या समीप होनेका भाव । सामीप्य २ सम्बन्ध । रिश्तेदारी ।

क़राबतदार–संज्ञा पु० (अ०फा०) रिश्तेदार । सम्बन्धी ।

क़राबतदारी–संज्ञा स्त्री ० (अ+ फा०) रिश्तेदारी । सम्बन्ध ।

करावती–वि० (अ०) जिसके साथ निकटका सम्बन्ध हो ।

क़राबा–संज्ञा पु० (अ० क़राब:) शीशेका वह बड़ा वर्तन जिसमें अर्क आदि रखते हैं ।

क़राबीन–संज्ञा स्त्री० (तु०) १ चौड़े मुँहकी पुरानी बन्दूक । २ कमरमें बाँधनेकी एक प्रकारकी छोटी बन्दूक ।

करामत–संज्ञा स्त्री० (अ) १ बड़प्पन । महत्ता । बुजुर्गी । २ अद्भुत कार्य ।

करामात–संज्ञा स्त्री० (अ० करामतका बहु०) चमत्कार । अद्भुत व्यापार । करिश्मा ।

करामाती–वि० (अ० करामात) जो करामात दिखलावे । अद्भुत कार्य करनेवाला ।

क़रायन–संज्ञा पु० (अ०) १ करीना का बहु० । २ अवस्थाएँ । परिस्थितियाँ ।

क़रार–संज्ञा पु० (अ०) १ स्थिरता । ठहराव । २ धैर्य । धीरज । तसल्ली । संतोष । ३ आराम । चैन । ४ वादा । प्रतिज्ञा ।

क़रार-दाद–संज्ञा पु० (अ०+फा०) लेने देनेके सम्बन्धमें होनेवाला निश्चय ।

क़रार-वाक़ई–क्रिया० वि० (अ०) वास्तविक या निश्चित रूपमें । वस्तुतः।

क़रारी=वि० (अ०) निश्चित किया हुआ । ठहराया हुआ ।

क़रावल–संज्ञा पुं० (तु०) १ घुड़सवार, पहरेदार या सन्तरी । २ वह जो बंदूकसे शिकार करता हो । ३ सेनाके आगे चलनेवाले वे सिपाही जो शत्रुका समाचार संग्रह करते हैं ।

कराहियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अप्रसन्नता । २ नापसन्द होना। अरुचि । ३ अनुचित या गंदा काम । घृणित और निन्दनीय कार्य । ४ घृणा । नफ़रत ।

क़रिया–संज्ञा पुं० (अ० क़रिय:) गाँव ।

क़रिश्मा–संज्ञा पु० देखो "करश्मा ।

क़रीन–वि० (अ०) १ पास । निकट २ संगत । जैसे–क़रीन-इन्साफ़= न्याय-संगत । क़रीन-मसलहत= युक्ति-संगत ।

क़रीना–संज्ञा पु० (अ० क़रीन:) (बहु०करायन) १ ढंग । तर्ज़ । तरीका । चाल । २ क्रम । तरतीब । ३ शऊर । सलीका ।

क़रीब–क्रि० वि० (अ०) १ समीप । पास । निकट । २ लगभग ।

करीम–वि० (अ०) (बहु० किराम) १ करम करनेवाला । २ दयालु । कृपालु । ३ उदार । दाता । संज्ञा पुं०–ईश्वरका एक विशेषण ।

करीह–वि० (अ०) जिसे देखकर,

घृणा हो। घृणित। यौ०—**करीह मंजर**=भद्दा। कुरूप।

क़रौली—संज्ञा स्त्री०(तु०) १ शिकारका पीछा करना। २ एक प्रकारका छुरा जिससे जानवरोंका शिकार करते या शत्रुको मारते हैं।

कर्ज़—संज्ञा पु० (फा०) गैंडा।

क़र्ज़—संज्ञा पुं० (अ०) ऋण। उधार।

क़र्ज़दार—संज्ञा पु० (अ०+फा०) वह जो किसीसे क़र्ज ले। ऋणी।

क़र्ज़दारी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) क़र्जदार या ऋणी होना।

क़र्ज़ा—संज्ञा पुं० दे० "क़र्ज़"।

क़र्ज़ी वि० (अ०) क़र्जके रूपमें लिया हुआ। संज्ञा पुं० दे० "कर्ज़दार"।

कर्दा—वि० देखो "करदा"।

क़र्न—संज्ञा पुं० (अ०) १० से १२० वर्षोंतकका समय। युग।

क़र्ना—संज्ञा स्त्री० (अ० मि० सं० करनाल) एक प्रकारकी बड़ी तुरही या भोंपू।

कर्र—संज्ञा पुं० (अ०) १ शत्रुओंको पीछे हटाना। २ वैभव। शान। यौ०—**कर्र व फर्र**=शान-शौकत। वैभव और शोभा।

कर्रार—वि० (अ०) शत्रुओंको परास्त करनेवाला। विजयी। संज्ञा पुं० मुहम्मद साहबकी एक उपाधि।

क़र्हा—संज्ञा पुं० दे० "क़रहा"।

क़लई—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ राँगा। २ राँगेका पतला लेप जो बर्तनों इत्यादि पर लगाते हैं। मुलम्मा। ३ वह लेप जो रंग चढ़ाने या चमकानेके लिये किसी वस्तुपर लगाया जाता है। ४ बाहरी चमक-दमक। तड़क भड़क। मुहा०—क़लई खुलना = वास्तविक रूपका प्रकट होना। **क़लई न लगना**=युक्ति न चलना।

क़लई-गर—संज्ञा० पुं० (अ०+फा०) जो कलई या रांगेका लेप चढ़ाता हो।

क़लक़—संज्ञा० पुं० (अ० क़ल्क़) १ बेचैनी। घबराहट। २ रंज। दुःख। खेद।

कलग़ी—संज्ञा स्त्री० (तु०) १ शुतुरमुर्ग आदि चिड़ियोंके सुन्दर पंख जिन्हें पगड़ी या ताजपर लगाते हैं। २ मोती या सोनेका बना हुआ सिरपर पहननेका एक गहना। ३ चिड़ियोंके सिरपरकी चोटी। ४ इमारतका शिखर। ५ लावनीका एक ढंग।

क़लन्दर—संज्ञा पुं० (अ०) १ एक प्रकारके मुसलमान साधु और त्यागी। २ रीछ और बन्दर आदि नचानेवाला मदारी।

कलफ़—संज्ञा पुं० (अ० मि० सं० कल्प) १ वह पतली लेई जो कपड़ोंपर उनकी तह कड़ी और बराबर करनेके लिये लगाई जाती है। माँड़ी। २ चेहरे परका काला धब्बा। झाँई।

क़लम—संज्ञा स्त्री० (अ० मि० सं०-कलम) १ लेखनी। मुहा०—**क़लम चलना**=लिखाई होना। **क़लम चलाना**=लिखना। क़लम तोड़ना

=लिखनेकी हद कर देना। अनूठी उक्ति कहना। २ किसी पेड़की टहनी जो दूसरी जगह बैठने या दूसरे पेड़में पैवंद लगानेके लिए काटी जाय। ३ काटनेकी क्रिया। ४ रवा। दाना। ५ सिरके वे बाल जो कानोंके पास होते हैं।

क़लम-अन्दाज़–वि० (अ०+फ़ा०) जो लिखनेमें छूट गया हो।

क़लम-कार–संज्ञा पु० (अ०+फ़ा०) क़लमसे नक्काशी आदि करनेवाला।

क़लम-कारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) क़लमसे नक्काशी करना। बेल-बूटे बनाना।

क़लम-तराश–संज्ञा पु० (अ०+फ़ा०) कलम बनानेका चाकू।

क़लम-दान–संज्ञा पु० (अ०+फ़ा०) कलम, दावात आदि रखनेका डिब्बा या छोटा संदूक।

क़लम-बन्द–वि० (अ०+फ़ा०) १ लिखा हुआ। लिखित। २ ठीक। पूरा।

क़लम-रौ–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) राज्य। सल्तनत।

कलमा–संज्ञा पु० (अ० कल्मः) १ वाक्य। बात। २ वह वाक्य जो मुसलमान धर्मका मूल मंत्र है। यथा–ला इला लिल्लिल्लाह। मुहम्मद उर्रसूलिल्लाह।

कलमात–संज्ञा पु० अ० "क़लमा" का बहु०।

क़लमी–वि० (अ०) १ कलमसे लिखा हुआ। लिखित। २ कलम काटकर लगाया हुआ। (पौधा या वृक्ष आदि)

कलाँ–वि० (फ़ा०) बड़ा।

कलाग़–संज्ञा पुं० (फ़ा०) कौवा। काक।

क़लाबाज़ी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) सिर नीचे करके उलट जाना। ढेकली। कलैया।

कलाम–संज्ञा पुं० (अ०) १ वाक्य। वचन। २ बात-चीत। कथन। ३ वादा। प्रतिज्ञा। ४ उज्र। एतराज़।

कलावा–संज्ञा पुं० (फ़ा० कलावः मि० सं० कलापक) १ सूतका लच्छा जो तकलेपर लिपटा रहता है। २ हाथीकी गरदन।

क़लिया–संज्ञा पुं० (अ० क़लियः) भूनकर रसेदार पकाया हुआ मांस।

क़लियान–संज्ञा पुं० (फ़ा०) एक प्रकारका हुक्का।

क़लीच–संज्ञा पु० (फ़ा०) तलवार। खड्ग।

कलीद–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) कुंजी।

कलीम–वि० (अ०) कहनेवाला। वक्ता। यौ०–**कलीम-उल्लाह**=१ वह जो ईश्वरसे बातें करता हो। २ हजरत मूसा।

क़लील–वि० (अ०) थोड़ा। अल्प।

कलीसा–संज्ञा पुं०(यू० फ़ा० कलीसः) यहूदियों और ईसाइयोंका प्रार्थना-मन्दिर। गिरजा आदि।

क़ल्क़–संज्ञा पु० दे० "क़लक़"

कलूख़–संज्ञा पुं० दे० "कुलूख़"

क़ल्ब–संज्ञा पुं० (अ०) १ हृदय।

दिल। यौ०—क़ल्बे मुज़्तर=दुखी और विकलहृदय। २ सेनाका मध्य भाग। ३ किसी वस्तुका मध्य भाग। ४ बुद्धि। प्रज्ञा। ५ खोटी चाँदी या सोना।

क़ल्ब-साज़—संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) खोटे या जाली सिक्के बनानेवाला।

क़ल्ब साज़ी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) नकली या जाली सिक्के बनाना।

क़ल्बी—वि० (अ० क़ल्ब) १ हृदय-सम्बन्धी। हार्दिक। २ नकली। झूठा।

कल्ला—संज्ञा पुं० (फ़ा० कल्ल.) १ गालके अन्दरका अंश। जबड़ा। २ जबड़ेके नीचे गले तकका स्थान। गला। ३ स्वर। आवाज़। ४ सिर। (भेड़ों आदिका)।

क़ल्लॉच—संज्ञा पुं० (तु० कल्लाश) निर्धन। गरीब। दरिद्र।

क़ल्ला-तोड़—वि० (फ़ा०+हि०) कल्ले तोड़नेवाला। जबरदस्त। बलवान्।

कल्ला-दराज़—वि० (फ़ा०) (संज्ञा कल्ला-दराज़ी) १ बहुत चिल्लानेवाला। २ बहुत बढ़ बढ़कर बोलनेवाला।

क़ल्लाश—संज्ञा पुं० (तु०) गरीब।

क़ल्ले-दराज़—वि० दे० "कल्ला-दराज़।"

क़वानीन—संज्ञा पु०(अ०)"क़ानून" का बहु०।

क़वायद—संज्ञा पुं० (अ०) 'क़ायदा' का बहु०। क़ायदे। नियम। संज्ञा स्त्री० १ नियम। व्यवस्था। २ व्याकरण। ३ सेनाके युद्ध करनेके नियम। ४ लड़नेवाले सिपाहियोंकी युद्ध-नियमोंके अभ्यासकी क्रिया।

क़वी—वि० (अ०) बलवान्। शक्तिशाली।

क़व्वाल-संज्ञा पुं० (अ०) कौवाली या क़व्वाली गानेवाला।

क़व्वाली-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ एक प्रकारका भगवत्प्रेम-सम्बधी गीत जो सूफियोंकी मजलिसोंमें होता है। २ इस धुनमें गाई जानेवाली कोई गज़ल। ३ कौवालोंका पेशा।

कश—वि० (फ़ा०) खींचनेवाला। आकर्षक। जैसे—दिल-कश। संज्ञा पुं० १ खिंचाव। यौ०—कश-मकश। २ हुक्के या चिलमका दम। फूँक।

कशक-संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) रेखा।

कशक़ा-संज्ञा पुं० (फ़ा० कशक:) माथेपर लगाया जानेवाला टीका। तिलक।

कशकोल—संज्ञा स्त्री० दे० 'कजकोल'

कशनीज़—संज्ञा पु० (फ़ा०) धनिया।

कश-मकश-संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ खींचा-तानी। २ धक्कम-धक्का। ३ आगा-पीछा। सोच-विचार। असमंजस। दुबधा।

कशाकश-संज्ञा स्त्री० दे० "कश-मकश।"

कशिश– संज्ञा स्त्री० (फा०) १ आकर्षण। खिंचाव। २ मन-मुटाव। वैमनस्य।

कशीदगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मन मुटाव। वैमनस्य।

कशीदा–संज्ञा पुं० (फा० कशीदः) कपड़ेपर सुई और तागेसे बनाये हुए बेल-बूटे। वि०–खिंचा या खिंचा हुआ। आकृष्ट। यौ०–**कशीदाखातिर** = अप्रसन्न। असन्तुष्ट।

कश्ती- संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नाव। नौका। किश्ती। २ एक प्रकारकी बड़ी चौड़ी थाली।

कश्नीज़–संज्ञा पुं० (फा०) धनिया।

कश्फ़–संज्ञा पुं० (फा०) १ सामने या ऊपरसे परदा हटाना। खोलना। २ ईश्वरीय प्रेरणा।

कश्फ़ी वि०(फा०) १ खुला हुआ। २ स्पष्ट।

क़स–संज्ञा पुं० (फा०) १ व्यक्ति। मनुष्य। यौ०–**कस-व-नाकस**= छोटे बड़े, सभी। २ साथी। सहायक। मित्र। यौ०- **बेक़स**= जिसका कोई सहायक न हो। बेचारा।

कसब–संज्ञा पुं० दे० "कस्ब"।

क़सब–संज्ञा पुं० (अ०) १ एक प्रकारकी बढ़िया मलमल। २ नली। ३ हड्डी।

क़सबा–संज्ञा पु० देखो 'कस्बा'।

क़सम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शपथ। सौगंध। मुहा०**क़सम उतारना**= शपथका प्रभाव दूर करना। २ किसी कामको नाम मात्रके लिये करना। **क़सम देना, दिलाना या रखना**=किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। **क़सम लेना, क़सम खिलाना** = प्रतिज्ञा कराना। **क़सम खानेको**=नाम मात्रको।

कसर–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कमी। न्यूनता। २ टोटा। घाटा। हानि। ३ नुक़्स। दोष। विकार। ४ किसी वस्तुके सूखने या उसमेंसे कूड़ा करकट निकलनेसे होने-वाली कमी। ५ द्वेष। बैर। मनमुटाव। मुहा०–**कसर निकालना**=बदला लेना।

कसरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) अधि-कता। ज्यादती। संज्ञा स्त्री०शरीर-का पुष्ट और बलवान् बनानेके लिए दंड बैठक आदि परिश्रमके काम। व्यायाम। मेहनत।

कसरती–वि० अ० कसरत) कस-रत या व्यायाम करनेवाला।

कसरा–संज्ञा पु० (अ० कस्रह) जेर या इकारका चिह्न।

कसल–संज्ञा पु० (अ०) १ रोगी होनेकी अवस्था। बीमारी। २ थकावट। शिथिलता।

कसल-मन्द–(अ०+फा०)१बीमार। रोगी। २ थका हुआ। क्लान्त। शिथिल।

क़साई–संज्ञा पु० (अ०) १ वधिक। घातक। २ चूचड़। निर्दय। बेरहम। निष्ठुर।

कसाफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मोटाई। २ भद्दापन। ३ गन्दगी।

क़साब–संज्ञा पु० दे० 'क़स्साब'।

क़साबा–संज्ञा पु० (अ० क़साबः) स्त्रियोंका सिरपर बाँधनेका रूमाल।

क़सामत–संज्ञा स्त्री० (फा०) क़सम खिलानेका काम।

क़सीदा–संज्ञा० पु० (अ०–क़सीदः) वह कविता या गजल जिसमें पन्द्रहसे अधिक चरण हों और किसीकी प्रशंसा अथवा निन्दा उपदेश या ऋतुवर्णन आदि हो।

कसीफ़–वि०(अ०)१ मोटा। स्थूल। २ भद्दा। बेढंगा। ३ मैला। गन्दा।

कसीर–वि० (अ०) बहुत अधिक।

कसीर-उल्-औलाद–वि० (अ०) जिसके बहुतसे बाल-बच्चे हों।

क़सूर–संज्ञा पु० (अ० क़सूर) अपराध। दोष।

क़सूरमन्द–वि० (अ० + फा०) क़सूरवार। दोषी। अपराधी।

क़सूरवार–वि (अ० + फा०) क़सूर या अपराध करनेवाला। दोषी।

कसे–वि० (फा०) कोई (व्यक्ति)। यौ०–**कसे बाशद**=चाहे कोई हो।

क़स्द–संज्ञा पु० (अ०) इरादा। विचार।

क़स्दन–क्रि० वि० (अ०) जान-बूझकर। इच्छापूर्वक।

कस्ब–संज्ञा पु० (अ०) १ पैदा करना। उपार्जन। २ हुनर। कला। ३ पेशा। व्यवसाय। ४ वेश्या-वृत्ति।

क़स्बा–संज्ञा पु० (अ०क़स्बः) (बहु० क़स्बात) साधारण गाँवसे बड़ी और शहरसे छोटी बस्ती। बड़ा गाँव।

क़स्बात–संज्ञा पु० "क़स्बा" का बहु०।

क़स्बाती–वि० (अ० क़स्बा) क़स्बे या छोटे शहरमें रहनेवाला।

कस्बी–वि० (अ०) कस्ब करनेवाली। संज्ञा स्त्री० वेश्या। रंडी।

क़स्मिया–क्रि० वि० (अ०क़स्मियः) क़सम खाकर। शपथ-पूर्वक।

क़स्र–संज्ञा पु० (अ०) १ न्यूनता। कमी। २ प्रासाद। महल।

क़स्साम–वि० (अ०) १ क़सम या शपथ खानेवाला। २ तक़सीम करने या बाँटनेवाला। विभाजक।

क़स्साब–संज्ञा पु० (अ०) पशुओंको जबह करने या मारनेवाला। क़साई।

क़स्साबा–संज्ञा पु० दे० "क़साबा"

क़स्साबी–संज्ञा स्त्री० (अ०) क़स्साबका काम या पेशा।

कह–संज्ञा स्त्री० (फा० "काह" का संक्षि० रूप) सूखी घास।

कह-कशाँ–संज्ञा स्त्री० (फा०) आकाश गंगा।

क़हक़हा–संज्ञा पु० (फा० क़हक़हः) जोरकी हँसी। ठहाका। अट्टहास।

कहगिल–संज्ञा स्त्री० (फा०) दीवारमें लगानेका मिट्टीका गारा।

क़हत–संज्ञा पु० (अ०) १ दुर्भिक्ष। अकाल। २ किसी वस्तुका बहुत अधिक अभाव।

क़हत-ज़दा—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ कहत या अकालका मारा। भूखों मरनेवाला। २ बहुत अधिक भूखा।

क़हत-साली—संज्ञा स्त्री० (अ०) क़हत। अकाल। दुष्काल।

क़हबा—संज्ञा स्त्री० (अ० क़हबः) १ दुश्चरित्रा स्त्री। पुंश्चली। २ वेश्या।

क़हर—संज्ञा पुं० (अ० क़ह्र) विपत्ति। आफ़त। क्रि० प्र०—ढाना।

क़हरन्—क्रि० वि० (अ०) बलपूर्वक। जबरदस्ती।

कह-रुबा—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका गोंद जिसे कपड़े आदि-पर रगड़कर यदि घास या तिन-केके पास रखें तो उसे चुम्बककी तरह पकड़ लेता है।

क़हवा—संज्ञा पुं० (अ० क़हवः) एक पेड़का बीज जिसके चूरेको चायकी तरह पीते हैं। काफ़ी।

कहालत—संज्ञा स्त्री० (फा०) काहिली। सुस्ती।

क़ह्र—संज्ञा पु० दे० "क़हर"

काक—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारकी रोटी।

क़ाक़—वि० (फा०) १ सूखा। २ दुर्बल। कमज़ोर।

काकरेज़ी—वि० (फा०) गहरा नीला या काला (रंग)।

काकुल—संज्ञा स्त्री० (फा०) कन-पटीपर लटकते हुए लंबे बाल। कुल्ले। जुल्फें।

काग़ज़—संज्ञा पु० (फा०) १ सन, रुई, पटुए आदिको सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिसपर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं। यौ०-**काग़ज़-पत्र**=१ लिखे हुए काग़ज़। २ प्रामाणिक लेख। दस्तावेज़। मुहा०-**काग़ज़ काला करना**=व्यर्थका कुछ लिखना। **काग़ज़की नाव**= क्षण-भंगुर वस्तु। न टिकनेवाली चीज़। **काग़ज़ी घोड़े दौड़ाना**—लिखा पढ़ी करना। ३ समाचार-पत्र। अख़बार। ४प्रामिसरी नोट।

काग़ज़ी—वि० (फा०) १ काग़ज़का बना हुआ। २ जिसका छिलका काग़ज़की तरह पतला हो। जैसे—काग़ज़ी बदाम। काग़ज़ी नीबू। ३ काग़ज़पर लिखा हुआ।

क़ाज़—संज्ञा स्त्री० (तु०) बत्तखकी जातिका एक पक्षी। कूँज। सोना।

क़ाज़ा—संज्ञा स्त्री० (फा० क़ाज़ः) वह गड्ढा जिसमें शिकारी शिकार-की ताकमें छिपकर बैठते हैं।

क़ाज़िब—संज्ञा पुं० (अ०) झूठ बोल-नेवाला। मिथ्याभाषी। वि० झूठा।

क़ाज़ी—संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानों-के धर्म और रीति-नीतिके अनुसार न्यायकी व्यवस्था करनेवाला। अधिकारी।

क़ातअ (**क़ातिअ**)—वि० (अ० क़ात्अ) क़िता करने या काटने-वाला। कर्त्तक।

क़ातिब—संज्ञा पुं० (अ०) लिखने-वाला। लेखक। मुंशी। मुहर्रिर।

क़ातिल—वि० (अ०) १ क़त्ल या

हत्या करनेवाला । हत्यारा । २ प्राणनाशक । घातक । ३ प्रेमिका-के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक विशेषण ।

क़ातेअ–वि० दे० "क़ातअ" ।

क़ादिर–वि० (अ०) क़द्र या शक्ति रखनेवाला) समर्थ । बलवान् ।

क़ादिर-मुतलक़–संज्ञा पु० (अ०) परमात्माका एक नाम । सर्व-शक्तिमान् ।

कान–संज्ञा स्त्री० (फा०) खान जिससे धातुएँ निकलती हैं । खानि । खदान ।

क़ानअ–वि० (अ० क़ानऽ) क़नाअत या सन्तोष करनेवाला । सन्तोषी ।

कान-कन–संज्ञा पु० (फा०) वह जो खान खोदता हो । खनक ।

क़ानिय–वि० दे० 'क़ानअ' ।

कानी–वि० (फा०) कान या खान सम्बन्धी । खनिज ।

क़ानून–संज्ञा पु० (अ०) (बहु० क़वा-नीन) १ राज्यमें शांति रखनेका नियम । राजनियम । आईन । विधि । २ किसी प्रकारका नियम ।

क़ानून-गो–संज्ञा पु० (अ+फा०) माल विभागका एक कर्मचारी जो पटवारियोंके काग़ज़ोंकी जाँच करता है ।

क़ानून-दाँ–वि० (अ०+फा०) क़ानून जाननेवाला ।

क़ानून-दानी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) क़ानूनका ज्ञान ।

क़ानूनन्–क्रि वि० (अ०) क़ानूनके अनुसार ।

क़ानूनी–वि० (अ०) क़ानूनसम्बन्धी । क़ानूनका ।

क़ाने–वि० दे० 'क़ानिअ' ।

क़ाफ़–संज्ञा पु० (अ०) १ एक कल्पित पर्वत जो संसारके चारों ओर माना जाता है । कहते हैं कि परियाँ इसी पर्वतपर रहती हैं । २ कृष्णसागरके पासका एक बहुत बड़ा पर्वत ।

क़ाफ़िया–संज्ञा पु० (अ० क़ाफ़िय:) अन्त्यानुप्रास । तुक । सज ।

काफ़िर–संज्ञा पु० (अ०) १ मुसल-मानोंके अनुसार उनसे भिन्न धर्म-को माननेवाला । २ ईश्वरको न माननेवाला । ३ निर्दय । निष्ठुर । बेदर्द । ४ दुष्ट । बुरा । ५ एक देशका नाम जो अफ्रिकामें है । ६ उस देशका निवासी ।

काफ़िराना–वि० (फा०) काफ़ि-रोंका-सा ।

काफ़िरे नेमत–संज्ञा पु० (अ०) कृतघ्न ।

क़ाफ़िला–संज्ञा पु० (अ० क़ाफ़िल:) कहीं जानेवाले यात्रियोंका समूह ।

काफ़ी–वि० (अ०) जितना आवश्यक हो, उतना । पर्याप्त । पूरा ।

काफ़ूर–संज्ञा पु० (अ० मि० सं० कर्पूर) । कपूर । कर्पूर ।

काफ़ूरी–वि० (अ०) १ काफ़ूरका । कपूरसम्बन्धी । २ कपूरके रंगका । कपूरी । ३ स्वच्छ और पारदर्शी ।

काफ़ूरी शमा–संज्ञा स्त्री० (अ०)

कपूरकी बत्ती जो जलाई जाती है।

काब—संज्ञा पुं० दे० "क़अब"।

क़ाब—संज्ञा स्त्री० (तु०) १ बड़ी तश्तरी या थाली। थाल।

काबक—संज्ञा पुं० दे० काबुक।

काबतैन—संज्ञा पुं० (अ० कअबऽका बहु०) १ मक्के और जेरूसलमके दोनों पवित्र मंदिर या काबे। २ दो पाँसोंसे खेला जानेवाला एक प्रकारका जूआ।

क़ाबलीयत—संज्ञा स्त्री० (अ० क़ाबिलीयत) १ क़ाबिल या योग्य होनेका भाव। योग्यता। २ विद्वत्ता। पाण्डित्य।

काबा—संज्ञा पुं० (अ० कअबः) अरबके मक्के शहरका एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते हैं।

क़ाबिज़—वि० (अ०) १ कब्ज़ा या अधिकार रखनेवाला। जिसका कब्ज़ा हो। २ कब्ज़ियत पैदा करनेवाला। मल-रोधक।

क़ाबिल—वि० (अ०) क़ाबिलीयत या योग्यता रखनेवाला। योग्य। जैसे—क़ाबिल-इनाम, क़ाबिल-एतबार। संज्ञा पुं०—योग्य या विद्वान् व्यक्ति।

काबीन—संज्ञा पुं० (फा०) वह धन जो पति विवाहके समय पत्नीको देना मंजूर करता है।

काबुक—संज्ञा पुं० (फा०) वह दरबा या खाने जिनमें पक्षी और विशेषतः कबूतर रखे जाते हैं।

क़ाबू—संज्ञा पुं० (तु०) वश। इख्तियार।

क़ाबूची—संज्ञा पुं० (तु०) १ द्वारपाल। दरबान। २ तुच्छ व्यक्ति।

कांबूस—संज्ञा पुं० (अ०) भीषण स्वप्न। डरावना ख्वाब।

काम—संज्ञा पुं० (फा०) १ उद्देश्य। अभिप्राय। २ कामना। इच्छा।

कामगार—वि० (फा०) १ जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। सफल। २ भाग्यवान्।

कामत—संज्ञा स्त्री० (अ०) कद। आकार। यौ०—**क़द व क़ामत**=आकार-प्रकार। (व्यक्तिके सम्बन्धमें।)

कामदार—संज्ञा पुं० (हिं० काम+फा० दार) १ व्यवस्थापक। प्रबन्धकर्त्ता। २ कर्मचारी। वि० जिसपर किसी तरहका विशेषतः कारचोबीका काम किया हो।

काम-ना-काम—क्रि० वि० (फा०) लाचारीकी हालतमें। विवश होकर।

कामयाब—वि० (फा०) १ जिसका अभिप्राय सिद्ध हो गया हो। २ सफल।

कामयाबी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ उद्देश्यकी सिद्धि। सफलता।

कामरान—वि० (फा०) १ जिसका उद्देश्य सिद्ध हो गया हो। सफल।

कामरानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ उद्देश्यकी सिद्धि। २ सफलता।

कामिल—वि० (अ०) (बहु० कुमला)

१ पूरा। पूर्ण। कुल। समूचा। २ योग्य। व्युत्पन्न।

क़ामूस–संज्ञा पुं० (अ०) समुद्र।

क़ायज़ा–संज्ञा पुं० (अ० क़ायज़ः) घोड़ेकी लगामकी डोरी जिसे दुम तक ले जाकर बाँधते हैं।

क़ायदा–संज्ञा पुं० (अ० क़ायदः) १ नियम। २ चाल। दस्तूर। रीति। ढंग। ३ विधि। विधान। ४ क्रम। व्यवस्था।

क़ायदा-दाँ–वि० (अ०+फ़ा०) क़ायदा या नियम जाननेवाला।

कायनात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सृष्टि। जगत्। २ विश्व। ३ पूँजी। ४ मूल्य। महत्त्व।

क़ायम–वि० (अ०) १ ठहरा हुआ। स्थिर। २ स्थापित। निर्धारित। ३ निश्चित। मुक़र्रर।

क़ायम-मिज़ाज–वि० (अ०) (संज्ञा क़ायम-मिज़ाजी) जिसका मिज़ाज ठहरा हुआ हो। शान्त स्वभाव-वाला।

क़ायम-मुक़ाम–वि० (अ०) किसीके स्थानपर काम करनेवाला। स्थानापन्न।

क़ायमा–संज्ञा पुं० (अ० क़ायमः) खड़ा या पूरा कोण।

क़ायल–वि० (अ०) १ जो तर्क-वितर्कसे सिद्ध बातको मान ले। कबूल करनेवाला। २ किसी बात या सिद्धान्तको माननेवाला।

कार–संज्ञा पुं० (फ़ा० मि० सं० कार्य) काम। कार्य। प्रत्य० कर-नेवाला। कर्ता। जैसे—जफ़ाकार, पेशाकार, काश्तकार।

कार-आज़मूदा–वि० (फ़ा०) अनु-भवी।

कार-आमद–वि० (फ़ा० काममें आनेवाला। उपयोगी।

कार-करदा–वि० (फ़ा० कारकर्दः) जिसने अच्छी तरह काम किया हो। अनुभवी।

कार-कुन–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ इंतज़ाम करनेवाला। प्रबन्ध-कर्त्ता। २ कारिंदा।

कारख़ाना–संज्ञा पुं० (फ़ा० कार-ख़ानः) १ वह स्थान जहाँ व्या-पारके लिये कोई वस्तु बनाई जाती हो। २ कारबार। व्यवसाय। ३ घटना। दृश्य। मामला। ४ क्रिया।

कारख़ाना-दार–संज्ञा पुं० (फ़ा०) किसी कारख़ानेका मालिक।

कार-ख़ास–संज्ञा पुं० (फ़ा०) ख़ास काम। विशेष कार्य।

कार-ख़ैर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) शुभ कार्य। पुण्यका काम।

कार-गर–वि० (फ़ा०) अपना काम या प्रभाव दिखलानेवाला। प्रभाव-शाली। जैसे—दवा कारगर हो गई।

कार-गाह–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) कोई काम करने, विशेषतः कपड़े बुनने-का स्थान।

कार-गुज़ार–वि० (फ़ा०) (संज्ञा–कारगुज़ारी) अपने कर्तव्यका भलीभाँति पालन करनेवाला।

कार-गुज़ारी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०)

१ आज्ञापर ध्यान रखकर ठीक तरहसे काम करना । कर्त्तव्य-पालन । २ कार्यपटुता । होशियारी । कर्मण्यता ।

कार-चोब—संज्ञा पुं० (फा०) १ लकड़ीका वह चौखटा जिसपर कपड़ा तानकर जरदोजीका काम बनाया जाता है । अड्डा । २ जरदोजी कसीदेका काम करनेवाला । जरदोज ।

कार-चोबी—वि० (फा) जरदोजीका । संज्ञा स्त्री०— गुलकारी । जरदोजी ।

कारज़ार—संज्ञा पु० (फा०) युद्ध । समर । लड़ाई ।

कारद—संज्ञा स्त्री० (फा० कार्द) चाकू । छुरी ।

कारदाँ—वि० (फा०) किसी कामको अच्छी तरह जाननेवाला । दक्ष । कुशल ।

कार-नामा—संज्ञा पुं० (फा०कारनामः) १ किसीके किये हुए कार्यों, विशेषतः युद्धसम्बन्धी कार्योंका विवरण ।

कार-परदाज़—संज्ञा पु० (फा०) १ काम करनेवाला । कारकुन । २ प्रबंधकर्त्ता । कारिंदा ।

कार-परदाज़ी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अच्छा काम करके दिखलाना । २ कारपरदाज़का काम या पद ।

कार-फ़रमाई—संज्ञा स्त्री० (फा०) आज्ञानुसार काम करना ।

कार-बरारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) कामका पूरा होना ।

कार-बन्द—वि० (फा०) १ काम करनेवाला । २ आज्ञाकारी ।

कार-बार—संज्ञा पु० (फा०) १ काम-काज । २ व्यापार । पेशा । व्यवसाय ।

कार-बारी—संज्ञा पु० (फा०) काम-धंधा करनेवाला । जो कुछ काम करता हो ।

कारवाँ—संज्ञा पु० (फा०) यात्रियोंका दल या समूह । काफिला ।

कारवाँ-सराय—संज्ञा स्त्री० (फा०) कारवाँ या यात्रियोंके ठहरनेका स्थान । सराय ।

कार-साज़—वि० (फा०) कार्य बनाने या सँवारनेवाला । जैसे—अल्लाह बड़ा कारसाज है ।

कार-साज़ी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ काम बनाना या सँवारना । २ भीतरी या छिपी हुई कार्रवाई । चालाकी ।

कारस्तानी—संज्ञा स्त्री० दे० "कारिस्तानी"

कारिन्दा—संज्ञा पु० (फा० कारिन्दः) दूसरेकी ओरसे काम करनेवाला कर्मचारी । गुमाश्ता ।

कारिस्तानी—संज्ञा स्त्री०(फा० कारस्तानी) १ कारसाज़ी । कार्रवाई । २ चालबाजी ।

कारी—वि० (फा०) १ जो अपना काम ठीक तरहसे कर दिखलावे । प्रभावशाली । २ घातक । जैसे—कारी तीर, कारी जख्म ।

क़ारी—संज्ञा पु० (अ०) पढ़नेवाला । विशेषतः कुरान पढ़नेवाला ।

कारीगर—संज्ञा पु० (फा०) धातु, लकड़ी, पत्थर इत्यादिसे सुन्दर

वस्तुओंकी रचना करनेवाला आदमी। शिल्पकार ।

कारीगरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अच्छे अच्छे काम बनानेकी कला। निर्माण-कला। २ सुन्दर बना हुआ काम। मनोहर रचना।

क़ारूँ—संज्ञा पुं० (अ०) एक बहुत अधिक धनवान् जो हज़रत मूसाका चचेरा भाई और बहुत बड़ा कंजूस माना जाता है। मुहा०—**क़ाँरूका खज़ाना**=बहुत बड़ा धन-कोश।

क़ारूरा—संज्ञा पुं० (अ० क़ारूरः) १ मसानेके आकारकी शीशी जिसमें पेशाब रखकर हकीमको दिखलाते हैं। २ पेशाब। मूत्र। मुहा०—**क़ारूरा मिलना**=बहुत अधिक मेल-जोल होना।

कार्रवाई—संज्ञा० स्त्री० (फा०) १ काम। कृत्य। करतूत। २ कार्यतत्परता। कर्मण्यता। ३ गुप्त प्रयत्न। चाल।

क़ाल—संज्ञा पुं० (अ०) १ उक्ति। कथन। २ डींग। शेखी। यौ०—**काल-मक़ाल**।

कालबुद—संज्ञा पुं० (फा०) १ शरीर। तन। बदन। २ वह ढाँचा जिसपर रखकर मोची जूता सीते हैं। कलबूत।

क़ाल-मक़ाल—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बहुत बड़ी चालाकी या लम्बी चौड़ी बातचीत। २ कहा-सुनी। तकरार।

क़ालिब—संज्ञा पुं० (अ०) १ लकड़ी आदिका वह ढाँचा जिसपर रखकर टोपी या पगड़ी तैयार की जाती है। कलबूत। २ शरीर। देह। ३ साँचा।

क़ालीन—संज्ञा स्त्री० (तु०) मोटे तागोंका बुना हुआ बहुत मोटा और भारी बिछावन जिसमें बेल-बूटे बने रहते हैं। ग़लीचा।

काबा—संज्ञा पुं० (फा० कअबः) अरबके मक्के शहरका एक स्थान जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं।

काविश—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अनुसन्धान। तलाश। खोज। २ दुश्मनी। वैर। शत्रुता।

काश—अव्य० (फा०) ईश्वर करे, ऐसा हो जाय। (प्रार्थना और आकांक्षा-सूचक)

क़ाश—संज्ञा० स्त्री० (बु०) फल आदिका कटा हुआ लंबा टुकड़ा। फाँक।

काशाना—संज्ञा पुं० (फा० काशानः) १ झोंपड़ा। कुटी। २ घर। मकान (नम्रता-सूचक)

काशिफ़—वि० (अ०) प्रकट या स्पष्ट करनेवाला।

काश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ खेती। कृषि। २ जमींदारको कुछ वार्षिक लगान देकर उसकी जमींदारीपर खेती करनेका स्वत्व।

काश्तकार—संज्ञा पुं० (फा०) १ किसान। कृषक। खेतिहर। २ वह जिसने जमींदारको लगान

देखकर उसकी ज़मीनपर खेती कर-नेका स्वत्व प्राप्त किया हो।

काश्तकारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ खेती-बारी। किसानी। २ काश्त-कारका हक़।

कासनी–संज्ञा स्त्री०(फा०) १ एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवाके काममें आते हैं। २ कासनीका बीज। ३ एक प्रकारका नीला रंग जो कासनीके फूलके रंगके समान होता है।

कासा–संज्ञा पुं० (फा०कासः) प्याला कटोरा। यौ०–**कासए सर**=खोपड़ी। **कास गदाई**=भिक्षा-पात्र।

क़ासिद–संज्ञा पुं० (अ०) १ क़स्द या इरादा करनेवाला। २ पत्र-वाहक। हरकारा।

क़ासिम–वि० (अ०) तक़सीम करने या बाँटनेवाला। विभाजक।

क़ासिर–वि० (अ०) १ जिसमें कोई कमी या त्रुटि हो। २ असमर्थ।

काह–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सूखी हुई घास। २ तिनका।

क़ाहिर–वि० (अ०) क़हर ढानेवाला। बहुत बड़ा अत्याचारी। संज्ञा पुं० विजेता।

काहिल–वि० (अ०) सुस्त। आलसी।

काहिली–संज्ञा स्त्री० (अ०) सुस्ती। आलस्य।

काहिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) ह्रास। कमी।

काही–वि० (अ०+ फा०) घासके रंगका। कालापन लिए हुए हरा।

काहू–संज्ञा पुं० (अ०) गोभीकी तरहका एक पौधा जिसके बीज दवाके काममें आते हैं।

कि–अव्यय० (फा० मि० सं० किम्) एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना आदि क्रियाओंके बाद उनके विषय-वर्णनके पहले आता है। २ तत्क्षण। इतनेमें। ३ या। अथवा। ४ क्योंकि। जैसा कि।

किज़्ब–संज्ञा पुं० (अ०) झूठ। मिथ्या बात।

क़िता–संज्ञा पुं० (अ० क़तऽ) १ खंड। टुकड़ा। २ ज़मीनका टुकड़ा। ३ ऐसी ज़मीनपर बना हुआ मकान। ४ एक प्रकारकी कविता जिसमें दो चरणोंसे कम न हों, मतला न हो और सम चरणोंमें अनुप्रास हो। संज्ञा स्त्री० देखो 'क़ता'।

किताब–संज्ञा स्त्री०(अ०) ग्रन्थ। पुस्तक।

किताबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) लिखना। यौ०–**खत-किताबत**=पत्रव्यवहार।

किताबा–संज्ञा पुं० (अ० किताबः) लेख।

किताबी–वि० (अ०) किताब या पुस्तकसम्बन्धी। संज्ञा पुं०–मुसलमानोंके अनुसार यहूदी और ईसाई लोग।

किताबे आस्मानी–संज्ञा स्त्री० देखो 'किताबे इलाही'।

किताबे इलाही–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानोंकी धर्मपुस्तक। कुरान।

क़िताल–संज्ञा स्त्री० (अ०) मार-काट। हत्या।

किनायतन–क्रि० वि० (अ०) इशारेसे। संकेतद्वारा।

किनाया–संज्ञा पु० (अ० किनायः) इशारा। संकेत।

किनार–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बगल। २ चूमना और गले लगाना। संज्ञा पु० (फा० कनार) किनारा। पार्श्व। मुहा०–**दर किनार**=अलग रहे। छोड़ दो। जैसे-खाना पीना दर किनार, एक पान भी न दिया।

किनारा–संज्ञा पुं० (फा० किनारः) १ अधिक लम्बाई और कम चौड़ाईवाली वस्तुके वे दोनों भाग जहाँ चौड़ाई समाप्त होती है। लंबाईके बलकी कोर। २ नदी या जलाशयका तट। तीर। मुहा०–**किनारे लगना**=समाप्ति पर पहुँचना। समाप्त होना। ३ लंबाई चौड़ाईवाली वस्तुके चारों ओरका वह भाग जहाँसे उसके विस्तारका अंत होता हो। प्रांत। भाग। हाशिया। गोट। ४ किसी ऐसी वस्तुका सिरा या छोर जिसमें चौड़ाई न हो। पार्श्व। बग़ल। मुहा० –**किनारा खींचना**=दूर होना। **किनारे न जाना**=अलग रहना। **किनारे बैठना**=अलग होना। छोड़कर दूर हटना।

किनारा-कश–वि० (फा०) संज्ञा–किनारा-कशी। अलग या दूर रहनेवाला। कुछ सम्बन्ध न रखनेवाला।

किनारी–संज्ञा स्त्री० (फा० किनारः) सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो कपड़ोंके किनारेपर लगाया जाता है।

किफ़ायत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ काफ़ी या अलम् होनेका भाव। २ कमखर्ची। थोड़ेमें काम चलाना। ३ बचत।

किफ़ायती–वि० (अ०) कम खर्च करनेवाला। सँभालकर खर्च करनेवाला।

क़िबला–संज्ञा पुं० (अ० क़िबलः) १ पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। २ मक्का। ३ पूज्य व्यक्ति। ४ पिता। बाप।

यौ०–**क़िबला कौनेन**=पिता। किबला हाजात=दूसरोंकी आवश्यकताएँ पूरी करनेवाला।

क़िबला-आलम–संज्ञा पु० (अ० किबलः ए आलम) १ ध्रुव तारा। २ मुसलमान बादशाहोंके प्रति संबोधनका शब्द। ३ पूज्य या बड़ेके लिए सम्बोधन।

क़िबला-गाह–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) बड़ों और विशेषतः पिताके लिये सम्बोधन।

क़िबला-नुमा–संज्ञा पु० (अ०+फा०) पश्चिम दिशाको बताने वाला एक यंत्र जिसका व्यवहार

जहाजोंपर अरब मल्लाह करते थे। दिग्दर्शक यंत्र।

किब्र–संज्ञा पुं० (अ०) १ बड़प्पन बुजुर्गी। बड़ाई। २ वृद्धावस्था।

कि.ब्रिया–संज्ञा स्त्री (अ०) बड़प्पन। बुजुर्गी। महत्ता।

किब्रियाई–संज्ञा स्त्री० (अ०) महत्ता। बड़प्पन। बुजुर्गी।

क़िमार–संज्ञा पुं० (अ०) वह बाजी या खेल जिसमें धनकी हार जीत हो। जूआ। द्यूत।

क़िमार खाना–संज्ञा पु० (अ०+फा०) जूआ खेलनेकी जगह।

क़िमार-बाज़–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) जुआ खेलनेवाला। जुआरी।

क़िमार-बाज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) द्यूत क्रीड़ा। जुआ।

क़िमाश–संज्ञा स्त्री० (तु०) १ भाँति। प्रकार। २ ताशकी गड्डी।

क़िरअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) अच्छी तरह पढ़ना, विशेषतः कुरान पढ़ना।

क़िरतास–संज्ञा पु० (अ० किर्तास) कागज़।

क़िरदार–संज्ञा स्त्री० (किर्दार) १ कार्य। काम। २ ढंग। शैली।

क़िरमिज़–संज्ञा पु० (अ०) एक प्रकारका लाल रंग।

क़िरमिज़ी–संज्ञा पु० (अ०) एक प्रकारका लाल रंग। वि० उक्त रंगका।

क़िरात–संज्ञा स्त्री० (अ०) पठन। पढ़ना।

क़िरान–संज्ञा पु० (अ०) १ किसी ग्रहका किसी राशिमें पहुँचना। संक्रमण। २ कोई शुभ संयोग या अवसर। यौ०-**साहब-ए-क़िरान**–१ वह जिसका जन्म किसी शुभ अवसर या साइतमें हुआ हो। २ भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।

क़िराम–वि० (अ०) "करीम" का बहु०

किराया–संज्ञा पु० (अ० किरायः) वह दाम जो दूसरेकी कोई वस्तु काममें लानेके बदलेमें उसके मालिकको दिया जाय। भाड़ा।

किर्दगार–संज्ञा पुं० (फा०) सृष्टिका कर्त्ता। विधाता। परमात्मा।

किर्म–संज्ञा पुं० (फा०) कीड़ा। कीट। यौ०–**किर्म खुर्दा**–जिसे कीड़े चाट गये हों। कीड़ोंका खाया हुआ।

किलक–संज्ञा स्त्री० (फा० किल्क) १ अन्दरसे पोली लकड़ी। २ एक प्रकारका नरकट जिसकी कलम बनती है।

क़िला–संज्ञा पुं० (अ० क़िलऽ) लड़ाईके समय बचावका एक सुदृढ़ स्थान। दुर्ग। गढ़।

क़िलेदार संज्ञा पु० (अ०+फा०) दुर्ग-पति। गढ़-पति।

क़िल्लत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कम होनेका भाव। कमी। न्यूनता। २ कठिनता। दिक्कत।

क़िवाम संज्ञा पु० (अ०) शहदके समान गाढ़ा किया हुआ अवलेह।

किशमिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) सुखाई हुई छोटी दाख। अंगूर।

किशमिशी—वि० (फा०) १ जिसमें किशमिश हो। २ किशमिशके रंगका। संज्ञा पु०—एक प्रकारका अमौआ रंग।

किश्त—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ खेत। २ सतरंजमें बादशाहका किसी मोहरेकी घातमें पड़ना। शह।

किश्तज़ार—संज्ञा पु० (फा०) खेत।

किश्ती—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नाव। नौका। २ एक प्रकारकी थाली।

किश्तीबान—संज्ञा पु० (फा०) मल्लाह।

क़िश्र—संज्ञा पु० (अ०) १ छाल। २ छिलका। ३ भूसी।

किश्वर—संज्ञा पु०(फा०) देश। यौ०-**किश्वर-सतानी**=देश जीतना।

किसबत—संज्ञा स्त्री० दे० 'किस्वत।'

किसरा—संज्ञा पु० (फा० खुसरोका अरबी रूप) १ नौशेरवाँकी एक उपाधि। २ फारसके बादशाहोंकी उपाधि।

क़िसास—संज्ञा पु० (अ०) हत्याका बदला चुकानेके लिए किसीकी हत्या करना।

क़िस्त—संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० अकसात) १ कई बार करके ऋण या देना चुकानेका ढंग। २ किसी ऋण या देनेका वह भाग जो किसी निश्चित समयपर दिया जाय।

क़िस्त-बंदी—संज्ञा स्त्री० (अ+फा०) थोड़ा थोड़ा करके कई बारमें रुपया अदा करनेका ढंग।

क़िस्त-वार—क्रि० वि० (अ०+फा०) १ किस्तके ढंगसे। किस्त करके। २ हर किस्तपर।

किस्वत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पहननेके कपड़े। वह थैली जिसमें हज्जाम उस्तरे और कैंची आदि रखता है।

क़िस्म—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रकार। भेद। भाँति। तरह। २ ढंग। तर्ज़। चाल।

क़िस्मत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रारब्ध। भाग्य। नसीब। करम। तक़दीर। मुहा०-**क़िस्मत आज़माना**=किसी कार्यको हाथमें लेकर देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं। **क़िस्मत-चमकना या जागना**=भाग्य प्रबल होना। बहुत भाग्यवान् होना। **किस्मत फूटना**=भाग्य बहुत मन्द हो जाना। २ किसी प्रदेशका वह भाग जिसमें कई ज़िले हों। कमिश्नरी।

क़िस्मत-आज़माई-संज्ञा स्त्री०(अ०+फा०) भाग्यकी परीक्षा।

क़िस्मत-वर-वि० (अ०+फा०) भाग्यवान्। [illegible]।

क़िस्सा—संज्ञा पु० (अ० किस्सः) १ कहानी। कथा। आख्यान। २ वृत्तान्त। समाचार। हाल। ३ कांड। झगड़ा। तकरार।

क़िस्सा-कोताह—क्रि० वि०(अ०+

फा०) संक्षेपमें यह कि। तात्पर्य यह कि।

क़िस्सा ख़्वाँ–संज्ञा पु० (अ०+फा०) वह जो लोगोंको क़िस्से कहानियाँ सुनाता हो।

क़िस्सा-ख़्वानी–संज्ञा स्त्री०(अ०+फा०) दूसरोंको क़िस्से या कहानियाँ सुनानेका काम।

कीना–संज्ञा पु० (फा० कीनः) शत्रुता। बैर। दुश्मनी।

कीना-वर–वि० (फा०) मनमें कीना या शत्रुता रखनेवाला।

क़ीफ़–संज्ञा स्त्री०–(अ०) वह चोंगी जिसके द्वारा तंग मुँहके बर्तनमें तेल आदि डालते हैं। छुच्छी।

क़ीमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) दाम। मूल्य।

क़ीमती–वि० (अ०) अधिक दामोंका। बहुमूल्य।

क़ीमा–संज्ञा पु० (अ० कीमः) बहुत छोटे छोटे टुकड़ोंमें कटा हुआ गोश्त।

कीमिआ–संज्ञा स्त्री० (अ०) रासायनिक क्रिया। रसायन।

कीमिया-गर–संज्ञा पु० (अ०+फा०) रसायन बनानेवाला। रासायनिक परिवर्तनमें प्रवीण।

कीमुख़्त–संज्ञा पु० (फा०) (वि० कीमुख़्ती) घोड़े या गधेका चमड़ा।

क़ीरात–संज्ञा पु० (अ०) चार जौकी तौल।

क़ौल–संज्ञा पु० (अ०) वचन। वार्ता

क़ील व काल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बात-चीत। २ विवाद। बहस।

कीसा–संज्ञा पु० (अ० कीसः) १ थैली। २ जेब।

कुंज–संज्ञा पु० (फा० मि० सं० कुंज) किनारा। कोना।

कुंजद–संज्ञा पु० (फा०) तिल (अन्न)।

कुंजिश्क–संज्ञा स्त्री० (फा०) गौरैया। चिड़ा नामक पक्षी।

कुजा–क्रि० वि० (फा०) कहाँ। किस जगह।

क़ुक़नुस–संज्ञा पु० (यू० फा०) एक कल्पित पक्षी जो बहुत बड़ा गानेवाला माना जाता है। आतिशज़न।

कुतका–संज्ञा पु० (तु० कुतकः) १ मोटा और बड़ा डंडा। पुरुषकी इंद्रिय।

कुतबा–संज्ञा पुं० (अ० कुत्बः) लेख।

कुतुब–संज्ञा पुं० (अ०) "किताब" का बहुवचन। पुस्तकें।

कुतुब–संज्ञा पु० दे० "कुत्ब"

कुतुब-ख़ाना–संज्ञा पु० (अ०+फा०) पुस्तकालय।

कुतुब-नुमा–संज्ञा पुं० दे० "कुत्ब-नुमा"।

कुतुब-फ़रोश–संज्ञा पु० (अ०+फा०) पुस्तक-विक्रेता।

कुतुर–संज्ञा पु० दे० "क़ुत्र।"

कुत्न–संज्ञा स्त्री० (अ०) रूई।

क़ुत्ब–संज्ञा पु० (अ०) १ ध्रुव तारा। २ वह कीली जिसपर

कोई चीज़ घूमती हो। ३ नायक। नेता। सरदार।

कुत्ब-नुमा–संज्ञा पु० (अ०+फा०) दिग्दर्शक यंत्र।

कुत्बी–वि० (अ०) कुत्ब या ध्रुव-सम्बन्धी।

कुत्र–संज्ञा पु० (अ०) वृत्तका व्यास या मध्य रेखा। अध-कट।

कुदरत–संज्ञा स्त्री०(अ०)१ शक्ति। प्रभुत्व। इख्तियार। २ प्रकृति। माया। ईश्वरी शक्ति। ३ कारीगरी। रचना।

कुदरती–वि० (अ०) १ प्राकृतिक। स्वाभाविक। २ दैवी। ईश्वरीय।

कुद्सिया–वि० स्त्री० (अ० कुद्सियः) पवित्र। पाक।

कुद्सी–वि० (अ० कुद्सी) पवित्र। पाक।

कुदूस–वि० (अ०) पवित्र। पाक।

कुद्दूस–वि० (अ०) १ पवित्र। २ शुद्ध।

कुद्मा–वि० (अ०) "क़दीम" का बहु०।

कुन–वि० (फा०) करनेवाला। (प्रायः यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे—कार-कुन।)

कुनह–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तत्त्व। तथ्य। २ बारीकी। सूक्ष्मता। जैसे—बात बातमें कुनह निकालना। संज्ञा स्त्री० (फा० कीनः) (वि० कुनही) १ द्वेष। मनोमालिन्य। २ पुराना बैर।

कुन्द–वि० (फा०) १ कुंठित। गुठला। २ स्तब्ध। मन्द। जैसे-**कुन्द-ज़ेहन**=कुंठित बुद्धिवाला।

कुन्दा–संज्ञा पु० (फा० कुन्दः मि० सं० स्कंध) १ लकड़ीका बड़ा, मोटा और बिना चीरा हुआ टुकड़ा। यौ०–**कुन्दए नातराश**=निरा मूर्ख। पूरा बेवकूफ़। २ बन्दूकका चौड़ा पिछला भाग। ३ वह लकड़ी जिसमें अपराधीके पैर ठोंके जाते हैं। ४ लकड़ीकी बड़ी मोंगरी जिससे कपड़ोंकी कुन्दी की जाती है।

कुन्नियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कुल या वंशका नाम। कुल-नाम। २ नामका वह रूप जिससे नामीका वंश भी सूचित होता है। जैसे—अब्बुल हसन=हसनका पुत्र।

कुफ़्फ़ार–संज्ञा पुं०(अ०) "क़ाफ़िर" का बहु०।

कुफ़्र–संज्ञा पु० (अ०) १ एक ईश्वरको न मानकर बहुतसे देवी-देवताओंकी उपासना करना। २ इस्लामकी आज्ञाओंके विरुद्ध आचरण। मुहा०–**किसीका कुफ़्र तोड़ना**=१ किसीको इस्लाममें दीक्षित करना। २ किसीको अपने अनुकूल करना। **कुफ़्रका फतवा देना**=किसीको कुफ़्रका दोषी ठहराना। किसीके अधर्मी होनेकी व्यवस्था देना।

कुफ़्ल–संज्ञा पु० (अ०) दरवाज़ेमें बन्द करनेका ताला। यंत्र।

कुफ़्ली—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) साँचा। विशेषतः बरफ़ आदि जमानेका साँचा। कुलफ़ी।

कुबूल—वि० दे० "कबूल"

कुब्बा—संज्ञा पु० (अ० कुब्बः) १ गुंबन्द। कलश।

कुमक—संज्ञा स्त्री० (तु०) १ सहायता। मदद। २ पक्षपात। तरफदारी।

कुमकुमा—संज्ञा पु० (अ० कुमकुमा) १ लाखका बना हुआ एक प्रकारका पोला गोला जिसमें अबीर और गुलाल भरकर होलीमें एक दूसरेपर मारते हैं। २ एक प्रकारका तंग मुँहका छोटा लोटा। ३ काँचके बने हुए पोले छोटे गोले।

कुमरी—संज्ञा स्त्री० (अ०) पंडुककी जातिकी एक चिड़िया।

कुम्मैत—संज्ञा पु० (अ०) १ घोड़ेका एक रंग जो स्याही लिये लाल होता है। लाखी। २ इस रंगका घोड़ा।

कुरआ—संज्ञा पु० (अ० कुरअऽ) १ जूआ खेलने या रमल आदि फेंकनेका पाँसा। २ किसी बातका निर्णय करनेके लिए उठाई जानेवाली गोली।

कुरक़ी—संज्ञा स्त्री० (अ० कुर्क़) कर्ज़दार या अपराधीकी जायदादका ऋण या जुरमानेकी वसूलीके लिये सरकारद्वारा जब्त किया जाना।

कुरता—संज्ञा पु० (तु० कुर्त:) स्त्री० अल्पा० कुरती) एक प्रसिद्ध पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है।

कुरतास—संज्ञा पु० (अ० क़िर्तास) कागज़।

कुरबत—संज्ञा पु० (अ० कुर्बत) पास होना। सामीप्य। नज़दीकी।

कुरबान—संज्ञा पु० (अ० कुर्बान) जो निछावर या बलिदान किया गया हो। मुहा०—**कुरबान जाना**=निछावर होना। बलि जाना।

कुरबानगाह—संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) कुरबानी करनेका स्थान। वेदी।

कुरबानी—संज्ञा स्त्री० (अ० कुर्बानी) बलिदान।

कुरसी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ एक प्रकारकी ऊँची चौकी जिसमें पीछेकी ओर सहारेके लिये पटरी लगी रहती है। यौ०—**आराम-कुरसी**=एक प्रकारकी बड़ी कुरसी जिसपर आदमी लेट सकता है। २ वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनाई जाती है। ३ पीढ़ी। पुश्त। यौ० **कुरसीनामा**।

कुरसी-नामा—संज्ञा पु० (अ०+फ़ा०) लिखी हुई वंश परंपरा। वंश-वृक्ष। शजरा।

कुरहा—संज्ञा पुं० (अ० कुरहः) वह ज़खम या घाव जिसमें पीब पड़ गई हो।

क़ुरान—संज्ञा पु० (अ०) अरबी भाषाकी प्रसिद्ध पुस्तक जो मुसलमानोंका धर्म-ग्रंथ है।

कुरीज़—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) पक्षि-

योंका पुराने पर झाड़ना और नए पर निकालना।

क़ुरैश–संज्ञा पुं० (अ०) अरबका एक क़बीला या वर्ग। मुहम्मद साहब इसी क़बीले या वर्गके थे।

क़ुरैशी–वि० (अ०) क़ुरैश क़बीलेका।

क़ुर्क़–वि० (अ०) ऋण चुकानेके लिये ज़ब्त किया हुआ।

क़ुर्क़-अमीन–संज्ञा पुं० (अ०) वह सरकारी कर्मचारी जो अदालतके आज्ञानुसार जायदादकी कुर्की करता है।

क़ुर्क़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुर्की"।

क़ुर्ब–संज्ञा पुं० (अ०) नज़दीकी। सामीप्य। निकट या पास होना। यौ०–**क़ुर्ब व जवार**=आस-पासके स्थान या प्रदेश।

क़ुर्बान–संज्ञा पुं० दे० "कुरबान"।

क़ुर्बानी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुरबानी"।

क़ुर्रए-अर्ज़–संज्ञा पुं०(अ०)पृथ्वीका गोला। पृथ्वी।

क़ुर्रत–संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रसन्नता। खुशी। यौ०–क़ुर्रत-उल ऐन= १ आँखोंका ठंडा होना। २ प्रसन्नता।

क़ुर्रम–संज्ञा पुं० (तु०) १ अपनी पत्नीसे व्यभिचार करानेवाला। २ वेश्याओंका दलाल। भँडुआ।

क़ुर्रा–संज्ञा पुं० (अ०क़ुर्रः) १ गेंदकी तरह गोल चीज़। २ गेंद। ३ क्षेत्र। जैसे–क़ुर्रए आब, क़ुर्रए हवा।

क़ुर्स–संज्ञा पुं० (अ०) १ सूर्यबिम्ब। २ टिकिया। बटी। बटिका। ३ चाँदीका एक छोटा सिक्का।

कुलंग–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकार-का सारस। क्रौंच। पक्षी।

कुल–संज्ञा पुं० (अ०) १ समस्त सब। सारा। यौ०–**कुल-जमा**=सब मिलाकर। २ केवल। मात्र।

क़ुल–संज्ञा पुं० (अ०) १ क़ुरानका वह सूरा पढ़ना जो "क़ुल-हो-अल्लाह" से आरम्भ होता है। यह भोजके अन्तमें फलों आदिपर पढ़ा जाता है। मुहा०–**क़ुल होना**= समाप्त होना।

कुलचा–संज्ञा पुं० (फा० कुलचः) १ एक प्रकारकी छोटी रोटी। २ एक प्रकारकी मिठाई।

क़ुलज़ुम–संज्ञा पुं० (अ०) लाल सागर या अरबकी खाड़ी।

कुलफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०कुल्फत) १ कष्ट। विपत्ति। २ चिन्ता। फिक्र।

कुलफ़ा–संज्ञा पुं० (अ० कुल्फः) एक प्रकारका साग। बड़ी अमलोनी।

कुलफ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुल्फ़ी"।

क़ुल-क़ुल–संज्ञा स्त्री० (अ०) कुल-कुल शब्द जो जल आदिको उड़ेल-नेके समय होता है।

कुल-मुख़्तार–संज्ञा पुं० (फा०) वह जिसे सब बातोंका पूरा अधिकार दिया गया हो।

कुलह–संज्ञा स्त्री० दे० 'कुलाह'।

कुलाँच–संज्ञा स्त्री० (तु० कुल्लाच) कूदनेकी क्रिया। कुदान।

कुलाबा—संज्ञा पु० (अ० कुल्लाबः) १ लोहेका जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजूसे जकड़ा रहता है। पायजा। २ मोरी।

कुलाल—संज्ञा पु० (फा०+सं०) कुम्हार।

कुलाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ टोपी। २ राजमुकुट।

कुली—संज्ञा पु० (तु०) बोझ ढोने-वाला। मजदूर।

कुलूख़—संज्ञा पु० (फा०) मिट्टीका ढेला।

कुल्फ़ी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पेच। २ टीन आदिका चोगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ जमाते हैं। ३ उपर्युक्त प्रकारसे जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शरबत।

कुल्बा—संज्ञा पु० (अ० कुल्बः) हल। यौ०—**कुल्बारानी**=हल जोतना।

कुल्लहुम—क्रि० वि० (अ०) कुल। बिलकुल।

कुल्लियात—संज्ञा पु० (कुल्लिय-तका बहु०) किसी ग्रन्थकार या कविकी समस्त कृतियोंका संग्रह।

कुल्ली—वि० (अ०) कुल। सब। पूरा। संज्ञा स्त्री० समष्टि।

कुशा—वि० (फा०) १ खोलने या फैलानेवाला। जैसे—**दिलकुशा**=दिलको फैलाने (प्रसन्न करने) वाला। २ सुलझानेवाला। जैसे—**मुश्किल-कुशा**=कठिनाई दूर करनेवाला।

कुशादगी संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कुशादाका भाव। २ खुला और लम्बा-चौड़ा होना। ३ विस्तार।

कुशादा—वि० (फा०कुशादः) लम्बा-चौड़ा और खुला हुआ। जैसे—कुशादा मैदान, कुशादा दिल। क्रि० वि०—अलग। दूर।

कुश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) मार डालना। हत्या। यौ० **कुश्त व ख़ून**=हत्या।

कुश्ता—वि० (फा० कुश्तः) जो मार डाला गया हो। निहत। संज्ञा पु० १ धातु आदिकी भस्म। रस। २ आशिक। प्रेमी।

कुश्ती—संज्ञा स्त्री० (फा०) दो आद-मियोंका परस्पर एक दूसरेको बलपूर्वक पछाड़ने या पटकनेके लिये लड़ना। मल्लयुद्ध। पकड़। मुहा०—**कुश्ती मारना**=कुश्तीमें दूसरेको पछाड़ना। **कुश्ती खाना**=कुश्तीमें हार जाना।

कुस—संज्ञा स्त्री०(फा०) भग। योनि।

कुसूफ़—संज्ञा पु०(अ०) १ दुर्दशाग्रस्त होना। २ ग्रहण। उपराग। ३ सूर्य्य-ग्रहण।

कुसूर संज्ञा स्त्री० 'कसर' का बहु०। संज्ञा पुं० दे० "क़सूर।"

कुहन—वि० दे० "कोहन।"

कुहना—वि० दे० "कोहना।"

कुहराम—संज्ञा पुं० दे० "कोहराम।"

कुहूल—संज्ञा पुं० (अ० कुहूल) १ अकालका वर्ष। २ सुरमा।

कू—संज्ञा पुं० (फा०) गली। चाकू। यौ०—**कू-बकू**=गली गली। दर दर। इधर उधर।

कूए संज्ञा पु० (फा०) गली। चाकू।

कूच–संज्ञा पु० (फा०) प्रस्थान। रवानगी। मुहा०-**कूच कर जाना**=मर जाना। **देवता कूच कर जाना**=होश हवास जाता रहना। भय या किसी और कारणसे ठक हो जाना। **कूच बोलना**=प्रस्थान करना।

कूचक–वि० दे० "कोचक।"

कूचा–संज्ञा पु० (फा० कूचः) छोटा रास्ता। गली। यौ०-**कूचा-गर्द**=गलियोंमें मारा मारा फिरनेवाला। आवारा।

कूज़–वि० (फा०) टेढ़ा। वक्र। यौ० **कूज़-पुश्त**। या **कूज़ा-पुश्त**=कुबड़ा। कुब्ज।

कूज़ा–संज्ञा पु० (फा० कूज़ः) १ मिट्टीका मटका। कुल्हड़। २ मिट्टीके मटकेमें जमाई हुई अर्ध गोलाकार मिस्री।

कूदक–संज्ञा पुं० (फा०) बहु० कूद-कीन। लड़का। बच्चा।

कून–संज्ञा स्त्री० (फा०) गुदा।

कूनी–वि० (फा०) गुदा-मैथुन करानेवाला।

कूरची–संज्ञा पुं०(तु०) हथियारबन्द सिपाही। सशस्त्र सैनिक।

कूलिंज–संज्ञा पु० (यू०) एक प्रकार का उदर-शूल।

कूवत–संज्ञा स्त्री० (अ०) ताकत। बल। शक्ति। सामर्थ्य। जैसे–कूवत हाज़मा।

केर–संज्ञा पु० (फा०) पुरुषकी इंद्रिय। लिंग।

क़ै–संज्ञा स्त्री० (अ०) वमन। उल्टी।

क़ैंची–संज्ञा स्त्री० (तु०) १ बाल, कपड़े आदि कतरनेका एक औज़ार। कतरनी। २ दो सीधी तीलियाँ या लकड़ियाँ जो कैंचीकी तरह एक दूसरीके ऊपर तिरछी रखी या जड़ी हों।

क़ैतून–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारकी सुनहली या रुपहली डोरी जो कपड़ोंपर टाँकी जाती है।

क़ैद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बंधन। अवरोध। २ पहरेमें बंद स्थानमें रखना। कारावास।

क़ैद-खाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) कारागार। जेलखाना।

क़ैद-तनहाई–संज्ञा स्त्री०(अ०) वह कैद जिसमें कैदी एक कोठरीमें अकेला रखा जाता है। काल-कोठरीकी सज़ा।

क़ैद-बा-मशक्कत–संज्ञा स्त्री०(अ०) सपरिश्रम कारागार। कड़ी सज़ा।

क़ैद-बे-मशक्कत–संज्ञा स्त्री० (अ०) बिना परिश्रमका कारागार। सादी सज़ा।

क़ैद-महज़–संज्ञा स्त्री०(अ०) बिना परिश्रमका कारागार। सादी सज़ा।

क़ैद-सख़्त–संज्ञा स्त्री०(अ०) सपरिश्रम कारागार। कड़ी सज़ा

क़ैदी–संज्ञा पुं० (अ०) वह जिसे कैदकी सज़ा दी गई हो। बंदी। बँधुवा।

कैफ़—संज्ञा पु० (अ०) एक प्रकारका मादक द्रव्य। अव्य० क्योंकर।

कैफ़ियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ समाचार। हाल। वर्णन। २ विवरण। ब्यौरा। मुहा०-**कैफ़ियत तलब करना**=नियमानुसार विवरण माँगना। कारण पूछना। ३ आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना।

कैमूस—संज्ञा पु० (अ०) भोजन आदिके कायया शरीरमें उत्पन्न होनेवाला रस।

क़ैरात—संज्ञा पु० दे० "क़ीरात।"

क़ैरूती—संज्ञा स्त्री० (अ०) मोमसे बनाई हुई एक प्रकारकी मालिश करनेकी दवा।

कैवान—संज्ञा पु०(अ०) १ शनिग्रह। २ सातवाँ आस्मान जिसमें शनिग्रहका निवास माना जाता है।

क़ैसर—संज्ञा पु० (अ०) सम्राट्। बादशाह।

कोकलताश—संज्ञा पुं० (तु०) दूध-भाई। (एक ही दाईका दूध पीनेवाले दो बच्चे एक दूसरेके कोकलताश कहलाते हैं।)

कोका—संज्ञा पु० (फा० कौकः) दूध-भाई। वि० दे० "कोकलताश"।

कोचक—वि० (फा०) छोटा।

कोतल—संज्ञा पु० (अ०) १ सजा-सजाया घोड़ा जिसपर कोई सवार न हो। जलूसी घोड़ा। २ स्वयं राजाकी सवारीका घोड़ा। ३ वह घोड़ा जो जरूरतके वक्तके लिये साथ रखा जाता है।

कोताह—वि० (फा०) १ छोटा। २ कम।

कोताह-अन्देश—वि०(फा०) संज्ञा० कोताह-अन्देशी) अदूरदर्शी।

कोताह-गरदन—वि०(फा०)१ जिसकी गरदन छोटी हो। २ धोखेबाज। धूर्त।

कोताही—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ छोटाई। २ कमी। त्रुटि।

कोफ़्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कष्ट। पीड़ा। २ दुःख।

कोफ़्ता—वि० (फा० कोफ़्तः) कूटा हुआ। संज्ञा पु० १ कूटा हुआ मांस। कीमा। २ कूटे हुए मांसका बना हुआ एक प्रकारका कबाब।

कोब—संज्ञा पु० (फा०) मारना। पीटना। यौ०—**ज़दो कोब**=मारपीट।

कोबा—संज्ञा पु० (फा० कोबः) काठकी मोंगरी जिससे कोई चीज कूटते या पीटते हैं। यौ०-**कोबा-कारी**=मोगरीसे कूटनेकी क्रिया।

कोर—वि०(फा०) १ अन्धा। २ न देखनेवाला या ध्यान न रखनेवाला। जैसे— **कोर-नमक** = कृतघ्न। नमकहराम।

क़ोर—संज्ञा स्त्री० (अ०) हथियार। अस्त्र।

क़ोरची—संज्ञा पु० (फा०) अस्त्रागारका अधिकारी।

कोरनिश–संज्ञा स्त्री० (तु०कुरनुशसे फा०) झुककर सलाम या बन्दगी करना। क्रि० प्र०—बजा लाना।

कोर-निशात संज्ञा स्त्री० "कोर-निश" का बहु०।

क़ोरमा–संज्ञा पु० (तु०कोरमः) भुना हुआ मांस जिसमें शोरबा बिलकुल नहीं होता।

कोराना–क्रि०वि०(फा० कोर) अन्धों-की तरह। वि० अन्धोंका सा।

कोशिश–संज्ञा स्त्री०(फा०)प्रयत्न। उद्योग। चेष्टा।

कोस–संज्ञा पु० (फा० .स) बड़ा नगाड़ा।

कोह–संज्ञा पुं० (फा०) पहाड़। पर्वत।

कोहकन–संज्ञा पु०(फा०) १ पहाड़ खोदनेवाला। २ फरहादका उप-नाम जिसने शीरीके प्रेममें बे-सतून नामक पहाड़ खोदकर एक नहर बनाई थी।

कोह-कनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पहाड़ खोदना। २ बहुत अधिक परिश्रमका काम।

कोहन–वि० (फा० कुहन) पुराना। (यौगिक शब्दोंके आरम्भमें। जैसे–**कोहन साल**=वृद्ध।)

कोहना–वि०(फा० कुहनः) पुराना। प्राचीन।

कोह-नूर–संज्ञा पुं० (फा० कोहे-नूर) १ प्रकाशका पर्वत। २ एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा हीरा।

कोहराम–संज्ञा पुं० (अ० कहर-आमसे फा०) १ रोना-पीटना। विलाप। २ हलचल।

कोहसार–संज्ञा पुं० (फा० कुहसार) पहाड़ी देश। पार्वत्य प्रदेश।

कोहान–संज्ञा पु० (फा०) ऊँटकी पीठपरका डिल्ला या कूबड़।

कोहिस्तान–संज्ञा पुं०(फा०) पहाड़ी देश। पार्वत्य प्रदेश।

कोहिस्तानी-वि० (फा०) पहाड़ी। पार्वत्य।

कोही–वि० (फा०) पहाड़ी। पार्वत्य। पर्वतका।

कौकब–संज्ञा पु० (अ०) बड़ा और चमकता हुआ तारा।

कौदन–संज्ञा पु० (अ०) १ दुबला-पतला और मरियल घोड़ा। २ मूर्ख। बेवकूफ।

कौन–संज्ञा पुं० (अ०) १ सत्य। अस्तित्व। २ प्रकृति। ३ विश्व। यौ०-**कौन व मकान**=संसार। सृष्टि।

कौनैन–संज्ञा पुं० (अ० 'कौन' का बहु०) इहलोक और परलोक।

क़ौम–संज्ञा स्त्री० (अ० बहु० अक-वाम) वर्ण। जाति।

क़ौमियत–संज्ञा स्त्री०(अ०) क़ौम। जाति।

क़ौमी–वि० (अ०) १ जातीय। २ राष्ट्रीय।

क़ौल–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० अक़-वाल) १ कथन। उक्ति। वाक्य। २ प्रतिज्ञा। प्रण। वादा।

क़ौवाल–संज्ञा पुं० दे० "कव्वाल।"

क़ौवाली–संज्ञा स्त्री० दे० 'कव्वाली।'

क़ौस–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ धनुष। कमान। २ धन-राशि।

क़ौस-ए-क़ज़ह–संज्ञा स्त्री० (अ०) इंद्रधनुष।

कौसर–संज्ञा पु० (अ०) १ बहुत बड़ा दाता। २ जन्नत या स्वर्गकी एक नहरका नाम।

(ख)

खंजर–संज्ञा पु० (अ०) कटार।

ख़ज़ानची–संज्ञा पु० (फा०) ख़ज़ानेका अफ़सर। कोषाध्यक्ष।

ख़ज़ाना–संज्ञा पु० (अ०ख़ज़ानः) १ वह स्थान जहाँ धन या और कोई चीज़ संग्रह करके रखी जाय। धनागार। २ राजस्व। कर।

ख़त–संज्ञा पु० (अ०) (बहु० ख़ुतूत) १ पत्र। चिट्ठी। यौ०–**ख़त-किताबत**=पत्र-व्यवहार। २ लिखावट। ३ रेखा। लकीर। ४ दाढ़ीके बाल। ५ हजामत। (यौगिकमें इसका रूप ख़त भी रहता है और ख़त्त। जैसे–ख़ते-मुतवाज़ी, ख़त्त-मुतवाज़ी)

ख़तना–संज्ञा पु० (अ० ख़तनः) लिंगके अगले भागका बढ़ा हुआ चमड़ा काटनेकी मुसलमानी रस्म। सुन्नत। मुसलमानी।

ख़तम–वि० (अ० ख़त्म) पूर्ण। समाप्त। मुहा–**ख़तम** करना=मार डालना।

ख़तमी–संज्ञा–स्त्री० (अ०) गुल-खैरूकी जातिका एक पौधा जिसकी पत्तियाँ आदि दवाके काममें आती हैं।

ख़तर–संज्ञा पु० (अ०) भय। डर।

ख़तरनाक–वि० (अ०) भीषण। भयानक।

ख़तरा–संज्ञा पु० (अ० ख़तरः) १ डर। भय। खौफ़। २ आशंका।

ख़ता–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कसूर। अपराध। २ भूल। गलती। ३ धोखा। संज्ञा पु०–तुर्किस्तान और तूरानके बीचका एक नगर।

ख़ताई–वि० (अ०) ख़ता नगरका। ख़ता नगरसम्बन्धी। जैसे–नान-ख़ताई।

ख़तीब–संज्ञा पुं० (अ०) १ ख़ुतबा पढ़नेवाला। २ लोगोंको सम्बोधन करके कुछ कहनेवाला।

ख़ते-इस्तिवा–संज्ञा पु० (अ०) भूमध्य-रेखा।

ख़ते-जदी–संज्ञा पुं० (अ०) मकर रेखा।

ख़ते-नकशा=संज्ञा पु० (अ०) अरबी लेखनशैली।

ख़ते-नस्तालीक़–संज्ञा पुं० (अ०) फ़ारसीके साफ, गोल और सुन्दर अक्षर।

ख़ते-मुतवाज़ी–संज्ञा पुं० (अ०) समानान्तर रेखा।

ख़ते-मुमास–संज्ञा पुं० (अ०) संपात रेखा।

ख़ते-मुस्तक़ीम–संज्ञा पु० (अ०) सरल रेखा।

ख़ते-मुस्तदीर–संज्ञा पुं० (अ०) गोल रेखा।

ख़ते-शिकस्ता–संज्ञा पु० (अ०+फा०) फारसीकी बहुत घसीट और खराब लिखावट।

ख़ते-सरतान–संज्ञा पु०(अ०) कर्क-रेखा।

ख़त्म–वि० दे० "ख़तम।"

ख़दंग–संज्ञा पु० (फा०) तीर।

ख़द्शा–संज्ञा पु० (अ० ख़दशः) अन्देशा। आशंका। डर।

ख़दीव–संज्ञा पु० (फा०) १ खुदा-वन्द। मालिक। २ बहुत बड़ा बादशाह। ३ मिस्रके बादशाहोंकी उपाधि।

ख़नाज़ीर–संज्ञा पु० (अ० ख़िन्ज़ीर-का बहु०) कंठमाला नामक रोग।

ख़न्दक़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शहर या किलेके चारों ओरकी खाई। २ बड़ा गड्ढा।

ख़ंदा–संज्ञा पु० (फा० ख़न्दः) हँसी। हास्य।

ख़न्दा-पेशानी–वि० (फा०)हँस-मुख।

ख़न्दा-रू–वि दे०"ख़न्दा-पेशानी।"

ख़न्दी–संज्ञा स्त्री० (फा० ख़न्दः) दुश्चरित्रा स्त्री। कुलटा।

ख़न्नास–पु० (अ०) भूत-प्रेत। शैतान।

ख़फ़क़ान–संज्ञा पु० (अ०) (वि० ख़फ़क़ानी) १ दिलकी धड़कनका रोग जिसमें बहुत बेचैनी होती है। २ पागलपन।

ख़फ़गी–संज्ञा स्त्री० (फा०) अ-प्रसन्नता। नाराज़गी।

ख़फ़ा–वि० (अ०) १ अप्रसन्न। नाराज़। क्रुद्ध। रुष्ट। संज्ञा स्त्री० (अ० ख़िफ़ा) छिपानेकी क्रियाका भाव। दुराव।

ख़फ़ीफ़–वि० (अ०) १ थोड़ा। कम। २ हलका। तुच्छ। ३ सामान्य। साधारण। ४ लज्जित। शरमिन्दा।

ख़फ़ीफ़ा–संज्ञा स्त्री० (अ० ख़फ़ीफ़ः) एक प्रकारकी छोटी दीवानी अदालत।

ख़बर–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ समा-चार। वृत्तान्त। हाल। २सूचना। ज्ञान। जानकारी। ३ भेजा हुआ समाचार। संदेसा। ४ चेत। सुधि। संज्ञा। ५ पता। खोज। मुहा०–**ख़बर उड़ना**=चर्चा फैलना। अफवाह होना। ख़बर लेना=१ सहायता करना। सहा-नुभूति दिखलाना। २ सज़ा देना।

ख़बर-गीर–वि० (अ + फा०) (संज्ञा ख़बरगीरी) १ जासूस। भेदिया। २ पालन-पोषण करने-वाला। संरक्षक।

ख़बरदार– वि० (अ०+फा०) होशियार। सजग।

ख़बरदारी-संज्ञा स्त्री (अ०+फा०) सावधानी। होशियारी।

ख़बर-रसाँ-संज्ञा पु० (अ०+फा०) ख़बर पहुँचानेवाला। हरकारा। दूत।

ख़बीस–संज्ञा पु० (अ०) १ दुष्ट।

आत्मा । भूत प्रेत । २ भारी दुष्ट । ३ कृपण । कंजूस ।
ख़ब्त–संज्ञा पु० (अ०) पागलपन । सनक । झक्क ।
ख़ब्ती-संज्ञा पु० सनकी । पागल ।
ख़म–संज्ञा पु० (अ०) वक्रता । टेढ़ापन । झुकाव । मुहा०–**ख़म खाना**= १ मुड़ना । झुकना । दबना । २ हारना । पराजित होना । **ख़म ठोंकना**= १ लड़नेके लिये ताल ठोंकना । २ दृढ़ता दिखलाना । **ख़म ठोंककर**=ज़ोर देकर । **ख़म व चम**=१ चमक-दमक । २ नाज़-नखरा ।
ख़मदार–वि० (अ०+फा०) टेढ़ा ।
ख़मसा–संज्ञा पु० दे० "ख़म्सा ।"
ख़मियाज़ा–संज्ञा पुं० (फा० ख़मियाजः) १ शिथिलताके समय अंग तोड़ना । अँगड़ाई । २ जँभाई । ३ बुरे कामका परिणाम । फल-भोग । क्रि०प्र० उठाना । भुगतना ।
ख़मीदा–वि० (फा० ख़मीदः) (संज्ञा ख़मीदगी) १ झुका हुआ । नत । २ टेढ़ा । वक्र ।
ख़मीर–संज्ञा पुं० (अ०) गूँधे हुए आटेका सड़ाव । २ गूँधकर उठाया हुआ आटा । माया । ३ कटहल, अनन्नास आदिका सड़ाव जो तम्बाकूमें डाला जाता है । ४ स्वभाव । प्रकृति ।
ख़मीरा–संज्ञा पुं० (अ० ख़मीरः) १ औषधों आदिका गाढ़ा शरबत । २ एक प्रकारका पीनेका तम्बाकू ।
ख़मीरी–वि० (अ० ख़मीर) जिसमें ख़मीर मिला हो । संज्ञा स्त्री० एक प्रकारकी रोटी जो ख़मीर उठाए हुए आटेसे बनती है ।
ख़मोश–वि० दे० "ख़ामोश ।"
ख़म्र–सं । पुं०(अ०) शराब । मद्य ।
ख़म्सा–वि० (अ० ख़म्सः) पाँच । चार और एक । संज्ञा पुं० पाँच चरणोंकी एक प्रकारकी कविता ।
ख़यानत–संज्ञा स्त्री० (अ०) दूसरे-की धरोहरको अनुचित रूपसे अपने काममें लाना ।
ख़यारैन–संज्ञा पुं० (अ० ख़ियारैन) ककड़ी और ख़रबूज़ेके बीज जो दवाके काममें आते हैं ।
ख़याल–संज्ञा पुं० (अ०) १ ध्यान । मनोवृत्ति । मुहा०–**ख़याल रखना** =ध्यान रखना । देखते-भालते रहना । २ स्मरण, स्मृति । याद । **ख़यालसे उतरना**=भूल-जाना । ३ विचार । भाव । सम्मति । आदर । ५ एक प्रकारका गाना ।
ख़यालात–संज्ञा पुं० (अ०)'ख़याल' का बहु० ।
ख़याली–संज्ञा वि०(अ०) १ ख़याल-सम्बन्धी । २ कल्पित ।
ख़य्यात–संज्ञा पुं० (अ०) दरजी ।
ख़य्याम–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो खेमे बनाता हो ।
ख़र-संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० खर) गधा । गर्दभ ।
ख़रख़शा–संज्ञा पुं० (फा० ख़रख़शः) १ झगड़ा । बखेड़ा । झंझट । लड़ाई । २ आशंका । डर ।
ख़रगाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) खेमा ।

खरगोश—संज्ञा पुं० (फा०) खरहा ।
खरचना—क्रि० स० (फा० खर्च) खर्च करना । व्यय करना ।
खरचा—संज्ञा पुं० दे० "खर्च ।"
खरची—संज्ञा स्त्री० (फा० खर्च) व्यभिचार करानेपर कुलटा या वेश्याको मिलनेवाला धन ।
खरतूम—संज्ञा पुं० (अ०) हाथीका सूँड़ ।
खरदल—संज्ञा पुं० (अ०) राई ।
खरदिमाग—वि० (फा०) (संज्ञा खरदिमागी) गधोंकी-सी बुद्धि रखनेवाला । मूर्ख ।
खरनफ़्स—वि० (फा०) (संज्ञा खरनफ्सी) १ जिसकी इंद्रिय बहुत बड़ी हो । २ लम्पट । दुराचारी । कामुक ।
खरबूज़ा—संज्ञा पु० (फा० खरबूजः) ककड़ीकी जातिका एक प्रसिद्ध गोल फल ।
खरमस्ती—संज्ञा स्त्री० (फा०) दुष्टता । पाजीपन । शरारत ।
खरमोहरा—संज्ञा पुं० (फा० खरमुहरः) कौड़ी । कपर्दिका ।
खरसंग—संज्ञा पुं० (फा०) १ भारी पत्थर । २ प्रतिद्वन्द्वी ।
खराज—संज्ञा पुं० (अ०) राज-कर । राजस्व ।
खराद—संज्ञा पुं० (फा० खर्राद या खराद) एक औजार जिसपर चढ़ाकर लकड़ी या धातु आदिकी सतह चिकनी और सुडौल की जाती है ।
खराब—वि० (अ०) १ बुरा । निकृष्ट । २ दुर्दशाग्रस्त । यौ०—**खराब व खस्ता**=निकृष्ट और दुर्दशाग्रस्त । ३ पतित । मर्यादा-भ्रष्ट ।
खराबा—संज्ञा पुं० (अ० खराबः) १ बिनाश । बरबादी । २ खराबी ।
खराबात—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ उजड़े हुए स्थान । २ कुलटा स्त्रियोंका अड्डा ।
खराबी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बुराई । दोष । अवगुण । २ दुर्दशा । दुरवस्था ।
खराश—संज्ञा स्त्री० (फा०) खरोंच । छिलना ।
खरास—संज्ञा स्त्री० (फा० खरीस) आटा पीसनेकी चक्की ।
खरीता—संज्ञा पु० (अ० खरीतः) १ थैली । खीसा । २ जेब । ३ वह बड़ा लिफाफा जिसमें आज्ञापत्र आदि भेजे जायँ ।
खरीद—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मोल लेनेकी क्रिया । क्रय । यौ०—**खरीद-फ़रोख्त**= क्रय-विक्रय । खरीदी हुई चीज । यौ०—**जर-खरीद**=वह चीज जो धन देकर खरीदी गई हो और जिसपर स्वामित्वका पूरा अधिकार हो ।
खरीददार—संज्ञा पु० (फा०)खरीदने या मोल लेनेवाला । ग्राहक ।
खरीददारी—संज्ञा स्त्री० (अ०)खरीदनेकी क्रिया या भाव ।
खरीदना—क्रि० स० (फा० खरीद) मोल लेना । क्रय करना ।

ख़रीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) वि० ख़रीफ़ी) वह फ़सल जो आषाढ़से अगहन तकमें काटी जाय ।

ख़रीफ़ी–वि०(अ०)ख़रीफ़-सम्बन्धी । सावनी ।

ख़रोश–संज्ञा पुं (फा०) कोलाहल । शोर । यौ०–**जोश व ख़रोश**= बहुत आवेश और उत्साह ।

ख़र्च–संज्ञा पुं० (फा०) १ किसी काममें किसी वस्तुका लगना । व्यय । सरफ़ा । खपत । २ वह धन जो किसी काममें लगाया जाय ।

ख़र्चा–संज्ञा पुं० दे० 'ख़र्च ।'

ख़र्चीला–वि० (फा०) १ खूब ख़र्च करनेवाला । उदार । २ अपव्ययी । [illegible] ।

ख़लजान–संज्ञा पुं०(अ०)१ चिन्ता । फ़िक्र । २ विकलता । बेचैनी ।

ख़लफ़–संज्ञा पु० (अ०) १ लड़का । बेटा । पुत्र । २ उत्तराधिकारी । वारिस । वि० आज्ञाकारी । सुशील । (प्रायः पुत्रके लिये) यौ० –**ना-ख़लफ़**=अयोग्य और दुष्ट । (प्रायः पुत्रके लिये)

ख़लल–संज्ञा पु० (अ०) रोक । बाधा । यौ०–**ख़लले दिमाग़**= दिमाग़ ख़राब होना । पागलपन ।

ख़लल-अन्दाज़–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा–ख़लल अन्दाज़ी) ख़लल या बाधा डालनेवाला । बाधक ।

ख़लवत–संज्ञा स्त्री० (अ०) शून्य या निर्जन स्थान । एकान्त ।

ख़लवत ख़ाना–संज्ञा पु० (अ०+फा०) १ वह शून्य और निर्जन स्थान जहाँ परामर्श आदि हों । २ स्त्रियोंके रहने या सोने आदिका स्थान ।

ख़लवती–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो एकान्तवास करता हो । २ घनिष्ठ मित्र या सम्बन्धी जो ख़लवत-ख़ानेमें आ सकता हो ।

ख़ला–संज्ञा पु० (अ०) १ ख़ाली स्थान । २ आकाश । ३ पाख़ाना । शौचागार । संज्ञा पुं० (फा० ख़लः) १ नाव खेचनेका डाँड़ा । पतवार ।

ख़लायक़–संज्ञा स्त्री०(अ०)ख़ल्क़का बहु० । सृष्टिके समस्त प्राणी ।

ख़लास–संज्ञा पुं०(अ०) १ छुटकारा । मोक्ष । मुक्ति । २ वीर्यपात । वि० १ छूटा हुआ । मुक्त । २ समाप्त । ३ गिरा हुआ । च्युत ।

ख़लासी–संज्ञा स्त्री० (अ० ख़लास) छुटकारा । मुक्ति । संज्ञा पुं० १ तोप [illegible] । तोपची । २ जहाज़पर काम करनेवाला मजदूर ।

ख़लीश–संज्ञा स्त्री०(अ०)१ कसक । पीड़ा । २ चिन्ता । आशंका । ३ चुभना । गड़ना ।

ख़लीक़–वि० (अ०) १ सुशील । सज्जन । २ मिलनसार ।

ख़लीज–संज्ञा स्त्री० (अ०) समुद्रका वह टुकड़ा जो तीन ओर स्थलसे घिरा हो । खाड़ी ।

ख़लीता–संज्ञा पुं० (फा०) १ थैली । २ जेब ।

ख़लीफ़ा–संज्ञा पुं० (अ० ख़लीफ़.) (बहु० ख़ुल्फ़ा) १ उत्तराधिकारी। वारिस। २ मुहम्मद साहबके उत्तराधिकारी जो समस्त मुसलमानोंके सर्व-प्रधान नेता माने जाते हैं। ३ दरजियों और हज्जामों आदिकी उपाधि। वि० बहुत चतुर और धूर्त्त।

ख़लील–संज्ञा पुं० (अ०) सच्चा मित्र।

ख़लेरा–वि० (अ० ख़ालू या ख़ालः) ख़ाला या ख़ालूके सम्बन्धवाला। जैसे–ख़लेरा भाई=मौसेरा भाई।

ख़ल्क़–संज्ञा स्त्री० (अ०) मानव जाति। सब मनुष्य। यौ०–ख़ल्के-ख़ुदा=ईश्वरकी रची हुई सृष्टि और सब जीव।

ख़ल्त–संज्ञा पुं० (अ०) मिलना-जुलना। मिश्रण।

ख़वास–संज्ञा पुं० (अ०) राजाओं और रईसोंका ख़ास ख़िदमतगार।

ख़वासी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ख़वासका काम या पद। २ हाथीके हौदेमें पीछेका स्थान जहाँ ख़वास बैठता है।

ख़शख़ाश–संज्ञा स्त्री०(फ़ा०) पोस्तेका दाना।

ख़श्म–संज्ञा पुं० (फ़ा०) क्रोध। ग़ुस्सा।

ख़श्मगीं–वि० (फ़ा०) ग़ुस्सेमें भरा हुआ। क्रुद्ध।

ख़श्मनाक–वि० (फ़ा०) ग़ुस्सेमें भरा हुआ। क्रुद्ध।

ख़स–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) गाँडर नामक घासकी प्रसिद्ध जड़ जो सुगंधित होती है। यौ०–**ख़स व ख़ाशाक**=कूड़ा करकट।

ख़सम–संज्ञा पुं० (अ० ख़स्म) १ शत्रु। दुश्मन। २ स्वामी। मालिक। ३ पति। शौहर।

ख़सरा–संज्ञा पुं० (अ० ख़सरः) १ पटवारीका एक काग़ज़ जिसमें प्रत्येक खेतका नंबर और रकबा आदि लिखा रहता है। २ हिसाब किताबका कच्चा चिट्ठा। संज्ञा पु० एक प्रकारकी खुजली।

ख़सलत–संज्ञा स्त्री० (अ० ख़स्लत) १ प्रकृति। स्वभाव। २ आदत। बान। टेव।

ख़साँदा–संज्ञा पु० (फ़ा० ख़साँद:) ओषधियोंका काढ़ा। क्वाथ।

ख़सायल–संज्ञा पु० (अ०) "ख़सलत" का बहु०।

ख़सारा–संज्ञा पु० (अ० ख़सारः) घाटा। हानि। नुकसान।

ख़सासत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ख़सीसका भाव। २ दुष्टता। ३ अयोग्यता। ४ कृपणता। कंजूसी।

ख़सी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह पशु जिनके अण्ड-कोष निकाल लिये गये हों। बधिया। २ हिजड़ा। नपुंसक। ३ बकरीका नर बच्चा। ४ वह स्त्री जिसकी छातियाँ छोटी हों।

ख़सीस–वि० (अ०) १ दुष्ट। बुरा। २ अयोग्य। ३ कृपण। कंजूस।

ख़सूफ़–संज्ञा पु० दे० "ख़ुसूफ़।"

ख़सूसियत–संज्ञा स्त्री० दे० "ख़ुसूसियत ।"

ख़स्तगी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) ख़स्ता होनेका भाव । ख़स्तापन ।

ख़स्ता–वि० (फ़ा०) १ टूटा हुआ । भग्न । २ दबानेसे जल्दी टूट जानेवाला । चुरमुरा । ३ घायल । ४ दुःखी । खिन्न । यौ०–**ख़राब व ख़स्ता**=दुर्दशाग्रस्त । **ख़स्ता व ख़्वार**–दुर्दशाग्रस्त ।

ख़स्ता-हाल–वि० (फ़ा०) (संज्ञा) ख़स्ता-हाली) दुर्दशाग्रस्त ।

ख़स्म–संज्ञा पु० दे० "ख़सम"

ख़ाक–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ धूल । मिट्टी । मुहा०–**कहींपर ख़ाक उड़ाना**=बरबादी होना । उजाड़ होना । **ख़ाक उड़ाना या छानना**–मारा मारा फिरना । **ख़ाकमें मिलना**=बिगड़ना । बरबाद होना । २ तुच्छ । ३ कुछ नहीं ।

ख़ाकनाए–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) स्थल-डमरूमध्य ।

ख़ाकरोब–संज्ञा पु० (फ़ा०) झाड़ू देनेवाला । भंगी । चमार ।

ख़ाकसार–वि० (फ़ा०) अति दीन । तुच्छ । (प्रायः नम्रता दिखलानेके लिये अपने सम्बन्धमें बोलते हैं । जैसे–यह ख़ाकसार भी वहाँ मौजूद था ।)

ख़ाकसारी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) बहुत अधिक दीनता या नम्रता ।

ख़ाकसीर–संज्ञा स्त्री० (फ़ा० ख़ाकसीरः) खूबकला नामक औषध ।

ख़ाका–संज्ञा पु० (फ़ा० ख़ाकः) १ चित्र आदिका डौल । ढाँचा । नक़शा । मुहा०–**ख़ाका उड़ाना**= उपहास करना । २ वह कागज़ जिसमें किसी कामके ख़र्चका अनुमान लिखा जाय । चिट्ठा । ३ तख़मीना । तकदमा । ४ मसौदा ।

ख़ाक़ान–संज्ञा पु० (तु०) १ चीन और चीनी तुर्किस्तानके बादशाहोंकी पुरानी उपाधि । २ बादशाह ।

ख़ाकी–वि० (फ़ा०) १ मिट्टीके रंगका । भूरा । २ बिना सींचा हुआ खेत ।

ख़ागीना–संज्ञा पु० (फ़ा० ख़ागीनः) १ सूखा अंडा । २ अंडोंकी बनी रोटी या तरकारी ।

ख़ातमा–संज्ञा पु० (अ० ख़ातिमः) ख़तम होना । अन्त । समाप्ति । यौ०–**ख़ातमा बिलख़ैर**=सकुशल समाप्ति ।

ख़ातिम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अंगूठी । २ मोहर । मुद्रा ।

ख़ातिर–संज्ञा स्त्री० (अ) १ आदर । सम्मान । यौ०–**किसी की ख़ातिर**=किसीके लिए । किसीके वास्ते । **किस ख़ातिर**=किस लिए । २ इच्छा । प्रवृत्ति ।

ख़ातिर ख़्वाह–क्रि० वि० (अ०) जैसा चाहिए, वैसा । इच्छानुसार । यथेच्छ ।

ख़ातिर जमा–संज्ञा स्त्री० (अ० ख़ातिर जमऽ) संतोष । इतमीनान । तसल्ली ।

ख़ातिर-तवाज़ा—संज्ञा स्त्री० (अ० ख़ातिर तवाज़ः) आदर सत्कार। आव-भगत।

ख़ातिरदारी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) सम्मान। आदर। आव-भगत।

ख़ातिरन्—क्रि० वि० (अ०) ख़ातिर या लिहाज़से।

ख़ातून—संज्ञा स्त्री० (तु०) भले घरकी स्त्री। भद्र महिला।

ख़ादिम—संज्ञा पु० अ० (बहु० ख़ुद्दाम) १ ख़िदमत करनेवाला। सेवक। २ किसी ... धर्म-स्थानका पुजारी या अधिकारी।

ख़ादिमा—संज्ञा स्त्री० (अ० ख़ादिमः) सेविका। दासी। मज़दूरनी।

ख़ान—संज्ञा पु० (फ़ा०) १ फ़ारसके और पठान सरदारोंकी उपाधि। २ कई गाँवोंका मुखिया या सरदार।

ख़ानए-ख़ुदा—संज्ञा पु० (फ़ा०) मसजिद।

ख़ानक़ाह—संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमान साधुओंके रहनेका स्थान या मठ।

ख़ानख़ानाँ—संज्ञा पु० (अ०) सरदारोंका सरदार। बहुत बड़ा सरदार।

ख़ानगी—वि० (फ़ा०) निजका। आपसका। घरेलू। घरू। संज्ञा स्त्री० बहुत थोड़ा धन लेकर हर किसीसे व्यभिचार करनेवाली वेश्या।

ख़ानदान संज्ञा पु० दे० 'ख़ान्दान।'

ख़ानम—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ ख़ानकी स्त्री। २ भले घरकी स्त्री। भद्र महिला।

ख़ानमाँ-संज्ञा पु० (फ़ा०) घर-गृहस्थीका असबाब।

ख़ानवादा—संज्ञा पु० दे० 'ख़ान्दान।'

ख़ानसामाँ—संज्ञा पु० (फ़ा०) वह जो खाना बनाता हो। मुसलमान रसोइया। बावर्ची।

ख़ाना-संज्ञा पु० (फ़ा० ख़ानः) १ घर। मकान। जैसे-डाक-ख़ाना। दवा-ख़ाना। २ किसी चीज़के रखनेका घर। केस। ३ विभाग। कोठा। घर। ४ सारिणी या चक्रका विभाग। कोष्टक।

ख़ाना-ख़राब—वि० (फ़ा०) १ जिसका घर उजड़ गया हो। २ आवारा। लफंगा।

ख़ाना-ख़राबी—संज्ञा स्त्री० दे० 'ख़ाना-बरबादी।'

ख़ाना-जंगी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) आपस या घरकी लड़ाई। गृह-कलह।

ख़ाना-ज़ाद—संज्ञा पु० (फ़ा०) १ वह जो किसी दूसरेके घरमें उत्पन्न हुआ या पला हो। २ गुलामकी सन्तान जो मालिकके घरमें उत्पन्न हुई हो।

ख़ाना-तलाशी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) किसी खोई या चुराई हुई चीज़के लिए मकानके अंदर छान-बीन करना।

ख़ानादारी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) गृहस्थीका प्रबन्ध या कार्य।

ख़ाना-नशीन–वि० (फ़ा०) (संज्ञा ख़ाना नशीनी) जो सब काम छोड़ कर चुपचाप घरमें बैठा रहे।

ख़ानापुरी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) किसी चक्र या सारणीके कोठोंमें यथा-स्थान संख्या या शब्द आदि लिखना। नक़शा भरना।

ख़ाना-बदोश–वि० (फ़ा०) (संज्ञा ख़ाना-बदोशी) अपनी गृहस्थीका सब सामान कंधे या सिरपर रखकर इधर उधर घूमनेवाला। जिसका घर-बार न हो।

ख़ाना-बरबादी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) घर या परिवारका विनाश।

ख़ाना-शुमारी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) किसी बस्तीके घरों या मकानोंकी गणना।

ख़ाना-साज़–वि० (फ़ा०) घरमें बना हुआ। संज्ञा पु० ख़ाने बनानेवाला।

ख़ान्दान–संज्ञा पु० (फ़ा०) वंश। कुल।

ख़ान्दानी–वि०(फ़ा०)१ ऊँचे वंशका। अच्छे कुलका। २ वंशपरंपरागत। पैतृक। पुश्तैनी।

ख़ाम–वि० (फ़ा०) १ बिना पका हुआ। कच्चा। २ बुरा। ख़राब।

ख़ाम-ख़याली–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) व्यर्थके विचार।

ख़ाम-पारा–वि० स्त्री० (फ़ा० ख़ाम-पारः) १ वह स्त्री जो छोटी अवस्थासे ही पुरुषसे समागम करने लगी हो। २ दुश्चरित्रा। पुंश्चली।

ख़ामा–संज्ञा पु० (फ़ा० ख़ाम) कलम। यौ०–**ख़ामा-दान**=कलम-दान।

ख़ामी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ कच्चा-पन। कच्चाई। २ त्रुटि। ख़राबी।

ख़ामोश–वि० (फ़ा०) चुप। मौन।

ख़ामोशी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) मौन। चुप्पी।

ख़ायन–वि० (अ०) ख़यानत करने-वाला। किसीकी धरोहरको अपने काममें लानेवाला।

ख़ायफ़–वि० (अ०) कायर। डरपोक।

ख़ाया–संज्ञा पु० (फ़ा० ख़ायः) १ मुरगीका अंडा। २ अण्डकोश।

ख़ाया बरदार–वि० (फ़ा०) (संज्ञा ख़ाया-बरदारी) बहुत अधिक चापलूसी और तुच्छ सेवाएँ करनेवाला।

ख़ार–संज्ञा पु० (फ़ा०) १ कंटक। काँटा। २ दाढ़ी-मूछ आदि। ३ मनोमालिन्य। ४ डाह। ईर्ष्या। मुहा०-**ख़ार-खाना**=मनमें द्वेष रखना। ५ खाँग।

ख़ारदार–वि० (फ़ा०) काँटोंवाला। कँटीला। संज्ञा पु० एक प्रकारका गलमा।

ख़ारपुश्त–संज्ञा पु० (फ़ा०) साही नामक जन्तु जिसके शरीरपर बड़े बड़े काँटे होते हैं।

ख़ार व ख़स–संज्ञा पु० (फ़ा०) कूड़ा-करकट।

ख़ारा–संज्ञा पु० (फ़ा० ख़ारः) १ कड़ा पत्थर। २ एक प्रकारका

कपड़ा। कहते हैं कि यह धूपमें रखनेपर उसी प्रकार टुकड़े टुकड़े हो जाता है, जिस प्रकार चाँदनी-में रखनेपर कतान।

खारिज–वि० (अ०) १ बाहर किया हुआ। निकाला हुआ। बहिष्कृत। २ भिन्न। अलग। ३ जिस (अभियोग) की सुनाई न हो।

खारिजन्–क्रि० वि०(अ०)१ ऊपर-से। बाहरसे। २ किंवदन्तीके अनुसार।

खारिजा–वि० (अ० खारिजः) बाहर निकाला या अलग किया हुआ।

खारिजी–संज्ञा पु० (अ०) १ वह जो किसी समाज या सम्प्रदायसे अलग हो जाय। २ वे मुसलमान जो अलीको खलीफ़ा नहीं मानते। ३ सुन्नी मुसलमानोंके लिये शीया मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त होनेवाला उपेक्षा या घृणा-सूचक शब्द।

खारिश,खारिश्त–संज्ञा स्त्री०(फा०) खुजली (रोग)।

खाल–संज्ञा पु० (अ०) मुख आदिपरका काला गोल चिह्न। तिल।

खालसा–संज्ञा पु० (अ० खालिसः) १ वह जमीन जिसपर स्वयं राज्यका अधिकार हो। २ सिक्ख।

खाला–संज्ञा स्त्री० (अ० खालः) माँकी बहन। मौसी।

खालिक़–संज्ञा पु० (अ०) सृष्टिकर्ता। ईश्वर।

खालिस–वि० (अ०) जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो। शुद्ध।

खाली–वि० (अ०) १ जिसके अन्दरका स्थान शून्य हो। जो भरा न हो। रीता। रिक्त। २ जिसपर कुछ न हो। ३ जिसमें कोई एक विशेष वस्तु न हो। मुहा०-**हाथ खाली होना**=हाथमें रुपया पैसे न होना। निर्धन होना। **खाली पेट**=बिना कुछ अन्न खाये हुए। रहित। विहीन। ४ जिसे कुछ काम न हो। ५ जो व्यवहारमें न हो। जिसका काम न हो (वस्तु)। ६ व्यर्थ। निष्फल। मुहा०-**निशाना या वार खाली जाना**=वार निष्फल होना।

खालू–संज्ञा पु० (अ०) माँका बह-नोई। मौसा।

खावर–संज्ञा पु०(फा०) पूर्व दिशा।

खाविन्द–संज्ञा (फा०) १ पति। स्वामी। २ मालिक।

खाविन्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ स्वामीका भाव या गुण। २ कृपा। अनुग्रह।

खाशाक–संज्ञा पुं० (फा०) कूडा-करकट।

खास–वि० (अ०)१ विशेष। मुख्य। प्रधान। "आम" का उलटा। मुहा०-**खासकर**=विशेषतः। २ निजका। आत्मीय। ३ स्वयं। खुद। ४ ठीक। ठेठ। विशुद्ध।

खासकर–क्रि० वि० (अ०+हिं०) विशेषतः। विशेष रूपसे।

ख़ासदान—संज्ञा पु० (अ०+फा०) पानदान । पन-डब्बा ।

ख़ास-नवीस—संज्ञा पु० (अ०+फा०) बड़े आदमी या राजाका व्यक्तिगत लेखक । प्राइवेट सेक्रेटरी ।

ख़ास-बरदार—संज्ञा पु०(अ०+फा०) वह जो किसी राजा या बड़े सरदारके अस्त्र-शस्त्र आदि लेकर चलता हो ।

ख़ास-महल—संज्ञा पु० (अ०) १ वह महल जिसमें केवल विवाहिता स्त्रियाँ रहती हों । २ विवाहिता स्त्री या रानी ।

ख़ास-महाल—संज्ञा पु० (अ०) वह ज़मींदारी जिसका प्रबन्ध सरकार स्वयं करती हो ।

ख़ास व आम—संज्ञा पु० (अ०) बड़े और छोटे सब लोग ।

ख़ासा—संज्ञा पु० (अ० ख़ासः) १ बड़े आदमियोंका भोजन । २ एक प्रकारकी बढ़िया मलमल । ३ वह अस्तबल जिसमें स्वयं बादशाहकी सवारी और पसन्दके हाथी घोड़े आदि रहते हों । ४ प्रकृति । स्वभाव । वि० १ अच्छा । बढ़िया । २ स्वस्थ । नीरोग । ३ मध्यम श्रेणीका । ४ सुडौल । सुन्दर । ५ भरपूर । पूरा ।

ख़ासियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्राकृतिक गुण । प्रकृति । २ विशेषता ।

ख़ास्सा—संज्ञा पु० (अ० ख़ासः) किसी व्यक्ति या वस्तुका विशेष गुण ।

ख़ाहमख़ाह-क्रि० वि०दे० 'ख़्वाहमख़्वाह ।'

ख़िज़र—संज्ञा पु० दे० 'ख़िज्र ।'

ख़िज़ाँ—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ हेमन्त ऋतु जब कि वृक्षोंके पत्ते झड़ जाते हैं । २ पतझड़ । ३ ह्रास या पतनके दिन ।

ख़िज़ाब-संज्ञा पु० (अ०) सफ़ेद बालोंको काला करनेकी औषधि । केश-कल्प ।

ख़िजालत-संज्ञा स्त्री० (अ०) शरमिन्दगी ।

ख़िज़ीना—संज्ञा पु० दे० 'ख़ज़ाना' ।

ख़िज्र—संज्ञा पु०(अ०) १ एक प्रसिद्ध पैगम्बर जो वनों और जलके स्वामी तथा भूले भटकोंके मार्गदर्शक माने जाते हैं । २ मार्गदर्शक ।

ख़िताब—संज्ञा पु० (अ०) १ पदवी । उपाधि । २ किसीसे कुछ कहना । (सम्बोधना ।)

ख़ित्ता—संज्ञा पु० (अ० ख़ित्तः) १ ज़मीनका टुकड़ा । २ प्रदेश ।

ख़िदमत—संज्ञा स्त्री० (अ०) सेवा ।

ख़िदमत-गार—संज्ञा पु०(अ०+फा०) (संज्ञा ख़िदमतगारी) ख़िदमत करनेवाला सेवक । टहलुआ ।

ख़िदमत-गुज़ार-वि० (अ० + फा०) (संज्ञा ख़िदमत-गुज़ारी) स्वामिनिष्ठ सेवक ।

ख़िदमात-संज्ञा स्त्री०(अ०) 'ख़िदमत'का बहु० ।

ख़िफ़्फ़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) १

हलका-पन। २ अप्रतिष्ठा। हेठी। अपमान।

ख़िरक़ा–संज्ञा स्त्री० (अ० ख़िरक़ः) फकीरोंके ओढ़नेकी गुदड़ी। यौ०–**ख़िरक़ा-पोश**-भिखमंगा। २ साधु और त्यागी।

ख़िरद–संज्ञा स्त्री० (फा०) बुद्धि।

ख़िरद-मन्द–वि० (फा०)बुद्धिमान्। अक्लमंद।

ख़िरमन–संज्ञा पु० (फा०) १ काटी हुई फसलका ढेर। २ खलिहान।

ख़िराज–संज्ञा (अ०) राज-कर। राजस्व।

ख़िराजी–वि० (अ० 'ख़िराज' से फा०) १ ख़िराजसम्बन्धी। २ जिसपर ख़िराज लगता या उसे ख़िराज देता हो।

ख़िराम–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चलना। गति। चाल। २ धीरे धीरे और नखरेसे चलना। मस्तानी चाल।

ख़िरामाँ–वि० (फा०) मस्तानी चालसे चलनेवाला। मुहा०–**ख़िरामाँ-ख़िरामाँ** = मस्तीकी चालसे धीरे धीरे (चलना)।

ख़िर्स–संज्ञा पु० (फा०) भालू। रीछ।

ख़िलअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह वस्त्र जो राजाकी ओरसे सम्मानार्थ मिलता है। (अ० में यह पुं० है।)

ख़िलवत–संज्ञा स्त्री० (अ०) शून्य या निर्जन स्थान। एकान्त।

ख़िलाफ़–वि० (अ०) विरुद्ध। उल्टा। विपरीत। यौ०–**ख़िलाफ़-दस्तूर या ख़िलाफ़-मामूल**= प्रचलित प्रणाली या नियमोंके विपरीत।

ख़िलाफ़-गोई–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) झूठ बोलना। मिथ्यावादिता।

ख़िलाफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ख़लीफ़ाका पद या भाव। २ उत्तराधिकार। ३ समस्त मुसलमान बादशाहोंपर होनेवाला [illegible] अधिकार।

ख़िलाफ़-वर्ज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) १ आज्ञा आदिकी अवहेला। अवज्ञा। २ अनुचित आचरण।

ख़िलाल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ खेल आदिमें होनेवाली हार। २ धातुका वह टुकड़ा जिससे दाँत खोदते हैं। ३ अन्तर। दूरी।

ख़िल्क़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ उत्पन्न या सृजन करना। २ प्राकृतिक संघटन। ३ जन-समूह।

ख़िल्क़ी–वि० (अ०) १ प्राकृतिक। २ जन्म-जात। पैदाइशी।

ख़िल्त–संज्ञा पु० (अ०) १ शरीरमेंका कफ। २ प्रकृति।

ख़िश्त–संज्ञा स्त्री० (अ०) ईंट।

ख़िश्तक–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कपड़ेका वह टुकड़ा जो पायजामेके दोनों पाँयचोंके ऊपर उन्हें जोड़नेके लिये लगाया जाता है। मियानी। २ पायजामा।

ख़िश्ती–वि० (अ०) ईंटोंका बना हुआ (मकान आदि)।

ख़िसाल- संज्ञा पु- (अ०) "ख़सलत" का बहु० ।

ख़िसाँदा-संज्ञा पु० (फा० ख़िसाँदः) दवाओंका काढ़ा । क्वाथ ।

ख़िसारा-संज्ञा पु० (अ० ख़सारः) घाटा । नुकसान । हानि ।

ख़िस्सत-संज्ञा स्त्री० (अ०) कृपणता । कंजूसी ।

ख़ीमा-संज्ञा पु० दे० 'खेमा ।'

ख़ीरा-वि० (फा० ख़ीरः) संज्ञा (ख़ीरगी) १ अंधेरा । तारीक । २ दुष्ट । पाजी ।

ख़ुतका-संज्ञा पु० (फा० ख़ुतकः) १ मोटी लकड़ी । डंडा । २ पुरुषकी इंद्रिय ।

ख़ुतबा-संज्ञा पु० (अ० ख़ुत्बः) १ तारीफ़ । प्रशंसा । २ सामयिक राजकी प्रशंसा या घोषणा । मुहा०—**किसीके नामका ख़ुतबा पढ़ा जाना**=सर्वसाधारण को सूचना देनेके लिये किसीके सिंहासनासीन होनेकी घोषणा होना ।

ख़ुतूत-संज्ञा पु० (अ०) "ख़त" का बहु० ।

ख़ुत्तामा-संज्ञा स्त्री० (अ० ख़ुत्तामः) दुश्चरित्रा स्त्री० । पुंश्चली । कुलटा ।

ख़ुद-वि० (फा०) स्वयं । आप । मुहा—**ख़ुद-ब-ख़ुद**=आपसे आप । बिना किसी दूसरेके प्रयास, यत्न या सहायताके ।

ख़ुद-आराई-संज्ञा स्त्री० (फा०) अपनी शोभा या मान आदि स्वयं बनानेका प्रयत्न करना ।

ख़ुद-करदा-वि० (फा० ख़ुद-कर्दः) अपना किया हुआ ।

ख़ुद कशी-संज्ञा स्त्री० दे० "ख़ुद-कुशी ।"

ख़ुद-काम-वि० (फा०) (संज्ञा-ख़ुद-कामी) स्वार्थी । मतलबी ।

ख़ुद-काश्त-वि० (फा०) ज़मीन जिसे उसका मालिक स्वयं जोते-बोये ।

ख़ुद-कुशी-संज्ञा स्त्री० (फा०) अपनी जान आप देना । आत्म-हत्या ।

ख़ुद-ग़रज़-वि० (फा०) (संज्ञा ख़ुद-ग़रज़ी) स्वार्थी । मतलबी ।

ख़ुद-नुमा-वि० (फा०) (संज्ञा ख़ुद-नुमाई) १ लोगोंको अपना बड़प्पन दिखलानेवाला । २ अभिमानी । घमंडी ।

ख़ुद-परस्त-वि० (फा०) (संज्ञा ख़ुद-परस्ती) स्वार्थी । मतलबी ।

ख़ुद-पसन्द-वि० (फा०) (संज्ञा ख़ुद-पसन्दी) अपने आपको बहुत अच्छा समझनेवाला ।

ख़ुद-बीं (न)-वि० (फा०) (संज्ञा ख़ुद-बीनी) जो अपने समान और किसीको न समझे । जिसे अपने सिवा और कोई दिखाई न पड़े । अभिमानी । घमंडी ।

ख़ुद-मुख़्तार-वि० (फा०) (संज्ञा ख़ुदमुख़्तारी) स्वतंत्र । आज़ाद ।

ख़ुद-राय-वि (फा०) (संज्ञा ख़ुदराई) स्वेच्छाचारी ।

ख़ुद-रौ-वि० (फा०) आपसे आप उगनेवाला । जंगली । (पौधा या वृक्ष)

खुद-सर–वि० (फा०) संज्ञा खुद-सरी) १ जो किसीके अधीन न हो। स्वतन्त्र। २ मनमानी करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

खुद-सिताई–संज्ञा स्त्री० (फा०) अपनी प्रशंसा आप करना।

खुदा–संज्ञा पु० (फा०) ईश्वर। परमात्मा। यौ०–**खुदा-लगती**= बिलकुल सच (बात)।

खुदाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ईश्वर-ता। २ सृष्टि। संसार। ३ ईश्वरीय।

खुदाई रात–संज्ञा स्त्री० (फा०+हि०) एक प्रकारका उत्सव जिसमें मुसलमान स्त्रियाँ रात-भर जागकर खुदाको याद करती हैं।

खुदाका घर–संज्ञा पु० (फा०+हि०) मसजिद।

खुदा-तर्स–वि० (फा०) (सं० खुदा-तर्सी) १ मनमें ईश्वरका भय रखनेवाला। २ दयालु। कृपालु।

खुदा-ताला–संज्ञा पु० (फा०) ईश्वर।

खुदा-दाद–वि० (फा०) ईश्वरका दिया हुआ। ईश्वर-दत्त।

खुदा-परस्त–वि० (फा०) (संज्ञा खुदा-परस्ती) ईश्वरकी उपासना करनेवाला। आस्तिक।

खुदाया–अव्य० (फा०) हे ईश्वर।

खुदावन्द–संज्ञा पु० (फा०) १ मालिक। स्वामी। २ बहुत बड़े लोगोंके लिए सम्बोधन।

खुदा-हाफ़िज़–पद (फा०) ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। (प्रायः विदा होनेके समय कहते हैं।)

खुदी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ "खुद" का भाव। आपा। २ अहंभाव। अहंमन्यता। ३ स्वार्थ-परता।

खुनक–वि० (फा०) बहुत ठंढा।

खुनकी–संज्ञा स्त्री० (फा०) शीत-लता। ठंढक।

खुन्सा–संज्ञा पु० (अ० खुन्सः) १ वह कल्पित व्यक्ति जिसके विषयमें कहते हैं कि वह छः महीने पुरुष और छः महीने स्त्री रहता है। २ हिजड़ा। नपुंसक। ३ व्याकरणमें नपुंसक लिंग।

खुफ़िया–वि० (अ० खुफ़ियः) छिपा हुआ। गुप्त। क्रि० वि०–गुप्त रूपसे।

खुफ़िया-नवीस–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा खुफ़ियानवीसी) गुप्त रूपसे समाचार लिखकर भेजने-वाला।

खुत्फ़ा–वि० (फा० खुत्फः) सोया-हुआ। सुप्त।

खुबासत=संज्ञा स्त्री० (अ०) खबीस-पन। नीचता। दुष्टता।

खुम–संज्ञा पु० (फा०) १ घड़ा। मटका। २ मद्य रखनेका पात्र।

खुम-कदा–संज्ञा पु० (अ०+फा०) मधु-शाला। कलवरिया।

खुम-खाना–संज्ञा पु० (अ०+फा०) मधुशाला। कलवरिया।

खुमरा–संज्ञा पु० (अ० कंबर) (स्त्री० खुमरी) एक प्रकारके मुसलमान फकीर। संज्ञा स्त्री० (अ०) खजूरके पत्तोंकी छोटी चटाई जिसपर नमाज़ पढ़ते हैं।

खुमार–संज्ञा पु० (फा०, १ मद। नशा। २ नशा उतरनेके समयकी हलकी थकावट। ३ रात भर जगनेके कारण होनेवाली थकावट।

खुमार-आलूदा–वि० (अ०+फा०) खुमारसे भरा हुआ।

खुमारी-संज्ञा स्त्री० दे० "खुमार।"

खुम्र–संज्ञा स्त्री० (अ०) शराब।

खुरजी–संज्ञा स्त्री० (फा० खुर्जी) १ घोड़े, बैल आदिपर सामान रखनेका झोला। २ बड़ा थैला।

खुरदा–संज्ञा पु० (फा० खुर्दः) १ छोटी-मोटी चीज। २ छोटा सिक्का। रेजगी। वि० खुदरा। चुट-फुट।

खुरदा-फ़रोश–संज्ञा पु० (फा०) (संज्ञा० खुरदा-फरोशी) छोटी-मोटी और फुटकर चीजें बेचनेवाला।

खुरफ़ा–संज्ञा पु० (अ० खुरफ़ः) कुलफा नामक साग।

खुरमा–संज्ञा पु० (फा० खुर्मः) १ छुहारा। २ एक प्रकारका पकवान या मिठाई।

खुरशेद–संज्ञा पु० (फा०) सूर्य।

खुराफ़त–संज्ञा स्त्री० दे० "खुराफ़ात।"

खुराफ़ात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बेहूदा और रद्दी बात। २ गाली-गलौज। ३ झगड़ा-बखेड़ा।

खुरासान–संज्ञा पु० (फा०) (वि० खुरासानी) फारसका एक सूबा जो अफ़गानिस्तानके पश्चिममें है।

खुरूस–संज्ञा पु० (फा०) मुरगा। कुक्कुट।

खुर्द–वि० (फा०) छोटा। "कलाँ" का उलटा। यौ०–**खुर्द व कलाँ** =छोटे बड़े सब।

खुर्द-बीन–संज्ञा स्त्री० (फा०) सूक्ष्म-दर्शक यंत्र।

खुर्द-बुर्द–संज्ञा पु० (फा०) १ अनुचित रूपसे प्राप्त किया हुआ धन। २ अपव्यय। धनका नाश।

खुर्द-महल–संज्ञा पु० (फा०+अ०) १ वह महल जिसमें रखेली स्त्रियाँ रहती हों। २ रखी हुई स्त्री। रखनी।

खुर्दसाल–वि० (फा०) (स्त्री० खुर्द साली) अल्पवयस्क। छोटी उमरका।

खुर्दा–वि० दे० "खुरदा।" वि० जैसे–**किर्मखुर्दा**=कीड़ोंका खाया।

खुर्दी-संज्ञा स्त्री० (फा०) छोटापन।

खुर्रम–वि० (फा०) १ ताजा सींचा हुआ। प्रसन्न। बहुत खुश।

खुर्रमी–संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रसन्नता। खुशी।

खुर्सन्द–वि०(फा०)प्रसन्न। खुश।

खुलफ़ा-संज्ञा पु० 'खलीफ़ा' का बहुवचन।

खुलासा––वि० (अ० खुलासः) १ खुला हुआ। २ अवरोध-रहित। ३ साफ़ साफ़। स्पष्ट। संज्ञा पु० संक्षिप्त विवरण।

खुलूस–संज्ञा पु० (अ०)१ सरलता और पवित्रता। २ निष्ठा।

खुल्क़–संज्ञा पु० (अ०) सुशीलता। सज्जनता।

खुल्द–संज्ञा पु० (अ०) बहिश्त। स्वर्ग। यौ०-**खुल्दे बरीं**=ऊपरका स्वर्ग।

खुश–वि० (फा०) १ प्रसन्न। मगन। आनन्दित। यौ०-**खुश व खुर्रम**=प्रसन्न और आनन्दित। २ अच्छा। जैसे–खुशहाल।

खुश-अतवार–वि० (फा०) जिसका तौर-तरीक़ा बहुत अच्छा हो।

खुशअसलूब–वि०(फा०) (संज्ञा खुश-असलूबी) १ सुडौल। २ सब तरह ठीक।

खुश-इलहान–वि० (फा०) (संज्ञा खुश-इलहानी) १ जिसका स्वर बहुत मनोहर हो। २ अच्छा गानेवाला।

खुश-खत–वि० (फा०) सुन्दर अक्षर लिखनेवाला। संज्ञा पु० सुंदर लिखावट।

खुश-खबर–वि० (फा०) शुभ समाचार सुनानेवाला।

खुश-खबरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) शुभ समाचार।

खुश-खल्क़–वि० (फा०) संज्ञा खुश-खुल्की) उत्तम स्वभाववाला।

खुश-गवार–वि० (फा०) अच्छा लगनेवाला। प्रिय। मनोहर।

खुश-गुलू–वि० (फा०) जिसका स्वर बहुत सुन्दर हो।

खुश-ज़ायक़ा–वि० (फा०)स्वादिष्ट।

खुश-तबअ–वि०दे० 'खुश-मिज़ाज।'

खुश-दामन–संज्ञा स्त्री० (फा०) सास। पत्नीकी माता।

खुश-नवीस–वि०(फा०)(संज्ञा खुश-नवीसी) सुंदर अक्षर लिखनेवाला।

खुश-नसीब–वि० (फा०) (संज्ञा खुश-नसीबी) भाग्यवान्। क़िस्मत-वर।

खुश-नुमा–वि० (फा०) (संज्ञा खुश-नुमाई) जो देखनेमें भला लगे। सुंदर। खूबसूरत।

खुश-नूद–वि०(फ़ा०)प्रसन्न। सन्तुष्ट।

खुश-नूदी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) प्रसन्नता। यौ०-**खुश-नूदी मिज़ाज**=मिज़ाज या तबीयतकी प्रसन्नता।

खुश-बयान–वि० (फ़ा०) (संज्ञा खुश-बयानी) सुंदर वर्णन करनेवाला। सुवक्ता।

खुश-बू–संज्ञा स्त्री०(फा०)सुगन्धि।

खुशबूदार–वि० (फा०) उत्तम गंधवाला। सुगन्धित।

खुश मिज़ाज–वि० (फा०) (संज्ञा खुश-मिज़ाजी) १ जिसका मिज़ाज या स्वभाव बहुत अच्छा हो। प्रसन्नचित।

खुश-रंग–वि० (फा०) जिसका रंग बहुत सुन्दर हो।

खुश-वक्त–वि० (फा०) (संज्ञा खुश-वक्ती) प्रसन्न। सुखी।

खुश-हाल–वि० (फा०) (संज्ञा खुश-हाली) १ सुखी। २ सम्पन्न।

खुशामद–संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रसन्न करनेके लिए झूठी प्रशंसा। चापलूसी।

खुशामदी–वि० (फा०) खुशामद करनेवाला। चापलूस।

खुशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ आनन्द। प्रसन्नता। २ इच्छा। जैसे-जैसी आपकी खुशी।

खुश्क–वि० (फा०) १ जो तर न हो, सूखा। २ जिसमें रसिकता न हो, रूखे स्वभावका। ३ बिना किसी और आमदनीके। ४ केवल। मात्र।

खुश्क-साली–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह वर्ष जिसमें वर्षा न हो और अकाल पड़े।

खुश्का–संज्ञा पु० (फा० खुश्कः) पकाया हुआ चावल। भात।

खुश्की–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सूखापन। शुष्कता। नीरसता। २ स्थल या भूमि।

खुसर–संज्ञा पु० (फा०) श्वसुर। ससुर।

खुसरवाना–वि० (फा० खुसरवानः) बादशाहोंका। शाही। राजकीय।

खुसरू–संज्ञा पु० (फा०) बादशाह। सम्राट्।

खुसिया–संज्ञा पु० (अ० खुसियः) अंडकोश।

खुसिया-बरदार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा खुसिया-बरदारी) बहुत अधिक खुशामद और तुच्छ सेवाएँ करनेवाला।

खुसूफ़–संज्ञा पु० (अ०) १ जमीनमें धँसना। २ चंद्र-ग्रहण।

खुसूमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) शत्रुता। दुश्मनी।

खुसूसन–क्रि० वि० (अ०) खास तौरपर। विशेषरूपसे। विशेषतः।

खुसूसियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) विशेषता। विशिष्टता।

खूँ-ख्वार–वि० (फा०) (संज्ञा खूँ-ख्वारी) १ खून पीनेवाला। २ पशुओंको खानेवाला (पशु)।

खूँ-बहा–संज्ञा पु० (फा०) वह धन जो किसीकी हत्या होनेपर निहतके सम्बन्धियोंको खूनके बदलेमें दिया जाय।

खूँ-रेज़–वि० (फा०) खून बहानेवाला। रक्त-पात करनेवाला।

खूँ-रेज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) खून बहाना। रक्तपात।

खू–संज्ञा स्त्री० (फा०) आदत। खसलत। बान। यौ०–खू-बू=रंग-ढंग। तौर-तरीका।

खूक–संज्ञा पु० (फा०) शूकर। सुअर।

खू-गर–वि० (फा०) जिसे किसी बात की खू या आदत पड़ गई हो। अभ्यस्त।

खू-गीर–संज्ञा पु० दे० "खोगीर।"

खूज़ादी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रोटी। २ भोजन।

खून–संज्ञा पु० (फा०) (यौ०–में "खूँ" रूप होता है) १ रक्त। रुधिर। मुहा०–**खून उबलना या खौलना**=क्रोधसे शरीर लाल होना। गुस्सा चढ़ना। **खूनका प्यासा**=वधका इच्छुक। **खून सफेद होना**=सौजन्य या मुरव्वतका बिलकुल न रह जाना।

ख़ून सिरपर चढ़ना या सवार होना=किसीको मारडालने या इसी प्रकारका और अनिष्ट करनेपर उद्यत होना। **ख़ून पीना**—मार डालना। २ वध। हत्या।

ख़ून-आलूदा—वि० (फा० खून-आलूदः) ख़ूनमें भरा या भींगा हुआ।

ख़ूनी—वि० (फा०) १ मार-डालनेवाला। हत्यारा। घातक। २ अत्याचारी।

ख़ूब—वि० (फा०) अच्छा। भला। उमदा। उत्तम।

ख़ूब-कलाँ—संज्ञा स्त्री० (फा०) फारसकी एक घासके बीज। खाकसीर।

ख़ूबसूरत—वि० (फा०) (संज्ञा ख़ूबसूरती) सुन्दर। रूपवान्।

ख़ूब-रू—वि० (फा०) (संज्ञा-ख़ूबरूई) सुन्दर। ख़ूबसूरत।

ख़ूबाँ—संज्ञा पु० (फा०) सुन्दरी स्त्रियाँ। सुन्दरियाँ। नायिकाएँ।

ख़ूबानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) जरदालू नामका फल।

ख़ूबी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भलाई। अच्छाई। अच्छापन। २ गुण। विशेषता।

ख़ूर—वि० (फा०) खाने-पीनेवाला। संज्ञा स्त्री० भोजन। यौ०—**ख़ूर व पोश**=खाना-कपड़ा। **ख़ूर व नोश**=खाना-पीना।

ख़ूरा—संज्ञा पु० (फा० खूरः) कुष्ठ। कोढ़ रोग।

ख़ूराक—संज्ञा स्त्री० (फा०) भोजन। खाना।

ख़ूराकी—संज्ञा स्त्री० (फा०) वह रकम जो ख़ूराक या खानेके लिये दी जाय। भोजन-व्यय।

ख़ूरिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) खाने-पीनेकी सामग्री। भोजन।

ख़ूलंजान—संज्ञा पु० (अ०) पानकी जड़। कुलंजन।

ख़ेमा—संज्ञा पु० (अ० खेमः) तंबू। डेरा।

ख़ेमा-गाह—संज्ञा पु० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ बहुत-से खेमे लगे हों।

ख़ेमा-दोज़—संज्ञा पु० (अ०+फा०) खेमा बनानेवाला।

ख़ेश—वि० (फा० ख़्वेश) अपना। संज्ञा० पु० १ सम्बन्धी। रिश्तेदार। यौ०—**ख़ेश व अकारिब**=रिश्ते-नातेके लोग। २ दामाद। जामाता।

ख़ैर—संज्ञा स्त्री० (फा०) कुशल-क्षेम। यौ०—**ख़ैर-आफ़ियत**-=कुशल। अव्य० १ कुछ चिन्ता नहीं। कुछ परवा नहीं। २ अस्तु। अच्छा।

ख़ैर-अन्देश—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा ख़ैर-अन्देशी) शुभ-चिन्तक।

ख़ैर-ख़्वाह—वि० (अ०+फा०) संज्ञा ख़ैरख़्वाही) शुभ-चिन्तक।

ख़ैरबाद—संज्ञा पु० (फा०) कुशल हो। कुशल रहे। (प्रायः बिदाईके समय कहते हैं।)

ख़ैर-मक़दम—संज्ञा पु० (अ०) शुभागमन। स्वागत। (प्रायः किसीके आनेपर कहते हैं।)

ख़ैरात–संज्ञा स्त्री०(अ०)दान-पुण्य।

ख़ैराती–वि० (अ०) ख़ैरात-सम्बन्धी। ख़ैरात या दानका।

ख़ैराद–संज्ञा पु० (फा०) वह औज़ार जिसपर चढ़ाकर लकड़ी या धातुकी चीज़ें चिकनी और सुडौल की जाती हैं। खराद।

ख़ैरियत–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कुशल-क्षेम। राजी-ख़ुशी। २ भलाई। कल्याण

ख़ैल–संज्ञा पु० (अ०) झुण्ड। गरोह। समूह।

ख़ैला–संज्ञा स्त्री० (फ०) फ़ूहड़ स्त्री।

ख़ैला-पन–संज्ञा पु० (फा०+हिं०) फ़ूहड़-पन।

ख़ो–संज्ञा स्त्री० दे० "ख़ू"।"

ख़ोगीर–संज्ञा पु० (फा०) वह मोटा कपड़ा जिसके ऊपर रखकर घोड़े-पर जीन कसते हैं। मुहा०–**ख़ोगीरकी भर्ती**=व्यर्थकी और रद्दी चीज़ें।

ख़ोजा–संज्ञा पु० (फा० ख़्वाजः) वह जो महलोंमें सेवा करनेके लिए हिजड़ा बनाया गया हो। ख़्वाजासरा।

ख़ोद–संज्ञा पु० (फा०) युद्धमें पहननेका लोहेका टोप। कूँड़। शिरस्त्राण।

खोनचा–संज्ञा पु० दे० "ख़्वानचा'।

ख़ोर–वि० (फा० ख़ूर) खानवाला। यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे-नशाख़ोर।

ख़ोलंजन–संज्ञा पु० (फा०) पानकी जड़। कुलंजन।

ख़ोशा–संज्ञा (पुं) (फा० ख़ोशः) १ अनाजकी बाल। २ छोटे छोटे फलों आदिका गुच्छा।

ख़ोशा-चीं–वि० (फा०) संज्ञा ख़ोशा-चीनी। अनाजकी बालें या फलोंके गुच्छे आदि चुननेवाला। सिला बीननेवाला।

ख़ौज़–संज्ञा पु०(अ०) गहन विचार। यौ०-**ग़ौर व ख़ौज़**=चिन्तन और गंभीर विचार।

ख़ौफ़–संज्ञा पु० (अ०) डर। भय।

ख़ौफ़ज़दा–वि० (फा०) डरा हुआ।

ख़ौफ़-नाक–वि० (फा०) भयंकर। भयानक।

ख़्वाँ–वि० (फा०) १ पढ़नेवाला। २ कहने या गानेवाला। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे-किस्सा-ख़्वाँ।)

ख़्वाँदा–वि० (फा० ख्वादः)१ पढ़ा हुआ। शिक्षित। यौ०-**ना-ख्वाँदा**=अशिक्षित। दत्तक (पुत्र)।

ख़्वाजा–संज्ञा पु० (फा० ख़्वाजः) १ घरका मालिक। गृह-स्वामी। २ सरदार। नेता। ३ सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति। वह व्यक्ति जो हिजड़ा बनाकर महलोंमें सेवा आदिके लिए रखा जाय।

ख़्वाजाखिज्र–संज्ञा पु० देखो "ख़िज्र।"

ख़्वाजा-सरा–संज्ञा पु०(फा०)वह जो महलोंमें सेवा करनेके लिये हिजड़ा बनाया गया हो। खोजा।

ख़्वातीन–संज्ञा स्त्री० "ख़ातून" का बहु० ।

ख़्वान–संज्ञा पु० (फा०) बड़ी थाली या तश्तरी जिसमें भोजन करते हैं।

ख़्वानचा–संज्ञा पु०(फा० ख़्वान्चः) १ छोटा ख़्वान। २ वह थाल जिसमें रखकर मिठाई आदि खाने पीनेकी चीजें बेचते हैं। खोनचा।

ख़्वान-पोश–संज्ञा पु० (ख़्वानके ऊपर ढाँकनेका कपड़ा।

ख़्वानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) पढ़नेकी क्रिया या भाव । जैसे–कुरान-ख़्वानी।

ख़्वाव–संज्ञा पु० (फा०) १ सोना। निद्रा लेना। २ स्वप्न । सुपना।

ख़्वाब-आलूदा–वि० (फा०) जिसमें नींद भरी हो (आँख)।

ख़्वाब-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) सोनेका स्थान। शयनागार।

ख़्वाबीदा–वि० (फा० ख़्वाबीदः) सोया हुआ। सुप्त।

ख़्वार–वि० (फा०) १ खानेवाला। जैसे–नमक-ख़्वार, शराब-ख़्वार। २ दुर्दशाग्रस्त। खराब। ३ अनाहूत। तिरस्कृत।

ख़्वारी–संज्ञा स्त्री०(फा०) १ दुर्दशा। खराबी। २ अप्रतिष्ठा। अनादर।

ख़्वास्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) इच्छा। कामना। ख़्वाहिश।

ख़्वास्तगार–वि० (फा०) (संज्ञा ख़्वास्तगारी) किसी बातकी इच्छा या आकांक्षा रखनेवाला। इच्छुक।

ख़्वाह–वि० (फा०) चाहनेवाला। इच्छुक । जैसे–तरक्की-ख़्वाह= तरक्की चाहनेवाला। संज्ञा स्त्री० कामना । इच्छा। जैसे–**हस्ब-ख़्वाह**=इच्छानुसार। **खातिर-ख़्वाह**=संतोषजनक । अव्यय। अथवा। या तो।

ख़्वाहमख़्वाह–क्रि० वि० (फा०) १ चाहे इच्छा हो और चाहे न हो। जबरदस्ती। २ अवश्य।

ख़्वाहाँ–वि० (फा०) चाहनेवाला। इच्छुक। अभिलाषी।

ख़्वाहिश-मन्द–वि०(फा०)इच्छुक। अभिलाषी।

(ग)

गंज–संज्ञा पु० (फा०) १ खज़ाना। कोश। २ ढेर। राशि। अटाला। ३ समूह। झुण्ड। ४ गल्लेकी मंडी। गोला। हाट। ५ वह चीज जिसके अन्दर बहुत-सी कामकी चीजें हों।

गंजफ़ा–संज्ञा पु० दे० "गंजीफ़ा।"

गंजीना–संज्ञा पु० (फा० गंजीनः) खजाना। कोश।

गंजीफ़ा–संज्ञा पु० (फा० गंजीफ़ा) एक खेल जो आठ रंगके ९६ पत्तोंसे खेला जाता है ।

गंजूर–संज्ञा पु० (फा०) खजाना। कोश।

गज़–संज्ञा पु०(फा०)१ लम्बाई नापनेकी एक नाप जो सोलह गिरह या तीन फुटकी होती है। इसके सिवा इलाही और देशी आदि कई प्रकारके गज होते हैं। २

लोहे या लकड़ीका वह छड़ जिससे पुराने ढंगकी बन्दूक भरी जाती है। ३ एक प्रकारका तार ।

ग़ज़क–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ वह चीज़ जो शराब पीनेके बाद मुँहका स्वाद बदलनेके लिये खाई जाती है। चाट। २ तिल-पपड़ी। तिल-शकरी। ३ नाश्ता। जल-पान।

ग़ज़नफ़र–संज्ञा पु० (अ०) सिंह। शेर।

ग़ज़न्द–संज्ञा पु० (फ़ा०) १ कष्ट। तकलीफ। २ हानि। नुकसान।

ग़ज़ब–संज्ञा पु० (अ०) १ कोप। रोष। गुस्सा। २ आपत्ति। आफ़त। विपत्ति। अंधेर। अन्याय। ज़ुल्म। ४ विलक्षण बात। वि० १ बहुत अधिक। बहुत। २ विलक्षण। मुहा०–**ग़ज़बका** = विलक्षण। अपूर्व। ३ बहुत खराब। बहुत बुरा।

ग़ज़ब-नाक–वि० (अ०) बहुत गुस्सेमें भरा हुआ। बहुत क्रुद्ध।

ग़ज़बी–वि० (अ० ग़ज़ब) क्रोधी और दुष्ट।

ग़ज़ल–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० ग़ज़लियात) फ़ारसी और उर्दूमें एक प्रकारकी कविता, जिसमें एक वज़न और क़ाफ़ियेके अनेक शेर होते हैं और प्रत्येक शेरका विषय प्रायः एक दूसरेसे स्वतन्त्र होता है।

ग़ज़ाल–संज्ञा पु० (अ०) हिरनका बच्चा।

ग़ज़ी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकारका मोटा देशी कपड़ा। गाढ़ा। सल्लम। खादी।

ग़द्र–संज्ञा पु० (अ० गद्र) १ हलचल। खलभली। उपद्रव। २ बलवा। बग़ावत। विद्रोह।

गदा–संज्ञा पु० (फ़ा०) भिक्षुक। भिखमंगा।

गदाई=संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) भिखमंगी। भिक्षा-वृत्ति। वि० १ नीच। क्षुद्र। २ वाहियात। रद्दी।

ग़द्दर–वि० (अ०) धोखेबाज़।

ग़द्दार–वि० (अ०) १ बहुत बड़ा गदर करनेवाला। भारी विद्रोही। २ बहुत बड़ा बेवफा।

ग़नी–संज्ञा पु० (अ०) बहुत बड़ा धनवान्। परम स्वतन्त्र।

ग़नीम–संज्ञा पु० (अ०) १ शत्रु। दुश्मन। २ लुटेरा। डाकू।

ग़नीमत–संज्ञा स्त्री० (बहु० ग़नायम) १ लूटका माल। २ वह माल जो बिना परिश्रम मिले। मुफ्तका माल। ३ सन्तोषकी बात।

ग़नूदगी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ ऊँघनेकी क्रिया या भाव। ऊँघ।

गन्दगी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ मैलापन। मलीनता। २ अपवित्रता। अशुद्धता। नापाकी। ३ मैला। ग़लीज़। मल।

गन्दा–वि० (फ़ा० गन्दः) १ मैला। मलिन। २ नापाक। अशुद्ध। ३ घिनौना। घृणित।

गन्दुम–संज्ञा पु० (फ़ा० मि० सं० गोधूम) गेहूँ। मुहा०–**गन्दुमनुमा जौफ़रोश**=१ पहले गेहूँ दिखला-

कर फिर उसके बदलेमें जौ तौलने-वाला। २ बहुत बड़ा धूर्त।

ग़न्दुमी—वि० (फा०) गेहूँके रंगका। गेहुँआँ।

ग़प—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ व्यर्थकी बात-चीत। बकवाद। २ अफवाह। किंवदंती।

ग़फ़—वि० (फा०) घना। ठस। गाढ़ा। घनी बुनावटका।

ग़फ़लत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ असावधानी। बेपरवाही। २ बेख-बरी। चेत या सुधका अभाव। ३ भूल। चूक।

ग़फ़लती—वि० (अ०) ग़फ़लत या लापरवाही करनेवाला।

ग़फ़ीर—संज्ञा पु० (अ०) १ वह जो छिपावे। २ लोहेका बड़ा खोद।

यौ०—**जम्मे ग़फ़ीर**=बहुत बड़ा जनसमूह। बहुत भारी भीड़।

ग़फ़ूर—वि० (अ०) क्षमा करनेवाला। (ईश्वरका एक विशेषण)

ग़फ़्फ़ार—वि० (अ०) बहुत बड़ा दयालु। (ईश्वरका एक विशेषण)

ग़फ़्स—वि० (अ०) १ मोटे दलका। दलदार। २ मोटा। गफ। (कपड़ा आदि)

ग़बन—संज्ञा पु० (अ०) किसी दूसरेके सौंपे हुए मालको खा लेना। ख़यानत।

ग़ब्र—संज्ञा पु० (फा०) वह जो अग्नि की उपासना करता हो। अग्नि-पूजक।

ग़म—संज्ञा पु० (अ०) १ दुःख। २ शोक।

ग़म-कदा—संज्ञा पु० (अ०+फा०) वह घर जहाँ ग़म छाया हो। संसार।

ग़मख़ोर—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा ग़म-ख़ोरी) ग़म खानेवाला। सहिष्णु। सहनशील।

ग़मख़्वार—वि० (अ०+फा०) संज्ञा ग़मख़्वारी) १ ग़म खानेवाला। क्रोधको रोकनेवाला। २ सहिष्णु। सहानुभूति रखनेवाला।

ग़म-ग़लत—संज्ञा पु० (अ०) १ दुःखी मनको बहलानेवाला काम। २ खेल-तमाशा। ३ शराब। मद्य।

ग़म-गीं—वि० (अ०+फा०) १ दुःखी। रंजीदा। २ उदास।

ग़म-गुसार—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा ग़मगुसारी) दूसरोंका दुःख दूर करनेवाला।

ग़मज़दा—वि० (अ०+फा०) दुखी। रंजीदा।

ग़मज़ा—संज्ञा पु० (अ० ग़मजः) प्रेमिकाका नख़रा और हाव-भाव।

ग़म-रसीदा—वि० दे० "ग़मज़दा।"

ग़मी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शोककी अवस्था या काल। २ वह शोक जो किसी मनुष्यके मरनेपर उसके संबंधी करते हैं। सोग। ३ मृत्यु। मरनी।

ग़म्माज़—संज्ञा पु० (अ०) चुग़ल-खोर। निन्दक।

ग़म्माज़ी—संज्ञा स्त्री० (अ०) चुग़ली।

ग़यास—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सहा-यता। २ मुक्ति। छुटकारा।

ग़य्यूर–वि० (अ०) १ ईर्ष्या करनेवाला। २ आन रखनेवाला।

गर–प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर करने या बनानेवालेका अर्थ देता है। जैसे-शीशा-गर, कलई-गर। अव्य० यदि। जो। अगर।

ग़रक़–वि० दे० "ग़र्क़।"

ग़रक़ाब–वि० (अ०) डूबा हुआ। संज्ञा पु० १ गहरा पानी। २ पानीका भँवर।

ग़रक़ी–संज्ञा स्त्री० (अ० ग़र्क़) बाढ़। जल-प्लावन।

गर-चे–अव्य० (फा०) अगर-चे। यद्यपि।

ग़रज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आशय। प्रयोजन। मतलब। २ आवश्यकता। जरूरत। ३ चाह। इच्छा। ४ उद्देश्य। अव्य० १ निदान। आख़िरकार। २ मतलब यह कि। सारांश यह कि। यौ०-**अल्-ग़रज़**=तात्पर्य यह कि। संक्षेपमें यह कि।

ग़रज़-मन्द–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा-ग़रज़-मन्दी) जिसे किसी बातकी ग़रज़ हो। आवश्यकता रखनेवाला।

ग़रज़ी–वि० (अ०) अपनी ग़रज़ या मतलबसे काम रखनेवाला। स्वार्थी।

गरदन–संज्ञा स्त्री० (फा० गर्दन) १ धड़ और सिरको जोड़नेवाला अंग। ग्रीवा। मुहा०–**गरदन उठाना**=विरोध न करना। **गरदन काटना**=मार डालना। **गरदन मारना**=सिर काटना। मार डालना। **गरदनमें हाथ देना**=गरदन पकड़कर बाहर कर देना।

गरदनी–संज्ञा स्त्री० (फा० गर्दन) १ घोड़ेको ओढ़ानेका कपड़ा। २ कुश्तीका एक पेंच। ३ गलेमें पहननेकी हँसली।

गरदान–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ घूमना। मुड़ना। लौटना। २ शब्दोंका रूप-साधन। संज्ञा पु० वह कबूतर जो घूम-फिर कर फिर अपने ही स्थानपर आता हो। वि० घूम फिरकर एक ही स्थानपर आनेवाला।

गरदानना–क्रि० स० (फा० गरदान) १ लपेटना। २ दोहराना। ३ शब्दके रूपोंकी पुनरावृत्ति करना। ४ किसीके अन्तर्गत समझना। ५ कुछ समझना।

गरदिश–संज्ञा स्त्री० दे० "गर्दिश।"

गरदी–संज्ञा स्त्री० (फा० गर्दी) १ घूमना-फिरना। २ भारी परिवर्तन। क्रान्ति। ३ दुर्भाग्य।

गरदूँ–संज्ञा पुं० (फा० गर्दूं) १ आकाश। आसमान। २ छकड़ा। गाड़ी।

ग़रब–संज्ञा पुं० (अ०) १ पश्चिम। २ सूर्यका अस्त होना।

ग़रबी–वि० (अ०) पश्चिमी।

गरम–वि० (फा० गर्म) जलता हुआ। तत्ता। तप्त। उष्ण।

गरम-जोशी–संज्ञा स्त्री० (फा० गर्म-जोशी) प्रेम या अनुरागका आधिक्य।

गरमा–संज्ञा पुं० (फा०) ग्रीष्म ऋतु।

गरमाई–संज्ञा स्त्री० (फा० गर्म) १ शरीरको गरम करनेवाली या पौष्टिक वस्तु। २ गरमी।

गरमा-गरम–वि० (फा० गर्म) तत्ता। उष्ण।

गरमाना–क्रि० अ० (फा० गर्म) १ गरम होना। २ गुस्सा होना। ३ पशुका मस्त होना।

गरमावा–संज्ञा पुं० (फा० गर्माब:) गरम जलसे स्नान।

गरमी–संज्ञा स्त्री० (फा० गर्मी) १ उष्णता। ताप। जलन। २ तेजी। उग्रता। प्रचंडता। मुहा०-**गरमी निकालना**=गर्व दूर करना। ३ आवेश। क्रोध। गुस्सा। ४ उमंग। जोश। ५ ग्रीष्म ऋतुकी कड़ी धूपके दिन। ६ एक रोग जो प्रायः दुष्ट मैथुनसे उत्पन्न होता है। आतशक। फिरंग रोग।

गराँ–वि० (फा०) १ भारी। २ महँगा। अधिक मूल्यका।

गराँ-खातिर–वि० (फा०) अप्रिय। ना-गवार।

गराँ-बहा–वि० (फा०) बहुमूल्य। बेश कीमत।

गराँ-माया–वि० (फा० गराँ-माय:) १ बहुमूल्य। अधिक दामोंका। २ श्रेष्ठ।

गराँ-सर–वि० (फा०) (संज्ञा गराँ-सरी) अभिमानी। घमंडी।

गराँ-जान–वि० (फा०) १ जो जल्दी न मरे। सख्त जान। २ सुस्त। आलसी। निकम्मा।

ग़रायब–वि० (अ० "ग़रीब" (अद्भुत) का बहु०) विलक्षण। जैसे–अजायब व ग़रायब=अद्भुत और विलक्षण वस्तुएँ।

गरानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भावका बहुत चढ़ जाना। महँगी। महँगता। २ उदासी ३ भारीपन। जैसे–पेटकी गरानी।

ग़रारा–संज्ञा पुं० (फा० ग़रार:) कुल्ला। कुल्ली। यौ०-ग़रारे-दार=बहुत ढीली मोहरीका (पायजामा)।

ग़रीक़–वि० (अ०) डूबा हुआ। मग्न। यौ०-**ग़रीक़-रहमत**=ईश्वरकी कृपामें निमग्न।

ग़रीज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रकृति। स्वभाव। २ सहनशीलता।

ग़रीज़ी–वि० (अ०) प्राकृतिक। स्वाभाविक।

ग़रीब–वि० (अ०) १ निर्धन। कंगाल। दरिद्र। २ दीन हीन। ३ जो घर-बार छोड़कर विदेशमें पड़ा हो। ४ विलक्षण। अद्भुत। जैसे-अजीब व ग़रीब।

ग़रीब-उल्-वतन–वि० (अ०) (संज्ञा ग़रीब-उल्-वतनी) जो घर-बार छोड़कर विदेशमें पड़ा हो।

ग़रीब-खाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) इस ग़रीब या दीनका मकान। मेरा मकान। (नम्रता सूचित करनेके लिये अपने घरके सम्बन्धमें बोलते हैं।)

ग़रीब-नवाज़–वि० दे० "ग़रीब-परवर।"

ग़रीब-परवर–वि० (अ+फा०) (संज्ञा ग़रीब-परवरी) ग़रीबोंकी परवरिश या पालन-पोषण करनेवाला। दीन-पालक।

ग़रीबाना–वि० (फा० ग़रीबानः) ग़रीबोंका-सा।

ग़रीबी–संज्ञा स्त्री० (अ० ग़रीब) १ दीनता। अधीनता। नम्रता। २ दरिद्रता। कंगाली। मुहताजी।

ग़रूब–संज्ञा पु० दे० "ग़ुरूब।"

ग़रूर–संज्ञा पु० (अ० ग़ुरूर) अभिमान। घमंड।

गरेबाँ–संज्ञा पुं० दे० "ग़रेबान।"

ग़रेबान–संज्ञा पुं० (फा०) अंगे, कुरते आदिमें गलेपरका भाग।

ग़रेव–संज्ञा पुं० (फा०) कोलाहल।

गरोह–संज्ञा पु०(फा०) झुंड। जत्था।

ग़र्क़–वि० (अ०) १ डूबा हुआ। मग्न। २ तल्लीन। विचार-मग्न।

गर्द–संज्ञा स्त्री० (फा०) धूल। खाक। राख। यौ० **गर्द-ग़ुबार**=धूल-मिट्टी। मुहा० **किसीकी गर्दको न पाना**=१ किसीके मुकाबलेमें कुछ भी न चल सकना। २ किसीके सामने कुछ भी न होना। संज्ञा पु० एक प्रकारका रेशमी कपड़ा।

गर्द-ख़ोर–वि० (फा०) जो गर्द या मिट्टी आदि पड़नेसे जल्दी मैला या ख़राब न हो।

गर्दन–संज्ञा स्त्री० दे० "गरदन।"

गर्दबाद–संज्ञा–पु०दे० 'गिर्दबाद।'

गर्दिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ घुमाव। चक्कर। २ विपत्ति। मुहा०–**गर्दिशमें आना**=विपत्तिमें पड़ना।

ग़र्ब–संज्ञा पु० (अ०) १ पश्चिम। सूर्यका अस्त होना।

गर्म–वि० दे० "गरम।"

गर्मी–संज्ञा स्त्री० देखो "गरमी।"

ग़र्रा–संज्ञा पुं० (अ० ग़र्रः) घमण्ड। शेखी।

ग़लत–वि० (अ०) १ अशुद्ध। भ्रममूलक। २ असत्य। झूठ।

ग़लत-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) ग़लतियों या अशुद्धियोंकी सूची। अशुद्धि-पत्र।

ग़लत-फ़हमी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) भ्रममें कुछका कुछ समझना।

ग़लताँ–संज्ञा पु० (फा० ग़लताँ) एक प्रकारका कपड़ा। वि० घूमा हुआ। गोल। यौ० **ग़लताँ व पेचाँ**=विचारमें मग्न।

ग़लता–संज्ञा पुं० (फा० ग़लतः) १ एक प्रकारका मोटा रेशमी कपड़ा। २ तलवारकी चमड़ेकी म्यान।

ग़लती–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ भ्रम। चूक। धोखा। २ अशुद्धि। भूल।

ग़लबा–संज्ञा पुं० (अ० ग़लबः) १ प्रमुखता। प्रधानता। २ अधिकता। ३ प्रभावका आधिक्य।

ग़लाज़त–संज्ञा स्त्री०दे० "गिलाज़त"

ग़लीज़–वि० (अ०) १ मोटा। दलदार। दबीज़। २ गन्दा। मलिन। संज्ञा पुं० मल। विष्ठा।

गल्ला–संज्ञा पु० (फा० गल्लः) पशुओं-का समूह । भुण्ड ।

ग़ल्ला–संज्ञा पु० (अ० ग़ल्लः) १ फल-फूल आदिकी उपज । अनाज । २ वह धन जो दूकानपर नित्यकी बिक्रीसे मिलता है । गोलक ।

गल्लेबान–संज्ञा पुं० (फा०) गड़ेरिया । भेड़ चरानेवाला ।

गल्लेबानी–संज्ञा पु० पशुओंको पालना और चराना ।

गवारा–वि० (फा०) १ मन-भाता । अनुकूल । पसन्द । २ सह्य । अंगीकार करने योग्य ।

गवाह–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह मनुष्य जिसने किसी घटनाको साक्षात् देखा हो । २ वह जो किसी मामलेके विषयमें जानकारी रखता हो । साक्षी ।

गवाही–संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी घटनाके विषयमें ऐसे मनुष्यका कथन जिसने वह घटना देखी हो या जो उसके विषयमें जानता हो । साक्षीका प्रमाण । साक्ष्य ।

ग़श–संज्ञा पुं० (अ० ग़शीसे फा०) मूर्च्छा । बेहोशी ।

ग़शी–संज्ञा स्त्री० दे० "ग़श ।"

गश्त–संज्ञा–पुं० (फा०) १ टहलना । घूमना । फिरना । भ्रमण । दौरा । चक्कर । २ पहरेके लिए किसी स्थानके चारों ओर या गली कूचों आदिमें घूमना । गैट । गिरदावरी । दौरा ।

गश्ता–वि० (फा० गश्तः) फिरा या घूमा हुआ ।

गश्ती–वि० (फा०) घूमनेवाला । फिरनेवाला । चलता । संज्ञा पु० गश्त लगानेवाला । पहरेदार ।

ग़सब–संज्ञा पुं० (अ०) १ बलपूर्वक किसीकी वस्तु ले लेना । अपहरण । २ बेईमानीसे किसीका धन खा जाना ।

ग़स्साल–संज्ञा पु० (अ०) वह जो ग़ुस्ल या स्नान कराता हो ।

गह–संज्ञा–स्त्री० दे० "गाह ।"

गहवारा–संज्ञा पु० (फा० गहवारः) १ पालना । २ भूला । हिंडोला ।

ग़ाज़ा–संज्ञा पु० (फा० ग़ाज़ः) मुँहपर मलनेका एक प्रकारका सुगंधित चूर्ण या रोग़न ।

ग़ाज़ी–संज्ञा पु० (अ०) १ वह जो काफ़िरों या विधर्मियोंपर विजय प्राप्त करे । २ वीर । योद्धा । संज्ञा-पु० (फा०) नट ।

ग़ाज़ी मर्द–संज्ञा पु० (अ०) १ ग़ाज़ी । २ घोड़ा ।

ग़ाज़ी मियाँ–संज्ञा पु० (अ०) सुल-तान महमूदके भतीजे सैयद सालार जो मुसलमानोंमें बहुत बड़े वीरोंके समान पूजे जाते हैं ।

गान–प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो फारसीके संख्यावाचक शब्दोंके अन्तमें लगकर "गुणित" या "बार" का अर्थ देता है । जैसे–**दोगान**=दूना ।

गाना–प्रत्य० दे० "गान ।"

ग़ाफ़िल–वि० (अ०) १ बेसुध। बेख़बर। २ असावधान।

ग़ाम–संज्ञा पु० (फा०) कदम। पग।

ग़ायत–वि० (अ०) १ बहुत अधिक। अत्यन्त। २ चरम सीमाका। हद दरजेका। ३ असाधारण। संज्ञा स्त्री० चरम सीमा। यौ०-**लग़ायत**=तक।

ग़ायब–वि० (अ०) १ लुप्त। अन्तर्धान। अदृश्य। २ खोया हुआ। संज्ञा पु० १ भविष्य। २ व्याकरणमें अन्य पुरुष या वह व्यक्ति जिसके सम्बन्धमें कुछ कहा जाय। जैसे—यह, वह।

ग़ायबाना–क्रि० वि०(अ० ग़ायबानः) पीठ पीछे। अनुपस्थितिमें।

गार–प्रत्य० (फा०) करनेवाला। कर्त्ता। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे-**सितम-गार,गुनह-गार**।)

ग़ार–संज्ञा पु० (अ०) १ गहरा गड्ढा। २ गुफ़ा। कंदरा।

ग़ारत–वि० (अ०) नष्ट। बरबाद। संज्ञा पु० १ लूट-पाट। २ विनाश।

ग़ारतगर–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा ग़ारतगरी) १ लूट-पाट करनेवाला। लुटेरा। २ विनाश करनेवाला।

ग़ालिब–वि० (अ०) १ जबरदस्त। बलवान्। २ दूसरोंको दबाने या दमन करनेवाला। ३ विजयी। ४ जिसकी सम्भावना हो। संभावित।

ग़ालिबन्–क्रि० वि० (अ०) बहुत सम्भव है कि। सम्भवतः।

ग़ालीचा–संज्ञा पु०(फा० ग़ालीचः) एक प्रकारका बहुत मोटा बुना हुआ बिछौना जिसपर रंग-बिरंगे बेल बूटे बने रहते हैं। कालीन।

गाव–संज्ञा स्त्री० (फा० मि०सं० गो) १ गौ। गाय। २ साँड़। ३ बैल।

गाव-कुशी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) गो-वध। गो-हत्या।

गावखुर्द–वि० (फ़ा०) नष्ट-भ्रष्ट। विनष्ट।

गाव-ज़बान–संज्ञा स्त्री (फा०) एक बूटी जो फ़ारस देशमें होती है।

गाव-तकिया–संज्ञा पु० (फा०) बड़ा तकिया जिससे कमर लगाकर लोग फर्शपर बैठते हैं। मसनद।

गावदी–वि० (फा० गाव) मूर्ख। बेवकूफ़।

गाव-दुम–वि० (फा०) १ जो ऊपरसे बैलकी पूँछकी तरह पतला होता आया हो। २ चढ़ाव-उतारवाला। ढालुवाँ।

गाव-मेश–संज्ञा स्त्री० (फा०)भैंस। महिष।

गाव-शीर–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका गोंद।

ग़ाशिया–संज्ञा पु० (अ० ग़ाशियः) घोड़ेका ज़ीनपोश।

गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ जगह। स्थान। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें जैसे-**इबादत-गाह** = प्रार्थनाका स्थान।) २ वक़्त। समय। यौ०-

गाहे गाहे—कभी कभी। बीच बीचमें।

गाह गाह—क्रि॰ वि॰ दे॰(फा॰)कभी कभी।

गाह-ब-गाह—क्रि॰ वि॰ दे॰ "गाहे गाहे।"

गाहे गाहे—क्रि॰ वि॰ (फा॰) कभी कभी।

गाहे-ब-गाहे—क्रि॰ वि॰ देखो 'गाहे गाहे।'

गिज़ा—संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) भोजन। खाद्य पदार्थ।

गिज़ाफ़—संज्ञा पु॰ (फा॰) १ झूठ बात। २ व्यर्थकी बात। ३ डींग। शेखी। यौ॰—**लाफ़ व गिज़ाफ़**=व्यर्थकी डींग। झूठ-मूठकी और निरर्थक बातें।

गिज़ाल—संज्ञा पु॰ दे॰ 'गज़ाल।"

गियाह—संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) हरी घास।

गिरदा—संज्ञा पु॰ (फा॰ गिर्दः) १ १ गोल टिकिया। २ चक्र। ३ एक प्रकारका पकवान। ४ गोल थाली या तश्तरी। ५ हुक्केके नीचे रखा जानेवाला दरीका गोल टुकड़ा। ६ गोल तकिया। गेंदुआ।

गिरदाब—संज्ञा पुं॰ (फा॰ गिर्दाब) पानीका भँवर।

गिरदावर—संज्ञा पु॰(फा॰) १ घूमने-वाला। घूम घूम कर कामकी जाँच करनेवाला।

गिरदावरी—संज्ञा स्त्री॰ (फा॰)गिर-दावरका कार्य या पद।

गिरफ़्त—संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ पकड़नेकी क्रिया या भाव। पकड़। २ आपत्तिजनक बात।

गिरफ़्ता—वि॰ (फा॰ गिरफ़्तः) १ पकड़ा हुआ। २ पंजेमें फँसा हुआ। जैसे—अजल-गिरफ़्ता= मौतके पंजेमें फँसा हुआ।

गिरफ़्तार—वि॰ (फा॰) १ जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो। २ ग्रसा हुआ। ग्रस्त।

गिरफ़्तारी—संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ गिरफ़्तार होनेका भाव। २ गिर-फ़्तार होनेकी क्रिया।

गिरवी—वि॰(फा॰) गिरों रखा हुआ। बंधक। रेहन।

गिरवीदा—वि॰ (फा॰ गिरवीदः) मोहित। लुभाया हुआ। आसक्त।

गिरह—संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ गाँठ। ग्रंथ। २ जेब। खीसा। खरीता। ३ दो पोरोंके जोड़का स्थान। ४ एक गजका सोलहवाँ भाग। कलैया। उल्टी। कलाबाजी।

गिरह-कट—संज्ञा पु॰ (फा॰+हिं॰) जेब या गाँठमें बँधा हुआ माल काट लेनेवाला। चाई।

गिरह-दार—वि॰ (फा॰) जिसमें गिरह या गाँठें हों। गँठीला।

गिरह बाज़—संज्ञा पु॰ (फा॰) एक जातिका कबूतर जो उड़ते उड़ते उलटकर कलैया खा जाता है।

गिराँ—वि॰ देखो 'गराँ।' (गिराँके यौगिकके लिये दे॰ "गराँ" के यौगिक।)

गिरानी—संज्ञा स्त्री॰ देखो "गरानी"

गिरामी—वि॰ (फा॰) पूज्य।

बुजुर्ग। यौ०—नामी-गिरामी=१ बहुत प्रसिद्ध। २ प्रसिद्ध और पूज्य।

गिरिफ्त—संज्ञा स्त्री० दे० "गिरफ्त।"

गिरिया—संज्ञा० पु० (फा० गिरियः) रोना-धोना। रुलाई। यौ०—**गिरिया व-ज़ारी**= रोना-धोना। रोना-कलपना।

गिरियाँ—वि० (फा०) जो रोता हो। रोनेवाला।

गिरौ—संज्ञा पु० (फा० गिरौ) १ शर्त। २ गिरवी। रेहन।

गिरेबान—संज्ञा पु० दे० "गरेबान।"

गिर्द—अव्य० (फा०) आस-पास। चारों ओर। यौ० **इर्द-गिर्द**=चारों ओर। **गिर्द व-नवाह**-आस-पासके स्थान।

गिर्दावर—संज्ञा पु०दे० "गिरदावर।"

गिर्दबाद—संज्ञा पु० (फा०) हवाका बगूला। बवंडर। वायु-चक्र।

गिर्द-बालिश—संज्ञा पु० (फा०) लंबा गोल तकिया। (गाव-तकिया।)

गिल—संज्ञा स्त्री० (फा०) मृत्तिका। मिट्टी।

गिल-कार—वि० (फा०) (संज्ञा गिलकारी) गारा या पलस्तर करनेवाला (व्यक्ति)।

गिलमाँ—संज्ञा पु० (अ० "गुलाम" का बहु०) वे सुंदर बालक जो बहिश्तमें धर्मात्माओंकी सेवा और भोगके लिये रहते हैं। (मुसल०)

गिल-हिकमत-संज्ञा स्त्री० (फा०) शीशी आदिको आगपर चढ़ानेसे पहले उसपर गीली मिट्टी लगाना या गीली मिट्टीसे उसका मुँह बन्द करना।

गिला—संज्ञा पु० (फा० गिलः) १ उलहना। २ शिकायत। निंदा।

गिलाज़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गन्दगी। गन्दापन। २ मल। विष्ठा।

गिलाफ़—संज्ञा पु० (अ०) १ कपड़ेकी बड़ी थैली जो तकिए या लिहाफ़ आदिके ऊपर चढ़ा दी जाती है। खोल। २ बड़ी रजाई। लिहाफ़। ३ म्यान।

गिलाबा=संज्ञा पु० (फा० गिल+आबः) इमारतके काममें आने-वाला गारा या गीली मिट्टी।

गिलावा—संज्ञा पु० दे० "गिलाबा।"

गिली—वि० (फा०) मिट्टीका।

गिलीम—संज्ञा पु० (फ़ा०) १ एक प्रकारका ऊनी पहनावा। २ कम्बल।

गीं—प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर प्रभावित या पूर्ण आदिका अर्थ देता है। जैसे—गम-गीन=दुखी। सुरम-गीं=जिसमें सुरमा लगा हो। शर्म-गीं=लज्जाशील।

गीती—संज्ञा स्त्री० (फा०) दुनिया। संसार।

गीदी—वि० (फा०) १ कायर। डरपोक। २ मूर्ख। बेवकूफ़। ३ निर्लज्ज। ४ नपुंसक।

गीन=प्रत्य० दे० "गीं।"

गीर—वि० (फा०) पकड़ने, लेने या

रखनेवाला। जैसे—जहाँ-गीर, आलम-गीर।

गुंग—संज्ञा पु० (फा०) गूँगापन। मूकता। २ गूँगा। मूक।

गुंजाइश—संज्ञा स्त्री० (फा०) अँटने या समानेकी जगह। अवकाश। २ समाई। सुभीता।

गुंजान—वि० (फा०) घना। सघन।

गुज़र—संज्ञा पु० (फा०) १ निकास। गति। २ पैठ। पहुँच। प्रवेश। ३ निर्वाह। काल-क्षेप।

गुज़र-बसर—संज्ञा पु० (फा०) काल-क्षेप। निर्वाह।

गुज़रना—क्रि० अ० (फा० गुज़र) १ बीतना। कटना। व्यतीत होना। २ पहुचना। ३ पेश होना।

गुज़री—संज्ञा स्त्री० (फा० गुज़र) वह बाज़ार जो प्रायः तीसरे पहर सड़कोंके किनारे लगता है।

गुज़श्ता—वि० (फा० गुज़श्तः) बीता हुआ। गत। व्यतीत। भूत।

गुज़ाफ़—संज्ञा स्त्री० (फा०) भद्दी और वाहियात बात। यौ०—**लाफ़-व-गुज़ाफ़**=डींगकी बातें।

गुज़ार—वि० (फा०) १ देनेवाला। जैसे—मालगुज़ार। २ करनेवाला। जैसे—ख़िदमत-गुज़ार। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें प्रयुक्त होता है। संज्ञा पु० (फा०) वह स्थान जहाँसे होकर लोग आते जाते हों। जैसे—घाट, रास्ता आदि।

गुज़ारना—क्रि० स० (फा० गुज़र) १ बिताना। काटना। २ पहुँचाना। पेश करना।

गुज़ारा—संज्ञा पु० (फा० गुज़ारः) १ गुज़र। गुज़रान। निर्वाह। २ वह वृत्ति जो जीवन-निर्वाहके लिये दी जाय। ३ महसूल लेनेका स्थान।

गुज़ारिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) निवेदन। प्रार्थना।

गुज़ाश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ घटाने या निकालनेकी क्रिया। २ दान की हुई या माफ़ी ज़मीन।

गुज़ीं—वि० (फा०) पसन्द किया हुआ। चुना हुआ।

गुज़ीर—संज्ञा पु० (फा०) १ बचाव। छुटकारा। २ उपाय। साधन। ३ चारा। वश। यौ०—**ना-गुज़ीर**=जिसका कोई उपाय न हो।

गुदड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "गुज़री।"

गुदाज़—वि० (फा०) १ मोटा। दबीज़। २ कोमल। दयायुक्त (हृदय)। ३ पिघलाने या द्रवित करनेवाला। जैसे—**दिल-गुदाज़**=हृदय-द्रावक।

गुदूद—संज्ञा पु० (अ०) गिलटी।

गुनचगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) खिलनेकी क्रिया या भाव।

गुनचा—संज्ञा पु० (फा० गुन्चः) कली। कलिका।

गुनचा दहन—वि० (फा०) जिसका मुख गुलाबकी कलीके समान सुन्दर हो।

गुनह—संज्ञा पु० दे० "गुनाह।"

गुनहगार—वि० दे० "गुनाहगार।"

गुनाह—संज्ञा पु० (फा०) १ पाप। २ दोष। कसूर। अपराध। मुहा०—**गुनाह-बे-लज़्ज़त**—ऐसा दुष्कर्म जिसमें कोई आनन्द या सिद्धि न हो।

गुनाहगार-वि० (फा०) गुनाह करनेवाला अपराधी।

गुन्ना-संज्ञा पु०(अ०गुन्नः) अनुस्वार। यौ०-**नून गुन्ना**=वह नून या न जिसका उच्चारण या ँ हो। जैसे-जहाँके अन्तका नून (न) गुन्ना है।

गुफ्त-वि० (फा०) कहा हुआ यौ०-**गुफ़्त व शुनीद**=बातचीत।

गुफ़्तगू-संज्ञा स्त्री० (फा०) बात चीत। वार्तालाप।

गुफ्तार-संज्ञा स्त्री० (फा०) बात-चीत। बोल-चाल।

गुबार-संज्ञा पु० (अ०) १ गर्द। धूल। २ मनमें दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष आदि।

गुबारा-संज्ञा पु० (अ० गुबार) १ वह थैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भरकर आकाशमें उड़ाते हैं।

गुम-वि० (फा०) १ गुप्त। छिपा हुआ। २ अप्रसिद्ध। ३ खोया हुआ।

गुम-ज़दा-वि० (फा०) १ भूला या खोया हुआ। २ गुम-राह।

गुम नाम-वि० (फा०) १ जिसका नाम कोई न जानता हो। २ जिसमें किसीका नाम न हो।

गुम-राह-वि० (फा०) (संज्ञा गुम-राही) १ जो रास्ता भूल गया हो। २ नीति-पथसे हटा हुआ।

गुम-शुदा-वि० (फा० गुम+शुदः) जो गुम गया हो। खोया हुआ।

गुमान-संज्ञा पु० (फा०) १ अनुमान। कयास। २ घमंड। अहंकार। गर्व। ३ लोगोंकी बुरी धारणा। बदगुमानी।

गुमानी-वि० (फा०) अभिमानी।

गुमाश्ता-संज्ञा पु० (फा० गुमाश्तः) बड़े व्यापारीकी ओरसे खरीदने और बेचनेपर नियुक्त मनुष्य।

गुमाश्ता-गरी-संज्ञा० स्त्री० (फा०) गुमाश्तेका काम।

गुम्बद-संज्ञा पु० (फा०) गोल और ऊँची छत। गुम्बज।

गुरजी-संज्ञा पु० (फा०) १ गुर्ज या जार्जिया नामक देशका निवासी। २ सेवक। नौकर। ३ कुत्ता।

गुरदा-संज्ञा पु० (फा० गुर्दः मि० सं० गोर्द) १ शरीरके अन्दर कलेजेके पासका एक अंग। २ साहस। हिम्मत।

गुरफ़ा-संज्ञा पु० (अ० गुरफः) १ छतके ऊपरका कमरा। बंगला। २ खिड़की। दरीचा।

गुर-फ़िश-संज्ञा स्त्री०। (अनु०) डराना-धमकाना।

गुरबत-सं०स्त्री० (अ०) १ विदेश-का निवास। २ मुसाफिरी। ३ अधीनता। नम्रता।

गुरबा-संज्ञा स्त्री० (फा० गुर्बः) बिल्ली। बिडाल।

गुरबा-संज्ञा पु० (अ०) "गरीब" का बहु०।

गुरसंगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) भूख।

गुराब-संज्ञा पु० (अ०) १ कौवा। २ एक प्रकारकी नाव।

गुरूब–संज्ञा पु० (अ०) किसी तारे और विशेषतः सूर्यका अस्त होना।

गुरूर–संज्ञा पुं० दे० "ग़रूर।"

गुरेज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भागना। २ बचना। दूर रहना। ३ कवितामें एक विषयको छोड़ कर दूसरे विषयका वर्णन करने लगना।

गुर्ग–संज्ञा पु० (फा०) भेड़िया। शृगाल।

गुर्ज़–संज्ञा पु० (फा०) गदा। सोंटा।

गुर्रा–संज्ञा पु० (अ० गुर्रः) १ घोड़ेके माथेपरका सफ़ेद दाग। २ लाखके रंगका घोड़ा। ३ श्रेष्ठ वस्तु। ४ चांद्र मासकी पहली तिथि। ५ उपवास। मुहा०–**गुर्रा बताना**= बिना कुछ दिये टाल देना।

गुल–संज्ञा पु० (फा०) १ फूल। पुष्प। २ गुलाब। मुहा०–**गुल खिलना**=१ विचित्र घटना होना। २ बखेड़ा खड़ा होना। ३ पशुओंके शरीरका रंगीन दाग। ४ वह गड्ढा जो हँसनेके समय गालोंमें पड़ता है। ५ दीपककी बत्तीके ऊपरका जला हुआ अंश। मुहा०–(चिराग) **गुल करना**= (चिराग) बुझाना या ठंडा करना। ६ तमाकूका जला हुआ अंश। जट्ठा। ७ जलता हुआ कोयला।

गुल–संज्ञा पु० (अ० गुलगुल=पक्षि- [illegible] कलरव) शोर। हल्ला।

गुल-अब्बास–संज्ञा पु० (फा०+अ०) एक पौधा जिसमें लाल या पीले रंगके फूल लगते हैं। गुलाब-बाँस।

गुल-क़न्द–संज्ञा पु० (फा०) मिस्री या चीनीमें मिलाकर धूपमें सिझाई हुई गुलाबके फूलोंकी पँखड़ियाँ जिसका व्यवहार प्रायः दस्त साफ लानेके लिये होता है।

गुल-कारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) बेल-बूटेका काम।

गुलखन–संज्ञा पु० (अ०) १ आग जलानेकी भट्ठी। २ पत्थर।

गुल-गश्त–संज्ञा पु० (फा०) बागमें घूमकर सैर करना।

गुल-गीर–संज्ञा पु० (फा०) चिराग-की बत्ती या गुल काटनेकी कैंची।

गुल-गूँ–वि० (फा०) गुलाबके रंग-का। गुलाबी।

गुलगूना–संज्ञा पु० (गुलगूनः) वह चूर्ण जो स्त्रियाँ मुखपर उसकी सुन्दरता बढ़ानेके लिये मलती हैं। गाज़ा।

गुल-चहर–वि० (फा०) जिसका मुख गुलाबके समान सुन्दर हो।

गुलचीं–वि० (फा०) १ फूल चुनने वाला। माली। २ तमाशा देखने-वाला।

गुलज़ार–संज्ञा पुं० (फा०) बाग। वाटिका। वि० हरा-भरा। आनन्द और शोभा-युक्त।

गुलद-स्ता–संज्ञा पु० (फा० गुल-दस्तः) सुन्दर फूलों या पत्तियोंका एकमें बँधा समूह। गुच्छा।

गुल दान–संज्ञा पु० (फा०) गुल-दस्ता रखनेका पात्र।

गुल-दार–संज्ञा पु० (फा०) १ एक

प्रकारका सफेद कबूतर। २ एक प्रकारका कशीदा।

गुल-दुम—संज्ञा पु० (फा०) बुलबुल पक्षी।

गुल-नार—संज्ञा पु० (फा०) १ अनारका फूल। २ अनारके फूलका-सा गहरा लाल रंग।

गुल-फ़ाम—संज्ञा पु० (फा०) १ वह जिसका रंग गुलाबके फूलका-सा हो। २ बहुत सुन्दर।

गुल-बकावली—संज्ञा स्त्री० (फा०+सं०) हल्दीकी जातिका एक पौधा जिसमें सुन्दर, सफेद, सुगन्धित फूल लगते हैं।

गुल-बदन—संज्ञा पु० (फा०) एक प्रकारका धारीदार रेशमी कपड़ा। वि० जिसका शरीर गुलाबके फूलोंके समान सुन्दर और कोमल हो। परम सुन्दर।

गुल-बर्ग—संज्ञा पु० (फा०) गुलाबकी पत्ती।

गुलमेख—संज्ञा स्त्री० (फा०) वह कील जिसका सिरा गोल होता है। फुलिया।

गुल-रुख़—वि० दे० "गुलरू।"

गुल-रू—वि० (फा०) जिसका चेहरा गुलाबकी तरह हो। बहुत सुन्दर।

गुल-रेज़—संज्ञा पु० (फा०) फुलझड़ी नामकी आतिशबाजी।

गुल-लाला—संज्ञा पु० (फा०) १ एक प्रकारका पौधा। २ इस पौधेका फूल। Tulip

गुल-शकरी—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल-क़न्द।"

गुलशन—संज्ञा पु० (फा०) वाटिका। बाग।

गुल-शब्बो—संज्ञा स्त्री० (फा०) लहसुनसे मिलता जुलता एक छोटा पौधा। रजनी-गंधा। सुगंधरा। सुगंधिराज।

गुलाब—संज्ञा पु० (फा०) १ एक कँटीला झाड़ या पौधा जिसमें बहुत सुन्दर सुगंधित फूल लगते हैं। २ गुलाब-जल।

गुलाब-पाश—संज्ञा पुं० (फा०) झारीके आकारका एक लम्बा पात्र जिसमें गुलाब-जल भरकर छिड़कते हैं।

गुलाब-पाशी—संज्ञा स्त्री० (फा०) गुलाब-जल छिड़कना।

गुलाबी—वि० (फा०) १ गुलाबके रंगका। २ गुलाब-सम्बन्धी। ३ गुलाब-जलसे बसाया हुआ। ४ थोड़ा या कम। हलका।

गुलाम—संज्ञा पुं० (अ०) १ मोल लिया हुआ दास। खरीदा हुआ नौकर। २ साधारण सेवक।

गुलाम-गरदिश—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ खेमेके आस-पासका वह स्थान जिसमें नौकर रहते हैं। २ महल आदिके सदर फाटकमें अन्दरकी ओर बनी हुई छोटी दीवार जिसके कारण बाहरके आदमी फाटक खुला रहने पर भी अन्दरके लोगोंको नहीं देख सकते।

गुलाम-माल—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ कम्बल। २ बढ़िया और सस्ती चीज।

गुलामी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गुलामका भाव। दासत्व। २ सेवा। नौकरी। ३ पराधीनता। परतंत्रता।

गुलिस्ताँ–संज्ञा पु० (फा०) बाग। वाटिका।

गुलू–संज्ञा पु० (फा०) १ गला। २ स्वर।

गुलू-बन्द–संज्ञा पु० (फा०) १ वह लम्बी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ी पट्टी जो सर्दीसे बचनेके लिये सिर, गले या कानोंपर लपेटते हैं। २ गलेका एक गहना।

गुले-चश्म–संज्ञा पुं० (फा०) आँखकी फुली।

गुले-रअना–संज्ञा पु० (फा०) १ एक प्रकारका बढ़िया गुलाब। २ प्रेमिकाका वाचक शब्द या विशेषण। ३ वह फूल जो अंदरसे लाल और बाहरसे पीला हो।

गुलेल–संज्ञा स्त्री० (अ० गुलूल:) वह कमान या धनुष जिससे मिट्टीकी गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेला–संज्ञा पु० (अ० गुलूल:) १ मिट्टीकी गोली जिसको गुलेलसे फेंककर चिड़ियोंका शिकार किया जाता है। २ गुलेल।

गुल्ला–संज्ञा पुं० (फा०) १ मिट्टीकी बनी हुई गोली जो गुलेलसे फेंकते हैं। २ शोर। हल्ला।

गुसार–वि० (फा०) १ खानेवाला। २ महन करनेवाला। जैसे–गम-गुस्सार। ३ दूर करनेवाला। (यौगिक शब्दोंके अन्तर्गत।)

गुस्तर–वि० (फा०) १ फैलानेवाला। २ देने या व्यवस्था करनेवाला।

गुस्ताख़–वि० (फा०) बड़ोंका संकोच न रखनेवाला। धृष्ट। अशालीन। अशिष्ट।

गुस्ताख़ाना–क्रि० वि० (फा० गुस्ताखान:) गुस्ताखीसे।

गुस्ताखी–संज्ञा स्त्री० (फा०) धृष्टता। ढिठाई। अशिष्टता। बेअदबी।

गुस्ल–संज्ञा पुं० (अ०) स्नान।

गुस्ल-खाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) स्नानागार। नहानेका घर।

गुस्ले मैयत–संज्ञा पु० (अ०) मृत पुरुषके शवको कराया जानेवाला स्नान।

गुस्ले सेहत–संज्ञा पु० (अ०) रोग-मुक्त होनेपर किया जानेवाला स्नान। आरोग्य-स्नान।

गुस्सा–संज्ञा पु० (अ० गुस्स:) क्रोध। कोप। रिस। मुहा० **गुस्सा उतरना या निकलना**=क्रोध शांत होना। **गुस्सा उतारना**=क्रोधमें जो इच्छा हो, उसे पूर्ण करना। अपने कोपका फल चखाना। **गुस्सा चढ़ना**=क्रोधका आवेश होना।

गुस्सावर–वि० (अ०+फा०) क्रोधी।

गुहर–संज्ञा पु० (फा०) मोती।

गूँ–संज्ञा पुं० (फा०) १ रंग। जैसे–गुल-गूँ=गुलाबके रंगका। २ प्रकार। ३ वर्ग।

गून–संज्ञा संज्ञा पुं० (फा० गून:) १ वर्ण यौ०-**गूना-गूँ**= १ अनेक रंगोंके। २ तरह तरहके।

गूना—संज्ञा पु० (फा० गूनः) १ वर्ण। रंग। २ प्रकार। भाँति। तरह। ३ तौर-तरीका। रंग-ढंग।

गूल—संज्ञा पु० (अ०) जंगलमें रहनेवाले एक प्रकारके देव।

गूल बियाबानी—संज्ञा पु० दे० 'गूल।'

गेती—संज्ञा स्त्री० (फा०) दुनिया। संसार। यौ०—**गेती आरा**=संसारकी शोभा बढ़ानेवाला।

गेसू—संज्ञा पु० (फा०) जुल्फ। बालोंकी लट।

ग़ैब—संज्ञा पु० (अ०) १ परोक्ष। अनुपस्थित। २ अदृश्यता। ३ अदृश्य लोक।

ग़ैबत—संज्ञा स्त्री० (अ०) किसीके पीठके पीछे की जानेवाली निन्दा। चुगली।

ग़ैब-दाँ—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा ग़ैब-दानी) परोक्ष या अदृश्य जगतकी बात जाननेवाला।

ग़ैबानी—संज्ञा स्त्री० (अ० ग़ैब) १ निर्लज्ज या दुश्चरित्रा स्त्री। २ भारी बला। बड़ी आपत्ति।

ग़ैबी—वि० (अ० ग़ैब) परोक्ष-सम्बन्धी।

ग़ैर—वि० (अ०) १ अन्य। दूसरा। २ अजनबी। बाहरी। पराया। ३ विरुद्ध अर्थवाची या निषेध-वाचक शब्द। जैसे—ग़ैर-वाजिब, ग़ैर-मामूली, ग़ैर-मनक़ूला, ग़ैर-मुमकिन।

ग़ैर-आबाद—वि० (अ०+फा०) १ जो बसा न हो (स्थान)। २ जो जोता-बोया न हो (खेत)।

ग़ैरत—संज्ञा स्त्री० (अ०) लज्जा।

ग़ैरत-मन्द—वि० (अ०+फा०) जिसे ग़ैरत हो। लज्जा-शील।

ग़ैर-मनक़ूला—वि० (अ०) जिसे एक स्थानसे उठाकर दूसरे स्थानपर न ले जा सकें। स्थिर। अचल। स्थावर।

ग़ैर-मनक़ूहा—वि० स्त्री० (अ०) १ अविवाहिता (स्त्री)। २ रखनी। सुरेतिन। उपपत्नी।

ग़ैर-मामूल—वि० (अ०) असाधारण।

ग़ैर-मामूली—वि० (अ०) असाधारण।

ग़ैर-मुनासिब—वि० (अ०) अनुचित।

ग़ैर-मुमकिन—वि० (अ०) असंभव। ना-मुमकिन।

ग़ैर-वाजिब—वि० (अ०) अयोग्य।

ग़ैर-हाज़िर—वि० (अ०) अनुपस्थित।

ग़ैर हाज़िरी—संज्ञा स्त्री० (अ०) अनुपस्थिति।

गैहान—संज्ञा पु० (फा०) संसार।

गो—अव्यय (फा०) यद्यपि यौ०—**गो कि**=यद्यपि। गो। प्रत्य० (फा०) कहनेवाला। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें) जैसे—**बद-गो**=बुराई करनेवाला। **कम गो**—=कम बोलनेवाला।

गोइन्दा—संज्ञा पु० (फा० गोइन्दः) १ बोलनेवाला। वक्ता। २ गुप्तचर। भेदिया। जासूस।

गोई—संज्ञा स्त्री० (फा०) कहनेकी क्रिया। कथन। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें।) जैसे—बद-गोई। यौ०—**चोज-गोइयाँ**= चोजकी बातें। व्यंगपूर्ण विनोद।

गोज़—संज्ञा पु० (फा०गूज़) पाद। अपान वायु। संज्ञा पु० (फा०) १ अखरोट। २ चिलगोज़ा।

गोता—संज्ञा पु० (अ० ग़ोतः) डूबनेकी क्रिया। डुब्की। मुहा०—**गोता खाना**=धोखेमें आना। फरेबमें आना। **गोता मारना**=१ डुबकी लगाना। डूबना। २ बीचमें अनुपस्थित रहना।

गोता-ख़ोर—वि०(अ०+फा०) (संज्ञा गोताख़ोरी) १ पानीमें डुबकी लगानेवाला। पनडुब्बा। संज्ञा पु०—एक प्रकारकी आतिशबाज़ी।

गो-म-गो-वि० (फा०) १ जिसका अर्थ स्पष्ट न हो। गोल (बात)। २ जिसका न कहना ही अच्छा हो।

गोयन्दा—संज्ञा पु० दे० 'गोइन्दा'

गोया—क्रि० वि० (फा०) याने। वि० बोलनेवाला। बोलता हुआ।

गोयाई—संज्ञा स्त्री० (फा०) बोलनेकी शक्ति। वाक्-शक्ति। यौ०—**चेमे-गोइयाँ**=१ चोजकी बातें। २ व्यंग्यपूर्ण विनोद।

गोर—संज्ञा० स्त्री० (फा०) क़ब्र। समाधि। यौ०—**गोरे-ग़रीबाँ**=वह स्थान जहाँ विदेशी या ग़रीब लोगोंके मुर्दे गाड़े जाते हों। **गोर व कफ़न**=मृतककी अन्त्येष्टि क्रिया। **दर-गोर**=जहन्नुममें जाय। **जिन्दा-दर-गोर**=जीवित अवस्थामें ही मृतके समान।

ग़ोर—संज्ञा पु० (फा०) कन्धारके पासके एक देशका नाम।

गोर-कन—संज्ञा पु० (फा०) क़ब्र खोदनेवाला।

गोर-ख़र—संज्ञा पु० (फा०) गधेकी जातिका एक जंगली पशु।

गोरिस्तान—संज्ञा पु० (फा०) कब्रिस्तान।

ग़ोरी—वि० (फा०) ग़ोर देशका निवासी। संज्ञा स्त्री० तश्तरी। रिकाबी। थाली।

ग़ोल—संज्ञा स्त्री० (अ०) समूह। झुण्ड। गिरोह।

ग़ोलक—संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० गोलक) १ वह सन्दूक या थैली जिसमें धन-संग्रह किया जाय। २ गल्ला। गुल्लक।

गोश—संज्ञा पु० (फा०) कान। कर्ण।

गोश-गुज़ार—वि० फा० (संज्ञा गोश-गुज़ारी) कानोंतक पहुँचा हुआ। सुना हुआ। मुहा०—**गोश-गुज़ार करना**=निवेदन करना। सुनना।

गोश-ज़द—वि० (फा०) कानोंतक पहुँचा हुआ। सुना हुआ।

गोश-माली—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कान उमेठना। २ ताड़ना। कड़ी चेतावनी।

गोश-वारा—संज्ञा पु० (फा०) १ खंजन नामक पेड़का गोंद। २ कानका बाला। कुण्डल। ३ बड़ा मोती जो सीपमें होता है। ४ पगड़ीका आँचल। ५ तुर्रा। कलगी। सिरपेंच। ६ जोड़। मीज़ान। ७ वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर एक मदका आय-

व्यय अलग अलग दिखलाया गया हो ।

गोशा–संज्ञा पु० (फा० गोशः) १ कोना । अन्तराल । २ एकान्त स्थान । ३ तरफ । दिशा । ओर । ४ कमानकी दोनो नोकें । धनुष-कोटि ।

गोशा-नशीन–वि० (फा०) (संज्ञा गोशा-नशीनी) एकान्तमें रहनेवाला । परदेशमें रहनेवाली (स्त्री०) ।

गोश्त–संज्ञा पु० (फा०) मांस ।

गोश्त-ख़्वार–संज्ञा पु० (फा०) गोश्त खानेवाला । मांसभक्षी ।

गोस्फन्द–संज्ञा स्त्री० (फा०) बकरी ।

ग़ोग़ा–संज्ञा पु० (फा०) शोर-गुल । कोलाहल ।

ग़ौग़ाई–वि० (फा०) १ शोर या कोलाहल मचानेवाला । २ व्यर्थका । ३ झूठ-मूठका । जैसे–ग़ौग़ाई खबर ।

ग़ौज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) गप्प । बात-चीत ।

ग़ौर–संज्ञा पु० (अ०) १ सोच-विचार । चिंतन । २ खयाल । ध्यान । यौ०–**ग़ौर-परदाख़्त**= १ देख रेख । २ पालन-पोषण ।

ग़ौर-तलब–वि० (अ०) विचार करने योग्य । विचारणीय ।

ग़ौवास–संज्ञा पु० (अ०) गोता-खोर । पनडुब्बा ।

ग़ौवासी–संज्ञा स्त्री० (अ०) गोता-खोरी ।

ग़ौस–संज्ञा पु० (अ०) फ़रियाद । नालिश । २ मुसलमान महात्माओंकी एक उपाधि ।

गौहर–संज्ञा पु० (फा०) १ किसी वस्तुकी प्रकृति । २ मोती । ३ जवाहिरात । रत्न । ४ बुद्धिमत्ता ।

गौहर-संज–संज्ञा पु० (फा०) १ जौहरी । २ आलोचना या समीक्षा करनेवाला ।

गौहरी–संज्ञा पु० दे० "जौहरी ।"

(च)

चंग–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ डफके आकारका एक बाजा । २ हाथीका अंकुश । ३ बड़ी गुड्डी । पतंग । मुहा०–**चंग चढ़ना**=खूब जोर होना । **चंग पर चढ़ाना**= १ इधर-उधरकी बातें करके अपने अनुकूल करना । २ मिजाज बढ़ देना ।

चंगुल–संज्ञा पु० (फा० चुगल) १ चिड़ियों या पशुओंका टेढ़ा पंजा । २ हाथके पंजोंकी वह स्थिति जो उँगलियोंसे किसी वस्तुको उठाने या लेनेके समय होती है । बकोटा । मुहा०–**चंगुलमें फँसना**=काबूमें होना ।

चक़मक़–संज्ञा पु० (फा०) एक प्रकारका कड़ा पत्थर जिसपर चोट पड़नेसे बहुत जल्दी आग निकलती है ।

चक़माक़–संज्ञा पुं० दे० "चक़मक़ ।"

चख़–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ लड़ाई । झगड़ा । २ शोर । कोलाहल । यौ०–**चख़ चख़**=कहा - सुनी ।

लड़ाई-झगड़ा। वि० १ खराब। बुरा। दुष्ट।

चतर–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० छत्र) १ छत्र। २ छाता। छतरी।

चनार–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका वृक्ष जिसकी पत्तियोंकी उपमा मेंहदी-लगे हाथोंसे दी जाती है।

चन्द–वि० (फा०) थोड़े-से। कुछ।

चन्द-रोज़ा–वि० (फा०) थोड़े दिनोंका। अस्थायी।

चन्दाँ–क्रि० वि० (फा०) १ इतना। इस मात्रामें। २ इतनी देर।

चन्दा–संज्ञा पुं० (फा० चन्दः) १ वह थोड़ा थोड़ा धन जो कई आदमियोंसे किसी कार्यके लिये लिया जाय। बेहरी। उगाही। २ किसी सामयिक पत्र या पुस्तक आदिका वार्षिक मूल्य।

चन्दावल–संज्ञा पुं० (फा०) वे सैनिक जो सेनाके पीछे रक्षाके लिए चलते हैं। हरावलका उलटा।

चन्दे–अव्य० (फा०) १ थोड़ा-सा। २ थोड़ी देर।

चप–वि० (फा०) १ बायाँ। बाम। यौ०-**चप-व-रास्त**=बाएँ और दाहिने। २ अभाग्यका सूचक।

चपक़लश–संज्ञा स्त्री० (तु०) १ तलवारकी लड़ाई। २ शोर-गुल। कोलाहल। भीड़। जन-समूह। ४ कठिनता। असमंजस।

चपकुलिश–संज्ञा स्त्री० दे० 'चपकलश।'

चपरास–संज्ञा स्त्री० (फा० चप व रास्त) दफ्तर या मालिकका नाम खुदी हुई पीतल आदिकी छोटी पट्टी जिसे पट्टी या परतलेमें लगाकर चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं। बल्ला। बैज।

चपरासी–संज्ञा पुं० (हिं० चपरास) वह नौकर जो चपरास पहने हो। प्यादा। अरदली।

चपाती–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० चर्पटी) छोटी पतली रोटी। फुलका।

चमचा–संज्ञा पुं० (तु० चमचः) १ एक प्रकारकी छोटी कलछी। चम्मच। डोई। २ चिमटा।

चमन–संज्ञा पु० (फा०) १ हरी। क्यारी। २ फुलवारी। छोटा बगीचा। ३ रौनककी और गुलजार जगह।

चम्बर–संज्ञा पु० (फा० चम्बर) चिलमके ऊपरका ढकना। चिलमपोश।

चरख़–संज्ञा पुं० दे० 'चर्ख़।'

चरखा–संज्ञा पु० (फा० चर्ख़.) १ घूमनेवाला गोल चक्कर। चरख़। २ लकड़ीका एक यंत्र जिसकी सहायतासे ऊन, कपास या रेशम आदिको कातकर सूत बनाते हैं। रहँट। ३ कूएँसे पानी निकालनेका रहँट। ४ सूत लपेटनेकी गराड़ी। चरखी। रील। ५ गराड़ी। घिरनी। ६ बड़ा या बेडोल पहिया। ७ गाड़ीका वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा

निकालते हैं। खड़खड़िया। ८ झगड़े-बखेड़े या झंझटका काम।

चरखी—संज्ञा स्त्री० (फा० चर्ख) १ पहियेकी तरह घूमनेवाली कोई वस्तु। २ छोटा चरखा। ३ कपास ओटनेकी चरखी। बेलनी। ओटनी। ४ सूत लपेटनेकी फिरकी। ५ कूएँसे पानी खींचने आदिकी गराड़ी। घिरनी। ६ एक प्रकारकी आतिशबाजी।

चरपूज़—वि० (फा०) १ बहुत निम्न कोटिका। हलका। २ मूर्ख। मूढ़।

चरब—वि० दे० "चर्ब"

चरबा—संज्ञा पु० (फा० चर्बः) प्रतिमूर्ति। नकल। खाका।

चरबी—संज्ञा स्त्री० (फा० चर्बी) एक पीला चिकना गाढ़ा पदार्थ जो प्राणियोंके शरीरमें और बहुतसे पौधों और वृक्षोंमें भी पाया जाता है। मेद। बसा। पीव। मुहा०—**चरबी चढ़ना**=मोटा होना। **चरबी छाना**=१ बहुत मोटा हो जाना। २ मदान्ध होना।

चरागाह—संज्ञा स्त्री० (धा०) वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हों। चरनी। चरी।

चरिन्द—संज्ञा पु० दे० "चरिन्दा।"

चरिन्दा—संज्ञा पु० (फा० चरिन्दः) चरनेवाला जानवर। पशु।

चर्ख़—संज्ञा पु० (फा०) १ आकाश। आसमान। २ घूमनेवाला गोल चक्कर। चाक। ३ सूत कातनेका चरखा। ४ खराद। ५ कुम्हारका चाक। ६ वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है। ७ गोफन। ढेलवाँस। ८ एक शिकारी चिड़िया।

चर्ग़—संज्ञा पु० (फा०) एक प्रकारकी शिकारी चिड़िया।

चर्ब—वि० (फा०) १ चिकना। २ मोटा। स्थूल। ३ तेज। चपल।

चर्ब-ज़बान—वि० (फा०) (संज्ञा चर्ब-जबानी) चिकनी-चुपड़ी बातें बनानेवाला। चापलूस। खुशामदी।

चर्बी—संज्ञा स्त्री० दे० दे० "चरबी।"

चश्म—संज्ञा स्त्री० (फा०) नेत्र। आँख। मुहा०—**चश्म-बद-दूर**=ईश्वर बुरी नजरसे बचावे।

चश्मक—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चश्मा। ऐनक। २ आँखसे इशारा करना। ३ लड़ाई-झगड़ा। कहा-सुनी। चाकसू नामक ओषधि।

चश्म-नुमाई—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ डराना धमकाना। २ आँखें दिखाना।

चश्म-पोशी—संज्ञा स्त्री० (फा०) दोषोंकी ओर ध्यान न देना। किसीके दुष्कर्मोंके प्रति उपेक्षा करना।

चश्मा—संज्ञा पु० (फा० चश्मः) १ कमानीमें जड़ा हुआ शीशे या पारदर्शी पत्थरके तालोंका जोड़ा, जो आँखोंपर दृष्टि बढ़ाने या ठंडक रखनेके लिए पहना जाता है। ऐनक। २ पानीका सोता।

चस्पाँ—वि० (फा०) चिपका हुआ।

चस्पीदगी—संज्ञा स्त्री० (फा०)

चिपकानेकी क्रिया, भाव या मजदूरी ।

चस्पीदा–वि० (फा० चस्पीदः) चिपका या चिपकाया हुआ ।

चह–संज्ञा स्त्री० (फा०) "चाह ।" (कूआँ) का संक्षिप्त रूप ।

चहबच्चा–संज्ञा पुं० (फा० चाह+बच्चा) १ पानी भर रखनेका छोटा गड्ढा या हौज़ । २ धन गाड़ने या छिपा रखनेका छोटा तहखाना ।

चहल-क़दमी–संज्ञा स्त्री० (फा– चेहल-क़दमी) धीरे धीरे टहलना या घूमना ।

चहलुम–संज्ञा पुं० दे० "चेहलुम ।"

चहार–वि० (फा०) चार । तीन और एक ।

चहार-दाँग–संज्ञा स्त्री० (फा०) चारों दिशाएँ ।

चहार-शम्बा–संज्ञा पुं० (फा०) बुधवार ।

चहारुम–वि० (फा०) १ चौथाई । २ चौथा ।

चाक–संज्ञा पुं० (फा०) कटा या फटा हुआ स्थान । वि० फटा हुआ ।

चाक़–वि० (तु०) स्वस्थ । निरोग । यौ०–**चाक़ चौबंद**=१ हट्टा-कट्टा और स्वस्थ । २ सब तरहसे ठीक ।

चाकर–संज्ञा पु० (फा०) दास । भृत्य । सेवक । नौकर ।

चाकरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सेवा । नौकरी ।

चाक़ू–संज्ञा पुं० (फा०) छुरी ।

चादर–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कपड़ेका लंबा-चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने या ओढ़नेके काममें आता है । २ हलका ओढ़ना । चौड़ा दुपट्टा । पिछौरी । ३ किसी धातुका बड़ा चौखूँटा पत्तर । चद्दर । ४ पानीकी चौड़ी धार जो कुछ ऊपरसे गिरती हो । ५ फूलोंकी राशि जो किसी पूज्य स्थानपर चढ़ाई जाती है ।

चापलूस–वि० (फा०) खुशामदी । लल्लो-चप्पो करनेवाला । चाटुकार ।

चापलूसी–संज्ञा स्त्री० (फा०) खुशामद ।

चाबुक–संज्ञा पुं० (फा०) १ कोड़ा । हंटर । सोंटा । २ जोश दिलानेवाली बात ।

चाबुक-दस्त–वि० (फा०) (संज्ञा चाबुक-दस्ती) १ दक्ष । चतुर । २ फुरतीला ।

चाय–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक पौधा जिसकी पत्तियोंका काढ़ा चीनीके साथ पीनेकी चाल अब प्रायः सर्वत्र है । २ चायका उबला हुआ पानी ।

चार–वि० "चहार" (चार) का संक्षिप्त रूप । (यौगिकमें) संज्ञा पु० "चारा" (वश) का संक्षिप्त रूप । (यौगिकमें)

चार आईना–संज्ञा पु० (फा०) एक प्रकारका कवच या बख्तर

चार-नाचार–क्रि० वि० (फा०)

विवश होकर । लाचारीकी हालतमें ।

चारा—संज्ञा पु० (फा० चारः) १ उपाय । तदबीर । तरकीब । २ वश । अधिकार ।

चालाक—वि० (फा०) १ व्यवहार-कुशल । चतुर । दक्ष । २ धूर्त । चालबाज ।

चालाकी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चतुराई । व्यवहार-कुशलता । दक्षता । पटुता । २ धूर्तता । चालबाज़ी । ३ युक्ति ।

चाशनी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चीनी, मिस्री या गुड़को आँचपर चढ़ाकर गाढ़ा और मधुके समान लसीला किया हुआ रस । २ चसका । मज़ा । नमूनेका सोना जो सुनारको गहने बनानेके लिये सोना देनेवाला गाहक अपने पास रखता है ।

चाश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सूर्योदयके एक पहर बादका स्नान । जैसे-चाश्तकी नमाज़ । २ सबेरेका जल-पान ।

चाह—संज्ञा पु० (फा०) कूआँ । कूप । यौ०-**चाह-कन**=कुआँ खोदनेवाला ।

चाहे-ज़क़न—संज्ञा पु० दे० "चाहे-ज़नख़दाँ ।"

चाही—संज्ञा स्त्री० (फा०) वह ज़मीन जो कुएँके पानीसे सींची जाती हो ।

चाहे-ज़नख़-संज्ञा पु० दे० 'चाहे-ज़नख़दाँ ।"

चाहे-ज़नख़दाँ—संज्ञा पु० (फा०) ठोढ़ी या चिबुकपरका गड्ढा ।

चिक—संज्ञा स्त्री० (तु० चिक़) बाँस या सरकंडेकी तीलियोंका बना हुआ झँझरीदार परदा । चिल-मन ।

चिकन-संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका महीन सूती कपड़ा जिस-पर उभरे हुए बूटे बने रहते हैं ।

चिर्कीं-वि० (फा०) मैला । गन्दा ।

चिरा—अव्यय (फा०) क्यों । किस-लिये । यौ०-**चूँ व चिरा करना**= आपत्ति करना । उज्र करना ।

चिराग़—संज्ञा पु० (फा०) दीपक । दीआ ।

चिराग़-दान—संज्ञा पु० (फा०) दीपकका आधार । दीवट आदि ।

चिराग़-पा—वि० (फा०) १ जिसका मुँह नीचे हो गया हो । औंधा । २ (घोड़ा) जो अपने अगले दोनों पैर ऊपर उठा ले । संज्ञा पुं० 'दे० चिराग़दान' ।

चिराग़ी—संज्ञा स्त्री० (फा०) वह धन जो किसी मज़ारपर चिराग़ जलानेके समय मुल्ला या मुजा-विर आदिको दिया जाता है ।

चिराग़े सहरी—संज्ञा पु० (फा०) १ सबेरेका दीपक जिसके बुझनेमें विलम्ब न हो । २ वह जो मृत्यु या अन्तके समीप पहुँच चुका हो ।

चिर्क—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मल । गन्दगी । २ मवाद । पीब ।

चिर्कीं—वि० (फा०) गन्दा । मलिन ।

चिर्म–संज्ञा पु० (फा० मि० सं० चर्म) (वि० चिर्मी) चमड़ा। चर्म।

चिलगोज़ा–संज्ञा पु० (फा० चिलग़ोज़ः) एक प्रकारका मेवा। चीड़ या सनोबरका फल।

चिलता–संज्ञा पु० (फा०चिल्तः) एक प्रकारका कवच।

चिलम–संज्ञा स्त्री० (फा०) कटोरीके आकारका नालीदार मिट्टीका एक बरतन जिसपर तम्बाकू जलाकर उसका धूआँ पीते हैं।

चिलमची–संज्ञा स्त्री० (तु०) देगके आकारका एक बरतन जिसमें हाथ धोते और कुल्ली आदि करते हैं।

चिलमन–संज्ञा स्त्री० (फा०) बाँसकी फट्टियोंका परदा। चिक।

चिल्ला–संज्ञा पु० (फा० चिल्लः) १ चालीस दिनका समय। २ चालीस दिनका बंधेज या किसी पुण्य-कार्यका नियम। मुहा०-**चिल्ला बाँधना**=चालीस दिनका व्रत करना। **चिल्ला खींचना**=चालीस दिनतक एकान्तमें बैठकर ईश्वरकी उपासना करना। ३ स्त्रियोंके लिये प्रसवमें चालीस दिनका समय।

चीं–संज्ञा स्त्री० (फा०) चेहरेपर पड़नेवाली शिकन या बल। मुहा०-**चींब-जबीं होना**=चेहरेपर बल लाना। बिगड़ना। नाराज होना।

चीज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सत्तात्मक वस्तु। पदार्थ। द्रव्य। २ आभूषण। गहना। ३ गानेकी चीज। गीत। ४ विलक्षण वस्तु। ५ महत्त्वकी वस्तु।

चीदा–वि० (फा० चीदः) १ चुना हुआ। २ बढ़िया।

चीस्ताँ–संज्ञा स्त्री० (फा०) पहेली बुझौवल।

चुगल–संज्ञा पु० दे० "चुगुल।"

चुक़न्दर–संज्ञा पुं० (फा०) गाजरकी तरहका एक कन्द जिसकी तरकारी बनती है।

चुग़द–संज्ञा पुं० (फा०) १ उल्लू। उलूक। २ मूर्ख। मूढ़।

चुग़ल–संज्ञा पुं० (फा०) चुगुलखोर। चुगली खानेवाला।

चुगल-ख़ोर–संज्ञा पुं० (फा० चुग़ल) (संज्ञा चुग़ल-ख़ोरी) चुगली खानेवाला। पीठ-पीछे दूसरोंकी निन्दा करनेवाला। पिशुन।

चुग़ली–संज्ञा स्त्री० (फा०) दूसरेकी निन्दा जो उसकी अनुपस्थितिमें की जाय।

चुग़ा–संज्ञा पुं० दे० "चोगा।"

चुनाँ–अव्य० (फा०) इस प्रकारका। ऐसा। यौ०-**चुना-चुनी या चुनाँ चुनाँ करना**=१ आपत्ति करना। उज्र करना २ बढ़ बढ़कर बातें करना।

चुनाँचे–अव्य० (फा०) १ जैसा कि। उदाहरण-स्वरूप। २ इसलिये। इस वास्ते।

चुनिन्दा–वि० (हिं० चुननासे फा०) १ चुना हुआ। छँटा हुआ। २ बढ़िया।

चुनीं–अव्य० (फा०) इस प्रकारका। वि० दे० "चुनाँ।"

चुस्त–वि० (फा०) १ कसा हुआ। जो ढीला न हो। संकुचित। तंग। २ जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चलता। यौ०–**चुस्त व चालाक**=फुरतीला और चतुर। ३ दृढ़। मजबूत।

चुस्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ फुरती। तेजी। २ कसावट। तंगी। ३ दृढ़ता। मजबूती।

चूँ–क्रि० वि० (फा०) १ इसलिये। इस वास्ते। २ अगर। मुहा०–**चूँ व चिरा करना**=हुज्जत या बहस करना। वि० तुल्य। समान।

चूँकि–क्रि० वि०,(फा०) इस कारणसे कि। क्योंकि। इसलिये कि।

चू–अव्य० (फा०) १ तुल्य। समान। २ जब। ३ अगर।

चूग़ा–संज्ञा पु० दे० "चोग़ा।"

चूज़ा–संज्ञा पुं० (फा० चूज़ः) १ मुरग़ीका बच्चा। २ नवयुवक (या नवयुवती)।

चे–अव्य० (फा० चेह) क्या?

चे-गूना–अव्य० (फा० चे-गूनः) किस प्रकार। किस तरह।

चेचक–संज्ञा स्त्री० (फा०) शीतला नामक रोग। यौ०–**चेचक-रू**=जिसके मुँहपर शीतलाके दाग हों।

चेहरा–संज्ञा पुं० (फा० चेह्रः) १ शरीरके ऊपरी गोल अंगका अगला भाग जिसमें मुँह, आँख, आदि रहते हैं। मुखड़ा। वदन। मुहा०–**चेहरा उतरना**=लज्जा, शोक, चिन्ता या रोग आदिके कारण चेहरेका तेज जाता रहना। **चेहरा होना**=फौजमें नाम लिखाना। २ किसी चीजका अलग भाग। आगा। ३ देवता, दानव या पशु आदिकी आकृतिका वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदिमें चेहरेके ऊपर पहना या बाँधा जाता है।

चेहल–वि० (फा०) चालीस।

चेहल-क़दमी–संज्ञा स्त्री० दे० "चहल-क़दमी।"

चेहलुम–संज्ञा पुं० (फा०) किसीके मरनेके दिनसे चालीसवाँ दिन। चालीसवाँ। वि० चालीसवाँ।

चेह=संज्ञा पुं० (फा०) "चेहरा" का संक्षिप्त रूप।

चोग़ा–संज्ञा पु० (तु० चूग़ा) पैरोंतक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा। लबादा।

चोब–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शामियाना खड़ा करनेका बड़ा खंभा। २ नगाड़ा या ताशा बजानेकी लकड़ी। ३ सोने या चाँदीसे मढ़ा हुआ डंडा। ४ छड़ी।

चोब-चीनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक ओषधि जो एक लताकी जड़ है।

चोब-दस्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०) हाथमें रखनेकी छड़ी।

चोब-दार–संज्ञा पु० (फा०) १ वह नौकर जिसके पास चोब या आसा

रहता है। आसा-बरदार। २ प्रतिहार। द्वारपाल।

चोबा—संज्ञा पु० (फा० चोब) पका हुआ चावल। भात।

चोबी—वि० (फा०) लकड़ी या काठका।

चौगान—संज्ञा पु० (फा०) १ एक खेल जिसमें लकड़ीके बल्लेसे गेंद मारते हैं। २ चौगान खेलनेका मैदान। ३ नगाड़ा बजानेकी लकड़ी।

चौगान-बाज़ी=संज्ञा स्त्री० (फा०) चौगान खेलना।

चौबच्चा—संज्ञा पु० दे० 'चहबच्चा।'

चौ-गिर्द—क्रि० वि० (हिं० चौ+फा० गिर्द) चारों ओर।

चौ-गोशा—वि० (हि० चौ+फा० गोशः) जिसमें चार कोने हों। चौकोर।

चौ-गोशिया—संज्ञा स्त्री० (हि०-चौ०+फा० गोशा) एक प्रकारकी चौकोर टोपी।

(ज)

जंग—संज्ञा पु० (फा०) लड़ाई। युद्ध। समर।

ज़ंग—संज्ञा पु० (फा०) १ लोहेपर लगनेवाला मुरचा। २ पीतलका छोटा घंटा। ३ हब्शियोंके देशका नाम।

ज़ंग-आलूदा—वि० (फा० ज़ंग-आलूदः) जिसमें मुरचा लगा हो। मुरचा लगा हुआ।

ज़ंगार—संज्ञा पु० (फा०) १ ताँबेका कसाव। तूतिया। २ एक रंग जो ताँबेका कसाव है।

ज़ंगारी—वि० (फा०) नीले रंगका।

जंगी—वि० (अ०) १ जंग या युद्धसम्बन्धी। जैसे जंगी जहाज। २ बहुत बड़ा। विशाल काम।

ज़ंगी—संज्ञा पु० (फा०) हब्शी।

ज़ंजीर—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ साँकल। कड़ियोंकी लड़ी। २ बेड़ी। ३ किवाड़की कुंडी।

ज़ंजीरा—संज्ञा पु० (फा० ज़ंजीर) १ गलेमें पहननेकी सिकड़ी। २ एक प्रकारकी जंजीरदार सिलाई।

ज़ंजबील—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सुखाई हुई अदरक। सोंठ। स्वर्गकी एक नहरका नाम।

ज़ईफ़—वि० (अ०) १ दुर्बल। कमज़ोर। २ वृद्ध। बुड्ढा।

ज़ईफ़-उल-अक़्ल—वि० (अ०) दुर्बल बुद्धिवाला। कम-अक़्ल।

ज़ईफ़-उल-एतक़ाद—वि० (फा०) जो सहजमें एक बातको छोड़कर दूसरी बातपर विश्वास कर ले।

ज़ईफ़ी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दुर्बलता। कमज़ोरी। २ बुढ़ापा।

ज़क—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हार। पराजय। २ हानि। घाटा। ३ पराभव। लज्जा।

ज़क़न—संज्ञा पु० (अ०) ठुड्डी। ठोढ़ी। यौ०—**चाहे ज़क़न**=ठोढ़ीपरका गड्ढा।

ज़कर—संज्ञा पु० (अ०) पुरुषकी इंद्रिय। लिंग।

ज़का—संज्ञा स्त्री० दे० "जकावत।"

ज़कात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वार्षिक आयका चालीसवाँ अंश जो दान-पुण्यमें व्ययकरना प्रत्येक मुसलमानका परम कर्त्तव्य कहा गया है। २ दान। खैरात। ३ कर। महसूल।

ज़कावत–संज्ञा स्त्री० (अ०) बुद्धिकी प्रखरता। बुद्धिमत्ता। अक़्लमन्दी।

ज़की–वि० (अ०) बुद्धिमान्।

ज़क़ूम–संज्ञा पु० (अ०) थूहड़का पौधा।

ज़खामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ स्थूलता। मोटाई। २ पुस्तक आदिकी मोटाई (पृष्ठ संख्याके विचारसे) या आकार आदि।

ज़खायर–संज्ञा पु०(अ०) "ज़ख़ीरा" का बहु०।

ज़ख़ीम–वि० (अ०) १ मोटा। स्थूल। २ भारी। बड़ा।

ज़ख़ीरा–संज्ञा पु० (अ० ज़ख़ीरः) (बहु० ज़खायर) १ वह स्थान जहाँ एक ही प्रकारकी बहुत-सी चीजोंका संग्रह हो। कोष। खजाना। २ संग्रह। ढेर। समूह। ३ वह स्थान जहाँ तरह तरहके पौधे और बीज बिकते हैं।

ज़ख़्म–संज्ञा पु० (फा०) १ क्षत। घाव। २ मानसिक दुःखका आघात। मुहा०–**ज़ख़्म ताज़ा या हरा हो आना**=बीते हुए कष्टका फिर लौटकर याद आना।

ज़ख़्मी-वि०(फा०)आहत। घायल।

ज़गन–संज्ञा स्त्री० (फा० ज़ग़न्द) १ उछलकर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जाना। चौकड़ी। २ चील नामक पक्षी।

ज़ग़न्द–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक स्थानसे उछलकर दूसरे स्थानपर जाना। चौकड़ी। उछल-कूद। २ चील नामक पक्षी।

जगह–संज्ञा स्त्री० (फा० जायगाह) १ वह अवकाश जिसमें कोई चीज रह सके। स्थान। स्थल। २ मौक़ा। स्थल। अवसर। ३ पद। ओहदा। नौकरी।

ज़च्चा–संज्ञा स्त्री० (फा० ज़चः) वह स्त्री जिसे हालमें बच्चा हुआ हो। प्रसूता स्त्री।

ज़ज़ब–संज्ञा पुं० दे० "जज़्ब।"

जज़र–संज्ञा पु० (अ० जज्रः) वर्ग-मूल। यौ०-**जज़रे कुसूर**=भिन्न वर्गमूल।

जज़र व मद–संज्ञा (अ०) समुद्रका ज्वार-भाटा

जज़ा–संज्ञा स्त्री० (अ०)१ बदला। प्रतिकार। २ परिणाम।

जज़ाक अल्लाह–अव्य० (अ०) १ ईश्वर तुम्हें इसका शुभ फल दे। २ शाबाश। बहुत अच्छे।

जज़ायर–संज्ञा पु० (अ०) "जज़ीरा" का बहु०। द्वीप। समूह।

जज़िया–संज्ञा पु० (अ० जज़ियः) १ दण्ड। २ एक प्रकारका कर जो मुसलमानी राज्यमें अन्य धर्मवालोंपर लगता था।

जज़ीरा–संज्ञा पुं० (अ० जज़ीरः) (बहु० जज़ायर) द्वीप। टापू।

जज़ीरा-नुमा–संज्ञा पु० (अ०) वह

स्थल जो तीन ओर जलसे घिरा हो। प्रायद्वीप।

जज़्ब–संज्ञा पु० (अ०) १ आकर्षण। खींचना। २ शोषण। सोखना।

जज़्बा–संज्ञा पु० (अ० जज़्बः) १ आवेश। जोश। (प्रायः मनके सम्बन्धमें) २ प्रबल इच्छा।

जज़्म–संज्ञा पु० (अ०) अरबी लिपिमें वह चिह्न (॒) जो किसी अक्षरपर यह सूचित करनेको लगाया जाता है कि यह हलन्त या हल् (स्वर-रहित) है। यौ०-**बिल-जज़्म** = दृढ़निश्चय-पूर्वक। जैसे-अज़्म-बिल-जज़्म।

जज़–संज्ञा पु० (अ०) १ काटना। नदी या समुद्रके पानीका घटना। भाटा। यौ० **जज़्र व मद**=समुद्र-का भाटा और ज्वार। ३ गणित-में घनमूल।

जद–संज्ञा पु० (अ०) पिताका पिता। दादा। २ माताका पिता। नाना। ३ सौभाग्य। ४ सम्पन्नता।

ज़द–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मार। चोट। २ वह वस्तु जिसपर निशाना लगाया जाय। लक्ष्य। ३ हानि। नुकसान।

ज़दगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) मारने या लगानेकी क्रिया। जैसे-आतिश-ज़दगी।

ज़दन–संज्ञा पु० (फा०) १ मारना। आघात करना। २ खाना-पीना। ३ खोलना। ४ फेंकना। ५ रखना। ६ करना। (प्रायः यौगिक शब्दों-के अन्तमें आकर उनकी क्रियाका अर्थ देता है। जैसे–चश्म-ज़दन, क़लम-ज़दन, नमक-ज़दन।)

जदल–संज्ञा पु० (अ०) लड़ाई। युद्ध। यौ० **जंग-व-जदल**=युद्ध।

जदवार–संज्ञा स्त्री० (अ०) निर्विषी नामक ओषधि।

ज़दा–वि० (फा० ज़दः) १ जिसपर ज़द या आघात लगा हो। २ जिसपर किसी वस्तु या मनोभाव-का प्रभाव पड़ा हो। जैसे–ग़म-ज़दा। (प्रायः प्रत्ययके रूपमें शब्दोंके अंतमें लगता है।)

जदाल–संज्ञा पु० दे० "जिदाल।"

जदी–संज्ञा पु० (अ०) लघु सप्तर्षि। यौ०-**ख़त्ते जदी**=मकर रेखा।

जदीद–वि० (अ०) नया। नवीन।

ज़दो कोब–संज्ञा स्त्री० (फा० ज़द व कोब) मार-पीट।

ज़ह्द–संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रयत्न। कोशिश। यौ०-**जद्द-व-जहद**= प्रयत्न और दौड़-धूप।

जद्दा–संज्ञा स्त्री० (अ० जद्दः) १ दादी। २ नानी। संज्ञा पु० अरबका एक प्रसिद्ध नगर।

जद्दी–वि० (अ०) बाप-दादाका। पैतृक।

ज़न–संज्ञा स्त्री० (फा०) (बहु० ज़नान) १ स्त्री। औरत। २ जोरू। पत्नी।

ज़नख़–संज्ञा पु० (फा०) ठोढ़ी। चिबुक।

ज़नख़दाँ–संज्ञा पु० (फा०) ठोढ़ी-परका गड्ढा।

ज़नख़ा–संज्ञा पु० (फा० ज़नख़:) १ वह जिसके हाव-भाव आदि औरतोंके-से हों। हिजड़ा।

ज़न-मुरीद–वि (फा०) (संज्ञा ज़न-मुरीदी) अपनी पत्नीका भक्त।

ज़नाख़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ परम प्रिय सखी। सहेली। २ वह स्त्री जिसके साथ कोई स्त्री अस्वाभाविक रूपसे अपनी कामेच्छा पूरी करती हो। दुगाना।

जनाज़ा–संज्ञा पु० (अ० जनाज़:) १ शव। लाश। २ अरथी या वह संदूक जिसमें लाशको रखकर गाड़ने या जलाने ले जाते हैं।

ज़नान-ख़ाना–संज्ञा पु० (फा०) स्त्रियोंके रहनेका स्थान। अंतःपुर।

ज़नाना–संज्ञा पु० (फा०ज़नानः) १ स्त्रियोंका। स्त्रीसंबंधी। २ हिजड़ा। ३ निर्बल। डरपोक।

ज़नानी–वि० स्त्री० (फा० ज़नानः) स्त्रियोंसे सम्बन्ध रखनेवाली। स्त्रियोंकी।

जनाब–संज्ञा पु० (अ) १ किसी बड़े या पूज्य व्यक्तिका द्वार। २ बड़ोंके लिये आदरसूचक शब्द। महाशय। यौ०–**जनाबे मन**=मेरे मान्य और महोदय। **जनाबे आली**=श्रीमान्। महोदय। (संबोधन)

जनीन–संज्ञा पु० (अ०) वह बच्चा जो गर्भमें ही हो (गर्भस्थ)

जनून–संज्ञा पु० (अ०) पागलपन। उन्माद।

जनूनी–संज्ञा पु० (अ०) पागल।

जनूब–संज्ञा पु० (अ०) दक्षिण दिशा।

जनूबी–वि० (अ०) दक्षिणका।

ज़न्द–संज्ञा पुं (फा०) ज़रदुश्तका बनाया हुआ पारसियोंका धर्मग्रन्थ।

ज़न्न–संज्ञा पु० (अ०) १ विचार। ख़याल। २ अनुभव। कल्पना। ३ भ्रम। गुमान। यौ०–**ज़न्ने ग़ालिब**=बहुत अधिक सम्भावना। **ज़न्ने फ़ासिद**=दुष्ट या बुरा विचार। २ शक। संदेह।

जन्नत–संज्ञा स्त्री० (अ०) स्वर्ग। बहिश्त।

जन्नती–वि० (अ०) १ जन्नत या स्वर्ग-सम्बन्धी। स्वर्गके। २ स्वर्गमें रहने या स्थान पानेवाला।

जफ़र–संज्ञा पु० (फा०) यंत्र और तावीजें आदि बनानेकी कला।

ज़फ़र–संज्ञा पुं० (अ०) १ विजय। जीत। २ प्राप्ति। लाभ।

जफ़ा–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सख्ती। कड़ाई। २ जुल्म। अत्याचार। ३ आपत्ति। संकट। यौ०–**जफ़ा-कफ़ा**=आपत्ति।

जफ़ा-कश–वि० (फ़ा०) (संज्ञा जफ़ा-कशी) विपत्तियाँ और कष्ट सहनेवाला। सहिष्णु।

ज़फ़ाफ़–संज्ञा पु० दे० "ज़ुफ़ाफ़।"

जफ़ा-शुआर–वि० (फा०) (संज्ञा जफ़ा-शुआरी) अत्याचार या उत्पीड़न करनेवाला। (प्रायः प्रेमिकाओंके लिये प्रयुक्त।)

ज़फीरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सीटी-

का शब्द। २ वह चीज़ जिससे सीटी बजाई जाय। सीटी।

ज़फ़ील=ज्ञा स्त्री० दे० "ज़फ़ीरी।"

ज़बर=वि० (अ०) १ **बलवान्**। बली। ताकतवर। २ **दृढ़**। **मज़बूत**। यौ०-**ज़बर जंग**—=बहुत बड़ा बलवान्। ३ श्रेष्ठ। उच्च। संज्ञा पुं० फारसी लिपिमें एक चिह्न जो अक्षरोंके ऊपर 'अ' स्वर सूचित करनेके लिये लगाया जाता है। अकारकी मात्रा।

ज़बरजद—संज्ञा पु० (अ०) पुखराज नामक रत्न।

जबरन—क्रि० वि० दे० "जब्रन्।"

ज़बरदस्त—वि० (अ०+फा०) १ बलवान्। बली। शक्तिवाला। २ दृढ़। मजबूत।

ज़बरदस्ती—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) अत्याचार। सीनाज़ोरी। ज़ियादती। अन्याय।

जबल—संज्ञा पु० (अ०) बहु० जिबाल। पर्वत। पहाड़।

ज़बह—संज्ञा पुं० (अ० ज़िबह) गला काटकर प्राण लेनेकी क्रिया।

ज़बाँ—संज्ञा स्त्री० दे० "ज़बान।" ("ज़बाँ" के यौ० के लिये देखो "ज़बान" के यौ०)

ज़बान—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ जीभ। जिह्वा। मुहा०—**ज़बान खींचना**=धृष्टतापूर्ण बातें करनेके लिये कठोर दंड देना। **ज़बान पकड़ना**=बोलने न देना। कहनेसे रोकना। **ज़बानपर आना**=मुँहसे निकलना। **ज़बानमें लगाम न होना**=सोच-समझकर बोलनेमें अयोग्य होना। **ज़बान हिलाना**=मुँहसे शब्द निकालना। **ज़बानसे बोलना या कहना**=अस्पष्ट रूपसे बोलना। साफ़ साफ़ न कहना। **बे-ज़बान**—बहुत सीधा। **बर-ज़बान**=कंठस्थ। उपस्थित। २ बात। बोल। ३ प्रतिज्ञा। वादा। कौल। ४ भाषा। बोल-चाल।

ज़बान-ज़द—वि० (फा०) (बात) जो सब लोगोंकी ज़बानपर हो। प्रचलित। प्रसिद्ध।

ज़बान-दराज़—वि० (फा०) (संज्ञा ज़बान-दराज़ी) १ बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला। २ जो मुँहमें आवे, वही बकनेवाला। अनुचित बातें करनेवाला।

ज़बान-बन्दी—संज्ञा स्त्री० (फा०) लिखा हुआ वक्तव्य आदि।

ज़बानी—वि० (फा०) १ जो केवल ज़बानसे कहा जाय, किया न जाय। मौखिक। २ जो लिखित न हो। मौखिक। मुँहसे कहा हुआ।

जबीं—संज्ञा स्त्री० (अ०) माथा। मस्तक। यौ०**चीं-ब-जबीं**=माथेपर पड़ा हुआ शिकन या बल। (क्रुद्ध होनेका चिह्न।)

जबीन—संज्ञा स्त्री० दे० "जबीं।"

जबीहा—संज्ञा पुं० (अ० ज़बीहः) वह पशु जो नियमानुसार ज़बह किया गया हो और जिसका मांस खाने योग्य हो।

ज़बून–वि० (फा०) (संज्ञा ज़बूनी) बुरा। खराब।

ज़बूर–संज्ञा स्त्री० (अ०) हज़रत दाऊदका लिखा हुआ धर्म-ग्रन्थ।

ज़ब्त–संज्ञा पु० (अ०) १ वह जिसे सरकारने छीन लिया हो। २ अपनाया हुआ।

ज़ब्ती–संज्ञा स्त्री० (अ०) ज़ब्त होनेकी क्रिया या भाव।

जब्बार–वि० (फा०) जब्र या जबरदस्ती करनेवाला। संज्ञा पु० ईश्वरका एक नाम।

जब्र–संज्ञा पु० (अ०) १ जबरदस्ती। बल-प्रयोग। २ अत्याचार। जुल्म। यौ०-**जब्र-व-तअद्दी**=बलप्रयोग और उत्पीड़न।

जब्रन्–क्रि० वि० (अ०) बलपूर्वक। जबरदस्ती।

जब्र व मुक़ाबला–संज्ञा पु० (अ०) बीजगणित।

ज़मज़म–संज्ञा पु० (अ०) काबेके पासका एक कूआँ जिसे मुसलमान बहुत पवित्र मानते हैं।

ज़मज़मा–संज्ञा पु० (अ० ज़मज़म:) संगीत। गाना-बजाना।

ज़मज़मी–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह पात्र जिसमें मुसलमान ज़मज़म नामक कूएँका पवित्र जल भरकर लाते हैं।

जमहूर–संज्ञा पु० (अ०) १ जनसमूह। लोक-समूह। २ राष्ट्र।

जमहूरी–वि० (अ०) जिसका सम्बन्ध सारे राष्ट्र या सब लोगोंसे हो। २ प्रजातंत्रसंबंधी। जैसे-**जमहूरी सलतनत**=वह राज्य जहाँ प्रजातंत्र हो।

जमा–वि० (अ० जमऽ) १ संग्रह किया हुआ। एकत्र। इकट्ठा। २ सब मिलाकर। ३ जो अमानतके तौरपर या किसी खातेमें रखा गया हो। संज्ञा स्त्री० १ मूल-धन। पूँजी। २ धन। रुपया-पैसा। ३ भूमि-कर। माल-गुजारी। लगान। ४ जोड़ (गणित)।

जमाअ–संज्ञा पुं० दे० "जिमाअ।"

जमाअत–संज्ञा स्त्री० दे० "जमात।"

जमात–संज्ञा स्त्री० (अ० जमाअत) १ मनुष्योंका समूह। गरोह या जत्था। २ कक्षा। श्रेणी। दरजा।

जमाद–संज्ञा पुं० (अ० जिमाद) १ वह पदार्थ जो निर्जीव हो और बढ़ न सकता हो। जैसे-पत्थर और खनिज द्रव्य आदि। २ वह प्रदेश जहाँ वर्षा न हो। ३ कँजूस।

ज़माद–संज्ञा पुं० (अ०) शरीरपर लगाया जानेवाला लेप या मरहम।

जमादात–संज्ञा स्त्री० (अ० 'जिमाद'का बहु०) खनिज द्रव्य और पत्थर आदि।

जमादार–संज्ञा पु० (अ० जमअ+फा० दार) सिपाहियों या पहरेदारों आदिका प्रधान।

जमादारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) जमादारका काम या पद।

जमादी–वि० (अ० जिमाद) जिमाद या खनिज पदार्थोंसे सम्बन्ध रखनेवाला।

जमादी-उल्-अव्वल-संज्ञा पु० (अ०)

अरबवालोंका पाँचवाँ चान्द्रमास जो मुहर्रमसे पहले पड़ता है।

ज़ मान–संज्ञा पु० दे० "ज़माना।"

ज़मानत–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह जिम्मेदारी जो ज़बानी कोई काग़ज़ लिखाकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है। जामिनी।

ज़मानत-दार–संज्ञा पु०(अ०+फा०) वह जो किसीकी ज़मानत करे।

ज़मानतन्–क्रि० वि० (अ०) ज़मानतके तौरपर।

ज़मानत-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसपर किसीकी ज़मानतका उल्लेख हो।

ज़माना–संज्ञा पुं० (अ० ज़मानः) १ समय। काल। वक़्त। २ बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३ प्रताप या सौभाग्यका समय। ४ दुनिया। संसार। जगत्।

ज़माना-साज़–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा ज़माना-साज़ी) जो लोगोंका रंग-ढंग देखकर व्यवहार करता हो। दुनिया-साज़।

जमा-बन्दी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) पटवारीका एक काग़ज़ जिसमें असामियोंके लगानकी रक़में लिखी जाती हैं।

जमा-मुकस्सर–संज्ञा स्त्री० (अ०) बहुवचनका वह भेद जिसमें एकवचनका रूप बदल जाता है। जैसे–किताबसे कुतुब।

ज़माल–संज्ञा पु० (अ०)बहुत सुन्दर रूप। सौंदर्य। खूबसूरती।

जमाली–वि० (अ०) परम रूपवा[न] (ईश्वरका एक विशेषण)

जमा-सालिम–संज्ञा स्त्री० (अ[०]) बहुवचनका वह भेद जिस[में] एकवचनका रूप ज्योंका [त्यों] रखकर अन्तमें बहुवचनका सू[चक] प्रत्यय लगाते हैं। जैसे--नाज़िर नाज़रीन।

ज़मीं–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़मीन।

ज़मींदार–संज्ञा स्त्री० पु० (फा०) ज़मीनका मालिक। भूमिका स्वामी

ज़मीं-दारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) ज़मींदारकी वह ज़मीन जिस[का] वह मालिक हो। २ ज़मींदार[का] पद।

ज़मी-दोज़–वि० (फा०) १ जो गि[र] कर ज़मीनके बराबर हो गय[ा] हो। २ ज़मीनपर गिरा हुआ ३ जो ज़मीनके अन्दर हो ज़मीनके नीचेका। संज्ञा पु० ए[क] प्रकारका खेमा।

जमीअ–वि० (अ०) कुल। सब

ज़मीन–संज्ञा स्त्री०(फा०) १ पृथ्वी २ पृथ्वीका वह ऊपर ठोस भाग जिसपर लोग रहते हैं। भूमि धरती। मुहा०-**ज़मीन आसमान एक करना**=बहुत बड़े बड़े उपा[य] करना। **ज़मीन आसमानका फ़रक़**=बहुत अधिक अंतर। बहुत बड़ा फ़रक़। **ज़मीन देखना**= १ गिर पड़ना। पटका जाना। २ नीचा देखना। **ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाना**=१बहुत बड़ी

बड़ी बातें सोचना। २ बहुत बड़े बड़े प्रयत्न करना।

ज़मीनी–वि० (फा०) जमीन या भूमि-सम्बन्धी।

ज़मीमा–संज्ञा पुं० (अ० जमीमः) १ परिशिष्ट। २ अतिरिक्त पत्र। क्रोड़-पत्र।

ज़मीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० जमीरी) १ मन। २ विवेक। ३ व्याकरणमें सर्वनाम।

जमील– वि० (अ०) बहुत सुन्दर। रूप-सम्पन्न। खूबसूरत।

ज़मुर्रद– संज्ञा पुं० (फा०) पन्ना नामक रत्न।

जमैयत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दे० "जमात।" २ मनकी शान्ति या सन्तोष। ३ सेना। फौज।

ज़म्बील–संज्ञा स्त्री० (फा०) थैली, विशेषतः वह थैली जिसमें फ़कीर लोग भीखमें मिली हुई चीजें माँग कर रखते हैं।

ज़म्बूर–संज्ञा पु० (अ०) १ बर्रे या भिड़ नामक उड़नेवाला कीड़ा जो डंक मारता है। २ दाँत उखाड़ने-की चिमटी या सँडसी। ३ दे० "ज़म्बूरक।"

ज़म्बूरक–संज्ञा स्त्री० (तु०) १ एक प्रकारकी बड़ी बन्दूक। २ एक प्रकारकी तोप जो प्रायः ऊँटोंपर-से चलाई जाती है।

ज़म्बूरची–संज्ञा पुं० (फा०) वह जो ज़म्बूर (बन्दूक या तोप) चलाता हो।

ज़म्बूरा–संज्ञा पु० (फा० ज़ंबूरः) १ तीरका फल। २ एक प्रकारकी छोटी तोप। ३ एक प्रकारका बाजा।

ज़म्बूरी–संज्ञा पुं० (फा०) जाली-दार कपड़ा।

जम्म–वि० (अ०) १ बहुत अधिक बड़ा। जैसे–जम्मे ग़फीर= बहुत बड़ी भीड़। २ सब। समस्त।

ज़म्म–संज्ञा पुं० (अ०) लिपिमें वह चिह्न जो किसी शब्दके ऊपर लग कर उकारकी मात्राका काम देता है। पेश। (')

जर–संज्ञा पुं० (अ०) खींचना।

ज़र–संज्ञा पु० (फा०) १ सोना। स्वर्ण। २ धन। दौलत। रुपया। (ज़रके यौगिक शब्दोंके लिये दे० "ज़रे" के अन्तर्गत।)

ज़र-कोब–संज्ञा पुं० (फा० संज्ञा ज़र-कोबी) सोने या चाँदीके पत्तर बनानेवाला। वरक़-साज़।

ज़र-ख़रीद–वि० (फा०) धन दे-कर खरीदा हुआ। क्रीत।

ज़र-ख़ेज़- वि० (फा०) संज्ञा ज़र-ख़ेज़ी) उर्वरा। उपजाऊ। (भूमि)

ज़र-गर–संज्ञा पुं० (फा०) स्वर्ण-कार। सुनार।

ज़र-गरी=संज्ञा स्त्री० (फा०)स्वर्ण-कारका काम। सुनारी।

जरगा-संज्ञा पु० (तु०जर्गः) १ जन-समूह। भीड़। २ पठानोंका दल या वर्ग जो जातिके रूपमें होता है। इस प्रकारके दलोंकी सार्व-जनिक सभा।

ज़रतुश्त–संज्ञा पु० दे० "ज़रदुश्त।"

ज़रद–वि० (फा० ज़र्द) पीला।

ज़रदा–संज्ञा पुं० (फा०) १ चावलों-का बनाया हुआ एक प्रकारका व्यंजन। २ पानमें खानेकी एक प्रकारकी सुगंधित सुरती (तम्बाकू)। ३ पीले रंगका घोड़ा।

ज़र-दार–वि० (फा०) संज्ञा ज़र-दारी) धनवान्। संपन्न। अमीर।

ज़रदालू–संज्ञा पुं० (फा०) खूबानी।

ज़रदी–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़र्दी"।

ज़रदुश्त–संज्ञा पुं० (फा०) फारस देशके पारसी धर्मका प्रतिष्ठाता आचार्य।

ज़र-दोज़–संज्ञा पुं० (फा०) ज़रदो-ज़ीका काम करनेवाला।

ज़र-दोज़ी-संज्ञा स्त्री० (फा०) वह दस्तकारी जो कपड़ोंपर सलमे-सितारे आदिसे की जाती है।

ज़र-दोस्त–वि०(फा०)केवल धनको सबसे अधिक प्रिय समझनेवाला।

ज़र-निगार–वि० (फा०) (संज्ञा ज़र-निगारी) जिसपर सोनेका पानी चढ़ा हो या सोनेका काम किया हो।

ज़र परस्त–वि० (फा०) (संज्ञा ज़र-परस्ती) धनका उपासक। केवल धनको सब कुछ समझने-वाला। धनलोलुप।

ज़रब–संज्ञा स्त्री० (अ० ज़र्ब) १ आघात। चोट। मुहा०–**ज़रब देना**–चोट लगाना। पीटना। यौ०- **ज़रब ख़फ़ीफ़** = हलकी चोट। **ज़रब शदीद**=भारी या गहरी चोट।

ज़रबफ़्त–संज्ञा पुं० (फा०) वह रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तूके बेल बूटे हों।

ज़र-बाफ़–संज्ञा पुं० (फा०) ज़र-बफ़्त या ज़रदोज़ीका काम बना-नेवाला।

ज़र-बाफ़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) ज़र-दोज़ी। वि० जिसपर ज़रबफ्तका काम बना हो।

ज़रर–संज्ञा पुं० (अ०) १ चोट। आघात। यौ०-**ज़रर शदीद**= भारी चोट। **ज़रर ख़फ़ीफ़**= हलकी चोट। २ हानि। नुक-सान। क्षति।

ज़रर-रसाँ–वि० (अ०+फा०) १ चोट पहुँचानेवाला। २ हानि पहुँचानेवाला।

ज़रर-रसानी-संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) १ चोट पहुँचाना। २ क्षति पहुँचाना।

ज़रह–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़िरह।"

ज़रा–क्रि० वि० (अ०) थोड़ा। कम।

ज़राअत–संज्ञा स्त्री० (अ० ज़िराअत) खेती बारी। कृषि-कर्म। २ जोता बोया हुआ खेत। ३ फसल। पैदावार।

ज़राअत-पेशा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) खेती-बारीसे जीविका निर्वाह करनेवाला। खेतिहर।

ज़राफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ परि-हास। हँसोड़पन। मज़ाक। २ बुद्धिमत्ता। अक़्लमन्दी।

ज़राफ़तन-क्रि० वि० (अ०) मज़ाक-के तौर पर। हँसीमें।

ज़राब–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़ुर्राब।"

ज़राय–संज्ञा पुं० अ० "जरीया" का बहु०।

जरायम–संज्ञा पुं० (अ० "जुर्म" का बहु०) अनेक प्रकारके अपराध।

जरायम-पेशा–संज्ञा पुं० (अ०) वे लोग जो चोरी-डाके आदिसे ही अपनी जीविका चलाते हों।

ज़रिया–संज्ञा पुं० दे० "ज़रीया।"

जरी–वि० (अ०) बहादुर। वीर।

ज़री–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ताश नामक कपड़ा जो बादलेसे बुना जाता है। २ सोनेके तारों आदिसे बना हुआ काम।

जरीदा–वि० (फा०जरीदः) अकेला। एकाकी।

ज़रीफ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ परिहास या मज़ाक़ करनेवाला। हँसोड़। दिल्लगी-बाज़। ठठोल। २ बुद्धिमान्। अक़्लमन्द।

जरीब–संज्ञा स्त्री० (अ०) खेत या जमीन मापनेकी ज़ंजीर।

जरीब-कश–वि० (अ०+फा०) वह जो जमीनोंको नापता-जोखता हो।

जरीब-कशी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) जमीनको नापनेकी क्रिया। पैमाइश।

ज़री-बाफ़–संज्ञा पुं० (फा०) ज़रीके कपड़े आदि बुननेवाला।

ज़री-बाफ़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) ज़रीके कपड़े आदि बुननेका काम।

जरीबी–संज्ञा पुं० दे० "जरीब-कश।" संज्ञा स्त्री० जमीनको नापनेकी मजदूरी या पारिश्रमिक। वि० जरीब-सम्बन्धी।

ज़रीया–संज्ञा पुं० (अ० ज़रीयः) १ सम्बन्ध। लगाव। द्वार। २ हेतु। कारण। सबब।

ज़रूर–वि० (अ० ज़ुरूर) १ आवश्यक। दरकारी। २ अनिवार्य। क्रि० वि० अवश्य। निश्चयपूर्वक। यौ०–बिल-ज़रूर–अवश्य ही। निश्चयपूर्वक।

ज़रूरत–संज्ञा स्त्री० (अ० ज़ुरूरत) आवश्यकता। प्रयोजन।

ज़रूरियात–संज्ञा स्त्री० (अ० "ज़ुरूरी' का बहु०) १ आवश्यकताएँ। २ आवश्यक वस्तुएँ।

ज़रूरी–वि० (अ० ज़ुरूर) १ जिसके बिना काम न चले। प्रयोजनीय। २ जो अवश्य होना चाहिए।

ज़रे अमानत–संज्ञा पुं० (फा०) धरोहरमें रखा हुआ धन।

ज़रे-अस्ल–संज्ञा पुं० (फा०) मूलधन जिसपर ब्याज चलता हो।

ज़रे-जाफरी–संज्ञा पुं० (फा०) बिलकुल शुद्ध सोना।

ज़रे ज़ामिनी–संज्ञा पुं० (फा०) जमानतमें रखा हुआ धन।

ज़रे-तावान–संज्ञा पुं० (फा०) हानिके बदलेमें दिया जानेवाला धन।

ज़रे-नक़द–संज्ञा पुं (फा०) नक़द रुपया। सिक्का।

ज़रे-पेशगी–संज्ञा पुं० (फा०) पेशगी दिया जानेवाला धन। बयाना।

ज़रे-मुतालबा–संज्ञा पुं० (फा०) वह

धन जो किसीसे पावना हो। बाकी रुपया।

ज़रे-याफ़्तनी–संज्ञा पुं० दे० "ज़रे-मुतालबा।"

ज़रे-सफ़ेद–संज्ञा पुं० (फा०) चाँदी।

ज़रे-सुर्ख़–संज्ञा पुं० (फा०) सोना।

ज़र्क़-बर्क़– वि० (अ) तड़क-भड़क-वाला। भड़कीला। चमकीला।

ज़र्द– वि० (फा०) पीला। पीत।

ज़र्द-चोब–संज्ञा स्त्री० (फा०) हल्दी।

ज़र्द-रू–वि० (फा०) १ जिसका रंग पीला पड़ गया हो। २ लज्जित। शरमाया हुआ। ३ जिसका चेहरा पीला पड़ गया हो।

ज़र्दा–संज्ञा स्त्री० (फा० ज़र्दः) १ पीलापन। पिलाई। २ अंडेके अन्दरका पीला चेप। ३ कमल रोग: पीलिया। ४ स्वर्णमुद्रा। मोहर।

ज़र्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पीला-पन। २ अंडेके अंदरका पीला अंश।

ज़र्फ़–संज्ञा पुं० (अ) (बहु० ज़ुरूफ़) १ बरतन। भाँड़ा। पात्र। २ समाई। यौ०–**आली-ज़र्फ़**=उदार हृदय। **कम-ज़र्फ़**=तुच्छ हृदय। ओछा। ३ बुद्धिमत्ता। ४ व्याकरणमें काल और स्थान-वाचक क्रिया-विशेषण।

ज़र्फ़े ज़माँ–संज्ञा पुं० (अ०) व्याकर-णमें काल-वाचक क्रिया-विशेषण। जैसे--कब, जब।

ज़र्फ़े-मकान--संज्ञा पुं० (अ०) व्याक-रणमें स्थान-वाचक क्रिया-विशेषण जैसे--यहाँ, वहाँ।

ज़र्ब–संज्ञा स्त्री० दे० 'ज़रब।"

ज़र्ब-उल-मसल-संज्ञा स्त्री० (अ०) कहावत। लोकोक्ति। वि०–जो सब लोगोंकी जबानपर हो। प्रसिद्ध।

ज़र्ब-उल-मिसाल–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़र्ब-उल-मसल"

जर्र–संज्ञा पु० (अ०) १ खींचना। २ अपराधीको पकड़कर न्याया-लयमें ले जाना। यौ०–जर्र सक़ील= भारी बोझ खींचनेकी विद्या।

ज़र्र--संज्ञा पुं० (अ०) नुकसान। हानि। क्षति।

ज़र्रा–संज्ञा पु० (अ० ज़र्रः) १ बहुत छोटा टुकड़ा या खंड। अणु।

ज़र्राब–संज्ञा पु० (अ०) १ वह जो जरब लगाता हो। २ सिक्के ढालनेवाला अधिकारी।

ज़र्रार–वि० (अ०) १ वीर। बहादुर। २ बहुत अधिक। विशाल। (सेना आदि)

ज़र्राह– संज्ञा पु० (अ०) चीर-फाड़ करनेवाला हकीम। अस्त्र-चिकित्सक।

जर्राही–वि० (अ०) अस्त्र-चिकित्सा-सम्बन्धी। संज्ञा स्त्री० घावों आदिकी चीर-फाड़ करना। अस्त्र-चिकित्सा।

ज़र्रीं–वि० (फा०) सोनेका। सुनहला।

जलक–संज्ञा स्त्री० (अ० जल्क) हाथसे रगड़कर वीर्य-पात करना। हस्तक्रिया। हथरस।

ज़लज़ला–संज्ञा पु० (अ० ज़ल्ज़लः

(बहु० अलाजिल) भूकम्प । भूचाल ।

जलवा-संज्ञा पुं० दे० "जल्वा ।"

जलसा-संज्ञा पुं० दे० "जल्सा ।"

जलाल-संज्ञा पुं० (अ०) १ तेज । प्रकाश । २ प्रभाव । आतंक ।

जलालिया-संज्ञा पुं० (अ० जलालियः) १ वह जो ईश्वरके जलाली रूपका उपासक हो । २ एक प्रकारके फकीर ।

जलाली-वि० (अ०) १ जलालवाला । तेज-युक्त । २ भीषण । विकराल । (ईश्वरका एक विशेषण, यौ०-**इस्मे जलाली**= १ ईश्वरका एक नाम जो उसके क्रोधात्मक रूपका सूचक है । २ कुरानकी वे आयतें जो मंत्ररूपसे काममें लाई जाती हैं ।

जला-वतन-वि० (अ०) देशसे निकाला हुआ । निर्वासित ।

जला-वतनी-संज्ञा स्त्री०(अ०)देश-निकाला । निर्वासन ।

जली-वि० (अ०) प्रकट । स्पष्ट । संज्ञा स्त्री० वह लिपि जिसमें अक्षर मोटे सुन्दर और स्पष्ट हों ।

जलील-वि० (अ०) बड़ा । बुजुर्ग । यौ०-**जलील-उल-कद्र** =बहुत प्रतिष्ठित और मान्य ।

ज़लील-वि० (अ०) १ तुच्छ । बेक़दर । २ जिसने नीचा देखा हो । अपमानित ।

जलीस-वि० (अ०) पास बैठनेवाला । पार्श्ववर्ती ।

जलूस- संज्ञा पुं० दे० "जुलूस ।"

जलूसी-वि० दे० "जुलूसी ।"

जल्क़-संज्ञा पुं०(अ०) (कर्त्ता जल्क़ी) हाथसे इंद्रिय मलकर वीर्यपात करना । हस्त-क्रिया ।

जल्द-क्रि० वि० (अ०) १ शीघ्र । चटपट । २ तेजीसे ।

जल्द-बाज़-वि० (अ० + फा० (संज्ञा जल्दबाजी) जो किसी काममें बहुत जल्दी करता हो ।

जल्दी-संज्ञा स्त्री० (अ०) शीघ्रता । फुरती ।

जल्ल-वि० (अ०) १ श्रेष्ठ । २ महान् । यौ०-**जल्ले जलालहू**= ईश्वरीय वैभव या महत्तासे संपन्न ।

जल्लाद-संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो कोड़े मारता या खाल खींचता हो । २ प्राण-दंड पानेवालोंकी हत्या करनेवाला । वधक । घातक । ३ क्रूर व्यक्ति । (प्रायः निर्दय प्रेमिका या प्रियके लिए प्रयुक्त ।)

जल्वत-संज्ञा स्त्री० (अ०) अपने आपको सबके सामने प्रकट करना । "खिल्वत" का उलटा ।

जल्वा-संज्ञा पुं० (अ० जल्वः) १ तड़क-भड़क । शोभा । २ रूपकी शोभा । ३ वधूका पहले पहल अपने पतिके सामने मुँह खोलकर होना । (मुसल०)

जल्वा-गाह-संज्ञा स्त्री०(अ०+फा०) १ वह स्थान जहाँ बैठकर कोई अपना जलवा दिखलावे । २ संसार ।

जल्सा-संज्ञा पुं० (अ० जल्सः) १ आनंद या उत्साहका समारोह ।

जिसमें खाना-पीना, गाना-बजाना आदि हो। २ सभा। समिति। ३ अधिवेशन।

जवाँ–वि० (फा०) १ जवान। युवा। २ वीर। बहादुर।

जवाँ-बख़्त–वि० (फा०) (संज्ञा जवाँबख़्ती) भाग्यवान। किस्मत-वर।

जवाँ-मर्द–वि०(फा०) शूर-वीर।

जवाँ-मर्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) वीरता। बहादुरी।

जवाज़–संज्ञा पुं० (अ०) धार्मिक सिद्धान्तों या नियमों आदिके अनुकूल होनेका भाव। वैधानिकता।

जवान–वि० (फा०)१ युवा। तरुण। २ वीर। बहादुर।

जवानाँ-मर्ग–संज्ञा स्त्री० (फा०) जवानीमें ही आनेवाली मौत। जवानीमें मरना।

जवानिब–संज्ञा स्त्री० (अ०) "जानिब" का बहु०।

जवानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) यौवन। तरुणाई। मुहा०–**जवानी उतरना या ढलना**=यौवनका उतार होना।

जवाब–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसी प्रश्न या बातके समाधानके लिये कही हुई बात। उत्तर। २ वह बात जो किसी बातके बदलेमें की जाय। बदला। ३ मुक़ाबलेकी चीज। जोड़ा। ४ नौकरी छूटनेकी आज्ञा। मौकूफी।

जवाब-दावा–संज्ञा पुं० (अ०) वह उत्तर जो वादीके निवेदन-पत्रके उत्तरमें प्रतिवादी लिखकर अदालतमें देता है।

जवाब-देह–वि० (अ० + फा०) उत्तरदायी। जिम्मेवार।

जवाब-देही–संज्ञा स्त्री० (अ०+ फा०) उत्तरदायित्व। जिम्मेदारी।

ज़वाबित–संज्ञा पुं० (अ०) 'ज़ाब्ता" का बहुवचन।

जवाबी–वि० (अ०) जवाबका। जिसका जवाब देना हो।

जवायद–संज्ञा पुं० (अ० "ज़ायद" का बहु०) आवश्यकतासे अधिक वस्तुएँ। जरूरतसे ज्यादा चीजें।

जवार–संज्ञा पुं० (अ०) आसपासका स्थान। यौ०–**क़ुर्ब व जवार**= आस-पास और चारों ओरके स्थान।

जवारिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) पेटके रोगोंकी एक प्रकारकी स्वादिष्ट दवा।

ज़वाल–संज्ञा पुं० (अ०) १ अवनति। उतार। घटाव। २ जंजाल। आफ़त।

ज़वाहिर–संज्ञा पुं० (अ० "जौहर" का बहु०) रत्न। मणि।

ज़वाहिरात–संज्ञा पुं० (अ० जवाहिरका बहु०) रत्न-समूह।

जशन–संज्ञा पुं० दे० "जश्न।"

जश्न–संज्ञा पुं० (फा०) १ उत्सव। जलसा। २ आनन्द। हर्ष।

ज़सामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मोटा या स्थूल होना। २ शरीरका आकार प्रकार।

जसारत-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दृढ़ता। २ साहस। हिम्मत। ३ वीरता।

जसीम-वि० (अ०) भारी जिस्म-वाला। मोटा-ताजा। स्थूल-शरीर।

जस्त-संज्ञा स्त्री० (फा०) कूदनेकी क्रिया। छलाँग। क्रि० प्र० मरना।

ज़ह-संज्ञा पुं० (फा०) १ प्रसव। बच्चा जनना। यौ०-**दर्दे-ज़ह**=प्रसवकालकी पीड़ा। २ सन्तान। बच्चा। उल्ब-नाल। आँवल-नाल। नारा।

जहद-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रयत्न। उद्योग। २ परिश्रम। मेहनत। यौ०-**जद्द व ज़हद**=प्रयत्न और परिश्रम।

ज़हन-संज्ञा पुं० दे० "ज़िहन।"

जहन्नुम-संज्ञा पुं० (अ०) नरक। दोज़ख। मुहा०-**जहन्नुममेंजाय**। चूल्हेमें जाय। हमसे कोई सम्बन्ध नहीं।

जहन्नुमी-वि० (अ०) नारकी। दोजखी।

ज़हब-संज्ञा-पु० (अ०) सोना।

ज़हमत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आपत्ति। मुसीबत। आफ़त। २ झंझट। बखेड़ा।

ज़हर-संज्ञा पु० (फा० जह) १ विष। गरल। मुहा०-**ज़हर उगलना**=मर्मभेदी या कटु बात कहना। **ज़हरका घूँट पीना**=किसी अनुचित बातको देख कर क्रोधको मन ही मन दबा रखना। **ज़हरका बुझाया हुआ**=बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट। २ अप्रिय बात या काम।

ज़हर-आलूदा-वि० (फा० ज़ह्र=आलूदः) जिसमें जहर मिला हो। विषाक्त।

ज़हर-क़ातिल-संज्ञा पुं० (फा०) प्राणघातक विष।

ज़हर-दार-वि० (फा०) जिसमें जहर हो। विषाक्त।

ज़हरबाद-संज्ञा पुं० (फा० जह्र-बाद) एक प्रकारका बहुत भयंकर और ज़हरीला फोड़ा।

ज़हर-मार-वि० (फा०) विषका प्रभाव नष्ट करनेवाला। विषघ्न। विषनाशक। संज्ञा पुं० तिरयाक नामक औषधि जो विषघ्न होती है। जहर-मोहरा।

ज़हर-मोहरा-संज्ञा पुं० (फा० जह्र-मुहरः) १ एक काला पत्थर जिसमें साँपका विष दूर करनेका गुण माना जाता है। २ हरे रंग-का एक विषघ्न पत्थर।

ज़हरा-संज्ञा पुं० (फा० ज़हरः) १ जिगरकी वह थैली जिसमें पित्त रहता है। पित्ताशय। पित्ता। २ साहस। हिम्मत। गुरदा।

ज़हरीला-वि० (फा० जह्र) जिसमें जहर हो। विषाक्त।

जहल-संज्ञा पुं० (अ० जह्ल) अज्ञान। नादानी।

जहली-वि० (अ०) १ झगड़ालू। २ झक्की।

जह्ल-संज्ञा पुं० दे० "जहल।"

जहाँ–संज्ञा पुं० (फा०) जहान। संसार। दुनिया।

जहाँ-दीदा–संज्ञा पुं० (फा०) वह जो संसारके सब ऊँच-नीच देख चुका हो। बहुत बड़ा अनुभवी।

जहाँपनाह–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह जो सारे संसारको शरण दे। २ बादशाहों आदिके लिये सम्बोधन।

ज़हाक–संज्ञा पुं० (अ० जह्हाक) १ वह जो बहुत अधिक हँसे। २ एक बादशाहका नाम जो बहुत बड़ा दुष्ट, क्रोधी और अत्याचारी था।

जहाज़–संज्ञा पुं० (अ०) समुद्रमें चलनेवाली नाव। समुद्र-पोत।

जहाज़ी–वि० (अ०) जहाजसे सम्बन्ध रखनेवाला। संज्ञा पु० वह जो जहाज चलाता हो। नाविक।

जहाद–संज्ञा पुं० (अ० जिहाद) वह युद्ध जो मुसलमान लोग काफिरोंसे करते हैं।

जहादी-वि० (जिहादी) जहाद करने या काफिरोंसे लड़नेवाला।

जहान–संज्ञा पु० (फा०) संसार। दुनिया।

ज़हाब–संज्ञा पु० (अ०) प्रस्थान।

जहालत-संज्ञा स्त्री० (अ०) अज्ञान।

ज़हीन–वि० (अ०) जिसका ज़िह्न अच्छा हो। बुद्धिमान्। समझदार।

ज़हीर– संज्ञा पुं० (अ०) सहायक। मददगार।

जहूदी-संज्ञा पुं० दे० "यहूदी।"

ज़हूर-संज्ञा पुं० (अ० ज़हूर) १ ज़ाहिर या प्रकट होनेकी क्रिया। प्रकाशन। २ उत्पन्न या आरम्भ होना। मुहा०-**ज़हूरमें आना**= प्रकट होना। ज़ाहिर होना।

ज़हूरा–संज्ञा पुं० (अ० ज़हूर) १ प्रताप। इक़बाल। २ प्रकाश।

ज़हे–अव्य० (फा०) वाह। धन्य। जैसे–**ज़हे किस्मत**=धन्य भाग्य।

जहेज़–संज्ञा पुं० (अ०) वह धन-संपत्ति जो विवाहमें कन्या-पक्षकी ओरसे वरको दी जाती है। दहेज।

ज़ह्र–संज्ञा पुं० (अ०) १ पिछला भाग। पृष्ठ। पीठ। २ ऊपरी या बाहरी भाग। संज्ञा पुं० दे० "ज़हर।"

जाँ-कन–वि० (फा०) (संज्ञा जाँकनी) प्राणोंपर संकट लानेवाला। प्राण-घातक।

जाँ-काह–वि० (फा०) प्राणोंपर संकट लानेवाला। भीषण। विकट।

जाँ-निवाज़–वि० (फा०) (संज्ञा जाँ-निवाज़ी) प्राणोंपर दया करने-वाला। दयालु। कृपालु।

जाँ-फ़िज़ा–संज्ञा पुं० (फा०) अमृत।

जाँ-फ़िशानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) बहुत अधिक परिश्रम। किसी कामके लिये जान तक लड़ा देना।

जाँ-ब-लब–वि० (फा०) जिसके प्राण होंठोंतक आ गये हों। मरणा-सन्न। मरणोन्मुख।

जाँ-बाज़–(फा०) (संज्ञा जाँ-बाज़ी) १ बहुत अधिक परिश्रम करने-वाला। २ जानपर खेल जाने-

वाला। जान देने तकको तैयार रहनेवाला।

जा—संज्ञा स्त्री० (फा०) जगह। स्थान। यौ—**जा-ब-जा**=जगह जगह। वि० (फा०) उचित। मुनासिब। यौ०—**जा-बे-जा**=मौकेपर भी और बे मौके भी। बुरी भली बातें।

ज़ा—प्रत्य० दे० "ज़ाद"।

ज़ाईदा—वि० (फा० ज़ाईदः) जन्मा हुआ। उत्पन्न। जात।

ज़ाकिर—वि० (अ०) ज़िक्र या उल्लेख करनेवाला।

ज़ाग़—संज्ञा पुं० (फा०) कौवा। काक।

जागीर—संज्ञा स्त्री० (फा०) राज्य-की ओरसे मिली हुई भूमि या प्रदेश। सरकारसे मिला हुआ ताल्लुका।

जागीर-दार-संज्ञा पुं०(फा०) १ वह जिसे जागीर मिली हो। जागीरका मालिक। २ अमीर। रईस।

जाजम—संज्ञा स्त्री० (फा०) फर्श-पर बिछानेकी रंगीन और बूटे-दार चादर। जाजिम।

जा-ज़रूर—संज्ञा पुं० (फा०) मल त्याग करनेका स्थान। शौचागार। पाखाना।

जाज़िब—वि० (फा०) १ जज़्ब करने या सोखनेवाला। २ खींचनेवाला। आकर्षक। यौ०—**कूवते-जाज़िबा**=आकर्षण-शक्ति।

जाजिम - संज्ञा स्त्री० दे० "जाजम।"

ज़ात संज्ञा स्त्री० (अ० मि० सं० जाति) १ शरीर। देह। यौ०—**ज़ाते-शरीफ़**=दुष्ट। पाजी। (व्यंग्य) २ जाति।

ज़ाती—वि० (अ०) १ व्यक्तिगत। २ अपना। निजका।

ज़ाद—प्रत्य० (अ० सं० जात) उत्पन्न। जन्मा हुआ। जैसे—**आदम-ज़ाद**=आदमसे उत्पन्न। आदमी। संज्ञा पुं (अ०) भोजन।

ज़ाद-बूम—संज्ञा स्त्री० (अ० मि० सं० जात+भूमि) जन्म-भूमि।

ज़ाद-राह—संज्ञा पु० (अ०) मार्ग-व्यय। रास्तेका खर्च।

ज़ादा—वि० (फा० ज़ादः) (स्त्री० ज़ादी) उत्पन्न। जन्मा हुआ। (यौगिक शब्दोंके अंतमें। जैसे -शाह-ज़ादा, अमीर-ज़ादा, हराम-ज़ादा आदि।)

जादू—संज्ञा पु० (फा०) १ वह आश्चर्यजनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानवी समझते हों। इन्द्रजाल। तिलस्म। मुहा०—**जादू जमाना**=जादूका प्रयोग या प्रभाव दिखलाना। २ वह अद्भुत खेल या कृत्य जो दर्शकोंकी दृष्टि और बुद्धिको धोखा देकर किया जाय। ३ टोना। टोटका। ४ दूसरेको मोहित करनेकी शक्ति।

जादूगर—संज्ञा पु० (फा०) वह जो जादू करता हो।

जादूगरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) जादू दिखलानेका काम। इंद्रजाल।

जान संज्ञा स्त्री० (फा०) १ प्राण।

जीव। प्राणवायु। दम। मुहा०—**जानके लाले पड़ना**=प्राण बचना कठिन दिखाई देना। जीपर आ बनना। **जानको जान न समझना**=अत्यन्त अधिक कष्ट या परिश्रम करना। **जान छुड़ाना या बचाना**=१ प्राण बचाना। २ किसी झंझटसे छुटकारा पाना। **जानपर खेलना**=प्राणोंको भयमें डालना। **जान बहक तसलीम होना**=मरना। **जानसे जाना**=१ प्राण खोना। मरना। २ बल। शक्ति। बूता। सामर्थ्य। दम। ३ सार। तत्त्व। ४ अच्छा या सुंदर करनेवाली वस्तु। शोभा बढ़ानेवाली वस्तु। मुहा०—**जान आना**=शोभा बढ़ना। ५ प्रेमी या प्रेमिकाके लिये सम्बोधन।

जान-आफ़रीन-संज्ञा पु० (फा०) १ सृष्टि करनेवाला। २ जीवन देनेवाला।

जानदार—वि० (फा०) १ जिसमें जीवन हो। सजीव। २ जिसमें जीवनी शक्ति हो। सबल।

जान-बख़्शी—संज्ञा स्त्री०(फा०)पूर्ण रूपसे क्षमा कर देना। प्राण-दंड तकसे मुक्त कर देना।

जा-नमाज़—संज्ञा स्त्री० (फा०) वह छोटी दरी आदि जिसपर बैठकर नमाज पढ़ते हैं।

जानवर—संज्ञा पु०(फा०) १ प्राणी। जीव। २ पशु। जंतु। हैवान।

जा-नशीन- वि० (फा०) (संज्ञा जा-नशीनी) किसीके स्थानपर उत्तराधिकारी होकर बैठनेवाला। उत्तराधिकारी।

जानाँ—संज्ञा पु० स्त्री० (फा०) माशूक। प्रिय।

जानानाँ—संज्ञा पु० दे० "जानाँ।"

जानिब—संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० जानिबैन, जवानिब) १ ओर। तरफ़। दिशा। २ पक्ष। यौ०-**ईं जानिब**=हम। (बहुत बड़े लोग छोटोंसे बातें करते वक्त अपने सम्बन्धमें प्रायः "हम" के स्थान पर "ईं जानिब" कहते हैं।) क्रि० वि० तरफ़। ओर।

जानिब-दार—वि० (फा०) (संज्ञा जानिबदारी) पक्षपाती। तरफदार।

जानिबैन—संज्ञा पु० (फा० जानिब-का बहु०) १ दोनों ओर। २ दोनों पक्ष।

ज़ानिया—संज्ञा स्त्री०(अ० जानियः) ज़िना करनेवाली। व्यभिचारिणी।

जानी—वि० (फा०) जानसे संबंध रखनेवाला। जानका। जैसे—**जानी दुश्मन**=जान लेनेवाला दुश्मन। **जानी दोस्त**=परम मित्र। संज्ञा स्त्री० प्राण-प्यारी। संज्ञा पुं० प्राण-प्यारा।

ज़ानी—वि० (अ०) ज़िना करनेवाला। व्यभिचारी।

ज़ानू-संज्ञा पु० (फा०) घुटना। यौ०-**दो ज़ानू या दु-ज़ानू**= घुटनेके बल (बैठना)।

जाने-मन—संज्ञा पु० स्त्री० (फा०) मेरे प्राण। (सम्बोधन)

जाफ़र-संज्ञा पु० (अ०) बड़ी नदी। नद।

ज़ाफ़रान–संज्ञा पुं० (अ०) जअफ़रान) केसर।

ज़ाफ़रानी–वि० (अ०) १ ज़ाफ़रान या केसर-संबंधी। केसरका। २ ज़ाफ़रानके रंगका। केसरिया।

ज़ाफ़री–संज्ञा स्त्री० (अ० जअफ़री) १ चीरे हुए बाँसोंकी बनाई हुई टट्टी या परदा। २ एक प्रकारका गेंदा (फूल)।

ज़ाबित–वि० (अ०) १ जब्त करनेवाला। सहनशील। २ संयमी। ३ स्वामी। मालिक।

ज़ाबिता–संज्ञा पुं० दे० "ज़ाब्ता।"

जाबिर–वि० (फा०) जब्र या ज़्यादती करनेवाला। अत्याचारी।

ज़ाबिह–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो ज़बह करे। २ कसाई। बूचड़।

ज़ाब्तगी–संज्ञा स्त्री०(अ०) नियमानुकूल होनेका भाव। नियमानुकूलता।

ज़ाब्ता–संज्ञा पुं० (अ० ज़ाबितः) बहु० ज़वाबित) नियम। क़ायदा। व्यवस्था। कानून।

ज़ाब्ता-दीवानी–संज्ञा पुं० (फा०) सर्व साधारणके परस्पर आर्थिक व्यवहारसे सम्बन्ध रखनेवाला कानून।

ज़ाब्ता-फौजदारी–संज्ञा पुं०(अ०) दंडनीय अपराधोंसे सम्बन्ध रखनेवाला कानून।

जाम–संज्ञा पुं० (फा०) १ प्याला। कटोरा। २ मद्य पीनेका पात्र।

जामदानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा।

जामा–वि० (अ० जामऽ) १ जमा करनेवाला। २ कुल। सब। यौ० जामा मसजिद। संज्ञा पुं० (फा० जामः) १ पहनावा। कपड़ा। कुरता। २ चुननदार घेरेका एक प्रकारका पहनावा। मुहा०–**जामेसे बाहर होना**=आपेसे बाहर होना। अत्यन्त क्रोध करना।

जामा मसजिद–संज्ञा स्त्री (अ० जामऽमसजिद) किसी नगरकी वह बड़ी और प्रधान मसजिद जिसमें सब मुसलमान इकट्ठे होकर नमाज पढ़ते हैं।

जामिद–वि० (फा०) जमा हुआ। संज्ञा पुं० व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसकी कोई व्युत्पत्ति न हो। देशज।

ज़ामिन–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो किसीकी ज़मानत करे। यौ०–**फ़ेल ज़ामिन**=वह जो इस बातकी ज़मानत करे कि अमुक व्यक्ति कोई अपराध या अनुचित कार्य न करेगा। **माल ज़ामिन**=वह जो किसीके ऋण आदि चुकानेकी ज़मानत करे।

ज़ामिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़मानत।"

जामे-जम–संज्ञा पुं० दे० "जामे जमशेद।"

जामे-जमशेद–संज्ञा पुं० दे० (फा०) जामे जहाँनुमाँ।"

जामे-जहाँनुमा–संज्ञा पुं० (फा०) एक कल्पित प्याला। कहते हैं कि कैखुसरोने एक ऐसा बड़ा प्याला बनवाया था जिससे बैठे बैठे सारे संसारकी सब घटनाओंका तुरन्त पता चल जाता था।

जाय–संज्ञा स्त्री० (फा०) जगह। स्थान। जैसे–**जाये एतराज़**=एतराज या आपत्तिका स्थान।

ज़ायक़ा–संज्ञा पुं० (अ० जायकः) खाने-पीनेकी चीजोंका मजा। स्वाद।

ज़ायचा–संज्ञा पुं० (फा०जायचः) जन्म-पत्र।

जायज़–वि० (अ०) उचित। मुनासिब।

जायज़ा–संज्ञा पुं० (अ०जायजः) १ जाँचपड़ताल। विशेषतः हिसाब-किताब या कार्योंकी)। क्रि० प्र० देना-लेना। २ पुरस्कार। इनाम।

ज़ायद–वि० (अ०) १ जो ज़्यादा हो। २ बढ़ा हुआ। अतिरिक्त। अधिक। ३ निरर्थक। व्यर्थका।

जायदाद–संज्ञा स्त्री० (फा०) भूमि, धन या सामान आदि जिसपर किसीका अधिकार हो। संपत्ति। यौ०–**जायदाद मनकूला**=चर सम्पत्ति। **जायदाद ग़ैरमनकूला**=स्थावर संपत्ति।

ज़ायर–संज्ञा पुं० (अ०) यात्री।

ज़ायल–वि० (अ०) विराट्।

ज़ाया–वि० (अ० जायऽ) नष्ट। बरबाद।

जार–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो आकर्षण करता हो। २ व्याकरण-में विभक्ति।

ज़ार–संज्ञा पु० (फा०) १ स्थान। जैसे–सब्ज़: **ज़ार**=हरा भरा मैदान। २ वह स्थान जहाँ कोई चीज बहुत अधिकतासे हो। जैसे–**गुलज़ार**=गुलाबका बाग। क्रि० वि० बहुत अधिक। जैसे–जार जार रोना। यौ०–**ज़ार व क़तार**=निरन्तर। लगातार।

ज़ार व निज़ार–वि० (फा०) १ दुबला-पतला। दुर्बल। कमज़ोर।

जारी–वि० (अ०) १ बहता हुआ। प्रवाहित। २ चलता हुआ।

ज़ारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) रोना-धोना। रुदन। यौ०–**आह व ज़ारी**=रोना चिल्लाना। **गिरिया व ज़ारी**=रोना-कलपना।

जारूब–संज्ञा पु० (फा०) झाड़ू। बुहारी।

ज़ारूब-कश–संज्ञा पु०(फा०)१ वह जो झाड़ू देता हो। २ चमार।

जाल–संज्ञा पु० (अ० जअल मि० सं० जाल) फरेब। धोखा। झूठी कार्रवाई।

जाल-साज़–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा जालसाज़ी) वह जो दूसरोंको धोखा देनेके लिये किसी प्रकारकी झूठी कार्रवाई करे।

ज़ालिम–वि० (अ०) जुल्म करनेवाला।

जाली–वि० (अ० जअली) नकली।

जाविदाँ–क्रि० वि० (फा०) सदा। हमेशा। वि० सदा रहनेवाला।

जाविदानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) सदा बने रहनेकी अवस्था या भाव । स्थायित्व ।

ज़ाविया—संज्ञा पुं० (अ० ज़ाविय.) कोण । कोना ।

जावेद—वि० (फा०) सदा बना रहनेवाला । स्थायी ।

जावेदाँ—वि० दे० " जावेद ।"

जासूस—संज्ञा पु० (अ०) गुप्त रूपसे किसी बात, विशेषतः अपराध आदिका पता लगानेवाला । भेदिया । मुखबिर ।

जासूसी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गुप्त रूपसे किसी बातका पता लगाना । २ जासूसका काम या पद ।

जाह—संज्ञा पुं० (अ०) १ ऊँचा पद । मर्तबा । रुतबा । २ प्रतिष्ठा । उज्जत । यौ०—**जाह व जलाल या जाह व हश्म**=पद और वैभव ।

ज़ाहलीयत—संज्ञा स्त्री० दे० "जहालत ।"

ज़ाहिद—संज्ञा पु० (अ०) (भाव० ज़ाहिदी) सब दुष्कर्मोंसे बच कर ईश्वरकी उपासना करनेवाला ।

ज़ाहिदाना—वि० (फा० ज़ाहिदानः) ज़ाहिदों या ईश्वर-भक्तों-का-सा ।

ज़ाहिर—वि० (अ०) १ जो सबके सामने हो । प्रकट । प्रकाशित । खुला हुआ । २ जाना हुआ । ज्ञात ।

ज़ाहिरदार—वि० (अ०+फा०) १ दिखौआ । २ बनावटी ।

ज़ाहिरदारी—संज्ञा स्त्री० (अ०+ फा०) १ दिखावट । ऊपरी तड़क-भड़क । २ बनावटी या दिखौआ व्यवहार ।

ज़ाहिरन्—क्रि० वि० दे० "ज़ाहिरा ।"

ज़ाहिर-परस्त—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा ज़ाहिर-परस्ती) केवल ऊपरी तड़क भड़कपर भूलनेवाला ।

ज़ाहिरा—क्रि० वि० (अ०) ऊपरसे देखनेमें ।

ज़ाहिरी—वि० (अ०) ऊपरसे ज़ाहिर होनेवाला । देखनेमें जान पड़ने वाला ।

जाहिल—वि० (अ०) १ मूर्ख । अज्ञान । नासमझ । अनपढ़ ।

ज़िक्र—संज्ञा पु० (अ०) चर्चा । प्रसंग । यौ०—**ज़िक्र मज़कूर**= चर्चा । **ज़िक्रे ख़ैर**=१ शुभ चर्चा । जैसे—अभी तो यहाँ आपका ही ज़िक्रे ख़ैर हो रहा था । २ कुरानका पाठ और ईश्वरका गुणानुवाद ।

जिगर—संज्ञा पु० (फा०) १ कलेजा । २ चित्त । मन । ३ जीव । ४ साहस । हिम्मत । ५ गूदा । सार ।

जिगरबन्द—संज्ञा पु० (फा०) १ हृदय और फुप्फुस आदि । २ पुत्र ।

जिगरी—वि० (फा०) १ दिली । भीतरी । २ अत्यन्त घनिष्ठ । अभिन्न-हृदय ।

ज़िच्च—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बेबसी । तंगी । मजबूरी । २ शतरंजमें खेलकी वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्षको कोई मोहरा चलनेकी जगह न रह जाय ।

ज़िद—संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० ज़िद्दी) १ विरोध । २ हठ । ३ दुराग्रह ।

जिद्दत–संज्ञा स्त्री० (अ०) नयापन। ताजापन। ताजगी।

ज़िदा-बदी–संज्ञा० स्त्री० (अ० ज़िद+हिं० बदना) १ प्रतियोगिता। होड़। २ लड़ाई-झगड़ा।

जिदाल–संज्ञा पु० (अ०) युद्ध। समर। यौ०-**जंग व जिदाल**=युद्ध।

ज़िद्द–संज्ञा स्त्री० दे० "जिद।"

जिद्दत–संज्ञा स्त्री० (अ०) नवीनता। नयापन।

ज़िद्दी–वि० (अ०) जिद करनेवाला। हठी।

जिन–संज्ञा पु० (अ०)(बहु०जिन्नात) भूत-प्रेत।

ज़िनहार-क्रि०वि० (फा०) कदापि। हरगिज।

ज़िना–संज्ञा पु० (अ०) पर-स्त्री-गमन। व्यभिचार।

ज़िनाकार–वि० (अ०+फा०) ज़िना या पर-स्त्री-गमन करनेवाला। व्यभिचारी।

ज़िनाकारी-संज्ञा स्त्री०(अ०+फा०) ज़िना। व्यभिचार।

ज़िना-बिज्जब्र-संज्ञा पु०दे० "ज़िना-बिल-जब्र।

ज़िना-बिल-जब्र–संज्ञा पु० (अ०) किसी स्त्रीके साथ उसकी इच्छाके विरुद्ध और बलपूर्वक सम्भोग करना।

ज़िन्दगानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) जिन्दगी। जीवन।

ज़िन्दगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ जीवन। २ जीवन-काल। आयु।

जिन्दाँ–संज्ञा पु० (फा०) क़ैदखाना। बन्दी-गृह।

ज़िन्दा–वि० (फा० जि़न्दः) जीवित। जीता हुआ। यौ०-**ज़िन्दा दरगोर**=जीते-जी कब्रमें रहनेके समान। जीते-जी मृतकके तुल्य।

ज़िन्दा दिल–वि० (फा०) १ सदा प्रसन्न रहनेवाला। सहृदय। २ हँसमुख। ३ रसिक। शौक़ीन।

ज़िन्दा दिली–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सहृदयता। २ हँसोड़पन। ३ रसिकता।

जिन्नात–संज्ञा पु० (अ०) "जिन"का बहुवचन।

जिन्नी–संज्ञा पु० (अ०) वह जो जिनों या भूत-प्रेतोंको वशमें करता हो।

जिन्स–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रकार। क़िस्म। भाँति। २ चीज़। वस्तु। द्रव्य। ३ सामग्री। सामान। ४ अनाज। गल्ला। रसद।

जिन्स खाना–संज्ञा पु०(अ०+फा०) भंडार। भांडागार।

जिन्स-वार–वि० (अ०+फा०) हर-एक जिन्सके विचारसे अलग अलग। संज्ञा पु० पटवारियोंका वह काग़ज़ जिसमें वे खेतोंमें बोए हुए अनाजोंके नाम लिखते हैं।

जिफ़ाफ़–संज्ञा पु० दे० "जुफाफ़।"

ज़िबस–क्रि० वि० (फा०)पूर्ण रूपसे। यौ०-**ज़िबस कि**=इस लिये कि।

ज़िबह–संज्ञा पु० दे० "ज़बह।"

जिबाल–संज्ञा पु० बहु० (फा०) पर्वत। पहाड़।

जिब्राईल–संज्ञा पुं० (फा०) एक फरिश्ते या देवदूतका नाम ।

ज़िमन–संज्ञा पुं० (अ० ज़िम्न) १ भीतरी भाग या अंश । २ खण्ड । विभाग । ३ दफ़ा । धारा ।

जिमाअ–संज्ञा पुं० (अ०) स्त्री-प्रसंग । संभोग ।

जिमादात–संज्ञा स्त्री० दे० "जमादात ।"

ज़िम्मा–संज्ञा पुं० (अ० ज़िम्मः)१ इस बातका भार ग्रहण कि कोई बात या कोई काम अवश्य होगा, और यदि न होगा तो उसका दोष-भार ग्रहण करनेवालेपर होगा । दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा । जवाबदेही । २ सुपुर्दगी । देखरेख ।

ज़िम्मी–संज्ञा पुं० (अ०) वे काफिर और अन्य धर्मी जिन्हें मुसलमानी राज्यमें शरण दी गई हो और जो जज़िया देते हों ।

ज़िम्मेदार–वि० (अ० + फा०) (संज्ञा ज़िम्मेदारी) वह जो किसी बातके लिये ज़िम्मा ले । जवाबदेह । उत्तर-दाता ।

ज़िम्मेवार–वि० (अ०) (संज्ञा ज़िम्मेवारी, जिम्मेवरी) वह जो किसी बातके लिये ज़िम्मा ले । जवाबदेह । उत्तर-दाता ।

ज़ियाँ–संज्ञा पुं० (फा०) १ हानि । नुकसान । २ घाटा । टोटा ।

ज़िया–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सूर्यका प्रकाश । २ प्रकाश । रोशनी ।

ज़ियादा–वि० दे० "ज़्यादा ।"

ज़ियान–सं० पुं० दे० "

ज़ियाफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) बड़ी दावत जिसमें बहुतसे लोगोंको भोजन कराया जाता है ।

ज़ियारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दर्शन । २ तीर्थ-दर्शन ।

ज़ियारती–वि० (अ०) जियारतके लिये जानेवाला (यात्री) ।

जिरगा–संज्ञा पुं० दे० "जरगा ।"

जिरह–संज्ञा स्त्री० (अ० जरह या जुरह) १ हुज्जत । खुचुर । २ ऐसी पूछताछ जो किसीसे कही हुई बातोंकी सत्यताकी जाँचके लिये की जाय ।

ज़िरह–संज्ञा स्त्री० (फा०) लोहेकी कड़ियोंसे बना हुआ कवच । वर्म । बख्तर ।

ज़िरह-पोश–संज्ञा पुं० (फा०) वह जो ज़िरह पहने हो । कवच-धारी ।

ज़िरही–संज्ञा पुं० दे० "ज़िरहपोश ।"

ज़िराअत–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़राअत ।"

जिरियान–संज्ञा पुं० (अ०) १ जल आदिका बहना । २ सूजाक नामक रोग ।

जिर्म–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० अजराम) १ शरीर । बदन । २ निर्जीव पदार्थका पिंड ।

जिला–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ चमक-दमक । मुहा०–**जिला देना**=साफ करके चमकाना । २ साफ करके चमकानेकी क्रिया ।

जिलाकार–संज्ञा० पुं० (अ०+फा०) किसी चीजको चमकाकर साफ करनेवाला । सिकलीगर ।

ज़िलेदार—संज्ञा (अ० ज़िल + फा० दार) किसी ज़िलेका अफसर या प्रधान कर्मचारी।

ज़िलेदारी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) ज़िलेदारका काम या पद।

ज़िलक़अद—संज्ञा पुं० (अ०) अरबवालोंका ग्यारहवाँ चान्द्र मास।

जिल्द—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ खाल। चमड़ा। खलड़ी। २ ऊपरका चमड़ा। त्वचा। ३ वह पुट्ठा या दफ्ती जो किसी किताबके ऊपर उसकी रक्षाके लिये लगाई जाती है। ४ पुस्तककी एक प्रति। ५ पुस्तकका वह भाग जो पृथक् सिला हो। भाग। खण्ड।

जिल्द-बन्द-वि० दे० "जिल्द-साज़।"

जिल्द-साज़—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा जिल्द-साज़ी) वह जो किताबोंकी जिल्द बाँधता हो। जिल्द बाँधनेवाला।

जिल्दी—वि० (अ०) 'जिल्द'-सम्बन्धी।

ज़िल्ल—संज्ञा पु० (अ०) १ छाया। साया। जैसे-**ज़िल्ले इलाही**= ईश्वरकी छाया या कृपा। २ विचार। खयाल। ३ गरमीकी अधिकता। ४ रातका अन्धकार।

ज़िल्लत—संज्ञा स्त्री०(अ०)१ अनादर। अपमान। तिरस्कार। बेइज्जती। मुहा०-**ज़िल्लत उठाना या पाना**=१ अपमानित होना। २ तुच्छ ठहरना। ३ दुर्गति। दुर्दशा।

ज़िलहिज्ज—संज्ञा पु० (अ०) अरबवालोंका बारहवाँ चान्द्र मास।

जिस्म—संज्ञा पु० (अ०) शरीर

जिस्मानी—वि० (अ०) जिस्म संबंधी। शारीरिक।

जिस्मी—वि० (अ०) व्यक्तिगत।

ज़िह-संज्ञा स्त्री० दे० "ज़ेह" और "जह।"

जिहत—संज्ञा स्त्री० (अ०) कारण वजह।

ज़िहन—संज्ञा पु० (अ०) समझ बुद्धि। मुहा०-**ज़िहन खुलना**= बुद्धिका विकास होना। **ज़िहन लड़ाना**=खूब सोचना। **ज़िहन नशीन होना**=ध्यानमें बैठना समझमें आना।

जिहल—संज्ञा स्त्री० दे० "जहल।"

जिहाद—संज्ञा पु० दे० "जहाद।"

जिहालत—संज्ञा स्त्री० दे० "जहालत।

ज़ी-प्रत्य० (अ०) वाला। रखनेवाला। (यौगिक शब्दोंके आदिमें, जैसे-**ज़ी-इख़्तियार**, **ज़ी-हतबा**।)

ज़ीक़—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ संकीर्णता। तंगी। २ मानसिक कष्ट। ३ कठिनता। अड़चन।

ज़ीक़-उल्-नफ़्स—संज्ञा पु० (अ०) श्वास रोग। दमा।

ज़ीक़ाद—संज्ञा पु० (अ०) अरबवालोंका ग्यारहवाँ चान्द्रमास।

ज़ीन—संज्ञा पु० (फा०) १ घोड़ेकी पीठपर रखनेकी गद्दी। चारजामा। काठी। २ एक प्रकारका मोटा सूती कपड़ा।

ज़ीनत—संज्ञा स्त्री० (फा०) शोभा।

ज़ीन पोश-संज्ञा पु० (फा०) घोड़ेकी ज़ीनके नीचे बिछानेका कपड़ा।

ज़ीन-सवारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) घोड़ेकी पीठपर की जानेवाली सवारी ।

ज़ीन-साज़–वि०(फा०)(संज्ञा ज़ीन-साज़ी) घोड़ेकी ज़ीन आदि बनानेवाला ।

ज़ीनहार–क्रि०वि०(फा०) हरगिज़ । कदापि ।

ज़ीना–संज्ञा पु० (फा०) सीढ़ी ।

ज़ीर–संज्ञा स्त्री० (फा०) संगीत आदिमें बहुत मन्द या धीमा स्वर । यौ०–**ज़ीर-व-बम**= १ तबले आदिकी तरह एक प्रकारके दो बाजे जो एक साथ बजाये जाते हैं । २ बहुत धीमा और बहुत ऊँचा स्वर ।

ज़ीरक–वि० (फा०) बुद्धिमान् । समझदार ।

ज़ीस्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) ज़िन्दगी। जीवन ।

ज़ी-हयात–वि० (अ०) जीवित । ज़िन्दा । बड़ी उम्रवाला ।

जुआफ़–संज्ञा पु० (अ०) विषके कारण होनेवाली अचानक मृत्यु ।

जुकाम–संज्ञा पु० (अ०) सरदीसे होनेवाली एक बीमारी जिसमें नाक और मुँहसे कफ निकलता है। सरदी । मुहा०–**मेंढकीको जुकाम होना**=किसी छोटे मनुष्यका कोई बड़ा काम करना ।

जुग़रात–संज्ञा पु० (अ०) दही । दधि ।

जुग़राफ़िया–संज्ञा पु० (अ० जुगराफ़िय:) भूगोल ।

जुज़–संज्ञा पु०(अ०)(बहु० अजज़ा) १ टुकड़ा। खंड । २ किसी वस्तुके संयोजक अवयव । ३ काग़ज़के ताव जिसमें छपनेपर ८, १२ या १६ पृष्ठ होते हैं । फारम (छपाई) अव्य० सिवा । अतिरिक्त । अलावा ।

जुज़दान–संज्ञा पु० (अ०+फा०) पुस्तकें आदि बाँधनेका कपड़ा । बस्ता ।

जुज़बन्दी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) पुस्तकोंकी वह सिलाई जिसमें प्रत्येक जुज़ या फार्म अलग अलग सीया जाता है ।

जुज़वियात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ विवरणकी बातें । २ अंग । हिस्से । टुकड़े ।

जुज़वी–वि० (अ०) बहुत अल्प या सामान्य । तुच्छ ।

जुज़ाम–संज्ञा पु० (अ०) कोढ़ रोग।

जुज़ामी–संज्ञा पु० (अ०) कोढ़ी । कुष्ठ-रोगका रोगी । वि० कुष्ठ या कोढ़सम्बन्धी ।

जुज़ो–संज्ञा पु० दे० "जुज़ ।"

जुज़्व–संज्ञा पुं० दे० "जुज़ ।"

जुदा–वि० (फा०) १ पृथक् । अलग। २ भिन्न । निराला ।

जुदाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) जुदा होनेका भाव । बिछोह । वियोग ।

जुदागाना–क्रि० वि० (अ० जुदागान:) अलग अलग । स्वतंत्र रूपसे ।

जुदायगी–संज्ञा स्त्री०दे०"जुदाई ।"

जुनूँ, जुनून–संज्ञा पु० दे०"जनून।"

जुन्नार—संज्ञा पुं० (अ०) १ वह पवित्र डोरा जो पारसी कमरमें बाँधे रहते हैं। यज्ञोपवीत। जनेऊ।

ज़ुफ़ाफ़—संज्ञा पुं० (अ०) वर और वधूका प्रथम समागम। यौ०—शबे ज़ुफ़ाफ़=सुहाग-रात।

ज़ुफ़्त—संज्ञा पुं० (फा०) जोड़ा। युग्म।

ज़ुफ़्ता—संज्ञा पुं० (फा० ज़ुफ़्त) १ शिकन। बल। रेखा। २ कपड़ेके सूतोंका अपने स्थानसे हट बढ़ जाना। जिस्ता।

ज़ुफ़्ती—संज्ञा स्त्री० (अ०) पशु-पक्षियों आदिकी संभोग-क्रिया। क्रि० प्र० खाना।

जुब्बा—संज्ञा पुं० (अ० जुब्बः) फकीरोंका एक प्रकारका लंबा पहनावा।

ज़ुमरा—संज्ञा पुं० (अ० ज़ुमरः) १ जन-समूह। भीड़। २ सेना। फौज।

जुमलगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) कुल या सबका भाव।

जुमला—संज्ञा पुं० (अ० जुम्लः) १ पूरा वाक्य। २ कुल जोड़। सारी जमा। वि० कुल। सब। यौ०—फिल्-जुमला=सब कुछ होने पर भी। तात्पर्य यह कि। मिन्-जुमला=१ सब मिलाकर। २ सब या कुलमेंसे।

जुमा—संज्ञा पुं० (अ० जुमऽ) शुक्रवार।

जुमेरात—संज्ञा स्त्री० (अ० जुमऽ रात) बृहस्पतिवार।

जुंबिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ हिलना डुलना। गति। चाल। हरकत। २ काँपना। कम्प।

ज़ुरअत—संज्ञा स्त्री० (अ०) साहस। हिम्मत।

ज़ुरफ़ा—संज्ञा पुं० (अ०) "ज़रीफ़" का बहु०।

जुरमाना—संज्ञा पुं० दे० "जुर्माना।"

ज़ुरह—संज्ञा स्त्री० दे० "ज़िरह।"

ज़ुराफ़—संज्ञा पुं० दे० "ज़ुराफ़ा।"

ज़ुराफ़ा—संज्ञा पुं० (अ० ज़ुर्राफ़ः) अफरीकाका एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट जैसी लंबी होती है। (कुछ हिंदी कवियोंने इसे भूलसे पक्षी समझ लिया है।)

ज़ुरूफ़—संज्ञा पुं० (अ० ज़र्फ़" का बहु०) बरतन-भाँडे।

ज़ुरूर—वि० क्रि० वि० दे० "ज़रूर।"

ज़ुरूरी—वि० दे० "ज़रूरी।"

जुर्म—संज्ञा पुं० (अ०) बहु० जरायम) वह कार्य जिसके दंडका विधान राज-नियममें हो। अपराध।

जुर्माना—संज्ञा पुं० (फा० जुर्मानः) वह दंड जिसके अनुसार अपराधीको कुछ धन देना पड़े। अर्थ-दंड। धन दंड।

ज़ुर्रत—संज्ञा स्त्री० दे० "ज़ुरअत।"

ज़ुर्रा—संज्ञा पुं० (फा० ज़ुर्रः) नर। बाज पक्षी।

ज़ुर्राफ़ा—संज्ञा पुं० दे० "ज़ुराफ़ा।"

जुर्राब—संज्ञा स्त्री० (तु०) पायताबा। पैरोंमें पहननेका मोजा।

ज़ुलक़अदा—संज्ञा पुं० (अ०) अरबवालोंका ग्यारहवाँ चांद्र मास।

जुलाब–संज्ञा पुं० (अ० जुल्लाब) १ रेचन। दस्त। २ रेचक औषध। दस्त लानेवाली दवा।

ज़ुलाल–वि० (अ०) शुद्ध। स्वच्छ। निथरा हुआ। (जल)

जुलूस–संज्ञा पुं०(अ०) १ सिंहासनारोहण। २ किसी उत्सवका समारोह। ३ उत्सव या समारोहकी यात्रा। धूमधामकी सवारी।

जुलूसी–वि० (अ०) (सन् या संवत्) जिसका आरम्भ किसी राजा या बादशाहके राज्यारोहण-तिथिसे हो। जुलूस-सम्बन्धी।

ज़ुल्करनैन–संज्ञा पुं० (अ०) सिकन्दरकी एक उपाधि।

ज़ुल्फ़–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सिरके लम्बे बाल जो पीछेकी ओर लटकते हैं। पट्टा। कुल्ला। बालोंकी लट। यौ०–**हम-ज़ुल्फ़**=१ स्त्रीकी बहनका पति। साढ़ू। २ प्रेमिकाका दूसरा प्रेमी। रक़ीब।

ज़ुल्फ़िक़ार-संज्ञा स्त्री० (अ० हजरत अलीकी तलवारका नाम।

ज़ुल्म–संज्ञा पु० (अ०) अत्याचार। अन्याय। यौ०–**ज़ुल्म व सितम** या **ज़ुल्म व तअद्दी**=अत्याचार और अन्याय।

ज़ुल्म-केश–वि० दे० "ज़ालिम।"

ज़ुल्मत–संज्ञा स्त्री० (अ०) अन्धकार। अँधेरा।

ज़ुल्म-पेशा–वि दे० "ज़ालिम।"

ज़ुल्म-रसीदा-वि० (अ०+फा०) जिसपर ज़ुल्म हुआ हो। अत्याचार-पीड़ित।

ज़ुल्म-शआर–वि० दे० "ज़ालिम।"

ज़ुल्मात–संज्ञा स्त्री०(अ० "ज़ुल्मत" का बहु०) कुछ विशिष्ट अन्धकार-पूर्ण स्थान। यौ०–**बहर-ज़ुल्मात** =एटलान्टिक महासागर।

ज़ुल्मी–वि० (अ०ज़ुल्म) ज़ुल्म करनेवाला। ज़ालिम। अत्याचारी।

जुल्लाब–संज्ञा पु० दे० "जुलाब।"

जुलहिज्जा–संज्ञा पु० दे० "ज़िल-हिज्जा।"

जुस्तजू–संज्ञा स्त्री० (फा०) तलाश। अन्वेषण। ढूँढ़।

जुस्सा–संज्ञा पुं० (अ० जुस्सः) बदन। शरीर। तन।

जुहद–संज्ञा पुं० (अ०) संसारके सब सुखोंका परित्याग। परहेज़-गारी।

ज़ुहल–संज्ञा पु० (अ०) शनैश्चर। ग्रह।

ज़ुहा–संज्ञा पुं० (अ०) जलपानका समय। यौ०–**ईद-उज़-ज़ुहा**= बक़रीद नामका त्यौहार।

ज़ुहूर–संज्ञा पु० दे० "ज़हूर।"

ज़ुह्र–संज्ञा पुं० (अ०) दिन ढलनेका समय। तीसरा पहर। यौ०–**ज़ुह्र की नमाज़**=तीसरे पहरकी नमाज़।

जू–संज्ञा स्त्री० (फा०जूए) १ नदी। दरिया। २ नहर। ३ जलाशय।

जू–प्रत्य० (अ०) रखनेवाला (शब्दोंके अन्तमें) जैसे–जू-मानी, जू-उल-

कद्र । क्रि० वि० (फा०) जल्दी । शीघ्र ।

जूए–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नदी । दरिया । २ नहर । ३ जलाशय ।

जूक़–संज्ञा पु० दे० "ज़ौक़ ।"

ज़ूद–कि० वि०(फा)शीघ्र । जल्दी ।

ज़ूद-फ़हम–वि० (फा०) किसी बातको जल्दी समझनेवाला ।

ज़ूद-रंज–वि० (फा०) जल्दी रंज या दु:खी हो जानेवाला । तुनक-मिज़ाज ।

ज़ूफ़-अव्यय०–(फा०) लानत । थुड़ी । जैसे—ज़ूफ़ है तेरी सफेद दाढ़ीपर ।

ज़ू-फ़नून–वि० (अ०) बहुतसे फ़न या विद्याएँ जाननेवाला ।

ज़ू-मानी-वि० (अ० ज़ुलमानैन) १ दो मानी या अर्थ रखनेवाला । द्व्यर्थक । २ श्लिष्ट । श्लेषात्मक ।

ज़ूर–संज्ञा पुं० (अ०) १ झूठापन । मिथ्यात्व । २ अभिमान । दम्भ ।

जेब–संज्ञा स्त्री० (अ०) पहननेके कपड़ोंके बगलमें या सामनेकी ओर लगी हुई वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं । खीसा । खरीता । पाकेट ।

ज़ेब–वि० (फा०) १ उपयुक्त । २ शोभा बढ़ानेवाला । यौ० **ज़ेब व ज़ीनत**=शोभा और शृंगार । क्रि० प्र० देना । संज्ञा स्त्री० शोभा । रौनक़ ।

ज़ेबा–वि० (फा०) १ उपयुक्त । मुनासिब । २ शोभा देनेवाला ।

ज़ेबाइश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सजावट । शृंगार । २ शोभा ।

ज़ेबाइशी–वि० (फा०) शोभा और सौन्दर्य बढ़ानेवाला ।

ज़ेबी–वि० (अ० जेब) १ जो जेबमें रखा जा सके । २ बहुत छोटा ।

ज़ेर–क्रि०वि० (फा०) नीचे । वि० निम्न कोटिका । घटिया । संज्ञा पुं० फारसी लिपिमें एक चिह्न जो अक्षरोंके नीचे लगकर एका-रकी मात्राका काम देता है ।

ज़ेर-अन्दाज़–संज्ञा पुं०(फा०) कपड़े या दरी आदिका वह टुकड़ा जो हुक्केके नीचे बिछाया जाता है ।

ज़ेर-जामा–संज्ञा पुं० (फा०) पा-जामा । इजार ।

ज़ेर-तजवीज़–वि० (फा०) विचा-राधीन ।

ज़ेर-दस्त–वि० (फा०) १ मातहत । अधीन । २ परास्त । पराजित ।

ज़ेर-पाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका हलका जूता ।

ज़ेर-बन्द–संज्ञा पुं० (फा०) घोड़ेके पेटपर बाँधा जानेवाला तस्मा या बन्द ।

ज़ेर-बार–वि० (फा०) ऋण या व्यय आदिके भारसे दबा हुआ ।

ज़ेर-बारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ऋण या व्यय आदिके भारसे दबा होना । २ बहुत अधिक व्यय या आर्थिक हानि ।

ज़ेर-मश्क–संज्ञा पुं० (फा०) वह चमड़ा या काग़ज आदि जिसे कुछ लिखनेके समय काग़ज़के नीचे रख लेते हैं ।

ज़ेर-लब–क्रि० वि० (फ़ा०) बहुत धीरेसे (कुछ कहना)।

ज़ेर-व-ज़बर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) ज़मानेका उलट-फेर। संसारका ऊँच-नीच।

ज़ेर-साया–क्रि० वि० (फ़ा०) १ किसीकी छायाके नीचे। २ किसीके संरक्षणमें।

ज़ेवर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) (बहु० जेवरात) १ आभूषण। अलंकार। गहना। २ वह जो शोभा बढ़ावें।

ज़ेह–संज्ञा स्त्री० (फ़ा० ज़िह) १ धनुषकी डोरी। पतंचिका। २ किनारा। तट। ३ पार्श्व। ४ सिरा। संज्ञा स्त्री० दे० "ज़ह।"

ज़ेहन–संज्ञा पुं० दे० 'ज़िहन।"

ज़ैतून–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रसिद्ध वृक्ष जो पवित्र माना जाता था।

ज़ैयद–वि० (अ०) १ बलवान्। मज़बूत। २ बहुत बड़ा। विशाल। ३ उपजाऊ। ४ अच्छा। बढ़िया।

ज़ैल–संज्ञा पुं० (अ०) १ दामन। पल्ला। २ नीचेका भाग। ३ आगे आनेवाला अंश। मुहा०–**ज़ैलमें**=नीचे। आगे। जैसे–सब नाम ज़ैलमें दर्ज हैं।

जोई–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ ढूँढ़नेकी क्रिया। २ संगोपन। ३ तुष्टि या रक्षा। जैसे-दिल-जोई।

ज़ोफ़–संज्ञा पुं० (अ० ज़ुअफ़) १ दुर्बलता। कमज़ोरी। २ मूर्च्छा।

ज़ोफ़-उल-अक़्ल–संज्ञा पुं० (अ०) मानसिक दुर्बलता या अशक्तता।

ज़ोअफ़ा–संज्ञा पुं० (अ०) "ज़ईफ़" का बहु०।

ज़ोफ़े-दिमाग़–संज्ञा पुं० (अ०) मानसिक दुर्बलता।

ज़ोफ़-बसारत–संज्ञा पुं० (अ०) नेत्रोंकी दुर्बलता। आँखोंसे कम दिखाई पड़ना।

ज़ोफ़े-मेदा–संज्ञा पुं० (अ०) पाचन शक्तिकी दुर्बलता।

जोयाँ–वि० (फ़ा०) ढूँढ़नेवाला।

ज़ोर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ बल। शक्ति। मुहा०–(किसी बातपर) **ज़ोर देना**=किसी बातको बहुत ही आवश्यक या महत्त्वपूर्ण बतलाना। (किसी बातके लिये) **ज़ोर देना**=किसी बातके लिये आग्रह करना। **ज़ोर मारना** या **लगाना**=बलका प्रयोग करना। यौ०–**ज़ोर शोर**=१ प्रबलता। २ आतंक।

ज़ोर-आज़माई–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) ज़ोर या ताक़त आज़माना। बल-परीक्षा।

ज़ोरदार–वि० (फ़ा०) जिसमें बहुत जोर हो। ज़ोरवाला।

ज़ोरावर–वि० (फ़ा० ज़ोर+आवर, संज्ञा ज़ोरावरी) बलवान्।

जोश–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ आँच या गरमीके कारण उबलना। उफ़ान। उबाल। मुहा०–**जोश खाना**=उबलना। उफनना। **जोश देना**=पानीके साथ उबालना।

२ चित्तकी तीव्र वृत्ति। मनोवेग। मुहा०—ख़ूनका जोश=प्रेमका वह वेग जो अपने वंशके किसी मनुष्यके लिये हो। यौ०—जोश-व-ख़रोश=तपाक और आवेश।

जोशन—संज्ञा पुं० (फा० जौशन) १ भुजाओंपर पहननेका गहना। २ जिरह-बख़्तर। कवच।

जोशाँदा—संज्ञा पुं० (फा०) औषधोंको उबाल कर उनका तैयार किया हुआ रस। काढ़ा। क्वाथ।

ज़ोहरा—संज्ञा पुं० (अ० ज़ुहरः) वृहस्पति ग्रह।

जौ—संज्ञा पुं० (अ०) १ आकाश। २ आकाशकी वायु।

जौक़—संज्ञा पुं० (तु० "जूक़" का अरबी रूप) १ सेना। फौज। २ जनसमूह। भीड़।

ज़ौक़—संज्ञा पुं० (अ०) किसी वस्तुसे प्राप्त होनेवाला आनंद। मुहा०—ज़ौक़से=प्रसन्नतासे। सुखपूर्वक। यौ०—ज़ौक़-शौक़।

जौज़—संज्ञा पुं (अ०) १ अखरोट। २ जायफल। ३ नारियल।

ज़ौज—संज्ञा पुं० (अ० ज़ौजः) १ युग्म। जोड़ा। २ पति। खसम।

जौज़ा—संज्ञा पुं० (अ०) मिथुन राशि।

ज़ौजा—संज्ञा स्त्री० (अ० ज़ौजः) पत्नी। जोरू।

ज़ौजियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ विवाहित अवस्था। २ पत्नीत्व।

ज़ौदत—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बुद्धिकी कुशाग्रता। उत्तमता। भलाई।

जौफ़—संज्ञा पुं० (अ०) १ उदर। पेट। २ खाली जगह। अवकाश। ३ गड्ढा। विवर।

जौर—संज्ञा पुं० (अ०) अत्याचार। उत्पीड़न। जुल्म।

जौलाँ—संज्ञा पुं० (फा०) पाँवमें पहननेकी बेड़ियाँ। यौ०—पा-ब-जौलाँ-पैरोंमें बेड़ियाँ पहनाए हुए।

जौलान—संज्ञा पुं० (फा०) तेजीसे इधर उधर आना जाना।

जौलान गाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) सेना या फौजके खेलोंका मैदान।

जौलानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तेजी। फुरती। २ बुद्धिकी प्रखरता या तीव्रता।

जौशन—संज्ञा पुं० देखो "जोशन।"

जौहर—संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० जवाहिर) १ रत्न। बहुमूल्य पत्थर। २ सारवस्तु। सारांश। तत्त्व। हथियारकी ओप। ४ विशेषता। उत्तमता। खूबी।

जौहरी—संज्ञा पुं० (अ०) १ रत्न-परखने या बेचनेवाला। रत्न-विक्रेता। २ किसी वस्तुके गुण-दोषोंकी पहचान रखनेवाला।

ज़्यादती—संज्ञा स्त्री० (अ० ज़ियादती) १ अधिकता। बहुतायत। अत्याचार।

ज़्यादा—वि० (अ० ज़ियादः) अधिक। बहुत।

(त)

तंग—संज्ञा पुं० (फा०) घोड़ोंकी ज़ीन कसनेका तस्मा। कसन

वि० १ संकीर्ण। संकुचित। २ दुःखी। ३ निर्धन। ४ कम।

तंग-दस्त—वि० (फा०) (संज्ञा-तंग-दस्ती) जिसके पास धन न हो। ग़रीब।

तंग-दस्ती—संज्ञा स्त्री० (फा०) दरिद्रता। ग़रीबी।

तंग-दहन—वि० (फा०) छोटे मुँह-वाला।

तंग-दिल—(फा०) (संज्ञा तंगदिली) संकीर्ण हृदयवाला। २ कंजूस।

तंग-साल—संज्ञा पुं० (फा०) वह वर्ष जिसमें वर्षा न हो।

तंग-हाल—वि० (फा०) संज्ञा तंग-हाली) जिसकी अवस्था अच्छी न हो। दुर्दशा-ग्रस्त।

तंग-हौसला— वि० (फा०) (संज्ञा तंग-हौसलगी) संकीर्ण-हृदय।

तंगा—संज्ञा पुं० (फा० तंगः) वह सिक्का जो चलता हो। प्रचलित मुद्रा।

तंगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तंग या सँकरे होनेका भाव। संकीर्णता। संकोच। २ दुःख। तकलीफ़। ३ निर्धनता। ४ कमी।

तंज़—संज्ञा पुं० (अ० तन्ज़) बोली-ठोली। ताना। व्यंग।

तअक्कुब—संज्ञा पुं० (फा०) किसी-का पीछा करना।

तअज्जुब—संज्ञा पुं०(फा०) आश्चर्य। विस्मय। अचंभा।

तअद्दी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बल-प्रयोग। जबरदस्ती। २ अत्याचार। जुल्म।

तअन—संज्ञा पुं० (अ०) १ ताना। व्यंग।

तअफ़्फ़ुन—संज्ञा पुं० (अ०)दुर्गन्ध। बदबू।

तअब—संज्ञा पुं० (अ०) १ परिश्रम। २ कष्ट। ३ थकावट।

तअम्मुक़—संज्ञा पुं० (अ०) १ गम्भी-रता। २ गहरापन। गहराई।

तअय्युन—संज्ञा पुं० (अ०) तैनात या मुकर्रर होना। नियुक्ति।

तअय्युनात—संज्ञा पुं० (अ०तअ-य्युनका बहु०) १ नियुक्तियाँ। २ पहरा देनेवाली सेना।

तअर्रुज़—संज्ञा पुं०(अ०) १ आपत्ति। उज्र। २ विरोध। ३ रोकटोक।

तअल्लुक़—संज्ञा पुं०(अ०) संबंध। लगाव।

तअल्लुक़ा— संज्ञा पुं० (अ० तअ-ल्लुक़) बहुतसे मौज़ोंकी ज़मीं-दारी। बड़ा इलाक़ा।

तअल्लुक़ादार—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) इलाक़ेदार। तअल्लुक़ेका मालिक।

तअल्लुक़ादारी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) तअल्लुक़ादारका पद या भाव।

तअश्शुक़—संज्ञा पुं० (अ०) इश्क या प्रेम करना।

तअस्सुब—संज्ञा पुं० (अ०) पक्ष-पात, विशेषतः धार्मिक पक्षपात या कट्टरपन।

तआम—संज्ञा पुं० (अ०) भोजन। खाद्य पदार्थ।

तअारुफ़–संज्ञा पुं० (अ०) जान-पहिचान। परिचय।

तआला–वि० (अ०) सर्व-श्रेष्ठ। (ईश्वरके लिये प्रयुक्त) जैसे–अल्लाह-तआला, खुदा-तआला।

तआवुन–संज्ञा पुं० (अ०) एक दूसरेकी सहायता करना।

तऐयुन–संज्ञा पु० (अ०) तैनात या नियुक्त करनेकी क्रिया।

तक़तीअ–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अलग अलग टुकड़े करना। विश्लेषण। २ छन्दोंकी मात्राएँ गिनना। सजावट।

तक़द्‌मा–संज्ञा पुं० (तक़्दिमः) किसी चीज़की तैयारीका वह हिसाब जो पहलेसे तैयार किया जाय। तख़मीना। अन्दाज़।

तक़दीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० तक़ादीर) भाग्य। प्रारब्ध।

तक़द्दुम–संज्ञा पु० (अ०) किसीसे पहले या किसीसे बढ़ कर होना। प्रमुखता। प्रधानता।

तक़फ़ीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ किसीको काफिर कहना वा ठहराना। २ पापोंका प्रायश्चित्त।

तकबीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसीको बड़ा मानना या कहना। २ ईश्वरकी प्रशंसा। ३ "अल्लाह अकबर" या "ला-इल्ला इल्लिल-लाह" कहना।

तकब्बुर–संज्ञा पु० (अ० अभिमान। घमंड। गरूर।

तकमील–संज्ञा स्त्री० (अ०) पूरा होनेकी क्रिया या भाव। पूर्णता।

तकरार–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ किसी बातको बार-बार कहना। २ हुज्जत। विवाद। झगड़ा। टंटा।

तकरारी–वि० (अ० तकरार) तकरार या झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

तकरीज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आलोचना। २ जीवित व्यक्तिकी वह प्रशंसा जो किसी ग्रन्थके अन्तमें की जाती है।

तक़रीब–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ करीब या पास होना। सामीप्य। नजदीकी। २ कोई ऐसा शुभ अवसर जिसपर बहुतसे लोग एकत्र हों। जैसे–शादीकी तक़रीब। ३ साधना।

तक़रीबन्–क्रि० वि० (अ०) क़रीब-करीब। प्रायः। लगभग।

तकरीम–संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रतिष्ठा करना। सम्मान करना।

तक़रीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० तक़ारीर) १ बात-चीत। २ वक्तृता। भाषण।

तक़रीरन्–क्रि० वि० (अ०) मौखिक। जबानी। मुँहसे कहकर।

तक़रीरी–वि० (अ० तक़रीर) १ जिसमें कुछ कहने-सुननेकी जगह हो। विवाद-ग्रस्त। २ जबानी।

तकर्रुब–संज्ञा पुं० (अ०) निकटता। सामीप्य।

तक़र्रुर–संज्ञा पुं० दे० तक़र्रुरी।

तक़र्रुरी–संज्ञा स्त्री० (अ० तक़र्रुर) मुक़र्रर होना। नियुक्ति।

तक़लीद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ नक़ल

या अनुकरण करना। २ किसीके पीछे बिना समझे-बूझे चलना। अन्ध अनुकरण।

तक़लीदी–वि० (अ०) १ नक़ल किया हुआ। अनुकृत। २ जाली। बनावटी।

तकलीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० तकालीफ़) १ कष्ट। क्लेश। दुःख। २ विपत्ति। मुसीबत।

तक़लीब–संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० तक़लीबी) १ उलटना-पलटना। २ अक्षरोंमें परिवर्तन करना।

तकल्लुफ़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० तकल्लुफ़ात) केवल दिखानेके लिये कष्ट उठाकर कोई काम करना। शिष्टाचार।

तक़वा–संज्ञा पुं० (अ० तक़वः) दोषों और दुष्कर्मों आदिसे दूर रहना। परहेज़गारी। सदाचार।

तक़वियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ताकत देना। बलवान् करना। २ समर्थन। पुष्टि।

तक़वीम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सीधा करना। २ ज्योतिषियोंका पंचांग। जन्तरी।

तक़सीम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बाँटनेकी क्रिया या भाव। बँटाई। २ गणितमें वह क्रिया जिससे कोई संख्या कई भागोंमें बाँटी जाय। भाग।

तक़सीमनामा–संज्ञा पुं० (अ + फ़ा०) वह पत्र जिसपर बँटवारेका विवरण और शर्तें लिखी हों। विभाग-पत्र।

तक़सीमी–वि० (अ०) जिसकी तक़सीम या विभाग हो सके, अथवा होनेको हो।

तक़सीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कमी। त्रुटि। कोताही। २ काम करते समय कोई बात छोड़ देना। ३ भूल। गलती। ४ दोष। अपराध। गुनाह। खता।

तक़सीर-मन्द–वि० दे० "तक़सीर-वार।"

तक़सीर-वार–वि० (अ०+फ़ा०) १ जिससे कोई तक़सीर हो। २ अपराधी। दोषी।

तक़ाज़ा–संज्ञा पुं० (तक़ाजः) १ ऐसी चीज़ माँगना जिसके पानेका अधिकार हो। तगादा। २ ऐसा काम करनेके लिये कहना जिसके लिये वचन मिल चुका हो। ३ उत्तेजना। प्रेरणा।

तक़ाज़ाई–संज्ञा पुं० वि० (अ० तक़ाजः) तक़ाज़ा करनेवाला।

तक़ादीर–संज्ञा स्त्री० (अ० "तक़दीर" का बहु०) भाग्य।

तकान–संज्ञा पुं० (हिं० थकान) थकावट। थकान।

तकालीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ० 'तकलीफ़' का बहु०) १ कष्ट। क्लेश। दुःख। २ विपत्ति।

तक़ावी–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह धन जो खेतिहरोंको बीज खरीदने या कूआँ आदि बनानेके लिये क़र्ज़ दिया जाय।

तकिया–संज्ञा पुं० (फ़ा० तकियः) १ कपड़ेका वह थैला जिसमें रूई,

पर, आदि भरते हैं और जिसे लेटनेके समय सिरके नीचे रखते हैं। बालिश। २ पत्थरकी वह पटिया आदि जो रोक या सहारेके लिये लगाई जाती है। मुतक्का। ३ विश्राम करनेका स्थान। ४ आश्रय। सहारा। आसरा। ५ वह स्थान जहाँ कोई मुसलमान फ़कीर रहता हो।

तकिया-कलाम–संज्ञा पुं० (फा०) वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगोंके मुँहसे प्रायः निकला करता हो। सखुन-तकिया।

तकिया-दार–संज्ञा पुं०(फा०) तकियेपर रहनेवाला मुसलमान फ़कीर।

तक़ी–वि० (अ०) धर्मनिष्ठ। परहेज़गार।

तख़फ़ीफ़–संज्ञा स्त्री०(अ०तख़्फ़ीफ़) कमी। घटाव। न्यूनता।

तख़मीनन–क्रि० वि० (अ०) तख़मीने या अन्दाज़से। अनुमानतः। प्रायः। लगभग।

तख़मीना–संज्ञा पुं० (अ० तख़्मीनः) अंदाज़। अनुमान। अटकल।

तख़मीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) सड़ाने या खमीर उठानेकी क्रिया।

तख़रीज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) खरिज करना। अलग करना।

तख़लिया–संज्ञा पुं० (अ०तख़लियः) १ खाली करना। रिक्त करना। २ एकान्त स्थान। निर्जन स्थान।

तख़लीस–संज्ञा स्त्री० (अ०) छुटकारा। मुक्ति।

तख़ल्लुल–संज्ञा पुं० (अ०) १ खलल। २ विरोध। वैमनस्य।

तख़ल्लुस–संज्ञा पुं० (अ०) कवियोंका वह उपनाम जो वे अपनी कविताओंमें रखते हैं।

तख़सीस–संज्ञा स्त्री० (अ०तख़्सीस) ख़ास बात। खसूसियत। विशेषता।

तख़ारुज–संज्ञा पुं० (अ०) जायदादका वारिसोंमें बँटवारा।

तख़्त–संज्ञा पुं० (फा०) १ राजाके बैठनेका आसन। सिंहासन। २ तख़्तोंकी बनी हुई बड़ी चौकी।

तख़्त-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) राजधानी। राजनगर।

तख़्त-ताऊस–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) मोरके आकारका एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँने बनवाया था।

तख़्त-नशीन–वि० (अ०) (संज्ञा तख़्त-नशीनी) जो राजसिंहासनपर बैठा हो। सिंहासनारूढ़।

तख़्त-पोश–संज्ञा पुं०(फा०)१ तख़्त या चौकीपर बिछानेकी चादर। २ चौकी।

तख़्त-बन्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) तख़्तोंकी बनी हुई दीवार।

तख़्त-रवाँ–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह तख़्त या चौकी जिसपर बादशाह बैठकर मज़दूरोंके कन्धेपर चलते हैं। पालकी।

तख़्ता–संज्ञा पुं० (फा० तख़्तः) १ लकड़ीका लंबा चौड़ा और

चौकोर टुकड़ा । बड़ा पटरा । पल्ला ।

तख़्ती–संज्ञा स्त्री० (फा० तख़्तः) १ छोटा तख़्ता । २ काठकी पटरी जिसपर लड़के लिखनेका अभ्यास करते हैं । पटिया ।

तख़ैयुल–संज्ञा पुं० (अ०) विचार करना । ध्यानमें लाना । ख़याल करना ।

तग़मा–संज्ञा पुं० दे० "तमग़ा ।"

तग़य्युर–संज्ञा पु० (अ०) बहुत बड़ा परिवर्तन । यौ०–**तग़य्युर व तबद्दुल**=बहुत बड़ा परिवर्तन ।

तग-व-दौ–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दौड़-धूप । पैरवी । २ चिन्ता । उधेड़-बुन ।

तग़ाफ़ुल–संज्ञा पु० (अ०) ग़फ़लत । उपेक्षा । ध्यान न देना ।

तग़ार–संज्ञा पु० (अ०) वह स्थान जहाँ इमारतके कामके लिये चूने सुरखी आदिका गारा बनाया जाय ।

तज़किरा–संज्ञा पु० (अ० तज़किरः) चर्चा । ज़िक्र ।

तज़कीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) व्याकरणमें पुल्लिंग ।

तजदीद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ फिरसे नया करना । २ नवीनता ।

तजनीस–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ समानता । एक-सा होना । २ काव्य आदिमें ऐसे शब्दोंका प्रयोग जिनमें अक्षर तो समान हों और केवल मात्राओंका अंतर हो । जैसे- मौजे चश्मे आशिकाँ दे तोड़ पलमें पिलके पुल । यहाँ पल, पिल और पुलके प्रयोगमें तजनीस है । यह एक शब्दालंकार है ।

तज़बज़ुब–संज्ञा पु० (अ०) १ लटकती हुई चीजका हवामें हिलना । २ असमंजस । आगा पीछा । सोच विचार ।

तजम्मुल–संज्ञा पुं०(अ०) १ शृंगार । सजावट । २ शोभा । [illegible]

तजरबा–संज्ञा पु०(अ० तजर्बः) १ वह ज्ञान जो परीक्षाद्वारा प्राप्त किया जाय । अनुभव । २ वह परीक्षा जो ज्ञान प्राप्त करनेके लिये की जाय ।

तजरबा-कार–संज्ञा पु०(अ०+फा०) (संज्ञा तजरबाकारी) जिसने तजरबा किया हो । अनुभवी ।

तजरुबा–संज्ञा पु० दे० "तजरबा ।"

तजर्रुद–संज्ञा पु० (अ०) १ एकान्तवास । २ ब्रह्मचर्य ।

तजल्ला–संज्ञा पुं० दे० "तजल्ली ।"

तजल्ली–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रकाश । रोशनी । २ चमक-दमक । ३ वह ईश्वरीय प्रकाश जो तूर पर्वतपर हज़रत मूसाको दिखाई पड़ा था ।

तजवीज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सम्मति । राय । २ फैसला । निर्णय । ३ बन्दोबस्त ।

तजवीज़-सानी–संज्ञा स्त्री० (अ०) अभियोग या दावे आदिका पुनर्विचार ।

तजस्सुस–संज्ञा पु० (अ०) ढूँढ़नेकी क्रिया । तलाश ।

तज़हीज़-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ विवाहमें जहेज़ आदिकी व्यवस्था। २ लाशको कफ़न आदि पहनाना और उसे गाड़नेकी सामग्री एकत्र करना। यौ०-**तजहीज़-व-तकफ़ीन**=कफ़न और अन्त्येष्टि क्रियाकी व्यवस्था।

तजारत-संज्ञा स्त्री० दे० 'तिजारत।'

तजावुज़-संज्ञा पुं० (अ०) अपने अधिकार क्षेत्र या सीमासे आगे बढ़ जाना। सीमाका उल्लंघन।

तजाहुल-संज्ञा पुं० (अ०) जान-बूझकर अनजान बनना। यौ०-**तजाहुल आरिफ़ाना**=वह अज्ञानता जो जान बूझकर और बहुत सीधे-सादे बनकर प्रकट की जाय।

तज़ीअ-संज्ञा स्त्री० (अ०) जाया या नष्ट करना। जैसे-**तज़ीअ औकात**=समय नष्ट करना।

तज्जार-संज्ञा पुं० "ताजिर" का बहु०।

ततबीक़-संज्ञा स्त्री० (अ०) दो चीजोंको सामने रखकर उनकी तुलना करना।

तत्तिम्मा-संज्ञा पुं० (अ० तत्तिम्मः) १ परिशिष्ट। २ क्रोड़पत्र।

तद्बीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) [बहु० तदाबीर) अभीष्ट सिद्ध करनेका साधन। उपाय। युक्ति। तरकीब।

तद्रीज-संज्ञा स्त्री० (अ०) क्रम-क्रमसे घटने या बढ़नेका भाव। यौ०-**व-तद्रीज**=क्रमशः। धीरे धीरे।

तद्रीस-संज्ञा स्त्री० (अ०) शिक्षा देना। पढ़ाना।

तदाबीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) "तदबीर" का बहु०।

तदारुक-संज्ञा पुं० (अ०) १ भागे हुए अपराधी आदिकी खोज या किसी दुर्घटनाके संबंधमें जाँच। २ दुर्घटनाको रोकनेके लिये पहलेसे किया हुआ प्रबंध। पेशबंदी। ३ सजा। दंड।

तन-संज्ञा पुं० (फ़ा० मि० सं० तनु) शरीर। बदन। जिस्म।

तनक़ीह-संज्ञा स्त्री० (अ० तन्क़ीह) १ जाँच। तहक़ीकात। २ अदालतका किसी मुक़दमेकी उन बातोंका पता लगाना जिनका फ़ैसला होना जरूरी हो। विवादग्रस्त विषयोंका निश्चय।

तनख़ाह-संज्ञा स्त्री० दे० 'तनख्वाह।'

तनख़्वाह-संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) मासिक वेतन। तलब। मुशाहरा।

तनख़्वाह-दार-वि० (फ़ा०) तनख़्वाह या वेतनपर काम करनेवाला।

तनज़-संज्ञा पुं० (अ० तन्ज़) बोली-ठोली। ताना। व्यंग्य।

तनज़न्-क्रि० वि० (अ०) तानेके तौरपर। व्यंग्यपूर्वक।

तनज़ीम-संज्ञा स्त्री० (अ० तन्ज़ीम) बिखरी हुई शक्तियोंको एकत्र और व्यवस्थित करना। संघटन।

तनज्जुल-संज्ञा पुं० (अ०) १ ह्रास। कमी। २ अपने पद आदिसे नीचे गिरना। पदच्युति।

तनज्जुली–संज्ञा स्त्री० १ ह्रास । २ पदच्युति । पदसे गिरना ।

तन-तनहा–क्रि० वि० (फा०) अकेला । एकाकी । बिना । किसीके साथ ।

तन-तना–संज्ञा पु० (अ० तन्तनः) १ क्रोधपूर्वक अधिकारका प्रदर्शन । २ तेजी । प्रखरता (स्वभावकी)। ३ अभिमान । घमंड ।

तन-देह–वि० (फा०) खूब जी लगाकर काम करनेवाला ।

तन-देही–संज्ञा स्त्री० (फा० तनदिही) १ परिश्रम । मेहनत । २ प्रयत्न । कोशिश । चेतावनी ।

तन-परवर–वि० (फा०) (संज्ञा तनपरवरी) १ केवल अपने शरीरके पालन-पोषणका ध्यान रखनेवाला । २ स्वार्थी । मतलबी ।

तनफ़्फ़ुर–संज्ञा पु० (अ०) नफ़रत ।

तनवीन–संज्ञा स्त्री० (अ०) फारसी लिपिमें दो जबर, दो जेर या दो पेश लगाना जिसमें "नून" या "न" का उच्चारण होता है । जैसे–मसलन्, तख्मीनन् आदिके अन्तमें जो "न" है, वह तनवीन लगानेसे हुआ है ।

तनसीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ० तन्सीफ़) १ निस्फ़ या आधा आधा करना । दो समान भागोंमें विभक्त करना । २ विभाग करना ।

तनहा–वि० (फा०) जिसके संग कोई न हो । अकेला । एकाकी ।

तनहाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तनहा होनेकी दशा या भाव । अकेलापन । एकान्त ।

तना–संज्ञा पु० (फा० तनः) वृक्षका जमीनसे ऊपर निकला हुआ वह भाग जिसमें डालियाँ न निकली हों । पेड़का धड़ । मंडल ।

तनाज़ा–संज्ञा पु० (अ० तनाजअ) १ बखेड़ा । झगड़ा । २ शत्रुता ।

तनाब–संज्ञा स्त्री० (अ०) खेमा बाँधनेकी रस्सी ।

तनावर–वि० (फा०) १ मोटा-ताजा । हृष्ट-पुष्ट । २ बलवान् ।

तनावुल–संज्ञा पु० (अ०) १ लेना । ग्रहण करना । २ भोजन करना ।

तनासुख़–संज्ञा पु० (अ०) १ विनाश । २ एक रूपसे दूसरे रूपमें जाना । ३ एक शरीर छोड़ कर दूसरा शरीर धारण करना ।

तनासुब–संज्ञा पु० (अ०) सब अंगोंका अपने उचित और उपयुक्त रूपमें होना । मुनासिबत ।

तनासुल–संज्ञा पु० (अ०) सन्तान उत्पन्न करना । नसल बढ़ाना । यौ०-**आजाए-तनासुल**=पुरुषकी इन्द्रिय । लिंग ।

तनूमन्द–वि० (फा०) (संज्ञा तनूमन्दी) १ मोट-ताजा । हृष्ट-पुष्ट । २ बलवान् । ताक़तवर । ३ सम्पन्न । धनवान् ।

तनूर–संज्ञा पु० (अ०) भट्टीकी तरहका रोटी पकानेका मिट्टीका बहुत बड़ा, गोल पात्र । तन्दूर ।

तन्दुरुस्त–वि० (फा०) जिसे कोई रोग न हो । नीरोग । स्वस्थ ।

तन्दुरुस्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०)

आरोग्य । स्वस्थता । नीरोगता ।

तन्दूर- संज्ञा पु० दे० "तनूर।"

तन्दूरी-वि० (हिं०) तन्दूरमें पकी हुई (रोटी आदि)।

तन्देही-संज्ञा स्त्री० दे० "तनदेही।"

तन्नाज़-वि० (अ०) १ इशारेसे बातें करनेवाला । नाज़ नख़रा करनेवाला।

तप-संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० ताप) ज्वर। बुखार।

तपाक-संज्ञा पु० (फा०) १ आवेश। जोश। २ वेग। तेज़ी।

तपिश-संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० ताप) गरमी। तपन।

तपे-दिक़-संज्ञा पु०(फा०) क्षयरोग।

तफ़ज़ील-संज्ञा स्त्री० (अ०)१ श्रेष्ठ मानना या ठहराना। २ तुलना।

तफ़ज़्ज़ुल-संज्ञा पु० (अ०) श्रेष्ठता। बड़प्पन। बड़ाई। बुजुर्गी।

तफ़तर्गी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ गरमी। २ उत्साह।

तफ़ता-वि० (फा० तफ़्तः) बहुत गरम या जला हुआ।

तफ़तीश-संज्ञा स्त्री०(अ० तफ़्तीश) जाँच-पड़ताल। तहक़ीक़ात।

तफ़रक़ा-संज्ञा पु० (अ० तफ़रिक़ः) अंतर। फ़र्क़। २ फासला। दूरी। ३ वियोग। बिछोह।

तफ़रीक़-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बाँटनेकी क्रिया। विभाग। बँटवारा। २ अलग करना। वर्गीकरण। ३ अन्तर। फर्क। ४ गणितमें घटानेकी क्रिया। बाक़ी।

तफ़रीह-संज्ञा स्त्री०(अ०)१ खुशी। प्रसन्नता। २ दिल्लगी। हँसी। ठट्ठा। ३ हवा-खोरी। सैर।

तफ़वीज़-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सुपुर्द करना। सौंपना।

तफ़सीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वर्णन। २ टीका, विशेषतः कुरानकी टीका।

तफ़सील-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ विस्तृत वर्णन। २ टीका। तशरीह। कैफ़ियत। ब्योरा।

तफ़सीलवार-वि० विस्तारपूर्वक। तफ़सीलके साथ।

तफ़ाख़ुर-संज्ञा पु० (अ०) फ़ख़ करना। शेखी करना।

तफ़ावत-संज्ञा पु० (अ० तफ़ावुत) १ फासला। दूरी। २ अन्तर।

तफ़ासीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) "तफ़सीर" का बहु०।

तफ़ूलियत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बाल्यावस्था। लड़कपन।

तबंचा-संज्ञा पु० दे० "तमंचा।"

तबअ-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रकृति। तबीयत। २ मोहर लगाना। ३ छापना। अंकित करना। ४ ग्रन्थों आदिका संस्करण।

तबअ-आज़माई-संज्ञा स्त्री०(अ० +फा०) बुद्धि-बलकी परीक्षा।

तबई-वि० (अ०) प्राकृतिक। असली। यौ०-**इल्मे तबई**= १ प्रकृति-विज्ञान। २ दर्शन शास्त्र।

तबक़-संज्ञा पु० (अ०) १ आकाशके वे खण्ड जो पृथ्वीके ऊपर और नीचे माने जाते हैं। लोक। तल। २ परत। तह। ३ चाँदी-सोनेके

पत्तरोंको पीटकर कागज़की तरह बनाया हुआ पतला वरक़ । ४ चौड़ी और छिछली थाली ।

तबक़गर–संज्ञा पुं० (अ+फा०) (संज्ञा-तबक़गरी) सोने, चाँदीके तबक़ बनानेवाला । तबकिया ।

तबक़ा–संज्ञा पुं० (अ० तबक़ः) १ खंड । विभाग । २ तह । परत । ३ लोक । तल । ४ आदमियोंका गरोह ।

तबद्दील–वि० दे० "तब्दील ।"

तबद्दुल–संज्ञा पुं० (अ०) बदला जाना । परिवर्तन ।

तबनियतनामा–संज्ञा पुं० (अ०) वह पत्र जो किसीको दत्तक लेनेके सम्बन्धमें लिखा जाता है ।

तबन्नी–संज्ञा स्त्री० (अ०) दत्तक लेनेकी क्रिया । लड़का गोद लेना ।

तबर–संज्ञा पुं० (फा०) कुल्हाड़ीके आकारका एक अस्त्र ।

तबरज़न–संज्ञा पु० (फा०) १ तबरसे लड़नेवाला । सैनिक । २ लकड़हारा ।

तबरीद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह ठंढा पेय पदार्थ जो प्रायः जुलाबके बाद पिया जाता है ।

तबर्रा–संज्ञा पु० (अ०) १ घृणा । नफरत । २ वे घृणासूचक वाक्य जो शीया लोग मुहम्मद साहबके कुछ मित्रोंके सम्बन्धमें कहते हैं ।

तबर्रुक–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० तबर्रुक़ात) १ किसीसे बरकत या बरकतवाली कोई चीज़ लेना । २ वह चीज़ जो बरकतके तौरपर ली जाय । प्रसाद ।

तबल–संज्ञा पुं० (अ०) १ बड़ा ढोल । २ नगाड़ा । डंका ।

तबलची–संज्ञा पुं० (अ० तबलः) वह जो तबला बजाता हो । तबलिया ।

तबला–संज्ञा पु० (अ० तबलः) ताल देनेका एक प्रसिद्ध बाजा । यह बाजा इसी तरहके और दूसरे बाजेके साथ बजाया जाता है जिसे बायाँ, ठेका या डुग्गी कहते हैं ।

तबलीग़–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसीके पास कुछ पहुँचाना । २ धर्मका प्रचार करना । दूसरोंको अपने धर्ममें मिलाना ।

तबस्सुम–संज्ञा पुं० (अ०) १ मन्द-हास । मुस्कराहट । कलियोंका विकसित होना । खिलना ।

तबस्सुर–संज्ञा पुं० (अ०) ध्यान-पूर्वक देखना । गौर करना ।

तबाक़–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारकी बड़ी थाली ।

तबादला–संज्ञा पुं० (अ० तबादलः) १ बदला जाना । परिवर्तन । २ किसी कर्मचारीका एक स्थानसे हटाकर दूसरे स्थानपर नियुक्त किया जाना ।

तबार–संज्ञा पु० (फा०) १ जाति । २ परिवार ।

तबाशीर–संज्ञा स्त्री० (अ० वि० सं० तवक्षीर) वंशलोचन नामक औषधि ।

तबाह–वि० (फा०) जो बिलकुल खराब हो गया हो । नष्ट ।

तबाही–संज्ञा स्त्री० (फा०) नाश।
तबीअत–संज्ञा स्त्री० दे० "तबीयत।"
तबीब–संज्ञा पुं० (अ०) वैद्य। हकीम।
तबीयत–संज्ञा। स्त्री० (अ०) १ चित्त। मन। जी। मुहा०–(किसी-पर) **तबीयत आना**=(किसी-पर) प्रेम होना। आशिक होना। **तबीयत फड़क उठना**=चित्तका उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो जाना। **तबीयत लगना**=१ मनमें अनुराग उत्पन्न होना। २ ध्यान लगा रहना। ३ बुद्धि। समझ। ज्ञान।
तबीयत-दार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा तबीयतदारी) १ समझदार। २ भावुक। रसिक।
तब्दील–वि० (अ०) १ बदला हुआ। परिवर्तित। २ जो एक स्थानसे हटाकर दूसरे स्थानपर कर दिया गया हो। संज्ञा स्त्री० परिवर्तन। बदला जाना। जैसे–**तब्दील आब-व-हवा**–जल-वायुका परिवर्तन।
तब्दीली–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बदले जानेकी क्रिया। परिवर्तन। २ दे० "तबादला।"
तब्बाख–संज्ञा पुं० (अ०) बावर्ची। रसोइया।
तमंचा-संज्ञा पुं० (तु० तमन्चः) १ छोटी बन्दूक। पिस्तौल। २ वह लंबा पत्थर जो दरवाजोंकी बगलमें लगाया जाता है।
तमअ–संज्ञा स्त्री० दे० "तमा।"
तमकनत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मान। सम्मान। २ शान-शौकत। ३ अभिमान। घमंड।
तमग़ा–संज्ञा पुं० (तु० तम्गः) १ पदक। २ मोहर। ३ राजाज्ञा।
तमद्दुन–संज्ञा पुं० (अ०) १ नगर-में रहना। नगर-निवास। २ नागरिकता। ३ सभ्यता। संस्कृति।
तमन-संज्ञा पुं० दे० "तुमन।"
तमन्ना–संज्ञा स्त्री० (अ०) कामना। इच्छा। ख़्वाहिश।
तमर–संज्ञा पुं० (अ०) सूखी खजूर। यौ०–**तमरे-हिन्दी**=इमली।
तमर्रुद–संज्ञा पुं० (अ०) १ उद्दंडता। २ विरोध। विद्रोह। ३ अधिकारियोंकी आज्ञा या कानून न मानना। नियमोंकी अवज्ञा।
तमसील–संज्ञा स्त्री० (तम्सील) १ मिसाल। उदाहरण। २ उपमा।
तमसीलन्–क्रि० वि० (अ०) मिसालके तौरपर। उदाहरणार्थ।
तमस्खुर–संज्ञा पुं० (अ०) मसखरापन। हँसी ठट्ठा। परिहास।
तमस्सुक–संज्ञा पुं० (अ०) वह कागज जो ऋण लेनेवाला ऋणके प्रमाणस्वरूप लिखकर महाजन-को देता है। दस्तावेज।
तमहीद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बिछौना या बिस्तर बिछाना। २ भूमिका। प्रस्तावना।
तमाँचा–संज्ञा पुं० (फा० तमान्चः) थप्पड़। तमाचा।
तमा–संज्ञा स्त्री० (अ० तमअ) १ लालच। लोभ। २ इच्छा। कामना। चाह।

तमाचा—संज्ञा पुं० (तु० तमान्चः या फा० तबान्चः) हथेली और उँगलियोंसे गालपर किया हुआ प्रहार। थप्पड़। झापड़।

तमादी—संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी घातकी मुद्दत या मीयाद गुज़र जाना।

तमानियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) तसल्ली। इतमीनान। सन्तोष।

तमाम—वि० (अ०) १ पूरा। संपूर्ण। कुल। २ समाप्त। खतम।

तमामी—संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका देशी रेशमी कपड़ा।

तमाशबीन—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ तमाशा देखनेवाला। २ वेश्यागामी। ऐयाश।

तमाशा—संज्ञा पुं० (अ० तमाशः) १ वह दृश्य जिसके देखनेसे मनोरंजन हो। चित्तको प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २ अद्भुत व्यापार। अनोखी बात।

तमाशाई—संज्ञा स्त्री०(अ० तमाशासे फा०) तमाशा देखनेवाला।

तमाशा-गाह—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ कोई तमाशा होता हो।। रंगस्थल।

तमीज़—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ भले और बुरेको पहचाननेकी शक्ति। विवेक। २ पहचान। ३ ज्ञान। बुद्धि। ४ अदब। कायदा। ५ व्याकरणमें क्रियाविशेषण।

तम्बान—संज्ञा पुं० (फा०) बहुत ढीली मोहरियोंका पाजामा।

२२

तम्बीह—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ नसीहत। शिक्षा। ताकीद।

तम्बूर—संज्ञा पुं० दे० "तम्बूरा।"

तम्बूरा—संज्ञा पुं० (अ० तम्बूरः) तंबूरा या तानपूरा नामक प्रसिद्ध बाजा।

तम्बूल—संज्ञा पुं० दे० "तम्बोल।"

तम्बोल—संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० ताम्बूल) पान। ताम्बूल।

तम्मान्न—वि०(अ०)लालची। लोभी।

तयम्मुम—संज्ञा पुं० (अ०) जलके अभावमें, नमाज़ पढ़नेसे पहले, मिट्टीसे हाथ-मुँह साफ करना। मिट्टीसे वज़ू करना।

तयूर—संज्ञा पुं० (अ० "तैर" का बहु०) चिड़ियाँ। पत्ती-समूह।

तर—वि० (फा०) १ भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। यौ०— **तर-बतर**= बिलकुल भीगा हुआ। २ शीतल। ठंडा। ३ जो सूखा न हो। हरा।

यौ०-**तरो-ताज़ा**—हरा और नया। प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दोंके अंतमें लगकर दूसरेकी अपेक्षा आधिक्य सूचित करता है। जैसे—खुशतर। बेहतर।

तरकश—संज्ञा पुं० (फा० तर्कश) तीर रखनेका चोंगा। भाथा। तूणीर।

तरका—संज्ञा पुं० (अ० तर्कः) वह जायदाद जो किसी मरे हुए आदमीके वारिसको मिले।

तरकारी—संज्ञा स्त्री० (फा० तरः+कारी) १ वह पौधा जिसकी

पत्तियाँ, डंठल, फल आदि पकाकर खानेके काम आते हैं।

तरकीब–संज्ञा स्त्री० (अ० तर्कीब) (वि० तरकीबी) १ मिलान। २ बनावट। रचना। ३ युक्ति। उपाय। ढंग। ढब। ४ रचना-प्रणाली।

तरकीब-बंद–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) तरजीअ-बन्दकी तरहकी एक प्रकारकी कविता।

तरक्की–संज्ञा स्त्री० (अ०) वृद्धि। उन्नति।

तरखीम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शब्दका संक्षिप्त रूप। २ व्याकरणमें किसी शब्दके अंतिम अक्षरका उच्चारण न करना।

तरग़ीब–संज्ञा स्त्री० (अ० तर्ग़ीब) १ उत्तेजन। उत्तेजित करना। उसकाना। भड़काना। २ कह-सुनकर अपने अनुकूल करना। क्रि० प्र० देना।

तरजीअ-बन्द–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह कविता जिसमें कोई विशिष्ट चरण, कुछ पदोंके बाद, बार बार आता है।

तरजीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी बातको और वस्तुओंसे अच्छा समझना। प्रधानता देना।

तरजुमा–संज्ञा पुं० (अ० तर्जुमः) अनुवाद। भाषांतर। उल्था।

तरजुमान–संज्ञा पुं० (अ० तर्जुमान) १ तरजुमा या अनुवाद करनेवाला। अनुवादकर्त्ता। २ अच्छा भाषण करनेवाला। सुवक्ता।

तरतीब–संज्ञा स्त्री० (अ०) वस्तुओंका अपने ठीक स्थानोंपर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।

तरतीबवार–क्रि० वि० (अ०+फा०) तरतीब या क्रमसे। सिलसिलेवार।

तर-दामन–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा तर-दामनी) १ अपराधी। पापी।

तरदीद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ काटने या रद करनेकी क्रिया। मंसूखी। २ खंडन। प्रत्युत्तर।

तरद्दुद–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० तरद्दुदात) सोच। फ़िक्र। अंदेशा। चिंता। खटका।

तरफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ओर। दिशा। अलग। २ किनारा। बगल। ३ पक्ष। पासदारी।

तरफ़दार–वि० (अ० + फा०) (संज्ञा तरफ़दारी) पक्षमें रहनेवाला। पक्षपाती। हिमायती।

तरफ़ैन–संज्ञा पुं० (तरफ़का बहु०) (अ०) दोनों तरफ़के लोग। दोनों पक्ष।

तरब–संज्ञा पुं० (अ०) प्रसन्नता।

तरबियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) सिखाने-पढ़ाने और सभ्य बनानेकी क्रिया। शिक्षा-दीक्षा। यौ०—**तालीम व तरबियत**।

तरबुज़–संज्ञा पुं० दे० "तरबूज"।

तरबूज–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारकी बेल। २ इस बेलके बड़े गोल फल जो खानेके काममें आते हैं।

तरमीम–संज्ञा स्त्री० (अ० तर्मीम) संशोधन। सुधार।

तरस–संज्ञा पुं० (फा० तर्स मि० सं० त्रस) १ भय। डर। २ दया। रहम। मुहा० (किसीपर) **तरस खाना**=दया करना। रहम करना।

तरसाँ–वि० (फा०) भयभीत। डरा हुआ।

तरसील–संज्ञा स्त्री० (अ०) इरसाल करनेकी या भेजनेकी क्रिया।

तरह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रकार। भाँति। क़िस्म। २ रचना-प्रकार। ढाँचा। रूप-रंग। ३ ढब। तर्ज़। प्रणाली। ४ युक्ति। उपाय। ५ हाल। दशा। मुहा०-**तरह देना**=जाने देना। ध्यान न देना। ६ वह पद या चरण। जो गजल बनानेको दिया जाय। समस्या-पूर्त्तिका पद।

तरह्हुम–संज्ञा पुं० (अ०) रहम। दया। संज्ञा स्त्री० (फा०) तरकारी।

तराजू–संज्ञा पुं० (फा०) सीधी डाँड़ीके छोरोंसे बँधे हुए दो पलड़े जिनसे वस्तुओंकी तौल मालूम करते हैं। तुला। तकड़ी।

तरादुफ–संज्ञा पुं० (अ०) १ क्रमशः लगे होनेका भाव। २ पर्याय।

तराना–संज्ञा पुं० (फा० तरानः) १ संगीत। गीत। २ राग। ३ एक प्रकारका चलता गाना।

तरावत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आर्द्रता। नमी। तरावट। २ ताजा-पन। ताजगी।

तराविश–संज्ञा स्त्री० (फा०) टपकना। चूना।

तरावीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक विशिष्ट प्रकारकी नमाज या ईश्वर-प्रार्थना जो विशेष धर्मनिष्ठ मुसलमान करते हैं।

तराश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ काटनेका ढंग या भाव। काट। २ काट-छाँट। बनावट। रचना-प्रकार। यौ०–**तराश-खराश**=काट-छाँट और बनावट। ३ ढंग।

तराशना–क्रि० (फा० तराश) काटना। कतरना।

तरी–संज्ञा स्त्री० (फा० तर) १ गीलापन। आर्द्रता। २ ठंडक। शीतलता। ३ वह नीची भूमि जहाँ बरसातका पानी इकट्ठा रहता हो। कछार। तराई। तरहटी।

तरीक़–संज्ञा पुं० दे० "तरीक़ा।"

तरीक़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ रास्ता। मार्ग। २ आचरण। ३ हृदयकी शुद्धता।

तरीक़ा–संज्ञा पुं० (अ० तरीक़ः) १ ढंग। विधि। रीति। २ चाल। व्यवहार। ३ उपाय। तदबीर।

तरीन–प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दोंके अन्तमें लगकर सबसे आधिक्य सूचित करता है। जैसे–**खुशतरीन्**, **बेह-तरीन्**।

तर्क–संज्ञा पुं० (अ०) छोड़नेकी क्रिया। परित्याग। यौ०–**तर्क मवालात**=असहयोग।

तर्कश–संज्ञा पुं० दे० "तरकश।"

तर्ज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रकार। क़िस्म। तरह। २ रीति। शैली। ढंग। ढब। ३ रचना-प्रकार।

तर्जुमा–संज्ञा पुं० दे० "तरजुमा।"

तर्रा–संज्ञा पुं० (फा० तर्रः) तरकारी। साग-भाजी।

तर्रार–वि० (अ०) (संज्ञा तर्रारी) १ बहुत बोलनेवाला। मुखर। तेज। चपल। यौ०–**तेज़ व तर्रार**=चपल और मुखर।

तर्रारा–संज्ञा पुं० (अ० तर्रार) १ तेजी। २ द्रुत गति। यौ०–**तर्रारे भरना**–बहुत तेज़ीसे चलना या भागना।

तर्राह–संज्ञा पुं० (अ०) इमारत बनानेवाला।

तर्राही–संज्ञा स्त्री० (अ०) भवन-निर्माणकी विद्या। स्थापत्य।

तर्स–संज्ञा पु० दे० "तरस।"

तलक़ीन–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ समझाना-बुझाना। शिक्षा देना।

तलख़–वि० दे० "तल्ख़।"

तलफ़–वि० (अ०) नष्ट। बरबाद।

तलफ़ी–संज्ञा स्त्री० विनाश। बरबादी। यौ०–**हक़-तलफ़ी**= जिसको उसके हक़ या अधिकारका उपयोग न करने देना।

तलफ्फ़ुज़–संज्ञा पुं०(अ०) उच्चारण।

तलब–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ खोज। तलाश। २ चाह। पानेकी इच्छा। ३ आवश्यकता। माँग। ४ बुलावा। बुलाहट। ५ तनख़्वाह।

तलब-गार–वि० (फा०) संज्ञा तलब-गारी) चाहनेवाला।

तलब-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+ फा०) वह पत्र जिसके द्वारा किसीको तलब किया या बुलाया जाय। सम्मन। सफ़ीना।

तलबाना–संज्ञा पुं० (अ० तलबसे फा० तलबानः) वह ख़र्च जो गवाहोंको तलब करनेके लिए अदालतमें दाख़िल किया जाता है।

तलबी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बुलाहट। २ माँग।

तलमीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) लेखकका अपने ग्रंथमें किसी कथानक, पारिभाषिक शब्द या कुरानकी आयतका उल्लेख करना।

तलव्वुन–संज्ञा पुं० (अ०) १ तरह तरहके रंग बदलना २ स्वभावकी अस्थिरता। यौ०–**तलव्वुन-मिज़ाज**=अस्थिर-चित्त। जिसका मन जल्दी किसी बातपर न जमे।

तलाक़–संज्ञा पुं० (अ०) पति-पत्नीका सम्बन्ध टूटना। मुहा०–**तलाक़ देना**=पतिका पत्नीको या पत्नीका पतिको परित्याग करना।

तलातुम–संज्ञा पुं० (अ०) नदी या समुद्रकी बड़ी बड़ी तरंगें।

तलाफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) दोष या अनुचित कृत्यका परिहार।

तलावत–संज्ञा स्त्री०दे० 'तिलावत।'

तलाश–संज्ञा स्त्री० (तु०) १ खोज। ढूँढ़-ढाँढ़। अन्वेषण। अनुसंधान। २ आवश्यकता। चाह।

तलाशी–संज्ञा स्त्री० (तु०) गुम हुई या छिपाई हुई वस्तुको पानेके लिये देखभाल।

तलौवन–संज्ञा पुं० दे० "तलव्वुन।"

तल्ख़–वि० (फ़ा०) १ कड़ुवा। कटु। अप्रिय। नागवार।

तल्ख़-मिज़ाज–वि० (फ़ा०) (संज्ञा तल्ख़-मिज़ाजी) जिसका स्वभाव उग्र और कटु हो।

तल्ख़ा–संज्ञा पुं० (फ़ा० तल्ख़ः) १ पित्ताशय। पित्त। २ उबालकर सुखाए हुए चावलोंका बनाया हुआ सत्तू। फरवीका सत्तू।

तल्ख़ी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ कड़ुआ-पन। कटुता। २ स्वभावकी उग्रता और कटुता।

तवंगर–वि० (फ़ा०) (संज्ञा तवं-गरी) धनवान्। सम्पन्न।

तवक़्क़ा–संज्ञा स्त्री० (अ० तवक्क़ुअ) आशा। उम्मेद।

तवक्कुफ़-संज्ञा पुं०(अ०) विलम्ब।

तवक्कुल–संज्ञा पुं० (अ०) १ ईश्वर-पर भरोसा रखना। २ सांसारिक बातोंसे मुँह मोड़कर ईश्वरकी ओर ध्यान लगाना।

तवज्जह–संज्ञा स्त्री०(अ० तवज्जुह) १ ध्यान। रुख। २ कृपादृष्टि।

तवल्लुद-वि० (अ०) जिसने जन्म लिया हो। जात। उत्पन्न। मुहा०–**तवल्लुद होना**=पैदा होना।

तवस्सुल–संज्ञा पुं० दे० "वसीला।"

तवाज़ा-संज्ञा स्त्री० (अ० तवाज़ुअ) १ आदर। मान। आव-भगत। २ मेहमानदारी। दावत। यौ०–**तवाज़ा समरक़न्दी**=झूठ-मूठकी खातिरदारी। खिलाना-पिलाना कुछ नहीं, खाली बातोंसे आव-भगत करना।

तवान-गर–वि० (फ़ा०) (संज्ञा तवान-गरी) धनवान्। सम्पन्न।

तवाना–वि० (फ़ा०) (संज्ञा तवा-नाई) बलवान्। ताक़तवर।

तवाफ़–संज्ञा पुं० (अ०) मक्के अथवा किसी दूसरे पवित्र स्थानकी प्रदक्षिणा।

तवाम–संज्ञा पुं (अ०) एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो बालक। यमज। जोड़िया बच्चे।

तवायफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ "तायफ़ा" का बहु०। २ वेश्या। रंडी।

तवारीख़–संज्ञा स्त्री० (अ०) इति-हास।

तवारीख़ी–वि० (अ०) ऐतिहासिक।

तवालत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ तवील या लंबा होनेका भाव। लंबाई। दीर्घता। २ अधिकता। ३ बखेड़ा। झंझट।

तवील–वि०(अ०) (संज्ञा तवालत) लम्बा। लम्ब। यौ०–**तूल-तवील** =लम्बा-चौड़ा।

तवेला–संज्ञा पुं० (अ० तवेल) अश्व-शाला। घुड़साल।

तशख़ीस–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ठहराव। निश्चय। २ मर्ज़की पहचान। रोगका निदान।

तशदीद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कठोर बनाना। २ एक प्रकारका चिह्न जो अरबी-फ़ारसी लिपिमें

किसी अक्षरके ऊपर लगकर उसका द्वित्व सूचित करता है।

तशद्दुद–संज्ञा पुं० (अ०) कड़ाई। सख़्ती। (व्यवहार आदिकी)

तशनीअ–संज्ञा स्त्री० (अ०) ताना।

तशन्नुज–संज्ञा पुं० (अ०) शरीरके अंगोंका ऐंठना। (रोग)

तशफ़्फ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ तसल्ली। ढारस। २ सन्तोष।

तशबीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) उपमा।

तशरीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) बुजुर्गी। इज्जत। महत्त्व। बड़प्पन। मुहा०–**तशरीफ़ लाना** = पदार्पण करना। **तशरीफ़ रखना**=विराजना। बैठना। (आदर) यौ०–**तशरीफ़ आवरी**=शुभागमन।

तशरीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ व्याख्या। विस्तृत टीका। २ वह शास्त्र जिसमें शरीरके अंगों और उपांगों आदिकी व्याख्या होती है। शरीर-शास्त्र।

तशवीश–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ चिन्ता। फिक्र। २ तरद्दुद। परेशानी।

तशहीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ किसीके दोषोंको सबपर प्रकट करना। २ दंडस्वरूप किसीको अपमानित करके सब लोगोंके सामने या सारे नगरमें घुमाना।

तश्त–संज्ञा पु० (फा०) एक प्रकारका बड़ा थाल। मुहा०·**तश्त अज़ बाम होना**=१ भेद खुलना। २ बदनामी होना।

तश्तरी–संज्ञा स्त्री० (फा० तश्त) थालीके आकारका छिछला हलका बरतन। रिकाबी।

तसकीन–संज्ञा स्त्री०दे० "तस्कीन।"

तसख़ीर–संज्ञा स्त्री० "तस्ख़ीर।"

तसग़ीर–संज्ञा स्त्री० (अ० तस्ग़ीर) १ छोटा करना। संक्षिप्त करना। २ संक्षिप्त रूप।

तसदिया–संज्ञा पुं०दे० "तसदीअ।"

तसदीअ–संज्ञा स्त्री० (अ०) (तस्दीअ) १ कष्ट। पीड़ा। २ कठिनता। दिक्क़त।

तसदीक़–संज्ञा स्त्री० (अ० तस्दीक़) सही बतलाना या ठहराना। यह कहना कि अमुक बात ठीक है।

तसद्दुक़–संज्ञा पुं० (अ०)१ सदका उतारना। न्योछावर करना। २ दान। खैरात।

तसनिया–संज्ञा पुं० (अ० तसनियः) व्याकरणमें द्विवचन।

तसनीफ़–संज्ञा स्त्री०दे० "तस्नीफ़"

तसन्ना–संज्ञा पुं० (अ० तसन्नुअ) १ नकली या बनावटी चीज़ तैयार करना। २ बनाव-सिंगार। बनावट। ३ कारीगरी। कला-कौशल। ४ स्त्रियोंका अपना शृंगार करके लोगोंको दिखलाना।

तसफ़िया–संज्ञा पुं०दे० "तस्फ़िया।"

तसबीह–संज्ञा स्त्री० दे० "तस्बीह।"

तसमा–संज्ञा पुं० दे० "तस्मा।"

तसरीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) व्याकरणमें शब्दके भिन्न भिन्न रूप। जैसे-करना। कराना। करवाना।

तसरीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १प्रकट या स्पष्ट करना । २ व्याख्या ।

तसर्रुफ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ व्यय। खर्च। २उपयोग। प्रयोग। ३ अधिकार और भोग । ४ महात्माओं आदिकी अलौकिक शक्ति ।

तसलसुल–संज्ञा पुं० (अ० तसल्सुल) शृंखला। क्रम । सिलसिला।

तसलीम–संज्ञा स्त्री० दे० "तस्लीम ।"

तसलीस–संज्ञा स्त्री० (अ०तस्लीस) १ तीन भागोंमें बाँटना । २ तीन वस्तुओंका समूह । त्रयी ।

तसल्ली–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ढारस । सांत्वना। आश्वासन । २ शांति । धैर्य। धीरज।

तसल्लुत–संज्ञा पुं० (अ०) पूर्ण अधिकार,विशेषतः शासनसंबंधी ।

तसवीर–संज्ञा स्त्री० दे०"तस्वीर ।"

तसव्वुफ़–संज्ञा पुं०दे०"तसौवफ़ ।"

तसव्वर–संज्ञा पुं० दे०"तसौवर।"

तसहीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) लिखावटमें होनेवाली चूक।

तसहील–संज्ञा स्त्री० (अ०) सहल या सहज करना ।

तसहीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सही या दुरुस्त करना। शुद्ध करना। २ मिलान करके यह देखना कि ठीक और मूलके अनुसार है या नहीं ।

तसानीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) 'तस्नीफ़" का बहु० ।

तसावियां–संज्ञा पुं०(अ०तसावियः) गणितमें समतासूचक चिह्न जो (=) इस प्रकार लिखा जाता है ।

तसावी–संज्ञा स्त्री० (अ०) समानता । बराबरी ।

तसावीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) "तस्वीर" का बहु० ।

तसाहुल–संज्ञा पुं० (अ०) १ आलस्य । सुस्ती । २ उपेक्षा । ध्यान न देना। ला-परवाही ।

तसौवफ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ सब प्रकारकी कामनाओंसे रहित होना और सब वस्तुओंमें ईश्वरका अस्तित्व समझना । २ सूफियोंका दार्शनिक सिद्धांत जिसमें उक्त बातें मुख्य होती हैं ।

तसौवर–संज्ञा पुं० (अ० तसव्वुर) १ ध्यान । ख़याल । २ कल्पना । ३ विचार ।

तस्कीन–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ तसल्ली। ढारस । २ सन्तोष ।

तस्ख़ीर–संज्ञा स्त्री० (अ०)१ जीतकर अपने अधिकारमें करना । (गढ़ या भूत प्रेत आदि ।) २ जादू-मन्तर । टोना-टटका) ३ अपनी ओर अनुरक्त करना ।

तस्नीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० तसानीफ़) १ ग्रन्थ आदिकी रचना। २ लिखित या रचित ग्रंथ । रचना ।

तस्फ़िया–संज्ञा पुं० (अ०तस्फियः) १ साफ या स्वच्छ करना (मन आदि) । २ झगड़ेका निपटारा ।

तस्बीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पवित्र होकर ईश्वरकी आराधना करना ।

२ सौ दानोंकी वह माला जिसका प्रयोग मुसलमान जपके लिये करते हैं। ३ सुभान अल्लाह कहना।

तस्मा–संज्ञा पुं० (फा० तस्मः) चमड़ेका चौड़ा फीता।

तस्मिया–संज्ञा पुं० (अ० तस्मियः) नामकरण। नाम रखना।

तस्मीत–संज्ञा पुं० (अ०) १ मोती पिरोना। २ अच्छी चीजें चुनकर एकत्र करना। चयन। ३ सुंदर वस्तुओंका संग्रह।

तस्लीम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सलाम। प्रणाम। २ किसी बातको स्वीकार करना। हामी।

तस्लीमात–संज्ञा स्त्री० (अ०) "तस्लीम" का बहु०। मुहा०–**तस्लीमात बजा लाना**=सलाम करना।

तस्वीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) कागज आदिपर रंग आदिकी सहायतासे बनाई हुई वस्तुओंकी प्रतिकृति। चित्र। वि० चित्रके समान सुन्दर। बहुत सुन्दर।

तह–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ किसी वस्तुकी मोटाईका फैलाव जो किसी दूसरी वस्तुके ऊपर हो। परत। मुहा०–**तह करना** या **लगाना**=किसी फैली हुई वस्तुके भागोंको कई ओरसे मोड़कर समेटना। **तह कर रखो**=रहने दो। नहीं चाहिए। **तह तोड़ना**=१ झगड़ा निबटाना। २ कूएँका सब पानी निकाल देना जिससे जमीन दिखाई देने लगे (किसी चीजकी)। **तह देना**=१ हलकी परत चढ़ाना। हलका रंग चढ़ाना। २ किसी वस्तुके नीचेका विस्तार। तल। पेंदा। मुहा०–**तहकी बात**=छिपी हुई बात। गुप्त रहस्य। किसी बातकी **तह तक पहुँचना**=यथार्थ रहस्य जान लेना। असली बात समझ लेना। **तहो-बाला होना**=१ बिलकुल उलट-पलट होना। २ विनष्ट होना। ३ पानीके नीचेकी जमीन। तल। थाह। ४ महीन पटल। वरक। झिल्ली।

तहक़ीक़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ जाँच पड़ताल। अनुसंधान। २ वह जो जाँच-पड़तालसे ठीक सिद्ध हुआ हो। वि० १ अच्छी तरह जाँचा हुआ। ठीक। २ निश्चित।

तहक़ीक़ात–संज्ञा स्त्री० (अ० तहक़ीक़) किसी विषय या घटनाकी ठीक ठीक बातोंकी खोज। अनुसन्धान। जाँच।

तहक़ीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) अपमान। बेइज़्ज़ती।

तहक्कुम–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रभुत्व। आधिपत्य। अधिकार। २ शासन। राज्य।

तहख़ाना–संज्ञा पुं० (फा० तहखानः) वह कोठरी या घर जो जमीनके नीचे बना हो। भुईंघरा। तलगृह।

तह-ज़र्द–वि० दे० "तह-दर्ज।"

तहज़ीब–संज्ञा स्त्री० (अ०) १

सभ्यता। संस्कृति। २ भल-मनसाहत। शिष्टाचार।

तहज़ीब-याफ़्ता--वि०(अ०+फा०) सभ्य। शिष्ट।

तहज़ीर--संज्ञा स्त्री० (अ०) १ धमकी। २ तम्बीह।

तहज्जी--संज्ञा स्त्री०(अ०) १ हज्जे या निन्दा करना। २ हिज्जे। यौ०--**हरफ़े तहज्जी**=वर्णमाला-के अक्षर।

तहज्जुद--संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारकी नमाज़ जो आधी रातके बाद पढ़ी जाती है।

तहत--संज्ञा पुं० (अ०) १ अधिकार। इख़्तियार। अधीनता।

तहत-उस्सरा--संज्ञा स्त्री० (अ०) पाताल लोक।

तहचुक--संज्ञा पुं० (अ०) अपमान। हतक-इज़्ज़त। अप्रतिष्ठा।

तह-दर्ज़--वि० (फा०) ऐसा नया जिसकी तह तक न खुली हो। बिलकुल नया।

तह-देगी--संज्ञा स्त्री० (फा०) देगके नीचेकी वह खुरचन जो उसमेंसे खाद्य पदार्थ निकाल लेनेके बाद खुरची जाती है।

तह-नशीन--वि० (फा०) तहमें या नीचे बैठा हुआ। संज्ञा पुं०--तलछट। गाद।

तहनियत--संज्ञा स्त्री० (अ०) मुबारक-बाद। बधाई।

तह-निशान--संज्ञा पुं० (फा०) तलवार आदिके दस्तेपर चाँदी सोनेके बने बेल बूटे।

तह-पेच--संज्ञा पुं० (फा०) वह छोटी टोपी या सिरपर लपेटा जानेवाला कपड़ा जो पगड़ीके नीचे रहता है।

तह-पोशी--संज्ञा स्त्री० (फा०) वह छोटा काछरा जो स्त्रियाँ पतली साड़ियोंके नीचे या अन्दर पहनती हैं। सादा अस्तर।

तह-बन्द--संज्ञा पुं० (फा०) वह कपड़ा जो मुसलमान कमरके चारों तरफ लपेटते हैं। तहमद। लुंगी।

तहबन्दी--संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पुस्तकोंकी जुज़-बन्दी। २ कपड़ा रंगनेके पहले उसे किसी ऐसे रंगमें रंगना जिससे उसपरका दूसरा रंग पक्का और अच्छा हो।

तह-बाज़ारी--संज्ञा स्त्री० (फा०) बाज़ारों आदिमें दूकानदारोंसे लिया जानेवाला ज़मीनका किराया।

तहमद--संज्ञा स्त्री० (फा० तह-बद) कमरसे लपेटनेका कपड़ा या अँगोछा। लुंगी। तहबन्द।

तहमीद--संज्ञा स्त्री० (अ०) ईश्वर-की बार बार प्रशंसा करना।

तहम्मुल--संज्ञा पुं० (अ०) सहन-शीलता। बरदाश्त।

तहरीक--संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हिलाना-डुलाना। गति देना। २ उत्तेजित करना। भड़काना। ३ आन्दोलन। ४ प्रस्ताव।

तहरीफ़--संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शब्दों या अक्षरों आदिको बद-लना। २ लेख या हिसाब वगैर-

हकी जालसाजी। ३ लेखमें होनेवाली। सामान्य भूल।

तहरीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लिखावट। लेख। २ लेख-शैली। लिखी हुई बात। ४ लिखा हुआ प्रमाणपत्र। ५ लिखनेकी उजरत। लिखाई।

तहरुक–संज्ञा पुं० (अ०) हिलना-डुलना। गति।

तहलका–संज्ञा पुं० (अ० तहल्कः) १ मौत। मृत्यु। २ बरबादी। नाश। ३ खलबली। धूम। हलचल।

तहलील–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गलना। घुलना। २ पचना। हजम होना। ३ व्याकरणके अनुसार किसी शब्दकी व्याख्या। ४ पदच्छेद।

तहवील–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हवाले या सपुर्द करना। सपुर्दगी। २ अमानत। धरोहर। ३ खजाना। कोश। ४ रोकड़। जमा। ५ ज्योतिषमें सूर्य्य या चन्द्रमाका एक राशिसे दूसरी राशिमें जाना।

तहवीलदार–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) कोशाध्यक्ष। खजानची।

तहसीन–संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रशंसा। सराहना। तारीफ़।

तहसील–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लोगोंसे रुपया वसूल करनेकी क्रिया। वसूली। उगाही। २ वह आमदनी जो लगान वसूल करनेसे इकट्ठी हो। ३ तहसीलदारका दफ़्तर या कचहरी।

तहसीलदार–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) १ कर वसूल करनेवाला। २ वह अफ़सर जो जमींदारोंसे सरकारी मालगुजारी वसूल करता और मालके छोटे मुकदमोंका फ़ैसला करता है।

तहसीलदारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) १ तहसीलदारका पद। २ तहसीलदारकी कचहरी।

तहायफ़–संज्ञा पुं० (अ०) "तोहफ़ा" का बहु०।

तहारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पवित्रता। शुद्धता। नमाज पढ़नेसे पहले हाथ पैर और मुँह आदि धोकर शरीर पवित्र करना।

तही–वि० (फ़ा० तिही) खाली। रिक्त। जैसे–तही-दस्त, पहलू-तही।

तही-दस्त–वि० (फ़ा०) (संज्ञा तही-दस्ती) जिसका हाथ खाली हो। निर्धन। दरिद्र।

तही मग्ज़–वि० (फ़ा०) (संज्ञा तही-मग्ज़ी) जिसका मग्ज़ या दिमाग खाली हो। मूर्ख। बेवकूफ़।

तहे-दिल–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) हृदयका भीतरी भाग। मुहा०–**तहे-दिलसे**=हृदयसे।

तहैया–संज्ञा पुं० (अ० तहैयः) तैयारी। तत्परता।

तहैयुर–संज्ञा पुं० (अ०) आश्चर्य। अचंभा। अचरज।

तहो बाला–वि० (फ़ा०) १ नीचेका ऊपर और ऊपरका नीचे। उलटा-पलटा। २ विनष्ट। बरबाद।

तहौवर–संज्ञा पुं० (अ०) १ शीघ्रता। जल्दी। २ क्रोध। गुस्सा।

ता–अव्य० (फा०) तक। पर्य्यन्त। प्रत्य० संख्यासूचक प्रत्यय। जैसे-दो ता, सेह-ता।

ताअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ इबादत। ईश्वराराधन। २ सेवा।

ताईद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पक्षपात। तरफ़दारी। २ अनुमोदन। समर्थन। संज्ञा पु० वकीलका मुहर्रिर।

ताऊन–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह भीषण संक्रामक रोग जिससे बहुतसे लोग मरें। २ प्लेग नामक रोग।

ताऊस–संज्ञा पुं० (अ०) मयूर। मोर। यौ० **तख़्त-ताऊस**=शाहजहाँका बनवाया हुआ रत्नोंका एक प्रसिद्ध बहुमूल्य सिंहासन। मयूर सिंहासन।

ताक़–संज्ञा पुं० (अ०) चीजें रखनेके लिये दीवारमें बना हुआ खाली स्थान। आला। ताखा। मुहा०-**ताक़-पर रखना**=अलग रखना। छोड़ देना। **ताक़ भरना**=कोई मन्नत पूरी होनेपर मसजिदके ताक़ोंमें मिठाइयाँ रखना। वि०-१ जो बिना खंडित हुए दो बराबर भागोंमें न बँट सके। विषम। जैसे—तीन, सात, ग्यारह। २ जिसके जोड़का दूसरा न हो। अद्वितीय। बेजोड़।

ताक़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ज़ोर। बल। शक्ति। सामर्थ्य।

ताक़तवर–वि० (अ०+फा०) १ बलवान्। बलिष्ठ। २ शक्तिमान्।

ताक़ा–संज्ञा पुं० (अ० ताक़ः) कपड़ेका थान।

ता-कि–अव्य० (फा०) जिसमें। इसलिए कि जिससे।

ताक़ी-वि० (अ० ताक) कंजी आँखोंवाला। कंजा।

ताकीद–संज्ञा स्त्री० (अ०) ज़ोरके साथ किसी बातकी आज्ञा या अनुरोध। खूब चेताकर कही हुई बात।

ताकीदन–क्रि० वि० ताकीदके साथ। आग्रहपूर्वक।

ताकीदी-वि० (अ०) ताकीदका। जरूरी। जैसे—ताकीदी चिट्ठी। ताकीदी हुक्म।

ताख़ीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) विलम्ब।

ताख़्त–संज्ञा पुं० (फा०) सेनाका आक्रमण। फौजकी चढ़ाई। यौ०-**ताख़्त-व-ताराज** = देश और प्रजा आदिका विनाश।

ताज–संज्ञा पुं० (अ०) १ बादशाहकी टोपी। राजमुकुट। २ कलगी। तुर्रा। ३ पक्षियोंकी सिरकी चोटी। शिखा। ४ मकानके ऊपर शोभाके लिए बनाई-हुई ताजके आकारकी बुर्जी। ५ गंजीफेके एक रंगका नाम। ६ आगरेका ताज-महल।

ताज़गी–संज्ञा स्त्री० (फा०) ताजा होनेका भाव। ताज़ापन।

ताजदार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०)

१ वह जिसके सिरपर ताज हो। २ बादशाह। सम्राट्।

ताजवर–संज्ञा पुं० (फा०) (भाव० ताजवरी) राजा। बादशाह।

ताज़ा–वि० (फा० ताज़ः) १ जो सूखा या कुम्हलाया न हो। हरा-भरा। (फल आदि) २ जिसे पेड़से अलग हुए देर न हुई हो। ३ जो थका माँदा न हो। स्वस्थ। प्रफुल्लित। यौ०–**मोटा ताज़ा**=हृष्ट-पुष्ट। ४ तुरन्तका बना। सद्यः प्रस्तुत। ५ जो व्यवहारके लिये अभी निकाला गया हो। ६ जो बहुत दिनोंका न हो।

ताज़ियत–संज्ञा स्त्री० (अ० ताअज़ियत) १ मातम-पुरसी करना। मृतके सम्बन्धियोंको सांत्वना देना। २ रोना पीटना।

ताज़ियत नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) शोक-सूचक पत्र। मातम-पुरसीका खत।

ताजिया–संज्ञा पुं० (अ० तअज़ियः) बाँसकी कमचियों आदिका मक़बरेके आकारका मंडप जिसमें इमामहुसेनकी कब्र होती है। मुहर्रममें शीया मुसलमान इसके सामने मातम करते और तब इसे दफ़न करते हैं।

ताज़ियादारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) १ ताज़िये बनानेका काम। २ मुहर्रममें मातम करना।

ताज़ियाना–संज्ञा पुं० (फा० ताज़ियानः) १ चाबुक। कोड़ा। २ कोड़े लगानेकी सजा।

ताजिर–संज्ञा पुं० (अ०) तिजारत करनेवाला। व्यापारी। सौदागर।

ताज़ी–संज्ञा पुं० (फा०) १ अरब देशका घोड़ा। २ अरब देशका कुत्ता। संज्ञा स्त्री० अरबी भाषा।

ताज़ीक–संज्ञा पुं० (फा०) संकर जातिका घोड़ा।

ताज़ी खाना–संज्ञा पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ ताज़ी कुत्ते रखे जाते हों।

ताज़ीम–संज्ञा स्त्री० (तअज़ीम) बड़ेके सामने उसके आदरके लिये उठकर खड़े हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि।

ताज़ीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) दंड। सज़ा। जैसे–ताज़ीरी पुलिस।

ताज्जुब–संज्ञा पुं० दे० "तअज्जुब।"

तातील–संज्ञा स्त्री० (अ० तअतील) छुट्टीका दिन।

तादाद–संज्ञा स्त्री० (अ० तअदाद) संख्या। गिनती।

तादीब–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दोष आदि दूर करके सुधारना। २ भाषा और साहित्यकी शिक्षा।

तादीब-खाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ किसीके दोषोंका सुधार किया जाय।

ताना–संज्ञा पुं० (अ० तअनः) आक्षेप-वाक्य। व्यंग्य।

तानीस–संज्ञा स्त्री० (अ०) स्त्री-लिंग।

ताफ़्ता–संज्ञा पुं० (फा० ताफ्तः) एक प्रकारका चमकदार रेशमी कपड़ा।

ताब–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ताप।

गरमी। २ चमक । आभा । दीप्ति। ३ शक्ति। सामर्थ्य। ४ मनको वशमें रखनेकी शक्ति।

ताबईन--संज्ञा पुं० (अ० "ताबऽ" का बहु०) १ आज्ञाकारी लोग। २ वे मुसलमान जिन्होंने मुहम्मद साहबके साथियोंसे भेंट की हो।

ताब-खाना--संज्ञा पुं० (फ०) १ हम्माम। २ रोटी पकानेका तन्दूर।

ताबदान--संज्ञा पुं० (फा०)१ खिड़की। २ रोशनदान।

ताबाँ--वि० दे० "ताबान।"

ताबान--वि० (फा०) प्रकाशमान। चमकदार। चमकीला।

ताबिस्तान--संज्ञा पुं० (फा०)ग्रीष्म ऋतु। गरमी।

ताबीर--संज्ञा स्त्री० (अ० तअबीर) फल विशेषत: स्वप्न आदिका शुभाशुभ फल।

ताबूत--संज्ञा पुं० (अ०) १ वह सन्दूक जिसमें लाश रखकर गाड़नेको ले जाते हैं। २ हुसेनके मकबरेकी वह प्रतिकृति जिसका मुसलमान लोग मुहर्रममें जलूस निकालते हैं।

ताबे--वि० (अ० ताबऽ) १ वशीभूत। अधीन। मातहत। २ आज्ञानुवर्ती। हुक्मका पाबन्द।

ताबेदार--वि० (अ०+फा०) संज्ञा ताबेदारी) आज्ञाकारी। हुक्मका पाबन्द।

तामअ--वि०(अ०)तमअ या लालच करनेवाला। लालची। लोभी।

तामीर--संज्ञा स्त्री० (अ० तअमीर) (बहु० तामीरात) मकान बनानेका काम। भवन-निर्माण।

तामील--संज्ञा स्त्री० (अ० तअमील) (आज्ञाका) पालन।

ताम्मुल--संज्ञा पुं० (अ० तअम्मुल) १ सोच-विचार। २ आगा-पीछा। दुबिधा। असमंजस। ३ निश्चयका अभाव। संदेह।

तायफ़--संज्ञा पुं० (अ०) चारों ओर घूमना। परिक्रमा। २ चौकीदारी।

तायफ़ा--संज्ञा पुं० (अ० तायफ़:) १ वेश्याओं और समाजियोंकी मंडली। २ वेश्या। ३ यात्रीदल।

तायब--वि० (अ० ताइब) तौबा करनेवाला। संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सहायता। मदद। २ समर्थन।

तायर--संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० तयूर) १ वह जो उड़ता हो। २ पक्षी। चिड़िया।

तार--संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० तार) १ सूतका डोरा। २ तपी हुई धातुको खींच और पीटकर बनाया हुआ तागा। मुहा०-**तार तार करना**=टुकड़े टुकड़े करना। धज्जियाँ उड़ाना। वि०-अन्धकार-पूर्ण। अँधेरा।

तार-कश--संज्ञा पुं० (फा०) धातुका तार खींचनेवाला।

तार-कशी--संज्ञा स्त्री०(फा०)धातुके तार बनानेके काम।

तार-बरक़ी--संज्ञा पुं० (फा०) १ बिजलीका वह तार जिसकी सहायतासे समाचार भेजे जाते

हैं। २ इस तारकी सहायतासे आया हुआ समाचार।

ताराज–संज्ञा पुं० (फा०) १ लूटमार। २ विनाश। बरबादी।

तारिक–वि० (अ०) तर्क करने या छोड़नेवाला। त्यागी। यौ०–**तारिक-उल्-दुनिया**=संसार-त्यागी।

तारी–वि० (अ०) १ प्रकट होना। जाहिर होना। २ ऊपरसे आ पड़ना। ३ आ घेरना। छाना। जैसे-खौफ़ तारी होना। संज्ञा स्त्री० (फा०) तारीकी।

तारीक–वि० (फा०) १ अन्धकार-पूर्ण। अँधेरा। काला। स्याह।

तारीकी–संज्ञा स्त्री० (फा०) अन्धकार। अँधेरा।

तारीख़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ महीनेका हरएक दिन (२४ घंटेका)। तिथि। २ वह तिथि जिसमें पूर्व-कालके किसी वर्षमें कोई विशेष घटना हुई हो। ३ नियत तिथि। किसी कामके लिए ठहराया हुआ दिन। मुहा०–**तारीख़ डालना**=तारीख़ मुकर्रर करना। दिन नियत करना। ४ इतिहास।

तारीख़-वार–क्रि० वि० (अ०) तारीख़ोंके क्रमसे। कालक्रमसे।

तारीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ० तअरीफ़) १ लक्षण। परिभाषा। २ वर्णन। विवरण। ३ बखान। ३ प्रशंसा। ४ विशेषता। गुण। सिफ़त।

तारीफ़ी–वि० (अ० तअरीफ़ी) १ तारीफ़संबंधी। २ प्रशंसनीय।

तालअ–संज्ञा पुं० (अ०) भाग्य।

ताला–संज्ञा पुं० दे० "तअला।"

तालाब–संज्ञा पुं० (हिं० ताल+फा० आब) जलाशय। सरोवर।

तालिब–वि० (अ०) (बहु० तुल्बा) १ ढूँढ़ने या तलाश करनेवाला। २ चाहनेवाला।

तालिब-इल्म–संज्ञा पुं० (अ०) (भाव० तालिब-इल्मी) विद्यार्थी।

तालीक़ा–संज्ञा पुं० (अ० तअलीक़ः मि० सं० तालिका) वस्तुओं या संपत्ति आदिकी सूची।

तालीफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ग्रन्थकी रचना या संकलन। २ आकृष्ट करना। खींचना। जैसे-**तालीफ़े-क़ुलूब**=दूसरोंके हृदयों-को अपनी ओर आकृष्ट करना।

तालीम–संज्ञा स्त्री० (अ० तअलीम) अभ्यासार्थ उपदेश। शिक्षा।

तालीम-याफ़्ता-वि० शिक्षित।

तालील–संज्ञा स्त्री० (अ० तअलील) १ व्याकरणमें सन्धिके नियमोंके अनुसार स्वरोंका परिवर्त्तन। २ दलील पेश करना। कारण बतलाना।

ताले-वर–वि० (अ० तालअ+फा० वर) (संज्ञा तालेवरी) धनी।

ताल्लुक़–संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक़।"

तावान–संज्ञा पुं० (फा०) वह चीज जो नुक़सान भरनेके लिए दी या ली जाय। दंड। डाँड़।

तावीज़–संज्ञा पुं० (अ० तअवीज़) १ यंत्र-मंत्र या कवच जो किसी संपुटके भीतर रखकर पहना जाय। २ धातुका चौकोर या

अठ-पहला संपुट जिसे तागेमें लगाकर गले या बाँहपर पहनते हैं। जन्तर।

तावील–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ व्याख्या। २ किसी बातके विशेषतः स्वप्न आदिके शुभाशुभ फल कहना। ३ झूठी कैफ़ियत। बहाना।

ताश–संज्ञा पुं० (अ० तास) १ एक प्रकारका जरदोज़ी कपड़ा। ज़र-बफ्त। २ खेलनेके लिये मोटे कागजके चौखूँटे टुकड़े जिनपर रंगोंकी बूटियाँ या तस्वीरें बनी रहती हैं। ३ छोटी दफ़्ती जिस-पर सीनेका तागा लपेटा रहता है।

ताशा–संज्ञा पुं० (अ० तास:) चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकारका बाजा।

तास–संज्ञा पुं० दे० "ताश।"

तासा–संज्ञा पुं० दे० "ताशा।"

तासीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) असर। प्रभाव।

तास्सुफ़–संज्ञा पुं० (अ० तअस्सुफ़) अफसोस। खेद। दुःख।

तास्सुब–संज्ञा पुं० दे० "तअस्सुब।"

तास्सुर–संज्ञा पुं० दे० "तासीर।"

ताहम–अव्यय० (फा०) तो भी। तिसपर भी। इतना होनेपर भी।

ताहरी–संज्ञा स्त्री० दे० "ताहिरी।"

ताहिर–वि० (अ०) शुद्ध। पवित्र।

ताहिरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारकी खिचड़ी।

तिक्का–संज्ञा पुं० (फा० तिक्क:) मांसका टुकड़ा। बोटी। मुहा०—**तिक्का-बोटी उड़ाना**=१ टुकड़े टुकड़े करना। २ बोटी बोटी करना। संज्ञा पुं० (अ० तिक्क:) इज़ारबन्द।

तिगद्दौ–संज्ञा स्त्री० दे० "तग व दौ।"

तिजारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) व्यापार। रोजगार।

तिजारती–वि० (अ०) तिजारत या रोजगारसम्बन्धी।

तिफ़्ल–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० अतफ़ाल) बच्चा। बालक। लड़का।

तिफ़्ली–संज्ञा स्त्री० (अ०) बचपन।

तिबाबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) तबी-बका काम या पेशा। चिकित्सा।

तिब्ब–संज्ञा स्त्री० (अ०) यूनानी चिकित्सा-शास्त्र।

तिब्बी–वि० (अ०) तिब्ब या यूनानी चिकित्सासम्बन्धी।

तिरयाक़–संज्ञा पुं० (अ० तिर्याक़) १ ज़हर-मोहरा जिससे साँपके विषका प्रभाव नष्ट होता है। २ सब रोगोंकी रामबाण ओषधि।

तिलस्म–संज्ञा पुं० (यू० टेलिस्मा) १ जादू। इंद्रजाल। २ अद्भुत या अलौकिक व्यापार। करामात।

तिलस्मात–संज्ञा पु० (यू० टेलिस्मा) "तिलस्म" का बहु०।

तिलस्मी–वि० (यू० टेलिस्मा) तिलस्म-सम्बन्धी।

तिला–संज्ञा पुं० (फा०) वह तेल जो नपुंसकता दूर करनेके लिये इन्द्रियपर मला जाता है। संज्ञा पुं० (अ०) सोना। स्वर्ण।

तिलाई–वि० (अ०) सोनेका।

तिलाक़–संज्ञा पु० दे० "तलाक़।"

तिलाकारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+

फा०) १ सोनेका मुलम्मा चढ़ाने का काम ।

तिलादानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह थैली जिसमें दर्जी या स्त्रियाँ सूई तागा आदि रखती हों ।

तिलावत–संज्ञा स्त्री० (अ०) कुरानका पाठ ।

तिलिस्म–संज्ञा पुं० दे० "तिलस्म।"

तिल्ला–संज्ञा पुं०(फा०) सोना ।

तिश्नगी–संज्ञा स्त्री०(फा०) प्यास । पिपासा ।

तिश्ना–संज्ञा पुं० (अ० तिश्नऽ) व्यंग्य । ताना । वि० (फा० तिश्नः १ प्यासा । २ परम इच्छुक या उत्सुक ।

तिहाल–संज्ञा स्त्री० (अ० पेटके अन्दरकी तिल्ली । प्लीहा ।

तिही–वि० दे० "तिही ।"

तीनत–संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रकृति । स्वभाव । आदत यौ०–**बद-तीनत** = दुष्ट स्वभाववाला ।

तीमारदार–वि० (फा०) (संज्ञा तीमारदारी) १ सहानुभूति रखनेवाला । २ रोगीकी [illegible] करनेवाला ।

तीर–संज्ञा पुं० (फा०) बाण । शर । यौ०–**तीर-ब-हदफ़**=ठीक निशानेपर । अचूक ।

तीर-अन्दाज़–वि० (फा०) (संज्ञा तीर-अन्दाजी) तीर चलानेवाला।

तीर-गर–वि० (फा०) (संज्ञा तीरगरी) तीर बनानेवाला ।

तीरगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) अंधकार । अँधेरा ।

तीरा–वि० (फा० तीरः) अंधकारपूर्ण । अँधेरा ।

तीरा-दिल–वि० (फा०) कलुषित हृदयवाला ।

तीरा-बख़्त–वि० (फा०) अभाग्य ।

तुंग–संज्ञा पुं० (फा०) अनाज आदि रखनेका बोरा ।

तुकमा–संज्ञा पुं० (तु० तुकमः) घुंडी फँसानेका फंदा । मुद्धी ।

तुख़्म–संज्ञा पुं० (फा०) बीज ।

तुख़्मा–संज्ञा पुं० (अ० तुख़्मः) १ अपच । बदहज़मी । २ संग्रहिणी ।

तुग़यानी–संज्ञा स्त्री० (अ०) नदी आदिकी बाढ़ । पूर ।

तुग़रल–संज्ञा पुं० (तु०) बहरी नामक शिकारी पक्षी ।

तुग़रा–संज्ञा पुं० (तु०) एक प्रकारकी लेख-प्रणाली जिसके अक्षर पेचीले होते हैं ।

तुग़लक़–संज्ञा पुं० (अ०) सरदार ।

तुज़ुक़–संज्ञा पुं० (तु०) १ शोभा । वैभव । शान । २ कानून । नियम । ३ आत्म-चरित्र (विशेषतः किसी बादशाहका लिखा हुआ आत्म-चरित्र) ।

तुनक–वि० (फा०) १ दुर्बल । कमजोर । २ नाजुक । कोमल । ३ हलका । सूक्ष्म ।

तुनक-मिज़ाज–वि० (फा०) (संज्ञा तुनक-मिज़ाजी) बात-बातपर बिगड़ने या रंज होनेवाला ।

तुनक-हवास–वि० (फा०) (संज्ञा तुनक-हवासी) जिसके मनपर किसी बातका जल्दी प्रभाव पड़े ।

तुन्द–वि० (फा०) १ तेज़। तीक्ष्ण। २ उग्र। उत्कट। ३ भीषण। विकट। ४ कड़ुवा। कटु।
तुन्द-ख़ू–वि० (फा०) जिसका स्वभाव उग्र हो। कड़े मिज़ाजका।
तुन्दबाद–संज्ञा स्त्री०(फा०)आँधी।
तुन्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तेज़ी। तीक्ष्णता। २ उग्रता। उत्कटता। ३ विकटता।
तुपक–संज्ञा स्त्री० (तु०) तोप।
तुपकची–संज्ञा पुं० (अ० तुपक) तोप चलानेवाला। तोपची।
तुफ़ंग–संज्ञा स्त्री० (फा०) बन्दूक।
तुफ़ंगची–संज्ञा पुं० (फा०) वह जो बन्दूक चलाता हो।
तुफ़–अव्यय० (फा०) थुड़ी है। लानत है। धिक्कार है।
तुफ़लियत–संज्ञा स्त्री० दे० "तिफ़्ली"।
तुफ़ैल–संज्ञा पुं० (अ०) साधन। द्वार। मुहा०–**किसीके तुफ़ैलसे**=किसीके द्वारा।
तुम-तराक़–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तड़क-भड़क। शान-शौकत। २ ठसक। बनावट।
तुमन–संज्ञा पुं० (फा० तु०तमिनसे) १ भाईचारा। २ सेना। मुहा०-**तुमन बाँधना**=सेना एकत्र करना।
तुरंगबीन–संज्ञा पुं० दे० "तुरंजबीन"
तुरंज–संज्ञा पुं० (फा०) १ चकोतरा नीबू। २ बिजौरा नीबू। ३ वह बड़ा बूटा जो दुशाले आदिके कोनोंपर होता है।
तुरंजबीन–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारकी चीनी जो ऊँटकटा-रेके पौधोंपर जमती है। २ नीबूके रसका शरबत।
तुरकी–संज्ञा स्त्री० दे० "तुर्की।"
तुख़्मा–संज्ञा पुं० (अ० तुख़्मः) बद-हज़मी। अनपच।
तुर्फ़त-उल्-ऐन–संज्ञा पुं० (अ०) १ एक बार पलक झपकाना। २ उतना कम समय जितना एक बार पलक झपकानेमें लगता है।
तुरफ़ा–वि० (अ० तुर्फ़ः) (संज्ञा तुर्फ़गी) अनोखा। विलक्षण।
तुरबत–संज्ञा स्त्री० (अ० तुर्बत) कब्र। समाधि।
तुराब–संज्ञा पुं० (अ०) १ ज़मीन। २ मिट्टी। मृत्तिका। ख़ाक।
तुर्क–संज्ञा पुं० (तु०) १ तुर्किस्तान-का निवासी। तुर्किस्तान देश।
तुर्कमान–संज्ञा पुं० (फा०) एक जातिका नाम। वि० तुर्कोंके समान वीर।
तुर्क-सवार–संज्ञा पुं० (तु०+फा०) घुड़सवार। अश्वारोही।
तुर्की–संज्ञा स्त्री० (तु०) तुर्किस्तान-की भाषा। मुहा०-**तुर्की-ब-तुर्की जवाब देना**=जैसेको तैसा उत्तर देना। पूरा पूरा उत्तर देना। संज्ञा पुं० १ तुर्किस्तानका निवासी। तुर्क। २ तुर्किस्तानका घोड़ा।
तुर्रा–संज्ञा पुं० (अ० तुर्रः) १ घुँघराले बालोंकी लट जो माथेपर हो। काकुल। २ परका फुँदना जो पगड़ीमें लगाया या खोंसा जाता है। कलगी। गोशवारा।

तुर्श–वि० (फा०) १ खट्टा । अम्ल । २ कठोर । कड़ा ।

तुर्श-रू–वि० (फा०) कड़ी और अनुचित बातें कहनेवाला । उग्र स्वभाववाला ।

तुर्श-रूई–संज्ञा स्त्री० (फा०) कठोर और अनुचित बातें कहना ।

तुर्शी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ खट्टा-पन । २ व्यवहार आदिकी कठोरता ।

तुलबा–संज्ञा पुं० (अ०)१ "तालिब" का बहु० । २ विद्यार्थी लोग ।

तुलूअ–संज्ञा पुं० (अ०) सूर्य या किसी नक्षत्रका उदय होना ।

तूग़–संज्ञा पुं० (तु०) सेनाका झंडा और निशान ।

तूज़ुक–संज्ञा पुं० दे० "तुजुक ।"

तूत–संज्ञा पुं० दे० "शहतूत"

तूतिया–संज्ञा पुं० (अ०) नीला-थोथा या तूतिया नामका खनिज द्रव्य । तुत्थ ।

तूती–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ छोटी जातिका तोता । २ कनेरी नाम-की छोटी सुन्दर चिड़िया । ३ मट-मैले रंगकी एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुन्दर बोलती है । मुहा०–**किसीकी तूती बोलना**=किसी-की खूब चलती होना या प्रभाव जमना । **नक्कारखानेमें तूती-की आवाज़ कौन सुनता है**=भीड़-भाड़ या शोर-गुलमें कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती । बड़े आदमियोंके सामने छोटोंकी बात कोई नहीं सुनता । ४ मुँहसे बजाने-का एक छोटा बाजा ।

तूदा–संज्ञा पुं० (फा० तूदः) १ टीला । डूह । २ खेतकी मेंड़ । ३ ढेर । राशि । ४ सीमाका चिह्न । हदबन्दी । ५ मिट्टीका वह टीला जिसपर लोग निशाना लगाना सीखते हैं ।

तूदा-बन्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) खेतों आदिकी हद-बंदी करना ।

तूफ़ान–संज्ञा पुं० (अ०) १ डुबाने-वाली बाढ़ । २ ऐसा अंधड़ जिसमें खूब धूल उड़े, पानी बरसे तथा इसी प्रकारके और उत्पात हों । आँधी । ३आपत्ति । आफ़त । ४ हल्ला-गुल्ला । ५ झगड़ा । बखेड़ा । ६ झूठा दोषारोपण । तोहमत । मुहा०–**तूफ़ान उठाना**=झूठा अभियोग लगाना ।

तूफ़ानी–वि० (अ०तूफ़ान) १ बखेड़ा करनेवाला । उपद्रवी । फ़सादी । २ झूठा कलंक लगानेवाला । ३ उग्र । प्रचंड ।

तूबा–संज्ञा पुं० (अ०) स्वर्गका एक वृक्ष जिसके फल परम स्वादिष्ट माने जाते हैं ।

तूमार–संज्ञा पुं० (अ०) बातका व्यर्थ विस्तार । बातका बतंगड़ ।

तूर–संज्ञा पुं (अ०) शाम देशका एक पर्वत । (कहते हैं कि इसी पर्वतपर हजरत मूसाको ईश्वरीय चमत्कार दिखाई पड़ा था ।) सेना ।

तूरा–संज्ञा पुं० दे० "तोरा । "

तूला–संज्ञा पुं० (अ०) लम्बाई । विस्तार । मुहा०–**तूल खींचना या पकड़ना**=बहुत बढ़ जाना ।

विस्तारका आधिक्य हो जाना। यौ०-तूल कलाम=१ लम्बी-चौड़ी बातें । २ कहा-सुनी । झगड़ा । तूल-तवील=लम्बा चौड़ा । विस्तृत ।

तूलानी-वि० (अ०) लम्बा ।

तूले-बलद-संज्ञा पु० (अ०) भूगोल-में देशान्तर ।

तूस-संज्ञा पु० (अ०) एक प्रकारका बढ़िया ऊनी कपड़ा ।

तूसी-वि० (अ० तूस) भूरे रंगका (कपड़ा) ।

तेग़-संज्ञा स्त्री० (फा० तेग़ः) तलवार । खड्ग।

तेग़ा-संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारकी छोटी चौड़ी तलवार । २ मेहरबान । ३ कुश्तीका एक पेंच ।

तेज़-वि० (फा०) १ तीक्ष्ण या पैनी धारवाला । २ जल्दी चलनेवाला। ३ चटपट काम करनेवाला। फुरतीला । ४ तीक्ष्ण। झालदार । ५ महँगा । गराँ । ६ उग्र । प्रचंड। ७ चटपट अधिक प्रभाव डालनेवाला । तीव्र बुद्धिवाला ।

तेज़-दस्त-वि० (फा०) (संज्ञा तेजदस्ती) जल्दी काम करनेवाला। फुरतीला ।

तेज़-मिज़ाज-वि० (फा०) (संज्ञा तेज-मिजाजी) १ उग्र स्वभाववाला । २ क्रोधी ।

तेज़-रफ़्तार-वि० (फा०) (संज्ञा तेज-रफ़्तारी) तेज चलनेवाला । शीघ्रगामी ।

तेज़ी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तेज होनेका भाव । २ तीव्रता । प्रबलता । ३ उग्रता । प्रचंडता । ४ शीघ्रता । जल्दी । ५ महँगी । मंदीका उलटा ।

तेज़ाब-संज्ञा पुं० (फा०) औषधके कामके लिये किसी क्षार पदार्थका तरल रूपमें तैयार किया हुआ अम्ल-सार जो द्रावक होता है ।

तेशा-संज्ञा पुं० (फा० तेशः) बसूला नामक औज़ार ।

तै-संज्ञा पुं० (अ०) १ निबटारा । फैसला । यौ०-तै तमाम=अन्त। समाप्ति । वि० १ पूरा करना । पूर्ति । २ जिसका निबटारा या फैसला हो चुका हो । ३ जो पूरा हो चुका हो । ४ जो पार किया जा चुका हो ।

तैनात-वि० (अ० तअय्युनात) किसी कामपर लगाया या नियत किया हुआ । मुकर्रर । नियत । नियुक्त।

तैनाती-संज्ञा स्त्री० (अ०तअय्युनात) १ मुकर्ररी । नियुक्ति । २ किसी विशिष्ट कार्यके लिये रखे हुए पहरेदार सैनिक ।

तैयार-वि० (अ०) १ जो काममें आनेके लिये बिलकुल उपयुक्त हो गया हो । दुरुस्त । ठीक । लैस । मुहा०-हाथ तैयार होना=कला आदिमें हाथका बहुत अभ्यस्त और कुशल होना । २ उद्यत। तत्पर । मुस्तैद । ३ प्रस्तुत । उपस्थित । मौजूद । ४ हृष्ट-पुष्ट । मोटा-ताजा।

तैयारा-संज्ञा पुं० (अ० तैयारः) १ गुब्बारा। २ हवाई जहाज।

तैयारी-संज्ञा स्त्री० (अ० तैयार) १ तैयार होनेकी क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २ तत्परता। मुस्तैदी। ३ शरीरकी पुष्टता। मोटाई। ४ प्रबन्ध आदिके सम्बन्धकी धूम-धाम। ५ सजावट।

तैर-संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० तयूर) पक्षी। चिड़िया।

तैश-संज्ञा पुं० (अ०) आवेश। क्रोध।

तोता-संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध पक्षी। कीर। सूआ।

तोदरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका कटीला पौधा जिसके बीज दवाके काममें आते हैं।

तोदा-संज्ञा पुं० दे० "तूदा।"

तोप-संज्ञा स्त्री० (तु०) एक एक प्रकारका बहुत बड़ा अस्त्र जो प्रायः दो या चार पहियोंकी गाड़ी-पर रखा रहता है और जिसमें गोले रखकर युद्धके समय शत्रुओं-पर चलाये जाते हैं। मुहा०-**तोप कीलना**=तोपकी नालीमें लकड़ीका कुंदा खूब कसकर ठोंक देना जिसमें उसमेंसे गोला न चलाया जा सके। **तोपकी सलामी उतारना**= किसी प्रसिद्ध पुरुषके आगमनपर अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटनाके समय बिना गोलेके बारूद भरकर शब्द करना।

तोपखाना-संज्ञा पुं० (तु०+फा०) १ वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुल सामान रहता हो। २ युद्धके लिये सुसज्जित चारसे आठ तोपों तकका समूह।

तोपची-संज्ञा पुं० (तु० तोप+ची प्रत्य०) तोप चलानेवाला। गोलंदाज।

तोबा-संज्ञा स्त्री० (फा० तौबः) किसी अनुचित कार्यको भविष्यमें न करनेकी शपथपूर्वक दृढ़ प्रतिज्ञा। मुहा०-**तोबा तिल्ला करना** या **मचाना**=रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा करना। **तोबा बोलना**=पूर्णरूपसे परास्त करना।

तोरा-संज्ञा पुं० (तु० तोरः) १ वह थाल जिसमें तरह तरहके गोश्तों-की थालियाँ रखकर विवाहके अवसरपर भेंट रूपमें देते हैं। २ अभिमान। घमंड। ३ वे सामा-जिक नियम आदि जो चंगेज़-खाँने प्रचलित किये थे।

तोश-संज्ञा पुं० (तु०) १ छाती। सीना। २ शारीरिक बल। यौ०-**तन व तोश**=शरीरका बड़ा आकार और बल।

तोशक-संज्ञा स्त्री० (फा०) खोलमें रुई आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। हल्का गद्दा।

तोश-दान-संज्ञा पु० (फा०) वह थैला जिसमें यात्राके लिये भोजन आदि रखते हैं।

तोशा-संज्ञा पु० (फा० तोशः) १ वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्गके

लिये अपने साथ रख लेता है। पाथेय। कलेवा। २ साधारण खाने-पीनेकी चीज़।

तोशा-खाना--संज्ञा पुं० (तु०+फा०) वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और अमीरोंके पहननेके बढ़िया कपड़े, गहने आदि रहते हैं।

तोहफ़गी--संज्ञा स्त्री० (अ० तुहफ़ः-से फा०) उत्तमता। अच्छापन।

तोहफ़ा--संज्ञा पुं०(अ०तुहफः)(बहु० तहायफ़) सौगात। उपहार। वि० अच्छा। उत्तम। बढ़िया।

तोहमत--संज्ञा स्त्री० (अ० तुहमत) वृथा लगाया हुआ दोष। झूठा कलंक।

तोहमती--वि० (अ० तुहमत) दूसरों-पर तोहमत या कलंक लगानेवाला।

तौ--संज्ञा पुं० (फा०) परत। तह।

तौअन् व करहन्--क्रि० वि०(अ०) १ आज्ञापालन-पूर्वक। २ बहुत ही कठिनतासे। विवश होकर।

तौअम--संज्ञा पुं० (अ०) १ एक ही गर्भसे एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो बच्चे। यमज। जुड़वाँ। २ मिथुन राशि।

तौक़--संज्ञा पुं० (अ०) १ हँसुलीके आकारका गलेमें पहननेका एक गहना। २ इसी आकारकी बहुत भारी वृत्ताकार पटरी या मँडरा जिसे अपराधी या पागलके गलेमें पहना देते हैं। ३ इसी आकारका वह प्राकृतिक चिह्न जो पक्षियों आदिके गलेमें होता है। हँसुली। ४ पट्टा। चपरास। ५ कोई गोल घेरा या पदार्थ।

तौक़ीर--संज्ञा स्त्री० (अ०) आदर। सम्मान। प्रतिष्ठा।

तौज़ीअ--संज्ञा स्त्री० (अ०) हिसाब-का चिट्ठा। खर्रा।

तौफ़ीक़--संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ईश्वरकी कृपा। २ श्रद्धा। भक्ति। ३ सामर्थ्य। शक्ति।

तौफ़ीर--संज्ञा स्त्री० (अ०) मुनाफ़ा।

तौबा--संज्ञा स्त्री० दे० "तोबा।"

तौर--संज्ञा पुं० (अ०) १ चाल-ढाल। चाल-चलन। यौ०--**तौर तरीक़ा** =चाल-चलन। २ हालत। दशा। अवस्था। ३ तरीक़ा। तर्ज़। ढंग। ४ प्रकार। भाँति। तरह।

मुहा०--**तौर-बे-तौर होना**=१ बुरे लक्षण उत्पन्न होना। २ अवस्था खराब होना।

तौर तरीक़ा--संज्ञा पुं० (अ०) रंग-ढंग। चाल-ढाल।

तौरात--संज्ञा पुं० दे० "तौरेत।"

तौरेत--संज्ञा पुं० (इब्रा०) यहूदियोंका प्रधान धर्म-ग्रन्थ जो हज़रत मूसापर प्रकट हुआ था।

तौसन--संज्ञा पुं० (फा०) घोड़ा।

तौसीअ--संज्ञा स्त्री० (अ०) वसीअ होना या करना। प्रशस्तता। कुशादगी।

तौसीफ़--संज्ञा स्त्री० (अ०) वस्फ बतलाना। व्याख्या करना।

तौहीद--संज्ञा स्त्री० (अ०) १ यह मानना कि एक ही ईश्वर है। २ एकेश्वरवाद।

तौहीन--संज्ञा स्त्री० (अ०) अप्रतिष्ठा। अपमान। बेइज़्ज़ती।

तौहीनी--संज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन।"

(द)

दंग--वि० (फ़ा०) विस्मित। चकित। आश्चर्यान्वित। स्तब्ध।

दंगल--संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ पहलवानोंकी वह कुश्ती जो जोड़ बदकर हो और जिसमें जीतनेवालेको इनाम आदि मिले। २ अखाड़ा। मल्ल-युद्धका स्थान। ३ जमावड़ा। समूह। जमात। दल। बहुत मोटा गद्दा या तोशक।

दंगा--संज्ञा पुं० (फ़ा० दंगल) १ झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव। २ गुल-गपाड़ा। हुल्लड़। शोर-गुल।

दक़ियानूस--संज्ञा पुं० (अ०) फारस और अरबका एक पुराना बादशाह जो बहुत बड़ा अत्याचारी था। वि० १ पुराना। प्राचीन। २ बहुत वृद्ध। बुड्ढा।

दक़ियानूसी--वि० (अ०) अत्यन्त प्राचीन। बहुत पुराना।

दक़ीक़--वि० (अ०) १ बारीक। महीन। २ नाज़ुक। कोमल। ३ मुशकिल। कठिन।

दक़ीक़ा-संज्ञा पुं० (अ० दक़ीक़ः)१ बारीकी। सूक्ष्मता। २ कठिनता। विपत्ति। कष्ट। मुहा०--**दक़ीक़ा बाकी न रखना**=कोई परिश्रम या प्रयत्न बाकी न रखना। सब कुछ कर गुजरना। ३ क्षण। पल।

दक़ीक़ा-रस--वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा दक़ीक़ा-रसी) बारीक बातें देखनेवाला। सूक्ष्मदर्शी।

दख़ल--संज्ञा पुं० (अ० दख़्ल) १ अधिकार। क़ब्ज़ा। २ हस्तक्षेप। हाथ डालना। ३ पहुँच। प्रवेश।

दख़ल-नामा--संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) वह पत्र जिसमें यह लिखा हो कि अमुक व्यक्तिको अमुक ज़मीन आदिका दख़ल दिया गया।

दख़ल-याबी--संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) दख़ल या अधिकार पाना।

दख़ील--वि० (अ०) जिसका दख़ल या कब्ज़ा हो। अधिकार रखनेवाला।

दख़ीलकार--संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) वह असामी जिसने किसी ज़मींदारके खेत या ज़मीनपर कमसे कम बारह वर्ष तक अपना दख़ल रक्खा हो।

दख़ीलकारी--संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) १ दख़ीलकारका भाव। २ ज़मींदारका वह खेत या ज़मीन जिसपर किसी असामीका कमसे कम बारह वर्ष तक दख़ल रहा हो।

दख़ूल--संज्ञा पुं० (अ०) दाख़िल होना। अन्दर जाना। प्रवेश।

दख़्ल--संज्ञा पुं० दे० "दख़ल।"

दग़दग़ा--संज्ञा पुं (अ० दग़दग़ः) १ डर। भय। २ संदेह। ३ एक प्रकारकी कंडील।

दग़ल--संज्ञा पुं० (अ०) १ छल। कपट। फरेब। २ हीला।

बहाना। यौ०**दग़ल-फ़सल**=छल कपट। वि०—दग़ाबाज़। कपटी।

दग़ा—संज्ञा स्त्री० (अ०) छल-कपट। धोखा।

दग़ादार—वि० दे० "दग़ाबाज़।"

दग़ाबाज़—वि० (फ़ा०) धोखा देनेवाला। छली। कपटी।

दग़ाबाज़ी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०)छल।

दज्जाल—संज्ञा पुं० (अ०) १ मुसलमानोंके अनुसार एक काना। बहुत बड़ा काफ़िर जो दजला नदीसे उत्पन्न होकर सारे संसारको अपने वशमें कर लेगा और अन्तमें मारा जायगा। २ काना। एकाक्ष। ३ दुष्ट। पाजी।

ददा—संज्ञा स्त्री० (तु० ददह या ददक) बच्चोंका पालन-पोषण करनेवाली नौकरानी। दाई।

दन्दाँ—संज्ञा पुं० (फ़ा० मि० सं० दन्त) दाँत। दन्त।

दन्दाँ-शिकन—वि० (फ़ा०) १ दाँत तोड़नेवाला। २ बहुत उग्र या कड़ा। जैसे दन्दाँ-शिकन जवाब।

दन्दाना—संज्ञा पुं० (फ़ा० दन्दानः वि० दन्दानादार) दाँतके आकारकी उभरी हुई वस्तु। दाँता। जैसे आरे या कंघीका दन्दाना।

दफ़—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) डफ नामका बाजा। संज्ञा पुं० १ ज़हर। विष। २ जोश। आवेग। ३ क्रोध। गुस्सा। ४ तेज़ी। उग्रता।

दफ़अतन—क्रि० वि० (अ०) अचानक। सहसा। एकाएक।

दफ़तर—संज्ञा पुं० दे० "दफ़्तर।"

दफ़्ती—संज्ञा स्त्री० (अ० दफ़्तीन) काग़ज़के कई तख़्तोंको एकमें सटाकर बनाया हुआ गत्ता। कुट। वसली।

दफ़न—संज्ञा पुं० (अ०) किसी चीज़को विशेषतः मुर्देको ज़मीनमें गाड़नेकी क्रिया।

दफ़ा—संज्ञा स्त्री० (अ० दफ़अऽ) १ बार। बेर। किसी कानूनी किताबका वह एक अंश जिसमें किसी एक अपराधके सम्बन्धमें व्यवस्था हो। धारा। मुहा०—**दफ़ा लगाना**=अभियुक्तपर किसी दफ़ाके नियमोंको घटाना। संज्ञा-पुं० (अ० दफ़ऽ) दूर करना। हटाना। यौ०—**रफ़ा दफ़ा करना**=विवाद आदि मिटाना।

दफ़ातर—संज्ञा पुं० (अ०) "दफ़्तर" का बहु०।

दफ़ादार—संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) फ़ौजका वह कर्मचारी जिसकी अधीनतामें कुछ सिपाही हों।

दफ़ान—संज्ञा पुं० (अ० दफ़ऽ) दूर होना। अलग होना। हटना।

दफ़ायन—संज्ञा पुं०(अ०) "दफ़ीना" का बहु०।

दफ़ाली—संज्ञा पुं० (फ़ा०) डफ़ला, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।

दफ़ीना—संज्ञा पुं० (अ० दफ़ीनः) (बहु० दफ़ायन) गड़ा हुआ धन या खजाना।

दफ़ैया—संज्ञा पुं० (अ० दफ़ैयऽ) १ दफ़ा या दूर करनेकी क्रिया।

२ दफा या दूर करनेकी युक्ति। ३ दफ़ा या दूर करनेवाली वस्तु।

दफ़्तर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ वह स्थान जहाँ किसी कारखाने आदि के संबंधकी कुछ लिखा पढ़ी और लेन-देन आदि हो। आफिस। कार्यालय। २ लम्बी चौड़ी चिट्ठी। ३ सविस्तर वृत्तांत। चिट्ठा।

दफ़्तरी–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ वह कर्मचारी जो दफ़्तरके कागज़ आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर लकीरें खींचता हो। २ किताबोंकी जिल्द बाँधनेवाला। जिल्दसाज़। जिल्दबंद।

दफ़्ती–संज्ञा स्त्री० दे० "दफ़्ती।"

दफ़्तीन–संज्ञा स्त्री० (अ०) दफ़्ती।

दबदबा–संज्ञा पुं० (अ० दबदबः) रोब-दाब।

दबिस्ताँ–संज्ञा पुं० (फ़ा०) पाठशाला। मकतब।

दबीज़–वि० (फ़ा०) जिसका दल मोटा हो। गाढ़ा। संगीन।

दबीर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) लिखनेवाला। लेखक।

दबूर–संज्ञा स्त्री० (अ०) पश्चिमकी हवा।

दम–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ साँस। श्वास। मुहा०–**दम अटकना** या **उखड़ना**=साँस रुकना, विशेषतः मरनेके समय साँस रुकना। **दम खींचना**=१ चुप रह जाना। २ साँस ऊपर चढ़ना। **दम घोंटकर मारना**=१ गला दबाकर मारना। २ बहुत कष्ट देना। **दम तोड़ना**=अंतिम साँस लेना। **दम फूलना**=१ अधिक परिश्रमके कारण साँसका जल्दी जल्दी चलना। हाँफना। २ दमेके रोगका दौरा होना। **दम भरना**=१ किसीके प्रेम अथवा मित्रता आदिका पक्का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना। २ परिश्रमके कारण थक जाना। **दम मारना**=१ विश्राम करना। सुस्ताना। २ बोलना। कुछ कहना। चूँ करना। **दम लेना**=विश्राम करना। सुस्ताना। **दम साधना**=१ श्वासकी गतिको रोकना। २ चुप होना। मौन रहना। २ नशे आदिके लिये साँसके साथ धूआँ खींचनेकी क्रिया। मुहा०–**दम मारना या लगाना**=गाँजा आदिको चिलमपर रखकर उसका धूआँ खींचना। ३ साँस खींचकर ज़ोरसे बाहर फेंकने या फूँकनेकी क्रिया। ४ उतना समय जितना एक बार साँस लेनेमें लगता है। लहमा। पल। मुहा०–**दमके दम**=क्षणभर। थोड़ी देर। **दमपर दम**=बहुत थोड़ी थोड़ी देरपर। ५ प्राण। जान। जी। मुहा०–**दम खुश्क होना**=दे० "दम सूखना।" **दम नाकमें या नाकमें दम आना**=बहुत तंग या परेशान होना। **दम निकलना**=मृत्यु होना। मरना। **दम सूखना**=बहुत डरके कारण साँसतक न लेना। प्राण सूखना।

६ वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाये रखता और काम देता है। जीवनी-शक्ति। ७ व्यक्तित्व। मुहा०–(किसीका) **दम गनीमत होना**=(किसीके) जीवित रहनेके कारण कुछ न कुछ अच्छी बातोंका होता रहना। ८ खाद्य पदार्थको बरतनमें रखकर और उसका मुँह बन्द करके आगपर पकानेकी क्रिया। ९ धोखा। छल। फ़रेब। यौ०–**दम-झाँसा**=छल-कपट। **दम-दिलासा** या **दम-पट्टी**=वह बात जो केवल फुसलानेके लिये कही जाय। झूठी आशा। मुहा०–**दम देना**=बहकाना। धोखा देना। १० तलवार या छुरी आदिकी धार।

दम-क़दम–संज्ञा पुं० (फा०) जीवन और अस्तित्व।

दम-खम–संज्ञा पुं० (फा०) १ दृढ़ता। २ जीवनी शक्ति। प्राण। ३ तलवारकी धार और उसका झुकाव।

दमदमा–संज्ञा पुं० (फा० दमदमः) वह किले-बंदी जो लड़ाईके समय थैलोंमें बालू भरकर की जाती है। मोरचा। धुस।

दमदार–वि० (फा०) १ जिसमें जीवनी शक्ति यथेष्ट हो। २ दृढ़। मजबूत। ३ जिसमें दम या श्वास अधिक समय तक रुके। ४ जिसकी धार तेज़ हो। चोखा।

दम-दिलासा–संज्ञा पुं० (फा० + हि०) टालनेके लिये की जानेवाली खाली बातें।

दम-पुख़्त–वि० (फा०) जो बरतनका मुँह बन्द करके आगपर पकाया गया हो।

दम-ब-खुद–वि०(फा०)जो आश्चर्य, दुःख आदिके कारण बोल न सके। बिलकुल चुप। सन्न।

दम-ब-दम–क्रि० वि० (फा०) वि० बहुत थोड़ी थोड़ी देरपर। घड़ी घड़ी।

दमबाज़–वि० (फा०) (संज्ञा दमबाज़ी) दमदेनेवाला। फुसलानेवाला।

दमवी–वि० (फा०) दम या खूनसे सम्बन्ध रखनेवाला। खूनी।

दमसाज़–वि० (फा०) (संज्ञा दमसाज़ी) घनिष्ठ मित्र। दिली दोस्त।

दमा–संज्ञा पुं० (फा० दमः) एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस लेनेमें बहुत कष्ट होता है; खाँसी आती है और कफ बड़ी कठिनतासे निकलता है। साँस। श्वास।

दमामा–संज्ञा पुं० (फा० दमामः) नगाड़ा। डंका।

दमी–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका छोटा हुक्का।

दमे-नक़द–क्रि० वि० (फा०) बिना किसीको साथ लिये। अकेले।

दयानत–संज्ञा स्त्री० (अ० दियानत) सत्यनिष्ठा। ईमान।

दयानत-दार–संज्ञा पुं०(अ०+फा०) ईमानदार। सच्चा।

दयानत-दारी—संज्ञा स्त्री० (अ०+ फा०) सत्यनिष्ठा। ईमानदारी।
दयार—संज्ञा पुं० (अ० दियार) प्रवेश।
दर—संज्ञा पुं० (फा०) दरवाजा। द्वार। मुहा०—**दर दर या दर बदर मारा फिरना**=दुर्दशा-ग्रस्त होकर घूमना। अव्य० (फा०) में। अन्दर।
दर-अन्दाज़—संज्ञा पुं० (फा०) दो आदमियोंमें लड़ाई कराना।
दर-अन्दाज़ी—संज्ञा स्त्री० (फा०) दो आदमियोंमें लड़ाई कराना।
दर-आमद—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अन्दर आनेकी क्रिया। आगमन। २ विदेशसे मालका आना। आयात।
दरकार—वि० (फा०) आवश्यक। अपेक्षित। संज्ञा स्त्री० आवश्यकता।
दर-किनार—क्रि० वि० (फा०) एक तरफ़। दूर। अलग। जैसे—देना-दिलाना तो दर-किनार, उन्होंने सीधी तरहसे बात भी नहीं की।
दरख़शाँ—वि० (फा०) चमकता हुआ। चमकीला।
दरख़ास्त—संज्ञा स्त्री० (फा० दरख़्वास्त) १ किसी बातके लिये प्रार्थना। निवेदन। २ प्रार्थना-पत्र। निवेदन-पत्र।
दरख़्त—संज्ञा पुं० (फा०) वृक्ष। पेड़।
दरख़्वास्त—संज्ञा स्त्री० दे० "दरख़ास्त।"
दरगाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चौखट। देहरी। २ दरबार। कचहरी। ३ किसी सिद्ध पुरुषका समाधि-स्थान। मक़बरा।
दर-गुज़र—वि० (फा०) १ अलग। वंचित। मुआफ़। क्षमा-प्राप्त।
दर-गोर—वि० (फा०) क़ब्रमें। क़ब्रमें जाय (अव्य०—जहन्नुममें जाय)। दूर हो।
दरज—वि० दे० "दर्ज।"
दरज़—संज्ञा स्त्री० दे० "दर्ज़।"
दरजा—संज्ञा पुं० दे० "दर्जा।"
दरजात—संज्ञा पुं० दे० "दर्जात।"
दरद—संज्ञा पुं० दे० "दर्द।"
दर-दामन—संज्ञा पुं० (फा०) १ दामन। २ सदरीपर बनाये जाने-वाले बेल-बूटे।
दर-परदा—वि० (फा०) १ परदेमें। २ छिपकर। गुप्त रूपसे।
दर-पेश—क्रि० वि० (फा०) आगे। सामने।
दर-पै—क्रि० वि० (फा०) किसीके पीछे। किसीकी तलाशमें। मुहा०—**किसीके दर-पै होना**=किसीके पीछे पड़ना। किसीको तंग कर-नेकी घातमें रहना।
दर-बन्द—संज्ञा पुं० (फा०) १ क़िला। २ दरवाजा। ३ पुल। सेतु।
दर-बहिश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी मिठाई।
दरबा—संज्ञा पुं० (फा० दर) कबूतरों और मुरगोंके रहनेका खानेदार सन्दूक। काबुक।
दरबान—संज्ञा पुं० (फा०) द्वारपाल।

दरबानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) दरबानका काम या पद।

दर-बाब–अव्य० (फा०) बारेमें। विषयमें।

दरबार–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहिबोंके साथ बैठते हैं। २ राजा-सभा। मुहा०-**दरबार खुलना**=दरबारमें जानेकी आज्ञा मिलना। **दरबार बन्द होना**=दरबारमें जानेकी रोक होना। ३ महाराज। राजा। (रजवाड़ोंमें)। ४ दरवाजा। द्वार।

दरबार-आम–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) बादशाहों आदिका वह दरबार जिसमें साधारणतः सब लोग सम्मिलित होते हों।

दरबार-खास–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) बादशाहों आदिका वह दरबार जिसमें केवल विशिष्ट लोग ही रहते हैं।

दरबार-दारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) किसीके यहाँ बार बार जाकर बैठना और खुशामद करना।

दरबारी–संज्ञा स्त्री (फा०) दरबारमें बैठनेवाला आदमी।

दर-माँदगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ लाचारी। विवशता। २ विपत्ति।

दर-माँदा–वि० (फा० दर-मान्दह) १ थका हुआ। शिथिल। २ जिसके पास कोई साधन न हो।

दरमान–संज्ञा पुं० (फा०) १ चिकित्सा। इलाज। औषध।

दर-माहा–संज्ञा पुं० (फा०) मासिक वेतन। तनख्वाह।

दरमियान–संज्ञा पुं० (फा०) मध्य।

दरमियानी–वि० (फा०) बीचका। संज्ञा पुं० दो आदमियोंके बीचके झगड़ेका निबटारा करनेवाला।

दरवाज़ा–संज्ञा पुं० (फा० दरवाजः) १ द्वार। मुहाना। २ किवाड़।

दरवेज़ा–संज्ञा पुं० (फा० दरवेजः) भिक्षावृत्ति।

दरवेश–संज्ञा पुं० (फा०) फ़क़ीर।

दरवेशाना–वि (फा० दरवेशानः) फ़क़ीरोंका-सा।

दरवेशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) फ़क़ीरी।

दर-सूरत–क्रि० वि० (फा०+अ०) सूरतमें। अवस्थामें। दशामें।

दर-हक़ीक़त–क्रि० वि० (फा०+अ०) वास्तवमें। सचमुच।

दरहम–वि० (फा०) तितर-बितर। अव्यवस्थित। यौ०-**दरहम-बरहम**=१ उलट-पुलट। तितर-बितर। विनष्ट। २ क्रुद्ध। नाराज।

दरा–संज्ञा पुं० दे० "दर्रा।"

दराज़–वि० (फा०) लंबा। विस्तृत।

दराज़-दस्त–वि० (फा०) (दराज-दस्ती) अत्याचारी। जालिम।

दराज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) दराज़का भाव। लम्बाई।

दरिन्दा–संज्ञा पुं० (फा० दरिन्दः) फाड़ खानेवाला जानवर।

दरिया–संज्ञा पुं० (फा०) १ नदी। २ समुद्र। सिंधु।

दरियाई–वि० (फा०) १ नदी-संबंधी। २ समुद्र-सम्बन्धी।

समुद्री । संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकारका रेशमी कपड़ा । २ पतंग या गुड्डीको दूर ले जाकर हवामें छोड़ना ।

दरियाई घोड़ा–संज्ञा पु० (फा०+हिं०) गैंडेकी तरहका एक जानवर जो अफ्रिकामें नदियोंके किनारे रहता है ।

दरियाई नारियल-संज्ञा पुं० (फा० +हिं०) एक प्रकारका बड़ा नारियल जिसके खोपड़ेका वह पात्र बनता है जिसे संन्यासी या फ़क़ीर अपने पास रखते हैं ।

दरियाए शोर-संज्ञा पुं० (फा०) समुद्र ।

दरिया-दिल–वि० (फा०) (संज्ञा दरिया-दिली) १ उदार । २ दाता ।

दरियाफ़्त–वि० (फा०)जिसका पता लगा हो । ज्ञात । मालूम ।

दरिया-बरामद–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह ज़मीन जो नदीके पीछे हट जानेसे निकल आई हो । गंग-बरार ।

दरिया-बुर्द–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह ज़मीन जो नदीके बढ़नेके कारण कट या बह गई हो । गंग-शिकस्त ।

दरी-खाना–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह घर जिसमें बहुतसे द्वार हों । बारहदरी । २ बादशाही दरबार ।

दरीचा–संज्ञा पुं० (फा० दरीचः) खिड़की । झरोखा । २ खिड़की-के पास बैठनेकी जगह ।

दरीदा–वि० (फा० दरीदः) फटा हुआ । यौ०-**दरीदा-दहन**=निः-संकोच होकर बुरी बातें कहने-वाला । मुँह फट ।

दरीबा–संज्ञा पुं० (फा० दर ?) पान-का बाज़ार या सट्टी ।

दरूद–संज्ञा स्त्री० दे० "दुरूद ।"

दरेग़–संज्ञा पुं० (फा०) १ दुःख । रंज । २ पश्चात्ताप । ३ कमी ।

दरेज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी छपी मलमल या छींट ।

दरोग़–संज्ञा पुं० (फा०) झूठ ।

दरोग़-गो-वि० (फा०) (संज्ञा दरोग-गोई) झूठ बोलनेवाला ।

दरोग़-हलफ़ी–संज्ञा पुं० (फा०) हलफ़ लेकर या क़सम खाकर भी झूठ बोलना । (विशेषतः न्यायालय-में ।)

दरो-बस्त–वि० (फा० दर व बस्त) कुल । पूरा । सब ।

दर्क–संज्ञा पुं० (अ०) १ ज्ञान । २ समझ । ३ दख़ल । हस्तक्षेप ।

दर्ज–वि० (फा०) काग़ज़पर लिखा हुआ । लिखित ।

दर्ज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) दरार । शिगाफ़ । झरी ।

दर्जा–संज्ञा-पुं० (अ० दर्जः) १ ऊँचाई नीचाईके क्रमके विचारसे निश्चित स्थान । श्रेणी । कोटि । वर्ग । २ पढ़ाईके क्रममें ऊँचा नीचा स्थान । ३ पद । ओहदा । ४ किसी वस्तुका वह विभाग जो ऊपर नीचेके क्रमसे हो । खंड । क्रि० वि० गुणित । गुना ।

दर्जात–संज्ञा पुं० (अ०) "दर्जा" का बहु० ।

दर्जावार--क्रि० वि० (अ०+फा०) दर्जेके मुताबिक। सिलसिलेवार।

दर्ज़ी--संज्ञा पुं० (फा०) १ वह पुरुष जो कपड़े सीनेका व्यवसाय करे। २ कपड़ा सीनेवाली जातिका पुरुष।

दर्द--संज्ञा पुं० १ (फा०) पीड़ा। व्यथा। तकलीफ़। २ दया। करुणा।

दर्द-अंगेज़--वि० दे० "दर्दनाक"

दर्द-आमेज़--वि० दे० "दर्दनाक।"

दर्दनाक-वि० (फा०) जिसे देख या सुनकर मनमें दर्द या करुणा उत्पन्न हो। करुणाजनक।

दर्द-मन्द--वि० (फा०) १ दुःखी। पीड़ित। २ गमख़्वारी रखनेवाला। दर्द-शरीक। ३ दयालु। कोमल-हृदय।

दर्द-मन्दी--संज्ञा स्त्री० (फा०) दूसरेकी विपत्तिमें होनेवाली सहानुभूति।

दर्द-शरीक--वि० (फा०) विपत्तिके समय साथ देने और सहानुभूति दिखानेवाला। हम-दर्द।

दर्दे-ज़ह--संज्ञा पुं० (फा०) प्रसवकी पीड़ा।

दर्दे-सर--संज्ञा पुं० (फा०) १ सिरकी पीड़ा। २ कठिनाई या दिक़्क़तका काम।

दर्दे-सरी--संज्ञा० स्त्री० (फा०) कठिनता। दिक़्क़त। ज़हमत।

दर्रा-संज्ञा० पुं० (फा० दर:) पहाड़ोंके बीचका सँकरा मार्ग। घाटी।

दर्स--संज्ञा पुं० (अ०) (नि० दर्सी) १ पढ़ना। अध्ययन। यौ०--दर्स व तदरीस=पढ़ना-पढ़ाना। २ वह जो कुछ पढ़ा जाय। पाठ। ३ उपदेश। नसीहत।

दलायल-संज्ञा स्त्री० (अ०) "दलील" का बहु०।

दलाल--संज्ञा पुं० (अ० दल्लाल) १ वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने बेचनेमें सहायता दे। मध्यस्थ। २ कुटना।

दलालत--संज्ञा स्त्री० (अ०) १ रास्ता बतलाना। २ चिह्न। पता। ३ दलील। तर्क। ४ रोब-दाब। शोभा। शान।

दलाली-संज्ञा स्त्री० (अ० दल्लाल) एक दलालका काम। २ वह द्रव्य जो दलालको मिलता है।

दलील--संज्ञा स्त्री० (अ०) १ तर्क। युक्ति। २ बहस। वाद-विवाद।

दलक़--संज्ञा स्त्री० (अ०) फ़क़ीरोंके पहननेकी गुदड़ी।

दलक़-पोश--वि० (अ० + फा०) (संज्ञा दलक़-पोशी) दलक़ या गुदड़ी पहननेवाला फ़क़ीर।

दल्लाल--संज्ञा पुं० दे० "दलाल।"

दल्लाला--संज्ञा स्त्री० (अ० दल्लाल:) १ दलाल स्त्री। २ कुटनी। दूती।

दल्व--संज्ञा पुं० (अ०) ज्योतिषमें कुम्भ राशि।

दवा--संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह वस्तु जिससे कोई रोग या व्यथा दूर हो। औषध। २ रोग दूर करनेका उपाय उपचार। चिकित्सा। ३ दूर करनेकी युक्ति। मिटानेका उपाय। ४ दुरुस्त करनेकी तदबीर।

दवाखाना—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ वह जगह जहाँ दवा मिलती हो। २ औषधालय।

दवात—संज्ञा स्त्री० (अ०) लिखने की स्याही रखनेका बरतन। मसि-पात्र।

दवाम—संज्ञा पुं० (अ०) सदाका भाव। हमेशगी। क्रि० वि० हमेशा। सदा। नित्य।

दवामी—वि० (अ०) जो चिरकाल तकके लिये हो। स्थायी।

दवामी बन्दोबस्त—संज्ञा पुं०(अ० +फा०) जमीनका वह बन्दोबस्त जिसमें सरकारी माल-गुजारी एक ही बार सदाके लिये मुकर्रर हो।

दवायर—संज्ञा पुं० (अ०) "दायरा" का बहु०।

दश्त—संज्ञा पुं० (फा०) (वि० दश्ती) जंगल।

दश्त-नवर्दी—संज्ञा स्त्री० (फा०) जंगलों और उजाड़ जगहोंमें मारा मारा फिरना।

दस्त—संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० हस्त) १ पतला पाखाना। विरेचन। २ हाथ।

दस्त-आमेज़—वि० (फा०) हाथों-पर सधाया हुआ। पालतू (पशु-पक्षी आदि)।

दस्तक—संज्ञा स्त्री०(फा०) १ हाथसे खट-खट शब्द करने या खट-खटानेकी क्रिया। २ बुलानेके लिये दरवाजेकी कुंडी खट-खटानेकी क्रिया। ३ माल-गुजारी वसूल करनेके लिये गिरफ़्तारी या वसूलीका परवाना। ४ माल आदि ले जानेका परवाना। ५ कर। महसूल।

दस्तकार—संज्ञा पुं० (फा०) (संज्ञा दस्तकारी) हाथसे कारीगरीका काम करनेवाला आदमी।

दस्तकारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) हाथकी कारीगरी। शिल्प।

दस्तकी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वह छोटी बही या कापी जो याद-दाश्त लिखनेके लिए हर दम पास रहे। २ वह दस्ताना जो शिकारी पक्षी पालनेवाले हाथमें पहनते हैं।

दस्तखत—संज्ञा पुं० (फा०) अपने हाथका लिखा हुआ अपना नाम।

दस्तखती—वि० (फा०) १ हाथका लिखा हुआ। २ हस्ताक्षर किया हुआ। हस्ताक्षरित।

दस्त-गर्दां—वि० (फा०) १ फेरी-वालेसे खरीदा हुआ (पदार्थ)। २ हाथउधार लिया हुआ (धन)।

दस्त-गाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ताक़त।२ माल-असबाब। सम्पत्ति।

दस्त-गीर—वि० (फा०) विपत्तिके समय हाथ पकड़नेवाला। रक्षक।

दस्त-गीरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) विपत्तिके समय हाथ पकड़ना। सहायता।

दस्त-दराज़—वि० (फा०) (संज्ञा दस्त-दराज़ी) १ ज़रा सी बातपर मार बैठनेवाला। २ उचक्का। हाथ-लपक।

दस्तनिगर—वि० (फा०) किसीके

हाथ या दानकी अपेक्षा रखने-वाला । गरीब । दरिद्र ।

दस्तन्दाज़–वि०(फा०दस्तअन्दाज़) हस्तक्षेप करनेवाला ।

दस्तन्दाज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) हस्तक्षेप । दखल देना ।

दस्त-पनाह–संज्ञा पुं० (फा०)कोयले आदि उठानेका चिमटा ।

दस्त-पाक–संज्ञा पुं० (फा०) हाथ पोंछनेका अँगोछा । रूमाल ।

दस्त-बख़ैर–(फा०+अ०) ईश्वर करे, यह हाथ पड़ना शुभ हो । हमारे इस हाथ रखनेका फल शुभ हो ।

दस्त-ब-दस्त–क्रि० वि० (फा०) हाथों-हाथ ।

दस्त-बन्द–संज्ञा पुं० (फा०) हाथमें पहननेका एक प्रकारका जड़ाऊ गहना ।

दस्त-बरदार–वि० (फा०) (संज्ञा दस्त-बरदारी) जो किसी वस्तु-परसे अपना हाथ या अधिकार उठा ले ।

दस्त-बरदारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ किसी कामसे हाथ खींच लेना । अलग होना । २ किसी वस्तु या सम्पत्तिपरसे अपना अधिकार या स्वत्व हटा लेना ।

दस्त-बुर्द–वि० (फा०) अनुचित रूपसे प्राप्त किया हुआ (धन आदि) ।

दस्त-बस्ता–क्रि० वि० (फा० दस्त-बस्तः) हाथ बाँधे हुए । हाथ जोड़कर ।

दस्त-बोस–वि० (फा०) हाथको चूमनेवाला । मुहा०–**दस्त-बोस होना**=किसी बड़ेके हाथ चूम-कर उसका अभिवादन करना ।

दस्त-बोसी–संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी बड़ेके हाथ चूमकर उसका अभिवादन करनेकी क्रिया ।

दस्तम-बख़ैर–दे० "दस्त बख़ैर ।"

दस्त-माल–संज्ञा पुं० (फा०)रूमाल ।

दस्त-याब–वि० (फा०) (संज्ञा दस्त-याबी) हस्तगत । प्राप्त ।

दस्तर-ख़ान–संज्ञा पुं० (फा०दस्तर-ख़्वान) वह चादर जिसपर खाना रखा जाता है । (मुसल०)

दस्तरस–संज्ञा स्त्री०(फा०)१पहुँच । रसाई । २ सामर्थ्य । शक्ति । ३ हाथसे की जानेवाली क्रिया ।

दस्तरसी–संज्ञा स्त्री० दे० "दस्तरस"

दस्ता–संज्ञा पुं० (फा० दस्तः) १ वह जो हाथमें आवे या रहे । २ किसी औज़ार आदिका वह हिस्सा जो हाथसे पकड़ा जाता है । मूठ । बेंट । ३ फूलोंका गुच्छा । गुल-दस्ता । ४ सिपाहियोंका छोटा दल । गारद । ५ किसी वस्तुका उतना गड्डा या पूला जितना हाथमें आ सके । ६ कागज़के चौबीस या पचीस तावोंकी गड्डी ।

दस्ताना–संज्ञा पुं० (फा० दस्तानः) पंजे और हथेलीमें पहननेका बुना हुआ कपड़ा । हाथका मोज़ा ।

दस्तार–संज्ञा स्त्री० (फा०) पगड़ी ।

दस्तार-बन्द–संज्ञा पुं० (फा०) वह

जो पगड़ी बनाकर तैयार करता हो। चीरा बन्द।

दस्तावर–वि॰ (फा॰ दस्त+आवुर=लानेवाला) जिसके खाने या पीनेसे दस्त आवें। विरेचक।

दस्तावेज़–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) वह कागज़ जिसमें कुछ आदमियोंके बीचके व्यवहारकी बात लिखी हो और जिसपर व्यवहार करनेवालोंके दस्तखत हों। व्यवहार-संबन्धी लेख।

दस्तियाब–वि॰ दे॰ "दस्त याब।"

दस्ती–वि॰ (फा॰) हाथका। संज्ञा स्त्री॰ १ हाथमें लेकर चलनेकी बत्ती। मशाल। २ छोटी मूठ। छोटा बेंट। ३ छोटा कलमदान।

दस्तूर–संज्ञा पुं॰ (फा॰) १ रीति। रस्म। रवाज। चाल। प्रथा। २ नियम। क़ायदा। विधि। ३ पारसियोंका पुरोहित।

दस्तूर-उल-अमल–संज्ञा पुं॰(फा॰+अ॰) १ प्रायः काममें आनेवाले नियम या परिपाटी। २ नियम। दस्तूर। क़ायदा। ३ [illegible]।

दस्तूरी–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰ दस्तूर) वह द्रव्य जो नौकर अपने मालिकका सौदा लेनेमें दूकानदारोंसे हक़के तौरपर पाते हैं।

दस्ते-कुदरत–संज्ञा पुं॰ (फा॰) १ प्रकृतिका हाथ। २ सामर्थ्य। शक्ति।

दस्ते-शफ़ा–संज्ञा पुं॰ (फा॰) वह जिसके हाथकी चिकित्सासे शीघ्र लाभ हो। यशस्वी (चिकित्सक)।

दह–वि॰ (फा॰) दस। नौ और एक।

दहक़ान–संज्ञा पुं॰ (फा॰ "देह" से अ॰) (वि॰ दहक़ानी) गँवार। देहाती।

दहक़ानियत-संज्ञा स्त्री॰ (अ॰ दहक़ान) गँवार-पन। देहातीपन।

दहक़ानी–वि॰(फ़ा॰ "देह"से अ॰) देहातियोंका-सा। गँवारू। संज्ञा पुं॰ गँवार। देहाती।

दहन–संज्ञा पुं॰ (फा॰) मुख। मुँह।

दहर–संज्ञा पुं॰ (फा॰ दह) ज़माना। समय। युग।

दहरिया–संज्ञा पुं॰ (अ॰ दह्‌रियः) वह जो ईश्वरको न मानकर केवल प्रकृतिको ही सब कुछ मानता हो। नास्तिक।

दहलीज़–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) द्वारके चौखटके नीचेवाली लकड़ी जो जमीनपर रहती है। देहली। डेहरी।

दहशत-संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) डर। भय। खौफ़।

दहशत-अंगेज़–वि॰ (फा॰)दहशत पैदा करनेवाला। भयानक।

दहशत-ज़दा–वि॰ (फा॰ दहशत-ज़दः) डरा हुआ। भयभीत।

दहशत-नाक–वि॰(फा॰) भीषण। डरावना। भयानक।

दहा–संज्ञा पुं॰ (फा॰ दह) १ मुहर्रमका महीना। २ मुहर्रमकी १ से १० तारीख़ तकका समय। ३ ताज़िया।

दहान–संज्ञा पुं० (फा०) १ मुँह। २ छेद। सूराख़। ३ घाव।

दहाना–संज्ञा पुं० (फा० दहानः) १ चौड़ा मुँह। द्वार। २ वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्रमें गिरती है। मुहाना। ३ मोरी।

दहुम–वि० (फा० मि० सं० दशम) दसवाँ। दशम।

दहे–संज्ञा पुं० (फा० दह=दस) मुहर्रमके दस दिन जिनमें ताजिए बैठाकर मुसलमान हसन तथा हुसैनका मातम मनाते हैं।

दहेज़–संज्ञा पुं० दे० "जहेज़।"

दाँ–वि० (फा०) जाननेवाला। जैसे–क़द्र-दाँ, ज़बान-दाँ।

दाँग–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ छः रत्तीकी एक तौल। २ किसी चीज़का छठा भाग। ३ दिशा। ओर। तरफ़।

दाइया–संज्ञा स्त्री० (अ० दाइयः) दावा करनेवाली स्त्री०। संज्ञा पुं० दावा। अभियोग।

दाई–वि० (अ०) १ दुआ माँगनेवाला। २ प्रार्थी।

दाख़िल–वि० (अ०) प्रविष्ट। घुसा हुआ। पैठा हुआ।

दाख़िल ख़ारिज–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) किसी सरकारी काग़ज़पर से किसी जायदादके पुराने हक़-दारका नाम काटकर उसपर-उसके वारिस या दूसरे हक़दार-का नाम लिखना।

दाख़िल-दफ़्तर–वि० (अ०+फा०) दफ़्तरमें इस प्रकार डाल रखा हुआ (काग़ज़) जिसपर कुछ विचार न किया जाय।

दाख़िला–संज्ञा पुं० (अ० दाख़िलः) १ प्रवेश। पैठ। २ संस्था आदिमें संमिलित किये जानेका कार्य।

दाख़िली–वि० (अ०) १ भीतरी। २ संबद्ध।

दाग़–संज्ञा पुं० (फा०) १ धब्बा। चित्ती। मुहा०–**सफ़ेद दाग़**=एक प्रकारका कोढ़ जिससे शरीरपर सफ़ेद धब्बे पड़ जाते हैं। फूल। २ निशान। चिह्न। अंक। ३ फल आदिपर पड़ा हुआ सड़नेका चिह्न। ४ कलंक। ऐब। दोष। लांछन। ५ जलनेका चिह्न।

दाग़दार–वि० (फा०) जिसपर दाग़ या धब्बा लगा हो।

दाग़ना–क्रि० स० (फा० दाग़) रंग आदिसे चिह्न या दाग़ लगाना। अंकित करना।

दाग़-बेल–संज्ञा स्त्री० (फा० दाग़+हिं० बेल) भूमिपर फावड़े या कुदालसे बनाये हुए चिह्न जो सड़क बनाने, नींव खोदने आदिके लिये डाले जाते हैं।

दाग़ी–वि० (फा० दाग़) १ जिसपर दाग़ या धब्बा हो। २ जिसपर सड़नेका चिह्न हो। कलंकित। ३ दोषयुक्त। लाञ्छित। ४ जिस-को सज़ा मिल चुकी हो।

दाज–संज्ञा पुं० (अ०) १ अंधकार। अँधेरा। २ अँधेरी रात।

दाद–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ इन्साफ़।

न्याय। मुहा०—**दाद चाहना**=किसी अन्यायके प्रतीकारकी प्रार्थना करना। २ प्रशंसा। तारीफ़। मुहा०—**दाद देना**=प्रशंसा करना। तारीफ़ करना। वि०—दिया हुआ। दत्त। जैसे—खुदा-दाद। यौ०—**दाद व सितद**-लेन-देन। व्यवहार।

दाद-ख़्वाह—वि० (फ़ा०) (संज्ञा दाद-ख़्वाही) अन्यायका प्रतीकार चाहनेवाला।

दाद-दहिश—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) उदारतापूर्वक देना। दान।

दादनी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा० दादन=देना) १ वह धन जो अन्न आदि खरीदनेके लिए कृषकोंको पेशगी दिया जाता है। २ ऋण। कर्ज़।

दादनी-दार—वि० (फ़ा०) अनाज आदि बेचनेके लिये पेशगी धन या दादनी लेनेवाला।

दाद-फ़रियाद—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) न्यायके लिये प्रार्थना।

दाद-रस—वि० (फ़ा०) (संज्ञा दाद-रसी) अन्यायका प्रतीकार करनेवाला।

दाद-सितद—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ लेन-देन। व्यवहार। २ क्रय-विक्रय।

दान—वि० (फ़ा०) १ जाननेवाला। जैसे—क़द्र-दान। २ रखनेवाला। आधार। जैसे—क़लम-दान, शमा-दान। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें)।

दाना—संज्ञा पुं०(फ़ा०)१ जाननेवाला। ज्ञाता। २ बुद्धिमान्। अक़्लमन्द। यौ०—**दाना-बीना**=बुद्धिमान् और [illegible]। संज्ञा पुं० (फ़ा० दानः) १ अनाजका कण। २ अनाज। ३ माल-असबाब।

दानाई—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) बुद्धिमत्ता। अक़्लमन्दी।

दानाआन—संज्ञा पुं० (फ़ा०) "दाना" (बुद्धिमान्) का बहु०।

दानिश—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) समझ। बुद्धि। अक्ल।

दानिशमन्द—वि० (फ़ा०) (संज्ञा दानिशमन्दी) बुद्धिमान।

दानिस्त—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) जानकारी। ज्ञान।

दानिस्ता—क्रि० वि०(फ़ा०दानिस्तः) जान-बूझकर। यौ०—**दीदा व दानिस्ता**=देखकर और जान-बूझकर।

दानी—वि० स्त्री० (फ़ा० दान) [illegible] (आधार)। जैसे—चूहे-दानी, सुरमे-दानी।

दाफ़ा—वि० (फ़ा० दाफ़ऽ) दफ़ा या दूर करनेवाला। नाशक।

दाब-संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ रंग-ढंग। तौर-तरीका। २ शान-शौकत। दब दबा। यौ०—रोब-दाब। संज्ञा पुं० (अ०) स्वभाव। आदत।

दाम—संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ जाल। फन्दा। यौ०—**दामे-मुहब्बत**=प्रेमपाश। मुहब्बतका फन्दा। २ एक पुराना सिक्का जो एक पैसेके लगभग होता था। ३ एक तौल जो १२, १८ और २१ माशेकी मानी गई है।

दामन–संज्ञा पुं० (फा०) १ अंगे, कोट, कुरते इत्यादिका निचला भाग। पल्ला। २ पहाड़ोंके नीचे-की भूमि।

दामन-गीर–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह जो दामन पकड़ ले। २ आपत्ति या विरोध करनेवाला। ३ दावा करनेवाला। दावेदार। मुहा०-**दामन-गीर होना**=किसीका दामन पकड़कर उससे न्याय चाहना।

दामाद–संज्ञा पुं० (फा०) १ नव-विवाहित पुरुष। २ जामाता। जँवाई। लड़कीका पति।

दामान–संज्ञा पुं० दे० "दामन।"

दायन–संज्ञा पुं० (अ० दाइन) ऋण देनेवाला।

दायम–क्रि० वि० (अ०) सदा।

दायम-उल्-मरीज़–वि० दे० "दायम-उल्-मर्ज़।"

दायम-उल्-मर्ज़–वि० (अ०) सदा बीमार रहनेवाला।

दायम-उल हब्स–संज्ञा पुं० (अ०) आजन्म कारागारमें रखनेका दंड।

दायमी–वि० (अ०) सदा रहने-वाला। स्थायी।

दायर–वि० (अ०) १ फिरता या चलता हुआ। २ चलता। जारी। मुहा०-**दायर करना**=मामले मुक़दमे वग़ैरहको चलानेके लिए पेश करना।

दायरा–संज्ञा पुं० (अ० दाएरः) १ गोल घेरा। कुंडल। मंडल। २ वृत्त। ३ कक्षा।

दाया–संज्ञा स्त्री० (फा० दायः) दाई। धाय। धात्री।

दार–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सूली जिससे प्राण-दंड देते थे। २ फाँसी। संज्ञा पुं० (अ०) फाँसी। संज्ञा पुं० (अ०) १ स्थान। जगह। २ घर। शाला। मकान। वि० (फा०) रखनेवाला। जैसे ईमान-दार, दूकान-दार।

दारचीनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक प्रकारका तज जो दक्षिण भारत और सिंहलमें होता है। २ इस पेड़की सुगंधित छाल जो दवा और मसालेके काममें आती है।

दार-मदार–संज्ञा पुं० (फा० दार व मदार) १ आश्रय। ठहराव। २ किसी कार्यका किसीपर अवलंबित रहना।

दाराई–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका रेशमी कपड़ा। दरियाई।

दारुल्-अमन–संज्ञा पुं० (अ०) अमन या सुखसे रहनेका स्थान।

दारुल्-अमान–संज्ञा पुं० (अ०) १ अमन या सुखसे रहनेका स्थान। शान्तिपूर्ण स्थान। २ वह देश जिस-पर जहाद करना धर्म-विरुद्ध हो।

दारुल-अमारत–संज्ञा पुं० (अ०) १ राजधानी।

दारुल-आख़िर–संज्ञा पुं० (अ०) परलोक।

दारुल-क़रार–संज्ञा पुं० (अ०) १ क़ब्र जहाँ पहुँचकर मनुष्य सुखसे रहता है। २ मुसलमानोंके सात बहिश्तों या स्वर्गोंमेंसे एक।

दारुल-ख़िलाफ़त—संज्ञा पुं० (अ०) १ ख़लीफ़ाके रहनेका स्थान। २ राजधानी।

दारुल-ज़र्ब—संज्ञा पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ सिक्के ढलते हैं। टकसाल।

दारुल-फ़ना—संज्ञा पुं० (अ०) वह लोक जहाँ सब चीज़ें नष्ट हो जाती हैं।

दारुल-बक़ा—संज्ञा पुं० (अ०) पर-लोक जहाँ पहुंचकर जीव अमर हो जाते हैं।

दारुल-मकाफ़ात—संज्ञा पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ अपने कर्मोंके शुभाशुभ फल भोगने पड़ते हैं। २ संसार।

दारुल-शफ़ा—संज्ञा पुं० (अ०) रोगियोंकी चिकित्साका स्थान। अस्पताल।

दारुल्-सलतनत—संज्ञा पुं० स्त्री० (अ०) राजधानी।

दारुल्-सलाम—संज्ञा पुं० (अ०) १ सुखपूर्वक रहनेका स्थान। २ स्वर्ग।

दारुल्-हुकूमत—संज्ञा पुं० स्त्री० (अ०) राजधानी।

दारुल-हरब—संज्ञा पुं० (अ०) १ युद्ध-क्षेत्र। २ काफ़िरोंका देश जिसपर आक्रमण करना मुसल-मानोंके लिये धर्मविहित है।

दारू—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ दवा। औषध। २ शराब। ३ बारूद।

दारोगा—संज्ञा पुं० (फ़ा० दारोग़:) देख-भाल करनेवाला या प्रबंध करनेवाला व्यक्ति।

दालान—संज्ञा पुं० (फ़ा०) मकानमें वह छाई हुई जगह जो एक, दो या तीन ओर खुली हो। बरामदा। ओसारा।

दावत—संज्ञा स्त्री० (अ० दअ़वत) १ ज्योनार। भोज। २ बुलावा। निमंत्रण। ३ किसीको अपना पुत्र बनाना। पुत्र अथवा पुत्र-तुल्य समझना।

दावर—संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ न्याय-कर्त्ता। २ हाकिम। अधिकारी।

दावरी—संज्ञा स्त्री०(फ़ा०) १ न्याय-शीलता। २ दावरका पद या कार्य।

दावा—संज्ञा पुं० (अ०) १ किसी वस्तुपर अधिकार प्रकट करनेका कार्य। किसी चीज़का हक़ ज़ाहिर करना। २ स्वत्व। हक़। ३ किसी जायदाद या रुपये-पैसेके लिये चलाया हुआ मुकदमा। ४ नालिश। अभियोग। ५ अधि-कार। ज़ोर। ६ कोई बात कहनेमें वह साहस जो उसकी यथार्थताके निश्चयसे उत्पन्न होता है। ७ दृढ़तापूर्वक कथन।

दावागीर—संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) दावा करनेवाला। अपना हक़ जतानेवाला।

दावात-संज्ञा स्त्री०(अ० "दअ़वत"-का बहु०) पुत्र-तुल्य या छोटेके लिये आशीर्वाद और शुभ-कामना-का प्रदर्शन। संज्ञा स्त्री० (अ०) लिखनेके लिये स्याही रखनेका बरतन। मसि-पात्र।

दावादार—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) दावा करनेवाला । अपना हक़ जतानेवाला ।

दावेदार—संज्ञा पुं० दे० "दावादार।"

दाश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) लालन-पालन ।

दास्तान—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वृत्तांत । २ कथा । ३ वर्णन ।

दास्तान-गो—संज्ञा पुं०(फा०)दास्तान या कहानी कहनेवाला ।

दास्ताना—संज्ञा पुं० दे० "दस्ताना।"

दिक़—वि० (अ०) १ जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो । हैरान । तंग । २ अस्वस्थ । बीमार । ("तबीयत" शब्दके साथ) संज्ञा पुं० क्षय रोग । तपे-दिक़ ।

दिक़-दारी—संज्ञा स्त्री० (अ+फा०) कठिनता । विपत्ति । तकलीफ़ ।

दिक़्क़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ "दिक़" का भाव । परेशानी । तकलीफ़ । तंगी । २ कठिनता ।

दिगर—वि० (फा०) दूसरा । अन्य ।

दिगर-गूँ—वि० (फा०) १ जिसका रंग बदल गया हो । २ शोचनीय (अवस्था) ।

दिमाग़—संज्ञा पुं० (अ०) १ सिरका गूदा । मस्तिष्क । भेजा । मुहा०—**दिमाग़ खाना या चाटना**=व्यर्थकी बातें कहना । बहुत बकवाद करना । **दिमाग़ खाली करना**=ऐसा काम करना जिससे मानसिक शक्तिका बहुत अधिक व्यय हो । मगज़-पच्ची करना । **दिमाग़ चढ़ना या आस्मानपर होना**=बहुत अधिक घमंड होना । **दिमाग़ चल जाना**=दिमाग़ खराब हो जाना । पागल होना । २ मानसिक शक्ति । बुद्धि । समझ । मुहा०—**दिमाग़ लड़ाना**=बहुत अच्छी तरह विचार करना । खूब सोचना । ३ अभिमान । घमंड । शेखी ।

दिमाग़-दार—वि० (अ०+फा०) १ जिसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी हो । बहुत बड़ा समझदार । २ अभिमानी ।

दिमाग़-रौशन—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) सुँघनी । नस्य ।

दिमाग़ी—वि० (अ०) दिमाग़-संबंधी ।

दियानत—संज्ञा स्त्री० दे० "दयानत।"

दियार—संज्ञा पुं० (अ०) प्रदेश ।

दिरम—संज्ञा पुं० दे० "दिरहम ।"

दिरहम—संज्ञा पुं० (अ०) चाँदीका एक छोटा सिक्का जो प्रायः चवन्नीके बराबर होता है ।

दिर्म—संज्ञा पुं० दे० "दिरहम ।"

दिर्रा—संज्ञा पुं० दे० "दुर्रा ।"

दिल—संज्ञा पुं० (फा०) १ कलेजा । हृदय । २ मन । चित्त । जी । मुहा०—**दिल कड़ा करना**=हिम्मत बाँधना । साहस करना । **दिलका कँवल खिलना**=चित्त प्रसन्न होना । मनमें आनंद होना । **दिलका गवाही देना**=मनमें किसी बातकी संभावना या औचित्यका निश्चय होना । **दिलका बादशाह**=१ बहुत बड़ा उदार । २ मनमौजी । लहरी । **दिलके फफोड़े फोड़ना**=भली-

बुरी सुनाकर अपना जी ठंढा करना। **दिल जमना** = १ किसी काममें चित्त लगना। ध्यान या जी लगना। २ संतुष्ट होना। जी भरना। **दिल ठिकाने होना** = मनमें शांति, संतोष या धैर्य होना। **दिल बुझना** = चित्तमें किसी प्रकारका उत्साह या उमंग न रह जाना। **दिलमें फ़रक़ आना** = सद्भावमें अंतर पड़ना। मनमोटाव होना। **दिलसे** = १ जी लगाकर। अच्छी तरह। ध्यान देकर। २ अपने मनसे। अपनी इच्छासे। **दिलसे दूर करना** = भुला देना। विस्मरण करना। ध्यान छोड़ देना। **दिल ही दिलमें**—चुपके चुपके। मन ही मन। ३ साहस। दम। ४ प्रवृत्ति। इच्छा।

दिल-आज़ार—वि० (फ़ा०) (संज्ञा दिलआज़ारी) १ दिलको तकलीफ़ पहुँचानेवाला। २ अत्याचारी।

दिल-कश—वि०। (फ़ा०) संज्ञा दिलकशी) मनको लुभानेवाला। आकर्षक। मनोहर।

दिल-कुशा—वि० (फ़ा०) मनोहर। सुन्दर।

दिल-ख़राश—वि० (फ़ा०) दिलको तोड़ने या बहुत कष्ट पहुँचानेवाला (कष्ट या दुर्घटना आदि)।

दिल-ख़्वाह—वि० (फ़ा०) दिलके मुताबिक़। मनोनुकूल।

दिल-गीर—वि० (फ़ा०) १ उदास। २ दुःखी।

दिल-चला—वि० (फ़ा० + हिं०) १ साहसी। हिम्मतवाला। दिलेर। २ वीर। बहादुर।

दिल-चस्प—वि० (फ़ा०) (संज्ञा दिलचस्पी) जिसमें जी लगे। मनोहर। चित्ताकर्षक।

दिल-जदा—वि० (फ़ा० दिल-ज़दः) दुःखी। रंजीदा। खिन्न।

दिल जमई—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) इतमीनान। तसल्ली।

दिल-जला—वि० (फ़ा०+हिं०) जिसके दिलको बहुत कष्ट पहुँचा हो।

दिल-जान—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकारका सम्बन्ध जो मुसलमान स्त्रियाँ आपसमें सखियोंसे स्थापित करती हैं।

दिल जोई—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) किसीका दिल या मन रखना। किसीको प्रसन्न और संतुष्ट करना।

दिल-दादा—वि० (फ़ा० दिलदादः) जिसने किसीको अपना दिल दिया हो। प्रेमी। आशिक।

दिल-दार—वि० (फ़ा०) (संज्ञा दिलदारी) १ उदार। दाता। २ रसिक। ३ प्रेमी। प्रिय।

दिल-दिही—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) दिलजोई। सांत्वना। ढारस।

दिल-पसन्द—वि० (फ़ा०) दिलको पसन्द आनेवाला। सुन्दर।

दिल-नशीन—वि० (फ़ा०) (संज्ञा दिलनशीनी) जो दिलमें जम या बैठ जाय। जो मनको ठीक जँचे।

दिल-पज़ीर—वि० (फ़ा०) मनोहर। मोहक। सुन्दर।

दिल-फ़रेब वि० (फा०) (संज्ञा दिल-फ़रेबी) मनोहर। मोहक।

दिल-बर--वि०(फा०) प्यारा। प्रिय।

दिल-बस्ता--वि० (फा० दिलबस्तः) जिसका दिल किसीकी तरफ बँधा या लगा हो। प्रेमी।

दिल-बस्तगी--संज्ञा स्त्री० (फा०) दिलका किसी तरफ़ लगना या बँधना। मनोरंजन।

दिल-मिला--संज्ञा पुं०(फा०+हिं०) एक प्रकारका सम्बन्ध जो मुसल-मान स्त्रियाँ आपसमें सखियोंसे स्थापित करती हैं।

दिल-रुबा--संज्ञा पुं० स्त्री० (फा०) वह जिससे प्रेम किया जाय। प्यारी।

दिल-रुबाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दिल-रुबा होनेका भाव। २ मोहकता। ३ प्रेम। मुहब्बत।

दिल-शाद-वि० (फा०) जिसका दिल खुश हो। प्रसन्न। आनन्दित।

दिल-शिकनी--संज्ञा स्त्री० (फा०) किसीका दिल तोड़ना। किसीको बहुत दुःखी या निराश करना।

दिल-शिकस्ता--वि० (फा० दिल-शिकस्तः) जिसका दिल टूट गया हो। दुःखी। खिन्न।

दिल-सोज़--वि० (फा०) (संज्ञा दिल-सोज़ी) १ सहानुभूति रखने-वाला। कृपालु। २ मनमें करुणा उत्पन्न करनेवाला। करुण।

दिला--संज्ञा पुं० (फा०) दिलका सम्बोधन। ऐ दिल। हे मन।

दिलारा--वि० (फा०) प्रिय। माशूक।

दिलाराम--संज्ञा पुं० (फा०) प्यारा। प्रिय। दिल-रुबा।

दिलावर--वि० (फा०) (संज्ञा दिला-वरी) १ शूर। बहादुर। २ उत्साही। साहसी।

दिलावेज़--वि० (फा०) (संज्ञा दिलावेज़ी) मनोहर। सुन्दर।

दिली--वि० (फा०) दिलसम्बन्धी।

दिलेर-वि० (फा०) (संज्ञा दिलेरी) १ बहादुर। २ साहसी।

दिलेराना--वि० (फा० दिलेरानः) वीरोंका-सा। वीरोचित।

दिलेरी--संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बहा-दुरी। वीरता। २ साहस।

दिल्लगी--संज्ञा स्त्री० (फा० दिल+हिं० लगाना) १ दिल लगानेकी क्रिया या भाव। २ केवल चित्त-विनोद या हँसने हँसानेकी बात। ठट्ठा। ठठोली। मज़ाक़। मख़ौल। मुहा०--**किसी बातकी दिल्लगी उड़ाना**= (किसी बातको) अमान्य और मिथ्या ठह-रानेके लिए (उसे) हँसीमें उड़ा देना। उपहास करना।

दिल्लगी-बाज़--संज्ञा पुं० (हिं०+फा०) हँसी दिल्लगी करनेवाला। मसख़रा।

दिल्लगी-बाज़ी--दे० "दिल्लगी।"

दिहिश--संज्ञा स्त्री० (फा०) दान। ख़ैरात। यौ०-**दाद व दिहिश**= दान-पुण्य।

दिवाना--संज्ञा पुं० दे० "दीवाना।"

दीगर--वि० (फा०) दूसरा। अन्य।

दीद-संज्ञा स्त्री० (फा०) देखादेखी।

दर्शन। दीदार। मुहा०-**दीद-न-शुनीद**=जान न पहिचान। न कभी देखा न सुना।

दीदा-संज्ञा पु०(फा०दीदः) १ दृष्टि। नजर। २ आँख। नेत्र। मुहा०-**दीदा लगाना**=जी लगाना। ध्यान जमना। **दीदेका पानी ढल जाना**=निर्लज्ज हो जाना। **दीदे निकालना**=क्रोधकी दृष्टिसे देखना। **दीदे फाड़कर देखना**=अच्छी तरह आँख खोलकर देखना। यौ०-**दीदा व दानिस्ता**=जान-बूझकर। ३ अनुचित साहस।

दीदार-संज्ञा पुं० (फा०) दर्शन। देखा-देखी।

दीदारबाज़-वि० (फा०) (संज्ञा दीदारबाजी) आँखें लड़ानेवाला। रूप देखनेका लोलुप।

दीदारू-वि० (फा० दीदार) देखने योग्य। सुन्दर।

दीदा-रेज़ी-संज्ञा स्त्री०(फा०) ऐसा महीन काम करना जिसमें आँखों-पर बहुत जोर पड़े।

दीदा व दानिस्ता-क्रि०वि० (फा० दीदः व दानिस्तः) देख और समझकर। जान-बूझकर।

दीन-संज्ञा पुं०(अ०) मत। मजहब।

दीनदार-वि० (अ०+फा०) अपने धर्मपर विश्वास रखनेवाला।

दीनदारी-संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) धर्मकी आज्ञाओंके अनुसार आचरण। अपने धर्मपर विश्वास रखना। धार्मिकता।

दीन दुनिया-संज्ञा स्त्री० (अ० दीन व दुनिया) यह लोक और पर-लोक।

दीन-पनाह-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) दीन या धर्मका रक्षक।

दीनार-संज्ञा पु० (फा०+सं०) १ स्वर्ण भूषण। सोनेका गहना। २ निष्ककी तौल। ३ स्वर्ण-मुद्रा। मोहर।

दीनी-वि० (अ०) १ दीनसम्बन्धी। धार्मिक। २ धर्मनिष्ठ।

दीबाचा-संज्ञा पु० (फा० दीबाचः) भूमिका। प्रस्तावना।

दीमक-संज्ञा स्त्री० (फा०) चींटीकी तरहका एक छोटा सफेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदिमें लग-कर उसे खोखला और नष्ट कर देता है। वल्मीक।

दीयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) वह धन जो हत्या करनेवाला निहतके सम्बन्धियोंको क्षति-पूर्तिके रूपमें दे। खूँ बहा।

दीवान-संज्ञा पुं० (अ०) १ राजा या बादशाहके बैठनेकी जगह। राज-सभा। कचहरी। २ राज्यका प्रबंध करनेवाला। मंत्री। वजीर। प्रधान। ३ गजलोंका संग्रह।

दीवान-आम-संज्ञा पुं० (अ०) १ ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाहसे सब लोग मिल सकते हों। २ वह स्थान जहाँ आम-दरबार लगता हो।

दीवान-खाना-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) घरका वह बाहरी हिस्सा

जहाँ बड़े आदमी बैठते और सब लोगोंसे मिलते हैं। बैठक।

दीवान-ख़ास–संज्ञा पुं० (अ०) १ ऐसी सभा जिसमें राजा या बादशाह मन्त्रियों तथा चुने हुए प्रधान लोगोंके साथ बैठता है। खास दरबार। २ वह जगह जहाँ खास दरबार होता हो।

दीवानगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) पागलपन। उन्माद।

दीवाना–वि० (फा० दीवानः) (स्त्री० दीवानी) पागल।

दीवाना-पन–संज्ञा पुं० (फा०+हिं०) पागलपन। सिड़ी-पन।

दीवानी–वि० स्त्री० (फा० दीवानः) पागल। विक्षिप्त। (स्त्री) संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दीवानका पद। २ वह न्यायालय जो सम्पत्ति-सम्बन्धी स्वत्वोंका निर्णय करे।

दीवार–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पत्थर, ईंट, मिट्टी आदिको नीचे-ऊपर रखकर उठाया हुआ परदा जिससे किसी स्थानको घेरकर मकान आदि बनाते हैं। भीत। २ किसी वस्तुका घेरा जो ऊपर उठा हो।

दीवार-क़हक़हा–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ एक कल्पित दीवार। कहते हैं कि इसे सिकन्दरने बनवाया था; और जो आदमी इस दीवारपर चढ़ता है, वह खूब जोरसे हँसते हँसते मर जाता है। सिद्दे सिकन्दरी। २ चीनकी प्रसिद्ध बड़ी दीवार।

दीवार-गीर–संज्ञा पुं० (फा०) दीया आदि रखनेका आधार जो दीवारमें लगाया जाता है।

दीवार-गीरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वह परदा जो दीवारके आगे शोभाके लिये लटकाते हैं। २ पलस्तर। कहगिल।

दीवाल–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार।"

दीह–संज्ञा पुं० (फा०) गाँव।

दु–वि० दे० "दो" ("दु" के यौगिक शब्दोंके लिये दे० "दो" के यौगिक)

दुई–संज्ञा स्त्री० (फा० दूई) १ "दो" का भाव। २ अपने आपको ईश्वरसे अलग समझना।

दुआ–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रार्थना दरख़ास्त। विनती। याचना। मुहा०–**दुआ माँगना**=प्रार्थना करना। २ आशीर्वाद। असीस। **दुआ लगना**=आशीर्वादका फली-भूत होना।

दुआइया–वि० (अ० दुआइयः) दुआ या शुभ कामनासम्बन्धी।

दुआए-खैर–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसीकी भलाईके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करना। मंगल-कामना।

दुआए दौलत–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसीकी धन-सम्पत्तिकी वृद्धिके लिये ईश्वरसे की जानेवाली प्रार्थना।

दुआ-गो–वि० (अ०+फा०) १ किसीके लिये दुआ माँगनेवाला। २ शुभ-चिन्तक।

दुआल–संज्ञा स्त्री० (फा० दोआल)

१ चमड़ा। २ चमड़ेका तसमा। ३ रिकाबका तसमा।

दुआली–संज्ञा० स्त्री० (फा० दुआल) चमड़ेका वह तसमा जिससे कसेरे और बढ़ई खराद घुमाते हैं।

दुकान–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह स्थान जहाँ बेचनेके लिये चीजें रखी हों और जहाँ ग्राहक जाकर उन्हें खरीदते हों। सौदा बिकनेका स्थान। हट्ट। हट्टी। मुहा० **दुकान बढ़ाना**=दुकान बंद करना। **दुकान लगाना**=१ दुकानका असबाब फैलाकर यथा-स्थान बिक्रीके लिये रखना। २ बहुत-सी चीजोंको इधर उधर फैलाकर रख देना।

दुकानदार-संज्ञा पुं०(फा०) १दुकानपर बैठकर सौदा बेचनेवाला। दुकानवाला। २ वह जिसने अपनी आयके लिये कोई ढोंग रच रखा हो।

दुकानदारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दुकान या बिक्री-बट्टेका काम। दुकानपर माल बेचनेका काम। २ ढोंग रचकर रुपया पैदा करनेका काम।

दुख़ान-संज्ञा पु०(अ०) धूआँ। धूम्र।

दुख़ानी-वि० (अ०) धूएँ या आगके जोरसे चलनेवाला। जैसे=दुख़ानी जहाज़।

दुख़्त–संज्ञा स्त्री० दे० "दुख़्तर।"

दुख़्तर–संज्ञा स्त्री० (फा०मि० सं० दुहितृ) लड़की। बेटी।

दुख़्तरे-रज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अंगूरकी लड़की, अर्थात् अंगूरी शराब। २ मद्य। शराब।

दुगाना–संज्ञा स्त्री०दे० "दो-गाना।"

दुज़्द–संज्ञा पु० (फा०) चोर।

दुज़्दी-संज्ञा स्त्री० (फा०) चोरी।

दुज़्दीदा–वि० (फा०दुज़्दीदः) चोरीका। यौ०–**दुज़्दीदा-निगाहें**= औरोंकी नजर बचाकर देखनेवाली आँखें।

दुनियवी-वि०(अ०)दुनियासे संबन्ध रखनेवाला। सांसारिक। लौकिक।

दुनिया–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ संसार। जगत्। यौ०-**दीनदुनिया**–लोक-परलोक। मुहा०-**दुनियाके परदेपर**=सारे संसारमें। **दुनियाकी हवा लगना**=सांसारिक अनुभव होना। सांसारिक विषयोंका अनुभव होना। **दुनियाभरका**= १ बहुत या बहुत अधिक। २ संसारके लोग। लोक। जनता। संसारका जंजाल।

दुनियाई–वि० (अ० दुनिया) सांसारिक। संज्ञा स्त्री० संसार।

दुनियादार–वि० (अ०+फा०) १ सांसारिक प्रपंचमें फँसा हुआ मनुष्य। गृहस्थ। २ ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। व्यवहार-कुशल।

दुनियादारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+ फा०) १ दुनियाका कारबार। गृहस्थीका जंजाल। २ वह व्यवहार जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध हो। स्वार्थ-साधन। ३ बनावटी व्यवहार।

दुनियावी–वि० दे० "दुनियवी।"

दुनिया-साज़–वि० (अ० + फ़ा०) (संज्ञा दुनिया-साज़ी) १ ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। स्वार्थ-साधक। २ चापलूस।

दुम–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ पूँछ। पुच्छ। मुहा०–**दुम दबाकर भागना**=डरपोक कुत्तेकी तरह डरकर भागना। **दुम हिलाना**=कुत्तेका दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना। २ पूँछकी तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु। ३ पीछे पीछे लगा रहनेवाला आदमी। ४ किसी कामका सबसे अंतिम थोड़ा-सा अंश।

दुमची–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) घोड़के साज़में वह तसमा जो पूँछके नीचे दबा रहता है।

दुम-दार–वि० (फ़ा०) १ पूँछवाला। २ जिसके पीछे पूँछकी-सी कोई वस्तु हो।

दुम्बल–संज्ञा पुं० (फ़ा० दुंबल) बड़ा फोड़ा।

दुम्बा–संज्ञा पुं० (फ़ा० दुंबः) मेढ़ा। मेष।

दुम्बाला–संज्ञा पुं० (फ़ा० दुंबालः) १ पिछला भाग। २ दुम। पूँछ। ३ वह सुरमेकी लकीर जो आँखके कोएसे आगे तक, सुन्दरताके लिए बढ़ा ले जाते हैं। ४ पतवार।

दुर–संज्ञा पुं० (अ० दुर) १ मोती। मुक्ता। वि० दे० 'दुर्र।"

दुर-अफ़शानी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ मोती छिड़कना या बिखेरना। २ सुन्दर और उत्तम बातें कहना।

दुरफ़िश-कावियानी–संज्ञा पुं० (फ़ा०) वह रेशमी तिकोना और ज़रीका काम किया हुआ कपड़ा जो प्रायः भाड़ेके सिरेपर लगाया जाता है।

दुरुश्त–वि० (फ़ा०) (संज्ञा दुरुश्ती) १ कड़ा। कठोर। २ खुरदरा।

दुरुस्त–वि० (फ़ा०) १ जो अच्छी दशामें हो। जो टूटा-फूटा या बिगड़ा न हो। ठीक। २ जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३ उचित। मुनासिब। ४ यथार्थ।

दुरुस्ती–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) सुधार।

दुरूद–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ मुहम्मद साहबकी स्तुति। २ दुआ। शुभ-कामना। यौ०–**फ़ातिहा व दुरूद** = मुसलमानोंके मरनेपर होनेवाली अन्तिम क्रियाएँ।

दुरे-शहवार–संज्ञा पुं० (फ़ा०) बहुत बड़ा और बादशाहोंके योग्य मोती।

दुर्र–संज्ञा पुं० (अ०) १ मोती। २ कान और नाकमें पहननेका वह लटकन जिसमें मोती लगा हो।

दुर्रा–संज्ञा पुं० (फ़ा० दिर्रः) चाबुक। कोड़ा।

दुर्रानी–संज्ञा पुं० (फ़ा०) कानोंमें मोती पहननेवाला पठानोंका एक फिरक़ा।

दुलदुल–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह खच्चरी जो इसकंदरिया (मिस्र) के हाकिमने मुहम्मद साहबको नज़रमें दी थी। साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और

मुहर्रमके दिनोंमें इसीकी नकल निकालते हैं।

दुशनाम–संज्ञा स्त्री०दे० "दुश्नाम।"

दुशमन–संज्ञा पुं० दे० "दुश्मन।"

दुशवार–वि० (फा०) १ कठिन। दुरूह। मुश्किल। २ दुःसह।

दुशवारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) कठिनता। मुश्किल। दिक़्क़त।

दुशाला–संज्ञा पुं० (फा० दोशालः मि० सं० द्विशाट) पशमीनेकी चादरोंका जोड़ा जिनके किनारेपर पशमीनेकी बेलें बनी रहती हैं।

दुश्नाम–संज्ञा स्त्री० (फा०) गाली। दुर्वचन। कुवाच्य।

दुश्मन–संज्ञा पुं० (फा०) १ शत्रु। वैरी। मुहा०–**दुश्मनोंकी तबीयत खराब होना**=किसी प्रियका अस्वस्थ होना। (किसी प्रियका कोई अनिष्ट होनेपर कहते हैं–दुश्मनोंका अमुक अनिष्ट हुआ।) २ प्रेमिका या प्रियका दूसरा प्रेमी। प्रेम-क्षेत्रका प्रतिद्वन्द्वी। संज्ञा स्त्री० प्रिय सखीके लिए प्यार या व्यंग्यका सम्बोधन या सम्बन्ध।

दुश्मनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) वैर।

दूकान–संज्ञा स्त्री० दे० "दुकान।"

दूद–संज्ञा पुं० (फा०) धूआँ यौ०–**दूदेदिल**=दीर्घ श्वास।

दूदमान–संज्ञा पुं० (फा०) खान्दान। परिवार। वंश।

दून–वि० (अ०) तुच्छ। नीच। अव्य० सिवा। अतिरिक्त।

दूर–क्रिया० वि० (फा० सं०) देश, काल या सम्बन्ध आदिके विचारसे बहुत अंतरपर। बहुत फासलेपर। पास या निकटका उलटा। मुहा०–**दूर करना**=१ अलग करना। जुदा करना। २ न रहने देना। मिटाना। **दूर भागना या रहना**=बहुत बचना। पास न जाना। **दूर होना**=१ हट जाना। अलग हो जाना। २ मिट जाना। नष्ट होना। **दूरकी बात**=१ बारीक बात। २ कठिन बात। वि० जो दूर या फासलेपर हो।

दूर-अन्देश–वि० (फा०) (संज्ञा दूर-अन्देशी) बहुत दूर तककी बात सोचनेवाला। अग्रसोची।

दूर-दराज़–वि० (फा०) बहुत दूर।

दूर-दस्त–(फा०) बहुत दूरका पहुँचके बाहर। दुर्गम।

दूर-पार–(फा०) ईश्वर करे, यह मुझसे बहुत दूर रहे। दूर करो। हटाओ।

दूरबीन–संज्ञा स्त्री० (फा०) गोल नलके आकारका एक काँच लगा हुआ यंत्र जिससे दूरकी चीजें बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखाई देती हैं।

दूरी–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० दूर) दो वस्तुओंके मध्यका स्थान। दूरत्व। अंतर। फ़ासला।

देग–संज्ञा स्त्री० (फा०) खाना पकानेका चौड़े मुँह और चौड़े पेटका बड़ा बरतन।

देगचा–संज्ञा पुं० (फा० देगचः) छोटा देग।

देर–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नियमित,

उचित या आवश्यकसे अधिक। समय। विलंब। २ समय। वक्त।

देर-पा–वि० (फा०) देर तक ठहरनेवाला। मजबूत। दृढ़।

देरी–संज्ञा स्त्री० दे० "देर।"

देरीना–वि० (फा० देरीनः) १ पुराना। प्राचीन। २ वृद्ध।

देव–संज्ञा पुं० (फा०) १ राक्षस। दैत्य। २ बहुत हृष्ट-पुष्ट और बलवान् मनुष्य।

देवज़ाद–वि०(फा०) १ देवसे उत्पन्न। २ बहुत हृष्ट-पुष्ट और बलवान्।

देवलाख़–संज्ञा पुं० (फा०) देवों या असुरोंके रहनेका स्थान।

देह–संज्ञा पुं० (फा० दिह) गाँव। ग्राम। खेड़ा। मौजा। वि० देनेवाला। जैसे–तकलीफ़-देह।

देह-बन्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) गाँवोंकी हल्क़ा-बन्दी।

देहलीज़–संज्ञा स्त्री०दे०'दहलीज।'

देहात–संज्ञा पुं० (फा० "देह" का बहु०)(वि०देहाती) गाँव। गँवई।

देहाती–वि० (फा० देहात) १ गाँवका। २ गाँवमें रहनेवाला। गँवार।

दैन–संज्ञा पुं० (अ०) कर्ज़।

दैन-दार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) कर्ज़दार। ऋणी।

दैजूर–संज्ञा स्त्री० (अ०) अँधेरी रात। वि० घोर अंधकार।

दैर–संज्ञा पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ पूजाके लिए कोई मूर्ति रक्खी हो। मन्दिर।

दो–वि० (फा० मि० सं० द्वि) एक और एक। मुहा०–**दो एक** या **दो-चार**=कुछ। थोड़े। **दो-चार होना**=भेंट होना। मुलाकात होना। **आँखें दो-चार होना**=सामना होना। **दो दिनका**=बहुत ही थोड़े समयका।

दो-अमला–वि० (फा० दो+अ० अमल) जो दो व्यक्तियोंके अधिकारमें हो।

दो-अमली–संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) द्वैध शासन। २ अराजकता। अव्यवस्था।

दो-अस्पा–संज्ञा पुं०(फा० दोअस्पः) १ वह सैनिक जिनके पास दो निजी घोड़े हों। २ दो घोड़ोंकी डाक।

दो-आतशा–वि० (फा० दो-आतशः) जो दो बार भभकेमें खींचा या चुआया गया हो।

दो-आब–संज्ञा पुं० (फा०) किसी देशका वह भाग जो दो नदियोंके बीचमें हो।

दो-आबा–संज्ञा पुं० दे० "दो-आब।"

दो-आल–संज्ञा स्त्री० दे०"दुआल।"

दो-आशियाना–संज्ञा पुं० (फा०दो आशियानः) एक प्रकारका खेमा या तम्बू जिसमें दो कमरे होते हैं।

दोग़–संज्ञा पुं० (फा०) मठा। तक्र।

दोग़ला–वि० (फा० दो+ग़ल्लाः) (स्त्री० दोग़ली) १ वह मनुष्य जो अपनी माताके यारसे उत्पन्न हुआ हो। जारज। २ वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न भिन्न जातियोंके हों।

दो-गाना–संज्ञा स्त्री०(फा०दोगानः) १ एक साथ मिली हुई दो चीजें। २ सखी।

दो-चन्द–वि०(फा०)दूना। द्विगुण।

दो-चोबा–संज्ञा पुं०(फा० दो-चोबः) वह खेमा जिसमें दो चोबें लगती हों।

दोज़–वि० (फा०) १ सीनेवाला। सिलाई करनेवाला। जैसे-खेमा-दोज, जर-दोज। २ मिला हुआ। सटा हुआ। जैसे—जमीं-दोज।

दोज़ख़–संज्ञा पुं० (फा०) मुसलमानोंके अनुसार नरक जिसके सात विभाग हैं।

दोज़ख़ी–वि० (फा०) १ दोजख-सम्बन्धी। दोजखका। २ बहुत बड़ा अपराधी या पापी। नारकी।

दो-ज़रबा–वि० दे० "दो-आतशा।"

दो-ज़ानू–क्रि० वि० (फा०) घुटनोंके बल (बैठना)।

दोज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सीनेका काम। सिलाई। जैसे—खेमा-दोजी। जर-दोजी।

दो-तरफ़ा–वि० (फा० दो-तरफ़ः) दोनों तरफ़का। दोनों ओर सम्बन्धी। क्रि० वि० दोनों तरफ़। दोनों ओर।

दो-पाया–वि० (फा० दो-पायः) दो पैरोंवाला।

दो-पारा–वि० (फा० दोपारः) दो टुकड़े किया हुआ।

दो-प्याज़ा–संज्ञा पुं० (फा०) वह मांस जो प्याज मिलाकर बनाया जाता है।

दो-फ़सला–वि० दे० "दो-फ़सली।"

दो-फ़सली–वि० (फा० दो + अ० फ़सल) १ दोनों फ़सलोंके संबंधका। २ जो दोनों ओर लग सके। दोनों ओर काम देने योग्य।

दो-बाज़ू–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह कबूतर जिसके दोनों पैर सफेद हों। २ एक प्रकारका गिद्ध।

दो-बारा–क्रि० वि० (फा० दोबारः) एक बार हो चुकनेके उपरांत फिर एक बार। दूसरी बार।

दो-बाला–वि० (फा०) दूना।

दो-मंज़िला–वि०(फा० दो-मंज़िलः) जिसमें दो खंड या मंजिलें हों। (मकान)

दोम–वि० दे० " दोयम।"

दोयम–वि० (फा०) दूसरा। पहलेके बादका।

दोरुख़ा–वि० (फा० दोरुख़ः) १ जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों। २ जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो।

दोलाब–संज्ञा पुं० (फा०) पानी खींचनेकी चरखी।

दोश–संज्ञा पुं० (फा०) कन्धा। स्कन्ध।

दोश-माल–संज्ञा पुं०(फा०) कन्धेपर रखनेका रूमाल या अँगौछा।

दो-शम्बा–संज्ञा पुं०(फा० दोशम्बः) सोमवार।

दो-शाखा–संज्ञा पुं०(फा०दोशाखः) वह शमादान जिसमें दो शाखें हों। वि० दो शाखाओंवाला।

दोशाला—संज्ञा पुं० दे० "दुशाला।"

दोशीज़गी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) दोशीज़ा या कुमारी होनेका भाव। कुमारित्व।

दोशीज़ा—संज्ञा स्त्री०(फ़ा०दोशीज़ः) कुमारी लड़की। अविवाहित।

दो-साला—वि० (फ़ा० दो+सालः) दो सालका। दो वर्षका पुराना।

दोस्त—संज्ञा पुं०(फ़ा०) मित्र। स्नेही।

दोस्त-दार—वि० (फ़ा०) मित्रता या सहानुभूति रखनेवाला।

दोस्त-दारी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) दोस्ती। मित्रता।

दोस्ताना—संज्ञा पुं०(फ़ा०दोस्तानः) १ मित्रता। २ मित्रताका व्यवहार।

दोस्ती—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) मित्रता।

दौर—संज्ञा पुं० (अ०) १ चक्कर। भ्रमण। फेरा। २ दिनोंका फेर। काल-चक्र। ३ अभ्युदय-काल। बढ़तीका समय। यौ०—**दौर-दौरा**=प्रधानता। प्रबलता। ४ प्रताप। प्रभाव। हुकूमत। ५ बारी। पारी। ६ बार। दफ़ा। ७ दे० "दौरा।"

दौरा—संज्ञा पुं० (अ० दौर) १ चक्कर। भ्रमण। २ इधर उधर जाने या घूमनेकी क्रिया। फेरा। गश्त। ३ अफ़सरका इलाकेमें जाँच-पड़ताल-के लिये घूमना। मुहा०—(असामी या मुक़दमा) **दौरा सुपुर्द करना**=(असामी या मुक़दमेको) फ़ैसलेके लिये सेशन जजके पास भेजना। ४ सामयिक आगमन। फेरा। ५ किसी ऐसे रोगका लक्षण प्रकट होना जो समय समयपर होता है। आवर्त्तन।

दौरान—संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ दौरा। चक्र। २ दिनोंका फेर। ३ फेरा।

दौलत—संज्ञा स्त्री० (अ०) धन।

दौलत-ख़ाना—संज्ञा पुं०(अ०+फ़ा०) निवास-स्थान। घर। (आदरार्थ)

दौलत मन्द—वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा दौलत-मन्दी) धनी। संपन्न।

(न)

नंग—संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ प्रतिष्ठा। सम्मान। २ लज्जा। शर्म। हया। ३ कलंकका कारण या साधन। मुहा०-**नंगे ख़ान्दान**=कुल-कलंक। यौ०—**नंग व नामूस**=१लज्जा। शरम। २ प्रतिष्ठा। सम्मान।

न—अव्यय० (फ़ा० नह मि० सं० न) निषेधवाचक शब्द। नहीं। मत।

नअत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रशंसा। स्तुति। २ मुहम्मद साहबकी स्तुति।

नअश—संज्ञा स्त्री० दे० "नाश।"

नईम—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बहिश्त। स्वर्ग। २ नियामत। ३ पहुँच। रसाई। ४ लाड़-प्यार। दुलार। ५ इनाममें दी हुई चीज़।

नऊज़—संज्ञा पुं० (अ०) हम ईश्वरसे पनाह माँगते हैं। ईश्वर हमारी रक्षा करे। यौ०—**नऊज़ बिल्लाह**=ईश्वर हमारी रक्षा करे।

नक़द—संज्ञा पुं० (अ० नक़्द) वह धन जो सिक्कोंके रूपमें हो। रुपया पैसा। वि० १ (रुपया)

जो तैयार हो। (धन) जो तुरन्त काममें लाया जा सके। २ खास। क्रि० वि० तुरन्त दिये हुए रुपयेके बदलेमें। "उधार" का उलटा।

नक़द्-जान–संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) आत्मा। रूह।

नक़द्-दम–क्रि०वि० (अ०) अकेले। बिना किसीको साथ लिये।

नक़द्-माल–संज्ञा पुं० (अ०) खरा और बढ़िया माल।

नक़द्-खाँ–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) १ प्रचलित सिक्का। २ खरा और बढ़िया माल।

नक़दी–संज्ञा स्त्री०वि०दे० "नक़द।"

नक़ब–संज्ञा स्त्री० (अ०) चोरी करनेके लिये दीवारमें किया हुआ छेद। सेंध।

नक़ब-ज़न–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) वह जो नक़ब या सेंध लगाता हो।

नक़ब-ज़नी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) नक़ब या सेंध लगानेकी क्रिया।

नकबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दुर्दशा। २ विपत्ति।

नकरा–संज्ञा पुं० (अ० नक्रः) १ जान-पहचान या परिचयका अभाव। २ व्याकरणमें जातिवाचक संज्ञा।

नक़ल–संज्ञा स्त्री० (अ० नक़्ल) (बहु० नक़िलयात, नुक़ूल।) १ वह जो किसी दूसरेके ढंगपर या उसकी तरह तैयार किया गया हो। अनुकृति। कापी। २ एकके अनुरूप दूसरी वस्तु बनानेका कार्य। अनुकरण। ३ लेख आदिकी अक्षरशः प्रतिलिपि। कापी। ४ किसीके वेष, हाव-भाव या बातचीत आदिका पूरा पूरा अनुकरण। स्वाँग। ५ अद्भुत और हास्यजनक आकृति। ६ हास्यरसकी कोई छोटी-मोटी कहानी। चुटकुला।

नक़ल-नवीस-वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा नक़लनवीसी) वह आदमी, विशेषतः अदालतका मुहर्रिर जिसका काम केवल दूसरोंके लेखोंकी नकल करना होता है।

नक़ली–वि० (अ०) १ जो नक़ल करके बनाया गया हो। कृत्रिम। बनावटी। २ खोटा। जाली। झूठा। संज्ञा पुं० कहानियाँ [illegible]। किस्सागो।

नक़्लेपरवाना–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) साला। स्त्रीका भाई। (परिहास या व्यंग्य)

नक़्ले मज़हब–संज्ञा पुं० (अ०) एक धर्म छोड़कर दूसरा धर्म ग्रहण करना। धर्म-परिवर्तन।

नकसीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) नाकके अन्दरकी नसें। मुहा०–**नकसीर फूटना**–नाकसे खून जाना।

नकहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) सुगंधी। महक। खुशबू।

नक़ाब–संज्ञा स्त्री० (अ० निक़ाब) १ वह कपड़ा जो मुँह छिपानेके लिये सिरपरसे गले तक डाल लिया जाता है (मुसलमान)। २ साड़ी या चादरका वह भाग जिससे

स्त्रियोंका मुँह ढँका रहता है। घूँघट।

नक़ाब-पोश-वि० (अ०+फा०) (संज्ञा नक़ाब-पोशी) जिसने मुँह-पर नक़ाब डाली हो।

नक़ायस-संज्ञा पुं० (अ० "नक़ीस:" का बहु०) नुक़्स। बुराइयाँ। ऐब।

नकास-वि० दे० "नाकास।"

नक़ाहत-संज्ञा स्त्री०(अ०) निर्बलता, विशेषतः रोगके समय होनेवाली।

नक़ी-वि० (अ०) विशुद्ध। बहुत बढ़िया।

नक़ीज़-वि० (अ०) १ तोड़ने या गिरानेवाला। २ विशुद्ध। विपरीत। उलटा। जैसे-"सही" का नक़ीज़ "ग़लत" है। संज्ञा स्त्री० १ अस्तित्व मिटानेकी क्रिया। २ विरोध। उलटापन। ३ शत्रुता। दुश्मनी।

नक़ीब-संज्ञा पुं० (अ०) १ चारण। बंदी-जन। भाट। २ कड़खा गानेवाला पुरुष। कड़खैत।

नकीर-संज्ञा स्त्री० (अ०) उन दो फरिश्तोंमेंसे एक जो मुरदेसे कब्रमें प्रश्न करते हैं कि तुम किसके सेवक या उपासक हो। (दूसरे फरिश्तेका नाम मुनकिर है।)

नक़ीर-वि० (अ०) बहुत छोटा। संज्ञा पुं० नहर।

नकीरैन-संज्ञा पुं० (अ० "नकीर" का बहु०) मुनकिर और नकीर नामक दोनों फरिश्ते या देवदूत जो कब्रमें मुर्देसे पूछते हैं कि तुम किसके सेवक या उपासक हो।

नक़ीह-वि० (अ०) दुर्बल। दुबला।

नक़्क़ाद-वि० (अ०) खरा-खोटा परखनेवाला। पारखी।

नक़्क़ार-ख़ाना-संज्ञा पुं० (फा०) वह स्थान जहाँपर नक़्क़ारा बजता है। नौबतखाना। मुहा०-**नक़्क़ार-ख़ानेमें तूतीकी आवाज़ कौन सुनता है**=बड़े बड़े लोगोंके सामने छोटे आदमियोंकी बात कोई नहीं सुनता।

नक़्क़ारची-संज्ञा पुं० (फा०) नगाड़ा बजानेवाला।

नक़्क़ारा-संज्ञा पुं० (फा० नक़्क़ार:) नगाड़ा। डंका। नौबत। दुंदुभी।

नक़्क़ाल-संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो नक़ल करता हो। २ बहुरूपिया। ३ भाँड़।

नक़्क़ाली-संज्ञा स्त्री०(अ०नक़्क़ाल) १ नक़ल करनेका काम। २ भाँड़पन। भँड़ैती।

नक़्क़ाश-संज्ञा पुं० (अ०) वह जो नक़्क़ाशी करता हो।

नक़्क़ाशी-संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० नक़्क़ाशीदार) १ धातु आदिपर खोदकर बेल-बूटे आदि बनानेका काम या विद्या। २ वे बेल-बूटे जो इस प्रकार बनाये गये हों।

नक़्ज़-संज्ञा पुं० (अ०) तोड़ना। जैसे-**नक़्ज़े अहद**=प्रतिज्ञा तोड़ना।

नक़्द-संज्ञा पुं० क्रि० वि० दे० "नक़द।"

नक़्ल-संज्ञा पुं० दे० "नक़ल।"

नक़्श–वि० (अ०) जो अंकित या चित्रित किया गया हो। बनाया या लिखा हुआ। मुहा०–**मनमें नक़्श करना** या **कराना**=किसी के मनमें कोई बात अच्छी तरह बैठाना। संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० नुक़ूश) १ तसवीर। चित्र। २ खोदकर या क़लमसे बनाया हुआ बेल-बूटा। ३ मोहर। छाप। मुहा०–**नक़्श बैठना**=अधिकार जमाना। ४ वह यन्त्र जो रोगों आदिको दूर करनेके लिये कागज़ आदिपर लिखकर बाँह या गलेमें पहनाया जाता है। तावीज़। ५ जादू-टोना।

नक़्श व दीवार–वि० (अ०+फ़ा०) १ दीवारपर बने हुए चित्रके समान। २ चकित। स्तंभित।

नक़्शा–संज्ञा पुं० (अ० नक़्शः) १ रेखाओं द्वारा आकार आदिका निर्देश। चित्र। प्रति-मूर्ति। तसवीर। २ आकृति। शक्ल। ढाँचा। गढ़न। ३ किसी पदार्थका स्वरूप। आकृति। ४ चाल-ढाल। तर्ज़। ढंग। ५ अवस्था। दशा। ६ ढाँचा। ठप्पा। किसी धरातलपर बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथ्वी या खगोलका कोई भाग अपनी स्थितिके अनुसार अथवा और किसी विचारसे चित्रित हो। ऐसे चित्रोंमें प्रायः देश, पर्वत, समुद्र, नदियाँ और नगर आदि दिखलाये जाते हैं।

नक़्शा-नवीस–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा नक्शा-नवीसी) जो किसी तरहके नक़्शे बनाता या तैयार करता हो।

नक़्शीं, नक़्शी–वि० (अ० नक़्श) जिसपर नक़्शी या बेल-बूटे बने हों। नक़्क़ाशीदार।

नक़्शीन–वि०(फ़ा०) नक़्क़ाशीदार।

नक़्शे-आब–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) १ पानीपर बनाया हुआ चिह्न जो तुरंत मिट जाता है। २ अस्थायी वस्तु।

नख़–संज्ञा–स्त्री० (फ़ा०) वह पतला रेशमी या सूती तागा जिससे गुड्डी या पतंग उड़ाते हैं। डोर।

नख़चीर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ वे जंगली जानवर जिनका शिकार किया जाता है। २ शिकार।

नख़चीर-गाह–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) शिकार-गाह। आखेट-स्थल।

नख़रा–संज्ञा पुं० (फ़ा० नख़रः) १ वह चुलबुलापन या चेष्टा जो जवानीकी उमंगमें अथवा प्रियको रिझानेके लिये हो। चोचला। नाज़। २ चंचलता। चुलबुलापन।

नख़रा-तिल्ला–संज्ञा पुं० (फ़ा० नख़रा+हिं० तिल्ला अनु०) नख़रा। चोचला।

नख़रे-बाज़–वि०(फ़ा० नख़र:बाज़) (संज्ञा नख़रे-बाज़ी) जो बहुत नख़रा करे। नख़रा करनेवाला।

नख़ल–संज्ञा पुं० दे० "नख़्ल।"

नख़वत–संज्ञा स्त्री० (अ०) घमंड। अभिमान। शेखी।

नख़ास–संज्ञा पुं० (अ० नख़्ख़ास) गुलामों या जानवरोंके बिकनेका बाज़ार। मुहा०–**नख़ासवाली**= वेश्या। रंडी।

नख़ुस्त–संज्ञा पुं० (फा०) १ आरंभ। २ प्रधान।

नख़ुद–संज्ञा पुं० (फा०) चना नामक अन्न।

नख़्ल–संज्ञा पुं० (अ०) १ खजूर या छुहारेका वृक्ष। २ वृक्ष।

नख़्ल-बन्द–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ माली। बागवान। २ मोमके वृक्ष और फूल-पत्ते बनानेवाला।

नख़्लिस्तान-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ खजूरके वृक्षोंका वन। २ वन। oasis। ३ वाटिका। बाग़।

नख़्ले-ताबूत–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) ताबूत या रथीकी सजावट जो प्रायः किसी वृद्धके मरनेपर की जाती है।

नख़्ले-तूर–संज्ञा पुं० (अ०) तूर पर्वतका वह वृक्ष जिसपर हज़रत मूसाको ईश्वरीय प्रकाश दिखाई पड़ा था।

नख़्ले-मरियम–संज्ञा पुं० (अ०) खजूरका वह सूखा वृक्ष जो उस समय मरियमके स्पर्शसे हरा हो गया था जब वह प्रसव वेदनासे विकल होकर जंगलमें उसके नीचे जा बैठी थी।

नख़्ले-मातम–संज्ञा पुं० दे० "नख़्ले-ताबूत।"

नख़्ले-मोम–संज्ञा पुं० (अ०) मोमका बनाया हुआ वृक्ष और उसके फल-फूल आदि।

नग-संज्ञा पुं० दे० "नगीना।"

नग़मा–संज्ञा पुं० दे० "नग़्म।"

नगीं–संज्ञा पुं० (फा०) नगीना।

नगीना–संज्ञा पुं० (फा० नगीनः) रत्न। मणि। वि० चिपका या ठीक बैठा हुआ।

नगीना-साज़–वि० (फा०) (संज्ञा नगीना-साज़ी) वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।

नग़्ज़–वि० (अ०) श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया। जैसे–**नग़्ज़-गुफ़्तार**= सुवक्ता।

नग़्ज़क–संज्ञा पुं० (अ० "नग़्ज़" से फा०) १ बहुत उत्तम पदार्थ। बढ़िया चीज़। २ आम। आम्र।

नग़्म–संज्ञा पुं० (अ० नग़्मः का बहु०) गीत। राग।

नग़्मा–संज्ञा पुं० (अ० नग़्मः) १ राग। गीत। २ सुरीली और बढ़िया आवाज़। मधुर स्वर।

नग़्मात–संज्ञा स्त्री० (अ० नग़्मः का बहु०) १ गीत। राग। २ सुन्दर और सुरीले शब्द।

नग़्मा-सरा–वि० (अ०+फा०) १ गानेवाला। गायक। २ सुन्दर स्वर निकालनेवाला।

नग़्मा-सराई–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) गाना। अलापना।

नज़अ–संज्ञा पुं० (अ०) मरनेके समय साँस तोड़ना।

नज़दीक–वि० (फा०) निकट। पास। क़रीब। समीप।

नज़दीकी–वि० (फा०) नजदीक या पासका। समीपस्थ। संज्ञा स्त्री० नजदीकका भाव। समीपता। सामीप्य। निकटता।

नजफ़–संज्ञा पु० (अ०) १ ऊँचा टीला। २ अरबके एक नगरका नाम।

नज़म–संज्ञा स्त्री० दे० "नज़्म।"

नज़र–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० अन्ज़ार) १ दृष्टि। निगाह। मुहा०-**नज़र आना**=दिखाई देना। दिखाई पड़ना। **नज़रपर चढ़ना**=पसन्द आ जाना। भला मालूम होना। **नज़र पड़ना**=दिखाई देना। **नज़र बाँधना**=जादू या मंत्र आदिके जोरसे किसीको कुछका कुछ कर दिखाना। २ कृपादृष्टि। मेहरबानीसे देखना। ३ निगरानी। देख-रेख। ४ ध्यान। ख़याल। ५ परख। पहचान। शिनाख़्त। ६ दृष्टिका वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुन्दर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदिपर पड़कर उसे खराब कर देनेवाला माना जाता है। मुहा०-**नज़र उतारना**=बुरी दृष्टिके प्रभावको किसीपरसे किसी मंत्र या युक्तिसे हटा देना। **नज़र लगना**=बुरी दृष्टिका प्रभाव पड़ना। संज्ञा स्त्री० (अ० नज्र) १ भेंट। उपहार। २ अधीनता सूचित करनेकी एक रस्म जिसमें राजाओं आदिके सामने प्रजावर्गके या अधीनस्थ लोग नक़द रुपया आदि हथेलीमें रखकर सामने लाते हैं।

नज़र-अन्दाज़–वि० (अ०+फा) जिसपर नजर न पड़ी हो। नजरसे चूका या गिरा हुआ।

नज़र-गाह–संज्ञा स्त्री०(अ०+फा०) रंग-शाला।

नज़र-गुज़र–संज्ञा स्त्री०(अ० नजर +गुजर अनु०) बुरी नजर। कुदृष्टि।

नज़रबन्द–वि० (अ०+फा०) जो किसी ऐसे स्थानपर कड़ी निगरानीमें रखा जाय जहाँसे वह कहीं आ जा न सके। संज्ञा पुं० जादू या इन्द्रजाल आदिका वह खेल जिसके विषयमें लोगोंका यह विश्वास रहता है कि वह नजर बाँधकर किया जाता है।

नज़र-बन्दी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) १ राज्यकी ओरसे वह दंड जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित या नियत स्थानपर रखा जाता है। २ नजर-बन्द होनेकी दशा। ३ जादूगरी। बाजीगरी।

नज़र-बाग़–संज्ञा पु० (अ०) महलों या बड़े बड़े मकानों आदिके सामने या चारों ओरका बाग।

नज़र-बाज़–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा नजर-बाज़) १ तेज नजर रखनेवाला। ताड़नेवाला। चालाक। २ नजर लड़ानेवाला। आँखें लड़ानेवाला।

नज़र-सानी–संज्ञा स्त्री० (अ० नजरे

सानी) जाँचनेके विचारसे किसी देखी हुई चीज़को फिरसे देखना।

नज़र-हाया–वि॰(अ॰नज़र+हाया) (हिं॰ प्रत्य॰) (स्त्री॰ नज़र-हाई) नज़र लगानेवाला।

नज़राना–संज्ञा पु॰ (अ॰ नज़्र+फा॰ आनः) (प्रत्य॰) भेंट। उपहार। क्रि॰ वि॰ (अ॰ नज़र=दृष्टि) नज़र लगना। बुरी दृष्टिके प्रभावमें आना। क्रि॰ स॰ नज़र लगाना।

नज़री–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) अरबोंके अनुसार शास्त्रोंके दो भेदोंमें पहला भेद। वे शास्त्र जिनमें प्रत्यक्ष वस्तुओंका कल्पनाके आधारपर विवेचन हो। जैसे-ज्योतिष, खनिज-विद्या, तर्क-शास्त्र आदि। हिकमते इल्मी।

नज़ला–संज्ञा पुं॰ (अ॰ नज़लः) १ एक प्रकारका रोग जिसमें गरमीके कारण सिरका विकार-युक्त पानी ढलकर भिन्न-भिन्न अंगोंकी ओर प्रवृत्त होकर उन्हें खराब कर देता है। २ ज़ुकाम। सरदी।

नज़ला-बन्द–संज्ञा पुं॰(अ॰+फा॰) १ औषधमें तर किया हुआ वह फाहा जो कनपटियोंपर नज़ला रोकनेके लिये लगाया जाता है। २ सोनेके वर्क आदिका वह गोल टुकड़ा जो कुछ स्त्रियाँ शोभाके लिये कनपटियोंपर लगाती हैं।

नजस–संज्ञा पुं॰ (अ॰) नजिस या अपवित्र रहनेका भाव। अपवित्रता।

नज़ाकत–संज्ञा स्त्री॰(अ॰ नाज़ुकसे फा॰) नाज़ुक होनेका भाव। सुकुमारता। कोमलता।

नजात–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰)१ मुक्ति। मोक्ष। २ छुटकारा। रिहाई।

नज़ाद–संज्ञा पुं॰ (फा॰) १ मूल। २ वंश। परिवार।

नजाबत–संज्ञा स्त्री॰(अ॰ निजाबत) १ कुलीनता। २ सज्जनता। शराफ़त।

नज़ामत–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "निज़ामत।"

नज़ायर–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) "नज़ीर"का बहु॰।

नज़ार–वि॰ (फा॰) १ दुबला-पतला। निर्धन। ग़रीब।

नज़ारत–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ नज़र रखनेकी क्रिया। देख-भाल। रक्षा। निगरानी। २ नाज़िरका काम, पद या कार्यालय।

नज़ारा–संज्ञा पु॰ (अ॰ नज़्ज़ारः) १ दृश्य। २ दृष्टि। नज़र। ३ प्रियको लालसा या प्रेमकी दृष्टिसे देखना।

नज़ारा-बाज़ी–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰+फा॰) नज़ारा लड़ानेकी क्रिया या भाव।

नजासत–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ गन्दगी। मैलापन। २ अपवित्रता।

नजिस–वि॰ (अ॰) १ मैला। गन्दा। २ अपवित्र। अशुद्ध। यौ॰-**नजिस-उल्-ऐन**=जो सदा अपवित्र रहे, कभी पवित्र न हो सके। जैसे-कुत्ता, शराब आदि।

नजीब–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० नुजब) श्रेष्ठ कुलवाला। कुलीन। यौ०-**नजीब-उल्-तरफ़ैन**= वह जिसकी माता और पिता दोनों उत्तम कुलके हों। सही-उल्-नसब। सिपाही। सैनिक।

नज़ीर–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० नज़ायर) उदाहरण। दृष्टान्त। मिसाल।

नजूम–संज्ञा पुं० दे० "नुजूम।"

नजूल–संज्ञा पुं० (अ० नुज़ूल) १ उतरना। गिरना। २ आकर उप स्थित होना। ३ नजला नामक रोग। ४ वह रोग जो पानी उतरनेके कारण हो। जैसे–मोतियाबिन्दु, अंड कोशकी वृद्धि आदि। ५ नगरकी वह भूमि जिसपर सरकारका अधिकार हो।

नज्जार–संज्ञा पुं० (अ०) लकड़ीके सामान बनानेवाला। बढ़ई। तरखान।

नज़्ज़ारगी–संज्ञा स्त्री०(अ० नज़्ज़ारः से फा०) नज़ारा लड़ानेकी क्रिया। दीदार-बाज़ी।

नज़्ज़ारा–संज्ञा पुं० दे० "नज़ारा।"

नज्जारी–संज्ञा स्त्री० (अ०) बढ़ईका काम या पेशा।

नज्द–संज्ञा पुं० (अ०) १ ऊँची ज़मीन। बाँगर। २ अरबके एक प्रसिद्ध नगरका नाम।

नज्म–संज्ञा पुं० (अ०) तारा। सितारा। यौ०–**नज्म-उल्-हिन्द** =भारतका सितारा। सितारए हिन्द।

नज़्म–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मोतियों आदिको तागेमें पिरोना। २ प्रबंध। व्यवस्था। बन्दोबस्त। यौ०-**नज़्म व नस्न**=प्रबन्ध और व्यवस्था। ३ कविता।

नज्र–संज्ञा स्त्री० दे० "नज़र।"

नतीजा–संज्ञा पुं० (अ० नतीजः बहु० नतायज) परिणाम। फल।

नदामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० नादिम) १ लज्जित होनेका भाव। शरमिन्दगी। हलकापन। २ पश्चात्ताप। क्रि० प्र०–उठाना।

नदारद–वि० (फा०)जो मौजूद न हो। गायब। अप्रस्तुत। लुप्त।

नदीदा–वि० (फा० ना-दीदःका संक्षिप्त रूप) (स्त्री० नदीदी) १ बिना देखा हुआ। अन-देखा। २ जिसमें कभी कुछ देखा न हो। नजर लगानेवाला। लोभी। लोलुप।

नदीम–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० नुदमा) पार्श्ववर्त्ती। साथी। सहचर।

नद्दाफ़–संज्ञा पुं० (अ०) रुई धुननेवाला धुनिया।

नद्दाफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) रुई धुननेका काम।

नफ़क़ा-संज्ञा पुं० (अ० नफ़क़ः) खाने पीनेका खर्च। भरण-पोषणका व्यय। यौ०-**नान-नफ़क़ा** =रोटी-कपड़ा या उसका व्यय।

नफ़र–संज्ञा पुं० (अ०) १ दास। सेवक। नौकर। २ व्यक्ति।

नफ़रत–संज्ञा स्त्री० (अ०) घृणा।

नफ़रत-आमेज़–वि० (अ०+फा०) जिसे देखकर नफ़रत पैदा हो। घृणा उत्पन्न करनेवाला।

नफ़रीं–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शाप। बद-दुआ। २ लानत। धिक्कार।

नफ़री–संज्ञा स्त्री० (फा० नफ़र) १ मजदूरकी एक दिनकी मज़दूरी या काम। २ मजदूरीका दिन।

नफ़ल–संज्ञा पुं० (अ० नफ़्ल) वह अतिरिक्त ईश्वर-प्रार्थना जो कर्त्तव्य न हो, केवल विशेष फलकी कामनासे की जाय।

नफ़स–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० अन्फ़ास) १ श्वास-प्रश्वास। साँस। २ पल। क्षण। संज्ञा पुं० दे० "नफ़्स।"

नफ़स-परवर–वि० (अ०+फा०) मनको प्रसन्न करनेवाला। मनोहर। वि० दे० "नफ़्सपरवर।"

नफ़सानियत–संज्ञा स्त्री० दे० "नफ़्सानियत।"

नफ़सानी–वि० दे० "नफ़्सानी।"

नफ़सी-वि० दे० "नफ़्सी।"

नफ़से-वापसीं–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) मरनेके समयकी अन्तिम साँस।

नफ़ा–संज्ञा पुं० (अ० नफ़अ) लाभ।

नफ़ाक़–संज्ञा पुं० दे० "निफ़ाक़।"

नफ़ाज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रचलित होनेकी क्रिया। जारी होना। जैसे–हुक्म या फरमानका नफ़ाज़। २ एक चीज़का दूसरी चीज़मेंसे होकर पार होना।

नफ़ायस–संज्ञा स्त्री० (अ० "नफ़ीस" का बहु०) उत्तम वस्तुएँ।

नफ़ास–संज्ञा पुं० (अ० निफ़ास) १ प्रवृत्ति। २ वह रक्त जो प्रसवके उपरान्त चालीस दिनोंतक स्त्रियोंकी जननेंद्रियसे निकलता रहता है। ३ आँवल। नाल। खेड़ी।

नफ़ासत–संज्ञा स्त्री० (अ०) नफ़ीसका भाव। उम्दा-पन। उम्दगी। उत्तमता।

नफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ न होनेका भाव। अस्तित्वका अभाव। २ निकलना। दूर करना। ३ इन्कार। अस्वीकृति। मुहा०–**नफ़ी करना** = १ घटाना। कम करना। २ दूर करना। हटाना। **नफ़ीमें जवाब देना** = इन्कार करना।

नफ़ीर–वि० (अ०) नफ़रत या घृणा करनेवाला। संज्ञा स्त्री० रोना-चिल्लाना। फरियाद। पुकार। संज्ञा स्त्री० दे० "नफ़ीरी"।

नफ़ीरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) तुरही या क़रनाय नामक बाजा।

नफ़ीस–वि० (अ०) १ उमदा। बढ़िया। २ साफ। स्वच्छ। ३ सुन्दर।

नफ़्फ़ार–वि० (अ०) नफ़रत या घृणा करनेवाला।

नफ़्स–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० नुफ़ूस) १ आत्मा। रूह। प्राण। २ अस्तित्व। ३ वास्तविक तत्त्व। सत्ता। ४ पुरुषकी इंद्रिय। लिंग। ५ काम-वासना। ६ ग्रन्थमें प्रति-

पादित विषय या उसका मूल पाठ। संज्ञा पुं० दे० "नफ़्स।"

नफ़्स उल्-अमर–क्रि० वि० (अ०) वास्तवमें। वस्तुतः। दर-हक़ीक़त।

नफ़्स-कुश–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा नफ़्स-कुशी) अपनी इंद्रियोंका दमन करनेवाला।

नफ़्स-परवर–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा नफ़्स-परवरी) नफ़्स-परस्त। इंद्रिय-लोलुप।

नफ़्स-परस्त–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा नफ़्सपरस्ती) अपनी इंद्रियोंकी वासनाएँ तृप्त करनेवाला। इंद्रिय-लोलुप।

नफ़्सा-नफ़्सी–संज्ञा स्त्री० (अ० नफ़्स) अपनी अपनी चिन्ता। आपाधापी।

नफ़्सानियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ केवल अपने शरीरकी चिन्ता। स्वार्थपरता। २ अभिमान। घमंड।

नफ़्सानी–वि० (अ०) नफ़्ससम्बंधी। नफ़्सका।

नफ़्सी–वि० (अ०) १ नफ़्ससम्बन्धी। २ निजी। व्यक्तिगत।

नफ़्से-अम्मारा–संज्ञा पुं० (अ० नफ़्से अम्मारः) इन्द्रियोंके भोग या दुष्कर्मोंकी ओर होनेवाली प्रवृत्ति।

नफ़्से-नफ़ीस–संज्ञा पुं० (अ०) सुन्दर और शुभ व्यक्तित्व। (प्रायः बड़ोंके सम्बन्धमें बोलते हैं।)

नफ़्से-नबाती–संज्ञा पुं० (अ०) वनस्पति आदिमें रहनेवाली आत्मा।

नफ़्से-नातिक़ा–संज्ञा पुं० (अ०) १ आत्मा। रूह। २ बहुत प्रिय या विश्वसनीय व्यक्ति।

नफ़्से-बहीमी–संज्ञा पुं० दे० "नफ़्से-अम्मारा।"

नफ़्से-मतलब–संज्ञा पुं० (अ०) वास्तविक उद्देश्य या तात्पर्य।

नफ़्से-वापसीं–संज्ञा पुं० (अ०) मरनेके समयका अन्तिम साँस।

नबवी–वि० (अ०) नबी-सम्बंधी। नबीका।

नबर्द–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) युद्ध। समर। लड़ाई।

नबर्द-आज़मा–वि० (फ़ा०) युद्ध-क्षेत्रका अनुभवी। वीर। योद्धा।

नबर्द-गाह–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) युद्धक्षेत्र। लड़ाईका मैदान।

नबवी–वि० (अ०) नबी या पैगंबर-सम्बन्धी।

नबात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ साग-भाजी। तरकारी। २ मिसरी।

नबातात–संज्ञा स्त्री० (अ० "नबात" का बहु०) १ वनस्पति। साग। तरकारियाँ।

नबाती–वि० (अ०) नबात या वनस्पति-सम्बन्धी।

नबी–संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वरका दूत। पैगम्बर। रसूल।

नबुअत–संज्ञा स्त्री० दे० "नबूवत।"

नबूवत–संज्ञा स्त्री० (अ०) नबी या पैगम्बर होनेका भाव। पैगम्बरी। नबी-पन।

नब्ज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) हाथकी वह रक्तवाही नाली जिसकी चालसे रोगकी पहचान की जाती

है। नाड़ी। मुहा०—**नब्ज़ चलना**=नाड़ीमें गति होना। **नब्ज़ छूटना**=नाड़ीकी गति या प्राण न रह जाना।

नब्बाज़—संज्ञा पुं० (अ०) नब्ज़ या नाड़ी देखनेवाला। हकीम। वैद्य।

नब्बाज़ी—संज्ञा स्त्री (अ०) नब्ज़ या नाड़ी देखकर रोग पहचानना। नाड़ी-परीक्षा। नाड़ी-ज्ञान।

नब्बाश—संज्ञा पुं० (अ०) वह जो गड़े हुए मुरदे उखाड़कर उनका कफ़न आदि चुराता है।

नम—वि० (फा०) (संज्ञा नमी) भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। तर। (कुछ कवियोंने आर्द्रता या तरीके अर्थमें और संज्ञाके रूपमें भी इसका प्रयोग किया है।)

नमक—संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जिससे भोज्य पदार्थोंमें एक प्रकारका स्वाद उत्पन्न होता है। लवण। नोन। मुहा०—

नमक अदा करना=स्वामीके उपकारका बदला चुकाना। (किसी का) **नमक खाना**=(किसीके द्वारा) पालित होना। (किसीका) दिया खाना। **नमक मिर्च मिलाना** या **लगाना**=किसी बातको बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

नमक फूटकर निकलना=नमक-हरामीकी सजा मिलना। कृतघ्नताका दंड मिलना। **कटेपर नमक छिड़कना**=किसी दुखीको और भी दुःख देना। २ कु[illegible]

विशेष प्रकारका सौन्दर्य जो अधिक मनोहर या प्रिय हो। लावण्य।

नमक-ख़्वार—वि० (फा०) (संज्ञा नमक-ख़्वारी) नमक खानेवाला। पालित होनेवाला।

नमक-चशी—संज्ञा स्त्री० (फा० नमक +चशीदन=चखना) १ बच्चेको पहले पहल नमक खिलानेकी रसम। अन्न-प्राशन। २ खानेकी चीज़ मुँहमें यह देखनेके लिये रखना कि उसमें नमक पड़ा है या नहीं। ३ मुसलमानोंमें मँगनीके बाद होनेवाली एक रसम।

नमक-दान—संज्ञा पुं० (फा०) नमक-रखनेका पात्र।

नमक-परवरदा—वि० (फा० नमक पर्वर्द:) किसीका नमक खाकर पला हुआ। किसीका पालित।

नमक-सार—संज्ञा पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो।

नमक-हराम—वि० (फा०+अ०) (संज्ञा नमक-हरामी) वह जो किसीका दिया हुआ अन्न खाकर उसीका द्रोह करे। कृतघ्न।

नमक-हलाल—वि० (फा०+अ०) (संज्ञा नमक-हलाली) वह जो अपने स्वामी या अन्नदाताका कार्य धर्मपूर्वक करे। स्वामि-निष्ठ। स्वामि-भक्त।

नमकीन—वि० (फा०) (संज्ञा नमकीनी) १ जिसमें नमकका-सा स्वाद हो। २ जिसमें नमक पड़ा हो। ३ सुंदर। खूबसूरत। संज्ञा

पुं० वह पकवान आदि जिसमें नमक पड़ा हो ।

नमगीरा–संज्ञा पुं० (फा० नमगीरः) १ ओस रोकनेके लिये ऊपर ताना जानेवाला मोटा कपड़ा । २ शामियाना ।

नमदा–संज्ञा पुं०(फा० नम्द) जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा ।

नम-नाक–वि० (फा०) गीला । तर । आर्द्र ।

नमश,नमश्क–संज्ञा स्त्री० दे० "नमिश ।"

नमाज़–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० नमन) मुसलमानोंकी ईश्वर-प्रार्थना जो नित्य पाँच बार होती है ।

नमाज़ी–संज्ञा पुं० (फा०) १ नमाज पढ़नेवाला । २ वह वस्त्र जिसपर खड़े होकर नमाज पढ़ी जाती है ।

नमाज़े-इस्तस्क़ा–संज्ञा स्त्री०(फा० +अ०) वह नमाज जो अकाल-के दिनोंमें वृष्टिके उद्देश्यसे पढ़ी जाती है ।

नमाज़े-कुसूफ़–संज्ञा स्त्री– (फा०+ अ०) सूर्य-ग्रहणके समय पढ़ी जानेवाली नमाज ।

नमाज़-खुसूफ़–संज्ञा स्त्री० (फा०+ अ०) चंद्र-ग्रहणके समय पढ़ी जानेवाली नमाज ।

नमाज़-जनाज़ा–संज्ञा स्त्री० (फा०+ अ०) वह नमाज जो किसीके मरनेपर उसके शवके पास खड़े होकर पढ़ते हैं ।

नमाज़-पंजगाना–संज्ञा स्त्री० (फा०) नित्यके पाँचों वक्तकी नमाज ।

नमाज़-पेशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सबेरेकी पहली नमाज ।

नमाज़े-मैयत–संज्ञा स्त्री० (फा०) दे० "नमाज़-जनाज़ा ।"

नमिश–संज्ञा स्त्री० (फा० नमश्क) एक विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ दूधका फेन ।

नमी–संज्ञा स्त्री० (फा०) गीलापन । आर्द्रता ।

नमू–संज्ञा पुं० (अ०) १ वनस्पति । २ वृद्धि । बाढ़ ।

नमूद–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ निकलने या उदित होनेकी क्रिया । २ स्पष्ट या प्रकट होनेका भाव । ३ उभार । ४ तलवारकी बाढ़ । ५ निशान । चिह्न । ६ अस्तित्व । ७ आन-शौकत । ८ प्रसिद्धि । शोहरत । ६ शेखी । घमंड । मुहा०–**नमूदकी लेना**=शेखी हाँकना ।

नमूदार–वि० (फा०) (संज्ञा नमूदारी) १ प्रकट । जाहिर । २ सामने आया हुआ । उदित ।

नमूना–संज्ञा पुं० (फा० नमूनः)१ अधिक पदार्थमेंसे निकला हुआ वह थोड़ा अंश जिससे उस मूल पदार्थके गुण और स्वरूप आदिका ज्ञान होता है । बानगी । २ ढाँचा । ठाठ । खाका ।

नम्द,नम्दा–संज्ञा पुं० दे० "नमदा ।"

नयस्ताँ–संज्ञा पुं० (फा०) नै या नरसलका जंगल ।

नर–वि० (फा० मि० सं० नर=

पुरुष) पुरुष जातिका (प्राणी)। मादाका उलटा।

नरग़ा–संज्ञा पुं० (यू० नर्ग) १ आदमियोंका वह घेरा जो पशुओंका शिकार करनेके लिये बनाया जाता है। २ भीड़। जन-समूह। ३ कठिनाई। विपत्ति।

नर-गाव–संज्ञा पुं० (फा०) १ साँड़। २ बैल।

नरगिस–संज्ञा स्त्री० (फा०) प्याजकी तरहका एक पौधा जिसमें कटोरीके आकारका सफेद फूल लगता है। उर्दू-फारसीके कवि इस फूलसे आँखकी उपमा देते हैं।

नरगिसी–वि०(फा०)नरगिससंबंधी। नरगिसका। संज्ञा पुं० १ एक प्रकारका कपड़ा। २ एक प्रकारका तला हुआ अंडा।

नरगिसे-बीमार–संज्ञा स्त्री० (फा०) प्रेमिकाकी मस्त आँखें।

नरगिसे-शहला–संज्ञा स्त्री० (फा०) नरगिसका वह फूल जिसकी कटोरी पीली न होकर काली हो और इसीलिये मनुष्यकी आँखोंसे अधिक मिलती-जुलती हो।

नरम–वि० दे० "नर्म"

नरमा–संज्ञा स्त्री० (फा० नर्मः) १ एक प्रकारकी कपास। मनवा। देव-कपास। राम-कपास। २ सेमलकी रुई। ३ कानके नीचेका भाग। लौ। ४ एक प्रकारका रंगीन कपड़ा।

नरमी–संज्ञा स्त्री० दे० "नर्मी।"

नर-मेश–संज्ञा पुं (फा० मि० सं० नर+मेष) मेढ़ा।

नरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) बकरीका रंगा हुआ चमड़ा जिससे प्राय: जूते बनते हैं।

नरीना–वि० (फा० नरीनः) नर या पुरुषजातिसम्बन्धी। जैसे–**औलादे नरीना**=पुरुष-संतान।

नर्गिस–संज्ञा स्त्री० दे० "नरगिस।"

नर्द–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चौसर या शतरंज आदिकी गोटी। मोहरा। २ एक प्रकारका खेल।

नर्दबान–संज्ञा स्त्री० (फा०) सीढ़ी। जीना।

नर्म–वि० (फा०) १ मुलायम। कोमल। मृदु। २ लचकदार। लचीला। ३ मन्दा। तेजका उलटा। ४ धीमा। मद्धिम। ५। सुस्त। आलसी। ६ जल्दी पचनेवाला। लघु-पाक। ७ जिसमें पौरुषका अभाव या कमी हो।

नर्मए गोश–संज्ञा स्त्री० (फा०) कानकी लौ।

नर्म-गर्म–वि० (फा०) १ भला-बुरा। २ ऊँच-नीच।

नर्म-दिल–वि० (फा०) कोमल-हृदय। उदार और दयालु।

नर्मी–संज्ञा स्त्री० (फा०) नर्म होनेका भाव। नरम-पन।

नवा–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ संगीत। गाना बजाना। २ सुन्दर स्वर। ३ शब्द। आवाज। ४ धन-सम्पत्ति। दौलत। ५ सामग्री

सामान। ६ रोज़ी। जीविका। ७ भेंट। उपहार। ८ सेना। फ़ौज।

नवाज़–वि॰ (फ़ा॰) (संज्ञा नवाज़ी) १ कृपा या दया करनेवाला। जैसे–बन्दा-नवाज़, गरीब-नवाज़। २ प्रसन्न या सन्तुष्ट करनेवाला। जैसे मेहमान-नवाज़।

नवाज़िश–संज्ञा स्त्री॰ (फ़ा॰) कृपा। दया। अनुग्रह। मेहरबानी।

नवाब–संज्ञा पुं॰ (अ॰ नव्वाब) १ मुगल सम्राटोंके समय बादशाहका प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेशका शासक होता था। २ एक उपाधि जो आजकल छोटे-मोटे मुसलमानी राज्योंके मालिक अपने नामके साथ लगाते हैं। ३ राजाकी उपाधिके समान एक उपाधि जो मुसलमान अमीरोंको अँगरेजी सरकारकी ओरसे मिलती है। वि॰–बहुत शान शौकत (और अमीरी ढंगसे रहनेवाला।)

नवाबी–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰ नव्वाब) १ नवाबका पद। २ नवाबका काम। ३ नवाब होनेकी दशा। ४ नवाबोंका राजत्व-काल। ५ नवाबोंकी-सी हुकूमत। ६ बहुत अधिक अमीरी।

नवाला संज्ञा पुं॰ (फ़ा॰ नवालः) ग्रास। कौर।

नवासा–संज्ञा पुं॰ (फ़ा॰ नवासः) (स्त्री॰ नवासी) बेटीका बेटा। दौहित्र।

नवाह–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) आसपासके प्रदेश। यौ॰–**गिर्द वा नवाह** =आसपासके स्थान।

नविश्त–संज्ञा स्त्री॰ (फ़ा॰) १ लिखा हुआ काग़ज़ या लेख आदि। २ दस्तावेज़। तमस्सुक।

नविश्ता–वि॰ (फ़ा॰ नविश्तः) लिखा हुआ। लिखित। संज्ञा पुं॰ १ दस्तावेज या तमस्सुक आदि लिखित लेख। २ भाग्य। प्रारब्ध। तक़दीर।

नवीस–वि॰ (फ़ा॰) लिखनेवाला। लेखक। कातिब। जैसे–अर्जीनवीस, अखबार-नवीस।

नवीसिन्दा–वि॰ (फ़ा॰ नवीसिन्दः) लिखनेवाला। लेखक।

नवीसी–संज्ञा स्त्री॰ (फ़ा॰) लिखनेकी क्रिया या भाव। लिखाई।

नवेद–संज्ञा स्त्री॰ (फ़ा॰) शुभ समाचार। संज्ञा पुं॰ निमंत्रणपत्र (विशेषतः विवाह आदिका)।

नव्वाब–संज्ञा पुं॰ दे॰ "नवाब।"

नव्वाबी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "नवाबी।"

नशतर–संज्ञा पुं॰ दे॰ "नश्तर।"

नशर–वि॰ (अ॰) १ बिखरा हुआ। २ दुर्दशा-ग्रस्त।

नशा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ नशाऽ) १ उत्पन्न करना। बनाना। २ संसार। संज्ञा पुं॰ (अ॰ नश्शः) १ वह अवस्था जो शराब, अफ़ीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीनेसे होती है। मुहा॰–**नशा किरकिरा हो जाना** = किसी अप्रिय बातके होनेके कारण नशेका मज़ा बीचमें बिगड़ जाना।

(आँखोंमें) **नशा छाना** = नशा चढ़ना। मस्ती चढ़ना । **नशा जमना** = अच्छी तरह नशा होना।

नशा हिरन होना=किसी असंभावित घटना आदिके कारण नशेका बिलकुल उतर जाना । २ वह चीज़ जिससे नशा हो । मादक द्रव्य । यौ०--**नशा-पानी**=मादक द्रव्य और उसकी सब सामग्री। ३ धन, विद्या, प्रभुत्व या रूप आदिका घमंड । अभिमान । मद । गर्व । मुहा०--**नशा उतारना**= घमंड दूर करना ।

नशा-ख़ोर–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) (संज्ञा नशा-ख़ोरी) वह जो नशेका सेवन करता हो ।

नशात–संज्ञा पुं० (अ०) १ उत्पत्ति । २ प्राणी । जीव । संज्ञा स्त्री० दे० निशात । "

नशिस्त–संज्ञा स्त्री०दे०"निशस्त।"

नशी–वि० दे० " नशीन ।"

नशीन--वि० (फा०) १ बैठनेवाला। २ बैठा हुआ ।

नशीनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) बैठनेकी क्रिया या भाव । जैसे--तख़्त-नशीनी ।

नशीला--वि० (अ० नश्शः+ईला प्रत्य०) (स्त्री० नशीली) १ नशा उत्पन्न करनेवाला। मादक । २ जिसपर नशेका प्रभाव हो । मुहा०--**नशीली आँखें**=वे आँखें जिनमें मस्ती छाई हो ।

नशूर–संज्ञा पुं० दे० "नुशूर ।"

नशेब–संज्ञा पुं० (फा० निशेब) १ नीची भूमि। २ निचाई । यौ०--

नशेब व फ़राज़=१ ऊँचाई और निचाई । २ ज़मानेका ऊँच-नीच । संसारके दुःख-सुख ।

नशे-बाज़–वि० (अ० नश्शः+फा० बाज़) (संज्ञा नशे-बाज़ी) वह जो बराबर किसी प्रकारके नशेका सेवन करता हो ।

नशेमन-संज्ञा पुं० (फा० निशीमन) १ विश्राम करनेका एकान्त स्थल । आराम करनेकी जगह । २ पक्षियोंका घोंसला। ३ भवन ।

नशेमन-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) विश्राम-स्थल । आराम-गाह ।

नशो–संज्ञा पुं० (अ० नश्व) १ उत्पन्न होना और बढ़ना । यौ०--

नशो-नुमा=१ उत्पन्न होकर बढ़ना । २ उन्नति । वृद्धि ।

नश्तर–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका बहुत तेज़ छोटा चाकू । इसका व्यवहार फोड़े आदि चीरनेमें होता है ।

नश्र–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रकट या प्रसिद्ध करना । २ प्रसार । फैलाव। ३ चिन्ता । मानसिक कष्ट। ४ सुगंधि । ५ जीवन ।

नश्वा--संज्ञा पुं० (फा०) १ सुगंधि। २ सचेत होना ।

नसतालीक़--संज्ञा पुं०(अ० नस्तऽलीक) १ फारसी या अरबी लिपि लिखनेका वह ढंग जिसमें अक्षर खूब साफ और सुंदर होते हैं । घसीट या "शिकस्त"

का उलटा । २ वह जिसका रंग-ढंग बहुत अच्छा और सुन्दर हो ।

नसनास–संज्ञा पुं० (अ० नस्नास) एक प्रकारका कल्पित बन-मानुस ।

नसब–संज्ञा पुं० (अ०) १ वंश । कुल । खान्दान । २ वंशावली ।

नसब नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वंशावली । वंश-वृत्त ।

नसबी–वि० (अ०) वंश या कुल-सम्बन्धी ।

नसर–संज्ञा स्त्री० दे० "नस्र ।"

नसरानी–संज्ञा पुं० (अ०) ईसाई ।

नसरीन–संज्ञा स्त्री० दे० "नस्रीन ।"

नसल–संज्ञा स्त्री० दे० "नस्ल" ।

नसायम–संज्ञा स्त्री० अ० "नसीम" का बहु० ।

नसायह–संज्ञा स्त्री० (अ० "नसीहत" का बहु०) उपदेश ।

नसारा–संज्ञा पुं० (अ०) ईसाई ।

नसीब–संज्ञा पुं० (अ०) भाग्य । प्रारब्ध । मुहा०–**नसीब होना**=प्राप्त होना । मिलना ।

नसीब-वर–वि० (अ+फा०) भाग्यवान् । सौभाग्यशाली ।

नसीबा–संज्ञा पुं० दे० "नसीब ।"

नसीबे-आदा–(अ० नसीबे अअदा) दुश्मनोंका नसीब । (जब किसी प्रियके रोग आदिका उल्लेख करते हैं, तब इस पदका प्रयोग करते हैं । जैसे–नसीबे-आदा उन्हें बुखार हो आया है)

नसीबे-दुश्मनाँ–दे० "नसीबे आदा।"

नसीम–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० नसायम) शीतल, मन्द और सुगंधित वायु । यौ०-**नसीमे सहर या नसीमे सहरी**=प्रातःकालकी सुन्दर वायु ।

नसीर–संज्ञा पुं० (अ०) १ सहायक। मददगार । २ ईश्वरका एक नाम ।

नसीहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु०-नसायह) १ उपदेश । सीख । २ अच्छी सम्मति ।

नसीहत आमेज़–वि०(अ०+फा०) जिसमें नसीहत भी शामिल हो ।

नसीहत-गो–संज्ञा पुं० (अ०फा०) नसीहत या उपदेश देनेवाला । उपदेशक ।

नसूह–संज्ञा पुं० (अ०) वह तौबा जो कभी तोड़ी न जाय । पक्की तौबा वि० शुद्ध । साफ़ । निर्मल ।

नस्क़–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रणाली । दस्तूर । २ व्यवस्था । इन्तज़ाम । यौ०–नज़्म व नस्क़=प्रबन्ध और व्यवस्था ।

नस्ख़–संज्ञा पुं०(अ०)१ प्रतिलिपि । नक़ल । २ किसी चीज़से अच्छी चीज़ बनाकर उस पुरानी चीज़को रद्द या नष्ट कर देना । ३ अरबीकी एक लिपिप्रणाली जिसके प्रचलित होनेपर पहलेकी पाँच लिपिप्रणालियाँ रद्द हो गई थीं ।

नस्तरन–संज्ञा पुं०(फा०)१ सफेद गुलाब । २ एक तरहका कपड़ा ।

नस्तालीक़–संज्ञा पुं० दे० "नसतालीक़ ।"

नस्ब–संज्ञा पुं०(अ०)(बहु०अन्साब)

१ स्थापित करना। २ खड़ा करना। जैसे–खेमा नस्ब करना।

नस्र–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सहायता। मदद। २ पक्षका समर्थन। ३ गद्य लेख। संज्ञा पुं०–गिद्ध पक्षी। उक़ाब।

नस्रीन–संज्ञा पुं० (फ़ा०) सेवती। जंगली गुलाब।

नस्ल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सन्तान। २ वंश। कुल। यौ०–**नस्लन् बाद नस्लन**=पुश्त-दर-पुश्त। वंशानुक्रमसे।

नस्लदार–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा नस्लदारी) उत्तम वंशका।

नस्ली–वि० (अ०) नस्ल या वंश-सम्बन्धी।

नस्सार–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो अच्छा गद्य लिखता हो। गद्य-लेखक।

नहज–संज्ञा पुं० (अ०) १ सीधा रास्ता। २ तौर-तरीक़ा। रंग-ढंग।

नहर–संज्ञा स्त्री० (फ़ा० नह्र) वह कृत्रिम जल-मार्ग जो खेतोंकी सिंचाई या यात्रा आदिके लिये तैयार किया जाता है।

नहरी–वि० (फ़ा० नह्र) नहर-सम्बन्धी। नहरका। संज्ञा स्त्री० वह भूमि जो नहरके जलसे सींची जाती हो।

नहल–संज्ञा स्त्री० (अ० नह्ल) शहदकी मक्खी। मधु-मक्षिका।

नहस–वि० (अ० नह्स) अशुभ। मनहूस।

नहाफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) "नहीफ़" का भाव। दुर्बलता।

नहार–संज्ञा पुं० (अ०) दिन। दिवस। यौ०–**लैलो नहार** = रात और दिन। वि० (फ़ा० मि० सं० निराहार) जिसने सवेरेसे कुछ खाया न हो। बासी मुँह। मुहा०–**नहार मुँह** = बिना सवेरेसे कुछ खाये हुए। **नहार तोड़ना** = जल-पान करना।

नहारी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ जलपान। २ एक प्रकारकी शोरबेदार तरकारी।

नहीं–संज्ञा स्त्री० (अ०) निषेध। मनाही।

नहीफ़–वि० (अ०) (संज्ञा–नहाफ़त) दुबला-पतला।

नहीब–संज्ञा पुं० (अ०) १ भय। डर। २ लूट-पाट।

नहुफ़्ता–वि० (फ़ा० नहुफ़्तः) छिपा हुआ। गुप्त।

नहूसत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मनहूस होनेका भाव। उदासीनता। मनहूसी। २ अशुभ लक्षण।

नहो–संज्ञा स्त्री० (अ० नह्व) १ रंग-ढंग। तौर तरीक़ा। २ व्याकरण।

नह्र–संज्ञा पुं० (अ०) ऊँटका बलिदान चढ़ाना। यौ०–**यौम-उल्-नह्र** =ज़िलहिज्ज मासका दसवाँ दिन जब मक्केमें ऊँटका बलिदान होता है। संज्ञा स्त्री० दे० "नहर।"

नह्व–संज्ञा पुं० दे० "नहो।"

ना–प्रत्य० (फ़ा० मि० सं० ना) एक प्रत्यय जो शब्दोंके आरम्भमें लगकर "नहीं" या "अभाव" आदि सूचित करता है। जैसे० ना-

इत्तफ़ाक़ी, ना-पाक, ना-चीज़, ना-हक़ आदि ।

ना-अहल–वि० (फा०+अ०) १ अयोग्य । २ असभ्य ।

ना-आशना–वि० (फा०) (संज्ञा ना-आशनाई) जिससे आशनाई या जान पहचान न हो । अनजान । अपरिचित ।

ना-इत्तफ़ाक़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) इत्तफ़ाक़ या एकता न होना । अनबन । बिगाड़ ।

ना-इन्साफ़–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा ना-इन्साफ़ी) अन्यायी ।

ना-उम्मेद–वि० (फा०) निराश ।

ना-उम्मेदी–संज्ञा स्त्री० (फा०) निराशा ।

नाक–वि० (फा०) भरा हुआ । पूर्ण । (प्रत्ययके रूपमें यौगिक शब्दोंके अन्तमें लगता है । जैसे–ग़म-नाक, दर्दनाक ।)

ना-कतखुदा–वि० (फा०) अविवाहित । कुँआरा ।

ना-कद्खुदा–वि० (फा०) अविवाहित । कुँआरा ।

ना-कद्खुदाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) अविवाहित अवस्था । कौमार अवस्था ।

ना-कन्द–संज्ञा पुं० (फा०) १ दो सालसे कम उमरका घोड़ा । बछेड़ा । २ वह जो कम उमरका हो । कमसिन । बच्चा । ३ नासमझ । अनाड़ी । मूर्ख ।

ना-क़द्र–वि० दे० "नाक़द्र ।"

ना-क़द्री–संज्ञा स्त्री० (फा० नाक़द्र) गुणोंका आदर न करना । क़दर न करना ।

ना-क़द्र–वि० (फा०+अ०) जो किसीकी क़द्र न समझे । जो गुणका आदर न करे ।

ना करदनी -वि०स्त्री० (फा०) न करने योग्य । नामुनासिब (बात ।

ना-करदा–वि० (फा० ना-कर्दः) जो किया न हो । बिना किया । जैसे–ना करदा जुर्म ।

ना-करदाकार–वि०(फा० ना-कर्द·कार) जिसे अनुभव न हो । अनजान । अनाड़ी ।

नाकास–वि० (फा०) संज्ञा ना-कसी) १ नीच । २ तुच्छ ।

नाक़ा–संज्ञा स्त्री० (अ० नाक़ः) मादा ऊँट । ऊँटनी । साँड़नी ।

नाक़ाबिल– वि० (फा० संज्ञा ना क़ाबिलीयत)१ जो क़ाबिल या योग्य न हो । ३ अशिक्षित ।

ना-काम–वि० (फा०) (संज्ञा ना-कामी) १ जिसका उद्देश सिद्ध न हुआ हो । विफल-मनोरथ । २ निराश । ना उम्मेद ।

नाकारा–वि० (फा० नाकारः) १ जो काममें न आसके । निकम्मा । निरर्थक । २ नालायक । अयोग्य ।

नाक़ा-सवार-संज्ञा पुं० (अ०+फा०)१ वह जो ऊँटनीपर सवार हो । २ पत्र या सन्देश ले जाने वाला । हरकारा ।

नाक़िल–वि० (अ०) १ नकल या

अनुकरण करनेवाला। २ प्रतिलिपि करनेवाला। ३ वर्णन करनेवाला।

नाक़िला—संज्ञा पुं० (अ० नाक़िलः) (बहु० नवाक़िल) १ इतिहास। २ कथा-कहानी।

नाक़िस—वि० (अ०) १ जिसमें कुछ नुक्स या त्रुटि हो। त्रुटि-पूर्ण। २ अधूरा। अपूर्ण। ३ बुरा। निकम्मा।

नाक़िस-उल्-अक़्ल—वि० (अ०) ख़राब अक़्लवाला। निकृष्ट बुद्धि-वाला।

नाक़िस-उल-खिल्क़त—वि०(अ०) जन्मसे ही जिसका कोई अंग ख़राब हो। जन्मका विकलांग।

नाक़ूस—संज्ञा पुं० (अ०) शंख जो फूँककर बजाया जाता है।

ना-ख़लफ़—वि० (फा० + अ०) (संज्ञा नाख़लाफ़ी) ना-लायक़। अयोग्य। (पुत्रके लिये)।

नाख़ुदा—संज्ञा पुं०(फा० नाव+ख़ुदा) मल्लाह। नाविक।

नाख़ून—संज्ञा पुं० (फा०) १ नाख़ुन। नख। मुहा०—**अक़्लके नाख़ुन लेना**=बुद्धिसे काम लेना। बुद्धिमान् बनना। यौ०—**नाख़ुने शमशेर**=तलवारकी धार। २ पशुओंका खुर। सुम।

नाख़ुन-गीर—संज्ञा पुं० (फा०) नाख़ुन काटनेका औज़ार। नहरनी।

नाख़ुना—संज्ञा पुं० (फा० नाख़ुनः) १ सितार बजानेका मिज़राब। २ आँखका एक रोग जिसमें आँखकी सफेदीमें एक लाल झिल्ली-सी पैदा हो जाती है।

ना-ख़ुश—वि० (फा०) अप्रसन्न।

ना-ख़ुशी—संज्ञा स्त्री०(फा०) अप्रसन्नता। नाराज़गी।

नाख़ून—संज्ञा पुं० दे० "नाख़ुन।"

ना-ख़्वाँदा—वि० (फा० ना-ख़्वाँदः) १ बिना बुलाया हुआ। २ जो पढ़ा-लिखा न हो। अशिक्षित।

ना-गवार—वि० (फा०) १ जो हज़म न हो। जो न पचे। २ जो अच्छा न लगे। अप्रिय। २ असह्य।

ना-गवारा—वि० दे० "ना-गवार।"

नागहाँ—क्रि०वि० (फा०) अचानक। सहसा। एकाएक।

नागहानी—वि० (फा०) अचानक होनेवाला। जैसे—नागहानी मौत। संज्ञा स्त्री० अचानक या सहसा होनेका भाव।

नाग़ा—संज्ञा पुं० (अ० नाग़ः) किसी निरन्तर या नियत समयपर होने वाली बातका किसी दिन या किसी नियत अवसरपर न होना। अंतर। बीच।

नागाह—क्रि० वि० (फा०) सहसा। अचानक। एकाएक।

ना-गुज़ीर—वि० (फा०) परम आवश्यक। अनिवार्य।

नाचाक़—वि० (फा०) १ अस्वस्थ। बीमार। २ दुबला-पतला। ३ जिसमें कुछ मज़ा न हो। आनन्द-रहित।

नाचाक़ी—संज्ञा स्त्री०(फा०नाचाक़)

१ अस्वस्थता। बीमारी। २ अन-बन। बिगाड़। मनमुटाव।

नाचार–वि० (फा०) जिसको कोई चारा न हो। विवश। मजबूर। क्रि० वि० लाचारीकी हालतमें। विवश होकर।

नाचारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ लाचारी। विवशता। मजबूरी।

नाचीज़–वि०(फा०)तुच्छ। निकृष्ट।

नाज़–संज्ञा पुं० (फा०) १ नखरा। चोचला। मुहा०–**नाज़ उठाना**=चोचला सहना। २ घमंड। गर्व।

नाज़नीं–संज्ञा स्त्री० (फा०) सुंदरी।

नाज़ बालिश–संज्ञा पुं० (फा०) छोटा मुलायम तकिया।

नाज़रीन–संज्ञा पुं० दे० 'नाज़िरीन।''

नाज़ व नियाज़–संज्ञा पुं० (फा०) नाज़-नखरा। चोचला।

नाज़ाँ–वि० (फा०) नाज़ या अभिमान करनेवाला। अभिमानी।

ना-जायज़–वि० (फा०+अ०) जो जायज़ न हो। जो नियम-विरुद्ध हो। अनुचित।

नाज़िम–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो लड़ी बनाता या पिरोता हो। २ इन्तज़ाम करनेवाला। व्यवस्थापक। ३ नज़्म या पद्य बनानेवाला। कवि। ४ मुसलमानी राज्यकालमें वह प्रधान कर्मचारी जो किसी देशका शासक और व्यवस्थापक होता था।

नाज़िर–संज्ञा पुं० (अ०) १ नज़र करने या देनेवाला। २ निरीक्षक। ३ अदालत या कार्यालयमें लेखकोंका प्रधान। ४ ख़्वाजा। महल-सरा। ५ वेश्याओंका दलाल।

नाज़िरा–क्रि० वि० (अ० नाज़िरः) ग्रंथ आदि देखकर (पढ़ना)। संज्ञा पुं० १ देखनेकी शक्ति। दृष्टि। २ आँख।

नाज़िरा-ख़्वाँ–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा नाज़िरा-ख़्वानी) जो कोई ग्रन्थ, विशेषतः कुरान, केवल देखकर पढ़ता हो और जिसे कंठस्थ न हो।

नाज़िरीन=संज्ञा पुं० (अ० नाज़िर का बहु०) १ देखनेवाले लोग। दर्शकगण। २ पढ़नेवाले लोग।

नाज़िल–वि० (फा०) उतरने या नीचे आनेवाला। गिरनेवाला। मुहा०–**नाज़िल होना**=१ ऊपरसे नीचे आना। २ आ पहुँचना या पड़ना। जैसे–बला नाज़िल होना।

नाज़िला–संज्ञा पुं० (अ० नाज़िलः) आपत्ति। संकट। मुसीबत।

नाज़िश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नाज़ करना। २ घमंड या अभिमान। इतराहट।

ना-जिन्स–वि० (फा०+अ०) १ दूसरे वर्ग या जातिका। २ अनमेल। ३ अयोग्य। नालायक़। ४ कमीना। ५ अशिक्षित। असभ्य।

नाज़ुक–वि० (फा०) १ कोमल। सुकुमार। २ पतला। महीन। बारीक। ३ सूक्ष्म। गूढ़। ४ ज़रासे झटके या धक्केसे टूट-फूट जानेवाला। यौ०–**नाज़ुक-मिज़ाज**=जो थोड़ा-सा कष्ट भी न सह

सके । ५ जिसमें हानि या अनिष्ट-की आशंका हो । जोखिम-भरा । जोखोंका ।

नाज़ुक-अन्दाम=वि० (फा०) दुबले-पतले और नाज़ुक बदनवाला ।

नाज़ुक-कलाम–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा नाज़ुक-कलामी) सूक्ष्म और बढ़िया बातें कहनेवाला ।

नाज़ुक-ख़याल–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा नाज़ुक-ख़याली) बहुत ही सूक्ष्म विचारोंवाला ।

नाज़ुक-तबा–वि० दे० "नाज़ुक-मिज़ाज ।"

नाज़ुक-दिमाग़–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा नाज़ुक-दिमाग़ी) १ ज़रा-सी बातमें जिसका दिमाग़ ख़राब हो जाय । चिड़-चिड़ा । २ अभिमानी ।

नाज़ुक-बदन–वि० (संज्ञा नाज़ुक-बदनी) दे० "नाज़ुक-अन्दाम ।"

नाज़ुक-मिज़ाज–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा नाज़ुक-मिज़ाजी) १ जो थोड़ा-सा भी कष्ट न सह सके । २ जल्दी बिगड़ जानेवाला । चिड़-चिड़ा । ३ घमंडी ।

नाज़ुकी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नाज़ुक होनेका भाव । नज़ाकत । २ कोमलता । मुलायमियत । ३ उन्मत्ता । सूर्खी । ४ घमंड । अभिमान ।

ना-ज़ेब–वि० (फा०) जो देखनेमें ठीक न जान पड़े । भद्दा । बेमेल ।

ना-ज़ेबा–वि० (फा० ना-ज़ेब) १ दे० "ना-ज़ेब ।" २ अनुचित । ना-मुनासिब ।

ना-तजरुबेकार–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा ना-तजरुबेकारी) जिसे तजरुबा या अनुभव न हो । अनुभव-हीन । अननुभवी ।

ना-तमाम–वि० (फा० + अ०) अपूर्ण । अधूरा ।

ना-तराश–वि० (फा०) १ जो तराशा या छीला न गया हो । अनगढ़ । २ असभ्य । उजड्ड ।

ना-तराशीदा–वि० दे० "ना-तराश ।

ना-तवाँ–वि० (फा०) कमज़ोर । दुर्बल । अशक्त ।

ना-तवानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) कमज़ोरी । दुर्बलता । अशक्तता ।

ना-ताक़त=वि० (फा०+अ०) (संज्ञा ना-ताक़ती) दुर्बल । कमज़ोर ।

नातिक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो बोलता हो । बोलनेवाला । २ बुद्धिमान् । अक़्लमन्द । वि० स्थायी । दृढ़ । पक्का ।

नातिक़ा–संज्ञा पुं० (अ० नातिक़ः) बोलनेकी शक्ति । वाक्-शक्ति ।

नाद-ए-अली–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ एक मंत्र जो प्रायः ज़हर-मोहरे या चाँदीके पत्रपर खोदकर बच्चोंके गलेमें, उन्हें रोग और रोग आदिसे बचानेके लिये, पहनाते हैं । २ ज़हर-मोहरेका वह टुकड़ा, जो इस प्रकार बच्चोंके गलेमें पहनाया जाता है ।

ना-दहिन्द–वि० दे० "ना-दिहन्द ।"

नादान–वि० (फा०) (संज्ञा नादानी) नासमझ । अनजान । मूर्ख ।

ना-दानिस्तगी-संज्ञा स्त्री०(फा०) अनजान-पन।

ना-दानिस्ता-क्रि० वि० (फा० ना-दानिस्तः) अनजानमें।

नादानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) ना-समझी। मूर्खता।

नादार-वि० (फा०) (संज्ञा नादारी) गरीब। दरिद्र। मुफलिस।

नादिम=वि० (अ०) (संज्ञा नदामत) शरमिन्दा। लज्जित।

नादिर-वि० (अ०) (बहु० नादिरात, नवादिर) १ अनोखा। अद्भुत। विलक्षण। २ दुष्प्राप्य। ३ बहुत बढ़िया। संज्ञा पुं० फारसका एक बादशाह जिसने मुहम्मद शाहके समय भारतपर चढ़ाई की थी और दिल्लीमें बहुत नर-हत्या कराई थी।

नादिर-गरदी-संज्ञा स्त्री० दे० "नादिर-शाही।"

नादिर-शाही-संज्ञा स्त्री० (फा०) नादिरशाहका-सा अत्याचार और कुप्रबन्ध।

नादिरा-वि० दे० "नादिर।"

नादिरी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक प्रकारकी सदरी या कुरती। २ गंजीफे या ताशके पत्तोंमें एक्का। ३ नादिरशाही।

ना-दिहन्द-वि० (फा० ना+आ० दहिन्द) (संज्ञा ना-दिहन्दी) जो जल्दी रुपया पैसा न दे। देनेमें तरह-तरहके झगड़े निकालनेवाला।

ना-दीदा-वि० (फा० नादीदः) १ जो देखा न हो। बिना देखा हुआ। २ जिसने कुछ देखा न हो। ३ जो खाने-पीनेकी चीज-पर नजर रखे। न-दीदा।

ना-दुरुस्त-वि० (फा०) (संज्ञा ना-दुरुस्ती) १ जो दुरुस्त या ठीक न हो। २ अनुचित। ना-मुनासिब।

नान-संज्ञा स्त्री० (फा०) रोटी।

नानकार-संज्ञा पुं० (फा०) वह धन या भूमि जो किसीको निर्वाहके लिये दिया जाय।

नान खताई-संज्ञा स्त्री० (फा०) टिकियाके आकारकी एक प्रकारकी सोंधी खस्ता मिठाई।

नान-पाव-संज्ञा स्त्री० (फा० नान +पुर्त० पाव=रोटी) एक प्रकारकी मोटी बड़ी रोटी। पावरोटी।

नान-बाई-संज्ञा पुं० (फा० नान+आबा=शोरबा+ई प्रत्यय०) रोटी पकाने या बेचनेवाला।

नान व नफ़क़ा-संज्ञा पुं० (फा० नान व नफ़क़) रोटी-कपड़ा। खाने-पहननेका खर्च। भरण-पोषणका व्यय।

नाना-संज्ञा पुं० (अ० नअ्नअ्) पुदीना।

नाने-जवीं-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ जौकी रोटी। २ गरीबोंका रूखा-सूखा भोजन।

ना-पसन्द-वि० (फा०) १ जो पसंद न हो। जो अच्छा न लगे। २ अप्रिय।

ना-पाक-वि० (फा०) (संज्ञा ना

पाकी) १ अपवित्र । अशुद्ध । २ मैला-कुचैला ।

नापायदार–वि० (फा०) (संज्ञा ना-पायदारी) जो मजबूत या टिकाऊ न हो । कमजोर ।

ना-पैद–वि० (फा० ना+पैदा) १ जो अभी तक पैदा या उत्पन्न न हुआ हो । २ विनष्ट । ३ अप्राप्य ।

ना-पैदा–वि० (फा०) १ जो पैदा न हुआ हो । २ गुप्त । छिपा हुआ । ३ विनष्ट । बरबाद ।

नाफ़–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० नाभि) १ जरायुज जन्तुओंके पेटके बीचका चिह्न या गड्ढा । नाभि । तोंदी । तुंदी । २ मध्य भाग ।

ना-फ़रजाम–वि० (फा०) १ जिसका अन्त बुरा हो । २ अयोग्य । निकम्मा ।

ना-फ़रमान–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका पौधा जिसके फूल ऊदे या बैंगनी होते हैं । वि० आज्ञा न माननेवाला । उद्दंड ।

ना-फ़रमानी–संज्ञा पु० (फा०) एक प्रकारका ऊदा या बैंगनी रंग । संज्ञा स्त्री० आज्ञा न मानना । हुकुम-उदूली ।

ना-फ़हम–वि० (फा०) जिसे फ़हम या समझ न हो । ना-समझ ।

ना-फ़हमी–संज्ञा स्त्री० (फा०) ना-समझी । मूर्खता ।

नाफ़ा–संज्ञा पुं० (फा० नाफ़ः) कस्तूरीकी थैली जो कस्तूरी-मृगोंकी नाभिसे निकलती है । वि० दे० "नाफ़िअ ।"

नाफ़िअ–वि० (अ० नाफ़िअ) नफ़ा या लाभ पहुँचानेवाला । लाभदायक ।

नाफ़िज़–वि० (अ०) जारी या प्रचलित होनेवाला ।

नाफ़िर–वि० (अ०) नफ़रत या घृणा करनेवाला ।

नाब–वि० (फा०) १ खालिस । निर्मल । बे-मैल । २ शुद्ध । पवित्र । ३ अच्छी तरह भरा हुआ । लबालब । परिपूर्ण । संज्ञा स्त्री० तलवारपरकी वह नाली जो दोनों तरफ एक सिरेसे दूसरे सिरे तक होती है । संज्ञा पुं० (अ०) १ दाढ़का दाँत । २ हाथीका दाँत । ३ साँपका जहरीला दाँत ।

ना-ब-कार–वि० (फा०) १ व्यर्थका । निरर्थक । २ अयोग्य । नालायक । ३ दुष्ट । पाजी । ४ अनुचित ।

नाबदान–संज्ञा पु० (फा० नाब= नाली) वह नाली जिससे मैला पानी आदि बहता है । पनाला । नरदा ।

ना-बलद–वि० (फा०+अ०) १ गँवार । उजड्ड । मूर्ख । अनाड़ी । २ अपरिचित । अनजान ।

ना-बालिग़–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा नाबालिग़ी) जो पूरा जवान न हुआ हो । अप्राप्त-वयस्क ।

ना-बीना–वि० (फा०) अन्धा ।

ना-बूद–वि० (फा०) १ जिसका अस्तित्व न रह गया हो । बरबाद । २ नष्ट होनेवाला । नश्वर ।

ना-मंजूर–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा-

ना-मंजूरी) जो मंजूर न हो। अस्वीकृत।

नाम–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० नाम) १ वह शब्द जिससे किसी वस्तु या व्यक्तिका बोध हो। संज्ञा। प्रसिद्ध। यश।

नाम-आवर–वि० (फा०) (संज्ञा नाम-आवरी) प्रसिद्धि। नामवर।

नामए-ऐमाल–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) वह पत्र जिसपर किसीके अच्छे और बुरे सब कार्योंका उल्लेख हो। ऐमाल नामा।

नाम-ज़द–वि० (फा०) (संज्ञा नाम-ज़दगी) १ प्रसिद्ध। मशहूर। २ किसीके नामपर रखा या निकाला हुआ। ३ जिसका नाम किसी विषयमें लिखा गया हो। जैसे-तहसीलदारीके लिये चार आदमी नामज़द हुए हैं।

नाम-दार–वि० (फा०) प्रसिद्ध। नामवर। नामी।

ना-मर्द–वि० (फा०) (संज्ञा नामर्दी) १ नपुंसक। २ डरपोक। कायर।

ना-मर्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नपुंसकता। क्लीबता। २ कायरता। बोदा-पन।

ना-महदूद–वि० (फा०+अ०) जिसकी हद न हो। असीम।

ना-महरम–वि० (फा०+अ०) अपरचित। अजनबी। बाहरी। संज्ञा पुं० मुसलमान स्त्रियोंके लिये ऐसा पुरुष जिससे विवाह हो सकता हो और जिससे परदा करना उचित हो।

नाम व निशान–संज्ञा पुं० (फा०) १ नाम और चिह्न। नाम और लक्षण। २ नाम और पता।

नाम-वर–वि० (फा० "नाम-आवर" का संक्षिप्त रूप) प्रसिद्ध। मशहूर।

नाम-वरी–संज्ञा स्त्री० (फा० "नाम-आवरी" का संक्षिप्त रूप) प्रसिद्धि। शोहरत।

नामा–संज्ञा पुं० (फा० नामः) १ खत। पत्र। २ ग्रन्थ। पुस्तक।

ना-माकूल–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा ना-माकूलियत) १ अयोग्य। नालायक। २ अयुक्त। अनुचित।

नामा-निगार–वि० (फा०) (संज्ञा नामा-निगारी) समाचार लिखने-वाला। समाचार-लेखक। संवाद-दाता। रिपोर्टर।

नामाबर–संज्ञा पुं० (फा० नामः बर) पत्र-वाहक। हरकारा।

ना-मालूम,–वि० (फा०+अ०) १ जिसे मालूम न हो। अनजान। अपरिचित। अजनबी। २ अज्ञात। ४ अप्रसिद्ध।

नामी–वि० (फा०) १ नामवाला। नामधारी। नामक, २ प्रसिद्ध। मशहूर। यौ०–**नामी-गरामी**=बहुत प्रसिद्ध।

ना-मुआफ़िक़–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा ना-मुआफ़िक़त) १ जो मुआफ़िक़ या उपयुक्त न हो। २ जो अनुकूल न हो। विरुद्ध। ३ जो अच्छा न लगे।

नामुक़िर–वि० (फा०+अ०) जो इकरार या स्वीकार न करे।

ना-मुबारक–वि० (फा०+अ०) अशुभ।

ना-मुनासिब–वि० (फा०+अ०) अनुचित।

ना-मुमकिन–वि० (फा०+अ०) असंभव।

ना-मुराद–वि० (फा०) (संज्ञा ना मुरादी) १ जिसकी कामना पूरी न हुई हो। विफल-मनोरथ। २ अभागा। बद-किस्मत।

ना-मुलायम–वि० (फा०) १ कठोर। कड़ा। २ अनुचित। ना-मुनासिब।

नामूस–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ प्रतिष्ठा। इज़्ज़त। नेकनामी। २ पातिव्रत। स्त्रियोंका सदाचार। ३ लज्जा। ग़ैरत।

नामूसी–संज्ञा स्त्री० (फा० नामूस) १ बेइज्जती। २ बदनामी।

नामे-खुदा–(फा०) ईश्वर कुदृष्टिसे बचावे। ईश्वर करे, नजर न लगे। जैसे–वह चाँद-सा मुँह नामे खुदा और ही कुछ है।

ना-मौजूँ–वि० (फा०) १ जो मौजूँ या उपयुक्त न हो। अनुपयुक्त। २ बे-जोड़। ३ अनुचित।

नाय–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नरकट। २ बाँसुरी।

नायज़ा–संज्ञा पुं० (फा० नायजः) पुरुषकी इंद्रिय। लिंग।

नायब–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसीकी ओरसे काम करनेवाला। मुनीब। मुख़्तार। २ सहायक। सहकारी।

नायबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) नायबका कार्य या पद। नायबी।

नायबी–संज्ञा स्त्री० (अ० नायब) नायबका कार्य या पद।

नायाब–वि० (फा०) १ जो जल्दी न मिले। अप्राप्य। २ बहुत बढ़िया।

नारंगी–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० नागरंग) १ नीबूकी जातिका एक मझोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगंधित और रसीले फल लगते हैं। २ नारंगीके छिलकेका-सा रंग। पीलापन लिये हुए लाल रंग। वि०–पीलापन लिये हुए लाल रंगका।

नारंज–संज्ञा पुं० (फा०) नारंगी। संतरा। कमला नीबू।

नारंजी–वि० (फा०) नारंगीके रंगका (पीला)।

नार–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० नैरान) अग्नि। आग। संज्ञा पुं० (फा० अनार) यौगिकमें "अनार" का संक्षिप्त रूप। जैसे–गुल-नार।

नारजील–संज्ञा पुं० (फा०) नारियल। नारिकेल।

ना-रवा–वि० (फा०) १ अनुचित। ना-मुनासिब। ग़ैरवाजिब। २ नियम आदिके विरुद्ध। ३ अप्रचलित। ४ विफल-मनोरथ।

ना-रसा–वि० (फा०) (संज्ञा ना-रसाई) १ जो उद्दिष्ट स्थान तक न पहुँच सके। २ जिसका कुछ प्रभाव न हो।

नारा–संज्ञा पुं० (अ० नअरः) १ जोरकी आवाज। घोष। २ युद्धका विजय-घोष। क्रि० प्र०–

लगाना। ३ पीड़ा या कष्टके समय चिल्लानेका शब्द।

ना-राज़–वि०(फा०+अ०)अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। ख़फ़ा।

ना-राज़गी-संज्ञा स्त्री० दे० "नाराज़ी।"

नारा-ज़न–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा नारा-ज़नी) नारा लगानेवाला। ज़ोरसे पुकारने या घोष करनेवाला।

ना-राज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) अप्रसन्नता। रुष्टता। ख़फ़गी।

ना-रास्त–वि० (फा०) १ जो सीधा न हो। टेढ़ा। २ जो ठीक न हो।

नारी–वि० (अ०) १ अग्नि-सम्बन्धी। अग्निका। २ दोज़ख-की आगमें जलनेवाला। दोज़खी। नारकीय।

नाल-संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० नालक) १ सूतकी तरहका रेशा जो किलिककी कलमसे निकलता है। २ नरसल। नरकट। संज्ञा पुं० (अ० नअल) १ लोहेका वह अर्ध चंद्राकार खंड जिसे घोड़ोंकी टापके नीचे या जूतोंकी एड़ीके नीचे उन्हें रगड़से बचानेके लिए जड़ते हैं। २ तलवार आदिके म्यानकी साम जो नोकपर मढ़ी होती है। ३ कुंडलाकार गढ़ा हुआ पत्थरका भारी टुकड़ा जिसके बीचों-बीच पकड़कर उठानेके लिये एक दस्ता रहता है। इसे कसरत करनेवाले उठाते हैं। ४ लकड़ीका वह चक्कर जिसे नीचे डालकर कुएँकी जोड़ाई की जाती है। ५ वह रुपया जो जुआरी जूएका अड्डा रखनेवालेको देते हैं। ६ लकड़ीके जूते।

नाल-बन्द–(अ०+फा०) संज्ञा नालबन्दी) जूतेकी एड़ी या घोड़ेकी टापमें नाल जड़नेवाला।

नाल-बहा-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह धन जो अपनेसे बड़े राजा या महाराजाको कोई छोटा राजा देता है। ख़िराज।

नालाँ–वि० (फा०) १ जो रोता हो। रोनेवाला। २ रोकर फ़रियाद या नालिश करनेवाला।

नाला–संज्ञा पुं० (फा० नालः) १ रोकर प्रार्थना करना। बावैला। रोना-धोना। २ शोरगुल। मुहा०–**नाला खींचना**=आह करना। दीर्घ श्वास लेना।

ना-लायक़–वि० (फा०+अ०) अयोग्य। निकम्मा। मूर्ख।

ना-लायक़ी-संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) अयोग्यता।

नालिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) किसीके द्वारा पहुँचे हुए दुःख या हानिका ऐसे मनुष्यके निकट निवेदन जो उसका प्रतिकार कर सकता हो। फ़रियाद।

नालिशी-वि० (फा०) १ नालिश करनेवाला। नालिशसम्बन्धी।

नालैन–संज्ञा पुं० (अ०) जूतोंका जोड़ा।

नाव–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० नौ) नौका। किश्ती।

नावक–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारका छोटा बाण। २ मधु-मक्खीका डंक। संज्ञा पुं० (सं० नाविक) केवट। मल्लाह।

नावक-अफ़गन–वि० (फा०) (संज्ञा नावक-अफ़गनी) तीर चलानेवाला।

ना-वक्त–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा ना-वक़्ती) १ जो ना-मुनासिब वक़्तपर हो। बे-वक़्त। कुसमय। क्रि० वि० अनुचित अवसरपर। बे-मौक़े। संज्ञा पुं० देर।

ना-वाक़फ़ीयत–संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) वाक़फियत या जानकारीका अभाव। अनजानपन।

ना-वाक़िफ़–वि० (फा० + अ०) अपरिचित। अनजान।

ना-वाजिब–वि० (फा०+अ०) अनुचित। ना-मुनासिब। ग़ैर-वाजिब।

नाश–संज्ञा स्त्री० (अ० नअश) १ मृतककी रथी। ताबूत। २ मृत शरीर। लाश। ३ सप्तर्षि।

नाशपाती–संज्ञा स्त्री०(फा०)मझोले डील-डौलका एक पेड़ जिसके फल प्रसिद्ध मेवोंमें गिने जाते हैं।

ना-शाइस्ता–वि० (फा० नाशाइस्तः) १ अनुचित। ना-मुनासिब। २ अनुपयुक्त। ३ असभ्य। उजड्ड।

ना-शाइस्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अनौचित्य। २ अनुपयुक्तता। ३ असभ्यता। उजड्ड-पन।

ना-शाद–वि० (फा०) १ अप्रसन्न। दुःखी। नाखुश। नाराज़। २ अभागा। बद-क़िस्मत। यौ०–**नाशाद व नामुराद**=अभागा और विफल-मनोरथ।

ना-शिकेब–वि० (फा०) १ अधीर। २ विफल। बेचैन।

ना-शिकेबा–वि० दे० "नाशिकेब।"

नाशिता–संज्ञा पुं० (फा०) १ सुबहसे भूखा रहना। कुछ न खाना। २ सबेरेका भोजन। जल-पान।

ना-शुकरा–वि० दे० "ना-शुक्र।"

ना-शुकरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) कृतघ्नता।

ना-शुक्र–वि० (फा०) कृतघ्न।

ना-शुदनी–वि० (फा०) १ जो न हो सके। ना-मुमकिन। असम्भव। २ जो होनहार न हो। अयोग्य। नालायक़। ३ अभागा। कमबख़्त।

नाश्ता–संज्ञा पुं० (फा० नाशितः) जलपान। कलेवा।

ना-सज़ा–वि० (फा०) ना-मुनासिब। अनुचित।

ना-सज़ावार–वि० (फा० १ अनुचित। २ अनुपयुक्त। ग़ैर-वाजिब। ३ असभ्य। उजड्ड। गँवार।

ना-सबूर–वि० (फा०) १ जिसे सब्र न हो। अधीर। २ बेचैन।

ना-समझ–वि० (फा० ना+हिं० समझ) जिसे समझ न हो। निर्बुद्धि। बेवकूफ़।

ना-समझी–संज्ञा स्त्री० (फा० ना+हिं० समझ) बेवकूफ़ी।

नासह—वि० (अ० नासिह) नसीहत या उपदेश देनेवाला। उपदेशक।

ना-साज़—वि० (फा०) (संज्ञा ना-साज़ी) १ विरोधी। २ जो उपयुक्त न हो। ३ अस्वस्थ। बीमार।

नासिख़—संज्ञा पुं० (अ०) १ लिखनेवाला। लेखक। २ नष्ट या रद्द करनेवाला।

ना-सिपास—वि० (फा०) (संज्ञा ना-सिपासी) कृतघ्न। नमक-हराम।

नासिया-संज्ञा पुं० (फा० नासियः) मस्तक। माथा। यौ०—**नासिया-साई**=१ जमीनपर माथा रगड़ना। चरम सीमाकी दीनता दिखलाना।

नासिर—वि० (अ०) (बहु० अन्सार) (संज्ञा पुं० अ०) नसर या गद्य लिखनेवाला। गद्य-लेखक। मदद करनेवाला। सहायक।

नासूर—संज्ञा पुं० (अ०) घाव, फोड़े आदिके भीतर दूर तक गया हुआ छेद जिससे बराबर मवाद निकला करता है और जिसके कारण घाव जल्दी अच्छा नहीं होता। नाड़ी-व्रण।

ना-हंजार—वि० (फा०) १ दुश्चरित्र। बद-चलन। २ दुष्ट। पाजी। ३ नालायक। अयोग्य। ४ कमीना।

ना-हक़—क्रि० वि० (फा०+अ०) वृथा। व्यर्थ। बे-फ़ायदा।

नाहक़-शनास—वि० (फा०+अ०) (संज्ञा नाहक़-शनासी) जो औचित्य या न्यायका ध्यान न रखे। अन्यायी।

ना-हमवार—वि० (फा०) संज्ञा ना हमवारी) १ जो हमवार या समतल न हो। ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा। २ नालायक।

नाहीद—संज्ञा पुं० (फा०) शुक्र ग्रह।

निश्रामत—संज्ञा स्त्री० दे० 'नियामत।'

निक़रिस—संज्ञा पुं० (अ०) पैरोंमें होनेवाला एक प्रकारका गठियाका दर्द।

निक़ाब—संज्ञा स्त्री० दे० "नक़ाब।"

निकाह—संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानी पद्धतिके अनुसार किया हुआ विवाह।

निकाह-नामा—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसपर निकाह और महर (वधूको दिये जानेवाले धन) का उल्लेख हो।

निकाही—वि० (अ० निकाह) स्त्री जिसके साथ निकाह हुआ हो।

निको—वि० (फा०) उत्तम। अच्छा। नेक। जैसे—**निको नामी**=नेक-नामी। **निको कारी**=अच्छे काम।

निकोई—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नेकी। भलाई। उपकार। २ उत्तमता। अच्छापन। ३ सद्व्यवहार।

निकोहिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ धिक्कार। लानत। २ डाँट-डपट। धमकी।

निख़ालिस—वि० (हिं० नि+अ० ख़ालिस) १ जो ख़ालिस या शुद्ध न हो। जिसमें मिलावट हो। २ दे० "ख़ालिस।"

निगन्दा—संज्ञा पुं० (फा० निगन्दः) १ एक प्रकारकी बढ़िया सिलाई। बखिया। २ लिहाफ़, रजाई

आदिमें रूईको जमाए रखनेके लिए की जानेवाली दूर दूरकी सिलाई।

निगराँ–वि० (फा०) १ निगरानी या देख-रेख करनेवाला। रक्षक। २ प्रतीक्षा करनेवाला।

निगरानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) देख-रेख। निरीक्षण।

निग़ह–संज्ञा स्त्री० दे० "निगाह।"

निगह-बान–संज्ञा पुं० (फा०) निगाह या देख-रेख रखनेवाला।

निगहबानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) निगाह या देख-रेख रखनेकी क्रिया। रक्षा। हिफाज़त।

निगार–वि० (फा०) (संज्ञा निगारी) कलम आदिसे लिखने या बेल-बूटे बनानेवाला। जैसे-नामा-निगार। संज्ञा पुं० १ चित्र। तसवीर। २ मूर्ति। प्रतीक। ३ प्रिय। प्यारा। ४ शोभाके लिए बनाये हुए बेल बूटे आदि।

निगार-ख़ाना–संज्ञा पुं० (फा०) चित्रशाला।

निगारिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ लिखना। लेखन। २ लेख। लिपि। ३ बेल-बूटे बनाना।

निगारी–वि० (फा०) १ जिसने अपने हाथों-पैरोंमें मेंहदी लगाई हो। २ प्रिय। प्यारा।

निगारे-आलम–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) वह जो संसारमें सबसे अधिक सुन्दर हो।

निगाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दृष्टि। नज़र। २ देखनेकी क्रिया या ढंग। चितवन। तकाई। ३ कृपा-दृष्टि। मेहरबानी। ४ ध्यान। विचार। ५ परख। पहचान।

निगाह-बान–संज्ञा पुं० दे० "निगह-बान।"

निगाह-बानी–संज्ञा स्त्री० दे० "निगह-बानी।"

निगूँ–वि० (फा०) १ झुका हुआ। नत। जैसे–**सर-निगूँ**=जो सिर झुकाए हो। २ टेढ़ा। वक्र। ३ रहित। हीन। जैसे-**निगूँ बख़्त**=कम्बख़्त। अभागा।

निगूँ-हिम्मत=कायर।

निज़दात–संज्ञा स्त्री० (फा० निज़्द) अमानतकी रकम या मद।

निज़ाअ–संज्ञा पुं० (अ०) १ झगड़ा। लड़ाई। तकरार। २ शत्रुता। दुश्मनी। वैर। (कुछ कवियोंने इसे स्त्रीलिंग भी माना है।)

निज़ाई–वि० (अ०) १ निज़ाअ-सम्बन्धी। झगड़ेका। २ जिसके सम्बन्धमें झगड़ा हो। जैसे–**निज़ाई ज़मीन**।

निजाबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) "नजीब" का भाव। कुलीनता।

निज़ाम–संज्ञा पुं० (अ०) १ मोतियों या रत्नों आदिकी लड़ी। २ जड़। बुनियाद। ३ क्रम। सिलसिला। ४ इन्तज़ाम। बन्दोबस्त। व्यवस्था। हैदराबादके शासकोंका पदवी-सूचक नाम।

निज़ामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ व्यवस्था। प्रबंध। नाज़िमका कार्य, पद या कार्यालय।

निज़ामे-बतलीमूस–संज्ञा पुं० (अ०)

हकीम बतलीमूसका यह सिद्धान्त कि पृथ्वी सारी सृष्टिका केन्द्र है और सब ग्रह-नक्षत्र आदि पृथ्वी-की ही परिक्रमा करते हैं।

निज़ामे-शम्सी–संज्ञा पुं० (अ०) सौर। चक्र। सूर्य और ग्रहों आदिका क्रम या व्यवस्था।

निज़ार–वि० (फा०) १ दुबला। दुर्बल। २ कमज़ोर। निर्बल। ३ दरिद्र। ग़रीब। असमर्थ।

निज़्द–क्रि० वि० (फा०) १ निकट। पास। २ सामने। आगे। दृष्टिमें।

निदा–संज्ञा स्त्री० (अ० मि० सं० नाद) १ पुकारनेकी आवाज या क्रिया। पुकार। हाँक। २ सम्बोधन-का शब्द। जैसे–ऐ, ओ, हे आदि।

निफ़ाक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ भीतरी बैर या छल-कपट। २ शत्रुता। दुश्मनी। ३ विरोध। जैसे-**निफ़ाक़-राय**=मत-भेद।

निफ़ाक़ता–संज्ञा पुं०(अ० निफ़ाक़से उर्दू) (स्त्री० निफ़ाक़ती) छल करनेवाला। कपटी।

निफ़ास–संज्ञा पुं० दे० "नफ़ास।"

नि-बख़्ता–वि० (हिं० नि०+फा० बख़्त) (स्त्री० निबख़्ती) कम्ब ख़्त। अभागा।

नियाज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कामना। इच्छा। २ प्रेम-प्रद र्शन। ३ दीनता। आजिज़ी। ४ बड़ोंका प्रसाद। ५ मृतकके उद्दे-श्यसे दरिद्रोंको भोजन आदि देना। फ़ातिहा। दुरूद। ६ भेंट। उपहार। ७ बड़ोंसे होने-वाला परिचय। मुहा०-**नियाज़ हासिल करना**=किसी बड़ेकी सेवामें उपस्थित होना।

नियाज़-मन्द–वि० (फा०) (संज्ञा नियाज़-मन्दी) १ इच्छा या कामना रखनेवाला। २ सेवक। अधी-नस्थ।

नियाज़ी–वि० (फा०) १ प्रेमी। २ प्रिय। ३ मित्र।

नियाबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ नायब होनेकी क्रिया या भाव। २ स्थानापन्न होना। ३ प्रति-निधित्व।

नियाम–संज्ञा पुं० (फा०) तलवारकी म्यान।

नियामत–संज्ञा स्त्री० (अ० नेअ-मत) (बहु० नअम) १ अलभ्य पदार्थ। दुर्लभ पदार्थ। २ स्वादिष्ट भोजन। उत्तम व्यंजन। ३ धन-दौलत।

नियामत ग़ैर-मुतरक़्क़बा-(अ०+ फा०) वह धन या उत्तम वस्तु जिसके मिलनेकी पहलेसे कोई आशा न हो।

नियामत-परवरदा–वि० (अ०+ फा०) जिसका पालन-पोषण बहुत सुखसे हुआ हो। दुलारा।

निर्ख़–संज्ञा पुं० (फा०) भाव। दर।

निर्ख़नामा–संज्ञा पुं० (फा०) वह पत्र जिसपर सब चीजोंका निर्ख़ या भाव लिखा हो

निर्ख़-बन्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०)भाव या दर निश्चय करना।

निर्ख़ी–संज्ञा पुं० (फा०) वह जो निर्ख़ या दर ठहराता हो।

निवाला–संज्ञा स्त्री० (फा० नवालः) ग्रास। कौर।

निशस्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) बैठनेका भाव या क्रिया। बैठक। यौ०–**निशस्त-बरख़ास्त**=१ उठना-बैठना। २ सज्जनोंकी मंडलीमें रहनेकी कला या तौर-तरीक़ा।

निशस्त-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) बैठनेका स्थान। बैठक।

निशा-ख़ातिर–संज्ञा स्त्री० (फा० निशाँ अ०) ख़ातिर तसल्ली। सन्तोष। दिल-जमई।

निशात–संज्ञा स्त्री० (फा० नशात) १ सुख। आनन्द। २ आनन्द-मंगल। सुख-भोग।

निशान–संज्ञा पुं० (फा०) १ लक्षण जिससे कोई चीज़ पहचानी जासके। चिह्न। २ किसी पदार्थसे अंकित किया हुआ चिह्न। ३ शरीर अथवा और किसी पदार्थ परका चिह्न, दाग या धब्बा। ४ वह चिह्न जो अपढ़ आदमी अपने हस्ताक्षरके बदलेमें किसी काग़ज़ आदिपर बनाता है। यौ०–**नाम-निशान**=१ किसी प्रकारका चिह्न या लक्षण। २ अस्तित्वका लेश। बचा हुआ थोड़ा अंश। ३ पता। ठिकाना। मुहा०–**निशान देना**=१ आसामीको समन्स आदि तामील करनेके लिये पहचनवाना। २ समुद्रमें या पहाड़ों आदिपर बना हुआ वह स्थान जहाँ लोगोंको मार्ग आदि दिखानेके लिये कोई प्रयोग किया जाता हो। ३ ध्वजा। पताका। झंडा। मुहा०–**किसी बातका निशान उठाना या खड़ा करना**=किसी काममें अगुआ या नेता बनकर लोगोंको अपना अनुयायी बनाना। ४ दे० "निशाना।" ५ दे० "निशानी।"

निशान-ची–संज्ञा पुं० (फा० निशान+हिं० ची प्रत्य०) वह जो किसी राजा, सेना या दल आदिके आगे झंडा लेकर चलता हो। निशान-बरदार।

निशान-देही–संज्ञा स्त्री० (फा०) आसामीको सम्मन आदिकी तामीलके लिये पहचनवानेकी क्रिया।

निशान-बरदार–संज्ञा पुं० दे० "निशानची।"

निशाना–संज्ञा पुं० (फा० निशानः) १ वह जिसपर ताककर किसी अस्त्र या शस्त्र आदिका वार किया जाय। लक्ष्य। २ किसी पदार्थको लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकारका वार करना। मुहा०–**निशाना बाँधना**=वार करनेके लिये अस्त्र आदिको इस प्रकार साधना जिसमें ठीक लक्ष्यपर वार हो। **निशाना मारना या लगाना**=ताककर अस्त्र आदिका वार करना। ३ वह जिसपर लक्ष्य करके कोई व्यंग्य या बात कही जाय।

निशाना-अन्दाज़–संज्ञा पुं० (फा०)

(संज्ञा निशाना-अन्दाज़ी) वह जो बहुत ठीक निशाना लगाता हो।
निशानी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ स्मृतिके उद्देश्यसे दिया अथवा रखा हुआ पदार्थ। यादगार। स्मृति चिह्न। २ वह चिह्न जिससे कोई चीज़ पहचानी जाय।
निशास्ता–संज्ञा पुं० (फ़ा० निशास्तः) १ गेहूँको भिगोकर उसका निकाला या जमाया हुआ सत या गूदा। २ माँड़ी। कलफ़।
निशीद–संज्ञा पुं० (फ़ा०) गाने बजानेकी आवाज़। संगीतका शब्द।
निसबत–संज्ञा स्त्री० (अ० निस्बत) १ संबंध। लगाव। ताल्लुक़। २ मँगनी। विवाह संबंधकी बात। ३ तुलना। मुक़ाबला।
निसबती–वि० (अ० निस्बत) निसबत या सम्बन्ध रखनेवाला। सम्बन्धी। यौ०–**निसबती भाई** =१ बहनोई। २ साला।
निसवाँ–संज्ञा स्त्री० (अ० निसाऽका बहु०) स्त्रियाँ। महिलाएँ। जैसे -**तालीमे निसवाँ**–स्त्री-शिक्षा।
निसा–संज्ञा स्त्री० बहु० (अ०) स्त्रियाँ।
निसाब–संज्ञा पुं० (अ०) १ मूलधन। पूँजी। २ सम्पत्ति। दौलत। ३ उतना धन जिसपर ज़कात देना कर्तव्य हो।
निसार–संज्ञा पुं० (अ०) निछावर करनेकी क्रिया। सदका। निछावर। वि० निछावर किया हुआ।
निसियाँ–संज्ञा पुं० दे० "निसियान।"
निसियान–संज्ञा पुं० (अ०) १ भूलना। याद न रखना। स्मरण-शक्तिका अभाव। २ भूल। चूक। ग़लती।
निस्फ़–वि० (अ०) आधा। अर्द्ध।
निस्फ़-उन्नहार–संज्ञा पुं० (अ०) शीर्ष-विन्दु जहाँ सूर्य ठीक दोपहरके समय पहुँचता है।
निस्फ़ानिस्फ़–वि० (अ० निस्फ़) ठीक आधा आधा। आधे आध।
निस्बत–संज्ञा स्त्री० दे० "निसबत।"
निस्वाँ–संज्ञा स्त्री० दे० "निसवाँ।"
निहंग–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ घड़ियाल या मगर नामक जलजन्तु। यौ०–**निहंगे अजल**=यमदूत। २ तलवार। असि। वि० (सं० निःसंग) १ जिसके साथ कोई न हो। अकेला। २ नंगा।
निहंग लाड़ला–वि० (हिं० नहंग+लाड़ला) जो माता-पिताके दुलारके कारण बहुत ही उद्दंड और लापरवाह हो गया हो।
निहाँ–वि० (फ़ा०) छिपा हुआ।
निहाद–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ मूल। जड़। असल। बुनियाद। २ मन। हृदय। ३ स्वभाव। जैसे–**नेक निहाद**=सुशील।
निहानी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) छिपानेकी क्रिया। वि० गुप्त। छिपा हुआ। जैसे-**अन्दामे निहानी**=स्त्रीके गुप्त अंग।
निहायत–वि० (अ०) अत्यन्त। बहुत। संज्ञा स्त्री० हद। सीमा।

निहाल–संज्ञा पुं० (फा०) १ नया लगाया हुआ वृक्ष या पौधा। २ तोशक। गद्दा। ३ शिकार। आखेट। वि० (फा०) जो सब प्रकारसे संतुष्ट और प्रसन्न हो गया हो। पूर्ण-काम।

निहालचा–संज्ञा पुं० (फा० निहालचः) तोशक। गद्दा।

निहाली–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तोशक। गद्दा। २ लिहाफ। रजाई। ३ निहाई।

नीको–वि० (फा०) १ अच्छा। बढ़िया। उत्तम। २ सुन्दर।

नीकोई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अच्छापन। २ उपकार। भलाई।

नीकोकार–वि० (फा०) (संज्ञा नीकोकारी) अच्छे या शुभ कर्म करनेवाला।

नीज़–अव्य० (फा०) १ और। २ भी।

नीम–वि० (फा०) आधा। अर्द्ध। संज्ञा पुं० बीच। मध्य।

नीम-आस्तीन–संज्ञा स्त्री० दे० "नीमास्तीन।"

नीम-कश–वि० (फा०) (तलवार या तीर आदि) जो पूरा खींचा न गया हो, बलिक आधा अन्दर और आधा बाहर हो।

नीम-खुर्दा–वि० (फा०नीम+खुर्दः) जूठा। उच्छिष्ट।

नीमचा–संज्ञा पुं० (फा० नीमचः) एक प्रकारकी छोटी तलवार या कटारी।

नीमजाँ–वि० (फा०) १ जिसकी आधी जान निकल चुकी हो, केवल आधी बाकी हो। अधमरा। २ मरणोन्मुख। मरणासन्न।

नीम-निगाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) आधी या तिरछी नज़र। कनखी।

नीमबज़–वि० (फा०) आधा खुला और आधा बन्द। जैसे—नीमबज़ आँखें।

नीम-बिस्मिल–वि (फा०) १ जो आधा ज़बह किया गया हो। अधमरा किया हुआ। २ घायल।

नीम-रज़ा–वि० (फा०) १ थोड़ी बहुत रज़ामंदी। २ कुछ संतोष या प्रसन्नता।

नीम-राज़ी–वि० (फा०) जो आधा राज़ी हो गया हो।

नीम-रोज़–संज्ञा पुं० (फा०) दोपहर।

नीमा–संज्ञा पुं० (फा० नीमः) १ स्त्रियोंके ओढ़नेका बुरका। २ एक प्रकारका ऊँचा जामा। वि० आधा।

नीमास्तीन–संज्ञा स्त्री० (फा० आस्तीन) आधी आस्तीनकी एक प्रकारकी कुरती।

नीयत–संज्ञा स्त्री० (अ०) आन्तरिक लक्ष्य। उद्देश्य। आशय। संकल्प। इच्छा। मंशा। मुहा०—**नीयत डिगना या बद होना**=बुरा संकल्प होना। **नीयत बदल जाना**=१ संकल्प या विचार औरका और होना। अनुचित या बुरी बातकी ओर प्रवृत्त होना।

नीयत-बाँधना=संकल्प करना।

इरादा करना । **नीयत भरना**=जी भरना । इच्छा पूरी होना । **नीयतमें फर्क आना**=बेईमानी या बुराई सूझना । **नीयत लगी रहना**=इच्छा लगी रहना । जी ललचाया करना ।

नील–संज्ञा पुं०(फा०मि०सं०नील) १ एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नीला रंग निकलता है। मुहा०–**नील बिगड़ना** या **नीलका माट बिगड़ना**=१ नीलका हौज या माट खराब होना जिससे नीलका रंग तैयार नहीं होता। २ चाल-चलन बिगड़ना। ३ अशुभ बात होना। **नीलकी सलाई फेरवाना**=आँख फोड़वाना। अन्धा करना। **नील ढलना**=मरते समय आँखोंसे जल गिरना । **नील जलाना**=वर्षा रोकनेके लिये नील जलाकर टोटका करना । २ गहरा नीला या आस्मानी रंग। ३ चोटका नीले या काले रंगका दाग जो शरीर-पर पड़ जाता है । मुहा०–**नील-का टीका**=लांछन । कलंक ।

नील-गर–संज्ञा पुं (फा०) नील बनानेवाला ।

नीलगूँ–वि० (फा०) नीले रंगका ।

नीलम–संज्ञा पुं (फा० मि० सं० नीलमणि) नीलमणि । नीले रंग-का रत्न । इंद्रनील ।

नीलाम–संज्ञा पुं० (पुर्त्त० लीलाम) बिक्रीका एक ढंग जिसमें माल उस आदमीको दिया जाता है जो सबसे अधिक दाम लगाता है। बोली बोलकर बेचना ।

नीलोफ़र–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० नीलोत्पल) १ नील कमल । २ कुई । कुमुद ।

नुकता–संज्ञा पुं० (अ० नुक्तः) (बहु० नुकात) १ वह गूढ़ और बुद्धिमत्तापूर्ण बात जिसे सब लोग सहजमें न समझ सकें । बारीक या सूक्ष्म बात । २ चोज-भरी बात । चुटकुला । ३ घोड़ेके मुँहपर बाँधा जानेवाला चमड़ा । ४ त्रुटि। दोष । ऐब ।

नुक़ता–संज्ञा पुं० (अ० नुक्तः) (बहु०नुकात, नुक्त) बिंदु । बिन्दी ।

नुकता गीर–वि० दे० "नुकताची।"

नुकताची–वि० (अ०+फा०) ऐब या दोष निकालनेवाला ।

नुकताचीनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) छिद्रान्वेषण। दोष निकालना ।

नुकता-दाँ–वि० दे० "नुकता-शनास"

नुकता-परवर–वि० दे० "नुकता-परदाज़ ।"

नुकता परदाज़–वि० (अ०) (संज्ञा नुकता-परदाज़ी) गूढ़ और उत्तम बातें कहनेवाला। सुवक्ता।

नुकताबीं–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा नुकताबीनी) ऐब या दोष ढूँढ़ने-वाला ।

नुकता-रस–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा नुकता रसी) सूक्ष्म बातोंको समझनेवाला । बुद्धिमान् ।

नुकता शिनास–वि० (अ०+फा०)

(संज्ञा नुकता-शिनासी) गूढ़ बातें समझनेवाला। बुद्धिमान्।

नुकता-संज–वि० (अ०+फा०)संज्ञा नुकता-संजी) १ गूढ़ और अच्छी बातें कहनेवाला। सुवक्ता। २ कवि।

नुकरई–वि० (अ०) १ चाँदीका। रुपहला। २ सफेद। श्वेत।

नुक़रा–संज्ञा पुं० (अ० नुक़रः) १ चाँदी। यौ०–**नुक़रए खाम**= शुद्ध चाँदी। २ घोड़ोंका सफेद रंग। वि० सफेद रंगका (घोड़ा)।

नुकल–संज्ञा पुं० दे० "नुक्ल।"

नुक़सान–संज्ञा पुं० (अ० नुक्सान) १ कमी। घटी। ह्रास। छीज। २ हानि। घाटा। क्षति। मुहा०–**नुक़सान उठाना**=हानि सहना। क्षतिग्रस्त होना। **नुक़सान पहुँचाना**= हानि करना। क्षतिग्रस्त करना। **नुकसान भरना**=हानिकी पूर्ति करना। घाटा पूरा करना। ३ दोष। अवगुण। विकार। मुहा०–(किसीको) **नुक़सान करना**=दोष उत्पन्न करना। स्वास्थ्यके प्रतिकूल होना।

नुक़सान-देह–वि० (अ०+फा०) नुकसान पहुँचानेवाला। हानिकर।

नुक़सान रसानी–संज्ञा स्त्री०(अ० फा०)नुक़सान पहुँचानेकी क्रिया।

नुकीला–वि० (फा० नोक) १ जिसमें नोक निकली हो। २ नोकदार। बाँका तिरछा।

नुक़ूल–संज्ञा स्त्री० (अ०) "नक्ल" का बहु०।

नुक़ूश–संज्ञा पुं० (अ०) "नक्श"का बहु०।

नुक्त–संज्ञा पुं० (अ०) "नुक्ता"का बहु०। मुहा०–**बे-नुक्त सुनाना**–खूब खरी खोटी या अनुचित बातें कहना।

नुक़्ता–संज्ञा पुं० दे० "नुक़ता।"

नुक़्ल–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह चीज़ जो अफीम या शराब आदिके साथ खाई जाय। गज़क। २ एक प्रकारकी मिठाई। ३ वह मिठाई आदि जो भोजनोपरान्त खाई जाय। यौ०–**नुक्ले महफ़िल** या **नुक्ले मजलिस**=महफ़िलको हँसानेवाला मसखरा।

नुक़्स–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० नक़ायस) १ दोष। खराबी। बुराई। २ त्रुटि। कसर।

नुक़सान–संज्ञा पुं० दे० "नुक़सान।"

नुजबा–संज्ञा पुं० (अ०) "नजीब" का बहु०।

नुज़हत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रसन्नता। खुशी। २ सुख-भोग।

नुज़हत-गाह–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) आनन्द-भोग या सैरका स्थान।

नुजूम–संज्ञा पुं० (अ०) १ "नजम" का बहु०। सितारे। तारे। २ ज्योतिषशास्त्र।

नुजूमी–संज्ञा पुं० (अ०) ज्योतिषी।

नुज़ूल–संज्ञा पुं० दे० "नजूल।"

नुतफ़ा–संज्ञा पुं० दे० "नुत्फ़ा।"

नुत्क–संज्ञा पुं० (अ०) बोलनेकी शक्ति। वाक्-शक्ति।

नुत्फ़ा–संज्ञा पुं० (अ० नुत्फ़ः) १ वीर्य्य । शुक्र । २ सन्तान । औलाद। यौ०**नुत्फ़ए-बे-तह्क़ीक़**=वह जिसके सम्बन्धमें यह न निश्चय हो कि किसकी सन्तान है । दोगला । हरामी । **नुत्फ़-ए हराम**=दे० "......"

नुद्बा–संज्ञा पुं० (अ० नुद्बः) १ किसीके मरनेपर होनेवाला रोना-पीटना । मातम । शोक । २ मातम या शोकका सूचक शब्द । जैसे,—हाय हाय ।

नुद्रत–संज्ञा स्त्री०(अ०) "नादिर" का भाव । ...... ।

नुफ़ूज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रचलित होना । २ घुसना । पैठना ।

नुफ़ूर–वि० (अ०) १ नफ़रत या घृणा करनेवाला । २ भागने या दूर रहनेवाला ।

नुफ़ूस–संज्ञा पुं० (अ०) "नफ़्स" (रूह) का बहु० ।

नुमा–वि० (फा०) १ दिखाई पड़ने-वाला । जैसे–बद-नुमा, खुश-नुमा । २ दिखलाने या बतलाने-वाला । जैसे–रह-नुमा, जहाँ-नुमा । ३ सदृश । समान । जैसे-गुम्बद-नुमा, मेहराब-नुमा ।

नुमाइन्दा–संज्ञा पुं० (फा० नुमा-यन्दः) १ दिखानेवाला । २ प्रतिनिधि ।

नुमाइश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दिखावट । दिखावा । प्रदर्शन । २ तड़क-भड़क । ठाठ-बाट । सज-धज । ३ नाना प्रकारकी वस्तुओंका कुतूहल और परिचयके लिये एक स्थानपर दिखाया जाना । प्रदर्शिनी ।

नुमाइश-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) नुमाइशकी जगह । प्रदर्शिनीका स्थल ।

नुमाइशी–वि० (फा०) जो केवल दिखावटके लिये हो, किसी प्रयो-जनका न हो । दिखाऊ । दिखौवा ।

नुमाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) दिखला-नेकी क्रिया । प्रदर्शन । जैसे—खुद-नुमाई ।

नुमायाँ–वि० (फा०) जो स्पष्ट दिखाई पड़ता हो । प्रकट ।

नुशूर–संज्ञा पुं० (अ०) क़यामत या हश्रके दिन सब मुरदोंका फिरसे जीवित होकर उठना ।

नुसखा–संज्ञा पुं० दे० "नुस्खा ।"

नुसरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सहा-यता । मदद । २ पक्षका समर्थन । ३ विजय । जीत ।

नुसार–संज्ञा पुं० (अ०) वह धन जो किसी परसे निसार या निछावर करके फेंका या बाँटा जाय ।

नुसैरी–संज्ञा पुं० (अ०) १ अरबका एक मुसलमानी सम्प्रदाय । २ परमनिष्ठ भक्त ।

नुस्खा–संज्ञा पुं० (अ० नुस्खः) १ लिखा हुआ कागज । २ ग्रन्थ आदि-की प्रति । ३ वह कागज जिसपर हकीम या चिकित्सक रोगीके

लिये औषध और उसकी सेवन-विधि लिखते हैं।

नूर–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० अन-वार) १ ज्योति । प्रकाश । मुहा०–**नूरका तड़का** = प्रातः-काल । २ श्री । कान्ति । शोभा । **नूर बरसना** = प्रभाका अधिक-तासे प्रकट होना ।

नूर-उल्-ऐन–संज्ञा पुं० (अ०) १ आँखोंकी रोशनी । नेत्रोंकी ज्योति । २ पुत्र । बेटा । लड़का ।

नूरबाफ़–वि० (अ० + फा०) (संज्ञा नूरबाफ़ी) कपड़ा बुननेवाला जुलाहा ।

नूरा–संज्ञा पुं० (अ० नूरः) वह दवा जिसके लगानेसे शरीर परके बाल झड़ जाते हैं ।

नूरानी–वि० (अ०) प्रकाशमान । चमकीला । २ रूपवान् । सुन्दर ।

नूरे-ऐन–संज्ञा पुं० दे० "नूर-उल्-ऐन ।"

नूरे-चश्म–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) १ नेत्रोंका प्रकाश । आँखोंकी रोशनी । २ पुत्र । बेटा । लड़का ।

नूरे-जहाँ–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) सारे संसारको प्रकाशित करने-वाला प्रकाश । संज्ञा स्त्री० जहाँ-गीर बादशाहकी सुप्रसिद्ध बेगम जो बहुत अधिक रूपवती थी ।

नूरे-दीदा–संज्ञा पुं० दे० 'नूरे-चश्म ।'

नूह–संज्ञा पुं० (अ०) १ नौहा करने या रोनेवाला । २ यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानोंके अनु-सार एक पैगम्बर जिनके समयमें एक बहुत बड़ा तूफ़ान और बाढ़ आई थी । उस समय आपने एक किश्ती या नाव बनाकर सब प्रकारके जीवोंका एक एक जोड़ा उसपर रख लिया था । वही किश्ती बच रही थी और सारा संसार उस बाढ़से डूब गया था । कहते हैं कि ये उम्र-भर रोते रहे, इसीसे इनका यह नाम पड़ा ।

नेअम–संज्ञा स्त्री० (अ० नअम) "नेअमत" का बहु० ।

नेअम-उल्-बदल–संज्ञा पुं० (अ०) किसी चीज़के बदलेमें मिलनेवाली दूसरी अच्छी चीज़ ।

नेअमत–संज्ञा स्त्री० दे० "नियामत ।"

नेक–वि० (फा०) १ भला । उत्तम । २ शिष्ट । सज्जन । क्रि० वि० थोड़ा । ज़रा । तनिक ।

नेक-क़दम–वि० (फा० + अ०) जिसका आगमन शुभ हो ।

नेक-ख़्वाह–वि० (फा०) शुभचिन्तक ।

नेक-चलन–वि० (फा० नेक + हि० चलन) (संज्ञा नेकचलनी) अच्छे चाल-चलनका । सदाचारी ।

नेक-नाम–वि० (फा०) (संज्ञा नेक-नामी) जिसका अच्छा नाम हो । यशस्वी ।

नेक-निहाद–वि० (फा०) सुशील ।

नेक-नीयत–वि० (फा० नेक + अ० नीयत) (संज्ञा नेक-नीयती) १ अच्छे संकल्पका । शुभ संकल्प-वाला । २ उत्तम विचारका ।

नेक-बख़्त–वि० (फा०) (संज्ञा नेक-बख़्ती) भाग्यवान् । किस्मतवर ।

२ सीधा, सच्चा और सुशील। २ आज्ञकारी और योग्य (पुत्र तथा पुत्रीके लिये)।

नेक-मंज़र–वि० (अ० + फा०) सुन्दर। खूबसूरत।

नेकी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भलाई। उत्तम व्यवहार। २ सज्जनता। भलमनसाहत।(यौ०- **नेकी-बदी**= भलाई बुराई। ३ उपकार।

नेकौ–वि० दे० "नीको।"

नेज़ा–संज्ञा पुं० (फा०नेज़ः) भाला। बरछा। साँग।

नेज़ा-दार–वि० दे० "नेज़ा-बरदार।"

नेज़ा-बरदार- वि० (फा०) (संज्ञा नेज़ा-बरदारी) नेज़ा या भाला रखनेवाला। बल्लम-बरदार।

नेज़ा-बाज़–वि०(फा०)(संज्ञा नेज़ा-बाज़ी) नेज़ा या भाला चलाने-वाला। बरछैत।

नेफ़ा–संज्ञा पुं० (फा० नेफ़ः) पाय-जामे या लहँगेके घेरमें इज़ारबंद पिरोनेका स्थान।

नेमत–संज्ञा स्त्री० दे० "नियामत।"

नेवाला–संज्ञा पुं० दे० "निवाला।"

नेश–संज्ञा पुं० (फा०) १ नोक। अनी। २ ज़हरीले जानवरोंका डंक। ३ काँटा। शूल।

नेशकर–संज्ञा पुं० (फा०) गन्ना। ऊख। ईख।

नेश-ज़नी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ डंक मारना। २ निन्दा या बुराई करना। चुगली खाना।

नेश्तर–संज्ञा पुं० (फा०) ज़ख्म चीरनेका औज़ार। नश्तर।

नेस्त–वि० (फा०) जो न हो। यौ०–**नेस्त-नाबूद**=नष्ट-भ्रष्ट।

नेस्ताँ–संज्ञा पुं० दे० "नयस्ताँ।"

नेस्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ न होना। नास्तित्व। २ आलस्य। ३ नाश।

नै–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बाँसकी नली। २ हुक्केकी निगाली। ३ बाँसरी।

नैचा–संज्ञा पुं० (फा० नेचः) हुक्केकी निगाली। नै।

नैचा-बन्द–वि० (फा०) (संज्ञा नैचाबन्दी) हुक्केका नैचा या निगाली बनानेवाला।

नैयर–संज्ञा पुं० (अ०) बहुत चम-कनेवाला सितारा। यौ०–**नैयरे** असगर=चंद्रमा। **नैयरे आज़म** =सूर्य।

नैरंग–संज्ञा पुं० (फा०) १ छल। कपट। धोखा। २ इन्द्रजाल। जादूगरी। विलक्षण वस्तु या बात। ४ चित्रों आदिकी रूप-रेखा।

नैरंग-साज़–वि० (फा०) (संज्ञा नैरंगसाज़ी) १ धूर्त्त। जादूगर।

नैरंगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ धोखेबाज़ी। चालबाज़ी। २ जादू-गरी। यौ०–**नैरंगी-ए-ज़माना**= संसारका उलट-फेर।

नैसाँ–संज्ञा पुं० (फा०) सीरिया देशका सातवाँ महीना जो वैसाख-के लगभग होता है।

नैशकर–संज्ञा स्त्री० (फा०) गन्ना।

नैस्ताँ–संज्ञा पुं० दे० "नयस्ताँ।"

नोक–संज्ञा स्त्री० (फा०) (वि०

नुकीला)१ उस ओरका सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। सूक्ष्म अग्र भाग। १ किसी वस्तुके निकले हुए भागका पतला सिरा। ३ निकला हुआ कोना।

नोक-झोंक—संज्ञा स्त्री० (फा०नोक+हिं०झोंक) १ बनाव-सिंगार। ठाठ-बाट। सजावट। २ तपाक। तेज। आतंक। दर्प। ३ चुभनेवाली बात। व्यंग्य। ताना। आवाज़। ४ छेड़-छाड़।

नोकदार—वि० (फा०) जिसमें नोक हो। २ चुभनेवाला। पैना। ३ चित्तमें चुभनेवाला। ४ शानदार।

नोक-पलक—संज्ञा स्त्री० (फा० नोक+हिं० पलक) आँख, नाक आदि चेहरेका नकशा।

नोकीला—वि० दे० "नुकीला।"

नोके-ज़बाँ—संज्ञा स्त्री० (फा०नोक+ज़बाँ) जीभका अगला भाग। वि०कंठस्थ। मुखाग्र। बर-ज़बान।

नोल—संज्ञा स्त्री० (फा०) चोंच।

नोश—वि० (फा०) १ पीनेवाला। जैसे—मै-नोश=शराब पीनेवाला। २ स्वादिष्ट। रुचिकर। प्रिय। मुहा०—**नोश जान करना** या **फरमाना**= खाना। भोजन करना। (बड़ोंके सम्बन्धमें आदरार्थ) **नोश-जाँ होना**=खाना पीना शुभ सिद्ध होना। संज्ञा पुं० १ पीनेकी कोई बढ़िया चीज़। २ अमृत। ३ ज़हर-मोहरा। ४ शहद। मधु। ५ जीवन।

नोश-दारू—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सर्पका विष नाश करनेवाला ज़हर-मोहरा। २ शराब। मदिरा। ३ वह स्वादिष्ट भोजन या अवलेह जो बहुत पौष्टिक हो।

नोशी—वि० (फा०) मीठा। मधुर।

नोशी—संज्ञा स्त्री० (फा०) पीनेकी क्रिया। पान। जैसे—**मै-नोशी**= मद्य पान।

नौ—वि० (फा० मि० सं० नव) नया। नवीन। संज्ञा स्त्री० (अ० नौअ) भाँति। प्रकार। तरह। २ तौर-तरीका। रंग-ढंग। ३ जाति।

नौ-आबाद—वि० (फा०) जो अभी हालमें बसा हो। नया बसा हुआ।

नौ आमोज़—वि०(फा०)जिसने कोई काम हालमें सीखा हो। नौ-सिखुआ।

नौइयत—संज्ञा स्त्री०(अ०)१ प्रकार। तरह। २ विशेषता।

नौ-उम्मेद—वि० (फा०) (संज्ञा नौ-उम्मेदी) निराश। ना-उम्मेद।

नौ-उम्र—वि० दे० "नौ-जवान।

नौकर—संज्ञा पुं० (फा०) १ चाकर। टहलुआ। २ कोई काम करनेके लिये वेतन आदिपर नियुक्त मनुष्य। वैतनिक कर्मचारी।

नौकर-शाही—संज्ञा स्त्री० (फा०) नौकर+शाही) वह शासन-प्रणाली जिसमें सारी राजसत्ता केवल बड़े बड़े राजकर्मचारियोंके हाथमें रहती है।

नौकरानी—संज्ञा स्त्री० (फा०नौकर)

घरका काम-धंधा करनेवाली स्त्री। दासी। मज़दूरनी।

नौकरी–संज्ञा स्त्री० (फा० नौकर) १ नौकरका काम। सेवा। टहल। ख़िदमत। २ कोई ऐसा काम जिसके लिये तनख्वाह मिलती हो।

नौकरी-पेशा–संज्ञा पुं० (फा०) जिसकी जीविका नौकरीसे चलती हो।

नौ-ख़ास्ता–वि० दे० "नौ-जवान।"

नौ-ख़ेज़–वि० दे० "नौ-जवान।"

नौ-चन्दा–संज्ञा पुं० (फा० नौ+ हिं० चन्दा) शुक्ल पक्षमें पहले-पहल चन्द्रमा दिखाई पड़नेके बाद दूसरा दिन।

नौज–(अ० "नऊज़" का अपभ्रंश) ईश्वर न करे।

नौ-जवान–वि० (फा०) नवयुवक। नया जवान।

नौ-जवानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) नव-यौवन।

नौ-दौलत–वि० (फा०+अ०) नया अमीर। नया धनिक।

नौ-निहाल–संज्ञा पुं० (फा०) १ नया पौधा। २ नौ-जवान।

नौबत–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बारी। पारी। २ गति। दशा। ३ संयोग। ४ वैभव या मंगल सूचक वाद्य, विशेषतः सहनाई और नगाड़ा जो मंदिरों या बड़े आद-मियोंके द्वारपर बजता है। मुहा०—**नौबत झड़ना**=दे० "नौबत बजना।" **नौबत बजना**=१ आनन्द उत्सव होना। २ प्रताप या ऐश्वर्यकी घोषणा होना।

नौबत-ख़ाना-संज्ञा पुं० (फा०) फाटकके ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है। नक़्क़ारख़ाना।

नौबत-ब-नौबत–क्रि० वि० (अ० नौबत) क्रम-क्रमसे। एकके बाद एक। एक-एक करके।

नौबती–संज्ञा पुं० (फा०) १ नौबत बजानेवाला। नक़्क़ारची। २ फाटकपर पहरा देनेवाला। पहरेदार। ३ बिना सवारका सजा हुआ घोड़ा। ४ बड़ा खेमा या तंबू।

नौ-ब-नौ–वि० (फा०) बिलकुल ताज़ा। नया।

नौ-बहार–संज्ञा स्त्री० (फा०) नई आई हुई वसन्त ऋतु। वसन्तका आरम्भ।

नौ-मश्क़–वि० (फा०+अ०) जो अभी मश्क़ या अभ्यास करने लगा हो। नौसिखुआ।

नौमीद--वि० (फा०) (संज्ञा नौमीदी) ना-उम्मेद। निराश।

नौ-मुस्लिम–वि० (फा०+अ०) जो हालमें मुसलमान बना हो।

नौ-रोज़–संज्ञा पुं० (फा०) १ पार-सियोंमें नये वर्षका पहला दिन। इस दिन बहुत आनन्द-उत्सव मनाया जाता था। २ त्योहार।

नौ-रोज़ी–वि० (फा०) नौरोज़-सम्बंधी। नौरोज़का।

नौ-वारिद--वि० (फा०) जो कहीं बाहरसे अभी हालमें आया हो ।

नौशहाना--वि० (फा०) नौशा या दूल्हेका-सा । वरकी तरहका ।

नौशा--संज्ञा पुं० (फा० नौशः) दूल्हा ।

नौशादर--संज्ञा पुं० दे० "नौसादर ।"

नौसादर--संज्ञा पुं० (फा० नौशादर) एक तीक्ष्ण झालदार खार या नमक ।

नौहा--संज्ञा पुं० (अ० नौहः) १ किसीके मरनेपर किया जानेवाला शोक । २ रोना-पीटना । रुदन ।

नौहा-गर--वि० (अ०+फा०) (संज्ञा नौहागरी) रो-पीटकर मातम करनेवाला । शोक मनानेवाला ।

न्यामत--संज्ञा स्त्री० दे० "नियामत ।"

(**प**)

पंज--वि० (फा० मि० सं० पंच) पाँच । चार और एक । ५ ।

पंजगाना--वि० (फा० पंजगानः) पाँचों समयकी (नमाज़) ।

पंज-तन पाक--संज्ञा पुं० (फा०) मुसलमानोंके अनुसार पाँच पवित्र आत्माएँ । यथा--मुहम्मद, अली, फातिमा, हसन और हुसेन ।

पंज-वक़्ती--वि० दे० "पंजगाना ।"

पंज-शंबा--संज्ञा पुं० (फा० पंज-शम्बः) बृहस्पतिवार । जुमेरात ।

पंजा--संज्ञा पुं० (फा० पंजः मि० सं० पंचक) १ पाँच चीज़ोंका समूह । २ हाथ या पैरकी पाँचों उँगलियाँ । मु०--**पंजे झाड़कर पीछे पड़ना**=हाथ धोकर या बुरी तरह पीछे पड़ना । **पंजेमें**=हाथमें । अधिकारमें । ३ पंजा लड़ानेकी कसरत । ४ उँगलियोंके सहित हथेलीका संपुट । चंगुल । ५ मनुष्यके पंजेके आकारका धातुका टुकड़ा जिसे बाँसमें बाँधकर झंडेकी तरह ताजियेके साथ लेकर चलते हैं । ६ ताशका वह पत्ता जिसमें पाँच बूटियाँ होती हैं । मुहा०--**छक्का पंजा**=दाँव-पेच । छल-कपट ।

पंजी--संज्ञा स्त्री० (फा० पंजः) वह मशाल या लकड़ी जिसमें पाँच बत्तियाँ जलती हों । पंच-शाखा ।

पंद--संज्ञा स्त्री० (फा०) उपदेश । नसीहत ।

पंबा--संज्ञा पुं० (फा० पम्बः) रूई । यौ०--**पंबा-बागोश**=बहरा । बधिर **पंबा-दहन**=कम बोलनेवाला ।

पख़--संज्ञा स्त्री० (फा०) १ विष्ठा । मल । गू । २ शोर । गुल । ३ अशिष्टतापूर्ण बात । ४ कठिनता । दिक़्क़त । ख़राबी । ५ अड़चन । व्यर्थका छिद्रान्वेषण ।

पख़िया--वि० (फा० पख़ः) (स्त्री० पख़नी) पख़ निकालनेवाला । व्यर्थ छिद्रान्वेषण करनेवाला ।

पगाह--संज्ञा स्त्री०(फा०) १ प्रभात । तड़का । २ सवेरा ।

पज़मुरदा--वि० (फा० पज़मुर्दः) (संज्ञा पज़मुर्दगी) कुम्हलाया हुआ । मुरझाया हुआ ।

पज़ावा—संज्ञा पुं० (फा० पज़ावः) ईंटें पकानेका आँवाँ।

पज़ीर—वि० (फा०) माननेवाला। ग्रहण या पालन करनेवाला। (यौगिकमें) जैसे **इताअत-पज़ीर**=आज्ञा माननेवाला।

पज़ीरा—वि० (फा०) मानने योग्य।

पज़ीराई—संज्ञा स्त्री० (फा०) मानना। कबूलियत।

पतील—संज्ञा पुं० (फा०) चिराग़की बत्ती।

पतील-सोज़—संज्ञा पुं० दे० "फतील सोज़।"

पनाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रक्षा। २ शरण। रक्षा या आश्रय पानेका स्थान। मुहा०—**पनाह माँगना**=रक्षा या परित्राणकी प्रार्थना करना।

पनीर—संज्ञा पुं० (फा०) १ फाड़कर जमाया हुआ छेना। २ वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

पयाम—संज्ञा पुं० (फा०) सन्देश।

पयाम-बर—संज्ञा पुं० (फा०) पयाम या संदेश ले जानेवाला। क़ासिद।

पर—संज्ञा पुं० (फा०) चिड़ियोंका डैना और उसपरके घूए या रोएँ। पंख। पक्ष। मुहा०—**पर कट जाना**=शक्ति या बलका आधार न रह जाना। अशक्त हो जाना। **पर जमना**= १ पर निकलना। २ जो पहले सीधा सादा रहा हो, उसे शरारत सूझना। (कहीं जाते हुए) **पर जलना**= १ हिम्मत न होना। साहस न होना। २ गति न होना। पहुँच न होना। **पर न मारना**=पैर न रख सकना। **बे-परकी उड़ाना**= बिना सिर-पैरकी बातें करना। व्यर्थ डींग हाँकना।

परकार—संज्ञा पुं० (फा०) वृत्त या गोलाई खींचनेका एक औज़ार।

परकाला—संज्ञा पुं० (फा० परकालः) १ टुकड़ा। खंड। २ शीशेका टुकड़ा। ३ चिनगारी। मुहा०—**आफ़तका परकाला**=ग़ज़ब करनेवाला। प्रचंड या भयंकर मनुष्य।

परख़ाश—संज्ञा पुं० स्त्री० (फा०) लड़ाई। झगड़ा।

परगना—संज्ञा पुं० (फा० पर्गनः) वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुतसे ग्राम या गाँव हों।

परचम—संज्ञा पुं० (फा०) १ झंडेका कपड़ा। ताका। २ जुल्फ़ और काकुल।

परचा—संज्ञा पुं० (फा० परचः) १ टुकड़ा। खंड। २ काग़ज़का टुकड़ा। ३ पत्र। चिट्ठी।

परतौ—संज्ञा पुं० (फा०) १ रश्मि। किरण। २ प्रतिच्छाया। अक्स।

परदगी—संज्ञा स्त्री० (फा० पर्दगी) १ परदेमें रहनेवाली स्त्री।

परदा—संज्ञा पुं० (फा० पर्दः) १ आड़ करनेवाला कपड़ा या चिक आदि। मुहा०—**परदा उठाना**=भेद खोलना। **परदा डालना**=छिपाना। २ लोगोंकी दृष्टिके

सामने न होनेकी स्थिति। आड़। ओट। छिपाव। ३ स्त्रियोंको बाहर निकलकर लोगोंके सामने न होने देनेकी चाल। यौ०—**परदा-दार**=१ वह जो परदा करे। २ वह जिसमें परदा हो। ३ वह दीवार जो विभाग या ओट करनेके लिये उठाई जाय। ४ तह। परत। तल।

परदाख़्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बनाना। करना। २ पूरा करना। ३ देख-रेख करना।

पर-दाज़—संज्ञा पुं० (फा०) १ सजाना। सजावट। २ चित्रके चारों ओर बेल-बूटे बनाना।

पर-दाज़ी—संज्ञा स्त्री० (फा०) सजाने या बेल-बूटे बनानेकी क्रिया।

पर-दार—वि० (फा०) जिसे पर हों। परोंवाला।

परदा-दार—वि० (फा०) १ जिसमें परदा लगा हो। २ जो परदेमें रहे।

परदा-दारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) परदेमें रहना।

परदा-नशीन—वि० स्त्री० (फा०) परदेमें रहनेवाली (स्त्री)।

परदा-पोशी—संज्ञा स्त्री० (फा०) किसीके रहस्य या दोषोंपर परदा डालना। ऐब छिपाना।

पर व बाल—संज्ञा पुं० (फा०) पक्षियोंके पर और बाल जिनके कारण उनमें उड़नेकी शक्ति होती है।

परवर—वि० (फा०) पालन करनेवाला। पालक। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें)

परवरदा—वि० (फा० परवर्दः) पाला हुआ। पालित।

परवरदिगार—संज्ञा पुं० (फा०) १ पालन करनेवाला। २ ईश्वर।

परवरिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) पालन-पोषण।

परवा—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चिंता। खटका। आशंका। २ ध्यान। खयाल। ३ आसरा।

परवाज़—संज्ञा पुं० (फा०) उड़ना।

परवाज़ी—संज्ञा स्त्री० (फा०) उड़नेकी क्रिया या भाव।

परवानगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) इजाजत। आज्ञा। अनुमति।

परवाना—संज्ञा पुं० (फा०) १ आज्ञा-पत्र। २ पतंगा। पंखी।

परवीन—संज्ञा पुं० (फा०) कृत्तिका नक्षत्र। झुमका।

परवेज़—संज्ञा पुं० (फा०) १ विजयी। २ खुसरो बादशाह जो नौशेरवाँका पोता था।

परस्त—वि० (फा०) परस्तिश या पूजा करनेवाला। पूजक। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे—**आतिश-परस्त**=अग्निपूजक।)

परस्तार—संज्ञा पुं० (फा०) १ पूजा या उपासना करनेवाला। २ दास। ३ सेवक।

परस्तिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) पूजा। आराधना।

परस्तिश-गाह—संज्ञा स्त्री० (फा०)

पूजा या अपराधना करनेका स्थान ।

परहेज़-संज्ञा पुं०(फा०) १ स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाली बातोंसे बचना । खान-पीने आदिका संयम । २ दोषों और बुराइयोंसे दूर रहना ।

परहेज़-गार-संज्ञा पुं० (फा०) (भाव० परहेज़गारी) १ परहेज करनेवाला । संयमी । २ दोषोंसे दूर रहनेवाला ।

पर-हुमा-संज्ञा पुं० (फा०) कलगी ।

परा-संज्ञा पुं० (फा० परः) कतार । पंक्ति ।

परागंदा-वि० (फा० परागन्दः) (संज्ञा परागंदगी) १ बिखरा हुआ । तितर-बितर । २ दुर्दशा-ग्रस्त ।

परिंदा-संज्ञा पुं० (फा० परिन्द) पक्षी । चिड़िया ।

परिस्तान-संज्ञा पुं०(फा० परस्तान) १ परियोंके रहनेका स्थान । २ वह स्थान जहाँ बहुत-सी सुंदरियाँ एकत्र हों ।

परी-संज्ञा स्त्री०(फा०) १ फारस-की प्राचीन कथाओंके अनुसार काफ नामक पहाड़पर बसनेवाली काल्पत सुंदरी और परवाली स्त्रियाँ । २ परमसुन्दरी ।

परी-ख्वान-संज्ञा पुं० (फा०) वह जो मंत्रोंके द्वारा परियों और देवों आदिको वशमें करना जानता हो ।

परी-ज़ाद-वि० (फा०) परीकी सन्तान । बहुत अधिक सुन्दर ।

परी-पैकर-वि० (फा०) परीके समान सुन्दर चेहरेवाला (वाली) ।

परी रू-वि० (फा०) जिसकी आकृति परीके समान सुन्दर हो ।

परी-वश वि० दे० "परी-रू ।"

परेशान-वि० (फा०) व्यग्र । व्याकुल । उद्विग्न ।

परेशानी-संज्ञा स्त्री० (फा०) व्याकुलता । उद्विग्नता । व्यग्रता ।

पलंग-संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारका हिंसक पशु । २ शेर । संज्ञा पुं० (सं० पर्यङ्क) अच्छी और बड़ी चारपाई । यौ०—**पलंग-पोश**=पलंगके बिछौनेपर बिछानेकी चादर ।

पलक-संज्ञा स्त्री० (फा०) आँखोंके ऊपरका चमड़ेका परदा । पपोटा और बरौनी । मुहा०—**किसीके लिए पलकें बिछाना**=अत्यंत प्रेमसे स्वागत करना । **पलक लगना**= १ आँखें मुँदना । पलक झपकना । २ नींद आना ।

पलास-संज्ञा पुं० (फा०) सनका मोटा कपड़ा । टाट ।

पलीता-संज्ञा पुं० (फा० पलीतः) १ बत्तीके आकारमें लपेटा हुआ वह कागज़ जिसपर कोई यंत्र लिखा हो । २ वह बत्ती जिससे बंदूक या तोपके रंजकमें आग लगाई जाती है । ३ कपड़ेकी वह बत्ती जिसे पंचशाखेपर रखकर जलाते हैं ।

पलीद-वि० (फा०) १ अपवित्र ।

अशुद्ध। २ दुष्ट और नीच। संज्ञा पुं० दुष्टात्मा।

पल्ला—संज्ञा पुं० (फा० पल्लः) १ तराजूका पलड़ा। २ सीढ़ीका डंडा। ३ पद। दरजा। यौ०—**हम-पल्ला**=बराबरीका दरजा रखनेवाला।

पशेमान—वि० (फा०) १ जिसे पश्चात्ताप हुआ हो। पछतानेवाला। २ लज्जित। शरमिंदा।

पशेमानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पश्चात्ताप। पछतावा। २ लज्जा। शरम।

पश्तो—संज्ञा स्त्री० (फा० पश्तू) अफगानिस्तानकी भाषा।

पश्म—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बढ़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं। २ उपस्थपरके बाल। ३ बहुत ही तुच्छ वस्तु।

पश्मीना—संज्ञा पुं० (फा० पश्मीनः) १ पशम। २ पशमका बना हुआ कपड़ा।

पश्शा—संज्ञा पुं० (फा० पश्शः) मच्छड़।

पसंद—संज्ञा स्त्री० (फा०) अच्छा लगनेकी वृत्ति। अभिरुचि।

पसंदा—संज्ञा पुं० (फा० पसन्दः) १ कीमा। २ एक प्रकारका कबाब।

पसंदीदा—वि० (फा० पसन्दीदः) पसन्द किया हुआ। चुना हुआ। अच्छा। बढ़िया।

पस—क्रि० वि० (फा०) १ पीछे। बाद। २ अन्तमें। आखिर। ३ इसलिये।

पस-अंदाज़—संज्ञा पुं० (फा०) वह धन जो वृद्धावस्था या संकट-कालके लिये बचाकर रखा गया हो।

पस-खुरदा—संज्ञा पुं० (फा० पस-खुर्दः) १ खानेके बाद बचा हुआ अंश। जूठन। २ जूठन खानेवाला। टुकड़गदाई।

पस-गैबत—क्री० वि० (फा० पस+अ० ग़ैबत) पीठ पीछे। अनुपस्थितिमें।

पस-पा—वि० (फा०) जिसने पीछेकी ओर पैर हटाया हो। पीछे हटनेवाला।

पस-माँदा—वि० (फा० पस-माँदः) १ जो पीछे रह गया हो। २ बाकी बचा हुआ।

पस-रौ—वि० (फा०) पीछे चलनेवाला। अनुयायी।

पसोपेश—संज्ञा पुं० (फा०) आगा-पीछा। असमंजस।

पस्त—वि० (फा०) १ नीच। कमीना। २ निम्न कोटिका। जैसे—पस्त-खयाल। ३ हारा हुआ। जैसे—पस्त-हिम्मत।

पस्ता-कद—वि० (फा०) छोटे कदका। नाटा।

पस्ती—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नीचाई। २ नीचता। कमीनापन।

पहलवान—संज्ञा पुं० (फा०) १ कुश्ती लड़नेवाला बली पुरुष।

कुश्तीवाज़। मल्ल। २ बलवान् तथा डील-डौलवाला।

पहलवी–संज्ञा स्त्री० दे० "पहलवी।"

पहलू–संज्ञा पुं० (फा०) १ बगल और कमरके बीचका वह भाग जहाँ पसलियाँ होती हैं। पार्श्व। पाँजर। २ दायाँ अथवा बायाँ भाग। पार्श्व-भाग। बाजू। बगल। ३ करवट। बल। ४ दिशा। तरफ़।

पहलू-तिही–संज्ञा स्त्री० (फा०) ध्यान न देना। बचा जाना।

पहलू-दार–वि० (फा०) जिसमें पहलू या पार्श्व हों। पहलदार।

पह्लव–संज्ञा पुं० (फा०) १ पारस देशका प्राचीन नाम। २ वीर। ३ पहलवान।

पह्लवी–संज्ञा स्त्री० (फा०) अति प्राचीन पारसी या जेंद अवस्ताकी भाषा और आधुनिक फारसके मध्यवर्ती कालकी फारसकी भाषा।

पा–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० पाद) पैर। पाँव। (कुछ शब्दोंके अन्तमें लगकर यह स्थायी आदिका अर्थ भी देता है। जैसे–**देर-पा**=देरतक ठहरनेवाला।)

पा-अन्दाज़–संज्ञा पुं० (फा०) पैर पोंछनेका बिछावन जो कमरोंके दरवाजोंपर पैर पोंछनेके लिये रखा जाता है।

पाक–वि० (फा०) १ स्वच्छ। निर्मल। २ पवित्र। शुद्ध। ३ जिसमें किसी प्रकारका मेल न हो। खालिस। ४ निर्दोष। निरपराध। निरीह। ५ जिसपर किसी प्रकारका बार या देन न हो।

पाक-दामन–वि० (फा०) (संज्ञा–पाक-दामनी) जिसमें किसी प्रकारका दोष न हो। सच्चरित्र। (विशेषतः स्त्रियोंके लिये।)

पाक-नफ़्स–वि० (फा+अ०) (संज्ञा पाक-नफ़्सी) शुद्ध और पवित्र आचार विचारवाला।

पाक-बाज़–वि (फा०) सच्चरित्र।

पाकी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पवित्रता। शुद्धता। २ उपस्थपरके बाल। ३ उस्तरेसे बाल मूँडना। (विशेषतः उपस्थपरके) क्रि० प्र० लेना।

पाकीज़ा–वि० (फा० पाकीजः) (संज्ञा पाकीज़गी) १ पाक। साफ़। २ सुन्दर। ३ निर्दोष।

पाखाना–संज्ञा पुं० (फा० पायखाना) १ मल त्याग करनेका स्थान। २ मल। पुरीष। गू।

पाचक़–संज्ञा पुं० (फा०) उपला। कंडा।

पाजामा–संज्ञा पुं० (फा० पायजामः) पैरोंमें पहननेका एक प्रकारका सिला हुआ वस्त्र जिससे टखनेसे कमरतकका भाग ढँका रहता है। इसके कई भेद हैं—सुथना, तमान, इजार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशावरी, नैपाली आदि।

पाजी–संज्ञा पुं० (फा० पा) (बह०

पवाज) १ दुष्ट । कमीना । बद-माश । २ छोटे दरजेका नौकर। खिदमतगार ।

पाज़ेब-संज्ञा स्त्री० (फा०) स्त्रियोंका एक गहना जो पैरोंमें पहना जाता है । मंजीर । नूपुर ।

पा-तराब-संज्ञा पुं० (फा०) प्रस्थान यात्रा । सफर ।

पातावा-संज्ञा पुं० (फा० पाताबः) पैरोंमें पहननेका मोजा ।

पादशाह-संज्ञा पुं० दे० "बादशाह ।"

पादाश संज्ञा स्त्री० (फा०) परि-णाम । फल । (विशेषतः बुरे कामोंका ।)

पापोश-संज्ञा पुं० (फा०) जूता । उपानह ।

पा प्यादा-क्रि० वि० (फा०) पैदल। बिना किसी सवारीके ।

पाबन्द-वि० (फा०) १ बँधा हुआ । बद्ध । अस्वाधीन । क़ैद । २ किसी बातका नियमित रूपसे अनुसरण करनेवाला। ३ नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश आदिका पालन करनेके लिये विवश ।

पाबन्दी-संज्ञा स्त्री० (फा०) पाबंद होनेका भाव ।

पा-ब-जंजीर-वि० (फा०) जिसके पैर जंजीरोंसे बँधे हों। जिसके पैरमें बेड़ियाँ हों ।

पा-ब-रकाब-क्रि० वि० (फा०) रिकाबपर पैर रखे हुए । चलनेको तैयार ।

पा-बोस-वि० (फा०) पैर चूमने-वाला ।

पा-बोसी-संज्ञा स्त्री० (फा०) बड़ोंके पैर चूमना ।

पा-माल-वि० (फा०) (संज्ञा पामाली) १ पैरोंसे रौंदा या कुचला हुआ । २ दुर्दशाग्रस्त ।

पा-माज़-संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका कबूतर जिसके पैरोंपर भी बाल होते हैं ।

पायँचा-संज्ञा पुं० (फा० पायँचः) पाजामे आदिका वह अंश जिसमें पैर रहते हैं ।

पाय-संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० पाद) १ पैर । पाँव । २ आधार ।

पायक-संज्ञा पुं० (फा०) मि० सं० पादिक) १ पैदल सिपाही । पदा-तिक । २ समाचार पहुँचानेवाला दूत । हरकारा । ३ कर उगाहने-वाला एक प्रकारका छोटा कर्म्मचारी ।

पायखाना-संज्ञा पुं० दे० "पाखाना ।"

पायगाह-संज्ञा पुं० (फा०) पद । ओहदा ।

पायजामा-संज्ञा पुं० दे० "पाजामा ।"

पाय-तख़्त-संज्ञा पुं० (फा०) राज-धानी ।

पाय-तराब-संज्ञा पुं० (फा०)यात्राके आरंभमें पहले दिन कुछ दूर चलना ।

पायताबा-संज्ञा पुं० दे० "पाताबा ।"

पायदार-वि० (फा०) पक्का । मजबूत । दृढ़ ।

पायदारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) दृढ़ता ।

पायमाल-वि० दे० "पामाल ।"

पाया–संज्ञा पुं० (फा० पायः) १ पलंग, चौकी आदिमें नीचेके वे डंडे जिनके सहारे उनका ढाँचा खड़ा रहता है। गोड़ा। पाया। २ खम्भा। ३ पद। दरजा। ओहदा। ४ सीढ़ी। जीना।

पायान–संज्ञा पुं० (फा०) अन्त। समाप्ति।

पायानी-संज्ञा स्त्री० दे० "पायान।"

पायाब–वि० (फा०) संज्ञा (पायाबी') इतना कम गहरा (जल) कि पैदल चलकर पार किया जा सके।

पा-रकाब-संज्ञा पुं० (फा०) किसी बड़े आदमीके साथ चलनेवाले लोग। सहचर। क्रि० वि० चलनेको तैयार। प्रस्थानके लिये उद्यत।

पारचा–संज्ञा पुं० (फा० पार्चः) १ कपड़ा। वस्त्र। २ कपड़ेका टुकड़ा।

पारस–संज्ञा पुं० (फा०) प्राचीन कांबोज और वाह्लीकके पश्चिमका देश। फारस देश।

पारसा–वि० (फा०) दुष्कर्मों आदिसे बचनेवाला। नेक। सदाचारी। धर्मनिष्ठ।

पारसाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) धर्मनिष्ठता। सदाचार।

पारसी–संज्ञा पुं० (फा०) पारस देशका निवासी। संज्ञा स्त्री० पारस देशकी भाषा। फारसी।

पारा-संज्ञा पुं० (फा० पारः) १ टुकड़ा। खंड। २ भेंट। उपहार।

पारीना–वि० (फा० पारीनः) पुराना। प्राचीन।

पालायश–संज्ञा स्त्री (फा०) साफ करना। सफाई।

पालान–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० पर्य्याण) घोड़ेकी पीठपर रखा जानेवाला वह कपड़ा जिसपर जीन रखी जाती है।

पालूदा–संज्ञा पुं० दे० "फालूदा।"

पाश–संज्ञा पुं० (फा०) १ फटना। टुकड़े टुकड़े होना। २ टुकड़ा। खंड।

पाशा–संज्ञा पुं० (तु०) १ प्रांतका शासक। २ बहुत बड़ा अफ़सर।

पाशी-संज्ञा स्त्री० (फा०) जल छिड़कना। जलमें तर करना। यौ०–**आब-पाशी**=पानी सींचना

पासंग–संज्ञा पुं० (फा०) तराजूकी डंडीको बराबर रखनेके लिये उठे हुए पलड़ेपर रखा हुआ बोझ। पसंघा। मुहा०–**किसीका पासंग भी न होना**=किसीके मुकाबिलेमें कुछ भी न होना।

पास–संज्ञा पुं० (फा०) १ लिहाज़ खयाल। २ पक्षपात। तरफ़दारी ३ पालन। ४ पहरा। चौकी।

पास-दार–संज्ञा पुं० (फा०) १ रक्षक। रखवाला। २ पक्ष लेनेवाला।

पास-दारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रक्षा। हिफ़ाजत। २ तरफ़दारी पक्षपात।

पास-बान-संज्ञा पुं० (फा०) चौकीदार। पहरेदार। रक्षक। संर

स्त्री०—रखी हुई स्त्री। रखेली। रखनी (राजपूताना)।

पास-बानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) चौकीदारी। पहरेदारी।

पिदर—संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० पितृ) पिता। बाप।

पिदराना—वि० (फा० पिदरानः) पिदर या बापका-सा। बापकी तरहका।

पिदरी—वि० (फा०) पिताका। पैतृक।

पिनहाँ—वि० (फा०) छिपा हुआ।

पिन्दार—संज्ञा पुं० (फा०) १ कल्पना। २ समझ। बुद्धि। ३ अभिमान। घमंड।

पियाज़—संज्ञा स्त्री० दे० "प्याज।"

पियादा—संज्ञा पुं० दे० "प्यादा।"

पियाला—संज्ञा पुं० दे० "प्याला।"

पिशवाज़—संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका घाघरा जो प्रायः वेश्याएँ नाचनेके समय पहनती हैं।

पिसर संज्ञा पुं० (फा०) पुत्र। बेटा। लड़का।

पिस्ताँ—संज्ञा स्त्री० (फा०) स्तन। छाती।

पिस्ता—संज्ञा पुं० (फा० पिस्तः) एक प्रकारका प्रसिद्ध सूखा मेवा।

पीचीदगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) पेचीला होनेका भाव। पेचीलापन।

पीर—संज्ञा पुं० (फा०) १ वृद्ध। बूढ़ा। २ बुजुर्ग। महात्मा। सिद्ध। यौ०—**पीरे-मुग़ाँ**=१ अग्निका उपासक। २ प्रिय। प्रेमपात्र।

पीरज़ादा—संज्ञा पुं० (फा०) किसी पीरका वंशज।

पीर-भुचड़ी—संज्ञा पुं० (फा० पीर +देश० भुचड़ी) हिजड़ोंके एक कल्पित पीरका नाम।

पीराई—संज्ञा पुं० (फा० पीर) एक प्रकारके मुसलमान बाजा बजानेवाले जो पीरोंके गीत गाते हैं।

पीराना—वि० (फा० पीरानः) पीरों या बुजुर्गोंका-सा।

पीरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २ चेला मूँड़नेका धंधा या पेशा। गुरुआई। ३ इजारा। ठेका। ४ हुकूमत।

पील—संज्ञा पुं० (फा०) हाथी। वि० बहुत बड़ा या भारी। जैसे—**पील-तन**=हाथीके समान बड़े शरीरवाला।

पील-पा—संज्ञा पुं० (अ०) एक रोग जिसमें पैर फूलकर हाथीके पैर-की तरह हो जाता है। फील-पा।

पील-पाया—संज्ञा पुं० (फा० पील-पायः) १ हाथीका पैर। २ बहुत बड़ा खंभा।

पील-वान—संज्ञा पुं० (फा०) हाथी-वान। महावत।

पीला—संज्ञा पुं० (फा० पीलः) हाथी।

पुख़्तारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक प्रकारकी बढ़िया रोटी। २ वह रोटी जो गोश्तके प्यालेपर उसे गरम रखनेके लिये रखी जाती है।

पुख़्ता—वि० (फा० पुख़्तः) (संज्ञा पुख़्तगी) पक्का। दृढ़। मजबूत।

पुदीना—संज्ञा पुं० दे० "पोदीना।"

पुर—वि० (फा० मि० सं० पूर्ण) भरा हुआ। पूर्ण। यौगिकमें जैसे—पुर-फ़िज़ा, पुर-बहार।

पुरज़ा—संज्ञा पुं० (फा० पुर्ज़ः) १ टुकड़ा। खंड। मुहा०—**पुरज़े पुरज़े करना या उड़ाना**=खंड खंड करना। टूक टूक करना। २ कतरन। धज्जी। कटा हुआ टुकड़ा। कतल। ३ अवयव। अंग। ४ अंश। भाग। मुहा०—**चलता पुरज़ा**=चालाक आदमी।

पुर-फ़िज़ा—वि० (फा०+अ०) सुन्दर और शोभायुक्त (स्थान)।

पुरसाँ—वि० (फा०) पूछनेवाला।

पुरसा—संज्ञा पुं० (फा० पुर्सः) मृतकके सम्बन्धियोंको सान्त्वना देना। मातम-पुरसी। क्रि० प्र० देना।

पुरसिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) पूछना।

पुरसी—संज्ञा स्त्री० (फा०) पूछनेकी क्रिया। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे—मिज़ाज-पुरसी, मातम-पुरसी।)

पुरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पूरे या भरे होनेकी अवस्था। पूर्णता। २ भरनेकी क्रिया। भरना। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे—खाना-पुरी।)

पुर्स—वि० (फा०) पूछनेवाला। जैसे—बाज-पुर्स।

पुल—संज्ञा पुं० (फा०) नदी, जलाशय आदिके आर-पार जानेका रास्ता जो नाव पाटकर या खंभोंपर पटरियाँ आदि बिछा-कर बनाया जाय। सेतु। मुहा०—**किसी बातका पुल बाँधना**=झड़ी बाँधना। बहुत अधिकता कर देना। अतिशय करना। **पुल टूटना**=१ बहुतायत होना। अधिकता होना। २ अटाला या जमघट लगना।

पुल सरात—संज्ञा पुं० (फा०) मुसल-मानोंके विश्वासके अनुसार वह पुल जिसपरसे अन्तिम निर्णयके दिन सच्चे आदमी तो स्वर्गमें चले जायँगे और दुष्ट नरकमें गिरेंगे।

पुलाव—संज्ञा पुं० (फा०) एक व्यंजन जो मांस और चावलको एक साथ पकानेसे बनता है। मांसोदन।

पुश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पीठ। पृष्ठ। २ सहारा। आसरा। ३ पीढ़ी। पूर्वज।

पुश्तक—संज्ञा पुं० (फा०) घोड़ों आदिका अपने पिछले पैरोंसे मारना। क्रि० अ०—झाड़ना। मारना।

पुश्त-ख़ार—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका पंजा या दस्ता जिससे पीठ खुजलाते हैं।

पुश्त-पनाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रक्षा करनेवाला। रक्षक। २ आश्रयका स्थान।

पुश्ता—संज्ञा पुं० (फा० पुश्तः) १ पानीकी रोक या मजबूतीके लिये दीवारकी तरह बनाया हुआ ढालुआँ टीला। २ बाँध। ऊँची मेड़।

३ किताबकी जिल्दके पीछेका चमड़ा। पुट्ठा।

पुश्तारा–संज्ञा पुं० (फा०पुश्तारः) उतना बोझ जो पीठपर उठाया जा सके।

पुश्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ समर्थन और सहायता। पृष्ठ-पोषण। २ पुस्तककी जिल्दका पुट्ठा।

पुश्तीबान–संज्ञा पुं० (फा०) (भाव० पुश्तीबानी) पृष्ठ पोषण।

पुश्तैनी–वि० (फा०) १ जो कई पुश्तोंसे चला आता हो। दादा-परदादाके समयका पुराना। २ आगेकी पीढ़ियोंतक चलनेवाला।

पूच–वि० (फा०) १ खाली। रिक्त। व्यर्थका। फजूल। वाहियात। ३ तुच्छ। ४ नीच। कमीना।

पूज़–संज्ञा पुं० (फा०) पशुओंकी आकृति। जानवरका चेहरा। यौ०=**पूज़बन्द**-जनवारोंके मुँहपर बाँधनेकी जाली।

पेच–संज्ञा पुं० (फा०) १ घुमाव। घिराव। चक्कर। मुहा०-**पेच व ताब खाना**=मन ही मन कुढ़ना और क्रुद्ध होना। २ उलझना। झंझट। बखेड़ा। ३ चालाकी। चालबाजी। धूर्तता। ४ पगड़ीकी लपेट। ५ कला। यंत्र। मशीन। ६ मशीनके पुर्जे। मुहा०- **पेच घुमाना**=ऐसी युक्ति करना जिससे किसीके विचार बदल जायँ। ७ वह कील या काँटा या उसके नुकीले आधे भाग जिसपर चक्करदार गड़ारियाँ बनी होती हैं और घुमाकर जड़ा जाता है। स्क्रू। ८ कुश्तीमें दूसरेको पछाड़नेकी युक्ति। ९ तरकीब। युक्ति। १० एक प्रकारका आभूषण जो कानोंमें पहना जाता है।

पेचक–संज्ञा स्त्री० (फा०) बटे हुए तागेकी गोली या गुच्छी।

पेच-दर-पेच–वि० (फा०) जिसमें पेचके अन्दर और भी पेच हों।

पेचदार–वि० (फा०) १ जिसमें कोई पेच या कल हो। पेचदार। २ जो टेढ़ा-मेढ़ा और कठिन हो। मुश्किल।

पेचवान–संज्ञा पुं० (फा०पेचक) एक प्रकारका हुक्का।

पेचा–वि० (फा०) घुमावदार। पेचीला।

पेचिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) पेटकी वह पीड़ा जो आँव होनेके कारण होती है। मरोड़।

पेचीदा–वि० (फा० पेचीदः) १ जिसमें पेच या घुमाव हो। २ जल्द समझमें न आनेवाला। जटिल। गूढ़

पेश–संज्ञा पुं० (फा०) १ अगला भाग। आगेका हिस्सा। २ 'उ' कारका द्योतक चिह्न जो अक्षरोंके ऊपर लगता है। क्रि० वि० आगे। सामने। मुहा०-**पेश आना** = १ आगे आना। २ व्यवहार करना। सलूक करना।

पेश-क़दमी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १

किसी काममें आगे बढ़ना या चलना। २ नेतृत्व। ३ आक्रमण।

पेश-क़ब्ज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) कटार।

पेश कश–संज्ञा स्त्री० (फा०) बड़ों-को दी जानेवाली भेंट।

पेश-कार–संज्ञा पुं० (फा०) हाकि-मके सामने काग़ज़-पत्र पेश करने-वाला कर्मचारी।

पेश-कारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) पेश-कारका कार्य या पद।

पेश-ख़ेमा–संज्ञा पुं० (फा०) १ फौजका वह सामान जो पहलेसे ही आगे भेज दिया जाय। २ फौजका अगला हिस्सा। हरावल। ३ किसी बात या घटनाका पूर्व लक्षण।

पेश-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) मका-नके आगेका खुला भाग। आँगन।

पेशगी–वि० (फा०) वह धन जो किसीको कोई काम करनेके लिये पहले ही दे दिया जाय। अगौड़ी। अगाऊ।

पेश-गोई–संज्ञा स्त्री० (फा०) कोई बात पहलेसे कह रखना। भविष्य-कथन।

पेश-दस्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) पहलेसे व्यवस्था करना। पेशबंदी।

पेश नमाज़–संज्ञा पुं० (फा०) वह धार्मिक नेता जो नमाज़ पढ़नेके समय सबके आगे रहता है। इमाम।

पेशबंद–संज्ञा पुं०(फा०) घोड़ेके चार-जामेका वह बंद जो घोड़ेकी गरदनपरसे लाकर दूसरी तरफ बाँधा जाता है और जिससे चार-जामा खिसक नहीं सकता।

पेश-बंदी–संज्ञा स्त्री० (फा०) पहलेसे किया हुआ प्रबंध या बचावकी युक्ति।

पेश-बीं–वि० (फा०) आगेकी बात पहलेसे देख या समझ लेनेवाला। दूरदर्शी।

पेश-बीनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) पहलेसे कोई बात जान या समझ लेना। दूरदर्शिता।

पेश-रौ–संज्ञा पुं० (फा०) १ सबके आगे चलनेवाला। २ मार्ग दर्शक।

पेशवा–संज्ञा पुं० (फा०) १ नेता। सरदार। अग्रगण्य। २ महाराष्ट्र साम्राज्यके प्रधान मन्त्रियोंकी उपाधि।

पेशवाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ किसी माननीय पुरुषके आनेपर कुछ दूर आगे चलकर उसका स्वागत करना। अगवानी। २ पेशवाओंका शासन।

पेशवाज़–संज्ञा स्त्री० दे० "पिश-वाज़।"

पेशा–संज्ञा पुं० (फा० पेशः) वह कार्य जो जीविका उपार्जित कर-नेके लिये किया जाय। कार्य। उद्यम। व्यवसाय।

पेशानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मस्तक। माथा। २ भाग्य। क़िस्मत। ३ अगला या ऊपरी भाग।

पेशाब–संज्ञा पुं० (फा०) मूत। मूत्र।

पेशाब-खाना–संज्ञा पुं० (फा०) वह

स्थान जहाँ लोग मूत्र त्याग करते हों ।

पेशा-वर–संज्ञा पुं० (फा० पेशःवर) किसी प्रकारका पेशा करनेवाला । व्यवसायी ।

पेशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ हाकिमके सामने किसी मुकदमेके पेश होनेकी क्रिया । मुकदमेकी सुनवाई । २ सामने होनेकी क्रिया या भाव ।

पेशीन–वि० (फा०) पुराना । प्राचीन ।

पेशीन-गोई–संज्ञा स्त्री० (फा०) भविष्य-कथन । पेश-गोई ।

पेश्तर–क्रि० वि० (फा०) पहले । पूर्व ।

पैक–संज्ञा पुं० (फा०) समाचार ले जानेवाला । हरकारा ।

पैकर–संज्ञा स्त्री० (फा०) चेहरा । मुख । यौ०–**परी-पैकर**=जिसका मुख परियोंके समान सुंदर हो ।

पैका–संज्ञा पुं० दे० "पैकान ।"

पैकान–संज्ञा पुं० (फा०) तीरका फल । गाँसी ।

पैकार संज्ञा स्त्री० (फा०) युद्ध । लड़ाई । संज्ञा पुं० (फा० पायकार) फुटकर सौदा बेचनेवाला ।

पैख़ाना–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह स्थान जहाँ मल-त्याग किया जाय । २ मल । गू । ग़लीज़ । पुरीष ।

पैग़ंबर–संज्ञा पुं० (फा०) मनुष्योंके पास ईश्वरका संदेसा लेकर आनेवाला । जैसे-ईसा, मुहम्मद ।

पैग़ाम–संज्ञा पुं० (फा०) वह बात जो कहला भेजी जाय । संदेशा । संदेश ।

पैज़ार–संज्ञा स्त्री० (फा०) उपानह । जूता । जोड़ा ।

पै–संज्ञा पुं० (फा०) १ कदम । पैर । २ पैरोंका निशान । मुहा०–किसीके **पर-पै-होना**=किसीके पीछे पड़ जाना । बहुत तंग करना ।

पै-दर-पै–क्रि० वि० (फा०) १ क्रम क्रमसे । क्रमशः । २ लगातार ।

पैदा–वि० (फा०) १ उत्पन्न । प्रसूत । २ प्रकट । आविर्भूत । घटित । ३ प्राप्त । अर्जित । कमाया हुआ ।

पैदाइश–संज्ञा स्त्री० (फा०)उत्पत्ति ।

पैदाइशी–वि० (फा०) जो पैदाइश या जन्मसे हो । जन्म-जात ।

पैदावार–संज्ञा स्त्री० (फा०) अन्न आदि जो खेतमें बोनेसे प्राप्त हो । उपज ।

पैदावारी–दे० 'पैदावार ।'

पैमाइश–संज्ञा स्त्री० (फा०) ज़मीन आदि नापनेकी क्रिया या भाव । माप ।

पैमान–संज्ञा पुं० (फा०) १ वचन । वादा । २ संधि ।

पैमाना–संज्ञा पुं० (फा०) मापनेका औज़ार या साधन । मान-दंड ।

पैरवी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अनुगमन । अनुसरण । २ आज्ञा-पालन । ३ पक्षका मंडन । पक्ष लेना । ४ कोशिश ।

पैरहन–संज्ञा पुं० (फा०) चोगेकी तरहका एक लम्बा पहनावा ।

पैरास्ता–वि० (फा० पैरास्तः) सजाया हुआ। सुसज्जित। यौ०- आरास्त व पैरास्तः।

पैरो–वि०(फा०) अनुयायी।

पैरो-कार–संज्ञा पुं० (फा०) मुकदमें आदिकी पैरवी करनेवाला।

पैबंद–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कपड़े आदिका छेद बंद करनेका छोटा टुकड़ा। चकती। थिगली। जोड़। २ किसी पेड़की टहनी काटकर उसी जातिके दूसरे पेड़की टहनीमें जोड़कर बाँधना जिससे फल बढ़ जायँ या उनमें नया स्वाद आ जाय। ३ किसी चीजमें लगाया हुआ जोड़।

पैबंदी–वि० (फा०) पैबंद लगाकर पैदा किया हुआ (फल आदि)।

पैवस्त–वि० दे० "पैवस्ता।"

पैवस्ता–वि० (फा० पैवस्त:) (संज्ञा पैवस्तगी) १ मिला हुआ। सम्बद्ध। २ अच्छी तरह साथमें जोड़ा हुआ।

पैहम– वि० (फा०) सटा हुआ। क्रि० वि० लगातार।

पोइया–संज्ञा स्त्री० (फा० पोइयः) घोड़ेकी एक प्रकारकी चाल। क़दम।

पोच–वि० (फा० पूच) १ तुच्छ। क्षुद्र। २ अशक्त। क्षीण। ३ निकम्मा।

पोतादार–संज्ञा पुं०(फा०पोतःदार) खज़ानची। कोषाध्यक्ष।

पोदीना–संज्ञा पुं० (फा०)एक प्रसिद्ध बनस्पति जिसकी हरी पत्तियाँ मसालेके काममें आती हैं। पुदीना।

पोलाद–संज्ञा पुं० दे० "फौलाद।"

पोश–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह जिससे कोई चीज़ ढँकी जाय। जैसे–मेज-पोश। तख्त-पोश। २ आगेसे हटानेका संकेत। हट जाओ। वि० पहननेवाला। जैसे-सफेद-पोश।

पोशाक–संज्ञा स्त्री० (फा०) पहननेके कपड़े। वस्त्र। परिधान। पहनावा।

पोशीदगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पोशीदा होनेका भाव। २ छिपाव। दुराव।

पोशीदा–वि०(फा० पोशीदः) छिपा हुआ।

पोशिश–संज्ञा स्त्री०(फा०) पहनावा। पोशाक।

पोस्त–संज्ञा (फा०) १ छिलका। बकला। २ खाल। चमड़ा। ३ अफ़ीमके पौधेका डोडा या ढोढ़। ४ अफ़ीमका पौधा। पोस्त।

पोस्त-कन्दा–वि०(फा० पोस्तकन्दः) १ जिसके ऊपरका छिलका निकाल दिया गया हो। २ (बात) जिसमें बनावट न हो। साफ साफ। स्पष्ट।

पोस्ती–संज्ञा पुं (फा०) १ वह जो नशेके लिये पोस्तके डोडे पीसकर पीता हो। २ आलसी आदमी।

पोस्तीन–संज्ञा पुं० (फा०) १ गरम और मुलायम रोएँवाले समूर

आदि कुछ ... ... खालका बना हुआ पहनावा। २ खालका बना हुआ कोट जिसमें नीचेकी ओर बाल होते हैं।

पौलाद–संज्ञा पुं॰ देखो॰ "फ़ौलाद।"

प्याज़–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰ पियाज़) उग्र गंधवाला एक प्रसिद्ध कंद।

प्याज़ी–वि॰ (फा॰पियाज़ी) प्याजके रंगका। हलका गुलाबी।

प्यादा–संज्ञा पुं॰ (फ़ा॰ पियादः) १ पदाति। पैदल। २ दूत। हरकारा।

प्याला–संज्ञा पुं॰ (फा॰ पियालः) (स्त्री॰ अल्पा॰ प्याली) १ एक प्रकारका छोटा कटोरा। बेला। जाम। २ शराब पीनेका पात्र। मुहा॰–**हम प्याला व हम-निवाला**=एक साथ खाने-पीनेवाले लोग। ३ तोप या बंदूक आदिमें वह गड्ढा जिसमें रंजक रखते हैं।

(फ)

फ़क़–वि॰ (अ॰) भय आदिके कारण जिसका रंग पीला पड़ गया हो। जैसे–चेहरा फ़क़ हो जाना।

फ़क़त–क्रि॰ वि॰ (अ॰) केवल। मात्र। सिर्फ।

फ़क़ीर–संज्ञा पुं॰ (अ) (बहु॰ फ़ुक़रा) १ भीख माँगनेवाला। भिखमंगा। भिक्षुक। २ साधु। संसार त्यागी। ३ निर्धन मनुष्य।

फ़क़ीराना–क्रि॰ वि॰ (अ॰ "फ़क़ीर" से फा॰) फ़क़ीरोंकी तरह। वि॰ फ़क़ीरोंका-सा। संज्ञा पुं॰ वह भूमि जो किसी फ़क़ीरको उसके निर्वाहके लिये दान कर दी जाय।

फ़क़ीरी–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰ फ़क़ीर) १ भिखमंगापन। २ साधुता। ३ निर्धनता।

फ़क्क–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ दो मिली हुई चीजोंको अलग करना। २ मुक्ति। छुटकारा।

फ़क्क-उल्-रेहन–संज्ञा पुं॰ (अ॰) रेहन रखी हुई चीज छुड़ाना।

फ़क्र–संज्ञा (अ॰) १ दीनता। दरिद्रता। २ फ़क़ीरका भाव। फ़क़ीरी। साधुता। ३ आवश्यकतासे अधिक किसी वस्तुकी कामना न करना।

फ़ख़र–संज्ञा पुं॰ दे॰ "फ़ख़्र।"

फ़ख़्र–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ अभिमान। घमंड। शेखी। २ वह वस्तु या बात जिसके कारण महत्त्व प्राप्त हो या अभिमान किया जा सके।

फ़ख़्रिया–क्रि॰ वि॰ (अ॰) फ़ख़्र या अभिमान-पूर्वक।

फ़ग़फ़ूर–संज्ञा पुं॰ (फा॰) चीनके बादशाहोंकी उपाधि।

फ़ग़ाँ–संज्ञा पुं॰ दे॰ "फ़ुग़ाँ।"

फ़जर–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰ फ़ज्र) १ प्रभात। तड़का। सवेरा। प्रातःकाल।

फ़ज़ल–संज्ञा पुं॰ दे॰ "फ़ज़्ल।"

फ़ज़ा–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ खुला हुआ मैदान। विस्तृत क्षेत्र। २ शोभा।

फ़ज़ाइया–संज्ञा पुं॰ (अ॰) आश्चर्य

या खेदसूचक चिह्न जो इस प्रकार (!) लिखा जाता है।
फ़ज़ायल–संज्ञा पुं० (अ०) "फ़ज़ीलत" का बहु०।
फ़ज़ीलत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बड़प्पन। श्रेष्ठता। २ उत्तमता। अच्छापन। मुहा०–**फ़ज़ीलतकी पगड़ी बाँधना**=बड़प्पन या श्रेष्ठता सम्पादित करना।
फ़ज़ीह–वि० (अ०) बदनाम करने या नीचे गिरानेवाला।
फ़ज़ीहत–संज्ञा स्त्री० (अ) १ दुर्दशा। दुर्गति। २ बदनामी।
फ़ज़ीहती–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़ज़ीहत।" वि० लड़ाई-झगड़ा या फ़ज़ीहत करनेवाला।
फ़ज़ूल–वि० (अ०फ़ुज़ूल) १ आवश्यकतासे बहुत अधिक। अतिरिक्त। २ व्यर्थका। निकम्मा। निरर्थक।
फ़ज़ूल-ख़र्च–वि०(अ०+फा०)(संज्ञा फ़ज़ूल ख़र्ची। अपव्ययी। बहुत खर्च करनेवाला।
फ़ज़ूल-गो–वि० (अ०+फा०)(संज्ञा फ़ेज़ूल-गोई) व्यर्थकी बातें कहनेवाला। बकवादी।
फ़ज्र–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़जर।"
फ़ज़्ल–संज्ञा पुं० (अ०) १ अधिकता। ज़्यादती। २ कृपा। दया। अनुग्रह। जैसे–**फ़ज़्ले इलाही**=ईश्वरकी कृपा।
फ़तवा–संज्ञा पुं० (अ० फतवः) मुसलमानोंके धर्म्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी आदि किसी कर्मके अनुकूल या प्रतिकूल होनेके विषयमें देते हैं।
फ़तह–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० फ़ुतूह) १ विजय। २ सफलता। कृतकार्य्यता।
फ़तह-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसपर किसीकी विजयका वर्णन हो।
फ़तह-पेच–संज्ञा पुं० (अ+हिं०) स्त्रियोंकी चोटी गूँथनेका एक प्रकार।
फ़तह-मन्द–वि० (अ + फा०) (संज्ञा फ़तहमन्दी) विजयी।
फ़तह-याब–वि० (अ० + फा०) (संज्ञा फ़तहयाबी) जिसने विजय प्राप्त की हो। विजयी।
फ़तीर–संज्ञा पुं० (अ०) ताजा गूँधा हुआ आटा। "ख़मीर" का उलटा। यौ०–**फ़तीरी-रोटी**=ताजे गूँधे हुए आटेकी रोटी।
फ़तील-सोज़–संज्ञा पुं० (अ+फा०) १ धातुकी दीवट जिसमें एक या अनेक दीए ऊपर-नीचे बने होते हैं। चौमुखा। २ दीवट। चिरागदान।
फ़तीला–संज्ञा पुं० (अ० फ़तीलः) बत्तीके आकारमें लपेटा हुआ वह कागज जिसपर कोई यंत्र लिखा हो। २ वह बत्ती जिससे बन्दूक या तोपके रंजकमें आग लगाई जाती है। ३ कपड़ेकी वह बत्ती जिसे पनशाखेपर रखकर जलाते हैं। वि० बहुत क्रुद्ध। आगबबूला।

फ़तूर–संज्ञा पुं० (अ० फ़ुतूर) १ विकार। दोष। २ हानि। नुकसान। ३ विघ्न। बाधा। ४ उपद्रव। खुराफ़ात।

फ़तूरिया–वि० (अ० फ़ुतूर+हिं० इया (प्रत्य०) खुराफ़ात करनेवाला। उपद्रवी।

फ़तूरी–वि० दे० "फ़तूरिया।"

फ़तूही–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बिना आस्तीनकी एक प्रकारकी पहननेकी कुरती। सदरी। २ लड़ाई या लूटमें मिला हुआ माल।

फ़त्ताँ–वि० (अ०) १ फ़ितना या आफ़त करनेवाला। जैसे–**चश्मे फत्ताँ**=आफ़त ढानेवाली आँख। २ दुष्ट। पाजी। संज्ञा पुं० १ शैतान। २ सुनार।

फ़त्ताह–वि० (अ०) १ खोलनेवाला। २ आज्ञा देनेवाला। ३ ईश्वरका एक विशेषण।

फ़न–संज्ञा पुं० (अ०) १ गुण। खूबी। २ विद्या। ३ दस्तकारी। ४ छलनेका ढंग। मकर।

फ़ना–संज्ञा स्त्री० (अ०) नाश। बरबादी।

फ़ना-फ़ी-अल्लाह–संज्ञा पुं०(अ०) फकीरोंके ध्यानकी वह अवस्था जिसमें वे अपना और सारे संसारका अस्तित्व भूलकर ईश्वर-चिन्तनमें तन्मय हो जाते हैं।

फ़नून–संज्ञा पुं० दे० "फ़ुनून।"

फ़न्द–संज्ञा पुं० (फ़ा०) छल। कपट। फरेब। यौ०–**फ़न्द व फ़रेब**=छल-कपट।

फ़न्दुक़–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़ुन्दुक़) १ एक प्रकारका लाल रंगका छोटा फल या मेवा जिसकी उपमा प्रेमिकाके होंठों या मेंहदी लगी उँगलियोंसे देते हैं। २ उँगलियोंके सिरोंपर मेंहदी लगानेकी क्रिया।

फ़म्म–संज्ञा पुं० (अ०) मुख।

फ़रंग–संज्ञा पुं० दे० "फ़िरंग।"

फ़र–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ सजावट। शोभा। २ चमक-दमक। यौ०–**कर्र व फ़र**=शान-शौकत। शोभा।

फ़रअ–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० फ़रुअ) शाखा। डाल। टहनी।

फ़रऊन–संज्ञा पुं० (अ०) १ मगर या घड़ियाल नामक जल-जन्तु। २ मिश्रके नास्तिक बादशाहोंकी उपाधि जो स्वयं अपने आपको ईश्वर कहा करते थे। ३ अत्याचारी। अन्यायी। जालिम। ४ घमंडी। अभिमानी। मुहा०–**फ़रऊन बे-सामान**=वह अभिमानी और उद्दंड जिसमें सामर्थ्य कुछ भी न हो। झूठ-मूठ इतरानेवाला।

फ़रऊनी–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़रऊनसे उर्दू) १ उद्दंडता। २ घमंड। ३ पाजीपन। शरारत।

फ़रक़–संज्ञा पुं० (अ० फ़र्क़) १ पार्थक्य। अलगाव। २ बीचका अन्तर। दूरी। मुहा०–**फ़रक़ फ़रक़ होना**="दूर हो" या "राह छोड़ो" की आवाज़ होना। "हटो बचो" होना। ३ भेद।

अंतर । ४ दुराव । परायापन । अन्यता । ५ कमी । कसर ।

फ़रखुन्दा–वि० (फा० फर्खुन्दः) शुभ । उत्तम । नेक । जैसे— **फ़रखुन्दा-बख़्त**=भाग्यवान्।

फ़रग़ुल-संज्ञा स्त्री० पुं० (अ०) रूईदार लबादा या पहनावा ।

फ़रज़–संज्ञा दे० "फ़र्ज़ ।"

फ़रज़न्द–संज्ञा स्त्री०दे०"फ़र्ज़न्द ।"

फ़रज़ानगी–संज्ञा स्त्री० दे०"फ़र्ज़ानगी ।"

फ़रज़ाना–वि० दे०"फ़र्ज़ाना ।"

फ़रज़ाम–संज्ञा पुं० (फा०फ़र्ज़ाम) १ अन्त । समाप्ति । २ परिणाम । फल।

फ़रज़ीन–संज्ञा पुं० (फा०) १ बुद्धिमान् । अक्लमन्द । २ शतरंजमें वज़ीर नामका मोहरा । यौ०—**फ़रज़ीनबन्द**= शतरंजमें वह मात जो फ़रज़ीन या वज़ीरको आगे बढ़ाकर दी जाय ।

फ़रतूत–वि० (फा०) १ बहुत वृद्ध । बहुत बुड्ढा । २ मूर्ख । बेवक़ूफ । ३ निकम्मा । निरर्थक ।

फ़रद–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़र्द ।"

फ़रदा–क्रि० वि० (फा०) आगामी कल । आनेवाला दूसरा दिन । संज्ञा स्त्री० क़यामत या प्रलयका दिन ।

फ़रदी–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़र्द ।"

फ़रबही–संज्ञा स्त्री० (फा० फ़र्बेही) मोटाई । मोटापन । स्थूलता ।

फ़रबा–वि० (फा० फ़र्बः) मोटाताजा । स्थूल शरीरवाला । यौ०—**फरबा-अन्दाम** = स्थूल शरीर ।

फ़रमाँ-बरदार–वि० (फा०) (संज्ञा फ़रमाँ-बरदारी) हुकुम माननेवाला ।

फ़रमाँ-रवा–संज्ञा पुं० (फा०) १ फ़रमान जारी करनेवाला । आज्ञा देनेवाला । २ बादशाह । शासक ।

फ़रमा-रवाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ फरमान जारी करना ।२ बादशाही ।

फ़रमाइश–संज्ञा स्त्री० (फा०) आज्ञा । (विशेषतः कोई चीज़ लाने या बनाने आदिके लिये ।)

फ़रमाइशी–वि० (फा०) विशेष रूपसे आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ ।

फ़रमान–संज्ञा पुं० (फा०) (बहु० फ़रामीन) राजकीय आज्ञापत्र । अनुशासन-पत्र ।

फ़रमाना–क्रि० स० (फा० फ़रमान) आज्ञा देना। कहना(आदर-सूचक)

फ़रश–संज्ञा पुं० (अ० फ़र्श) १ बैठनेके लिए बिछानेका वस्त्र । बिछावन । २ धरातल । समतल भूमि । ३ पक्की बनी हुई ज़मीन । गच ।

फ़रश-बन्द–संज्ञा पुं० दे० "फ़रश"

फ़रशी–संज्ञा स्त्री० (फा० फ़र्शी) १ धातुका वह बरतन जिसपर नैचा, सटक आदि लगाकर लोग तमाकू पीते हैं । गुड़गुड़ी । २ उक्त प्रकारका बना हुआ हुक्का ।

फ़रसंग–संज्ञा पुं० दे० "फ़रसख़।"
फ़रस–संज्ञा पुं० (अ०) घोड़ा।
फ़रसख़–संज्ञा पुं० (फा० 'फ़रसंग' का अ० रूप) एक प्रकारकी दूरीकी नाप जो एक कोससे कुछ अधिक और तीन मीलके लगभग होती है।
फ़रसूदा–वि० (फा० फ़र्सूदः) १ बहुत पुराना और निकम्मा। २ थका हुआ। शिथिल। ३ दुर्दशा-ग्रस्त।
फ़रहंग–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बुद्धि-मत्ता। समझ। २ शब्द-कोश।
फ़रह–संज्ञा स्त्री० (अ०) आनन्द। प्रसन्नता। खुशी। वि० प्रसन्न। खुश।
फ़रहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रसन्नता। आनन्द। खुशी।
फ़रहत-अफ़ज़ा–वि० (अ०+फा०) आनन्द बढ़ानेवाला। सुखद।
फ़रहत-बख़्श–वि० दे० "फ़रहत अफ़ज़ा।"
फ़रहाँ–वि (फा०) प्रसन्न।
फ़रहाद–संज्ञा पुं० (फा०) १ पत्थरपर खुदाईका काम बनानेवाला। संग-तराश। २ फारसका एक प्रसिद्ध संग-तराश जो शीरीं नामक राजकुमारीपर आसक्त था और उसीके लिये जिसने अपने प्राण दे दिये थे।
फ़राख़–वि० (फा०) (संज्ञा फ़राख़ी) १ दूरतक फैला हुआ। विस्तृत। २ चौड़ा। ३ विशाल। बड़ा।
फ़राग़–संज्ञा पुं० दे० "फ़राग़त।"
फ़राग़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ छुटकारा। छुट्टी। मुक्ति। २ निश्चिन्तता। बेफ़िक्री। ३ मलत्याग। पाख़ाना फिरना।

फ़राज़–वि० (फ़ा०) ऊँचा। उच्च। संज्ञा पुं० ऊँचाई। यौ०—**नशेब व फ़राज़**=ऊँच-नीच। भला-बुरा।
फ़रामीन–संज्ञा पुं० (फा०) "फ़रमान" का अरबी बहु०।
फ़रामोश–वि० (फा०) भूला हुआ। विस्मृत। संज्ञा स्त्री० एक प्रकारकी बदान जिसमें यह शर्त होती है कि कोई चीज़ हाथमें देनेपर "याद है" कहना पड़ता है; और यदि यह न कहे तो देनेवाला कहता है "फ़रामोश।"
फ़रायज़–संज्ञा पुं० (अ० 'फ़र्ज़' का बहु०) १ वे कार्य जिनका करना कर्त्तव्य हो। कर्त्तव्य-समूह। २ उत्तराधिकारसम्बन्धी विद्या या शास्त्र।
फ़रार–संज्ञा पुं० (अ० फ़िरार) भागना। वि० भागा हुआ।
फ़रारी–वि० (अ० फ़िरारसे फा०) १ भागनेवाला। निकल जानेवाला। २ गायब हो जानेवाला। ३ भागा हुआ।
फ़रासत–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़िरासत"
फ़राहम–क्रि० वि० (फा०) इकट्ठा।
फ़राहमी–संज्ञा स्त्री० (फा०) संग्रह।
फ़रियाद–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दुःखसे बचाए जानेके लिए पुकार। शिकायत। नालिश। २ विनती। प्रार्थना।
फ़रियाद-रस–वि० (फा०) (प्रार्थ

फ़रियाद-रसी) किसीकी फ़रियाद सुनकर उसका कष्ट दूर करनेवाला।

फ़रियादी–वि० (फा०) फ़रियाद करनेवाला।

फ़रिश्ता–संज्ञा पुं० (फा० फ़िरिश्तः) (बहु० फ़रिश्तगान) १ ईश्वरका वह दूत जो उसकी आज्ञाके अनुसार कोई काम करता हो। २ देवता।

फ़रिश्ता-ख़ाँ–(संज्ञा पुं०) दे० "फ़रिश्ता ख़्वाँ।"

फ़रिश्ता-ख़्वाँ–संज्ञा पुं० (फा० "फ़रिश्ता" से उर्दू) वह जो मंत्र-बलसे फ़रिश्तोंको अपने वशमें करता हो।

फ़रिस्तादा–वि० (फा० फ़िरिस्तादः) भेजा हुआ। रवाना किया हुआ। संज्ञा पुं० दूत।

फ़रीक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ फ़र्क़ समझनेवाला। विवेकशील। २ समूह। टोली। जत्था। झुंड। ३ किसी प्रकारका झगड़ा या विवाद करनेवालोंमेंसे कोई एक पक्ष।

फ़रीक़े-अव्वल–संज्ञा पुं० (अ०) १ पहला पक्ष। २ अभियोग उपस्थित करनेवाला पक्ष। मुद्दई। वादी।

फ़रीक़े-सानी–संज्ञा पुं० (अ०) १ दूसरा पक्ष। २ वह पक्ष जिसपर अभियोग लगाया जाय। मुद्दालेह। प्रतिवादी।

फ़रीक़ैन–संज्ञा पुं० (अ० "फ़रीक़" का बहु०) १ दोनों पक्ष। २ वादी और प्रतिवादी। मुद्दई और मुद्दालेह।

फ़रीद–वि० (अ०) अनुपम। बेजोड़।

फ़रूग़–संज्ञा पुं० (फा० फ़ुरूग़) १ ज्योति। प्रकाश। २ चमक। द्युति।

फ़रेफ़्ता–वि० (फा० फ़रेफ़्तः) १ धोखा खानेवाला। २ आसक्त होनेवाला। आशिक। मोहित।

फ़रेब–संज्ञा पुं० (फा० फ़िरेब) १ छल। कपट। २ चालाकी। धूर्त्तता।

फ़रेब-दिही–संज्ञा स्त्री० (फा०) धोखा देना।

फ़रेबी–संज्ञा पुं० (फा०) कपटी।

फ़रो–क्रि० वि० (फा० फ़िरो) नीचे। अधीन। मातहत। वि० १ नीच। तुच्छ। कमीना। २ शान्त। दबा हुआ। जैसे—गुस्सा फ़रो करना।

फ़रोकश–वि० (फा० फ़रो+कश) उतरना या ठहरना। जैसे—बादशाह महलमें फ़रोकश हुए।

फ़रोख़्त–संज्ञा स्त्री० (फ़ा० फ़िरोख़्त) बेचनेकी क्रिया। बिक्री। विक्रय।

फ़रोग़–संज्ञा पुं० दे० "फ़रूग़।"

फ़रो-गुज़ाश्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ध्यान न देना। उपेक्षा। लापरवाही। २ आगा-पीछा। आनाकानी। टाल-मटोल। ३ त्रुटि। कमी। ४ भूल। चूक।

फ़रो-तन–संज्ञा (फा०) (संज्ञा फ़रोतनी) दीन। ग़रीब।

फ़रोद–क्रि० वि० (फा०) नीचे। संज्ञा० पुं० ठहरना। टिकना।
फ़रोद-गाह–संज्ञा० स्त्री० (फा०) उतरने या ठहरनेकी जगह।
फ़रो-माँदा–वि० (फा० फरोमाँदः) (संज्ञा फरोमाँदगी) १ दीन। गरीब। २ थका हुआ। शिथिल।
फ़रोमाया–वि० (फा० फरोमायः) १ नीच। कमीना। २ ओछा।
फ़रोश–संज्ञा पुं० (फा० फ़िरोशः) बेचनेवाला। विक्रेता। जैसे–मेवा फरोश।
फ़रोशिन्दा–वि० दे० "फरोश"।
फ़रोशी–संज्ञा० स्त्री०(फा० फ़िरोशी) बेचनेकी क्रिया। विक्रय। जैसे–मेवा-फरोशी। कुतुब-फरोशी।
फ़र्क़–संज्ञा पुं० दे० "फ़रक़"।
फ़र्ज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दरार। सन्धि। २ स्त्रीकी योनि। भग। संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० फरायज) १ कर्तव्य-कर्म। २ कल्पना। मान लेना। यौ० **फ़िल-फ़र्ज़**= मान लो कि।
फ़र्ज़-किफ़ाया–संज्ञा पुं०(अ०) वह कर्तव्य जो परिवारके किसी एक व्यक्तिके पूरा करनेपर उसके अन्य सम्बन्धियोंके लिये आवश्यक न रह जाय। जैसे–किसीके मरनेपर नमाज पढ़ना।
फ़र्ज़न–क्रि०वि० (अ० "फ़र्ज़"सेउर्दू) फ़र्ज़ करके। मान कर
फ़र्ज़न्द–संज्ञा पुं० (फा०) १ पुत्र। बेटा। लड़का। २ संतान।
फ़र्ज़न्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) "फ़र्ज़न्द" का भाव। पुत्रत्व। सुतत्व। लड़कापन। मुहा०–**फ़र्ज़न्दीमें लेना** = १ किसीको अपना लड़का बनाना। २ गोद या दत्तक लेना। ३ अपना दामाद बनाना।
फ़र्ज़ानगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बुद्धिमत्ता। समझदारी। अकलमन्दी। २ विद्या। शास्त्र। ३ गुण। ४ योग्यता।
फ़र्ज़ाना–वि०(फा० फ़र्ज़ानः) १ बुद्धिमान्। अक्लमन्द। समझदार २ ज्ञानी ३ विद्वान्। पंडित।
फ़र्ज़ी–वि० (अ० "फ़र्ज़"से फा०) २ कल्पित। माना हुआ। २ नाम-मात्रका। सत्ताहीन।
फ़र्त–संज्ञा स्त्री० (अ०) अधिकता। ज्यादती। जैसे–फ़र्ते, शौक, फ़र्ते मुहब्बत।
फ़र्द–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कागज या कपड़े आदिका अलग टुकड़ा। २ इस प्रकारके टुकड़ेपर लिखा हुआ विवरण या सूची आदि। ३ रजाई, शाल आदिका एक या ऊपरी पल्ला। ४ कोई अकेला शेर या कविताका पद। ५ एक व्यक्ति। ६ एक प्रकारका पक्षी। वि० १ अकेला। २ एक।
फ़र्दन-फ़र्दन–क्रि० वि० (अ०) एक एक करके। अलग अलग।
फ़र्द-बशर–संज्ञा पुं० (अ०) एक व्यक्ति। एक आदमी।
फ़र्द-बातिल–वि०(अ०)१ निकम्मा। निरर्थक। २ अयोग्य।

फ़र्रार–वि० (अ०) बहुत तेज़ भागने या दौड़नेवाला।

फ़र्राश–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह नौकर जिसका काम डेरा गाड़ना, फ़र्श बिछाना और दीपक जलाना आदि होता है। २ नौकर। खिदमतगार।

फ़र्राश-खाना–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) वह स्थान जहाँ तोशक, तकिया व चाँदनी आदि रखे जाते हैं। तोशक-खाना।

फ़र्राशी–वि० (अ० "फ़र्राश" से फा०) फ़र्श या फ़र्राशके कामोंसे संबंध रखनेवाला। यौ०–**फ़र्राशी पंखा**=बड़ा पंखा जिससे फ़र्शभर-पर हवा की जा सकती हो। संज्ञा स्त्री० फ़र्राशका काम या पद।

फ़र्रुख़–वि० (फा०) १ शुभ। उत्तम। २सुन्दर। मनोहर।

फ़र्श–संज्ञा पुं० (अ०) १ बिछावन। २ दे० "फ़रश।

फ़र्शी–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारका बड़ा हुक्का। वि० फ़र्श-संबंधी। फ़र्शका। मुहा०–**फ़र्शी सलाम**=ज़मीनपर झुककर किया जानेवाला सलाम।

फ़लक–संज्ञा पुं० (अ०) आकाश। आस्मान। मुहा०–**फ़लकपर चढ़ाना**=दिमाग़ बहुत बढ़ा देना। बढ़ावा देना।

फ़लक-सैर–संज्ञा स्त्री० (अ० "फ़लक" से) विजया। भंग। भाँग।

फ़लकी–वि० (अ० "फ़लक" से) फ़लक या आकाश-सम्बन्धी। आसमानका।

फ़लाँ–संज्ञा पुं० (अ० फुलाँ) अनिश्चित। अमुक।

फ़लाकत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दरिद्रता। गरीबी। २ विपत्ति। कष्ट।

फ़लाकत-ज़दा–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा फ़लाकत ज़दगी) दुर्दशा-ग्रस्त। विपत्तिमें पड़ा हुआ।

फ़लातूँ–संज्ञा पुं० (यू० से) अफ़-लातून या प्लेटो नामक यूनानी दार्शनिक और विद्वान्।

फ़लान–संज्ञा स्त्री० (अ० फुलाँ) स्त्रीकी जननेंद्रिय। भाग।

फ़लाना–वि० (अ० फुलाँ) अमुक। कोई अनिश्चित।

फ़लासिफ़ा–संज्ञा पुं० (यू० से) १ दर्शन-शास्त्र। २ शास्त्र। विज्ञान।

फ़लाह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सफ-लता। विजय। २ सुख। आराम। ३ परोपकार। भलाई। ४ उत्तमता।

फ़लाहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) कृषि-कर्म। खेती-बारी।

फ़लीता–संज्ञा पुं० (अ० फ़लीतः) १ बड़ आदिके रेशोंसे बटी हुई रस्सी जिसमें तोड़ेदार बंदूक दागनेके लिये आग लगाकर रखी जाती है। पलीता।

फ़लूस–संज्ञा पुं० (अ० फ़ुलूस) ताँबेका सिक्का।

फ़लसफ़ा–संज्ञा पुं० (यू०से) १ दर्शन शास्त्र। २ शास्त्र। विज्ञान।

फ़ल्सफ़ी–वि० (यू० से) फ़ल्सफ़ा या दर्शनशास्त्र जाननेवाला।

फ़वायद–संज्ञा पुं (अ०) "फ़ायदा" का बहुबचन।

फ़व्वारा–संज्ञा पुं० दे० "फ़ौव्वारा।"

फ़सल–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़स्ल।"

फ़सली–वि० दे० "फ़स्ली।"

फ़सली सन्–संज्ञा पुं० (फा०) अकबरका चलाया हुआ एक संवत् जिसका प्रचार उत्तरी भारतमें कृषिसम्बन्धी कार्योंके लिये होता है।

फ़साँ–संज्ञा स्त्री०(फा०) छुरी आदिपर सान रखनेका पत्थर। सान। कुरंड।

फ़साद–संज्ञा पुं० (अ०) १ विकार। बिगाड़। २ विद्रोह। बलवा। ३ ऊधम। उपद्रव। ४ झगड़ा। लड़ाई।

फ़सादी–वि० (अ० "फ़साद' से फा०) १ फ़साद खड़ा करनेवाला। उपद्रवी। २ झगड़ालू।

फ़साना–संज्ञा पुं० (फा० फ़सानः) १ मनसे गढ़ा हुआ किस्सा। कल्पित कहानी। २ विवरण। हाल।

फ़साहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी विषयका सुन्दर और मनोहर रूपसे वर्णन करना। उत्तम भाषण करनेकी शक्ति।

फ़सील–संज्ञा स्त्री० (अ०) नगर या बस्तीके चारों ओरकी दीवार। शहर-पनाह। परकोटा।

फ़सीह–वि० (अ०) जिसमें फ़साहतका गुण हो। सुवक्ता।

फ़सूँ–संज्ञा पुं० (अ०) जादू-टोना। मंत्र। टोटका।

फ़सूँगर–वि० (फा०) (संज्ञा फ़सूँगरी) १ जादू टोना करनेवाला। २ मंत्र। मुग्ध-करनेवाला।

फ़सूँसाज़–वि० दे० "फ़सूँगर।"

फ़स्ख़–संज्ञा पुं० (अ०) १ (विचार आदि) बदलना। २ तोड़ना। ३ रद्द करना।

फ़स्द–संज्ञा स्त्री० (अ०) नसको छेदकर शरीरका दूषित रक्त निकालनेकी क्रिया। मुहा०–**फ़स्द-खुलवाना** या **लेना**=१ शरीरका दूषित रक्त निकलवाना। २ होशकी दवा कराना।

फ़स्ल- संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ऋतु। मौसिम। २ काल। समय। ३ खेतकी उपज। शस्य। पैदावार। ४ ग्रन्थका अध्याय या प्रकरण। ५ पार्थक्य। जुदाई। ६ दो वस्तुओंका अन्तर बतलानेवाली चीज। ७ धोखा। छल।

फ़स्ली–वि० (अ० "फ़स्ल" से फा०) फ़स्लका। फ़स्लसंबंधी। संज्ञा पुं० हैजा नामक रोग। विशूचिका।

फ़स्ली साल–पुं० दे० "फ़स्ली सन्।"

फ़स्ले-गुल–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़स्ले-बहार।"

फ़स्ले-बहार–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) वसन्त ऋतु।

फ़स्साद–संज्ञा पुं० (अ०) फ़स्द खोलनेवाला। जर्राह।

फ़स्सादी–संज्ञा स्त्री० (अ०) फ़स्द खोलनेका काम । जर्राही ।

फ़हम–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़हम) बुद्धि । समझ । ज्ञान । अक़्ल ।

फ़हमाइश–संज्ञा स्त्री० (अ० "फ़हम" से फ़ा०) समझाने या सतर्क कर-करनेकी क्रिया । तंबीह । चेतावनी ।

फ़हमीद–संज्ञा स्त्री० (अ० "फ़हम" से फ़ा०) समझ । बुद्धि । अक़्ल ।

फ़हमीदा–वि० (अ० "फ़हम" से फ़ा० फ़हमीद:) समझदार । बुद्धिमान् ।

फ़हरिस्त–दे० "फ़ेहरिस्त ।"

फ़हश–वि० (अ० फ़ुहश) फूहड़ । अश्लील ।

फ़हीम–वि० (अ०) समझदार ।

फ़ाइल–वि० दे० "फ़ायल ।"

फ़ाक़ा–संज्ञा पुं० (अ० फ़ाक़:) १ निराहार रहना । उपवास । २ दरिद्रता । ग़रीबी ।

फ़ाक़ा-कश–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा फ़ाक़ाकशी) १ भूखा रहने-वाला । भूखा । २ निर्धन । कंगाल ।

फ़ाक़ा-ज़द–वि०(अ० फ़ाक़:+फ़ा० ज़द:) भूखका मारा । भूखा ।

फ़ाक़ा-मस्त–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा फ़ाक़ा-मस्ती) जो खाने-पीनेका कष्ट उठाकर भी कुछ चिन्ता न करता हो ।

फ़ाक़े-मस्त–वि० दे० "फ़ाक़ा-मस्त ।"

फ़ाख़िर–वि० (अ०) (स्त्री० फ़ाख़िर:) १ फ़ख़्र या घमंड करनेवाला । अभिमानी । २ बहु-मूल्य । कीमती ।

फ़ाख़िरा–वि० स्त्री० (अ० फ़ाख़िर:) बहुत बढ़िया और बहुमूल्य ।

फ़ाख़्तई–संज्ञा पुं० (अ० फ़ाख़्त:) एक प्रकारका खाकी रंग । वि० पंडुकके रंगका । खाकी ।

फ़ाख़्ता–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़ाख़्त:) पंडुक नामक पक्षी । धँवरख । मुहा०–**फ़ाख़्ता उड़ाना**=गुल-छर्रे उड़ाना । आनन्द-मंगल करना ।

फ़ाजिर–संज्ञा पुं० (अ०) (स्त्री० फ़ाजिरा) १ व्यभिचारी । २ पापी ।

फ़ाज़िल–वि० (अ०) आवश्यकतासे अधिक । बढ़ा हुआ । ज़्यादा । (बहु० फ़ुज़ला) संज्ञा पुं० विद्वान् । पंडित ।

फ़ाज़िल-बाक़ी–वि० (अ०) ज़्यादा और किसीके जिम्मे बाकी निक-लनेवाला । बाकी बचा हुआ ।

फ़ातिमा–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़ातिम:) १ वह स्त्री जो बच्चेको स्तन-पान कराना जल्दी बन्द कर दे । २ मुहम्मद साहबकी कन्या जो हज़रत अलीकी पत्नी और हसन तथा हुसैनकी माता थी ।

फ़ातिहा–संज्ञा पुं० स्त्री० (अ० फ़ातिह:) १ प्रार्थना । २ वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगोंके नामपर दिया जाय ।

फ़ातेह–वि० (अ० फ़ातिह) (स्त्री० फ़ातिहा) १ आरम्भ करने या

खोलनेवाला । २ फ़तह या विजय करनेवाला । विजयी । ३ मरनेवाला ।

फ़ानी–वि० (अ०) १ नष्ट हो जानेवाला । नश्वर । २ मरने या प्राण देने वाला ।

फ़ानूस–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारकी बड़ी कंदील । २ एक दंडमें लगे हुए शीशेके कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं ।

फ़ानूसे-ख़याल–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) कागज़ आदिकी बनी हुई वह कन्दील जिसके अन्दर हाथी-घोड़े आदिके चित्र एक चक्करमें लगे रहते हैं और हवा या दीयेके धूएँसे घूमते हैं ।

फ़ानूसे-ख़याली–संज्ञा पुं० दे० "फ़ानूसे ख़याल ।"

फ़ाम–संज्ञा पुं० (फा०) वर्ण । रंग । जैसे–**सियह-फ़ाम**=काले रंग-वाला ।

फ़ायक़–वि० (अ० फ़ाइक़) १ श्रेष्ठता रखनेवाला । श्रेष्ठ । उच्च । २ बढ़ा हुआ । अच्छा ।

फ़ायज़–वि० (अ० फ़ाइज़) १ पहुँचने या प्राप्त करनेवाला । २ विजयी ।

फ़ायदा–संज्ञा पुं० (अ० फ़ायदः) १ लाभ । नफ़ा । प्राप्ति । २ प्रयोजनसिद्धि । मतलब पूरा होना । ३ अच्छा फल । भला परिणाम । ४ उत्तम प्रभाव ।

फ़ायदा-मन्द–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा-फ़ायदामन्दी) लाभदायक ।

फ़ायल–वि० (अ० फ़ाइल) १ कोई फ़ल या काम करनेवाला । २ बालकोंके साथ प्रकृति-विरुद्ध संभोग करनेवाला । संज्ञा पुं० व्याकरणमें कर्त्ता ।

फ़ायली–वि० (अ०) क्रियाशील । जो अच्छी तरह कार्य कर सके ।

फ़ायले हक़ीक़ी–संज्ञा पुं० (अ०) सच्चा ईश्वर ।

फ़ार–संज्ञा पुं० (अ०) चूहा ।

फ़ारख़ती–संज्ञा स्त्री० (अ० फारिग़+ख़ती) वह लेख जो इस बातका सबूत हो कि किसीके ज़िम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया । चुकती । बे-बाकी ।

फ़ारस–संज्ञा पुं० (फा०) ईरान या पारस नामका देश ।

फ़ारसी–संज्ञा स्त्री० (फा०) फ़ारस देशकी भाषा । वि० फ़ारसका । फ़ारस सम्बन्धी ।

फ़ारसी-दाँ–वि० (फा०) फ़ारसी भाषा जाननेवाला ।

फ़ारिग़–वि० (अ०) १ जो कोई काम करके निश्चिन्त हो गया हो । जिसने किसी कामसे छुट्टी पा ली हो । बेफ़िक्र । २ जिसे छुटकारा मिल गया हो । मुक्त । स्वतन्त्र । आज़ाद ।

फ़ारिग़-उल-बाल–वि० (अ०) जो सब प्रकारसे निश्चिन्त और सुखी हो ।

फ़ारिग़-ख़ती–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़ारख़ती ।"

फ़ारिस-संज्ञा पुं० दे० "फ़ारस ।"

फ़ारूक़–वि० (अ०) १ भले और बुरेका फ़र्क़ बतलाने या जानने वाला । विवेकशील । २ दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमरकी उपाधि ।

फ़ारूक़ी–वि० (अ०) दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमरका वंशज ।

फ़ार्स–संज्ञा पुं० दे० "फ़ारस ।"

फ़ाल–संज्ञा स्त्री० (अ०) पाँसा आदि फेंक कर शुभ-अशुभ बतलानेकी क्रिया । मुहा०–

फ़ाल-खुलवाना=रमल आदिकी सहायतासे शुभ-अशुभ आदिका पता लगाना । **फ़ाल-देखना**= उक्त क्रियासे शुभ-अशुभ बतलाना ।

फ़ाल-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह ग्रन्थ जिसे देखकर फालकी सहायतासे शकुन या शुभ-अशुभ आदि बतलाते हैं ।

फ़ालसई–वि० (फा० फ़ालसः) फ़ालसेके रंगका । ललाई लिये हुए हलका ऊदा ।

फ़ालसा–संज्ञा पुं० (फा० फालसः सि० सं० परूषक) एक छोटा पेड़ जिसमें मोतीके दानेके बराबर छोटे छोटे खट-मीठे फल लगते हैं ।

फ़ालिज़–संज्ञा पुं० (अ०) एक रोग जिसमें आधा अङ्ग सुन्न हो जाता है । अर्धाङ्ग । पक्षाघात ।

फ़ालीज़–संज्ञा स्त्री (फा०) १ खेत । २ बाग । उपवन । वाटिका ।

फ़ालूदा–संज्ञा पुं० (फा० फ़ालूदः) पीनेके लिये गेहूँके सत्तसे बनाई हुई एक चीज़ ।(मुसल०) बिया । सिमइयाँ ।

फ़ाश–वि० (फा०) खुला हुआ । प्रकट । स्पष्ट ।

फ़ासला–संज्ञा पुं० (अ० फ़ासिलः) दूरी । अन्तर ।

फ़ासिद–वि० (अ०) १ फसाद या झगड़ा करनेवाला । झगड़ालू । २ बिगड़ा हुआ । खराब । जैसे–फ़ासिद खून । ३ दुष्ट । पाजी ।

फ़ासिदा–वि० दे० "फ़ासिद ।"

फ़ासिल–वि० (अ०)अलग या जुदा करनेवाला

फ़ासिला–संज्ञा पुं० दे० "फ़ासला ।"

फ़ाहिश–वि० (अ०) १ बहुत अधिक दुश्चरित्र या पाजी । २ गालियाँ या गन्दी बातें बकनेवाला । ३ नङ्गा नाच ।

फ़ाहिशा–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़ाहिशः) दुश्चरित्रा । पुंश्चली ।

फ़िक़रा–संज्ञा पुं० (अ० फ़िक़रः) १ वाक्य । २ झाँसा-पट्टी । ३ व्यंग्य ।

फ़िक़रे-बाज़–वि० (अ० + फा०) (सं० फ़िक़रेबाज़ी) झाँसा-पट्टी देनेवाला ।

फ़िक़्का–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़िक़ः) मुसलमानोंका धर्मशास्त्र ।

फ़िक्र–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ चिंता । सोच । खटका । २ ध्यान । विचार । ३ उपायका विचार । यत्न ।

फ़िक्र-मन्द–वि० (अ० + फ़ा०) (संज्ञा फ़िक्रमन्दी) चिन्ता-ग्रस्त ।

फ़िगार–वि० (फ़ा०)घायल। ज़ख़्मी।

फ़िज़ा–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़ज़ा) १ खुली जमीन। मैदान। २ शोभा। बहार । यौ०–पुर-फ़िज़ा=सुन्दर और शोभायुक्त (स्थान)।

फ़िज़ूल–वि० दे० "फ़ुज़ूल ।"

फ़ितनए-आलम–(संज्ञा)दे०"फ़ितनए जहाँ ।"

फ़ितनए-जहाँ–वि० (अ० + फ़ा०) १ सारे संसारमें आफ़त मचानेवाला। २ प्रेमिकाका एक विशेषण।

फ़ितना–संज्ञा पुं० (अ० फ़ितनः) १ पाप । अपराध । २ लड़ाई-झगड़ा । ३ एक प्रकारका इत्र । वि० १ दुष्ट । पाजी। झगड़ालू। २ उपद्रव या आफ़त करनेवाला । ३ प्रेमिकाका एक विशेषण ।

फ़ितना-अंगेज़–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा फ़ितना-अंगेज़ी) १ फ़ितना या आफ़त खड़ा करनेवाला। उपद्रवी । २ प्रेमिकाका एक विशेषण।

फ़ितना-ज़ा–(संज्ञा पुं०) "दे० फ़ितना अंगेज ।"

फ़ितना-परदाज़–वि०(अ०+फ़ा०) (संज्ञा फ़ितना-परदाज़ी) १ फ़ितना या उपद्रव खड़ा करनेवाला। २ प्रेमिकाका एक विशेषण ।

फ़ितरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रकृति । २ स्वभाव । ३ बुद्धिमत्ता। होशियारी। समझदारी। ४ धूर्त्तता ।

फ़ितरती–वि० (अ० "फ़ितर"से फ़ा०) १ प्राकृतिक। २ स्वाभाविक। ३ धूर्त्त ।

फ़ितरा–संज्ञा पुं० (अ० फ़ितर) वह अन्न जो ईदके दिन नमाज़से पहले दानके लिये निकालकर रखा जाता है ।

फ़ितराक–संज्ञा पुं० (फ़ा०) चमड़ेके वे तस्मे जो घोड़ेकी जीनके दोनों तरफ़ सामान बाँधनेके लिये रहतेहैं ।

फ़ितानत–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) बुद्धिमत्ता । अक़्लमन्दी ।

फ़ितीर–संज्ञा पुं० दे० "फ़तीर ।"

फ़ितूर–संज्ञा पुं० दे० "फ़तूर ।"

फ़ित्र–संज्ञा पुं० (अ० फ़ित्र) दिनभर रोज़ा रखनेके बाद सन्ध्याको कुछ खाकर रोज़ा खोलना। अफ़तार । यौ०–**ईद-उल्-फ़ित्र** = ईदका त्योहार ।

फ़िदवी–वि० (अ० "फ़िदाई"सेफ़ा०) स्वामि-भक्त। आज्ञाकारी । संज्ञा पुं० (स्त्री० फ़िदविया) दास ।

फ़िदा–वि० (अ०) १ किसीके लिये प्राण देनेवाला। २ आसक्त। अनुरक्त । ३ निछावर । सदके ।

फ़िदाई–संज्ञा पुं० (अ०) फ़िदा होने या जान देनेवाला। किसीके लिये प्राण निछावर करनेवाला।

फ़िदिया–संज्ञा पुं० (अ० फ़िदियः) १ वह धन जिसके बदलेमें किसी अपराधीको कारागारसे छुड़ाया

जाय अथवा प्राण-दंडसे मुक्त कराया जाय। २ अर्थ-दंड। जुरमाना। ३ वह विशेष कर जो राजाकी ओरसे अन्य धर्मावलम्बियोंपर लगता है।

फ़िन्नार–क्रि० वि० (अ०) नरक या नरककी अग्निमें। (प्रायः शापके रूपमें बोलते हैं।)

फ़िरंग–संज्ञा पुं० (अ० "फरांक" से फा० फ़रंग) १ यूरोपका एक देश। फ्रांस। गोरोंका मुल्क। फिरंगिस्तान। २ गरमी: आतशक (रोग)।

फ़िरंगिस्तान–संज्ञा पुं० (फा० फरंगिस्तान) यूरोप महादेश।

फ़िरंगी–संज्ञा पुं० (फा० फ़रंग) १ फ़िरंग देशमें उत्पन्न। २ फिरंग देशमें रहनेवाला।

फ़िरका–संज्ञा पुं० (अ० फ़िर्क़ः) १ जाति। २ जत्था। ३ पंथ। संप्रदाय।

फ़िरदौस–संज्ञा पुं०(अ०)१ वाटिका। बाग़। २ स्वर्ग। बहिश्त।

फ़िरदौस-मंज़िलत–वि० दे० 'फ़िरदौस मकानी।"

फ़िरदौस-मकानी–वि०(अ०+फा०) १ स्वर्गमें रहनेवाला। २ स्वर्गीय।

फ़िरनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी खीर जो पीसे हुए चावलोंसे पकाई जाती है।

फ़िराक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ वियोग। बिछोह। २ चिन्ता। सोच। ३ खोज।

फ़िराग़–संज्ञा पुं० (अ०) १ मुक्ति। छुटकारा। रिहाई। २ फ़ुरसत। सुभीता। ३ आनन्द। खुशी। ४ अधिकता। बहुतायत। ५ सन्तोष। इतमीनान।

फ़िरार–संज्ञा पुं० दे० 'फ़रार।"

फ़िरावाँ–वि० (फा०) (संज्ञा फ़िरावानी) बहुत। अधिक। ज्यादा।

फ़िरासत–संज्ञा स्त्री० (अ०) बुद्धिकी तीव्रता। बुद्धिमत्ता। अक़्लमन्दी।

फ़िरिश्तगान–संज्ञा पुं० (फा०) "फ़िरिश्ता" का बहु०।

फ़िरिश्ता–संज्ञा पुं० दे० "फ़रिश्ता।'

फ़िरूद–क्रि० वि० दे० "फ़रोद।"

फ़िरो–क्रि० वि० दे० "फ़रो।"

फ़िरोख़्त–संज्ञा स्त्री० दे० "फरोख़्त।"

फ़िल-जुमला–क्रि० वि० (अ०) १ तात्पर्य यह कि। संक्षेपमें। २ थोड़ा-सा। ३ यों ही।

फ़िल-फ़िल–संज्ञा स्त्री० (अ०) काली मिर्च।

फ़िल-फ़ौर–क्रि० वि० (अ०)तुरन्त। तत्काल।

फ़िल-बदीह–क्रि० वि० (अ०)बिना पहलेसे सोचे हुए। तुरन्त। तत्काल।

फ़िल-मसल–क्रि० वि० (अ०) उदाहरण-स्वरूप।

फ़िलमिसाल–क्रि० वि० दे० "फ़िल्-मसल।"

फ़िल-वाक़ा–वि० क्रि० (अ०) वास्तवमें। वस्तुतः। दर-हक़ीक़त।

फ़िल-हक़ीक़त–क्रि० वि० (अ०) वास्तवमें। वस्तुतः।

फ़िल्-हाल–क्रि० वि० (अ०) इस समय। इस अवसरपर।

फ़िशाँ- वि० (फ़ा०) (संज्ञा फ़िशानी) बरसाने या छिड़कनेवाला। यौ०-**आतिश-फ़िशाँ**=आग बरसानेवाला।

फ़िशार–संज्ञा पुं (फ़ा०) १ मुसलमानोंके अनुसार किसीके शवको कब्रके चारों ओरसे खूब कसकर (दंड-स्वरूप) दबाना। २ निचोड़ना।

फ़िसाद–संज्ञा पुं० दे० "फ़साद।"

फ़िसाना- संज्ञा पुं० दे० "फ़साना।"

फ़िस्क़–संज्ञा पुं० (अ०) १ आज्ञाका उल्लंघन। २ सन्मार्गसे च्युत होना। ३ अपराध। कसूर। दोष ४ पाप। गुनाह। यौ०–**फ़िस्क़ व फ़ुजूर**=अपराध और कुकर्म।

फ़िस्त्र-वि० दे० "फ़स्त्र।"

फ़िहरिस्त–संज्ञा स्त्री०दे०'फ़ह्रिस्त'

फ़ी -अव्य० (अ०) प्रत्येक। हर एक।

फ़ी अमान-अल्लाह- (अ०) ईश्वर तुम्हें अपनी रक्षामें रक्खे।

फ़ी-ज़माना-क्रि० वि०(अ०+फ़ा०) आज-कलके ज़मानेमें। इन दिनों।

फ़ीता–संज्ञा पुं० (पुर्त्त० से फ़ा० फ़ीतः) पतली धज्जी, या सूत आदि जो किसी वस्तुको लपेटने या बाँधनेके काममें आता है।

फ़ी-माबैन–क्रि० वि० (अ०) दोनों पक्षोंके बीचमें।

फ़ीरनी–संज्ञा स्त्री०दे० "फिरनी।"

फ़ीरोज़–वि० (फ़ा०) १ विजयी। २ सुखी और संपन्न।

फ़ीरोज़ा–संज्ञा पुं० (फ़ा० फ़िरोज़ः) हरापनके लिये नीले रंगका एक नग या बहुमूल्य पत्थर।

फ़ीरोज़ी–वि० (फ़ा०) हरापन लिये नीला।

फ़ील–संज्ञा पुं० (फ़ा०) हाथी। हस्ती।

फ़ील-खाना–संज्ञा पुं० (फ़ा०) वह घर जहाँ हाथी बाँधा जाता हो। हस्ति-शाला।

फ़ील-पा–संज्ञा पुं० (फ़ा०) एक रोग जिसमें पैर या और कोई अंग फूलकर हाथीके पैरकी तरह हो जाता है।

फ़ील-पाया- संज्ञा पुं०(फ़ा०)स्तम्भ। खम्भा।

फ़ील-बान–संज्ञा पुं० (फ़ा०) हाथीवान।

फ़ील-मुर्ग़–संज्ञा पुं० (फ़ा०) मोरकी तरहका एक प्रकारका पक्षी।

फ़ीला–संज्ञा पुं० (फ़ा० फ़ीलः) शतरंजका एक मोहरा। जिसे हाथी, किश्ती और रुख भी कहते हैं।

फ़ी-सदी-क्रि० वि० (अ०+फ़ा०) हर सैकड़े पर। प्रतिशत।

फ़ी-सबील-अल्लाह–क्रि० वि० (अ०)ईश्वरके लिये। खुदाकी राहपर।

फ़ुक़रा–संज्ञा पुं० (अ०) "फ़क़ीर" का बहुवचन।

फ़ुग़ाँ–संज्ञा पुं० (फ़ा०) रोना। चिल्लाना।

फ़ुज़ला–संज्ञा पुं० (अ०) "फ़ाज़िल"

(विद्वान्) का बहु० । संज्ञा पुं० (अ० फुज़्लः)१ बाकी बचा हुआ । २ जूठा । उच्छिष्ट । ३ शरीरसे निकलनेवाले मल । जैसे-थूक,पसीना, पेशाब, पाखाना आदि । ४ मल ।

फ़ुज़ूँ–वि० (फा०) बढ़ा हुआ । अधिक ।

फ़ुजूर–संज्ञा पुं० (अ०) १ पाप । २ अपराध । ३ दुराचार ।

फ़ुजूल–वि० दे० "फ़ज़ूल ।"

फ़ुतूर–संज्ञा पुं० दे० "फ़तूर ।"

फ़ुतूह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ "फतह" (विजय) का बहु० । २ ऊपरसे होनेवाला लाभ । अतिरिक्त लाभ । ३ लूटमें मिला हुआ माल ।

फ़ुतूहात–संज्ञा स्त्री० (अ०) "फ़तूह' का बहु० ।

फ़ुनून–संज्ञा पुं० अ० में "फ़न" का बहु० ।

फ़ुरक़त–संज्ञा स्त्री० (अ०)वियोग । जुदाई । बिछोह ।

फ़ुरक़ान–संज्ञा स्त्री० (अ०) कुरान शरीफ़। मुसलमानोंका धर्म-ग्रन्थ ।

फ़ुरसत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अवसर । समय ।२ अवकाश । निवृत्ति छुट्टी । ३ रोगसे मुक्ति । आराम ।

फ़ुरूग़–संज्ञा पुं० दे० "फ़रूग़ ।"

फ़ुरूश–संज्ञा पुं० (अ०) "फ़र्श" का बहु० ।

फ़ुर्ज–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़र्ज ।"

फ़ुर्लाँ–संज्ञा पुं० दे० "फ़र्लाँ ।"

फ़ुलूस–संज्ञा पुं० (अ० फ़लसका बहु०) तांबेका सिक्का । पैसा ।

फ़ुसूल-संज्ञा पुं० (अ०) "फ़स्ल" का बहु० ।

फ़ुहश–वि० दे० "फ़हश ।"

फ़ेल–संज्ञा पुं० (अ० फ़िअल) १ कार्य । काम । कर्म । २ दुष्कर्म । ३ सम्भोग । विषय । ४ व्याकरणमें क्रिया ।

फ़ेल-ज़ामिनी–संज्ञा स्त्री० (अ० फ़ेल+ज़ामिन) नेक-चलनीकी ज़मानत ।

फ़ेलन्–क्रि० वि० (अ०) कार्य-रूपमें ।

फ़ेल-मुतअद्दी–संज्ञा पुं० (अ०) व्याकरणमें सकर्मक क्रिया ।

फ़ेल-लाज़िमी–संज्ञा पुं० (अ०) व्याकरणमें अकर्मक क्रिया ।

फ़ेलिया–वि० दे० "फ़ली ।"

फ़ेली–वि० (अ० फ़ेल) १ धूर्त । चालाक । २ बद-चलन । दुराचारी ।

फ़ेहरिस्त–संज्ञा स्त्री० (फा० फ़ह-रिस्त) सूची । तालिका ।

फ़ैज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ परोपकार । उपकार । हित । २ फ़ायदा । लाभ ।

फ़ैज़-रसाँ–वि० (अ०+फा०)(संज्ञा० फ़ैज़-रसानी) फ़ैज़ या लाभ पहुँचानेवाला ।

फ़ैज़े-आम–संज्ञा पुं० (अ०) जन-साधारणका हित । लोकोपकार ।

फ़ैयाज़–वि० (अ०) बहुत बड़ा दाता । दानी । उदार ।

फ़ैयाज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दान-शीलता । २ उदारता ।

फ़ैलसूफ़–संज्ञा पुं०(यू० से फा०) १ विद्वान् । विद्या-प्रेमी । २ धोखे-बाज । चालबाज । ३ फ़ुज़ूल-खर्च । अपव्ययी ।

फ़ैलसुफ़ी–संज्ञा स्त्री० (यू० "फ़ल-सफ़ा" से) १ धूर्त्तता । चालाकी । अपव्यय । फजूल-खर्ची ।

फ़ैसल–संज्ञा पुं० (अ०) १ फैसला करनेवाला हाकिम । न्यायकर्त्ता । न्याय । फैसला ।

फ़ैसला–संज्ञा पुं० (अ० फैस्लः) १ दो पक्षोंमेंसे किसकी बात ठीक है, इसका निबटेरा । २ किसी मुक़दमेमें अदालतकी आख़िरी राय ।

फ़ोता–संज्ञा पुं० (फा० फ़ोतः) १ भूमिकर । पोत । २ थैली । कोष । थैला । ३ अंडकोष ।

फ़ोता-ख़ाना–संज्ञा पुं० (फा०) ख़ज़ाना । कोष ।

फोतेदार–संज्ञा पुं० (फा०) १ खजानची । कोषाध्यक्ष । २ रोकड़िया ।

फ़ौक़–वि० (अ०) १ उच्च । श्रेष्ठ । उत्तम । संज्ञा पुं० १ उच्चता । ऊँचाई । २ उत्तमता । श्रेष्ठता । ३ बड़प्पन । **मुहा०–फ़ौक रखना** या ले **जाना=बढ़कर** होना ।

फ़ौक़-उल-भड़क–वि०(अ०"फौक" से उर्दू) भड़कीला । भड़कदार ।

फ़ौक़ानी–वि० (अ०) १ ऊपरका । ऊपरी । ३ श्रेष्ठ । उत्तम । संज्ञा पुं० वह अक्षर जिसके ऊपर नुक्ता लगा हो ।

फ़ौक़ियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) श्रेष्ठता । उत्तमता । २ किसीसे बढ़कर होनेकी अवस्था ।

फ़ौज–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ झुंड । जत्था । २ सेना । लशकर ।

फ़ौज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ विजय । जीत । २ लाभ । फायदा । ३ मुक्ति ।

फ़ौज-कशी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) सैनिक आक्रमण । चढ़ाई । धावा ।

फ़ौजदार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) सेनापति ।

फ़ौजदारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) लड़ाई-झगड़ा । मार-पीट । २ वह अदालत जहाँ ऐसे मुकद-मोंका निर्णय होता हो जिनमें अपराधीको दंड मिलता है ।

फ़ौजी–वि० (अ० फौज) फ़ौज-सम्बंधी । सैनिक ।

फ़ौत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ न रह जाना । नष्ट हो जाना । २ मृत्यु । मौत । वि० मरा हुआ । मृत ।

फ़ौती–संज्ञा० स्त्री० (अ० फौतसे फा०) मरना । मृत्यु । वि० मरा हुआ । मृत ।

फ़ौती-नामा–संज्ञा पु० (अ० फौत+ फा० नामः) किसीकी मृत्युका सूचना-पत्र ।

फ़ौर–संज्ञा पुं० (अ०) १ समय । वक्त । २ जल्दी । शीघ्रता ।

फ़ौरन–क्रि० वि० (अ०) चटपट । तुरन्त ।

फ़ौलाद–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका कड़ा और अच्छा लोहा। खेड़ी।

फ़ौलादी–वि० (फा०) फ़ौलाद नामक लोहेका बना हुआ। संज्ञा स्त्री० भाले या बल्लमकी लकड़ी।

फ़ौव्वारा–संज्ञापुं० (अ० फ़व्वारः) १ जलका महीन-महीन छींटा। २ जलकी वह टोंटी जिसमेंसे दबावके कारण जलकी महीन धार या छींटे वेगसे ऊपरकी ओर उड़कर गिरा करते हैं। जल-यंत्र।

(ब)

बंग–संज्ञा स्त्री०(फा०)भंग। भाँग।

ब–उप० (फा०) एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले लगकर 'के साथ,' 'से,' 'पर' आदि अर्थ देता है। जैसे–ब-शौक़।

ब-इस्तस्ना–क्रि० वि० (अ०) १ छोड़ देनेपर भी। २ न मानने या लेनेपर भी।

बईद–क्रि० वि० (अ०) दूर। फासलेका। अन्तरपर।

ब-ऐनही–क्रि० वि० (अ०) १ ठीक वही। २ ठीक उसी तरह।

ब-क़दर–क्रि० वि० (फा० ब + क़द्र) २ अमुक हिसाब या दरसे। २ अनुसार। वि० इतना।

बकर–संज्ञा पुं० (अ०) १ गौ। २ बैल।

बक़ा–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बाक़ी या बना रहना। २ शाश्वत या अमर होनेका भाव। अमरता।

बकावल–संज्ञा पुं० (फा०) भोजन बनानेवाला। बावरची। रसोइया।

बक़ाया–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो बाक़ी बचा हो। अवशिष्ट।

ब-कार–क्रि० वि० (फा०) कामसे।

बक़िया–वि० (अ० बक़ियः) बाक़ी बचा हुआ। अवशिष्ट।

बक़ौल–क्रि० वि० (अ०) किसीके क़ौल या कहनेके मुताबिक। किसीके कथनानुसार।

बक़्क़ाल–संज्ञा पु० (अ०) तरकारी और अन्न आदि बेचनेवाला। बनिया।

बख्तर–संज्ञा पुं० दे० "बख़्तर।"

बक़र ईद–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसलमानोंका एक त्योहार जो जिलहिज्ज मासकी १० वीं तारीखको होता है और जिसमें वे पशुओंकी बलि देते हैं।

बखिया–संज्ञा पुं० (फा० बख़ियः) कपड़ेकी एक प्रकारकी मजबूत सिलाई।

बख़ील–संज्ञा पुं० (अ०) (भाव० बख़ीली) कंजूस। कृपण। मक्खीचूस।

बख़ीली–संज्ञा स्त्री० (फा० बख़ीला) कंजूसी। कृपणता।

ब-ख़ूबी–क्रि० वि० (फा०) ख़ूबीके साथ। अच्छी तरह। उचित रूपमें।

बख़ूर–संज्ञा पुं०(अ०)सुगंध। महक।

ब-ख़ैर–क्रि० वि० (फा०) खैरियतके साथ। कुशलपूर्वक। अच्छी तरह।

बख़्त–संज्ञा पुं० (फा०) १ भाग्य । किस्मत । तक़दीर । २ सौभाग्य ।
बख़्तर–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारकी जिरह या कपड़ा जो सैनिक लोग लड़ाईके समय पहनते हैं । सन्नाह ।
बख़्तावर–वि० (फा०) भाग्यवान् । खुश-किस्मत । तक़दीरवर ।
बख्तावरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सौभाग्य । खुश-किस्मती ।
बख़्श–वि० (फा०) १ बख़्शने या माफ करनेवाला । २ प्रदान करनेवाला ।
बख़्शना–क्रि० स० (फा० बख़्शीदन) १ प्रदान करना । देना । २ छोड़ना । जाने देना । क्षमा करना । माफ करना ।
बख़्शवाना–क्रि० स० (फा० बख़्शीदन) बख़्शनेकी प्रेरणा करना । बख़्शनेमें प्रवृत्त करना ।
बख़्शिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ उपहार । भेंट । २ पुरस्कार । इनाम ।
बख़्शिश-नामा–संज्ञा पुं० (फा०) दान-पत्र । [illegible] ।
बख़्शी–संज्ञा पुं० (फा०) वह कर्मचारी जो लोगोंका वेतन बाँटता हो ।
बग़ल–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बाहुमूलके नीचेकी ओरका गड्ढा । काँख । २ छातीके दोनों किनारोंका भाग । पार्श्व । मुहा०–**बग़लमें दबाना** या **धरना**= अधिकार करना । ले लेना । **बग़लें बजाना**=बहुत प्रसन्नता प्रकट करना । खूब खुशी मनाना । **बग़ल गरम करना** = साथमें सोना । संभोग करना । **बग़लमें मुँह डालना**= लज्जित होना । सिर नीचा करना । **बग़लें झाँकना** = लज्जित होकर इधर उधर देखना । भागनेका रास्ता ढूँढ़ना ।
बग़ल-गीर–वि० (फा०) १ बग़लमें रहना । २ गले लगना । लिपटना ।
बग़ली–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वह थैली जिसमें दर्जी सुई, तागा आदि रखते हैं । तिल-दानी । २ कुरते आदिमें कपड़ेका वह टुकड़ा जो कंधे आदिके नीचे रहता है । बग़ल । ३ कुश्तीका एक पेंच । ४ एक प्रकारका डंडोंका खेल । वि० बग़लका । बग़ल सम्बन्धी)
बग़ावत–संज्ञा स्त्री (अ०) किसीके विरुद्ध खड़े होना । विद्रोह ।
बग़ीचा–संज्ञा पुं० (फा० बाग़चः) छोटा बाग़ । बाटिका ।
बग़ैर–क्रि० वि० (अ०) बिना । छोड़कर । अलग रखते हुए ।
बचकाना–वि० (फा० बचगानः) १ बच्चोंका-सा । २ बच्चोंके योग्य ।
बचगाना–वि० दे० " बचकाना ।"
बच्चा–संज्ञा पुं० (फा० बचः मि० सं० वत्स) १ किसी प्राणीका शिशु । २ बालक । लड़का ।
बज़ला–संज्ञा पुं० (अ० बज़लः) मजाक । विनोद । परिहास । ठट्ठा । यौ० **बज़ला-संज** =ठठोल
बजा–वि०(फा०) १ ठीक । दुरुस्त ।

२ वाजिब। उचित। मुहा०—**बजा लाना**= १ पालन करना। पूरा करना। २ करना। जैसे—आदाब बजा लाना।

बजा-आवरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) आज्ञा या कर्तव्य आदिका पालन। हुक्मके मुताबिक काम करना।

बज़ाज़—संज्ञा पुं० दे० "बज्जाज़।"

बजाय—क्रि० पुं० (फा०) किसीकी जगह पर। बदलेमें। जैसे—आप कपड़ोंके बजाय नक़द दे दीजियेगा।

ब-ज़ाहिर—क्रि०वि० (फा०) जाहिरमें ऊपरसे देखने पर।

ब-जिन्स—वि० क्रि० वि० (फा०) ठीक वैसा ही ज्योंका त्यों।

बजुज़—अव्य० (फा०) इसको छोड़कर। अतिरिक्त। सिवा।

बज़ोर—क्रि० वि० (फा०) ज़ोरके साथ। बलपूर्वक। जबरदस्ती।

बज़्ज़—संज्ञा पुं० (अ०) १ वस्त्र। कपड़ा। २ सामान।

बज़्ज़ाज़—संज्ञा पुं० (अ०) कपड़ा बेचनेवाला। वस्त्रका व्यवसायी।

बज़्ज़ाज़ा—संज्ञ पुं० (अ० बज़्ज़ाज़) वह स्थान जहाँ कपड़े बिकते हों। कपड़ोंका बाज़ार।

बज़्ज़ाज़ी—संज्ञा स्त्री० (फा० बज़्ज़ाज) बज़्ज़ाजका काम या व्यवसाय। कपड़ेका कार-बार।

बज़्म—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वह स्थान जहाँ बहुतसे लोग एकत्र हों सभा। २ वह स्थान जहाँ नृत्य गीत या आमोद-प्रमोद हो। रंग-स्थल।

बज़्म-गाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) वह स्थान जहाँ नृत्य-गीत और मद्य-पानी आदि हो। महफ़िल।

बत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बत्तख। २ बत्तखके आकारकी शराब रखनेकी सुराही।

बतक—संज्ञा स्त्री० दे० "बत्तख।"

ब-तद्रीज—क्रि० वि० (फा०+अ०) क्रम क्रमसे। क्रमशः।

बत्तख—संज्ञा स्त्री० (अ० बत) हंसकी जातिकी पानीकी एक प्रसिद्ध चिड़िया।

बत्न—संज्ञा पु० (अ०) (बहु० बतून) १ पेट। उदर। २ गर्भ।

बद—वि० (फा०) बुरा। खराब (प्रायः यौगिकमें जैसे—बद-चलन, बद-मआश।)

बद-अमली—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बुरा शासन या व्यवस्था। कुप्रबन्ध। २ अराजकता।

बद-इख़लाक़—वि० (फा०) (संज्ञा बद-इख़लाकी) जिसका आचरण और व्यवहार अच्छा न हो।

बद-इन्तज़ामी—संज्ञा स्त्री० (फा०) इन्तज़ाम (प्रबन्ध) की खराबी। अव्यवस्था।

बद-ऐमाल—वि० (फा०) (संज्ञा बद-ऐमाली) दुराचारी। बदचलन।

बद-किरदार—वि० (फा०) (संज्ञा बद-किरदारी) बुरे आचरणवाला। दुराचारी।

बद्-कार–वि० (फा०) (सं० बद्-कारी) दुराचारी। बद-चलन।

बद्-ख़ू–वि० (फा०) खराब आदत-वाला। बुरे स्वभाववाला (प्रायः प्रेमिकाके लिये प्रयुक्त होता है)।

बद्-ख़्वाह–वि० (फा०) (संज्ञा बद-ख़्वाही) बुरा या अशुभ चाहने-वाला।

बदख़्शाँ–संज्ञा पुं० (फा०) वंक्षु नदीके उद्गमके पासका एक देश जहाँका लाल (रत्न) बहुत प्रसिद्ध है।

बद्-गुमान–वि० (फा०) (संज्ञा बद-गुमानी) जिसके मनमें किसीकी ओरसे सन्देह उत्पन्न हुआ हो। असन्तुष्ट।

बद्-गो–वि० (फा०) (सं० बद्-गोई) १ बुरी बातें कहनेवाला। २ निन्दा करनेवाला। चुगुल-खोर।

बद्-चलन–वि० (फा० बद + हिं० चलन) (संज्ञा बद-चलनी) जिस-का चाल-चलन अच्छा न हो। दुराचारी।

बद्-ज़बान–वि० (फा०) (संज्ञा बद-ज़बानी) जो जबान सँभालकर न बोलता हो। गाली-गुफ़्ता बकने-वाला।

बद्-ज़ात–वि० (फा०) १ नीच कुलमें उत्पन्न। कमीना। नीच। २ वाहियात। पाजी। दुष्ट।

बद्-ज़ेब–वि० (फा०) जो देखनेमें अच्छा न लगे। जो खिलता न हो। भद्दा।

बद्-तर–वि० (फा०) किसीकी तुल-नामें अधिक बुरा। ज़्यादा ख़राब।

बद्-दयानत–वि० (फा०) (संज्ञा बद-दयानती) जिसकी नीयत खराब हो।

बद्-दिमाग़–वि० (फा० अ०) संज्ञा बद-दिमाग़ी) दुष्ट विचारों या स्वभाववाला।

बद्-दुआ–संज्ञा स्त्री० (फा०) बुरी दुआ। शाप।

बदन–संज्ञा पुं० (अ०) (वि० बदनी) १ तन। शरीर। जिस्म। २ शरीरका गुप्त अंग।

बद्-नसीब–वि० (फा०) (संज्ञा बद-नसीबी) अभागा। कम्बख़्त।

बद्-नाम–वि० (फा०) जिसकी निंदा हो रही हो। कलंकित।

बद्-नामी–संज्ञा स्त्री० (फा०) लोक-निन्दा। अपवाद।

बद्-नीयत–वि० (फा०) (संज्ञा बद-नीयती) जिसकी नीयत खराब हो।

बद्-नुमा–वि० (फा०) (संज्ञा बद-नुमाई) जो देखनेमें अच्छा न हो। कुरूप। भद्दा।

बद्-परहेज़–वि० (फा०) (संज्ञा बद-परहेज़ी) जो ठीक तरहसे परहेज न कर सके।

बद्-फ़ेल–संज्ञा पुं० (फा० + अ०) बुरा काम। कुकर्म। वि० बुरे काम करनेवाला। कुकर्मी।

बद्-फ़ेली–संज्ञा स्त्री० (फा० बद्-फ़ेल) कुकर्म।

बद-बख़्त—वि० (फा० + अ०) कम्बख़्त । अभागा ।

बद-बू—संज्ञा स्त्री० (फा०) (वि० बदबू-दार) खराब बू । दुर्गन्ध ।

बद-मआश—दे० "बदमाश ।"

बद-मज़गी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मजे या स्वादका अभाव । २ मनमुटाव । पारस्परिक विरोध ।

बद-मज़ा—वि० (फा०) १ खराब मजे या स्वादवाला । २ खराब । बुरा । ३ गुस्सेमें आया हुआ । क्रुद्ध ।

बद-मस्त—वि० (फा०) (संज्ञा बद-मस्ती) नशेमें चूर । मत्त ।

बदमाश—वि० (फा०) (संज्ञा बद-माशी) १ बुरे आचरणवाला । दुराचारी । २ लुच्चा । लफंगा ।

बद-मिज़ाज—वि० (फा०+अ०) (संज्ञा बद-मिजाजी) दुष्ट स्वभाव-वाला ।

बद-मुआमिला-वि० (फा०)(संज्ञा बद-मुआमिलगी) जिसका व्यव-हार या लेन-देन ठीक न हो । चालाक । बे-ईमान ।

बद-रंग-वि० (फा०) १ जिसका रंग उड़ गया हो । खराब रंगवाला । २ किसी दूसरे रंगका (ताश) ।

बदर-का—संज्ञा पुं० दे० "बद्रका ।"

बदर-रौ—संज्ञा स्त्री० (फा०) नाली । मोरी । पनाला ।

बद-राह—वि० (फा०) बुरी राहपर चलनेवाला । कुमार्गी ।

बदरौर—संज्ञा स्त्री०दे० "बदर-रौ ।"

बदल—संज्ञा पुं० (अ०) १ एककी जगह दूसरा रखना । बदलना । २ परिवर्तन । बदला । ३ एक चीजके बदलेमें दी हुई दूसरी चीज ।

बद-लगाम—वि० (फा०) १ (घोड़ा) जो लगामका संकेत या जोर न माने । २ जो बोलते समय भले-बुरेका ध्यान न रखे ।

बदला—संज्ञा पुं० (अ० बदल) १ परस्पर लेने और देनेका व्यवहार । विनिमय । २ एक वस्तुकी हानि या स्थानकी पूर्तिके लिये उपस्थित की हुई दूसरी वस्तु । पलटा । एवज । ३ एक पक्षके किसी व्यव-हारके उत्तरमें दूसरे पक्षका वैसा ही व्यवहार । पलटा । प्रतीकार ।

मुहा०—**बदला लेना** या **चुकाना**= किसीके बुराई करनेपर उसके साथ बुराई करना ।

बदली—संज्ञा स्त्री० (अ० बदल) १ एकके स्थानपर दूसरी वस्तुकी उपस्थिति । २ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर नियुक्ति । तबदीली । तबादला ।

बद-सलूकी—संज्ञा स्त्री० (फा०) बुरा सलूक । अनुचित व्यवहार ।

बद-सूरत--वि० (फा०) खराब सूरतवाला । बद-शक्ल । कुरूप ।

ब-दस्त--क्रि० वि० (फा०) हाथसे । द्वारा । मारफ़त । हस्ते ।

ब-दस्तूर--क्रि० वि० (फा०) दस्तूर या कायदेके मुताबिक । नियमा-नुसार । जिस तरह होता आया हो, उसी तरह ।

बद-हज़मी–संज्ञा स्त्री० (फा०) हज़म न होना । अनपच । अपच ।

बद-हवास–वि० (फा०) (संज्ञा बद-हवासी) जिसके होश-हवास ठिकाने न हों । बहुत घबराया हुआ । विकल ।

बदी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बदका भाव । २ बुराई । दोष । खराबी अपकार । अहित ।

बदीअ–वि० (अ०)(बहु० बदाया) विलक्षण । असाधारण । आश्चर्य-जनक ।

बदील–संज्ञा पुं० (अ०) धार्मिक पुरुष ।

बदीह–वि० (अ०) स्पष्ट खुला हुआ ।

बदीही–वि० (अ०) १ खुला हुआ । स्पष्ट ।२ पहलेसे बिना सोचा हुआ । तुरन्त ही कहा या सोचा हुआ ।

ब-दौलत–क्रि० वि० (फा०) कृपा या अनुग्रहसे । जैसे-आपकी बदौलत यह काम हो गया ।

बद्दू–संज्ञा पुं० (फ़ा० बद) १ लुच्चा । बदमाश । २ अरबमें बसनेवाली एक जाति ।

बद्र–संज्ञा पुं० (फ़ा०) पूर्ण चन्द्रमा । पूर्णिमाका चाँद ।

बद्रक़ा–संज्ञा पुं० (फा०) १ मार्ग-दर्शक । २ रक्षक । ३ औषध आदिका अनुमान ।

बनफ़शा–संज्ञा पुं० (फा० बनफ़शः) एक प्रकारकी वनस्पति जिसकी जड़ और पत्तियाँ औषधके काममें आती हैं ।

ब-नाम–क्रि० वि० (फा०) नामपर । नामसे । जैसे-मोहन बनाम सोहन दावा हुआ है । सोहनके नामपर मोहनका दावा हुआ है ।

ब-निस्बत–क्रि० वि० (फा० +अ०) किसीके मुकाबलेमें ।। अपेक्षा ।

बनी–संज्ञा पुं० (अ०) लड़के । यौ०-**बनी आदम**=आदमके लड़के । मनुष्य ।

बन्द–संज्ञा पुं० (फा०) १ बाँधनेकी चीज़ । २ पुश्ता । बाँध । ३ शरीरमें अंगोंका जोड़ । ४ कौशल । कारीगरी । ५ कागजका ताव या टुकड़ा । ६ कविताका पद । वि० (फा०) १ चारों ओरसे रुका या बाँधा हुआ । २ जिसके मुँहपर ढकना या आवरण लगा हो । ३ 'खुला' का उलटा । ४ जिसका कार्य रुका हो । २ बाँधनेवाला । जैसे–जिल्द-बन्द ।

बन्दगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भक्ति पूर्वक ईश्वरकी बन्दना । २ सेवा । खिदमत । ३ आदाब । प्रणाम । सलाम ।

बन्दर–संज्ञा पुं० (फा०) (बहु० बनादिर) समुद्रतटका वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं । बन्दरगाह ।

बन्दा–संज्ञा पुं० (फा० बन्दः) (बहु० बन्दगान) १ सेवक । दास । २ मनुष्य । आदमी ।

बन्दा-नवाज़–संज्ञा पुं० (फा०) (भाव० बन्दा-नवाज़ी) वह जो अपने दासों या आश्रितोंपर पूर्ण कृपा रखता हो । दीन-दयालु ।

बन्दा-परवर–वि० (फा०) (संज्ञा बन्दा-परवरी) जो अपने सेवकों या आश्रितोंका अच्छी तरह पालन करता हो। दीन-बन्धु ।

बन्दिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बाँधनेकी क्रिया या भाव । २ गाँठ । गिरह । ३ छन्दकी रचना। ४ उपाय । तरकीब । योजना। ५ इलज़ाम। अभियोग।

बन्दी–संज्ञा पुं० (फा०) क़ैदी। बँधुआ । संज्ञा स्त्री० (फा० बन्दः) दासी। सेविका । चेरी। प्रत्य० बाँधे जाने या लिपि-बद्ध होनेकी क्रिया । जैसे-जमा-बन्दी, ज़बान-बन्दी, जिल्द-बन्दी ।

बन्दी-ख़ाना–संज्ञा पुं० (फा०) कारागार । क़ैदखाना ।

बन्दूक़–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रसिद्ध अस्त्र जो गोली रखकर बारूदकी सहायतासे चलाई जाती है।

बन्दूक़ची–संज्ञा पुं० (अ०) बन्दूक चलानेवाला सिपाही ।

बन्दोबस्त–संज्ञा पुं० (फा०) १ प्रबन्ध । इन्तज़ाम । २ खेतोंको नापकर उनका राज-कर निश्चित करना । ३ वह विभाग जिसके सपुर्द यह काम हो।

बबर–संज्ञा पुं० (अ०) शेर। सिंह। केसरी।

ब-मंजिला–क्रि० वि० (फा०)जगहपर। पदपर जैसे-ब-मंजिला माँ =माँकी जगह पर ।

बमूजिब–क्रि० वि० (फा०) अनुसार। मुताबिक। जैसे-मैं आपके हुक्मके बमूजिब काम करूँगा ।

ब-मै–क्रि० वि० (फा०) सहित। साथ। जैसे-ब-मै कपड़ोंके बक्स भेज दो।

बयाज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सादा कागज या बही आदि। २ वह बही आदि जिसपर याददास्तके लिए कुछ लिख रखते हैं । ३ बही-खाता ।

बयान–संज्ञा पुं० (अ०) १ वर्णन। चर्चा। २ जिक्र। हाल।

बयाना–संज्ञा पुं० (अ० बैआनः) निश्चित किये हुए मूल्यका वह अंश जो ख़रीदनेकी बात-चीत करनेके समय दिया जाता है। पेशगी। आगाऊ।

बयाबान–संज्ञा पुं० (फा०) १ निर्जल स्थान। सहरा। २ उजाड़ और सुनसान जगह।

बर–अव्य० (फा०) ऊपर । पर। जैसे–**बर-वक्त**=समय पर। मुहा० **बर आना**। मुकाबलेमें ठहरना। वि० १ बढ़ा-चढ़ा । श्रेष्ठ । २ पूरा । पूर्ण (आशा आदिके सम्बन्धमें) । जैसे-**मुराद बर आना**=मनोरथ पूर्ण होना । वि० १ ले जानेवाला । जैसे-**नामबर**=पत्रवाहक । २ लेनेवाला। जैसे-दिल-बर।

बर-अंगेख़्ता–वि० (फा० बर-अंगेख़्तः) क्रोधमें आया हुआ। क्रुद्ध ।

बर-अक्स–क्रि० वि० (फा०+अ०) विपरीत। उलटा।

बर-आमद–वि० दे० "बरामद।"

बर-आवुर्द–संज्ञा पुं० (फा०) १ आँकने या जाँचनेकी क्रिया। २ वह पत्र जिसपर वेतन आदिका विवरण लिखा हो।

बर-आवुर्दन–संज्ञा पुं० (फा०) १ बाहर निकालना। २ ऊपर करना।

बर-आवुर्दा–वि० (फा० बर-आवुर्दः) १ बाहर निकाला या ऊपर लाया हुआ। २ जिसे आगे ले जायँ (हिसाब या रकम)।

बरक़ंदाज़–संज्ञा पुं० (अ० बर्क़+फा० अन्दाज) बड़ी लाठी या तोड़ेदार बन्दूक रखनेवाला सिपाही।

बरकत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० बरकात) १ किसी पदार्थकी बहुलता या आवश्यकतासे अधिकता। बहुतायत। २ लाभ। फ़ायदा। ३ समाप्ति। अंत। ४ एककी संख्या। ५ धन दौलत। ६ प्रसाद। कृपा।

बर-क़रार–वि० (फा०) १ भली भाँति स्थापित किया हुआ। दृढ़। २ वर्त्तमान। उपस्थित। बना हुआ।

बरख़ास्त–वि० (फा० बरख़्वास्त) (संज्ञा बरख़्वास्तगी) १ जो उठ या बन्द हो गया हो (कार्यालय, न्यायालय आदि)। २ जो नौकरीसे अलग कर दिया गया हो। संज्ञा स्त्री० १ उठना या बन्द होना। २ नौकरीसे अलग होना।

बर-ख़िला–वि० (फा०) उलटा। विपरीत। क्रि० वि० उलटे। विरुद्ध।

बर-ख़ुरदार–वि० (फा०) (संज्ञा बर-ख़ुरदारी) खाने-पीने आदि सब प्रकारसे सुखी। निश्चिन्त और सम्पन्न (आशीर्वाद)। संज्ञा पुं० लड़का। पुत्र। बेटा।

बर-गश्ता–वि० (फा० बर-गश्तः) संज्ञा बर गश्तगी) १ पीछेकी ओर मुड़ा या उलटा हुआ। फिरा हुआ। २ जो विरोधमें खड़ा हो। विद्रोही।

बर-गुज़ीदा–वि० (फा० बरगुज़ीदः) चुना हुआ।

बर-ज़ख़–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसीके मरने और क़यामतके बीचका समय। २ दो बातोंके बीचका समय या शृंखला आदि। ३ पीर आदिकी आत्मा जो किसीपर आवे। ४ आकृति। चेष्टा।

बर-जस्ता–वि० (फा० बर-जस्तः) बात पड़नेपर तुरन्त कहा हुआ। बिना पहलेसे सोचे कहा हुआ (उत्तर, व्याख्यान आदि।)।

बर-तरफ़–वि० (फा०) (संज्ञा बर-तरफ़ी) १ एक तरफ़ किया हुआ। अलग किया हुआ। नौकरी आदिसे अलग किया हुआ।

बरदा–संज्ञा पुं० (तु० बरदः) १ युद्धमें पकड़कर बनाया हुआ दास। २ दास। गुलाम।

बरदा-फ़रोश–वि० (फा०) (संज्ञा बरदा-फ़रोशी) जो दास बेचनेका

व्यापार करता हो। गुलामोंको खरीदने और बेचनेवाला।

बरदार–वि० (फ़ा०) (संज्ञा बरदारी) उठाकर ले चलनेवाला। जैसे-आसा बरदार, हुक्का-बरदार।

बरदाश्त–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ सहनेकी क्रिया या भाव। सहनशीलता। २ जाकड़ या उधार माल लेनेकी क्रिया।

बर-पा–वि० (फ़ा०) १ अपने पैरोंपर खड़ा हुआ। २ दृढ़। मुहा०–**बरपा करना** = खड़ा करना। जैसे–**हश्र बरपा करना**= भारी आफ़त खड़ी करना।

बरफ़–संज्ञा पुं० दे० "बर्फ़।"

बरफ़ी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा० बर्फ़) एक प्रकारकी मिठाई।

बरबाद–वि० (फ़ा०) नष्ट। चौपट।

बरबादी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) नाश।

बर-मला–क्रि० वि० (फ़ा०) खुले-आम। सबके सामने।

बर-महल–वि० (फ़ा०) जो ठीक स्थान या अवसरपर हो। क्रि० वि० ठीक मौकेपर। उपयुक्त अवसरपर।

बर-हक़–वि०) फ़ा०) १ जो हक़पर हो। २ ठीक। उचित। ३ वास्तविक।

बरहना–वि० (फ़ा० बरहनः) (संज्ञा बरहनगी) नंगा। नग्न। विवस्त्र। वस्त्र-हीन।

बरहम–वि० (फ़ा०) १ चकराया हुआ। चकित। २ गुस्सेमें आया हुआ। क्रुद्ध। नाराज़। तितर-बितर। छितराया हुआ। यौ०–दरहम-बरहम।

बराज़–संज्ञा पुं० (अ०) मल। पाखाना। गू। मैला।

बराबर–वि० (फ़ा० बर) १ मात्रा, गुण, मूल्य आदिके विचारसे समान। तुल्य। एकसा। २ जिसकी सतह ऊँची-नीची न हो। समतल। मुहा०–**बराबर करना** =समाप्त कर देना। क्रि० वि० लगातार निरन्तर।

बराबरी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा० बर) १ बराबर होनेकी क्रिया या भाव। समानता। तुल्यता। २ सादृश्य। ३ मुकाबला। सामना।

बरामद–वि० (फ़ा० बर+आमद) १ ऊपर या सामने आया हुआ। २ ढूँढ़कर बाहर निकाला हुआ। संज्ञा स्त्री० नदीके हट जानेसे निकली हुई ज़मीन। गंग-बरार।

बरामदा–संज्ञा पुं० (फ़ा० बरआम्दः) १ मकानोंके बाहर निकला हुआ छायादार अंश। बारजा। छज्जा। २ दालान।

बराय–अव्य० (फ़ा०) वास्ते। लिये। जैसे– **बराय ख़ुदा**=ख़ुदा या ईश्वरके वास्ते। **बराय नाम**= नाम-मात्रको। केवल नामके लिए।

बरार–संज्ञा पुं० (फ़ा० बर + आर) १ कर। महसूल। २ ऊपर या सामने लानेकी क्रिया। ३ पूरा करनेकी क्रिया। वि० १ लाने

वाला। २ लाया हुआ। जैसे, गंग-बरार

बरारी–संज्ञा स्त्री० (फा० बर + आर) पूरा होनेकी क्रिया।

बरिन्दा–संज्ञा पुं० (फा० बरिन्दः) १ वह जो ले जाता हो। वाहक। २ गुप्त रूपसे कोई वर्जित वस्तु लानेवाला।

बरीं–वि० (फा०) बहुत ऊपरका।

बरी–वि० (अ०) मुक्त। छूटा हुआ। जो अलग हो गया हो। जैसे—इलज़ामसे बरी।

बरीद–संज्ञा पुं० (अ०) पत्रवाहक। हरकारा।

बरीयत–संज्ञा स्त्री० (अ०) बरी होनेकी क्रिया या भाव। छुटकारा। परित्राण। रिहाई।

बर्क़–संज्ञा पुं० (अ०) विद्युत्। बिजली।

बर्ग–संज्ञा पुं० (फा०) १ वृक्ष आदिकी पत्ती। पत्ता। पत्र। २ सामग्री।

बर्फ़–संज्ञा पुं० (फा०) १ हवामें मिली हुई भापके अत्यन्त सूक्ष्म अणुओंकी तह जो वातावरणकी ठंढकके कारण ज़मीनपर गिरती है। २ बहुत अधिक ठंढकके कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पार-दर्शी होता है। ३ मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायोंसे जमाया हुआ दूध या फलोंका रस।

बर्फ़ानी–वि० (फा०) बर्फ़का। जिसमें या जिसपर बर्फ़ हो। जैसे—बर्फ़ानी पहाड़।

बर्र–संज्ञा पुं० (अ०) १ सूखी ज़मीन। स्थल। २ जंगल। वन।

बर्र-ए-आज़म–संज्ञा पुं० (अ०) महाद्वीप (भूगोल)।

बर्राक़–वि० (अ०) १ चमकता हुआ। चमकीला। २ हवाकी तरह तेज़। शीघ्रगामी। ३ बहुत अधिक स्वच्छ और सफेद।

बर्स–संज्ञा पुं० (अ०) कोढ़। कुष्ठ रोग।

बलन्द–वि० (फा०) १ ऊँचा। उच्च। २ श्रेष्ठ। बहुत अच्छा।

बलन्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ऊँचाई। उच्चता। २ अभिमान। गर्व। शेखी।

बलवा–संज्ञा पुं० (फा०) १ दंगा। विप्लव। हुल्लड़। २ विद्रोह। बगावत।

बलवाई–संज्ञा पुं० (फा० बलवा) १ दंगा या उपद्रव करनेवाले। २ विद्रोही।

बला–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० बलैयात) १ आपत्ति। विपत्ति। आफ़त। २ दुःख। कष्ट। ३ भूत-प्रेत या उसकी बाधा। ४ रोग। व्याधि। मुहा०–**बलाका**= घोर। अत्यन्त।

बलागत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ उचित अवसरपर उपयुक्त रूपसे बातें करना। अच्छी तरह बोलना। २ युवावस्था। जवानी।

बलीग़–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो उचित अवसरपर उपयुक्त भाषण करे। अच्छा वक्ता।

बलूग़–संज्ञा पुं० दे० "बुलूग़।"

बलूत–संज्ञा पुं० (अ० बल्लूत) एक प्रकारका वृक्ष जिसकी छालमें चमड़ा रंगा जाता है। सीता सुपारी।

बले–अव्य० (फा०) हाँ, ठीक है।

बलैयात–संज्ञा स्त्री० (अ०) "बला"-का बहु०।

बल्कि–अव्य० (फा०) १ अन्यथा। इसके विरुद्ध। प्रत्युत। २ और अच्छा है। बेहतर है।

बल्के–अव्य० दे० "बल्कि।"

बल्ग़म–संज्ञा स्त्री० (अ०) श्लेष्मा। कफ।

बल्ग़मी–वि० (अ०) १ बल्ग़म-सम्बन्धी। बल्ग़मका। २ जिसकी प्रकृतिमें बल्ग़मकी अधिकता हो।

बल्द–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० बिलादें) नगर। शहर।

बल्लूत–संज्ञा पुं० दे० "बलूत।"

बशर–संज्ञा पुं० (अ०) (भाव० बशरियत) मनुष्य।

बशरा–संज्ञा पुं० (अ० बशरः) १ रूप-रंग। आकृति। २ चेहरा। मुख।

ब-शर्ते कि–क्रिया वि० (फा०) शर्त यह है कि।

बशरियत–संज्ञा स्त्री० (फा०) मनुष्यता।

बशारत–संज्ञा पुं० (अ०) १ सु-समाचार। खुश-खबरी। २ ईश्वरीय प्रेरणा या आभास।

बशीर–वि० (अ०) १ खुश-खबरी लानेवाला। शुभ समाचार सुनानेवाला। २ सुन्दर। खूबसूरत।

बश्शाश–वि० (अ०) खुश। प्रसन्न।

बशाशत संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रसन्नता। खुशी।

बस–वि० (फा०) प्रयोजनके लिये पूरा। पर्याप्त। भरपूर। बहुत। काफी। अव्य० १ पर्याप्त। काफी। अलम्। २ सिर्फ। केवल। इतना मात्र।

बसर–संज्ञा पुं० (अ०) (भाव० बरसात) १ दृष्टि। नज़र। २ आँख। नेत्र। ३ ज्ञान। इल्म।

बसा=वि० (फा०) बहुत। अधिक। यौ०–**बसा औक़ात**=अक्सर। प्रायः।

बसारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ देखनेकी शक्ति। दृष्टि। २ अनुभव करने या समझनेकी शक्ति। समझ।

बसीत–वि० (अ०) १ फैलाया हुआ। २ सरल। सादा।

बसीरत–संज्ञा स्त्री० दे० "बसारत।"

बस्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) बँधने या संलग्न होनेकी क्रिया। जैसे—दिल-बस्तगी।

बस्ता–संज्ञा पुं० (फा० बस्तः) कागज-पत्र या पुस्तकें आदि बाँधनेका कपड़ा। वि० बँधा या बाँधा हुआ। जैसे–**दस्त-बस्ता**=हाथ बाँधे हुए।

बस्मा–संज्ञा पुं० दे० "वस्मा।"

बहबूद–संज्ञा पुं० दे० "बहबूदी।"

बहबूदी–संज्ञा स्त्री० (फा० बेहबूदी)

१ भलाई । उपकार । २ अच्छी बात । शुभ कार्य ।

बहम–क्रि० वि० (फा०) १ साथ । संग । २ एक दूसरेके साथ या प्रति । परम्परा । मुहा०–**बहम पहुँचाना**=लाकर देना । मुहैया करना ।

बहमन–संज्ञा पुं० (फा०) फारसी ग्यारहवाँ महीना जो फागुनके लगभग पड़ता है ।

बहर–क्रि० वि० (फा०) वास्ते । लिये । **बहरे खुदा**=खुदाके वास्ते । ईश्वरके लिये । संज्ञा पुं० (अ० बह्र) १ समुद्र । २ छन्द ।

बहर-कैफ़–क्रि० वि० (फा०+अ०) चाहे जिस तरह हो । किसी हालतमें ।

बहर-हाल–क्रि० वि० (फा०) हर हालतमें । जिस तरह हो । जो हो । जैसे–बहर हाल आप वहाँ जायँ तो सही ।

बहरा–संज्ञा पुं० (फा० बहरः) १ हिस्सा । भाग । २ भाग्य । नसीब । तक़दीर ।

बहरामन्द–वि०(फा०)१ भाग्यवान् । २ सम्पन्न । ३ प्रसन्न । मुहा०–**बहरामन्द होना**=लाभ उठाना ।

बहरा-वर–संज्ञा पुं० (फा०) जिसका भाग्य अच्छा हो । भाग्यवान् । नसीबवर ।

बहराम–संज्ञा पुं० (फा०) मरीख़ या मंगल ग्रह ।

बहरी–वि० पुं० (अ० बह्री) १ समुद्रसम्बन्धी । सागरका । २ नदीसंबंधी ।

बहला–संज्ञा पुं० (फा० बहल) १ रुपये पैसे रखनेका थैला । २ २ वह चमड़ेका दस्ताना जो शिकारी हाथमें पहनते हैं ।

बहलोल–संज्ञा पुं० (अ०) १ सर्वगुणसंपन्न राजा । २ मसख़रा ।

बहस–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वाद । दलील । तर्क । खंडन-मंडनकी युक्ति । २ विवाद । झगड़ा । हुज्जत । ३ होड़ । बाज़ी । बदा बदी ।

बहा–संज्ञा पुं० (फा०) मूल्य । दाम । कीमत । यौ०–**बे-बहा**=बहुमूल्य ।

बहादुर–संज्ञा पुं० (फा०) १ वीर । योद्धा । २ बलवान् । शक्तिशाली ।

बहादुरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) वीरता ।

बहाना–संज्ञा पुं० (फा० बहानः) १ किसी बातसे बचने या मतलब निकालनेके लिये झूठ बात कहना । मिस । हीला । २ उक्त उद्देश्यसे कही हुई झूठ बात । ३ कहने-सुननेके लिये एक कारण । निमित्त ।

बहार–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वसंत ऋतु । २ मौज । आनन्द । ३ यौवनका विकास । जवानीका रंग । ४ रमणीयता । सुहावनापन । रौनक़ । ५ विकास । प्रफुल्लता । ६ मज़ा । तमाशा ।

बहाल–वि० (फा०) १ ज्योंका त्यों बना हुआ । कायम । बर-करार ।

२ अच्छी या ठीक अवस्थामें। ३ भला चंगा। स्वस्थ। ४ प्रसन्न। खुश।

बहाली–संज्ञा स्त्री० (फा० बहाल) बहाल होनेकी क्रिया या भाव।

बहिश्त–संज्ञा पुं० (फा०) स्वर्ग। वैकुण्ठ।

बहिश्ती–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह जो बहिश्तमें रहते हों। स्वर्गका निवासी। २ मश्कमें रखकर पानी पहुँचाने या पिलानेवाला। सक़्क़ा। भिश्ती। माशक़ी। वि० बहिश्त-सम्बन्धी। स्वर्गका।

बहीर–संज्ञा पुं० (फा०) १ सैनिक छावनीमें रहनेवाले सामान्य लोग। २ छावनीका वह भाग जिसमें सैनिकोंकी स्त्रियाँ और बच्चे रहते हैं। (यह शब्द वस्तुतः हिन्दीका है, पर फारसी बना लिया गया है।)।

बह्र–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० बहार) १ समुद्र। सागर। २ छन्द।

बहे-रवाँ–संज्ञा पुं० (फा०) जहाज। बड़ी नाव।

बाँग–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शब्द। आवाज़। २ जोरसे पुकारनेकी क्रिया। पुकार। ३ मुर्गे आदिके बोलनेका शब्द। क्रि० प्र० देना।

बा–उप० (फा०) १ साथ। सहित। २ सामने। समक्ष।

बाइस–संज्ञा पुं० (अ०) १ कारण। सबब। वजह। २ मूल संचालक या कर्ता।

बाक–संज्ञा पुं० (फा०) भय। डर यौ०–बे-बाक=निडर। निर्भय।

बाक़र–संज्ञा पुं० (अ०) बहुत बड़ा विद्वान् या धनवान्।

बाक़र-खानी–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारकी बढ़िया रोटी।

बाक़ला–संज्ञा पुं० (अ० बाक़लः) एक प्रकारका बड़ा मटर।

बाक़िर–वि० (अ०) बहुत बड़ा पंडित। परम विद्वान्।

बाकिरा–संज्ञा स्त्री० (अ० बाकिरः) कुँआरी लड़की। कुमारी।

बाक़ियात–संज्ञा स्त्री० (अ०) "बाक़ी" का बहुवचन। बाकी पड़ी हुई रक़में।

बाक़ी–वि० (अ०) जो बचा हुआ हो। अवशिष्ट। शेष। संज्ञा स्त्री० १ गणितमें दो संख्याओंका अन्तर निकालनेकी रीति। २ वह संख्या जो घटानेपर निकले।

बाकी-दार–वि० (अ०+फा०) बाकी रखनेवाला। जिसके जिम्मे कुछ बाकी हो।

बा-खबर–वि० (फा०) १ खबर रखनेवाला। २ होशियार। सतर्क। ३ ज्ञाता। जानकार। जाननेवाला।

बाख्ता–वि० (फा० बाख़्तः) जो हार या गँवा चुका हो। जैसे–हवास-बाख़्ता।

बाग़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० बाग़ात) उद्यान। उपवन। वाटिका। मुहा०–बाग़ बाग़ होना=बहुत अधिक प्रसन्न होना।

सब्ज़ बाग़ दिखलाना=झूठ मूठ बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना।

बाग़बान-संज्ञा पुं (अ०+फ़ा०) बागकी रक्षा और व्यवस्था करनेवाला। माली।

बाग़बानी-संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) बाग़बान या मालीका काम।

बाग़ाती-संज्ञा स्त्री० (अ० "बाग़"से फ़ा०) वह भूमि जो बाग लगाने या खेती-बारी करनेके योग्य हो।

बाग़ी-वि० (अ० बाग़) बागसम्बन्धी। बाग या उपवनका। संज्ञा पुं० (अ०) १ बग़ावत या विद्रोह करनेवाला। विद्रोही। २ विरुद्ध आचरण करनेवाला। विरोधी।

बाग़ीचा-संज्ञा पुं० (फ़ा० बाग़चः) छोटा बाग़। उपवन।

बाज-संज्ञा पुं० (फ़ा०) कर। महसूल। जैसे-**बाजगुज़ार**=करद।

बाज़-वि० (अ० बअज़) कोई कोई। कुछ। थोड़े कुछ। विशिष्ट। संज्ञा पुं० (फ़ा०) एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। क्रि० वि० (फ़ा०) पीछे। उलटे। मुहा०-**बाज़ आना**=१ लौट आना। वापस आना। २ किसी कामसे हाथ खींचना। रुक जाना। ३ दूर रहना। अलग रहना। कुछ भी सम्बन्ध न रखना। ४ छोड़ना। त्यागना। **बाज़ रखना**=रोकना। न करने देना। प्रत्य० (फ़ा०) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्तमें लगकर कर्त्ता और शौकीन आदिका अर्थ देता है। जैसे—कबूतर-बाज़। पतंग बाज़।

बाज़-गश्त-वि० (फ़ा०) वापस आना। लौटना। मुहा०-**आवाज़ बाज़-गश्त**=प्रतिध्वनि। आवाज़का लौटकर वापस आना।

बाज-गीर-संज्ञा पुं० (फ़ा०) वह जो कर संग्रह करता हो।

बाज-गुज़ार-संज्ञा पुं० (फ़ा०) कर या महसूल देनेवाला। करद।

बाजदार-संज्ञा पुं० दे० "बाजगीर।"

बाज़-पुर्स-संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ किसी बातका पता लगानेके लिए पूछ-ताछ करना। जाँच-पड़ताल करना। २ कैफ़ियत लेना। कारण या हिसाब आदि पूछना।

बाज़-याफ़्त-वि० (फ़ा०) वापस आया हुआ। फिरसे मिला हुआ।

बाज़ार-संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ वह स्थान जहाँ अनेक प्रकारके पदार्थोंकी दूकानें हों। मुहा०-**बाज़ार करना**=चीज़ें खरीदनेके लिए बाज़ार जाना। **बाज़ार गर्म होना**=१ बाज़ारमें चीज़ों या ग्राहकों आदिकी अधिकता होना। २ खूब काम चलना। **बाज़ार तेज़ होना**=१ बाज़ारमें किसी चीज़की माँग अधिक होना। २ किसी चीज़का मूल्य वृद्धिपर होना। ३ काम ज़ोरोंपर होना। खूब काम चलना। **बाज़ार उतरना** या **मंदा होना**=१ बाज़ारमें किसी चीज़की माँग कम होना। २ दाम घटना। ३ कार-बार कम चलना।

बाज़ारी—वि० (फा०) १ बाज़ार-सम्बन्धी। बाज़ारका। २ मामूली। साधारण। ३ अशिष्ट।

बाज़ारू—वि० (फा० बाज़ार) १ बाज़ारसम्बन्धी। बाज़ारका। २ मामूली। साधारण। अशिष्ट।

बाज़िन्दगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ खेल। खेलवाड़। २ धूर्त्तता। चालाकी।

बाज़िन्दा—संज्ञा पुं० (फा० बाज़िन्द.) १ खेलाड़ी। खेलनेवाला। २ लोटन कबूतर।

बाज़ी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ऐसी शर्त्त जिसमें हार-जीतके अनुसार कुछ लेन-देन भी हो। शर्त्त। दाँव। बदान। मुहा०—**बाज़ी मारना**=बाज़ी जीतना। दाँव जीतना। **बाज़ी ले जाना**=किसी बातमें आगे बढ़ जाना। श्रेष्ठ ठहरना।। २ आदिसे अन्त तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें शर्त्त या दाँव लगा हो।

बाज़ीगर—संज्ञा पुं० (फा०)१ कसरतके खेल करनेवाला। नट। २ जादूगर।

बाज़ीगरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) कसरत या जादूके खेल।

बाज़ीगाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) खेलकी जगह या मैदान। अखाड़ा।

बाज़ीचा—संज्ञा पुं० (फा० बाज़ीचः) १ खिलौना। २ खेलवाड़।

बाज़ुर्गान—संज्ञा पुं० (फा०) (भाव० बाज़ुर्गानी) व्यापारी। रोज़गारी।

बाज़ू—संज्ञा पुं० (फा०) १ भुजा। बाहु। बाँह। २ बाज़ूबन्द नामका गहना। ३ सेनाका किसी ओरका एक पक्ष। ४ वह जो हर काममें बराबर साथ रहे और सहायता दे। ५ पक्षीका डैना। ६ पार्श्व। तरफ।

बाज़ू-शिकन—वि० (फा०) बाँहें तोड़नेकी शक्ति रखनेवाला। बलवान्। ताक़तवर। ज़बरदस्त।

बातिन—संज्ञा पुं० (अ०) १ भीतरी। भाग। अन्दरका हिस्सा। २ अन्तः-करण। मन।

बातिनी—वि० (अ०) १ भीतरी। अन्दरका। २ आन्तरिक। मनका।

बातिल—वि० (अ०) १ झूठा। २ मिथ्या। झूठ। ३ निरर्थक। व्यर्थ। ४ जिसमें कुछ शक्ति या प्रभाव न हो। ५ रद्द किया हुआ।

बाद—क्रि० वि० (अ० बअद) अनंतर। पीछे। वि० अलग किया या छोड़ा हुआ। २ अतिरिक्त। सिवाय। संज्ञा पुं० (फा०) हवा। वायु। पवन।

बाद-कश—संज्ञा पुं० (फा०) १ पंखा। २ हवा आनेका झरोखा। ३ भाथी। धौंकनी।

बाद-गिर्द—संज्ञा पुं० (फा०) बवंडर। बगूला।

बाद-फ़रोश—संज्ञा पुं० (फा०) १ झूठी प्रशंसा करनेवाला। खुशामदी। २ व्यर्थ बकनेवाला। बकवादी। बक्की।

बाद-फ़िरंग—संज्ञा स्त्री० (फा०)

आतशक या गरमी का रोग। उपदंश।

बादबान–संज्ञा पु० (फा०) जहाजका पाल।

बाद-रफ़्तार–वि० (फा०) हवाकी तरह तेज चलनेवाला।

बादशाह–संज्ञा पु० (फा०) १ बहुत बड़ा राजा या महाराज। सम्राट्।

बादशाह-ज़ादा–संज्ञा पु० (फा०) बादशाहका लड़का। महाराजकुमार।

बादशाहत–संज्ञा स्त्री० (फा०) बादशाहका राज्य।

बादशाही–वि० (फा०) बादशाहों या महाराजाओंका।

बाद-सरसर-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तेज हवा। आँधी। २ भारी आपत्ति। बड़ी आफ़त।

बादा–संज्ञा पुं० (फा० बादः) शराब। मद्य।

बादा-कश–संज्ञा पु० (फा०) शराबी।

बादा-परस्त–संज्ञा पुं० (फा०) (भाव० बादा-परस्ती) शराबी। मद्यप।

बादाम–संज्ञा पुं० (फा०) मझोले आकारका एक वृक्ष जिसके छोटे फल मेवोंमें गिने जाते हैं। इसके फलके साथ प्रायः नेत्रकी उपमा दी जाती है।

बादामा-संज्ञा पु० (फा० बादामः) एक प्रकारका रेशमी कपड़ा।

बादामी–वि० (फा०) १ बादाम सम्बन्धी। बादामका। २ बादाम के आकारका। जैसे–बादामी आँख। बादामके रंगका।

बादिया–संज्ञा पु० (फा०) एक प्रकारका ताँबेका कटोरा। संज्ञा पु० (अ०) जंगल। बन।

बादी–वि० (फा०) बाद या हवा-सम्बन्धी। हवाई।

बादी-उन्नज़र–क्रि० वि० (अ०) पहले पहल देखनेमें। यों ही देखनेमें।

बादे-सबा–संज्ञा स्त्री० (फा०) पूर्वसे आनेवाली हवा। पुरवा हवा।

बान–प्रत्य० (फा०) १ रखवाली करनेवाला। रक्षक। जैसे-दरबान। २ रखने और दिखलानेवाला। ३ हाँकने या चलानेवाला। जैसे– **फ़ील-बान**–=महावत।

बा-नवा–वि० (फा०) १ अच्छी आवाजवाला। आवाजदार। २ सम्पन्न। धनवान्। ३ समर्थ। शक्तिशाली।

बानी–संज्ञा पु० (अ०) बनानेवाला। तैय्यार करनेवाला। २ मूल साधन या उद्गम। ३ अधिकार करनेवाला। ४ नेता। प्रधान।

बानीकार–वि० (फा०) बहुत तेज और चालाक। परम धूर्त्त।

बानू–संज्ञा स्त्री० दे० "बानो।"

बानो–संज्ञा स्त्री० (फा० बानू) भले घरकी स्त्री। भद्र महिला।

बाफ़–वि० (फा०) १ बुननेवाला। २ बुना हुआ।

बाफ़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) बुननेका काम। बुनाई।

बाफ़्ता–वि० (फा० बाफ़्तः) बुना हुआ। संज्ञा पुं० एक प्रकारका रेशमी कपड़ा।

बाब–संज्ञा पुं० (अ०) १ दरवाजा। द्वार। २ अध्याय। परिच्छेद। प्रकरण।

बाबत–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सम्बन्ध। २ विषय। अव्य० विषयमें; बारेमें।

बाबा–संज्ञा पुं० (फा०) वृद्ध और पूज्य व्यक्तिके लिये संबोधन।

बाबुल–संज्ञा पुं० (फा०) बेबिलोन नगरका नाम।

बाबूना–संज्ञा पुं० (फा० बाबूनः) एक पौधा जिसके फूलोंका तेल बनता है।

बाम–संज्ञा पु० (फा०) घरकी छत। अटारी।

बा-मुहावरा–वि० (अ०) मुहावरे-वाला। जो मुहावरेकी दृष्टिसे ठीक हो। मुहावरेदार।

बाया–वि० (अ० बायः) बय करने-वाला। बेचनेवाला। विक्रेता।

बायद–क्रि० वि० (फा०) जैसा चाहिये। जैसा होना आवश्यक हो।

बायद व शायद–वि० (फा०) जैसा होना चाहिये वैसा। आदर्श। बहुत अच्छा।

बाया–वि० (फा० बायऽ) बेचने-वाला। विक्रेता।

बार–संज्ञा पु० (फा०) १ भार। बोझ। २ फल। ३ परिणाम। नतीजा। ४ द्वार। दरवाजा। जैसे-**बारे खास**=राजाओंका खास दरबार। **बारे आम**=आम या सार्वजनिक दरबार।

बार-आम–संज्ञा पुं० (फा०) राजा-की वह कचहरी जिसमें सब लोग जा सकें। सार्वजनिक राज-सभा।

बार-कश–संज्ञा पु० (फा०) बोझ ढोनेकी गाड़ी।

बार-खास–संज्ञा पुं० (फा०) राजा-का वह दरबार जिसमें सिर्फ़ खास आदमी रहते हैं।

बार-गह–संज्ञा स्त्री० दे० "बारगाह"

बार-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह स्थान जहाँ लोग राजाकी सेवामें उपस्थित होते हों। दरबार।

बार-गीर–संज्ञा पुं० (फा०) १ बोझ ढोनेवाला पुरुष। २ वह सैनिक जो स्वामीके घोड़ेपर रहता हो और निजी घोड़ा न रखता हो।

बारचा–संज्ञा पुं० दे० "बारजा।"

बारजा–संज्ञा पुं० (फा० बारचः) १ मकानके सामनेका बरामदा। २ कोठा। अटारी।

बार-दाना–संज्ञा पुं० (फा० बार-दानः) १ सेना आदिकी रसद। २ वे पात्र या सन्दूक आदि जिनमें कोई चीज भरकर कहीं भेजी जाय।

बार-बरदार–संज्ञा पुं०(फा०)वह जो बोझ ढोता हो। माल ढोनेवाला।

बार-बरदारी–संज्ञा स्त्री० (फा०)

बोझ ढोनेकी क्रिया। २ बोझ ढोनेकी मजदूरी।

बार-याब–वि० (फा०) जिसे किसी राजा या बड़े आदमीके सामने उपस्थित होनेका सौभाग्य प्राप्त हो। बड़ेके समक्ष उपस्थित होनेवाला।

बार-याबी–संज्ञा स्त्री० (फा०) राजा या बड़ेके समक्ष उपस्थित होनेकी क्रिया। हाज़िर होना।

बार-वर–वि० (फा०) जिसमें फल लगते हों।

बारह-दरी–संज्ञा स्त्री० (हिं० बारह+फा० दर) वह कमरा या बैठक जिसके चारों तरफ़ बहुतसे दरवाजे हों।

बारह-वफ़ात–संज्ञा स्त्री० (फा०) मुहम्मद साहबके जीवनके वे अन्तिम बारह दिन जिनमें वे बहुत बीमार थे।

बारहा–क्रि० वि० (फा०) कई बार। अक्सर। प्रायः। बहुत दफ़ा। बार बार।

बाराँ–संज्ञा पुं० (फा०) बरसनेवाला पानी। वर्षा। मेंह।

बारानी–वि० (फा०) (खेत आदि) जो वर्षाके जलपर निर्भर हो। संज्ञा पुं० वह वस्त्र जिसपर वर्षाका प्रभाव न हो। बरसाती।

बारिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) वर्षा।

बारी–संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर। परमात्मा। यौ०–**बारी-ताला**=ईश्वर।

बारीक–वि० (फा०) १ महीन। पतला। २ सूक्ष्म। जो जल्दी समझमें न आवे। दुरूह।

बारीक-बीं–वि० (फा०) बारीकी समझने या देखनेवाला। सूक्ष्मदर्शी।

बारीक-बीनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी बातकी बारीकी या गुण देखना। सूक्ष्मदर्शिता।

बारीकी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बारीकका भाव। २ पतलापन। ३ सूक्ष्मता। ४ कठिनता। दुरूहता।

बारी त-आला–संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर जो सबसे बड़ा है।

बारे–क्रि० वि० (फा०) १ एक बार। २ अन्तमें।

बारेमें–अव्य० (फा० बारः) विषयमें। सम्बन्धमें।

बारूत–संज्ञा स्त्री० दे "बारूद।"

बारूद–संज्ञा स्त्री० (तु० बारूत) एक प्रकारका चूर्ण या बुकनी जिसमें आग लगनेसे तोप-बंदूक चलती है। दारू। मुहा०–**गोली-बारूद**=लड़ाईकी सामग्री।

बाल–संज्ञा पुं० (फा०) डैना। पंख।

बालगीर–संज्ञा पुं० (फा०) साईस।

बाला–अव्य० (फा०) ऊपर। पर। वि० ऊँचा। ऊपरका।

बालाई–वि० (फा०) ऊपरी। ऊपरका। जैसे–बालाई आमदनी। संज्ञा स्त्री० दूधपरकी साढ़ी। मलाई।

बाला-खाना–संज्ञा पुं० (फा०) मकानका ऊपरी कमरा।

बाला-दस्त–संज्ञा पुं०(फा०)(भाव० बालादस्ती) १ प्रधान। उच्च। २ बलवान्। जबरदस्त।

बाला-नशीन–संज्ञापुं०(फा०)१बैठनेका सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ स्थान। २ वह जो सबसे ऊपर या श्रेष्ठ स्थानपर बैठे।

बाला-पाश–संज्ञा पुं० (फा०) वह कपड़ा जो किसी चीजको ढाँकनेके लिये उसके ऊपर डाला जाय।

बालाबर–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका अँगरखा।

बाला-बाला–क्रि० वि० (फा०) ऊपर ही ऊपर। अलगसे। बाहरसे। जैसे–तुमने बाला बाला सौ रुपये मार लिये।

बालिग़–वि० (अ०) जो बाल्यावस्थाको पार कर चुका हो। वयस्क।

बालिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) सिरके नीचे रखनेका तकिया।

बालिश्त–संज्ञा पुं० (फा०) प्रायः १२ अंगुलकी एक नाप जो हाथके पंजेको पूरी तरह फैलानेपर अँगूठेके सिरेसे छोटी ऊँगलीके सिरेतक होती है। बित्ता। बीता। बित्ता।

बाली-दगी–संज्ञा स्त्री०(फा०)बाढ़। विकास। बढ़नेकी क्रिया। (वनस्पति आदिके सम्बन्धमें)

बालीन–संज्ञा पुं० (फा०) सिरहाना। तकिया।

बालू-शाही–संज्ञा स्त्री० (हिं० बालू+ शाही=अनुरूप) एक प्रकारकी मिठाई। बड़ी टिकिया।

बा-वजूद–क्रि० वि० (फा०) इतना होनेपर भी। तिसपर भी।

बावर–संज्ञा पुं० (फा०) विश्वास। यकीन।

बावर्ची–संज्ञा पुं० (तु०) भोजन बनानेवाला रसोइया।

बावर्ची-खाना–संज्ञा पुं० (तु० + फा०) भोजन बनानेका स्थान। पाकशाला। रसोई-घर।

बावर्ची-गरी–संज्ञा स्त्री० (तु० + फा०) बावर्चीका काम या पद। रसोईदारी।

बा-वस्फ़–क्रि० वि० (फा०) इतना होनेपर भी। वि० गुणवान्। गुणी।

बाश–वि० (फा०) १ होना। २ रहना। ठहरना। अव्य० (फा०) रह। इसी अवस्थामें बना रह। (विधि या आशीष। जैसे- खुश बाश=खुश रह।)

बाशा–संज्ञा पुं० (फा० बाशः) एक प्रकारका शिकारी पक्षी।

बाशिन्दा–वि० (फा० बाशिन्दः) रहनेवाला। निवासी। वासी।

बासिरा–संज्ञा पुं० (अ० बासिरः) देखनेकी शक्ति। दृष्टि। नजर। आँख।

बाह–संज्ञा स्त्री० (अ०) संभोगकी इच्छा या शक्ति।

बाहम–क्रि० वि० (फा०)१ आपसमें। परस्पर। २ साथ। सहित।

बाहम-दिगर–क्रि० वि० (फा०) १

एक दूसरेके साथ । परस्पर । २ मिलकर ।
बिचारा–वि० दे० "बेचारा ।"
बिज़न–संज्ञा पुं० (फा०) बहुतसे लोगोंकी एक साथ हत्या । क़त्ले-आम ।
बिज़ाअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) मूल-धन । पूँजी ।
बिज़ातिही–क्रि० वि० (अ०) स्वयं । खुद ।
बिद्अत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (कर्त्ता० बिदअती) १ इस्लाम-धर्ममें कोई ऐसी नई बात निकालना जो मुहम्मद साहबके समयमें न रही हो । ऐसा आचरण धर्म-विरुद्ध समझा जाता है । २ अनीति । अन्याय । ३ लड़ाई । झगड़ा ।
बिदून–अव्य० (फा०) बग़ैर । बिना ।
बिद्दत–संज्ञा स्त्री० दे० "बिदअत ।"
बिन–संज्ञा पुं० (अ०) लड़का । बेटा । पुत्र । जैसे–**ज़ैद बिन बक्र**=ज़ैद, लड़का बक्रका ।
बिना–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मकान-की नींव । २ जड़ । मूल आधार । ३ उद्गम । ४ आरम्भ । शुरू । मुहा०–**बिनाए-दावा**=दावा या नालिश करनेका कारण ।
बिना-बर–क्रि० वि० (फा०) इस कारणसे । इस वजहसे । इसलिये । अतः ।
बिना–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० बिनात) लड़की । कन्या ।
बियाबान–संज्ञा पुं० दे० "बयाबान ।"

बिरंज–संज्ञा पुं० (फा० बिरिंज) १ चावल । २ पीतल ।
बिरंजी–वि० (फा० बिरिंजी पीतलका ।
बिरयाँ–वि० (फा०) भुना हुआ ।
बिरयानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका नमकीन पुलाव (भोजन)
बिरादर–संज्ञा पुं० (फा०) १ भाई २ रिश्तेदार । ३ बिरादरीक आदमी ।
बिरादर-ज़ादा–संज्ञा पुं० (फा० भाईका लड़का । भतीजा ।
बिरादराना–वि० (फा०) १ भाइयों का-सा । २ बिरादरी या भाई चारेका ।
बिरादरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भाईचारा । २ एक ही जातिवे लोगोंका समूह ।
बिरियानी–संज्ञा स्त्री० दे० "बिरयानी ।"
बिरेज़–अव्य० (फा०) रक्षा करो रक्षा करो । त्राहि त्राहि ।
बिल्–उप० (अ०) एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले लगकर साथ सहित, युक्त आदिका अर्थ देत है । जैसे–**बिल् जब्र**=जबरदस्ती **बिल् उमूम**=आम तौरपर । साधारणतः । **बिलकुल**=सब । पूरा
बिल्-अक्स–क्रि० वि० (अ०) इसके विपरीत । इसके विरुद्ध ।
बिल्-उमूम–क्रि० वि० (अ०) आम तौरपर । साधारणतः ।

बिल्-कुल--क्रि॰ वि॰ (अ॰) १ कुल। पूरा। सब। २ नितान्त।
बिल्-जब्र--क्रि॰ वि॰ (अ॰) जब्रके साथ। जबरदस्ती। बलपूर्वक। जैसे--ज़िना बिल्-जब्र।
बिल्-ज़रूर--क्रि॰ वि॰ (अ॰) ज़रूर। अवश्य। निश्चयपूर्वक।
बिल्-जुमला--क्रि॰ वि॰ (अ॰ बिल्-जुमलः) कुल मिलाकर। सब मिलाकर।
बिल्-फ़र्ज़--क्रि॰ वि॰ (अ॰) १ यह फ़र्ज़ करते हुये। २ यह मानकर।
बिल्-फेल--क्रि॰ वि॰(अ॰)इस समय इस कालमें। इस अवसरपर।
बिल्-मुक़ाबिल--क्रि॰ वि॰ (अ॰) मुकाबलेमें। तुलनामें। सामने।
बिल्-मुक़्ता--वि॰ (अ॰) पूर्व निश्चय-के अनुसार होनेवाला। निश्चित।
बिला--अव्य॰ (अ॰) बग़ैर। बिना। जैसे--**बिला-वजह**=बिना किसी कारणके। बिला-शक। निस्संदेह।
बिलाद--संज्ञा पुं॰ (अ॰) "बलद" (नगर) का बहुवचन। बस्तियाँ।
बिल्लूर--संज्ञा पुं॰ दे॰ "बिल्लौर।"
बिल्लौर--संज्ञा पुं॰ (फ़ा॰ बिल्लूर १ एक प्रकारका स्वच्छ, सफ़ेद, पारदर्शक पत्थर। स्फटिक। २ बहुत स्वच्छ शीशा।
बिलौरी--वि॰ (फ़ा॰ बिल्लूरी) बिल्लौरका।
बिसात--संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ बिछा-नेकी चीज़। जैसे--बिछौना, चटाई आदि। २ वह काग़ज़ या कपड़ा। जिसपर शतरंज या चौपड़ खेलनेके लिये खाने बने होते हैं। ३ हैसियत। समर्थ। बित्त। ४ सामर्थ्य। शक्ति। ५ पूँजी। पासका धन।
बिसाती--संज्ञा पुं॰ (अ॰ बिसात) सूई, तागा, चूड़ी, खिलौने इत्यादि वस्तुएँ बेचनेवाला।
बिसियार--वि॰ (फ़ा॰) बहुत। अधिक। ढेर।
बिस्तर--संज्ञा पुं॰ (फ़ा॰) बिछानेकी चीज़। बिछौना।
बिस्मिल--वि॰ (अ॰) कुर्बानी किया हुआ। घायल। ज़ख्मी (प्रायः प्रेमीके लिए प्रयुक्त होता है)। जैसे **नीम-बिस्मिल**= आधा घायल। ज़ख़्मी।
बिस्मिल्लाह--(अ॰) "बिस्मिल्लाह हिर्रहमानानिर्रहीम।" (उस दयालु ईश्वरके नामसे) पदका पूर्वार्ध और संक्षिप्त पद जिसका अर्थ है--"ईश्वरके नामसे।" इसका प्रयोग प्रायः कोई कार्य आरम्भ करनेके समय होता है।
बिहिश्त--संज्ञा पुं॰ दे॰ "बहिश्त।"
बिही--संज्ञा पुं॰ (फ़ा॰) एक पेड़ जिसके फल अमरूदसे मिलते-जुलते होते हैं।
बिहीदाना--संज्ञा॰ पुं (फ़ा॰) बिही नामक फलका बीज जो दवाके काममें आता है।
बिक्र--संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) लड़कियों-

का कुँआ पन । मुहा०—दिक तोड़ना=कुमारी कन्याका कौमार्य भंग करना । कुमारीसे पहले पहल संभोग करना ।

बीं—वि० (फा०) देखनेवाला । दर्शक । (यौगिकमें) जैसे—बारीक-बीं=सूक्ष्म दर्शी ।

बी—संज्ञा स्त्री० (फा० बीबी) स्त्री । महिला । इसका प्रयोग प्रायः किसी नामके साथ होता है । जैसे—बी सलीमा ।

बीन—वि० (फा०) १ जो देखता हो । जैसे—खुर्द-बीन । २ जिससे देखनेमें सहायता ली जाय । जैसे—दूर बीन ।

बीनश—संज्ञा स्त्री० (फा०) देखनेकी शक्ति । दृष्टि ।

बीना—वि० (फा०) जिसे दिखाई देता हो । सुझाखा ।

बीनाई—संज्ञा स्त्री० (फा०) देखनेकी शक्ति । दृष्टि ।

बीनी—संज्ञा स्त्री० (फा०) नाक । नासिका ।

बीबी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भले घरकी स्त्री० । कुल-वधू । २ पत्नी । जोरू । ३ भले घरकी स्त्रियोंके लिये आदरसूचक शब्द ।

बीम—संज्ञा पुं० (फा०) डर । भय ।

बीमा—संज्ञा पुं० (फा० बीमः) किसी प्रकारकी हानिकी ज़िम्मेदारी जो कुछ धन लेकर उसके बदलेमें उठाई जाती है ।

बीमार—वि० (फा०) रोगी । रोग-ग्रस्त ।

बीमारदार-वि० (फा०) रोगीकी सेवा-शुश्रूषा करनेवाला ।

बीमारदारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) रोगीकी सेवा-शुश्रूषा ।

बीमार-पुरसी-संज्ञा स्त्री० (फा०) किसी बीमार या रोगीके पास जाकर उसके स्वास्थ्यका हाल पूछना ।

बीमारी--संज्ञा स्त्री० (फा०) रोग । व्याधि । मर्ज़ ।

बीवी—संज्ञा स्त्री० दे० "बीबी ।"

बुआ-संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ ।"

बुक़चा—संज्ञा पुं० (तु० बुक़चः) कपड़ों आदिकी छोटी गठरी । बड़ी पोटली ।

बुख़ार—संज्ञा पुं० (अ०) १ बाष्प । भाप । २ ज्वर । ताप । शोक, क्रोध या दुःख आदिका आवेग ।

बुख़ारात—संज्ञा पुं०(फा०)"बुख़ार ।" का बहुवचन । भाप ।

बुख़्ल—संज्ञा स्त्री० (अ०) कंजूसी । कृपणता । २ हृदयकी संकीर्णता ।

बुग़दा—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका बड़ा छुरा ।

बुग़ारह—संज्ञा पुं० (फा०) किसी चीजके बीचका बहुत बड़ा छेद ।

बुग़्ज़—संज्ञा पुं० (अ०) मनमें रखा जानेवाला द्वेष । भीतरी दुश्मनी ।

बुग़्दा—संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका बड़ा छुरा ।

बुज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) बकरी। अजा। छागल।

बुज़-दिल–वि० (फा०) जिसका दिल बकरीकी तरह हो। कच्चे दिलका। डरपोक। कायर।

बुज़-दिली–संज्ञा स्त्री० (फा०) डरपोकपन। कायरता।

बुज़ुर्ग–संज्ञा पुं० (फा०) (संज्ञा बुज़ुर्गी) १ वृद्ध और पूज्य। माननीय। २ वृद्ध। बुड्ढा। ३ पूर्वज। पुरखा।

बुज़ुर्गवार–वि० (फा०) (संज्ञा बुज़ुर्गवारी) १ पूज्य और वृद्ध। माननीय। २ पूर्वज। पुरखा।

बुज़ुर्गी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बुज़ुर्गका भाव। २ वृद्धावस्था। वार्द्धक्य। ३ बड़प्पन। बड़ाई। श्रेष्ठता।

बुत–संज्ञा पुं० (फा० मिला सं० बुद्ध या पुतला) १ मूर्ति। मूरत। २ प्रेमिका। प्रेयसी। ३ वह जो कुछ न बोलता हो। चुप्पा। ४ मूर्तिकी तरह निश्चल। ५ मूर्ख। बेवकूफ़।

बुत-कदा–संज्ञा पुं० (फा० बुतकदः) १ बुतखाना। मन्दिर। २ प्रेमिकाके रहनेका स्थान।

बुत-ख़ाना–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह स्थान जहाँ पूजाके लिये मूर्तियाँ रखी हों। २ प्रेमिकाके रहनेका स्थान।

बुत-परस्त–वि० (फा०) मूर्तिकी पूजा करनेवाला। मूर्ति-पूजक।

बुत-परस्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०) मूर्ति-पूजा।

बुत-शिकन–वि० (फा०) (संज्ञा बुत-शिकनी) मूर्तियोंको तोड़नेवाला। मूर्तियाँ खंडित करनेवाला।

बुतान–संज्ञा पुं० (फा०) "बुत" का बहु०।

बुन–संज्ञा पुं० (अ०) १ कहवेका बीज। कहवा। २ जड़। मूल। ३ नींव।

बुनियाद–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ जड़। मूल। नींव। २ असलियत।

बुरक़ा–संज्ञा पुं० दे० "बुर्क़ा।"

बुरहान–संज्ञा पुं० (अ०) १ तर्क। दलील। २ प्रमाण। सबूत।

बुराक़–संज्ञा पुं० (अ०) एक कल्पित घोड़ा या खच्चर। कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद साहब इसीपर सवार होकर जरूसलमसे स्वर्ग गये थे और वहाँ ईश्वरसे मिलकर मक्के लौट आये थे।

बुरादा–संज्ञा पुं० (फा० बुरादः) चूर्ण। चूरा।

बुरीदा–वि० (फा० बुरीदः) काटा या तराशा हुआ।

बुरूज–संज्ञा पुं० (अ०) "बुर्ज" का बहु०।

बुरूदत–संज्ञा स्त्री० (अ० बुर्द=ठंढा) ठंढक। शीतलता।

बुर्क़ा–संज्ञा पुं० (अ० बुर्क़ः) एक प्रकारका आच्छादन या पहनावा जिससे मुसलमान स्त्रियाँ अपना बदन सिरसे पैरतक ढक लेती हैं।

बुर्क़ा-पोश–वि० (अ०+फा०) जो बुर्का ओढ़े हो।

बुर्ज—संज्ञा पुं० (अ०) (स्त्री० अल्पा० बुर्जी) (बहु० बुरूज) १ किले आदिकी दीवारोंमें उठा हुआ गोल भाग जिसके बीचमें बैठने आदिके लिये स्थान होता है। गरगज । २ मीनारका ऊपरी भाग अथवा उसके आकारका इमारतका कोई अंग । ३ गुंबद । ४ ज्योतिषमें घर । राशि ।

बुर्द—संज्ञा पुं० (फा०) १ मुफ्तमें मिलनेवाली रकम । लाभ । मुहा०—**बुर्द मारना**=मुफ्तकी रकम पाना। २ रिश्वत या नज़रमें मिली हुई चीज़ । ३ बाज़ी । शर्त । मुहा०—**बुर्द देना**=गँवाना । नष्ट करना । ४ शतरंजके खेलमें वह अवस्था जब कि एक पक्षमें केवल बादशाह बच रहे और बाजी मात न हो ।

बुर्दबार—वि० (फा०) (संज्ञा बुर्दबारी) सहनेवाला । सहनशील । सुशील ।

बुर्रा—वि० (अ०) बहुत तेज धारवाला । धारदार । (हथियार) ।

बुर्राक़—वि० दे० "बर्राक़ ।"

बुलन्द—वि० दे० "बलन्द ।"

बुलन्दी—संज्ञा स्त्री० दे० "बलन्दी ।"

बुलबुल—संज्ञा स्त्री० पुं० (अ०) एक गानेवाली प्रसिद्ध काली छोटी चिड़िया ।

बुलहवस—वि० (अ०) जिसको हवस या लोभ हो । लोभी ।

बुलाक़—संज्ञा स्त्री० (तु०) वह लम्बोतरा या सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथमें पहनती हैं ।

बुलूग़—संज्ञा पुं० (अ०) युवावस्थाको प्राप्त होना । बालिग़ होना । जवान होना ।

बुलूग़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) बालिग़ होनेकी अवस्था । युवावस्था ।

बुस्तान—संज्ञा पुं० (फा०) बाग । बगीचा । उपवन ।

बुहतान—संज्ञा पुं० दे० "बोहतान ।"

बू—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बास । गंध । महक । २ दुर्गन्ध । बदबू ।

बूआ—संज्ञा स्त्री० (देश०) १ पिताकी बहन । फूफी । २ बड़ी बहन ।

बूक़लमूँ—संज्ञा पुं० (अ०) गिरगिट ।

बूग़-दान—संज्ञा पुं० (फा०) मदारियोंका थैला ।

बग़-बन्द—संज्ञा पुं० (फा०) सामग्री रखनेकी थैली या कपड़ा ।

बूज़ना—संज्ञा पुं० (फा० बज़नः) बन्दर ।

बूज़ा—संज्ञा पुं० (फा० बूज़ः) एक प्रकारकी शराब ।

बूज़ी-खाना—संज्ञा पुं० (फा० बूज़ा + खाना) शराब-खाना । मधु-शाला ।

बूतात—संज्ञा पुं० (अ०) घर-खर्चका हिसाब ।

बूदो-बाश—संज्ञा स्त्री० (फा०) रहना-सहना । निवास ।

बूबक—संज्ञा पुं (तु०) पुराना । बेवकूफ़ ।

बूम—संज्ञा पुं० (अ०) उलूक पक्षी। उल्लू। संज्ञा पुं० (फा०) भूमि।

बूरानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका बैगनका पकवान।

बे—प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके पहले लगकर प्रायः निषेध या अभाव आदि सूचित करता है। जैसे—बे-असर, बे-ईमान, बे-खुद।

बे-अदब—वि० (फा० बे + अ० अदब) (संज्ञा बे-अदबी) जो बड़ोंका आदर-सम्मान न करे। अशिष्ट।

बे-असर—वि० (फा०) जिसका कोई असर न हो। प्रभावरहित।

बे-असल—वि० (फा० बे + अ० असल) १ जिसका कोई आधार या असल न हो। निराधार। २ मिथ्या। झूठ।

बे-आबरू—वि० (फा०) (संज्ञा बे-आबरूई) अप्रतिष्ठित। बेइज्जत।

बे-इख़्तियार—वि० (फा०) (भाव० बे-इख़्तियारी) १ जिसका अपने ऊपर कोई वश न हो। २ जिसके हाथमें कोई अधिकार न हो। क्रि० वि० आपसे आप। स्वतः और सहसा।

बे-इज़्ज़त—वि० (फा० बे + अ० इज्जत) (संज्ञा बे-इज्जती) १ जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। २ अपमानित।

बे-इज़्ज़ती—संज्ञा स्त्री० (फा० बे + अ० इज्जत) अप्रतिष्ठा। अपमान।

बे-इन्तज़ामी—संज्ञा स्त्री० (फा०) इन्तजाम या व्यवस्थाका अभाव।

बे-इन्तहा—वि० (फा०+अ०) जिसकी इन्तहा या हद न हो। बेहद। असीम।

बे-इन्साफ़—वि० (फा०+अ०) (संज्ञा बे-इंसाफ़ी) जो इन्साफ या न्याय न करे। अन्यायी।

बे-इल्म—वि० दे० "ला-इल्म।"

बे-इल्मी—संज्ञा स्त्री० दे० "ला-इल्मी।"

बे-ईमान—वि० (फा०+अ०) (संज्ञा बे-ईमानी) १ जिसे धर्मका विचार न हो। अधर्मी। २ जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकारका अनाचार करता हो।

बे-एतबार—वि० (फा० बे + अ०) (संज्ञा बे-एतबारी) १ जिसका कोई एतबार या विश्वास न करे। २ जिसपर एतबार या विश्वास न किया जा सके। अविश्वसनीय। ३ जो किसीका विश्वास न करे।

बे क़दर—वि० (फा० बे +अ० क़द्र) १ जो किसीकी क़दर या आदर करना न जाने। २ जिसकी कुछ भी क़द्र न हो। तुच्छ।

बे-क़द्री—संज्ञा स्त्री० (फा० बे + अ० क़द्र) १ क़द्र या आदरका न होना। २ अप्रतिष्ठा। अपमान।

बे-कमो कास्त—वि०(फा०)बिना कुछ भी घटाये-बढ़ाये। ज्योंका त्यों।

बे-क़रार—वि० (फा०) (संज्ञा बे-क़रारी) जिसे शान्ति या चैन न हो। व्याकुल। विकल।

बेकल–वि० (फा० बे+हिं० कल) (संज्ञा बे-कली) विकल । बे-चैन ।

बे-क़ायदा–वि० (फा०+अ०) कायदे या नियमके विरुद्ध ।

बेकार–वि० (फा०) १ जिसके पास कोई काम न हो । निकम्मा । निठल्ला । २ जिसका कोई उपयोग न हो सके । निरर्थक । व्यर्थ । ३ जिसका कोई फल न हो । निष्फल । क्रि० वि० बिना किसी उपयोग या फल आदिके । व्यर्थ ।

बेकारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बेकार होनेकी अवस्था या भाव । निकम्मापन । २ अनुपयोगिता । व्यर्थता । ३ काम धन्धेका न होना । बे-रोज़गारी ।

बेख़–संज्ञा स्त्री० (फा०) जड़ । मूल । उद्गम ।

बे-ख़बर–वि० (हिं० बे०+फा० ख़बर) (संज्ञा बे-ख़बरी) १ अनजान । नावाक़िफ़ । २ बेहोश । बे सुध ।

बे-ख़ुद–वि० (फा०) (संज्ञा बे-ख़ुदी) १ जो अपने आपेमें न हो । जिसका होश-हवास ठिकाने न हो । २ बेहोश । ज्ञान-शून्य ।

बेग–संज्ञा पुं० (तु०) (स्त्री० बेगम) १ सम्पन्न । अमीर । २ मुग़ल-कालकी एक उपाधि ।

बेगम–संज्ञा स्त्री० (तु०) १ रानी । २ उच्च कुलकी महिला ।

बेगानगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) बेगाना या पराया होनेका भाव । परायापन ।

बेगाना–वि० (फा० बेगानः) १ जो अपना न हो । पराया । ग़ैर । दूसरा । २ अजनबी । अपरिचित ।

बेगार–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वह प्रथा जिसमें गरीबों आदिसे जबर-दस्ती और बिना मजदूरी दिये काम लिया जाता है । २ वह काम जो बिना मनके या विवश होकर किया जाय ।

बेगारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह जिससे मुफ़्तमें और जबरदस्ती काम लिया जाय ।

बे-ग़ैरत–वि० (फा०+अ०) (भाव० बे-ग़ैरती) निर्लज्ज । बे-हया ।

बेचारा–वि० (फा०) (बेचारः) (स्त्री० बेचारी) (भाव० बेचा-रगी) दीन और निस्सहाय । ग़रीब । दीन ।

बेचूँ–वि० (फा०) जिसकी कोई उपमा न हो । जिसकी बराबरी कोई न कर सके । (प्रायः ईश्वरके संबन्धमें प्रयुक्त होता है ।)

बेचैन–वि० (फा०) (संज्ञा बेचैनी) जिसे चैन न पड़ता हो । व्याकुल ।

बे-चोबा–संज्ञा पुं० (फा० बे-चोबः) एक प्रकार का खेमा जिसमें चोब या खम्भा नहीं लगता ।

बेजा–वि० (फा०) १ बे-ठिकाने । बे-मौक़े । २ अनुचित ।

बेज़ार–वि० (फा०) (संज्ञा बेज़ारी) १ नाराज़ । अप्रसन्न । २ दुखी ।

बे-तरह–क्रि० वि० (फा०) बुरी तरहसे : बेढब तरीकेसे : कुछ

भीषण या उग्र रूपसे । जैसे—बे-तरह फटकारना।

बे-तहाशा—क्रि० वि० (फा०+अ० तहाशा) १ बहुत जोर से या उग्र रूपसे । २ बहुत घबराकर । ३ बिना सोचे-समझे।

बे-ताब—वि० (फा०) (संज्ञा बेताबी) विकल । व्याकुल । बेचैन।

बेतार—संज्ञा पुं० (अ०) अश्व-चिकित्सक । शालिहोत्री ।

बेद—संज्ञा स्त्री० (फा०) बेतका पौधा ।

बे-दखल—वि० (हिं०+अ०) जिसका दखल, कब्जा या अधिकार न हो । अधिकार-च्युत।

बे-दखली—संज्ञा स्त्री० (हिं०+अ०) सम्पत्तिपरसे दखल या कब्जेका हटाया जाना अथवा न होना।

बेदार—वि० (फा०) जागता हुआ।

बेदारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) जागने-की अवस्था । जाग्रति।

बे-नज़ीर—वि० (फा०) जिसकी कोई नज़ीर या उपमा न हो। बेजोड़। अनुपम । लासानी।

बे-नवा—वि० (फा०) (संज्ञा बेनवाई) १ दरिद्र । २ फ़क़ीर।

बे-नियाज़—वि० (फा०) (संज्ञा बे-नियाज़ी) १ सब प्रकारकी आव-श्यकताओं और बन्धनों आदिसे रहित । परम स्वतन्त्र । स्वच्छन्द (प्रायः ईश्वरके संबन्धमें) । २ ला-परवाह।

बे-पर्द—क्रि० (फा० बे+पर्द) जिसके आगे कोई परदा न हो । आगेसे खुला हुआ।

बे-पर्दगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) परदे-का अभाव । परदा न होना।

बे-पीर—वि० (फा०) १ जिसका कोई पीर या गुरु न हो। निगुरा। स्वार्थी और अन्यायी । निर्दय और अत्याचारी।

बे-बदल—वि० (फा०) १ सदा एक-रस रहनेवाला। जिसमें कोई परिवर्तन न हो । २ निश्चित । ध्रुव । ३ बेजोड़।

बे-बस—वि० (फा० बे+हिं० बस) (संज्ञा बे-बसी) १ जिसका कुछ बस न चल सके । २ निर्बल। असमर्थ।

बे-बहा—वि० (फा०) जिसका मूल्य न लग सके। बहुमूल्य।

बे-बाक—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा बे-बाकी) निडर । निर्भय ।

बे-बाक़—वि० (फा०) (संज्ञा बे-बाक़ी) चुकता किया हुआ । चुकाया हुआ (क़र्ज़ या देन)।

बेद-मजनूँ—संज्ञा पुं० (फा०) बेंतकी जातिका एक पौधा जिसके पत्ते बारीक और शाखाएँ कोमल होती हैं।

बे-महल—वि० (फ़ा०+अ०) जो उपयुक्त अवसरपर न हो । बे-मौके।

बेद-मुश्क—संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारका वृक्ष जिसके फूल बहुत कोमल और सुगन्धित होते हैं।

२ इन फूलोंका अर्क जो बहुत ठंडा और चित्तको प्रसन्न करनेवाला होता है।

बेल–संज्ञा स्त्री० (फा०) फावड़ा। कुदाली।

बेलचा–संज्ञा पुं० (फा० बेलचः) छोटी कुदाली। छोटा फावड़ा।

बेलदार–संज्ञा पुं० (फा०) फावड़ा चलानेवाला मजदूर।

बेला–संज्ञा पुं० (फा०) वह थैली जिसमें दरिद्रोंको बाँटनेके लिये रुपये लेकर निकलते हों।

बेला-बरदार–संज्ञा पुं० (फा०) वह आदमी जो साथमें बेला या बाँटनेके लिए रुपयोंकी थैली लेकर चलता हो।

बेवकूफ़–वि० (फा०) मूर्ख। ना-समझ।

बेवकूफ़ी–संज्ञा स्त्री०(फा०) मूर्खता। ना-समझी।

बेवा–संज्ञा स्त्री० (फा० बेवः) जिसका पति मर गया हो। विधवा। राँड़।

बेश–वि० (फा०) १ अधिक। ज़्यादा। २ श्रेष्ठ। अच्छा। बढ़िया।

बे-शक–क्रि० वि० (फा०) बिना किसी शकके। निस्सन्देह।

बेश कीमत–वि० (फा०+अ०) बहुमूल्य।

बेशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अधिकता। ज़्यादती। २ वृद्धि।

बेह–वि० (फा०) अच्छा। उत्तम। संज्ञा पुं० बिही नामक फल या मेवा।

बेहतर–वि० (फा०) अपेक्षाकृत उत्तम। किसीके मुकाबलेमें अच्छा। क्रि० वि० बहुत अच्छा। ठीक है। ऐसा ही होगा। ऐसा ही सही।

बेहतरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अच्छाई। उत्तमता। २ कल्याण। मंगल। भलाई।

बेहतरीन–वि० (फा०) सबसे अच्छा।

बेहबूद, बेहबूदी–संज्ञा स्त्री० दे० "बहबूद" और "बहबूदी।"

बे-हमैयत–वि० (फा०) बेशर्म। निर्लज्ज। बेहया।

बे-हया–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा बेहयाई) निर्लज्ज।

बे-हयाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) निर्लज्जता।

बे-हाल–वि० (फा० बे+अ० हाल) (संज्ञा बे-हाली) व्याकुल। विकल बे-चैन। क्रि० वि० बहुत बुरी अवस्थामें।

बे-हिस–वि० दे० "बेहोश।"

बे-हिसाब–(हिं० बे+फा० हिसाब) बहुत अधिक। बहुत ज़्यादा। जिसकी गिनती या हिसाब न हो।

बे-हुरमत–वि० (फा० + अ०) (भाव० बे-हुरमती) बे-इज्ज़त।

बेहूदगी–संज्ञा स्त्री०(फा०) "बेहूदा"-का भाव। असभ्यता। अशिष्टता।

बेहूदा–वि० (फा० बेहूदः) असभ्य।

बेहोश–वि० (फा०) मूर्छित। अचेत।

बेहोशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) मूर्छा। अचेतनता।

बै–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बेचनेकी क्रिया। बिक्री। विक्रय। २ खरीदना और बेचना। क्रय-विक्रय

बैआना–संज्ञा पुं० (अ०) बयाना। साई।

बैयत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आज्ञाकारिता। २ किसी पीर आदिका शिष्य होना।

बैज़–संज्ञा पुं० बहु० (अ०) १ पक्षियों आदिके अंडे। २ अंडकोश।

बैज़वी–वि० (फा०) अंडेके आकार-का। गोल।

बैज़ा–संज्ञा पुं० (फा०) १ पक्षियों आदिका अंडा। २ अंडकोश।

बैज़ावी–वि० दे० "बैज़वी।"

बैत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कविता। २ छन्द। ३ मसनवीमेंका कोई एक शेर। संज्ञा पुं० शाला। घर। (केवल यौगिकमें) जैसे–बैत-उल्-हराम्। बैत-उल्-खला।

बैत-उल्-खला–संज्ञा पुं० (अ०) शौचागार। पाखाना। टट्टी।

बैत-उल्-माल–संज्ञा पुं० (अ०) १ सरकारी खजाना। २ वह राजकोश जिसमें प्राचीन अरब और मुसल-मान लूटका माल और लावारिस माल जमा करते थे। ३ वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। लावारिस माल।

बैत-उल्-मुक़द्दमा–संज्ञा पुं० (अ०) १ मक्का। २ मक्केका प्रसिद्ध स्थान।

बैत-उल्-हरम–संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानोंका पवित्र स्थान। मक्का।

बैत-उल्ला–संज्ञा पुं० (अ०) खुदाका घर। काबा।

बैदक़–संज्ञा पुं० (अ०) शतरंजका प्यादा।

बैन–क्रि० वि० (अ०) मध्य। बीच।

बै-नामा–संज्ञा पुं० (अ०) वह पत्र जिसमें किसी वस्तुके बेचनेका उल्लेख हो। विक्रय-पत्र।

बैरक़–संज्ञा पुं० (तु०) झंडा। पताका। (बैरक विशेषतः उस झण्डेको कहते हैं जो किसी नये स्थानपर अधिकार करके या अक्सर मुहर्रमके जलूसमें "अलम" पर लगाते हैं।)।

बैरूँ–अव्य० (फा० बेरूँ) बाहर। अलग। संज्ञा पुं० आस-पासका या बाहरी प्रदेश।

बैरूनी–वि० (फा० बेरूनी) बाहरी। बाहरका।

बोरिया–संज्ञा पुं० (फा०) ताड़के पत्तोंकी बनी हुई चटाई।

बोल–संज्ञा पुं० (अ० बौल) मूत्र। पेशाब। जैसे–**बोल-व-बराज़**= मूत्र और मल। पेशाब और पेखाना।

बोशा–संज्ञा पुं० (अ०) १ शान-

शौकत। दबदबा। २ कमीना। पाजी। लुच्चा। (इस अर्थमें इसका बहु० "औबाश" है।)।

बोस–संज्ञा पुं दे० "बोसा।"

बोसा–संज्ञा पुं० (फा० बोसः) मुँह या गाल चूमनेकी क्रिया। चुम्बन।

बोसीदा–वि० (फा० बोसीदः) (संज्ञा बोसदगी) पुराना-धुराना। सड़ा-गला। बेदम।

बोसो-कनार–संज्ञा पुं (फा०) प्रेमिकाका मुख चूमना और उसे गले लगाना। चुम्बन और आलिंगन।

बोस्ताँ–संज्ञा पुं० (फा०) बाग। वाटिका। उपवन।

बोहतान–संज्ञा पुं० (अ० बुहतान) मिथ्या अभियोग। झूठा इलजाम। मुहा०–**बोहतान जोड़ना** = कलंक लगाना।

(म)

मंज़िल–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० मनाज़िल) १ यात्रामें ठहरनेका स्थान। पड़ाव। २ मकानका खंड। मरातिब।

मंज़िलत–संज्ञा स्त्री० (अ०) पद। ओहदा।

मंजूर–वि० (अ०) जो मान लिया गया हो। स्वीकृत।

मंजूरी–संज्ञा स्त्री० (अ० मंजूर) मंजूर होनेका भाव। स्वीकृति।

मअदन–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मआदिन) सोने-चाँदी आदिकी खान।

मअदनियात–संज्ञा स्त्री० (अ०) खानसे निकले हुए द्रव्य। खनिज पदार्थ।

मअदनी–वि० (अ०) खानसे निकला हुआ। खनिज।

मअदिलत–संज्ञा स्त्री० (अ०) अदल। इंसाफ। न्याय।

मअदूद–वि० (अ०) १ गिने हुए। २ परिमित।

मअदूम–वि० दे० "मादूम।"

मअबद–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मआबिद) ईश्वराराधन करनेका स्थान। मन्दिर, मसजिद, गिरजा आदि।

मअबूद–संज्ञा पुं० (अ०) वह जिसकी इबादत या आराधना की जाय। ईश्वर। परमात्मा।

मअरूज़–वि० (अ०) अर्ज किया गया। निवेदित।

मअलूल–वि० (अ०) तर्कद्वारा सिद्ध किया हुआ। संज्ञा पुं० निष्कर्ष।

मआज़-अल्लाह–(अ०) ईश्वर रक्षा करे।

मआद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लौटकर आनेका स्थान। २ परलोक। ३ होनेवाला जन्म।

मआनी–संज्ञा पुं० (अ० "मअनी"-का बहु०) १ माने। अर्थ। २ उद्देश्य।

मआब–संज्ञा पुं० (अ०) निवास-स्थान। जैसे–**इज्ज़त मआब**= प्रतिष्ठाका आगार। परम प्रतिष्ठित।

मश्रारिज़–वि० (अ०) विरोध करनेवाला।

मश्राल–संज्ञा पुं० (अ०) अन्त।

मश्राल-अन्देश–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) (संज्ञा मश्राल-अन्देशी) वह जो परिणामका ध्यान रखता हो। परिणाम-दर्शी।

मश्राश–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ जीविकाका साधन। आजीविका। २ ज़मींदारी। जैसे–नेक मश्राश। बद-मश्राश।

मश्राशरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) सामाजिक जीवन। मिल-जुलकर जीवन व्यतीत करना।

मश्रासिर–संज्ञा पुं० (अ०) (मश्रासरत का बहु०) अच्छे और बड़े काम।

मईशत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ जीविका। २ दैनिक भोजन। ३ आवश्यक वस्तुएँ।

मकतब–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मकातिब) १ वह स्थान जहाँ लिखना पढ़ना सिखाया जाता हो। २ पाठशाला। विद्यालय।

मक़तल–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह स्थान जहाँ लोग क़तल किये जाते हों। वध-स्थान। २ प्रेमिका का क्रीड़ा-क्षेत्र।

मक़ता–संज्ञा पुं० (अ० मक़तः) गज़लका अंतिम चरण जिसमें कविका नाम भी रहता है।

मकतूब–वि० (अ०) (बहु० मकतूबात) लिखा हुआ। लिखित। संज्ञा पुं० १ लेख। २ पत्र। चिट्ठी।

मकतूब-इलह–संज्ञा पुं० (अ०) वह जिसके नाम कोई पत्र लिखा गया हो। पत्र पानेवाला।

मक़तूल–वि० (अ०) १ जो क़तल कर डाला गया हो। २ प्रेमी।

मक़दम–संज्ञा पुं० (अ०) १ वापस आना। लौटना। २ पहुँचना।

मक़दूर–संज्ञा पुं० (अ०) सामर्थ्य।

मकना–संज्ञा पुं० (अ० मकनः) एक प्रकारकी ओढ़नी या चादर।

मक़नातीस–संज्ञा पुं० (अ०) (वि० मक़नातीसी) चुम्बक पत्थर।

मक़फ़ूल–वि० (अ०) (भाव० मक़फ़ूलियत) रेहन या बन्धक रखा हुआ।

मक़बरा–संज्ञा पुं० (अ० मक़बरः) (बहु० मक़ाबिर) वह इमारत जिसमें किसीकी लाश गाड़ी गई हो। रौज़ा। मजार।

मक़बूज़ा–वि० (अ० मक़बूज़ः) जिसपर क़ब्ज़ा किया गया हो। अधिकृत।

मक़बूल–वि० (अ०) (भाव० मक़बूलियत) १ कबूल किया हुआ। २ पसन्द होनेके लायक। अच्छा। बढ़िया। ३ चुना हुआ।

मक़रूक़–वि० (अ०) कुर्क किया हुआ।

मक़रूज़–वि० (अ०) जिसपर कर्ज़ हो। ऋणी। क़र्ज़दार।

मकरूह–वि० (अ०) (बहु० मकरूहात) घृणित। बहुत बुरा। गंदा और खराब।

मक़लूब–वि० (अ०) उलटा हुआ। संज्ञा पुं० वह शब्द या पद जो

सीधा और उलटा दोनों ओर से पढ़नेपर समान हो। जैसे—दरद।

मक़सद—संज्ञा पुं० (बहु० मक़ासिद) १ उद्देश्य। अभिप्राय। २ कामना। मुहा०—**मक़सद बर आना**= कामना पूर्ण होना।

मक़सूद—वि० (अ०) उद्दिष्ट। अभिप्रेत।

मक़सूम—वि० (अ०) बाँटा हुआ। विभक्त। संज्ञा पुं० १ भाग्य। क़िस्मत। तक़दीर। २ गणितमें भाज्य।

मकसूर—वि० (अ०) (अक्षर) जिसमें कसका चिह्न (ज़ेर या एकार या इकारका चिह्न) लगा हो।

मकातिब—संज्ञा पुं० (अ०) "मकतब" का बहु०।

मकान—संज्ञा पुं० (अ०) रहनेकी जगह। घर। आलय।

मकाफ़ात—दे० "मुकाफ़ात।"

मक़ाबिर—संज्ञा पुं० (अ०) "मक़बरा" का बहु०।

मक़ाम—संज्ञा पुं० (अ०) १ ठहरनेकी जगह। २ स्थान। जगह।

मक़ामी—वि० (अ०) १ ठहरा हुआ। स्थिर। २ स्थानीय।

मक़ाल—संज्ञा पुं० (अ०) १ शब्द २ वाचा।

मक़ाला—संज्ञा पुं० (अ० मक़ालः) १ कही हुई बात। २ ग्रन्थ।

मक़ासिद—संज्ञा पुं० (अ०) "मक़सद" का बहुवचन।

मक़ूला—संज्ञा पुं० (अ० मक़ूलः) (बहु० मक़ूलात) १ मसला। कहावत। २ उक्ति। क़ौल।

मक्का—संज्ञा पुं० (अ०) अरबका एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानोंका सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान है।

मक्कार—वि० (अ०) (स्त्री० मक्कारः) धोखा देनेवाला। छली।

मक्कारी—संज्ञा स्त्री० (अ० मक्कार) छल। फरेब। धोखा।

मक्र—संज्ञा पुं० (अ०) फरेब। दगा।

मख़ज़न—संज्ञा पुं० (अ०) १ खज़ाना। कोश। २ शब्दों आदिका बहुत बड़ा संग्रह। शब्दकोश।

मख़दूम—संज्ञा पुं० (अ०) १ (स्त्री० मख़दूमा) (बहु० मख़ादिम) वह जिसकी ख़िदमत या सेवा की जाय। २ मालिक। स्वामी। ३ एक प्रकारके मुसलमान धर्माधिकारी।

मख़दूश—वि० (अ०) जिसमें कोई खदशा या डर हो। जिसमें आपत्ति या हानिकी आशंका हो।

मख़बूत-उल्-हवास—संज्ञापुं० (अ०) वह जिसका दिमाग़ ख़ब्त हो। पागल। विक्षिप्त। ख़ब्ती।

मख़मल—संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० मख़मली) एक प्रकारका प्रसिद्ध कपड़ा जिसमें बहुत चिकने रोएँ होते हैं।

मख़मसा—संज्ञा पुं० (अ० मख़मसः) विकट प्रसंग या प्रश्न।

मख़मूर—वि० (अ०) नशेमें चूर। मतवाला।

मख़रज—संज्ञा पुं० (अ०) (बहु०

मख़ारिज) १ मूल या उद्गम-स्थान । २ शब्दकी व्युत्पत्ति । ३ निकलनेका रास्ता । ४ बोलनेकी इंद्रिय । मुँह ।

मख़रूत–वि० (अ०) वह जो नीचेकी ओर मोटा और ऊपरकी ओर पतला होता गया हो । कोणाकार । गजरडौल ।

मख़लूक़–वि० (अ०) रचा या बनाया हुआ । संज्ञा स्त्री० १ रची या बनाई हुई चीजें । २ सृष्टिके जीव आदि ।

मख़लूक़ात–संज्ञा स्त्री० (अ०) "मख़लूक़" का बहु० । सृष्टिके जीव आदि ।

मख़लूत–वि० (अ०) मिला-जुला । मिश्रित ।

मख़फ़ी–वि० (अ०) छिपा हुआ । गुप्त । पोशीदा ।

मख़्सूस–वि० (अ०) खास तौरपर अलग किया हुआ । विशिष्ट । यौ०–**मुक़ाम-मख़्सूस**=स्त्री या पुरुषकी गुप्त इन्द्रिय ।

मग़फ़िरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) अपराध क्षमा करना । माफ़ी ।

मग़फ़ूर–वि० (अ०) मृत । स्वर्गीय ।

मग़मूम–वि० (अ०) ग़ममें भरा हुआ । दुःखी । रंजीदा ।

मगर–अव्य० (अ०) पर । परन्तु । लेकिन ।

मग़रिब–संज्ञा पुं० (अ०) पश्चिम दिशा । यौ०–**मग़रिबकी नमाज़**=सूर्यास्तके समय पढ़ी जानेवाली नमाज ।

मग़रिबी–वि० (अ०) मग़रिब या पश्चिमका । पश्चिमी ।

मग़रूर–वि० (अ०) जिसे ग़रूर हो । अभिमानी । घमंडी ।

मग़रूरी–संज्ञा स्त्री० (अ० मग़रूर) ग़रूर । घमंड । अभिमान ।

मग़लूब–वि० (अ०) (भाव० मग़लूबियत) जिसपर कोई ग़ालिब आया हो । पराजित । परास्त ।

मगस–संज्ञा स्त्री० (अ०) मक्खी ।

मग़ज़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मग़्ज़ियात) १ मस्तिष्क । दिमाग़ । भेजा । २ गिरी । मींगी । गूदा ।

मग़ज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ० मग़ज़) गोट । किनारा । हाशिया ।

मज़कूर–वि० (अ०) जिसका ज़िक्र हुआ हो । उक्त । संज्ञा पुं० विवरण । विशेषतः लिखित विवरण ।

मज़कूरा–वि०दे० "मज़कूरा-बाला ।"

मज़कूरा-बाला–वि० (अ०) जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका हो । उपर्युक्त । उल्लिखित ।

मज़कूरी–संज्ञा पुं० (फा०) सम्मन तामील करनेवाला कर्मचारी ।

मजज़ूब–वि० (अ०) १ जो जज़्ब हो गया हो । जो सोख लिया गया हो । २ किसी विषयमें डूबा हुआ । तन्मय । तल्लीन ।

मज़दूर–संज्ञा पुं० (फा०) १ बोझ ढोनेवाला । मजूर । कुली । मोटिया । २ कल-कारखानोंमें छोटा-मोटा काम करनेवाला ।

मज़दूरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मज़दूरका काम । २ बोझ ढोने या

और कोई छोटा-मोटा काम करने का पुरस्कार। ३ परिश्रमके बदले-में मिला हुआ धन। उजरत।

मजनूँ—वि (अ०) १ जो प्रेममें पागल हो गया हो। २ बहुत ही दुबला पतला। क्षीण-शरीर।

मजनूनियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) पागलपन। उन्माद।

मज़बह—संज्ञा पुं० (अ०) जबह करनेकी जगह। वध-स्थल।

मज़बूत—वि० (अ०) १ दृढ़। पुष्ट। पक्का। २ बलवान्। सबल।

मज़बूती—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मजबूतका भाव। दृढ़ता। पुष्टता। २ ताक़त। बल। ३ साहस।

मजबूर—वि० (अ०) विवश। लाचार।

मजबूरन्—क्रि० वि० (अ०) मजबूर होकर। विवश होकर। लाचारीसे।

मजबूरी-संज्ञा स्त्री० (अ०) विवशता। लाचारी।

मजमा—संज्ञा पुं० (अ० मजमः) (बहु० मजाम) १ वह स्थान जहाँ बहुतसे लोग एकत्र हों। २ बहुतसे लोगोंका समूह। भीड़।

मजमूआ—संज्ञा पुं० (अ० मजमूअः) १ बहुत-सी चीजोंका समूह। २ संग्रह। वि० एकत्र किया हुआ।

मजमूई—वि० (अ०) कुल। एकमें मिला हुआ। सब।

मज़मून—संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मजामीन) १ वह विषय जिसपर कुछ कहा या लिखा जाय। २ लेख।

मज़मूम-वि० (अ०) १ मिलाया हुआ। सम्बद्ध किया हुआ। २ अक्षर जिसपर "पेश" या उकार-की मात्रा अथवा चिह्न लगा हो। जैसे—"कुल" मेंका काफ़ (क)। वि० जिसकी मजम्मत या बुराई की गई हो। खराब। बुरा।

मज़म्मत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बुराई। निन्दा। २ निन्दात्मक लेख या कविता।

मज़रा—संज्ञा पुं० (अ० मजरऽ) १ खेत। २ छोटा गाँव।

मज़रूआ—वि० (अ० मज़रूअऽ) जोता-बोया हुआ (खेत)।

मज़रूब—वि० (अ०) १ जिसपर जर्ब या चोट पड़ी हो। २ (संख्या) जिसका गुणा किया जाय। गुणा।

मजरूर—वि० (अ०) खिंचने या आकृष्ट होनेवाला।

मजरूह—वि० (अ०) १ जिसे घाव या चोट लगी हो। घायल। २ प्रेम और विरहमें विकल।

मज़र्रत—संज्ञा स्त्री० (अ०) हानि। नुकसान। चोट। आघात।

मजलिस—संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० मजालिस) १ सभा। समाज। २ जलसा। यौ०—**मीरमजलिस**=सभापति। ३ नाच-रंगका स्थान। महफ़िल।

मजलिस-खाना—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) मजलिस या जलसा होनेका स्थान। रंग-शाला।

मजलिसी—वि० (अ०) १ मजलिस-

सम्बन्धी। मजलिसका। २ जो मजलिसमें जाता या निमंत्रित हो।

मज़लूम–वि० (अ०)संज्ञा मज़लूमी। जिसपर जुल्म किया गया हो। अत्याचार-पीड़ित।

मज़हका–संज्ञा पुं० (अ० मज़हकः) १ वह बात या वस्तु जिसे देखकर हँसी आवे। २ दिल्लगी। उपहास। मखौल। मुहा०–**मज़हका उड़ाना**=उपहास करना।

मज़हब–संज्ञा पुं० (अ०)(बहु०मज़ाहिब)सम्प्रदाय। धर्म। पंथ। मत।

मज़हबी–वि० (अ०) धर्मसम्बन्धी। धार्मिक। संज्ञा पुं० मेहतर या भंगी सिक्ख।

मजहूल–वि० (अ०) (भाव० मजहूली) १ अज्ञात। २ सुस्त। निकम्मा। ३ थका हुआ। शिथिल।

मज़ा–संज्ञा पुं० (फा० मज़ः) १ स्वाद। लज्ज़त। मुहा०–**मज़ा चखाना**–किये हुए अपराधका दंड देना। आनन्द। सुख। दिल्लगी। हँसी। मुहा०–**मज़ा आ जाना**= परिहासका साधन प्रस्तुत होना। दिल्लगीका सामान होना।

मज़ाक़–संज्ञा पुं० (अ०) चखनेकी क्रिया या शक्ति। २ रुचि। प्रवृत्ति। चसका। ३ परिहास। ठट्ठा। हँसी।

मज़ाक़न्–क्रि० वि० (अ०) मज़ाकसे। हँसी या परिहासमें।

मज़ाक़िया–वि० (अ० मज़ाक़ियः) मज़ाक़ संबन्धी। परिहास-संबन्धी। २ परिहास-प्रिय। हँसोड़। ठठोल।

मजाज़–वि० (अ०) जिसे नियम या कानून आदिके अनुसार कोई काम करनेका अधिकार मिला हो। नियमानुसार समर्थ। संज्ञा पुं० नियमानुसार मिला हुआ अधिकार या सामर्थ्य।

मजाज़न्–क्रि० वि० (अ०) कानून या नियमके अनुसार। नियमित रूपमें।

मज़ाज़ी–वि० (अ०) १ कृत्रिम। नकली। झूठा। २ संसार या लोकसंबंधी। सांसारिक। लौकिक। "आध्यात्मिक" का उलटा।

मज़ामीन–संज्ञा पुं० अ० "मज़मून" का बहु०।

मज़ामीर–संज्ञा पुं० (अ० मिज़मार =बाँसुरीका बहु०)१ अनेक प्रकारके बाजे। वाद्य। २ घुड़दौड़के मैदान।

मज़ार–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह स्थान जहाँ लोग ज़ियारत या दर्शन करने जायँ। २ क़ब्र।

मज़ारा–संज्ञा पुं० (अ० मज़ारऽ) किसान। खेतिहर।

मजाल–संज्ञा स्त्री० (अ०) शक्ति। सामर्थ्य। योग्यता।

मज़ाहिब–संज्ञा पुं० (अ०) "मज़हब" का बहु०।

मज़ाहिरा–संज्ञा पुं० (अ० मज़ाहिरः) वह काम जो दिखलाने या भाव प्रगट करनेके लिए किया जाय। प्रदर्शन।

मजीद–वि० (अ०) १ पवित्र और पूज्य। २ बड़ा। संज्ञा पुं० मुसलमानोंका धर्मग्रंथ कुरान।

मज़ीद–संज्ञा पुं० (अ०) ज़्यादती। अधिकता। वि० १ जिसमें अधिकता की गई हो। बढ़ाया हुआ। २ अधिक। ज़्यादा।

मजूस–संज्ञा पुं० (फा०) जरदुश्तका अनुयायी। अग्नि-पूजक। पारसी।

मज़ेदार–वि० (फा० मज़ःदार) १ स्वादिष्ट। ज़ायकेदार। २ अच्छा। बढ़िया। ३ जिसमें आनन्द आता हो।

मज़ेदारी–संज्ञा स्त्री० (फा० मज़ःदारी) १ स्वाद। ज़ायका। २ आनन्द। लुत्फ़। मज़ा।

मतन–संज्ञा पुं० (अ० मत्न) १ मध्यभाग। बीचका हिस्सा। २ वह मूल ग्रन्थ जो टीका करनेके योग्य हो। ३ पीठ। पृष्ठ-भाग। वि० पक्का। दृढ़। मज़बूत।

मतबख़–संज्ञा पुं० (अ०) रसोईघर। बावर्ची-ख़ाना।

मतबख़ी–संज्ञा पुं० (अ०) रसोइया। वि० रसोई-घर-सम्बन्धी।

मतबा–संज्ञा पुं० (अ० मतबऽ) यंत्रालय। छापाख़ाना।

मतबूअ–वि० (अ०) १ जो पसन्द किया गया हो।

मतबूआ–वि० (अ० मतबूअ) छापा हुआ। मुद्रित।

मतब्ब–संज्ञा पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ हकीम या चिकित्सक बैठकर रोगियोंकी चिकित्सा करता है। औषधालय। दवाख़ाना।

मतरूक–वि० (अ०) जो तर्क या अलग कर दिया गया हो। छोड़ा हुआ। त्यक्त। परित्यक्त।

मतलब–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मतालिब) १ तात्पर्य। अभिप्राय। आशय। २ अर्थ। मानी। ३ अपना हित। स्वार्थ। ४ उद्देश्य। विचार। ५ सम्बन्ध। वास्ता।

मतला–संज्ञा पुं० (अ० मतलऽ) १ किसी तारे आदिके उदय होनेकी दिशा। पूर्व। २ गज़लके आरम्भिक दो चरण जिनमें अनुप्रास होता है।

मतलूब–वि० (अ०) १ जो तलब किया या माँगा गया हो। २ अभीष्ट। उद्दिष्ट।

मता–संज्ञा पुं० (अ० मताअ) १ माल असबाब। २ सम्पत्ति। यौ०–**माल-मता**=धन-दौलत।

मतानत–संज्ञा स्त्री० (अ०) दृढ़ता। मज़बूती। पुष्टता।

मताफ़–संज्ञा पुं० (अ०) परिक्रमा करनेका फेरा।

मतालिब–संज्ञा पुं० (अ०) "मतलब" का बहु०।

मतीन–वि० (अ०) दृढ़। पक्का।

मत्न–संज्ञा पुं० दे० "मतन।"

मद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ विभाग। सीग़ा। सरिश्ता। २ खाता।

मदख़ला–वि० (अ० मदख़लः) दाख़िल या जमा किया हुआ।

मदख़ूला–संज्ञा स्त्री० (अ० मदख़ूलः)

वह स्त्री जो यों ही घरमें रख ली गई हो । उप-पत्नी । रखेली । सुरैतिन ।

मदद्–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) सहायता। सहारा ।

मदद्-गार–संज्ञा पुं॰ (अ॰+फा॰) (भाव॰ मददगारी) मदद करनेवाला । सहायक ।

मदफ़न–संज्ञा पुं॰ (अ॰) वह स्थान जहाँ मुरदे दफ़न किये जाते हैं। शव गाड़नेकी जगह । कब्रिस्तान ।

मदफ़ून–वि॰ (अ॰) १ दफ़न किया हुआ । गाड़ा हुआ । २ छिपाकर रखा हुआ ।

मद्यून–वि॰ (अ॰) जिसपर ऋण हो । क़र्जदार ।

मद्रसा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ मद्रसः) (बहु॰ मदारिस) पाठशाला ।

मद व जज़र–संज्ञा पुं॰ (अ॰) समुद्री ज्वार और भाटा ।

मदह–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) (बहु॰ मदायह) प्रशंसा । यौ॰–**मदहे सहाबा**=मुहम्मद साहबके कतिपय घनिष्ठ मित्रोंकी प्रशंसा जो सुन्नी लोग करते हैं ।

मदह-ख़्वाँ–संज्ञा पुं॰ (अ॰+फा॰) तारीफ़ करनेवाला । प्रशंसक ।

मद-होश–वि॰ (अ॰) (संज्ञा मद-होशी) १ नशेमें मस्त । मत्त । मतवाला । २ हत-बुद्धि ।

मदाख़िल–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ दख़ल या प्रवेश करनेका स्थान । प्रवेशद्वार । २ आय । आमदनी ।

मदाख़िलत–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ दख़ल देना । २ अधिकार जमाना ।

मदाख़िलत-बेजा–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰+फा॰) अनुचित रूपसे कहीं प्रवेश करना । अनधिकार-प्रवेश ।

मदार–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ दौरा करनेका रास्ता । भ्रमण-मार्ग । २ आधार । आश्रय । ३ मुसलमानोंके एक पीरका नाम ।

मदार-उल्-महाम–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ प्रधान मंत्री । अमात्य । २ प्रधान व्यवस्थापक ।

मदारात–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) आदर-सत्कार । आव-भगत ।

मदारिज–संज्ञा पुं॰ बहु॰ (अ॰) किसी कामके दरजे या श्रेणियाँ ।

मदारिस–संज्ञा पुं॰ (अ॰) "मदरसा" का बहुवचन ।

मदारी–संज्ञा पुं॰ (अ॰ मदार) १ मदार नामक पीरका अनुयायी । २ वह जो बंदर और भालू आदि नचाता या इन्द्र-जालके खेल करता हो ।

मदीद–वि॰ (अ॰) १ लम्बा । २ विस्तृत ।

मदीना–संज्ञा पुं॰ (अ॰ मदीनः) १ नगर । २ अरबका एक प्रसिद्ध नगर ।

मद्दाह–वि॰ (अ॰) मदह या प्रशंसा करनेवाला । प्रशंसक ।

मद्रसा–संज्ञा पुं॰ दे॰ "मदरसा ।"

मन–वि॰ (फा॰) १ मैं । २ मेरा ।

मनकूता–वि॰ (अ॰ मनकूतः) जिसपर नुकते या बिन्दियाँ लगी हों ।

संज्ञा पुं० वह लेख या कविता जिसमें केवल नुक़्तेवाले अक्षरोंका व्यवहार हो । इसकी गणना अलंकारोंमें होती है ।

मनकूल-वि० (अ०) १ एक स्थान-से हटाकर दूसरे स्थानपर रखा हुआ । २ जिसकी प्रतिलिपि की गई हो । नक़ल किया या उतारा हुआ ३ उद्धृत । कहींसे लिया हुआ ।

मनकूला-वि० (अ० मनकूलः) (बहु० मनकूलात) स्थिर या स्थावरका उलटा । चल । यौ०-**जायदाद-मनकूला**=चल संपत्ति । **गैरमनकूला**=स्थिर या स्थायी सम्पत्ति । स्थावर ।

मनक़ूश-वि० (अ०) नक़्श किया हुआ । अंकित ।

मनकूहा-वि० (अ० मनकूहः) (स्त्री) जिसके साथ निकाह या विवाह हुआ हो । विवाहिता ।

मनज़र-संज्ञा पुं० (अ० मन्ज़र) दृश्य । नज़ारा ।

मनज़ूम-वि० (अ०) नज़्मके रूपमें । छन्दोबद्ध ।

मनफ़ी-वि० (अ०) घटाया या कम किया हुआ ।

मनशा-संज्ञा स्त्री० (अ०मन्शाअ) १ उद्देश्य । अभिप्राय । २ कामना ।

मनसब-संज्ञा पुं० (अ० मन्सब) (बहु० मनासिब) १ पद । ओहदा २ कर्म । ३ अधिकार ।

मनसबी-वि० (अ०) मनसब या पदसम्बन्धी ।

मनसूबा-संज्ञा पुं० (अ० मन्सूबः) १ युक्ति । ढंग । मुहा०-**मनसूबा बांधना**- =युक्ति सोचना । २ इरादा । विचार ।

मनहूस-वि० (अ०) (संज्ञा मनहूसियत, मनहूसी) १ अशुभ । बुरा । २ अप्रिय-दर्शन । देखनेमें बेरौनक ।

मना-वि०(अ० मनः ऽ) १ निषिद्ध । वर्जित । २ वारण किया हुआ । ३ अनुचित । नामुनासिब ।

मनाज़िर-संज्ञा पुं० (अ०) मन्ज़र-(दृश्य) का बहु० ।

मनाल-संज्ञा पुं० (अ०) १ लाभ । २ संपत्ति ।

मनासबत-संज्ञा स्त्री० दे० "मुनासिबत ।"

मनाही-संज्ञा स्त्री० (अ०) न करने-की आज्ञा । रोक । निषेध ।

मनी-संज्ञा स्त्री० (अ०) वीर्य्य ।

मन्तिक़-संज्ञा पुं० (अ०) तर्कशास्त्र ।

मन्तिक़ी-संज्ञा पुं० (अ० मन्तिक़) तर्कशास्त्रका ज्ञाता । तार्किक ।

मन्द-प्रत्य० (फा०) वाला । रखने-वाला । जैसे-दौलत-मन्द ।

मन्दील-संज्ञा स्त्री० (अ० मिन्दील) १ रूमाल । २ पगड़ी । ३ कमरमें बाँधनेका पटका ।

मन्शा-संज्ञा स्त्री० दे० "मनशा ।"

मन्सूख़-वि० (अ०) रद्द किया हुआ । निकम्मा ठहराया हुआ ।

मन्सूख़ी-संज्ञा स्त्री०(अ०मन्सूख)रद्द करने या निकम्मा ठहरानेकी क्रिया ।

मन्सूब-वि० (अ०) १ निस्बत या

संबन्ध रखनेवाला । २ जिसकी किसीके साथ मँगनी हुई हो ।

मन्सूबा–संज्ञा पुं० दे० "मनसूबा ।"

मन्सूर–वि० (अ०) १ जिसे ईश्वरीय सहायता मिली हो । २ विजयी ।

मफ़ऊल–संज्ञा पुं० (अ०) (भाव० मफ़ऊलियत) १ वह जिसके साथ कोई फेल या काम किया जाय । २ वह जिसके साथ संभोग किया जाय । ३ व्याकरणमें कर्म ।

मफ़क़ूद–वि० (अ०) १ खोया हुआ । गुम । २ जिसका कुछ पता न लगे ।

मफ़रूक़–वि० (अ०) १ अलग किया हुआ । निकाला या घटाया हुआ ।

मफ़रूज़–वि० (अ०) फर्ज़ किया हुआ । माना हुआ । कल्पित ।

मफ़रूर–वि० (अ०) भागा हुआ । (अपराधी आदि)

मफ़लूक–वि० (अ०) फ़लक या आकाशका सताया हुआ । दुर्दशा-ग्रस्त ।

मफ़हूम–वि० (अ०) समझा हुआ । संज्ञा पुं० पदार्थ । वस्तु ।

मफ़ासिद–संज्ञा पुं० (अ०) "फ़िसाद" का बहु० ।

मफ़्तून–वि० (अ०) अनुरक्त । आसक्त ।

मफ़्तूह–वि० (अ०) फ़तह किया हुआ । जीता हुआ । विजित ।

मबज़ूल–वि० (अ०) १ खर्च किया हुआ । २ प्रदान किया हुआ ।

मबनी–वि० (अ०) आधारपर ठहरा हुआ । आश्रित ।

मब्दा–संज्ञा पुं० (अ० मुब्दिअ) १ मूल । उद्गम । उत्पत्ति स्थान । २ सृष्टिका मूल कारण, परमात्मा ।

ममदूह–वि० (अ०) १ जिसकी मदह या प्रशंसा की जाय । २ उल्लिखित । उक्त ।

ममनूअ–वि० (अ०) जो मना किया गया हो । वर्जित ।

ममनून–वि० (अ०) उपकृत । कृतज्ञ ।

ममात–संज्ञा स्त्री० (अ०) मृत्यु ।

ममलकत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० मुमालिक) राज्य । सल्तनत ।

ममालिक–संज्ञा पुं० दे० "मुमालिक" ।

मम्बा–संज्ञा पुं० (अ० मम्बः) १ पानीका सोता । जल-स्रोत । चश्मा । २ निकलनेकी जगह ।

मयस्सर–वि० (अ०) मिलता या मिला हुआ । प्राप्त । उपलब्ध ।

मरकज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ मध्यका स्थान । केन्द्र । २ कुछ विशिष्ट अक्षरों (जैसे काफ़, गाफ़) के ऊपर लगनेवाली तिरछी पाई ।

मरक़द–संज्ञा पुं० (अ०) १ शयनागार । क़ब्र । समाधि ।

मरक़ूम–वि० (अ०) लिखा हुआ ।

मरक़ूमा–वि० दे० "मरक़ूम ।"

मरग़ूब–वि० (अ०) जिसकी तरफ़ रग़बत या रुचि हो । रुचिकर । प्रिय । २ सुन्दर । प्रिय-दर्शन ।

मरग़ोल–संज्ञा पुं० (फा०) १ मुड़े हुए बालोंका घूँघर । २ गानेवाले पक्षियोंका मनोहर स्वर । ३ गानेमें गिटकिरी ।

मरग़ोला–संज्ञा पुं० दे० "मरग़ोल ।"

मरजान–संज्ञा पुं० (फा०) मूँगा ।

मरज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० मरज़ियात) १ इच्छा। कामना। चाह। २ प्रसन्नता। खुशी। ३ आज्ञा। स्वीकृति।

मरतूब–वि० (अ० मर्तूब) गीला। भीगा हुआ। नम। तर।

मरदानगी–संज्ञा स्त्री० (फा० मर्दानगी) १ वीरता। शूरता। शौर्य। २ साहस। हिम्मत।

मरदाना–वि० (फा० मर्दानः) १ पुरुषसम्बन्धी। २ पुरुषोंका सा। ३ वीरोचित।

मरदी–संज्ञा स्त्री० दे० "मरदानगी।"

मरदुआ–संज्ञा पुं० (फा० मर्द) अपरिचित पुरुषके लिये तिरस्कार-सूचक शब्द (स्त्रियाँ)।

मरदुम–संज्ञा पुं० (फा० मर्दुम) मनुष्य। आदमी।

मरदुम-आज़ार–वि० (फा०) मनुष्यों-को कष्ट पहुँचानेवाला। ज़ालिम।

मरदुम-आज़ारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) मनुष्योंको कष्ट पहुँचाना। अत्याचार।

मर्दुमक–संज्ञा स्त्री० (फा०) आँख-की पुतली।

मरदुमी–संज्ञा स्त्री० दे० मरदानगी।

मरदूद–वि० (अ० मर्दूद) रद किया हुआ। त्यक्त। संज्ञा पुं० एक प्रकारकी गाली।

मरफ़ा–संज्ञा पुं० (फा० मरफ़) ढोल।

मरबूत–वि० (अ०) १ जिसके साथ रब्त हो। २ संबद्ध। बँधा हुआ।

मरमर–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका बढ़िया सफेद और मुलायम पत्थर। संग मरमर।

मरम्मत–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी वस्तुके टूटे-फूटे अंगोंको ठीक करना। दुरुस्ती। जीर्णोद्धार।

मरवारीद–संज्ञा पुं० (फा०) मोती।

मरसिया–संज्ञा पुं० (अ० मर्सियः) १ किसी व्यक्तिके गुणोंका कीर्तन। २ उर्दू भाषामें वह शोक-सूचक कविता जो किसीकी मृत्युके सम्बन्धमें बनाई जाती है। ३ मातम-शोक। रोना-पीटना।

मरसिया-ख़्वाँ–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) मरसिया कहने या पढ़नेवाला।

मरसिया-ख़्वानी–संज्ञा स्त्री० (अ० + फा०) मरसिया पढ़नेकी क्रिया।

मरसिया-गो–संज्ञा पुं० दे० "मरसिया ख़्वाँ"।

मरहबा–अव्य० (अ० मर्हबा) शाबाश। बहुत अच्छे। (बहुत प्रशंसा करनेके लिये कहते हैं।)

मरहम–संज्ञा स्त्री० (अ०) ओष-धियोंका वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव या पीड़ित स्थानों-पर लगाया जाता है।

मरहमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० मराहिम) १ दया। अनुग्रह। २ प्रदान। ३ क्षमा।

मरहला–संज्ञा पुं० (अ० मर्हलः) (बहु० मराहिल) १ ठिकाना। मंज़िल। पड़ाव। २ मरातिब। मुहा०–**मरहला तै करना**=

झमेला निबटाना। कठिन काम पूरा करना।

मरहून–वि० (अ०) जो रेहन या बन्धक रखा गया हो।

मरहूम–वि० (अ०) स्त्री० मरहूमा। स्वर्गीय। मृत। मरा हुआ।

मराज़अत–संज्ञा स्त्री० (अ०) दूसरेके बच्चेको स्तन-पान कराना।

मरात–संज्ञा स्त्री० (अ०) स्त्री।

मरातिब–संज्ञा पुं० (अ०) "मरतबा" का बहु०) १ पद, मर्यादा आदि। रुतबे। दरजे। २ विषय या कार्य आदि। ३ मकानके खंड। मंजिल।

मरासिम–संज्ञा पुं० (अ०) "रस्म"-का बहु०।

मराहिल–संज्ञा पुं० (अ०) "मरहला" का बहु०।

मरियम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कुमारी। २ ईसा मसीहकी माताका नाम।

मरीज़–संज्ञा पुं० (अ०) स्त्री० मरीजः) रोगी। बीमार।

मर्ग–संज्ञा पुं० (फा०) मृत्यु। मौत।

मर्ग़ज़ार–संज्ञा पुं० (फा०) हरा-भरा मैदान।

मर्ज़–संज्ञा पुं० (अ०) रोग। बीमारी।

मर्त्तबत–संज्ञा स्त्री० दे० "मर्त्तबा।"

मर्त्तबा–संज्ञा पुं० (अ० मर्त्तबः) १ पद। पदवी। २ बेर। दफा।

मर्त्तबान–संज्ञा पुं० (अ०) मिट्टीका रोगनी बरतन जिसमें अचार वगैरह रखते हैं। अमृतबान।

मर्द–पुं० (फा०) १ पुरुष। २ वीर या साहसी। ३ पति।

मर्दक–संज्ञा पुं० (अ० 'मर्द" का अल्पा०) आदमी या मनुष्यके लिये घृणा अथवा तिरस्कारसूचक।

मर्रा–क्रि० वि० (अ० मर्रः) एक बार। यौ०–**रोज़-मर्रा**=हर रोज।

मलऊन–वि० (अ०) (बहु० मला-ईन) जिसपर लानत भेजी गई हो। निन्दनीय और शापित।

मलक–संज्ञा पुं० (अ०)(वि०मलकी) फरिश्ता। देव-दूत।

मलका–संज्ञा पुं० (अ० मलकः) १ बुद्धिकी विचक्षणता। प्रतिभा। २ दक्षता। संज्ञा स्त्री० दे० "मलिका।"

मलक-उल-मौत–संज्ञा पुं० (अ०) वह देवदूत जो जीवोंके प्राण लेता है। इजराईल।

मलगोबा–संज्ञा पुं० (तु०) १ गन्दगी। मल। २ मवाद। पीब। ३ कूड़ा-करकट। ४ एक प्रकारकी पकी हुई दाल जिसमें दही भी मिला होता है।

मलज़ूम–वि० (अ०) जो लाज़िम या जरूरी हो।

मलफ़ूज़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मलफ़ूज़ात) किसी महात्मा या धार्मिक आचार्यका वचन।

मलफ़ूफ़–वि० (अ०) १ लपेटा हुआ। २ लिफाफेमें बन्द किया हुआ।

मलबूस–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मलबूसात) पहननेके कपड़े। पोशाक। वि० जिसने लिबास या कपड़े पहने हों।

मलहूज़–वि० (अ०) जिसका लिहाज़ या ध्यान रखा गया हो।

मलामत–संज्ञा स्त्री (अ०) (भाव० मलामती) १ बुरा-भला कहना। झिड़कना। यौ०–लानत-मलामत। २ गन्दगी। ३ दूषित और हानिकर अंश।

मलायक–संज्ञा पुं० (अ०)"मलक"-का बहु०।

मलाल–संज्ञा पुं० (अ०) (भाव० मलालत) १ दुःख। रंज। २ उदासीनता। उदासी।

मलाहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ साँवलापन। २ चेहरेपरका नमक। लावण्य। सौन्दर्य। ३ कोमलता। मुलामियत।

मलिक–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मलूक) (स्त्री० मलिका) बादशाह। महाराजा।

मलिका–संज्ञा स्त्री० (अ० मलिकः) बादशाहकी पत्नी। महारानी।

मलीदा–संज्ञा पुं० (अ० मलीदः) १ चूरमा। २ एक प्रकारका बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।

मलीह–वि० (अ०) १ नमकीन। २ साँवला।

मलूल–वि० (अ०) दुःखी। चिन्तित।

मल्लाह–संज्ञा पुं० (अ०) नाव चलानेवाला। नाविक।

मल्लाही–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मल्लाहका कार्य या पद। २ मल्लाहकी मजदूरी।

मवक्किल–संज्ञा पुं० (अ० मुअक्किल) वह जो किसीको अपना वकील मुकर्रर करे।

मवहिद–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो केवल एक ईश्वरको मानता हो। एकेश्वरवादी।

मवाख़ज़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुआख़ज़ः) जवाब तलब करना। कैफ़ियत माँगना।

मवाज़ी–वि० (अ०) १ कुल। सब। २ प्रायः बराबर। लगभग। संज्ञा पुं० जोड़। योग।

मवाद–संज्ञा पुं० (अ० मवादः) १ "माद्दा" (तत्त्व) का बहुवचन २ रद्दी और निकृष्ट अंश। ३ पीब।

मवालात–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मित्रता। प्रेम। २ सहयोग। यौ० –**तर्क-मवालात**=असहयोग।

मवेशी–संज्ञा पुं० (अ०) पशु। ढोर।

मशअल–संज्ञा स्त्री० दे०"मशाल।"

मशक–संज्ञा स्त्री० दे० "मश्क।"

मशकूक–वि० दे० "मश्कूक।"

मशक्कत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मेहनत। परिश्रम। २ कष्ट।

मशग़ला–संज्ञा पुं० (अ० मश्ग़लः) (बहु० मशागिल) दिल-बहलाव।

मशगूल–वि० (अ०) किसी शग़्ल या काममें लगा हुआ।

मशरफ़–संज्ञा पुं० (अ०) ऊँचा या प्रतिष्ठाका स्थान।

मशरब–संज्ञा पुं० दे० "मिशरब।"

मशरिक़–संज्ञा पुं० (अ०) पूर्व।

मशरिक़ी–वि० (अ०) पूरबका।

मशरूअ–वि० (अ०) जो शरअ या धार्मिक व्यवस्थाके अनुकूल हो।

मशरूत वि० (अ०) (क्रि० वि०

मशरूतन्) जिसके बारेमें शर्तें की गई हों।

मशरूह–वि० (अ०) जिसकी शरह या टीका की गई हो।

मशवरत–संज्ञा स्त्री० दे० "मशवरा।"

मशवरा–संज्ञा पुं० (अ०) १ परामर्श। सलाह। २ षड्यन्त्र।

मशहूर–वि० (अ०) (बहु० मशाहीर) प्रख्यात। प्रसिद्ध।

मशायरा–संज्ञा पुं० दे० "मुशायरा।"

मशाल–संज्ञा स्त्री० (अ० मशअल) (बहु० मशाएल) एक प्रकारकी मोटी बत्ती जो लकड़ीपर कपड़ा लपेटकर बनाई और अधिक प्रकाशके लिये जलाई जाती है।

मशालची–संज्ञा पुं० (अ० मशअलची) मशाल दिखाने या जलानेवाला।

मशाहीर–संज्ञा पुं० बहु० (अ०) मशहूर या प्रसिद्ध लोग।

मशीयत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ इच्छा। ख़्वाहिश। २ मरज़ी। खुशी। यौ०–**मशीयत एज़िदी**=ईश्वरकी इच्छा।

मशीर–संज्ञा पुं० दे० "मुशीर।"

मश्क–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह खाल जिसमें पानी भरकर रखते या ले जाते हैं। पखाल।

मश्क़–संज्ञा स्त्री० (अ०) कोई कार्य बार बार करना जिसमें वह पक्का हो जाय। अभ्यास।

मश्कूक–वि० (अ०) जिसमें कुछ शक हो। संदिग्ध।

मश्कूर–वि० (अ०) (भाव मश्कूरी) जो शुक्रिया अदा करे। उपकृत। कृतज्ञ। शुक्रगुज़ार।

मश्मूल–वि० (अ०) जो शामिल किया गया हो। सम्मिलित।

मश्शाक़–वि० (अ०) १ जिसको खूब मश्क़ या अभ्यास हो। अभ्यस्त। २ दक्ष। कुशल।

मश्शाक़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मश्शाक होनेकी क्रिया या भाव। अभ्यास। २ दक्षता। कुशलता।

मश्शाता–संज्ञा स्त्री० (अ० मश्शातः) (बहु० मश्शातगाँ) १ वह स्त्री जो दूसरी स्त्रियोंकी कंघी-चोटी और शृंगार करती हो। २ कुटनी। दूती।

मस–संज्ञा पुं० (अ०) १ छूना। स्पर्श करना। २ छूने या स्पर्श करनेकी शक्ति। ३ सम्भोग। स्त्री-गमन। प्रसंग।

मसऊद–संज्ञा पुं० (अ०) १ भाग्यवान्। २ प्रसन्न। पवित्र।

मसजिद–संज्ञा स्त्री० (अ०) बहु० (मसाजिद) वह स्थान जहाँ मुसलमान एकत्र होकर सिजदा करते और नमाज पढ़ते हैं।

मसतूर, मसतूरात–वि० संज्ञा स्त्री० दे० "मस्तूर" और "मस्तूरात।"

मसदर–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मसादिर) १ मूल स्थान। उद्गम। २ क्रियाका सामान्य रूप जिससे किसी कामका होना या करना सूचित होता है। जैसे-खाना, पीना, सोना, लेना।

मसदाक–संज्ञा पुं० दे० "मिसदाक़।"

मसदूद–वि० (अ०) बन्द किया या रोका हुआ।

मसनद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बड़ा तकिया। गाव तकिया। २ अमीरों के बैठनेकी गद्दी।

मसनवी–संज्ञा० स्त्री० (अ०) एक प्रकारकी कविता जिसमें दो दो चरण एक साथ रहते हैं और दोनोंमें तुकान्त मिलाया जाता है।

मसनूअ–संज्ञा पुं० (अ०) वह चीज जो कारीगरीसे बनाई गई हो।

मसनूई–वि० (अ०) १ बनावटी। कृत्रिम। २ नकली। जाली।

मसरफ़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मसारिफ़) १ खर्च या उसकी मद। २ उपयोगिता।

मसरूक़-मसरूक़ा–वि० (अ० मसरूकः) चोरीका। चुराया हुआ।

मसरूफ़–वि० (अ०) १ जो खर्च किया गया हो। २ काममें लगा हुआ। मशगूल।

मसरूर–वि० (अ०) प्रसन्न।

मसल–संज्ञा स्त्री० (अ० मस्ल) कहावत। लोकोक्ति।

मसलक–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मसालक) मार्ग। रास्ता।

मसलख़–संज्ञा पुं० (अ०) वह स्थान जहाँ पशुओंकी हत्या की जाती है। बूचड़-खाना।

मसलन्–क्रि० वि० (अ० मस्लन्) मिसालके तौरपर। उदाहरण-स्वरूप। उदाहरणार्थ।

मसलहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) ऐसी गुप्तयुक्ति या भलाई जो सहसा जानी न जा सके। अप्रकट शुभ हेतु।

मसलहतन्–क्रि० वि० (अ०) मसलहतके खयालसे। जान-बूझकर और किसी उद्देश्यसे।

मसला–संज्ञा पुं० (अ० मसलः) (बहु० मसायल) १ कहावत। लोकोक्ति। २ विचारणीय विषय।

मसलूक–वि० (अ०) जिसके साथ सलूक या उपकार किया जाय।

मसलूब–वि० (फा०) १ पकड़ा हुआ। २ नष्ट भ्रष्ट किया हुआ। ३ वंचित किया हुआ। वि० (अ०) सूलीपर चढ़ाया हुआ।

मसलूब-उल्-हवास–वि० (अ०) वृद्धावस्थाके कारण जिसकी इंद्रियाँ शिथिल हो गई हों।

मसवदा–संज्ञा पुं० (अ० मुसव्वदह या मसव्वदः) १ काट-छाँट करने और साफ करनेके उद्देश्यसे पहली बार लिखा हुआ लेख। खर्रा। मसविदा। २ उपाय। युक्ति। तरकीब। मुहा०–**मसौदा गाँठना या बाँधना**=कोई काम करनेकी युक्ति या उपाय सोचना।

मसह–संज्ञा पुं० (अ०) १ हाथसे मलना। हाथ फेरना। २ सम्भोग। प्रसंग। ३ नमाज पढ़नेसे पहले मस्तक कान और गरदन धोना (वुजूका एक अंग)।

मसहफ़–संज्ञा पुं० दे० "मुसहफ़।"

मसाइब–संज्ञा पुं० (अ०) "मुसीबत"-का बहु०। विपत्तियाँ। कठिनाइयाँ।

मसाकिन–संज्ञा पुं०(अ०)"मसकन"-(रहनेका स्थान या घर)का बहु० ।

मसाकीन–संज्ञा पुं० (अ०) "मिसकीन" (दरिद्र) का बहु० ।

मसाजिद–संज्ञा स्त्री० (अ०) "मसजिद" का बहु० । मसजिदें ।

मसादिर–संज्ञा पुं० (अ०)"मसदर"-का बहु० ।

मसाना–संज्ञा पुं० (अ० मसानः) पेटके अन्दर वह थैली जिसमें पेशाब जमा रहता है । मूत्राशय ।

मसाफ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ युद्ध । २ युद्ध-क्षेत्र । लड़ाईका मैदान ।

मसाफ़त–संज्ञा स्त्री०(अ०)१ अंतर । दूरी । फासला । २ श्रम । थकावट ।

मसाम–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मसामात) शरीरपरके छोटे छोटे छिद्र । रोम-कूप ।

मसामात–संज्ञा पुं० (अ० "मसाम"-का बहु०) रोम-कूप ।

मसायब–संज्ञा पुं०(अ०)"मुसीबत"-का बहु० ।

मसायल–संज्ञा पुं० (अ० "मसला"-का बहु०) प्रश्न । समस्याएँ ।

मसारिफ़–संज्ञा पुं० (अ० "मसरफ़"-का बहु०) अनेक प्रकारके व्यय या उनकी मदें ।

मसालह–संज्ञा पुं० (अ० मसालेह "मसलहत" का बहु०) शुभ बातें । भलाइयाँ । संज्ञा पुं० (अ०) १ वे वस्तुएँ जिनसे कोई चीज प्रस्तुत होती है । सामग्री । उपकरण । २ औषधियों अथवा रासायनिक द्रव्योंका योग या समूह । ३ तेल । ४ आतिशबाज़ी ।

मसालहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आपसमें संधि करना । २ मेल-जोल ।

मसाला–संज्ञा पुं० दे० "मसालह ।"

मसालेहत–संज्ञा स्त्री० दे० 'मसालहत ।"

मसास–संज्ञा पुं० (अ०) १ मलना । २ संभोग या प्रसंग करना ।

मसाहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ नाप । माप । २ जमीनोंकी नाप-जोख ।

मसीह–संज्ञा पुं० (अ०) १ मित्र । दोस्त । २ वह जिसने दूर दूरके देशोंमें भ्रमण किया हो । ३ ईसाई धर्मके प्रवर्त्तक महात्मा ईसाकी उपाधि । ४ प्रेमिका जो उसी प्रकार अपने प्रेमियोंको जीवन-दान देती है जिस प्रकार ईसा मसीह रोगियों और मृतकोंको देते थे ।

मसीहा–संज्ञा पुं० दे० "मसीहा"

मसीहाई–संज्ञा स्त्री० (अ० मसीह) १ मसीहका पद या कार्य । २ मसीहकी तरहकी करामात । ३ प्रेमिकाका वह गुण जिससे वह अपने प्रेमियोंको जीवन-दान देती है ।

मसौदा–संज्ञा पुं० दे० "मसवदा ।"

मस्कन–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मसाकन) रहनेकी जगह । घर ।

मस्कनत संज्ञा स्त्री० (अ०) १ नम्रता । २ ग़रीबी । ३ तुच्छता ।

मस्ख़रा–संज्ञा पुं० (अ० मस्ख़रः)

बहुत हँसी-मजाक करनेवाला। हँसोड़ा। ठट्ठे-बाज। दिल्लगीबाज।

मसखरापन–संज्ञा पुं॰ दे॰ "मसखरी"

मसखरी–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰ मस्खर:) हँसी-ठट्ठा। मजाक।

मस्त–वि॰ (फा॰ मि॰ सं॰ मत्त) १ जो नशे आदिके कारण मत्त हो। मतवाला। मदोन्मत्त। मत्त। २ सदा प्रसन्न और निश्चिंत रहनेवाला। ३ यौवन-मदसे भरा हुआ। ४ जिसमें मद हो। मदपूर्ण। ५ परम-प्रसन्न। मग्न। आनंदित।

मस्तगी–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) एक वृक्षका गोंद जो औषधके काम आता है।

मस्ताना–संज्ञा पु॰ (अ॰ मस्तान:) वह जो मस्त हो गया हो। क्रि॰ वि॰ मस्तोंकी तरह। क्रि॰ अ॰ मस्त होना। मत्त होना।

मस्ती–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ मस्त होनेकी क्रिया या भाव। मत्तता। मतवालापन। २ वह स्थान जो कुछ विशिष्ट पशुओंके मस्तक, कान, आँख आदिके पास उनके मस्त होनेके समय होता है। मद। ३ वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा पत्थरों आदिमें होता है।

मस्तूर–वि॰ (अ॰ सतर=पंक्ति) १ सतरों या पंक्तियोंके रूपमें लिखा हुआ। लिखित। २ उल्लिखित। उक्त। वि॰ (अ॰ सत्र=परदा) परदेमें छिपा हुआ।

मस्तूरात–संज्ञा स्त्री॰ बहु॰ (अ॰ मस्तूर:का बहु॰) १ स्त्रियाँ। औरतें। २ भले घरकी स्त्रियाँ।

मस्तूल–संज्ञा पुं॰ (पुर्तगाली मस्टो) नावोंके बीचमें खड़ा किया हुआ वह शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।

मस्मूअ, मस्मूआ – वि॰ (अ॰ मस्मूअऽ) सुना हुआ। श्रुत।

मह–संज्ञा पुं॰ (फा॰ माहका संक्षिप्त रूप) चाँद। चन्द्रमा।

महकमा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ महकम:) किसी विशिष्ट कार्यके लिए अलग किया हुआ विभाग। सीगा।

महकूम–वि॰ (अ॰) १ जिसके ऊपर हुकुम चलाया जाय। २ अधीनस्थ। आश्रित।

महकूमा–वि॰ (अ॰ महकूम:) जिनके ऊपर हुकुम चलाया या शासन किया जाय। शासित।

महज–वि॰ (अ॰) जिसमें और किसी वस्तुका मेल न हो। शुद्ध। क्रि॰ वि॰ सिर्फ़। केवल।

महज़-क़ैद–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) ऐसी क़ैद जिसमें मेहनत न करनी पड़े। सादी सजा।

महजबीं–वि॰ दे॰ "माहजबीं।"

महज़र–संज्ञा पुं॰ (अ॰) घोषणा-पत्र। सूचना-पत्र।

महज़ूज़–वि॰ (अ॰) प्रसन्न। खुश।

महज़ूफ़–वि॰ (अ॰) १ लिखने आदिके समय छोड़ा हुआ (अक्षर आदि) २ स्पष्ट उल्लेख न होनेपर भी जिसका आशय निकलता हो।

महजूब–वि॰ (अ॰) (संज्ञा महजूबी) १ छिपा हुआ। गुप्त।

२ (उत्तराधिकार आदिसे) वंचित किया हुआ। लज्जाशील।

महजूर–वि० (अ०) (संज्ञा महजूरी) १ अलग किया हुआ। विभक्त। २ छोड़ा हुआ। परित्यक्त। ३ दुःखी और चिन्तित।

महज़ूर–वि० (अ०) (बहु० महज़ूरात) नियमविरुद्ध। वर्जित।

महताब–संज्ञा पु० (फा०) १ चन्द्रमा। चाँद। २ चन्द्रमाकी चाँदनी। चन्द्रिका।

महताबी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ जलाशयके पासकी वह छोटी इमारत जिसमें बैठकर चाँदनी रातको आनंद लेते हैं। २ एक प्रकारकी आतिशबाजी। ३ चकोतरा नीबू।

महदी–संज्ञा पुं० (अ०) १ ठीक रास्तेपर चलनेवाला। २ बारहवें इमाम जिन्हें शिया मुसलमान अबतक जीवित मानते हैं।

महदूद–वि० (अ०) १ जिसकी हद बाँध दी गई हो। सीमित। परिमित। २ जिसकी ठीक ठीक व्याख्या कर दी गई हो।

महदूम–वि० (अ०) पूर्णरूपसे नष्ट किया हुआ। विनष्ट।

महफिल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मजलिस। सभा। समाज। जलसा। २ नाच-गाना होनेका स्थान।

महफूज़–वि० (अ०) जिसकी अच्छी तरह हिफाजत की गई हो। भली-भाँति रक्षित। मुहा०–**महफूज़ रखना**=सब प्रकारकी आपत्तियों आदिसे रक्षा करना।

महबस–संज्ञा पुं० (अ०) कारागार। जेलखाना।

महबूब–संज्ञा पुं० (अ०)(कि० वि० महबूबाना) वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रिय। प्रेम-पात्र।

महबूबियत–संज्ञा स्त्री० (अ० महबूब+फा० प्रत्य०) महबूब होनेका भाव। प्रेम। प्यार।

महब्बत–संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रेम।

महबूस–वि० (अ०) जो महबसमें बन्द किया गया हो। क़ैदी।

महमिल–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० महामिल) १ आधार। २ ऊँटपर कसनेका कजावा।

महमूदी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक प्रकारकी मलमल। २ एक प्रकारका सिक्का। महमूदसम्बन्धी।

महमूलह-वि० (अ०) जिसपर कोई भार हो। लदा हुआ। २ जिसमें कुछ विशेष अर्थ छिपा हो। ३ प्रयुक्त करनेके योग्य।

महमेज़–संज्ञा स्त्री० दे० "मिहमीज़"

महरम–संज्ञा पुं० (अ०) बहु० महरमात) (भाव० महरमियत) १ वह जिसके साथ हार्दिक मित्रता हो। अंतरंग मित्र। २ वह जो जनानखानेमें जा सकता हो या जिसके सामने स्त्रियाँ हो सकती हों। (मुसलमानोंमें कुछ विशिष्ट संबंधियोंको ही यह अधिकारप्राप्त होता है।) ३ वह जिससे बहुत घनिष्ठता हो। सुपरिचित।

संज्ञा स्त्री० स्त्रियोंकी कुरती या अँगिया आदिका वह अंश जिसमें स्तन रहते हैं। कटोरी।

महराब–संज्ञा स्त्री० (अ० मिहराब) द्वार आदिके ऊपरका अर्द्ध-मंडलाकार भाग।

महराब-दार–वि० (अ० + फा०) जिसमें मेहराब हो। कमानीदार।

महरू–वि० (फा०) जिसका मुख चन्द्रमाके समान हो। चन्द्रमुखी

महरूम–वि० (अ०) १ जिसे कोई वस्तु प्राप्त न हुई हो। वंचित। २ अभागा बद-नसीब।

महरूमियत, महरूमी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ महरूम होनेका भाव। वंचित होना। २ अभाग्य।

महरूस–वि० (अ०) १ जिसकी देख-रेख होती हो। २ हिरासतमें रखा हुआ।

महरूसा–संज्ञा पुं० (अ०) किलेबन्दीवाली जगह।

महल–संज्ञा पुं० (अ०) १ बहुत बड़ा और बढ़िया मकान। प्रासाद। २ रनिवास। अन्तःपुर ३ बड़ा कमरा। ४ अवसर। मौका। यौ०-**बर-महल**=उपयुक्त।

महलका–वि० दे० "माहलका।"

महलसरा–संज्ञा स्त्री० (अ०) जनाना महल। अन्तःपुर।

महली–संज्ञा पुं० (अ० महल) अन्तःपुरका चौकीदार। हिजड़ा।

महल्ला–संज्ञा पुं० (अ० महल्लाः) शहरका कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुतसे मकान हों। टोला। पुरा।

महल्लेदार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) किसी महल्लेका प्रधान व्यक्ति। महल्ला-मुख़्तार। मीर-महल्ला।

महवश–वि० दे० "माहवश।"

महवियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ महो या अनुरक्त होनेका भाव २ सौन्दर्य। आकर्षण।

महशर–संज्ञा पुं० (अ०) मुसल्मानी धर्मके अनुसार वह अन्तिम दिन जिसमें ईश्वर सब प्राणियोंका न्याय करेगा। मुहा०–**महशर बरपा करना**=बहुत अधिक आन्दोलन करना। आकाश सिरपर उठा लेना।

महसूब–वि० (अ०) १ जिसका हिसाब लगाया गया हो। २ जो हिसाबमें लिखा गया हो।

महसूर–वि० (अ०) चारों ओरसे घिरा हुआ। जिसपर घेरा पड़ा हो। (नगर या किला आदि।)

महसूरीन–संज्ञा पुं० बहु० (अ०) चारों ओरसे घिरे हुए लोग।

महसूल–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह धन जो राजा या कोई अधिकारी किसी विशिष्ट कार्यके लिये ले। कर। २ भाड़ा। किराया। ३ मालगुज़ारी। लगान।

महसूलदार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह जो किसी प्रकारका महसूल अदा करता हो। कर देनेवाला। वि० जिसपर कोई महसूल या कर लगता हो।

महसूली–वि० (अ०) १ जिसपर किसी प्रकारका महसूल या कर लगता हो। संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसका महसूल मिलता हो।

महसूस–वि०(अ०) १ जिसका ज्ञान या अनुभव हुआ हो। जो मालूम किया गया हो। २ जिसका ज्ञान या अनुभव हो सके जो। मालूम किया जा सके।

महसूसात–संज्ञा स्त्री० बहु० (अ०) वे पदार्थ जिनका ज्ञान या अनुभव होता हो।

महाज़–संज्ञा पुं० दे० "मुहाज़।"

महाबत–संज्ञा पुं०(अ०) भय। डर

महाबा–वि० (अ०महाबः) भय। डर। यौ०–**बेमहाबा**=निर्भयतापूर्वक।

महार–संज्ञा स्त्री० (फा०) ऊँटकी नकेल। यौ०–**बे-महार**=अनियंत्रित।

महारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दक्षता। निपुणता। २ अभ्यास।

महाल–संज्ञा पुं० (अ० "महल" का बहु०) १ महल्ला। टोला। पाड़ा। २ ज़मीनका वह विभाग जिसमें कई गाँव हों। हिस्सा।

महाला–संज्ञा पुं० (अ० महालः) इलाज। उपाय।

महीब–वि० दे० "मुहीब।"

महो–वि० (अ० मह्व) १ मिटाया या नष्ट किया हुआ। २ पूर्ण रूपसे रत। ३ इतना अनुरक्त या ध्यानमें मग्न कि अपने आपेमें न हो।

मह्र–संज्ञा पुं० (अ०) वह धन जो मुसलमानोंमें स्त्रीको विवाहके समय ससुरालसे मिलता है।

मह्व–वि० दे० "महो।"

मह्वर–संज्ञा पुं० (अ०) धुरी। अक्ष।

माँदगी–संज्ञा स्त्री० दे० "मान्दगी।"

माँदा–वि० दे० "मान्दा।"

मा–संज्ञा पुं० (अ०) १ जल। पानी। २ रस। तरल सार। उप० एक उपसर्ग जो शब्दोंके आगे लगकर "कौन" और "उस" आदिका सूचक होता है। जैसे–**मा-बाद**–इसके बाद। **मा-सिवा**–इसके सिवा।

मा-उल्-लहम–संज्ञा पुं० (अ०)एक प्रकारका रस जो मांस और औषधोंके योगसे बनाया जाता है और बहुत पौष्टिक माना जाता है।

मा-क़बल–क्रि० वि० (अ०) इसके पहले।

माक़ूस–वि० (अ० मअकूस)औंधाया हुआ। उलटा। विपरीत।

माकूल–वि० (अ० मअकूल) (बहु० माकूलात) १ उचित। वाजिब। २ लायक। ३ अच्छा। बढ़िया। ४ जिसमें वाद-विवादमें प्रतिपक्षीकी बात मान ली हो।

माकूलियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ माकूलका भाव। २ सम्भावना।

माख़ज़–संज्ञा पुं० (फा०) मूल। उद्गम।

माख़ूज़–वि० (अ०) जिसपर कोई अभियोग लगाया गया हो। अभियुक्त।

माखूज़ी–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो किसी अभियोगमें पकड़ा गया हो। गिरफ़्तार किया हुआ।

माखूलिया–संज्ञा पुं० दे० "मालीखूलिया।"

माज़रत–संज्ञा स्त्री० (अ०) उज्र या हीला करना। बहाना।

माजरा–संज्ञा पुं० (अ०) १ घटना। २ घटनाका विवरण। हाल।

माजिद–वि० (अ०) (स्त्री०माजिदा) पूज्य। मान्य। जैसे–वालिद-माजिद।

माज़िया–क्रि० वि० (अ० माज़ियः) इसके पहले। पूर्वमें।

माज़ी–वि० (अ०) भूतपूर्व। पहलेका। गत कालका। संज्ञा पुं० भूत काल। बीता हुआ समय।

माज़ू–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका वृक्ष और उसका फल। माजूफल।

माज़ून–संज्ञा स्त्री० (अ० मअजून) औषधके रूपमें काम आनेवाला कोई मीठा अवलेह।

माज़ूर–वि० (अ० मअज़ूर) १ जिसमें उज्र हो। २ जो कामके योग्य न रह गया हो। ३ असमर्थ।

माज़ूरी–संज्ञा स्त्री० (अ० मअज़ूर) असमर्थता।

माज़ूल–वि० (अ० मअज़ूल) १ जो बेकार कर दिया गया हो। २ अपने पद आदिसे हटाया हुआ।

माज़ूली–संज्ञा स्त्री० (अ०) माज़ूल होनेकी क्रिया या भाव। पदच्युति।

मात–संज्ञा स्त्री० (अ०) पराजय। हार। क्रि० प्र० करना। खाना। देना।

मातदिल–वि० (अ० मुअतदिल) १ जो न बहुत उग्र हो और न बहुत कोमल। २ जो न बहुत ठंढा हो और न गरम।

मातबर–वि० (अ० मुअतबर) १ जिसका एतबार किया जाय। विश्वसनीय। २ सच्चा। ठीक।

मातबरी–संज्ञा स्त्री० (अ० मुअतबर) मातबर होनेका भाव। विश्वसनीयता।

मातम–संज्ञा पुं० (अ०) वह दुःख जो किसीके मरनेपर किया जाता है। शोक। सोग।

मातम-कदा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ लोग बैठकर मातम करें।

मातम-खाना–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) वह स्थान जहाँ बैठकर लोग शोक करते हैं।

मातम-ज़दा–वि० (अ० + फा०) जिसका कोई निकटस्थ सम्बन्धी मर गया हो। जो शोक कर रहा हो। शोक-ग्रस्त।

मातम-दारी–संज्ञा स्त्री० (अ० + फा०) शोक मनाना।

मातम-पुरसी–संज्ञा स्त्री० (अ० + फा०) किसीके मरनेपर उसके सम्बन्धियोंके प्रति सहानभूति या समवेदना प्रकट करना।

मातमी–वि० (अ०) मातम या शोक प्रकट करनेवाला। शोक-सूचक। जैसे-मातमी सूरत।

मातहत–वि० (अ०) १ अधीन या आश्रयमें रहनेवाला। अधीनस्थ। २ निम्न कोटिका। छोटी श्रेणीका।

मादन–संज्ञा पुं० दे० "मअदन।" मादनके विकारी शब्दोंके लिए दे० "मअदन" के साथ।

मादर–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० मातृ) माता। जननी। माँ।

मादर-ख़्वाही–संज्ञा स्त्री० (फा०) माँकी गाली।

मादर-ज़ाद–वि० (फा०) जैसा माताके गर्भमें उत्पन्न हुआ था, वैसा ही। वैसा ही जैसा जन्म-समय था। जैसे–मादर-जाद नंगा।

मादर-ब-ख़ता–वि० (फा०) १ अपनी माताके साथ भी अनुचित कर्म या बुरा काम करनेवाला। २ बहुत बड़ा दुष्ट और नीच।

मादरी–वि० (फा०) १ मातासे सम्बन्ध रखनेवाला। २ माताका। जैसे–मादरी ज़बान।

मादरी-ज़बान–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह भाषा जो बालक अपनी मातासे सीखता है। मातृ-भाषा।

मादा–संज्ञा स्त्री० (फा०) स्त्री जातिका प्राणी। "नर"का उलटा (जीव-जन्तुओंके लिये)।

मादियान–संज्ञा स्त्री०(फा०)घोड़ी।

मादीन–संज्ञा स्त्री० दे० "मादा।"

मादूद–वि० दे० "मअदूद।"

मादूम–वि० (अ० मअदूम) जिसका अस्तित्व न रह गया हो। नष्ट।

माद्दा–संज्ञा पुं० (अ० माद्दः) १ मूलतत्त्व। २ योग्यता। क़ाबिलीयत। ३ मवाद। पीब।

माद्दी–वि० (अ०) १ माद्दा या तत्त्वसे सम्बन्ध रखनेवाला। तत्त्व-सम्बन्धी। २ स्वाभाविक। प्राकृतिक।

मानअ–संज्ञा पुं० (अ०) १ मनाही। रुकावट। २ आपत्ति। उज्र। ३ वह जो मना करे या रुकावट डाले। संज्ञा पुं० दे० "माना।"

मानवी–(वि० अ० मअनवी) १ मानी या अर्थसे सम्बन्ध रखनेवाला। २ भीतरी। आन्तरिक। ३ अभिप्रेत (अर्थ आदि)।

माना–संज्ञा पुं० (इ०) एक प्रकारका मीठा रेचक। निर्यास या गोंद।

मानिन्द–वि० (फा०) समान। तुल्य। ऐसा।

मानी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अर्थ। मतलब। २ अभिप्राय। उद्देश्य।

यौ०–**बे-मानी**=जिसका कोई अर्थ न हो। व्यर्थका। बे-मतलब।

मानूस–वि० (अ०) जिसके साथ उन्स या प्रेम हो गया हो। काफी मेल-जोलमें आया हुआ। हिला-मिला।

मान्दगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ थकावट। शिथिलता। २ रुग्णता। बीमारी।

मान्दा–वि० (फा० मान्दः) १ बाकी बचा हुआ। अवशिष्ट। २ पीछे छूटा हुआ। ३ थका हुआ। शिथिल। ४ बीमार। रोगी।

यौ०–**दर-मान्दा**=१ थका हुआ।

शिथिल । २ जिसके पास कोई साधन न हो ।

माफ़–वि० (अ० मुआफ़) जिसे क्षमा कर दिया गया हो ।

माफ़िक़–वि० दे० "मुआफ़िक़ ।"

माफ़िक़त–संज्ञा स्त्री० दे० "मुआफ़िक़त ।"

माफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ० मुआफ़ी) १ क्षमा । २ वह भूमि जिसका कर सरकारसे माफ़ हो ।

माफ़ी-उल्-ज़मीर–संज्ञा पुं० (अ०) विचार । इरादा ।

माफ़ी-दार–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) वह जिसे ऐसी ज़मीन मिली हो जिसका लगान न देना पड़े ।

मा-बक़ा–वि० (अ०) बाक़ी बचा हुआ । अवशिष्ट ।

माबद–संज्ञा पुं० दे० "मअबद ।"

मा-बाद–क्रि० वि० (अ०) किसीके बादमें ।

माबूद–संज्ञा पुं० दे० "मअबूद ।"

मा बैन–क्रि० वि० (अ०) इस बीचमें । इतने समयके बीचमें ।

मामन–संज्ञा पुं० (अ०) सुरक्षित स्थान ।

मामला–संज्ञा पुं० (अ० मुआमलः) १ व्यापार । काम । २ पारस्परिक व्यवहार । ३ व्यवहार या व्यापारसम्बन्धी विवादास्पद विषय । ४ झगड़ा । विवाद । ५ मुकद्दमा । अभियोग । ६ संभोग । विषय ।

मामा–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) दासी । नौकरानी । मज़दूरनी ।

मामागरी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) दासीका काम या पद ।

मामूर–वि० (अ० मअमूर) १ भरा हुआ । पूर्ण । २ नियुक्त किया हुआ । मुकर्रर किया हुआ ।

मामूल–संज्ञा पुं० (अ० मअमूल) रीति । रवाज । रस्म ।

मामूली–वि० (अ० मअमूल) साधारण । सामान्य ।

मायल–वि० (अ०) १ झुका हुआ । प्रवृत्त । रुजू । २ मिश्रित ।

मायह्–संज्ञा स्त्री० (फ़ा० मि० सं० माया) सम्पत्ति । धन । पूँजी ।

माया–संज्ञा पुं० दे० "मायह् ।"

मायूब–वि० (अ० मअयूब) १ जिसमें ऐब या दोष हो । २ बुरा । ख़राब । ३ निन्दनीय ।

मायूस–वि० (अ०) जिसकी आशा टूट गई हो । निराश । ना-उम्मेद ।

मायूसी–संज्ञा स्त्री० (अ०) निराश होनेकी अवस्था । निराशा ।

मार–संज्ञा पुं० (फ़ा०) साँप । सर्प ।

मारका–संज्ञा पुं० (अ० मअरकः) युद्ध-क्षेत्र । रणभूमि । मुहा०–**मारकेका**=महत्त्वपूर्ण ।

मारफ़त–अव्य० (अ०) द्वारा । जरियेसे । संज्ञा स्त्री० १ पहचान । शनाख़्त । २ ईश्वरीय या आध्यात्मिक ज्ञान । ३ द्वार । साधन ।

मारूत–संज्ञा पुं० (फ़ा०) एक फ़रिश्तेका नाम ।

मारूफ़–वि० (अ० मअरूफ़) प्रसिद्ध । संज्ञा पुं० गणितमें ज्ञात राशि ।

माल–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० अम-

वाल) १ सम्पत्ति। धन। दौलत। २ कोई बढ़िया चीज़। ३ सुन्दरी। संज्ञा पुं० दे० "मशाल।"

माल-ए-ग़नीमत–संज्ञा पुं० (अ०) लूटका माल। लूटकर एकत्र की हुई संपत्ति।

माल-ए-मन्क़ूलह–संज्ञा पुं० (अ०) वह सम्पत्ति जो एक स्थानसे हटाकर दूसरे स्थानपर रखी जा सके। चल-संपत्ति।

माल-ए-मुफ़्त–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) मुफ़्तका माल। बिना परिश्रमके प्राप्त की हुई सम्पत्ति। मुहा०–**माले मुफ़्त दिल बेरहम**=बिना परिश्रम अर्जित की हुई संपत्ति बहुत लापरवाहीसे खर्च की जाती है।

माल-ए-लावारिस–संज्ञा पुं० (अ०) वह माल जिसका कोई वारिस न हो। वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

माल-ए-वक़्फ़–संज्ञा पुं०(अ०)किसी धार्मिक कार्यके लिये उत्सर्ग किया हुआ धन। धर्मके लिये छोड़ा या दान किया हुआ माल।

मालकियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) मालिक होनेका भाव। स्वामित्व।

माल खाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ माल-असबाब रहता है। भंडार। कोश।

माल-गुज़ार–संज्ञा पुं०(अ०+फा०) १ एक प्रकारके ज़मींदार। २ वह जो सरकारको मालगुज़ारी या लगान देता है।

माल-गुज़ारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) सरकारको दिया जानेवाला भूमि-कर।

माल-ग़ैर-मन्क़ूला–संज्ञा पुं० (अ०) वह सम्पत्ति जो अपने स्थानसे हटाई न जा सकती हो। अचल संपत्ति। जैसे—मकान,बाग आदि।

माल-ज़ब्ती–संज्ञा पुं० (अ०) कुर्क या ज़ब्त किया हुआ माल। वह संपत्ति जिसपर देना आदि चुकानेके लिए अधिकार कर लिया गया हो।

माल-ज़ादा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) (स्त्री० माल-जादी) वेश्या-पुत्र। रंडीके गर्भसे उत्पन्न लड़का।

माल-ज़ामिन–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो किसीके ऋण चुकानेका जिम्मा या भार ले।

माल-ज़ामिनी–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसीका ऋण आदि चुकानेका ज़िम्मा या भार अपने ऊपर लेना।

मालदार–वि० (अ०+फा०) जिसके पास बहुत माल या संपत्ति हो। संपन्न। धनवान्। अमीर।

मालदारी–वि० (अ० + फा०) संपन्नता। दौलतमन्दी। अमीरी।

माल-मक़रूका–संज्ञा पुं० (अ०)कुर्क किया हुआ धन। वह धन जिसपर ऋण चुकानेके लिये अधिकार कर लिया गया हो।

माल-मतरूका–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) तरके या उत्तराधिकारमें मिली हुई सम्पत्ति। वरासतमें मिला हुआ माल।

माल-मता–संज्ञा पुं० (अ० माल व मुताअ) धन-दौलत । सम्पत्ति ।

माल-मस्त–वि० (अ०+फा०) जो अपनी सम्पन्नताके कारण किसीकी परवा न करे । धनवान् होनेके कारण सुखी, लापरवाह या मस्त रहनेवाला ।

माल-मस्ती–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) धनका घमंड । दौलतमन्द होनेकी शेखी या लापरवाही ।

मालवर–वि० दे० "मालदार ।"

माल-शराकत–संज्ञा पुं० (अ०) वह सम्पत्ति जिसपर सब लोगोंका सम्मिलित अधिकार हो । अविभक्त सम्पत्ति । बिना बाँटी हुई जायदाद ।

माल-सायर–संज्ञा पुं० (अ०) भूमि-करके अतिरिक्त अन्य साधनोंसे होनेवाली राजकीय आय ।

माला-माल–वि० (अ० माल) बहुत सम्पन्न । अमीर ।

मालिक–संज्ञा पुं० (अ०) १ ईश्वर । २ स्वामी । ३ पति । शौहर ।

मालिक-अराज़ी–संज्ञा पुं० (अ०) खेत या अराज़ीका मालिक । जमींदार ।

मालिकाना–वि० (अ०) मालिकका । स्वामीका । संज्ञा पुं० वह हक या धन जो किसी चीज़के मालिकको उसके स्वामित्वके बदलेमें मिलता हो ।

मालिकी–संज्ञा पुं० (अ०) सुन्नी मुसलमानोंका एक संप्रदाय । संज्ञा स्त्री० (अ० मालिक) मिल कियत । स्वामित्व ।

मालियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सम्पत्ति । धन । पूँजी । २ दाम । मूल्य ।

मालिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मलनेकी क्रिया । मलना-दलना । २ रगड़कर चमकीला बनाना । मुहा०–**जी मालिश करना**=जी मिचलाना । कै या उलटी मालूम होना ।

माली–वि० (अ०) १ मालसम्बन्धी । धनका । जैसे–माली हालत । २ राज-करसम्बन्धी । ३ अर्थशास्त्र-सम्बन्धी ।

मालीख़ूलिया–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका उन्माद जिसमें रोगी बहुत दुःखी और चुपचाप रहता है ।

मालूफ़–वि० (अ०) १ सुपरिचित । २ परमप्रिय ।

मालूम–वि० (अ० मअलूम) जाना हुआ । ज्ञात ।

माश–संज्ञा पुं० (अ० मि० सं० माष) १ घर गृहस्थीका सामान । २ मूँग । ३ उड़द ।

माशा–संज्ञा पुं० (फा० माश) १ लोहारोंकी सँड़सी । २ आठ रत्तीकी तौल ।

माशा-अल्लाह–(अ०) ईश्वर उसे बुरी नजरसे बचावे । ईश्वर कुदृष्टिसे उसकी रक्षा करे । (किसी सुन्दर वस्तु या अच्छे कार्यको देखकर उसके कर्त्ता आदिके सम्बन्धमें बोलते हैं ।)

माशूक़—वि० (अ० मअशूक़) जिसके साथ इश्क़ या प्रेम किया जाय। प्रेम-पात्र। प्रेमिका।

माशूक़ाना—वि० (अ० मअशूक़ानः) माशूक़ोंका-सा। प्रेम-पात्रोंकी तरहका।

माशूक़ी—संज्ञा स्त्री० (अ० मअशूक़) १ माशूक होनेकी क्रिया या भाव। २ सुन्दरता। सौन्दर्य।

माश्की—संज्ञा पुं० (फा० मश्क) मश्कमें पानी भरकर ले जानेवाला। भिश्ती। सक़्क़ा।

मा-सबक़—वि० (अ०) जिसका पहले उल्लेख हो चुका हो। पहले कहा हुआ। उक्त।

मा-सलफ़—वि०(अ०) जो पूर्वकालमें हो चुका हो। बीता हुआ। विगत।

मासियत—संज्ञा स्त्री० (अ० मअसियत) (बहु० मआसी) १ आज्ञा न मानना। २ अपराध। गुनाह।

मा-सिवा—अव्य०(अ०)इसके सिवा। इसके अतिरिक्त।

मासूम—वि० (अ० मअसूम) १ बेगुनाह। निरपराध। २ जो कुछ न जानता हो। निरीह।

मासूमियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मासूम होनेका भाव। २ निरीहता। ३ शैशव काल।

माह—संज्ञा पुं० (फा०) १ चन्द्रमा। चाँद। २ मास। महीना।

माह-ए-क़मरी—संज्ञा पुं० (फा०) चान्द्र-मास।

माह-ए-शम्सी—संज्ञा पुं० (फा०) सौर-मास।

माह-जबीं—वि० (फा०) चन्द्रमाके समान मुखवाला। बहुत सुंदर। (प्रिय या नायिका आदिके लिये।)

माहजर—वि० (अ०) उपस्थित। मौजूद। वर्तमान।

माहताब—संज्ञा पुं० (फा०) १ चाँद। २ चन्द्रमाकी चाँदनी।

माहताबी-वि० (फा०) चन्द्रमाकी चाँदनीमें रखकर तैयार किया हुआ (औषध आदि)। जैसे—माहताबी-गुलकन्द।

माह-ब-माह—क्रि० वि० (फा०) महीने महीने। हर महीने।

माहर—वि० दे० "माहिर।"

माहरू—वि० दे० "माहजबीं।"

माह-लक़ा—वि० दे० "माहजबीं।"

माहवश—वि० (अ०) चन्द्रमाके समान सुंदर मुखवाला। बहुत सुन्दर।

माहवार—क्रि० वि० (फा०) महीने महीने। हर महीने। प्रति मास।

माहवारी—वि० (फा०) हर मासका। संज्ञा स्त्री० स्त्रियोंका मासिक धर्म।

मा-हसल—संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो उत्पन्न और प्राप्त हो। उपज। २ प्राप्ति। लाभ। ३ परिणाम।

माहियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी वस्तुका वास्तविक तत्त्व, गुण या स्वरूप। असलियत।

माहियाना—संज्ञा पुं० (फा० माहियानः) मासिक वेतन।

माहिर—वि० (अ०) अच्छा जानकार।

माही—संज्ञा स्त्री० (फा०) मछली।

माहीख़्वार–संज्ञा पुं० + (फा०) बगला।

माही-पुश्त–वि० (फा०) जिसकी पीठ या तल ऊपरकी ओर उभरा हुआ हो। उभारदार। उभरवाँ।

माही-फ़रोश–संज्ञा पुं०(फा०)मछली पकड़नेवाला। मछुआ।

माही-मरातिब–संज्ञा पुं० (फा०) मुसलमान राजाओंके आगे हाथीपर चलनेवाले सात झंडे जिनपर मछली और ग्रहों आदिकी आकृतियाँ होती थीं।

माहीगीर–संज्ञा पुं० (फा०) मछली पकड़नेवाला मछुआ।

मिअयार–संज्ञा पुं० (अ०)१ कसौटी। २ सोना-चाँदी तौलनेका काँटा।

मिक़द–संज्ञा स्त्री० (अ० मिकअदः) गुदा। मल-द्वार।

मिक़दार–संज्ञा स्त्री० (अ०) परिमाण। मात्रा।

मिक़ना–संज्ञा पुं० (अ० मिक़नः) एक प्रकारकी ओढ़नी या चादर।

मिक़नातीस–संज्ञा पुं० दे० "मक़नातीस।"

मिक़यास–संज्ञा पुं० (अ०) १ अन्दाज़। अनुमान। क़यास। २ वह चीज़ जिससे अन्दाज़ या अनुमान किया जाय। जैसे-**मिक़यास-उल-हरारत**=तापमापक यंत्र।

मिक़राज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) कैंची। कतरनी।

मिज़ह–संज्ञा स्त्री० (फा०) आँखकी पलक।

मिज़गाँ–संज्ञा स्त्री० (फा० मिज़ह का बहु०) आँखोंकी पलकें।

मिज़मार–संज्ञा पुं० (अ०) १ बाँसुरी। बंशी। २ बाजा। वाद्य। ३ घुड़दौड़का मैदान।

मिज़राब–संज्ञा स्त्री० (अ०) तारका वह नुकीला छल्ला जिससे सितार आदि बजाते हैं।

मिज़ह–संज्ञा स्त्री० (फा०) (बहु० मिज़गाँ) आँखकी पलक।

मिज़ाज–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसी पदार्थका वह मूल गुण जो सदा बना रहे। तासीर। २ प्रवृत्ति। स्वभाव। प्रकृति। ३ शरीर या मनकी दशा। तबीयत। दिल। मुहा०–**मिज़ाज ख़राब होना**=मनमें अप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना। अस्वस्थ होना। **मिज़ाज-पुरसी**=यह पूछना कि आपका मिज़ाज कैसा है। **मिज़ाज बिगाड़ना**=किसीके मनमें क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना। **मिज़ाज पाना**= १ किसीके स्वभावसे परिचित होना। २ किसीको अनुकूल या प्रसन्न देखना। **मिज़ाज पूछना**=यह पूछना कि आपका शरीर तो अच्छा है। ४ अभिमान। घमंड। शेख़ी। मुहा०–**मिज़ाज न मिलना**=घमंडके कारण किसीसे बात न करना।

मिज़ाजन–संज्ञा स्त्री० दे० 'मिज़ाजो।

मिज़ाज़न–क्रि० वि० (अ०) मिज़ाज या प्रकृतिके विचारसे।

मिज़ाजो—संज्ञा स्त्री० (अ०मिजाज) बहुत अभिमान करनेवाली स्त्री (व्यंग और तिरस्कारसूचक)।

मिनक़ार—संज्ञा पुं (अ० मिन्कार) १ पक्षीकी चोंच। चंचु। २ लकड़ीमें छेद करनेका बरमा।

मिन-जानिब—क्रि० वि० (अ०) किसीकी ओरसे।

मिन जुमला—क्रि० वि० (अ०) इन सबमेंसे।

मिनहा—वि० (अ०) घटाया या कम किया हुआ।

मिनहाई—संज्ञा स्त्री० (अ० मिनहा) घटाने या कम करनेकी क्रिया।

मिनार—संज्ञा स्त्री दे० "मीनार।"

मिन्तक़ा—संज्ञा पुं (अ० मिन्तकः) १ कमरबन्द। पटका। २ क्रान्तिवृत्त। ३ कटिबन्ध।

मिन्नत—संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रार्थना।

मिफ़ताह—संज्ञा स्त्री० (अ०) कुंजी।

मिम्बर—संज्ञा पुं० (अ०) मसजिदमें वह ऊँचा चबूतरा जिसपर बैठकर मुल्ला आदि उपदेश करते और खुतबा पढ़ते हैं।

मियाँ—संज्ञा पुं० (फा०) १ स्वामी। मालिक। २ पति। खसम। ३ बड़ोंके लिये सम्बोधन। महाशय। ४ मुसलमान।

मियाद—संज्ञा स्त्री दे० "मीयाद।"

मियान—संज्ञा पुं० (फा०) १ किसी चीजका मध्यभाग। २ कमर। ३ तलवारका खाना। म्यान।

मियाना—वि० (फा० मियानः) मझोले आकारका। न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा। संज्ञा पुं० १ केन्द्र। मध्यभाग। २ एक प्रकारकी पालकी।

मियानी—संज्ञा स्त्री० (फा०मियान) पाजामेके बीचका भाग। वि० बीचका।

मिरज़ई—संज्ञा स्त्री० (फा० मीरजा) कमरतकका एक प्रकारका बंददार अंगा या अँगरखा।

मिरज़ा—संज्ञा पुं० (फा० शुद्धरूप मीरजा या मीरज़ादा) १ मीर या सरदारका लड़का। २ मुगलोंकी एक उपाधि।

मिरज़ाई—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मिरजाका पद या उपाधि। २ मिरजा-पन।

मिरात—संज्ञा स्त्री० (अ०) दर्पण। शीशा।

मिर्रीख़—संज्ञा पुं० (अ०) मंगल ग्रह।

मिल्क—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ भू-सम्पत्ति। जमींदारी। २ माफ़ी। ज़मीन। ३ स्वामित्व।

मिल्कियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ भूमिपर स्वामित्वका अधिकार। २ सम्पत्ति।

मिल्की—संज्ञा पुं० (अ०) भू-स्वामी। जमींदार। वि० भू-स्वामित्व-सम्बन्धी।

मिल्लत—संज्ञा स्त्री० (अ०) मज़-हब। धर्म। संज्ञा स्त्री० (हिं० मिलना) मेल-मिलाप।

मिशरब—संज्ञा पुं० (अ०) १ पानी पीनेका स्थान। २ पानीका

चश्मा । स्रोत । ३ धर्म । ४ रीति-रिवाज । ५ तौर-तरीका ।

मिश्क–संज्ञा पुं० (फा०) मुश्क । कस्तूरी ।

मिस–संज्ञा पुं० (फा०) (वि० मिसी) ताँबा । ताम्र ।

मिसदाक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जिसपर कोई आशय या अर्थ घटे । २ वह जो किसी दूसरेके अनुरूप हो । ३ साक्षी । गवाही । ४ गवाह । साक्षी ।

मिसरा–संज्ञा पुं० (अ० मिसरऽ) छन्दका चरण या पद ।

मिसरी–संज्ञा पुं० (अ० मिस्री) मिस्र देशका निवासी । संज्ञा स्त्री० १ मिस्र देशकी भाषा । २ दोबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी या खाँड ।

मिसवाक–संज्ञा स्त्री० (अ०) दाँतून । दँतौन ।

मिसाल–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० अम्साल) १ उपमा । तुलना । यौ०–**अदीम-उल्-मिसाल** = अनुपम । बेजोड़ । २ उदाहरण । नमूना । नज़ीर । ३ कहावत ।

मिसी–वि० (अ०) ताँबेका । संज्ञा स्त्री० दे० "मिस्सी ।"

मिस्क़ल–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका औजार जिससे छुड़ियाँ और तलवारें साफ करके चमकाई जाती हैं ।

मिस्क़ला–संज्ञा पुं० दे० "मिस्क़ल ।"

मिस्क़ाल–संज्ञा पुं० (अ०) ४ माशे और ३॥ रत्तीकी एक तौल ।

मिस्कीन–वि० (अ०) (बहु० मसाकीन) दीन । दुःखी ।

मिस्कीनी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दीनता । दरिद्रता ।

मिस्तर–संज्ञा पुं० (अ०) वह तख्ती जिसपर बराबर बराबर दूरीपर डोरे बँधे रहते हैं और जिसके ऊपर सादा कागज़ रखकर लिखनेके लिये पंक्तियोंके सीधे चिह्न बनाते हैं ।

मिस्मार–वि० (अ०) (भाव० मिस्मारी) तोड़ा-फोड़ा और गिराया हुआ । ढाया हुआ (मकान आदि) ।

मिस्र–संज्ञा पुं० (अ०) आफ्रिकाके उत्तर-पूर्वका एक प्रसिद्ध देश ।

मिस्री–संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "मिसरी ।"

मिस्ल–वि० (अ०) समान । तुल्य ।

मिस्सी–संज्ञा स्त्री० (फा० मिसी=ताँबेका) १ एक प्रकारका काला चूर्ण जिससे स्त्रियाँ दाँत काले करती हैं । यौ०–**मिस्सी-काजल**=शृंगारकी सामग्री । २ वेश्याओंमें उस समयकी एक रसम जब किसी वेश्याका पहले-पहल किसी पुरुषके साथ समागम होता है ।

मिहमीज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारकी लोहेकी नाल जो जूतेमें एड़ीके पास लगी रहती है और जिसकी सहायतासे सवार घोड़ेको एड़ लगाता है ।

मीज़ान–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ चीज़ें

तौलनेका तराजू। २ तुला राशि। ३ गणितमें संख्याओंका जोड़।

मीना–संज्ञा पुं० (फा०) १ रंगीन आबगीना या बहुमूल्य पत्थर जिससे सोने और चाँदीपर रंग-बिरंगा काम करते हैं। २ सोने या चाँदीपर किया जानेवाला रंग-बिरंगा काम। ३ मद्य रखनेका शीशेका पात्र।

मीनाकार–संज्ञा पुं० (फा०) चाँदी और सोनेपर मीना करनेवाला।

मीनाकारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) चाँदी और सोनेपर किया हुआ मीनेका काम।

मीना-बाज़ार–संज्ञा पुं० (फा०) सुन्दर और बढ़िया बाजार।

मीनार–संज्ञा स्त्री० (अ० मिनारः) गोलाकार ऊँची इमारत। स्तम्भ।

मीयाद–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी कार्यकी समाप्ति आदिके लिये नियत समय। अवधि।

मीयादी–वि० (अ०) जिसके लिए कोई अवधि नियत हो। मीयाद-वाला।

मीर–संज्ञा पुं० (फा० "अमीर"का संक्षिप्त रूप) १ सरदार। प्रधान। नेता। २ धार्मिक आचार्य। ३ सैयद जातिकी उपाधि। ४ वह जो किसी प्रति-योगितामें पहला निकले। ५ ताशके पत्तोंमें बादशाह।

मीर-अद्ल–संज्ञा पुं० (फा० मीरे-अदल) प्रधान न्यायाधीश।

मीर-आखोर–संज्ञा पुं० (फा०) घोड़ोंका बड़ा अफ़सर। अस्तबल-का दारोगा। अश्वपति।

मीर-आतिश–संज्ञा पुं० (फा०) तोप खानेका प्रधान कर्मचारी।

मीरज़ा–संज्ञा पुं० (फा० "अमीर-ज़ादा"का संक्षिप्त रूप) १ सरदार। २ सैयदोंकी उपाधि। मिरज़ा।

मीर-तुज़क–संज्ञा पुं० (फा०) असि-यान या जलूस आदिकी व्यवस्था करनेवाला कर्मचारी।

मीर-फ़र्श–संज्ञा पुं० (फा०) वह पत्थर या दूसरे भारी पदार्थ जो चाँदनी या फर्शके कोनोंपर उन्हें उड़नेसे रोकनेके लिए रखे जाते हैं।

मीर-बख़्शी–संज्ञा पुं० (फा०) सब-को वेतन बाँटनेवाला प्रधान कर्मचारी।

मीर-बह्र–संज्ञा पुं० (फा०) १ जहाज़ी बेड़ोंका अफसर। नौ-सेनापति। २ वह प्रधान कर्म-चारी जो किसी बन्दरगाहमें आने और जानेवाले मालका महसूल वसूल करता है।

मीर-मजलिस–संज्ञा पुं० (फा०) मजलिसका प्रधान सभापति। प्रधान।

मीर-मतबख़–संज्ञा पुं० (फा०) पाकशालाका प्रधान व्यवस्थापक।

मीर-महल्ला–संज्ञा पुं० दे० "महल्ले-दार।"

मीर-मुन्शी–संज्ञा पुं० (फा०) प्रधान मंत्री।

मीरशिकार–संज्ञा पुं० (फा०)

शिकारकी व्यवस्था करनेवाला प्रधान कर्मचारी ।

मीर-हाज–संज्ञा पुं० (फा०) हज करनेवालों या हाजियोंका सरदार ।

मीरास–संज्ञा स्त्री० (अ०) उत्तराधिकारमें प्राप्त होनेवाली सम्पत्ति ।

मीरासी–वि० (अ० मीरास) मीरास या उत्तराधिकारसम्बन्धी । संज्ञा पुं० एक प्रकारके मुसलमान गवैये जो प्रायः बहुत मसखरे भी होते हैं।

मुंजमिद–वि० दे० "मुनजमिद ।"

मुअय्यन–वि० (अ०) तइनात या मुकर्रर किया हुआ । नियुक्त ।

मुअजज़ा–संज्ञा पुं० दे० "मोजजा।"

मुअजिज़ात–'मुअजजा"का बहु० ।

मुअज़्ज़म–वि० (अ०) (स्त्री० मुअज्जमा) जिसे बहुत महत्व दिया गया हो । परम माननीय या प्रतिष्ठित । बहुत बड़ा (व्यक्ति) ।

मुअज़्ज़िज़–वि० (अ०) इज्जतदार। प्रतिष्ठित ।

मुअज़्ज़िन–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो मसजिदमें नमाजके समय अज़ान देता है ।

मुअतक़िद–वि० दे० "मोतक़िद ।"

मुअतरिज़–वि० दे० "मोतरिज़ ।"

मुअतरिफ़–वि० (अ०) एतराफ़ या इकरार करनेवाला । माननेवाला ।

मुअतदिल–वि० दे० "मातदिल ।"

मुअतबर–वि० दे० "मातबर ।"

मुअतबरी–दे० "मातबरी ।"

मुअतमद–वि० दे० "मोतमिद ।"

मुअतमिद–वि० दे० "मोतमिद ।"

मुअताद–संज्ञा स्त्री० दे० "मोताद ।"

मुअत्तर–वि० (अ०) जिसमें खूब इत्र लगा हो । इत्रमें बसा हुआ ।

मुअत्तल–वि० (अ०) (संज्ञा मुअत्तली) जो अपने कामसे कुछ समयके लिए (प्रायः दंडस्वरूप) हटा दिया गया हो ।

मुअद्द–वि० (अ०) गिना हुआ ।

मुअद्दिब–वि० (अ०) जो बड़ोंका अदब करे । सुशील । विनम्र ।

मुअन्नस–संज्ञा पुं०(अ०)स्त्रीलिंग । मादा ।

मुअम्बर–वि० (अ०) जिसमें अंबर लगा हुआ हो । अंबरकी सुगंधिवाला ।

मुअम्मर–वि० (अ०) जिसकी उम्र ज़्यादा हो । वृद्ध । बुड्ढा ।

मुअम्मा–संज्ञा पुं० (अ० मुअम्मः) १ छिपी हुई चीज । २ पहेली । ३ समस्या । कठिन और विचारणीय विषय ।

मुअर्रख़ा–वि० (अ०) १ लिखा हुआ। २ तिथि या तारीख दिया हुआ ।

मुअरब–वि० (अ०) (अक्षर) जिनपर एराब (इ, उ आदिकी मात्राएँ या चिह्न) लगे हों ।

मुअर्रब–वि० (अ०) अरबी रूपमें लाया हुआ । जो अरबी बनाया गया हो । (शब्द आदि) ।

मुअर्रा–वि० (अ०) १ नग्न । नंगा। २ शुद्ध । साफ़ । ३ सीधा । सरल।

मुअर्रिख़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुअर्रिख़ीन) इतिहास-लेखक ।

मुअर्रिफ़–वि० (अ०) तारीफ़ करनेवाला। लक्षण बतलानेवाला ।

मुअल्लक़–वि०(अ०)१लटका हुआ। २ लगा हुआ। संलग्न।

मुअल्ला–वि (अ०) (बहु० मआली) १ परम उच्च और श्रेष्ठ। २ मान्य। प्रतिष्ठित।

मुअल्लिफ़–संज्ञा पुं० (अ०) (वि० मुअल्लिफ़ः) ग्रन्थका रचयिता या संकलन-कर्त्ता।

मुअल्लिम–वि० (अ०) (स्त्री०मुअल्लिमा) इल्म या ज्ञान देनेवाला। शिक्षक। उस्ताद।

मुअल्लिमी–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुअल्लिमका पद या कार्य।

मुअस्सिर–वि० (अ०) तासीर या असर करनेवाला। प्रभावशाली।

मुआक़बत–संज्ञा स्त्री०(अ०) दंड।

मुआफ़–वि० दे० "माफ़।"

मुआफ़िक़–वि० (अ०) १ जो विरुद्ध न हो। अनुकूल। २ सदृश। समान। ३ मनोनुकूल।

मुआफ़िक़त–संज्ञा स्त्री० (अ०मुआफ़िक़) मुआफ़िकका भाव। अनुकूलता।

मुआफ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "माफ़ी।"

मुआफ़ीदार–दे० "माफ़ीदार।"

मुआमला–संज्ञा पुं० दे० "मामला।"

मुआयना–संज्ञा पुं०(अ०)देख-भाल। जाँच-पड़ताल। निरीक्षण।

मुआलिज–संज्ञा पुं० (अ०) इलाज करनेवाला। चिकित्सक।

मुआलिजा–संज्ञा पुं० (अ० मुआलिजः) इलाज। चिकित्सा।

मुआवज़ा–संज्ञा पुं (अ० मुआवज़ः) १ बदलेमें दी हुई चीज़ या धन। बदला। २ बदलनेकी क्रिया। परिवर्तन।

मुआवदत–संज्ञा स्त्री० (अ०) लौट आना। वापस आना।

मुआविन–संज्ञा पुं० (अ०) सहायक। मददगार।

मुआविनत–संज्ञा स्त्री० (अ०) सहायता। मदद।

मुआहदा–संज्ञा पुं० (अ० मुआहदः) पक्की बात-चीत। दृढ़ निश्चय। क़रार।

मुआहिद–वि० (अ०) अहद करनेवाला। वचन देनेवाला या कोई बात पक्की करनेवाला।

मुअय्यन–वि० (अ०) मुकर्रर किया हुआ। नियत।

मुअय्यना–वि० दे० मुअय्यन।

मुक़ई–वि० (अ०) जिसके खाने या पीनेसे क़ै या उलटी आवे।

मुक़त्तर–वि० (अ०) कतरा या बूँद बूँद करके टपकाया हुआ।

मुक़त्ता–वि० (अ० मुक़त्तऽ) चारों ओरसे काट-छाँटकर दुरुस्त किया हुआ।

मुक़द्दम–१ आगे या पहले आनेवाला। २ प्रधान। मुख्य।

मुक़द्दमा–संज्ञा पुं० (अ०) १ दो पक्षोंके बीचका धन या अधिकार आदिसे सम्बन्ध रखनेवाला अथवा किसी अपराध (जुर्म) का मामला जो विचारके लिए न्यायालयमें जाय। अभियोग। २ दावा। नालिश।

मुकद्दर–वि० (अ०) १ गँदला । मैला । गंदा । २ क्षुब्ध । असन्तुष्ट ।

मुक़द्दर–संज्ञा पुं० (अ०) तक़दीर ।

मुक़द्दस–वि० (अ०) पवित्र । पाक । यौ०–**किताब-ए-मुक़द्दस**=पवित्र धर्म-ग्रन्थ ।

मुक़फ़्फ़ल–वि० (अ०) जिसमें क़ुफ़्ल या ताला लगा हो ।

मुक़फ़्फ़ा–वि० (अ० मुक़फ़्फ़ः) क़ाफ़िये या अनुप्राससे युक्त ।

मुकम्मल–वि० (अ०) पूरा किया हुआ । पूर्ण ।

मुक़र्रब–संज्ञा पुं० (अ०) घनिष्ठ मित्र ।

मुकर्रम–वि० (अ०) प्रतिष्ठित ।

मुक़र्रर–क्रि० वि० (अ०) दोबारा । फिरसे

मुक़र्रर–वि० (अ०) (संज्ञा मुक़र्ररी) १ इक़रार किया हुआ । निश्चित । २ तैनात । नियुक्त । नियत ।

मुक़र्ररा–वि० (अ० मुक़र्ररः) मुक़र्रर किया हुआ । नियत ।

मुक़र्ररी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ निश्चित लगान, कर या वेतन आदि । २ नियुक्ति ।

मुकल्लफ़–वि० (अ०) सजाया हुआ ।

मुक़ल्लिद–वि० (अ०) तक़लीद या अनुकरण करनेवाला । अनुयायी ।

मुक़ल्लिब–वि० (अ०) घुमाने या बदलनेवाला । यौ०–**मुक़ल्लिब-उल्-क़लूब**–हृदय बदलनेवाला, ईश्वर ।

मुक़व्वी–वि० (अ०) (बहु० मुक़व्वियात) क़ूवत या ताक़त बढ़ानेवाला । बल-वर्धक । पौष्टिक ।

मुक़श्शर–वि० (अ०) जिसका छिलका उतारा गया हो ।

मुकस्सर–वि० (अ०) १ दो बार गुणा किया हुआ । घन । २ समान लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाईवाला ।

मुकाफ़ात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बुरे कामोंका फल । पापका परिणाम । २ बदला ।

मुक़ाबा–संज्ञा पुं० (अ० मुक़अबः) शृंगार-दान ।

मुक़ाबिल–क्रि० वि० (अ०) सम्मुख ।

मुक़ाबिला–संज्ञा पुं० (अ० मुक़ाबिलः) १ आमना-सामना । २ मुठभेड़ । प्रतियोगिता । ३ समानता । ४ तुलना । ५ मिलन । ६ लड़ाई ।

मुक़ाम–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुक़ामात) १ ठहरनेका स्थान । ठिकाना । पड़ाव । २ ठहरनेकी क्रिया । कूचका उल्टा । विराम । ३ रहनेका स्थान । घर । ४ अवसर । संज्ञा पुं० दे० "मकाम ।"

मुक़ामी–वि० (अ०) १ ठहरा हुआ । २ स्थानीय ।

मुक़िर–वि० (अ०) इक़रार करनेवाला । माननेवाला । यौ०–**मन-मुक़िर**–मैं इकरार करनेवाला (दस्तावेजों आदिमें) ।

मुक़ीम–वि० (अ०) १ क़याम करने या ठहरनेवाला । २ ठहरा हुआ ।

मुक़ैयद–वि० (अ०) क़ैद किया हुआ ।

मुक़ैश–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह

चीज़ जिसपर सोने या चाँदीका तार चढ़ा हो।

मुक़्तज़ाअ–संज्ञा पुं० (अ०) तक़ाज़ा। ज़रूरत। आवश्यकता।

मुक़्तज़ी–वि० (अ०) तक़ाज़ा करनेवाला। माँगनेवाला।

मुक़्तदा–संज्ञा पुं० (अ०) १ नेता। अगुआ। २ धार्मिक आचार्य।

मुख़न्नस–वि० (अ०) हिजड़ा। नपुंसक।

मुख़फ़्फ़फ़–वि० (अ०) घटाकर कम किया हुआ। संक्षिप्त। संज्ञा पुं० घटाकर कम करनेकी क्रिया।

मुख़बिर–संज्ञा पुं० (अ०) छिपकर खबर पहुँचानेवाला। भेदिया।

मुख़बिरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुख़बिरका काम। गुप्त रूपसे समाचार पहुँचाना। जासूसी।

मुख़म्मस–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह चीज़ जिसमें पाँच कोण या अंग हों। २ पाँच पाँच चरणोंकी एक प्रकारकी कविता।

मुख़लिस–वि० (अ०) १ निष्ठ। सच्चा। २ अकेला। ३ अविवाहित।

मुख़लिसी–संज्ञा स्त्री० (अ०) छुटकारा। मुक्ति। रिहाई।

मुख़ातिब–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो किसीसे कुछ कहता हो। वक्ता। मुहा०–**किसीकी तरफ़ मुख़ातिब होना**=किसीसे बातचीत करनेके लिये उसकी ओर प्रवृत्त होना।

मुख़ालिफ़–संज्ञा पुं० (अ०) मुख़ालिफ़त या विरोध करनेवाला। विरोधी। वि० विरुद्ध। विपरीत।

मुख़ालिफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुख़ालिफ़ या विरोधी होनेका भाव। शत्रुता। विरोध।

मुख़ासमत–संज्ञा स्त्री० (अ० मुख़ासिमत) शत्रुता। दुश्मनी।

मुख़िल–वि० (अ०) ख़लल या बाधा डालनेवाला। बाधक।

मुख़ैयर–वि० (अ०) १ दान-शील। २ उदार।

मुख़ैयला–संज्ञा स्त्री० (अ० मुख़ैयल:) सोचने विचारनेकी शक्ति। विचार-शक्ति।

मुख़्तलिफ़–वि० (अ०) १ भिन्न भिन्न। अलग अलग। २ भिन्न। अलग। दूसरी तरहका।

मुख़्तसर–वि० (अ०) थोड़ेमें कहा या किया हुआ। संक्षिप्त।

मुख़्तार–संज्ञा पुं० (अ०) १ जिसे किसीने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करनेका अधिकार दिया हो। अधिकार-प्राप्त प्रतिनिधि। २ एक प्रकारका कानूनी सलाहकार और काम करनेवाला।

मुख़्तार-ए-आम–संज्ञा पुं० (अ०) वह मुख़्तार या कार्य-कर्ता जिसे सब प्रकारके कार्य करनेके अधिकार दिये गये हों।

मुख़्तार-कार–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) प्रधान संचालक या अधिकारी।

मुख़्तार-कारी–संज्ञा स्त्री० (अ०×फ़ा०) १ मुख़्तारकारका काम या पद। २ मुख़्तारका काम या पद।

मुख़्तार-ख़ास–संज्ञा पुं० (अ० +

फा०) वह जिसे कोई विशेष कार्य करनेका अधिकार दिया गया हो।

मुख़्तार-तन्–क्रि० वि० (अ०) मुख़्तारके द्वारा।

मुख़्तार-नामा–संज्ञा पुं०(अ०+फा०) वह पत्र जिसके अनुसार किसीको कोई कार्य करनेका अधिकार सौंपा जाय।

मुख़्तारी–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुख़्तारका काम, पद या पेशा।

मुग़–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो अग्नि-की उपासना या पूजा करता हो।

मुग़न्नी–संज्ञा पुं० (अ०) (स्त्री० मुग़न्निया) गानेवाला। गायक।

मुग़ल–संज्ञा पुं० (अ०) १ मंगोल देशका निवासी। २ तुर्कोंका एक श्रेष्ठ वर्ग जो तातार देशका निवासी था। ३ मुसलमानोंके चार वर्गोंमेंसे एक।

मुग़लक़–वि० (अ०) कठिन अर्थ-वाला (शब्द या वाक्य)।

मुग़लानी–संज्ञा स्त्री० (अ०मुग़ल+आनी हिं० प्रत्य०) १ दासी। परिचारिका। स्त्रियोंके कपड़े सीनेवाली स्त्री।

मुग़ाँ–संज्ञा पुं० (अ०) "मुग़" का बहु०। अग्निकी उपासना करने-वाले लोग।

मुग़ालता–संज्ञा पुं० (अ०मुग़ालतः) १ किसीको भ्रममें डालना। २ धोखा। छल। ३ भूल। भ्रम।

मुग़ील–संज्ञा पुं० (अ०) बबूल।

मुग़ीलाँ–(अ०) "मुग़ील" का बहु०।

मुग़ीस–वि० (अ०) दावा या अभि-योग उपस्थित करनेवाला। वादी।

मुग़ैयर–वि० (अ०) बदला हुआ।

मुचलका–संज्ञा पुं० (तु० मुचल्कः) वह प्रतिज्ञा-पत्र जिसके द्वारा भविष्यमें कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समयपर अदालतमें उपस्थित होनेकी प्रतिज्ञा हो।

मुज़क्कर–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो पुरुष जातिका हो। पुल्लिंग। नर।

मुज़खरफ़–संज्ञा पुं० (अ०) बहु० मुज़खरफ़ात) व्यर्थकी बात। बकवाद।

मुज़ग़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुज़ग़ः) १ मांसका टुकड़ा। २ निवाला। लुकमा। कौर। ३ गर्भाशय। बच्चे-दानी।

मुजतबा–वि० (अ०) चुना हुआ। श्रेष्ठ।

मुजतमअ–वि० (अ०) जो जमा हुए हों। एकत्र।

मुज़तर–वि० (अ०) बेचैन। विकल।

मुज़तरिब–वि० (अ०) (क्रि० वि० मुज़तरिबाना) बेचैन।

मुजतहिद–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुजतहिदीन) १ धार्मिक आचार्य। २ धर्मशास्त्रका सबसे बड़ा पंडित या आचार्य जिसका निर्णय अंतिम होता है।

मुज़दा–संज्ञा स्त्री० (फा० मुज़दः) शुभ समाचार। अच्छी ख़बर।

मुज़फ़्फ़र–वि० (अ०) ज़फ़र या फ़तह पानेवाला। विजयी।

मुज़बज़ब–वि० (अ०) १ जो कुछ निश्चय न कर सके। असमंजसमें पड़ा हुआ। २ अनिश्चित।

मुजमल–वि० (अ०) १ एकत्र किया हुआ। २ संक्षिप्त।

मुजमलन्–क्रि० वि० (अ०) संक्षेपमें। थोड़ेमें।

मुज़महिल–वि० (अ०) १ बहुत थका हुआ। शिथिल। २ दुर्बल।

मुज़म्मा–संज्ञा पुं०(अ०)एड़। मुहा०

मुज़म्मा लेना=आड़े हाथों लेना। फटकारना।

मुजरा–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो जारी किया गया हो। २ वह रकम जो किसी रकममेंसे काट ली गई हो। ३ किसी बड़े या धनवानके सामने जाकर उसे सलाम करना। अभिवादन। ४ वेश्याका बैठकर गाना।

मुजराई–संज्ञा पुं० (अ० मुजरा) १ मुजरा होने या काटे जानेकी क्रिया। बाद होना। काटा जाना। कटौती। २ वह जो मुजरा या सलाम करनेके लिए सेवामें उपस्थित हो। ३ मरसिया पढ़नेवाला। मरसिया-गो।

मुजरिम–वि० (अ०) (क्रि० वि० मुजरिमाना) जिसने कोई जुर्म या अपराध किया हो। अपराधी।

मुज़र्रत–संज्ञा स्त्री० (अ०) हानि।

मुजर्रद–वि० (अ०) १ जिसका विवाह न हुआ हो। अविवाहित। कुआँरा। २ जिसके साथ और कोई न हो। अकेला। एकाकी।

मुजर्रदी–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुजर्रद रहनेकी अवस्था। अविवाहित या अकेला रहना।

मुजर्रब–वि० (अ०) तजरुबा किया हुआ। जाँचा हुआ। परीक्षित।

मुजर्रबात–संज्ञा पुं० (अ० "मुजर्रब" का बहु०) रामबाण औषधोंके नुस्खे।

मुजल्लद–वि० (अ०) (ग्रंथ) जिसपर जिल्द चढ़ी हो। जिल्ददार।

मुजल्ला–वि० (अ०) जिसपर जिला की गई हो। चमकाया हुआ।

मुजल्लिद–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो किताबोंकी जिल्द बाँधता हो। जिल्दबन्द।

मुजव्वज़ह–वि० (अ०) १ निश्चित किया हुआ। २ बतलाया हुआ। सुझाया हुआ। ३ प्रस्तावित।

मुजव्वफ़–वि० (अ०) अंदरसे खाली। खोखला। पोला।

मुजव्विज़–वि० (अ०) १ जो तजवीज़ किया गया हो। प्रस्तावित। २ जिसकी तजवीज़ या निश्चय हो चुका हो। निश्चित।

मुजस्सम–वि० (अ०) शरीरधारी। शरीरी। क्रि० वि० स-शरीर।

मुजस्सिम–वि० दे० "मुजस्सम।"

मुज़हर–संज्ञा पुं० (अ०) १ दृश्य। २ रंगमंच।

मुज़हिर–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो ज़ाहिर करे। प्रकट करनेवाला। २ भेदिया। जासूस। गुप्तचर।

मुज़ाअफ़–वि० (अ०) १ द्विगुण। दूना। २ गुणा किया हुआ। गुणित।

मुजादला–संज्ञा पुं० (अ० मुजादलः) १ लड़ाई-झगड़ा। २ विरोध।

मुज़ाफ़–वि० (अ०) १ बढ़ाया या मिलाया हुआ। संज्ञा पुं० व्याकरणमें, सम्बन्ध-सूचक कारक।

मुज़ाफ़-इलैह–संज्ञा पुं० (अ०) व्याकरणमें वह वस्तु जिसका किसीके साथ सम्बन्ध हो या जो किसीके अधिकारमें हो। जैसे—रामका घोड़ा। इसमें राम मुज़ाफ़ और घोड़ा मुज़ाफ़-इलैह है।

मुज़ाफ़ात–संज्ञा स्त्री० बहु० (अ० मुज़ाफ़तका बहु०) १ बढ़ाई या मिलाई हुई चीज़। २ नगरके आस-पासके और उसके आमने-सामनेके स्थान।

मुजामअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) स्त्री-प्रसंग। सम्भोग।

मुज़ायक़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुज़ायक़ः) हर्ज। हानि।

मुज़ारा–वि० (अ० मुज़ारअ) समान। तुल्य। बराबरका। संज्ञा पुं० (अ० मुज़ारअ) कृषक। खेतिहर।

मुजारियह–वि० (अ०) १ जो जारी हो। चलता हुआ। प्रचलित। २ कानून या नियमके रूपमें बनाया हुआ। नियम-बद्ध।

मुजारी–वि० दे० "मुजारियह।"

मुजाविर–संज्ञा पुं० (अ०) मज़ार या दरगाह आदि स्थानोंपर रहनेवाला जो वहाँका चढ़ावा आदि लेता हो।

मुजाविरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुजाविरका काम या पद।

मुजाहिद–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुजाहिदीन) धर्मकी रक्षाके लिये युद्ध करनेवाला। धार्मिक योद्धा।

मुज़ाहिम–वि० (अ०) १ कष्ट देनेवाला। पीड़क। २ बाधा डालने या रोकनेवाला। बाधक।

मुज़ाहिमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कष्ट देना। २ रोकना।

मुज़िर–वि० (अ०) १ हानिकारक। नुक़सान पहुँचानेवाला। २ बुरा।

मुज़ौविजह–वि० दे० "मुज़व्वजह" और "मुज़व्विज।"

मुतंजन–संज्ञा पुं० (अ०) मांसके साथ एक विशेष प्रकारसे पकाया हुआ चावल।

मुतअय्यन–वि० (अ०) नियुक्त किया हुआ। मुकर्रर किया हुआ।

मुअतिक़्क़ब–वि० (अ०) पीछा करनेवाला।

मुतअज्जिब–वि० (अ०) जिसे ताज्जुब या आश्चर्य हुआ हो। चकित।

मुतअद्दिद–वि० (अ०) जायदाद या संख्यामें अधिक। कई। अनेक।

मुतअद्दी–संज्ञा पुं० (अ०) सकर्मक क्रिया।

मुतअफ़्फ़िन–वि० (अ०) बदबूदार। दुर्गंधित।

मुतअरिज़–वि० (अ०) एतराज़ या आपत्ति करनेवाला।

मुतअल्लिक़–वि० (अ०) ताअल्लुक़ या सम्बन्ध रखनेवाला। सम्बद्ध।

मुतअल्लिक़-ए-फ़ेल–संज्ञा पुं० (अ०) क्रिया-विशेषण (व्या०)।

मुतअल्लिक़ात–संज्ञा पुं० बहु० दे० "मुतअल्लिक़ीन।"

मुतअल्लिक़ीन–संज्ञा पुं०(अ०बहु०) १ सम्बन्ध रखनेवाले लोग। २ परिवार या नातेके लोग। रिश्तेदार। सम्बन्धी। ३ घरमें रहनेवाले आश्रित।

मुतअस्सिफ़–वि० (अ०)जिसे दुःख या पश्चात्ताप हो।

मुतअस्सिब–वि० (अ०) १ जिसमें तास्सुब या पक्षपात हो। २ कट्टर।

मुतअस्सिर–वि० (अ०) जिसपर असर या प्रभाव पड़ा हो। प्रभावित।

मुतअह्–संज्ञा पुं० दे० "मुताह्।"

मुतअहिद–संज्ञा पुं०(अ०)ठेकेदार। इजारेदार।

मुतआई–वि० दे० "मुताही।"

मुतआख़रीन–वि० बहु० (अ०) आज-कलके। इस ज़मानेके। आधुनिक (व्यक्तिओंके लिये)।

मुतक़द्दिम–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुतक़द्दिमीन) क़दीम या पुराने ज़मानेका। प्राचीन कालका।

मुतकब्बिर–वि० (अ०) अभिमानी। (क्रि० वि० मुतकब्बिराना) घमंडी। शेखीबाज़।

मुतकल्लिम–संज्ञा पुं० (अ०) १ बोलने या कहनेवाला। वक्ता। २ व्याकरणमें प्रथम पुरुष या उत्तम पुरुष।

मुतख़ल्लिस–वि० (अ०) १ नाम। धारी। नाम या उपनामसे युक्त। २ विशुद्ध।

मुतख़ैयलह्–संज्ञा पुं० (अ०) १ विचार-शक्ति। २ कल्पना।

मुतग़ैयर–वि० (अ०) जिसमें परिवर्तन हो गया हो। बदला हुआ।

मुतज़क्किरह्–वि० (अ०) जिसका ज़िक्र या उल्लेख किया गया हो। उक्त। उपर्युक्त।

मुतज़म्मिन–वि० (अ०) मिला हुआ। संयुक्त। सम्मिलित।

मुतज़ाद–वि० (अ०) विरोधी (कथन आदि)।

मुतदैयन–वि० (अ०) १ दीन या धर्म पर विश्वास रखनेवाला। धार्मिक। धर्मनिष्ठ। २ अच्छी नीयतवाला। ईमानदार।

मुतनफ़्फ़िस–संज्ञा पुं०(अ०)व्यक्ति।

मुतनफ़्फ़िर–वि० (अ०) जिसे देखकर नफ़रत हो। मनमें घृणा उत्पन्न करनेवाला। घृणित।

मुतनाक़िज़–वि० (अ०) विरोधी (कथन आदि)।

मुतनाक़िस–वि० (अ०) जिसमें कोई नुक़्स या ऐब हो। दोषयुक्त। दूषित।

मुतनाज़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुतनाज़अ) १ झगड़ा। २ जिसके विषयमें झगड़ा हो। विवादास्पद।

मुतनासिब–वि० (अ०) अनुपातके विचारसे ठीक या उपयुक्त।

मुतफ़क्किर–वि० (अ०) जिसके मनमें फ़िक्र या चिन्ता हो।

मुतफ़न्नी–वि० (अ०) धूर्त्त। चालाक।

मुतफ़र्रिक़ात–संज्ञा पुं० बहु० (अ०) १ तरह तरहकी या फुटकर चीजें।

२ व्यय आदिकी फुटकर मद या विभाग । ३ किसी ज़मींदारी या गाँवकी फुटकर और इधर उधर बिखरी हुई ज़मीनें

मुतफ़ार्रिक़–वि० (अ०) (बहु० मुतफ़र्रिकात) १ भिन्न भिन्न । तरह तरहके । अनेक प्रकारके । २ बिखरा हुआ । अस्त-व्यस्त ।

मुतबख़्ख़ी–संज्ञा पुं० (अ०) रसोइया । बावर्ची ।

मुतबन्ना–संज्ञा पुं० (अ० मुतबन्नः) गोद लिया हुआ लड़का । दत्तक ।

मुतबर्रक–वि० (अ०) १ मुबारक । शुभ । २ पवित्र । स्वर्ग या देव-दूतसम्बन्धी ।

मुतबर्रिक–वि० दे० "मुतबर्रक ।"

मुतमैयन–वि० (अ०) १ तृप्त । सन्तुष्ट । २ शान्त । ३ निश्चिन्त ।

मुतमौवल–वि० (अ० मुतमव्वल) धनवान् । सम्पन्न । अमीर ।

मुतसावी–वि० (अ०) समान । बराबर । तुल्य ।

मुतरज्जिम–वि० (अ० मुतरजिम) तर्जुमा या अनुवाद करनेवाला । अनुवादक । उल्थाकार ।

मुतरद्दिद–वि० (अ०) जिसके मनमें कोई तरद्दुद या फिक्र हो ।

मुतरादिफ़–वि०(अ०)पर्यायवाची ।

मुतरिब–संज्ञा पुं० (अ०) गायक ।

मुतरिबी–संज्ञा स्त्री० (अ०) संगीत विद्या । गाना । बजाना ।

मुतलक़–क्रि० वि० (अ०) ज़रा भी । तनिक भी । रत्ती भर भी । वि० बिलकुल । निरा । निपट ।

मुतलक़-उल्-इनान–वि० (अ०) १ जिसकी बाग या लगाम छूटी हुई हो । २ परम स्वतंत्र । अबाध्य । क्रि० वि० मुतलक़न् ।

मुतलव्विन–वि० (अ०) जल्दी बदलनेवाला । एकसा न रहने-वाला । परिवर्तन-शील । जैसे-मुतलव्विन मिजाज ।

मुतलाशी–वि० (अ०) तलाश करने-वाला । ढूँढ़नेवाला । अन्वेषक ।

मुतल्ला–वि० (अ०)जिसपर सोनेका मुलम्मा किया हो ।

मुतवक्किल–वि० (अ०) ईश्वर या भाग्यपर तवक्कुल या भरोसा रखनेवाला । सन्तोषी ।

मुतवज्जह–वि० (अ०) किसी ओर तवज्जह या ध्यान देनेवाला ।

मुतवत्तिन–वि० (अ०) निवासी ।

मुतवफ़्फ़ी–वि० (अ०) स्वर्गवासी । परलोकगत । मृत । स्वर्गीय ।

मुतवल्ली–संज्ञा पुं० (अ०) किसी उत्सर्ग की हुई या धार्मिक संस्थाकी सम्पत्तिका रक्षक और व्यवस्थापक ।

मुतवस्सित–वि० (अ०) १ बीचका । मध्यका । २ औसत दरजेका । साधारण । सामान्य । मामूली ।

मुतवातिर–क्रि० वि० (अ०) एकके बाद एक । लगातार । निरन्तर ।

मुतशाबह–वि० (अ०) शक्ल-सूरतमें मिलता हुआ । समान आकृति-वाला । मिलता-जुलता ।

मुतसद्दी–संज्ञा पुं० (अ०) कार्यालय

आदिमें लिखने-पढ़नेका काम करनेवाला । मुन्शी । लेखक ।

मुतसद्दी-गरी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) मुतसद्दीका कार्य या पद ।

मुतसर्रिफ़–वि० (अ०) खर्चीला । अपव्ययी ।

मुतसौवर–वि० (अ०मुतसव्वर) जिसकी तसव्वर या कल्पना की गई हो । खयालमें लाया हुआ ।

मुतहक्क़क़–वि० (अ०) १ जिसकी तहक़ीकात या जाँच कर ली गई हो । जाँचा हुआ । २ जो परखनेपर ठीक उतरा हो ।

मुतहक्क़िक़–संज्ञा पुं० (अ०) जाँचने या परखनेवाला ।

मुतहम्मिल–वि० (अ०) जिसमें कठिनाइयाँ आदि सहनेकी यथेष्ट शक्ति हो । बरदाश्त करनेवाला ।

मुतहर्रिक–वि० (अ०) गति देनेवाला । चलानेवाला । चालक ।

मुतहैयर–वि० (अ०) जिसे हैरत या आश्चर्य हुआ हो । अचरजमें आया हुआ । चकित ।

मुताअ–संज्ञा पुं० दे० "मुताह ।"

मुताई–वि० दे० "मुताही ।"

मुताखरीन–वि० दे० "मुतआखरीन ।"

मुताबिक़–वि० (अ०) अनुसार ।

मुताबिक़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुताबिक होनेकी क्रिया या भाव । अनुकूलता ।

मुतालबा–संज्ञा पुं० (अ० मुतालबः) १ तलब करना । माँगना । २ वह रकम जो किसीके यहाँ बाकी हो । पावना ।

मुताला–संज्ञा पुं० (अ० मुतालअ) पढ़ना । अध्ययन ।

मुतास्सिर–वि० दे० "मुतअस्सिर ।"

मुताह–संज्ञा पुं० (अ० मुतआह) शीया मुसलमानोंमें होनेवाला एक प्रकारका अस्थायी विवाह ।

मुताही–वि० (अ० मुतआही) जिसके साथ मुताह या कुछ समयके लिए अस्थायी विवाह हुआ हो ।

मुतीअ–वि० (अ०) हुकुम माननेवाला । आज्ञाकारी ।

मुत्तक़ी–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो दुष्कर्मोंसे बचकर रहता हो । सदाचारी । परहेज़गार ।

मुत्तफ़िक़–वि० (अ०) १ जिनमें आपसमें इत्तफ़ाक़ या एका हो गया हो । २ एकमत । सहमत ।

मुत्तसिल–वि० (अ०) १ साथमें मिला या जुड़ा हुआ । सम्बद्ध । २ पास या बगलमें होने या रहनेवाला ।

मुत्तहद–वि० (अ०) मिलाकर एक किये हुए । एकमें मिलाये हुए ।

मुत्तहम–वि० (अ०) जिसपर तोहमत लगाई गई हो । अभियुक्त ।

मुत्सद्दी–संज्ञा पुं० दे० "मुतसद्दी ।"

मुदब्बिर–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो तदबीर या उपाय बतलाता हो । २ परामर्शदाता । ३ मंत्री ।

मुदम्मिग़–वि० (अ०) बहुत दिमाग़ रखनेवाला । अभिमानी । घमंडी ।

मुदरिक–वि० (अ०) बातको अच्छी तरह समझनेवाला । समझदार ।

मुदरिका–संज्ञा स्त्री० (अ० मुद-रिक:) समझनेकी शक्ति । विचार-शक्ति ।
मुदर्रस–संज्ञा पुं० (अ०) विद्यार्थी ।
मुदर्रिस–संज्ञा पुं० (अ०) बालकोंको पढ़ानेवाला । शिक्षक ।
मुदर्रिसी–संज्ञा स्त्री० (अ० मुदर्रिस) मुदर्रिसका काम या पद ।
मुदल्लल–वि० (अ०) जो दलीलसे ठीक साबित हो । तर्क-सिद्ध ।
मुदल्लिल–वि० (अ०) दलीलसे कोई बात साबित करनेवाला । तार्किक ।
मुदव्वर–वि० (अ०) गोल ।
मुदाफ़अत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दफ़ा या दूर करनेकी क्रिया या भाव । २ आत्म रक्षा ।
मुदाम–क्रि० वि० (अ०) (वि० मुदामी) १ सदा । हमेशा । निरन्तर । लगातार । बराबर ।
मुदौवर–वि० दे० "मुदव्वर ।"
मुद्दआ–संज्ञा पुं० (अ०) १ उद्देश्य । अभिप्राय ।
मुद्दआ-अलैह–दे० "मुद्दालेह ।"
मुद्दई-संज्ञा पुं० (अ०) (स्त्री० मुद्दैया) वह जो किसीपर दावा करे । दावा करनेवाला ।
मुद्दत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अवधि । २ बहुत दिन । अरसा ।
मुद्दालेह–संज्ञा पुं० (अ० मुद्दआ-अलैह) वह जिसपर कोई दावा किया गया हो । मुद्दईका विपक्षी ।
मुद्दैया–संज्ञा स्त्री० (अ० मुद्दय:) मुद्दईका स्त्रीलिंग रूप ।
मुनअक़िद–वि० (अ०) १ बद्ध । २ जिसकी बैठक या अधिवेशन हुआ हो । जो कार्य रूपमें हुआ हो । जैसे–शादी या जलसा मुनअक़िद होना ।
मुनअक़िस–वि० (अ०) जिसका अक्स या छाया पड़ी हो ।
मुनइम–वि० (अ०) उदार । दाता ।
मुनक़ज़ी–वि० (अ०) गुज़रा या बीता हुआ । गत ।
मुनक़ता–वि० (अ० मुन्क़तअ) १ काटा या अलग किया हुआ । २ समाप्त किया हुआ । ३ चुकाया हुआ । चुकता ।
मुनकशिफ़–वि० (अ०) खुला हुआ (रहस्य आदि) ।
मुनक़सिम–वि० (अ०) बाँटा हुआ । विभक्त ।
मुनक्सिर–वि० (अ०) जिसमें इन्क-सार हो । नम्र । यौ०–**मुनकसिर-उल-मिज़ाज**=नम्र स्वभाववाला ।
मुनक़ार–दे० "मिनक़ार ।"
मुनकिर–वि० (अ०) इन्कार करने-वाला । न माननेवाला । संज्ञा पुं० नास्तिक ।
मुनक्कश–वि (अ०) नक्क़ाशी किया हुआ ।
मुनक़्क़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुनक़्क़:) एक प्रकारकी बड़ी किशमिश ।
मुनज्जिम–संज्ञा पुं०(अ०)ज्योतिषी ।
मुनफ़अत–संज्ञा स्त्री० (अ०) नफ़ा । फायदा । लाभ ।
मुनफ़इल–वि० (अ०) लज्जित ।

मुनफ़सला-वि० (अ० मुन्फ़सल:) जिसका फैसला हुआ हो।
मुनब्बत-वि० (अ०) जिसमें उभरे हुए बेल बूटे आदि बने हों।
मुनब्बत-कारी-संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) उभारदार बेल-बूटे आदि-का काम। नक्क़ाशी।
मुनव्वर-वि० (अ०) १ प्रकाशमान्। २ प्रज्वलित।
मुनशी-संज्ञा पुं० (अ० मुन्शी) १ लेख या निबन्ध आदि लिखनेवाला। लेखक। २ लिखा-पढ़ी करनेवाला। मुहर्रिर। ३ वह जो फारसीके बहुत सुन्दर अक्षर लिखता हो।
मुनश्शी-वि० (अ०) (बहु० मुनश्शियात) नशा लानेवाला। मादक।
मुनसरिम-संज्ञा पुं० (अ०) १ इंतज़ाम या व्यवस्था करनेवाला। व्यवस्थापक। प्रबन्धकर्ता। २ अदालतका प्रधान मुन्शी। ३ प्रतिनिधि।
मुनसलिक-वि० (अ०) १ पिरोया या गूँथा हुआ। किसीके साथ तागेमें बँधा हुआ। २ सम्मिलित।
मुनसिफ़-संज्ञा पुं० (अ० मुन्सिफ़) इन्साफ़ या न्याय करनेवाला।
मुनसिफ़ी-संज्ञा स्त्री० (अ० मुन्सिफ़) १ न्याय। इन्साफ़। २ मुन्सिफ़का पद या कार्य।
मुनहदिम-वि० (अ०) गिराया हुआ। ढाया हुआ (भवन आदि)।
मुनहनी-वि० (अ० मुन्हनी) १ झुका हुआ। टेढ़ा। २ दुबला-पतला।
मुनहरिफ़-वि० (अ०) १ टेढ़ा। वक्र। २ विरोधी।
मुनहसर-वि० (अ०) निर्भर। आश्रित
मुनाज़रा-संज्ञा पुं० (अ० मुनाज़र:) वाद-विवाद। बहस।
मुनाजात-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ईश्वर-प्रार्थना। २ स्तोत्र।
मुनादी-संज्ञा स्त्री० (अ०) वह घोषणा जो डुग्गी या ढोल आदि पीटते हुए सारे शहरमें हो। ढिंढोरा। डुग्गी।
मुनाफ़ा-संज्ञा पुं० (अ० मुनाफ़:) लाभ। फ़ायदा।
मुनाफ़िक़-संज्ञा पुं० (अ०) १ नफाक़ या द्वेष रखनेवाला। २ धर्म-द्रोही।
मुनाफ़ी-वि० (अ०) १ नष्ट या व्यर्थ करनेवाला। २ विरोधी।
मुनासिब-वि० (अ०) उचित। वाजिब। ठीक।
मुनासिबत-संज्ञा स्त्री० (अ० मनासबत) १ सम्बन्ध। लगाव। २ उपयुक्तता।
मुनीब-संज्ञा पुं० (अ०) १ ईश्वरकी ओर अनुरक्त। २ स्वामी। मालिक। ३ बही-खाता लिखनेवाला कर्मचारी।
मुनीबी-संज्ञा स्त्री० (अ० मुनीब) बही-खाता लिखनेका काम या पद।
मुनीम-संज्ञा पुं० दे० "मुनीब।"
मुन्जमिद-वि० (अ०) सरदी आदिसे जमा हुआ।
मुन्तक़िल-वि० (अ०) एक जगहसे हटाकर दूसरी जगह रखा या किया हुआ।

मुन्तखब-वि० (अ०) (बहु० मुन्तखबात) १ चुनकर पसंद किया हुआ। अच्छा समझकर छाँटा हुआ। २ निर्वाचित।

मुन्तज़िम-वि० (अ०) इन्तज़ाम करनेवाला। प्रबन्धकर्ता।

मुन्तज़िर-वि० (अ०) इंतजार या प्रतीक्षा करनेवाला।

मुन्तशिर-वि० (अ०) १ इधर-उधर फैला या बिखरा हुआ। २ दुर्दशाग्रस्त।

मुन्तही-वि० (अ०) १ इन्तहा या चरम सीमा तक पहुँचा हुआ। २ पूर्ण ज्ञाता। दक्ष।

मुन्दरज-वि० (अ०) १ दर्ज किया या लिखा हुआ। २ अन्तर्गत। सम्मिलित।

मुन्शी-संज्ञा पुं० दे० "मुनशी।"

मुफ़रद-वि० (अ०) (बहु० मुफ़रदात) जो फ़र्द या अकेला हो, किसीके साथ न हो।

मुफ़र्रह-वि० (अ०) १ फ़रहत या आनन्द देनेवाला। २ स्वादिष्ट, सुगंधित और बल-वर्द्धक (औषध आदि)।

मुफ़लिस-वि० (अ०) निर्धन।

मुफ़लिसी-संज्ञा स्त्री० (अ० मुफ़लिस) गरीबी। दरिद्रता।

मुफ़सदा-संज्ञा पुं० (अ० मुफ़सदः) १ फ़िसाद। बखेड़ा। २ दंगा।

मुफ़सिद-वि० (अ०) (क्रि० वि० मुफ़सिदान) फ़िसाद खड़ा करनेवाला। झगड़ालू। उपद्रवी।

मुफ़स्सल-वि० (अ०)(बहु० मुफ़स्सलात) तफ़सीलवार। ब्योरेवार। संज्ञा पुं० नगरके आसपासके स्थान। प्रान्त।

मुफ़स्सिर-वि० (अ०) (बहु० मुफ़स्सरिन) तफ़सीर या विवरण बतलानेवाला।

मुफ़ाखरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) फ़ख्र या शेखी करना।

मुफ़ाखिर वि० (अ०) (स्त्री० मुफ़ाखिरा) फ़ख्र या अभिमान करनेवाला।

मुफ़ाजात-वि० (अ०) अचानक। सहसा। यौ०-**मर्ग-ए-मुफ़ाजात** =अचानक होनेवाली मृत्यु।

मुफ़ारकत-संज्ञा स्त्री०(अ०) जुदाई। वियोग। बिछोह।

मुफ़ीज़-वि०(अ०)फैज़ पहुँचानेवाला। उपकार या गुण करनेवाला।

मुफ़ीद-वि० (अ०) फ़ायदेमंद।

मुफ़्त-वि० (अ०) जिसमें कुछ मूल्य न लगे। बिना दामका। सेंतका।

मुफ़्तरी-वि० (अ०) १ इफ़्तरा या झूठा अभियोग लगानेवाला। २ धूर्त।

मुफ़्ती-संज्ञा पुं० (अ०) १ फतवा या धार्मिक व्यवस्था देनेवाला। २ एक प्रकारके न्यायकर्त्ता।

मुफ़्तूल-वि० (अ०) बल दिया हुआ। बटा हुआ। (तार या डोरी)

मुबतला-वि० दे० "मुब्तला।"

मुबद्दल-वि० (अ०) बदला हुआ। परिवर्तित।

मुबनी-वि० दे० "मबनी।"

मुबर्रा-वि० (अ०) १ अपवित्र या

अशुद्ध वस्तुओंसे अलग रखा हुआ। पाक। बरी। साफ़। २ निरपराध।

मुबलिग़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुबालिग़) धनकी संख्या। रकम। जैसे–मुबलिग़ पचास रुपए।

मुबश्शिर–संज्ञा पुं० (अ०) शुभ समाचार लानेवाला।

मुबस्सिर–संज्ञा पुं० (अ०) वह जिसे दिखाई देता हो। सुभाखा।

मुबहम–वि० (अ०) अस्पष्ट। संदिग्ध।

मुबादला–संज्ञा पुं० (अ० मुबादलः) एक चीज़ लेकर दूसरी चीज़ देना।

मुबादा–अव्य० (फा०) कहीं ऐसा न हो। यह न हो कि।

मुबादी–संज्ञा स्त्री० (अ०) आरंभ। मूल। वि० प्रकट या प्रकाशित करनेवाला।

मुबारक–वि० (अ०) १ जिसके कारण बरकत हो। २ शुभ। मंगलप्रद।

मुबारक-बाद–संज्ञा स्त्री० (अ० फा०) कोई शुभ बात होनेपर यह कहना कि "मुबारक हो।" बधाई। धन्यवाद।

मुबारक-बादी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) १ "मुबारक" कहनेकी क्रिया। बधाई। २ शुभ अवसरों-पर गाए जानेवाले बधाईके गीत।

मुबारकी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुबारक-बाद।"

मुबालग़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुबालग़ः) बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात। अत्युक्ति।

मुबाशरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) मैथुन। सम्भोग। प्रसंग।

मुबाह–वि० (अ०) विधि सम्मत। जिसके करनेकी आज्ञा हो।

मुबाहिसा–संज्ञा पुं० (अ० मुबाहिसः) बहस। वाद-विवाद।

मुबाही–वि० (अ०) १ अभिमानी। २ प्रतिष्ठित।

मुबैयन–वि० (अ०) जिसका बयान किया हो। वर्णित।

मुबैयना–वि० (अ० मुबैयनः) कहा जानेवाला। कथित।

मुब्तदा–संज्ञा पुं० (अ०) व्याकरणमें उद्देश्य या कर्त्ता।

मुब्तदी–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो अभी कोई काम सीखने लगा हो। नौसिखुआ।

मुब्तला–वि० (अ०) (विपत्ति आदि-में) फँसा हुआ। ग्रस्त।

मुब्तसिम–वि० (अ०) मुस्कराता हुआ। मन्द मन्द हँसता हुआ।

मुमकिन–वि० (अ०) हो सकनेके योग्य। जो हो सके। संभव।

मुमकिनात–संज्ञा स्त्री० बहु० (अ०) १ सम्भावनाएँ। २ हो सकने योग्य बातें।

मुमताज़–वि० (अ०) माननीय प्रतिष्ठित।

मुमलूका–वि० (अ० मुमलूकः) अधिकार या कब्जेमें आया हुआ।

मुमसिक–वि० (अ०) १ मना करने

या रोकनेवाला। २ कृपण। ३ वीर्यका स्तम्भन करनेवाला।

मुमानअत-संज्ञा स्त्री० (अ०) मनाही। वर्जन।

मुमालिक-संज्ञा पुं० (अ० "ममलकत" का बहु०) अनेक देश।

मुमिद-वि० (अ०) सहायक।

मुम्तहन-वि० (अ०) जिसका इम्तहान या परीक्षा ली जाय।

मुम्तहिन-संज्ञा पुं० (अ०) इम्तहान लेनेवाला। परीक्षक।

मुरक्कब-वि० (अ०) (बहु० मुरक्कबात) मिला हुआ। मिश्रित। संज्ञा पुं० १ लिखनेकी स्याही। मसी। २ वह चीज जो कई चीजों-के मेलसे बनी हो।

मुरक्क़ा-संज्ञा पुं० (अ० मुरक्कः) १ वह ग्रंथ जिसमें लेखन-कलाके नमूने या सुन्दर चित्र संगृहीत हों। २ फ़कीरोंकी गुदड़ी।

मुरग़ाबी-संज्ञा स्त्री० (फा०) (मुर्ग़+आबी) मुरगेकी जातिका एक पक्षी। जलकुक्कुट।

मुरग़ी-संज्ञा स्त्री० (फा०) मुर्ग़ नामक प्रसिद्ध पक्षीकी मादी।

मुरतद-संज्ञा पुं० (अ० मुर्तद) वह जो इस्लामके विरुद्ध हो। काफ़िर।

मुरत्तब-वि० (अ०) जो तरतीब या क्रमसे लगाया गया हो। क्रमबद्ध।

मुरत्तिब-संज्ञा पुं० (अ०) तरतीब या क्रम लगानेवाला।

मुरदन-संज्ञा पुं० (फा० मुर्दन) मृत्युको प्राप्त होना। मरना।

मुरदनी-संज्ञा स्त्री० (फा० मुर्दन) १ मृत्युके समय होनेवाला आकृति-का विकार। २ शवके साथ उसकी अन्त्येष्टिके लिये जाना।

मुरदा-संज्ञा पुं० (फा० मुर्दः) (बहु० मुर्दगान) वह जो मर गया हो। मरा हुआ। मृत। वि० १ मरा हुआ। मृत। २ जिसमें कुछ भी दम न हो। ३ मुरझाया हुआ।

मुरदार-वि० (फा०) १ मृत। मरा हुआ। २ अपवित्र। अस्पृश्य। संज्ञा पुं० १ मृत शरीर। शव। २ एक प्रकारकी गाली (स्त्रियाँ)।

मुरदारसंग-संज्ञा पुं० (फा०) फूँके हुए सीसे और सिन्दूरसे बना एक औषध। मुरदा संख।

मुरब्बा-संज्ञा पुं० (अ० मुरब्बः) चीनी या मिसरी आदिकी चाशनीमें रक्खा हुआ फलों या मेवों आदि-का पाक। वि० (अ० मुरब्बअ) चौकोर। चौखूँटा। संज्ञा पुं० चार चार चरणोंकी एक प्रकारकी कविता।

मुरब्बी-संज्ञा पुं० (अ०) १ संरक्षक। सर-परस्त। २ पालन-पोषण करनेवाला।

मुरव्वज-वि० (अ०) जिसका रवाज या प्रचार हो। प्रचलित।

मुरव्वत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शील। संकोच। लिहाज। २ भलमनसी। आदमीयत।

मुरशिद-संज्ञा पुं० (अ०) १ उत्तम और शुभ बातें बतलानेवाला। २ अध्यात्मका उपदेश देनेवाला। ३ शिक्षक। गुरु।

मुरसल–संज्ञा पुं० (अ०) १ दूत। २ पैगम्बर।

मुरसिल–वि० (अ०) भेजनेवाला।

मुरसिला–संज्ञा पुं० (अ० मुर्सिलः) १ भेजा हुआ पत्र आदि। २ भेजनेवाला। प्रेषक। वि० भेजा हुआ। प्रेषित।

मुरस्सा–वि० (अ० मुरस्सः) जिसमें नग आदि जड़े हों। जड़ाऊ।

मुरस्साकार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा मुरस्साकारी) नगीने जड़नेवाला।

मुराक़बा–संज्ञा पुं० (अ० मुराक़बः) १ आशा करना। २ रक्षा करना। ३ ईश्वरकी ओर ध्यान करना।

मुराक़बत–संज्ञा स्त्री० दे० "मुराक़बा।"

मुराजअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) वापस होना। लौटना। प्रत्यावर्त्तन।

मुराद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अभिलाषा। कामना। मुहा० **मुराद पाना**=मनोरथ पूर्ण होना। **मुराद माँगना**=मनोरथ पूरा होनेकी प्रार्थना करना। २ अभिप्राय। आशय। मतलब।

मुरादिफ़–वि० (अ०) पर्य्यायवाची।

मुरादी–वि० (अ०) १ अनुकूल। अपनी इच्छा या मुरादके अनुसार। २ लाक्षणिक (अर्थ)।

मुराफ़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुराफ़ऽ) (बहु० मुराफ़आत) १ प्रार्थनापत्र। २ दावा। ३ अपील।

मुरासला–संज्ञा पुं० (अ० मुरासलः) (बहु० मुरासलात) पत्र। चिट्ठी।

मुरासलात–संज्ञा पुं० (अ०) पत्रव्यवहार।

मुरीद–संज्ञा पुं० (अ०) चेला। शिष्य।

मुरीदी–संज्ञा स्त्री० (अ० मुरीद) शागिर्दी। शिष्यता।

मुरौवज–वि० दे० "मुरव्वज।"

मुरौवत–संज्ञा स्त्री० दे० "मुरव्वत"

मुर्ग़–संज्ञा पुं० (फा०) (बहु० मुर्ग़ान) एक प्रसिद्ध पक्षी जो कई रंगोंका होता है। इसके नरके सिरपर कलगी होती है।

मुर्त्तकिब–वि० (अ०) १ काममें लगानेवाला। २ करनेवाला। कर्त्ता। जैसे जुर्मका मुर्त्तकिब।

मुर्त्तजा–वि० (अ०) चुना हुआ। बढ़िया। संज्ञा पुं० हज़रत अलीकी एक उपाधि।

मुर्त्तहन–वि० (अ०) रेहन रखा हुआ।

मुर्त्तहिन–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो दूसरोंकी चीजें अपने पास रेहन रखे। महाजन।

मुर्दा–संज्ञा पुं० दे० "मुरदा"

मुर्दन–संज्ञा पुं० (फा०) मृत्युको प्राप्त होना। मरना।

मुल–संज्ञा स्त्री० (अ०) शराब।

मुलक़्क़ब–वि० (अ०) जिसको कोई लक़ब या नाम दिया गया हो। नाम या उपाधिसे युक्त।

मुलज़िम–वि० (अ०) (बहु० मुलज़िमान) जिसपर इलज़ाम या अभियोग लगा हो। अभियुक्त।

मुलतवी–वि० दे० "मुल्तवी।"

मुलब्बस–वि० (अ०) १ मिला हुआ।

२ जिसने लिबास या कपड़े पहने हों।

मुलम्मा–संज्ञा पुं० (अ० मुलम्मः) १ किसी चीज़पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदीकी पतली तह। गिलट। कलई। २ ऊपरी और झूठी दिखावट।

मुलहक़–वि० (अ०) १ पहुँचने या पहुँचानेवाला। २ लगा हुआ।

मुलहिद–वि०(अ०)काफ़िर। अधर्मी।

मुलाक़ात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आपसमें मिलना। भेंट। मिलन। २ मेल-मिलाप।

मुलाक़ाती–वि० (अ०) १ जिससे मुलाक़ात हो। २ मित्र। परिचित। वि० मुलाक़ातसम्बन्धी।

मुलाज़िम-संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुलाज़िमान) नौकर। सेवक।

मुलाज़िमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) नौकरी। सेवा।

मुलायम-वि० (अ०) १ "सख़्त" का उलटा। जो कड़ा न हो। २ हलका। मन्द। धीमा। ३ नाज़ुक। सुकुमार। ४ जिसमें किसी प्रकारकी कठोरता या खिंचाव न हो।

मुलायमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुलायमका भाव। मुलायमपन।

मुलाहज़ा–संज्ञा पुं०(अ० मुलाहज़ः) १ निरीक्षण। देख-भाल। २ संकोच। लिहाज़। ३ रिआयत।

मुलूक–संज्ञा पुं० (अ०) "मलिक" (बादशाह) का बहु०।

मलूल–वि० (अ०) दुःखी। रंजीदा।

मुलैयन–वि० (अ०) पाखाना लानेवाला। दस्तावर। रेचक।

मुल्क–संज्ञा पुं० (अ०) १ राज्य। २ देश।

मुल्की–वि० (अ०) मुल्क या देश-सम्बन्धी। देशका।

मुल्तजी–वि० (अ०) १ शरण चाहनेवाला। २ इल्तजा या प्रार्थना करनेवाला। प्रार्थी।

मुल्तवी–वि० (अ०) जो कुछ समयके लिये रोक या टाल दिया गया हो। स्थगित।

मुल्तमिस-वि० (अ०) इल्तमास या प्रार्थना करनेवाला। प्रार्थी।

मुल्ला–संज्ञा पुं० (अ०) १ बहुत बड़ा विद्वान्। २ शिक्षक।

मुवक्कल–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो किसीको अपना वकील बनावे।

मुवक्किल–संज्ञा पुं० दे० "मुवक्कल"

मुवज्जह–वि० (अ०) तर्क-संगत। उचित। ठीक।

मुवर्रिख़–संज्ञा पुं० (अ०) तवारीख़ या इतिहास लिखनेवाला। इतिहास लेखक।

मुवर्रिख़ा–वि० (अ० मवर्रिख़ः) १ लिखा हुआ। लिखित। २ अमुक तिथिको लिखित। जैसे—मुवर्रिख़ा २६ जून १९३५।

मुवहिद–वि० (अ०) १ आस्तिक। ईश्वरवादी। २ एकेश्वरवादी।

मुवाख़ज़ा-संज्ञा पुं० (अ० मुवाख़ज़ः) १ जवाब या कैफ़ियत माँगना। कारण पूछना। २ क्षति-पूर्ति। नुक़्सानी।

मुवैयद—वि० (अ०) ताईद या समर्थन करनेवाला।

मुशक्किल—वि० दे० "मुश्किल।"

मुशद्द—वि० (अ०) (अक्षर) जिसपर तशदीद लगाई गई हो। द्वित्व किया हुआ।

मुशज्जर—वि० (अ०) जिसपर शजर या बेल-बूटे बने हों। बूटेदार।

मुशफ़िक़—वि० (अ०) (क्रि० वि० मुशफ़िक़ाना) १ दया करनेवाला। मेहरबान। २ प्रियमित्र।

मुशफ़िक़ाना—वि० (अ० मुशफ़िक़ान.) मुशफ़िक़ या मित्रका-सा।

मुशब्बह—वि० (अ०) समान। तुल्य। संज्ञा पुं० जिसके साथ तशबीह या उपमा दी जाय। उपमान।

मुशरिक—वि० (अ०) १ शरीक करनेवाला। सम्मिलित करनेवाला। संज्ञा पुं० वह जो ईश्वरके अतिरिक्त और देवताओंको भी सृष्टिका कर्त्ता मानता हो। देव-पूजक।

मुशरिफ़—वि० (अ०) १ ऊँचा होनेवाला। उच्च। संज्ञा पुं० प्रधान नेता।

मुशरिब—संज्ञा पुं० दे० "मिशरब।"

मुशर्रफ़—वि० (अ०) १ जिसे ऊँचा स्थान दिया गया हो। उच्च। २ प्रतिष्ठित। माननीय।

मुशर्रह—वि० (अ०) जिसकी शरह या व्याख्या की गई हो। टीकायुक्त।

मुशर्रिह—वि० (अ०) शरह या टीका करनेवाला।

मुशाफ़ह—संज्ञा पुं० (अ०) सामने होकर बातें करना। यौ०—बिल्-मुशाफ़ह=सामने होकर। रू-ब-रू। प्रत्यक्ष।

मुशाबह—वि०(अ०) मिलता-जुलता। समान रूप या आकारवाला। समान। तुल्य।

मुशाबहत—संज्ञा स्त्री० (अ०) मिलना-जुलना होनेका भाव। रूप आदिकी समानता। तुल्यता।

मुशायख़—संज्ञा पुं० (अ० 'शेख़'का बहु०) शेख़, मुल्ला आदि धर्मज्ञ लोग।

मुशायरा—संज्ञा पुं० (अ० मशायरः) वह स्थान जहाँ बहुत-से लोग मिलकर शेर या ग़ज़लें पढ़ें। कवि-सम्मेलन।

मुशारिक—वि० दे० "शरीक।"

मुशारकत—संज्ञा स्त्री० दे० "शराकत।"

मुशार—वि० (अ०) जिसकी ओर इशारा या संकेत किया गया हो।

मुशारुन-इलैह—वि०(अ०)१जिसकी ओर इशारा या संकेत किया गया हो। २ उल्लिखित। उक्त।

मुशावरत—संज्ञा स्त्री० दे० "मशवरत।"

मुशाहरा—संज्ञा पुं० (अ० मुशाहरः) वेतन। तनख़्वाह। महीना।

मुशाहिद—वि० (अ०) देखनेवाला।

मुशाहिदा—संज्ञा पुं०(अ०मुशाहिदः) दर्शन करना। देखना।

मुशीर—संज्ञा पुं० (अ०) १ इशारा या संकेत करनेवाला। २ मश-

विरा या परामर्श देनेवाला। २ राजाका मन्त्री या अमात्य।

मुश्क–संज्ञा पुं० (फा०) कस्तूरी।

मुश्क-बू–वि० (फा०) जिसमें मुश्क या कस्तूरीकी सुगन्ध हो।

मुश्क-बेद–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका बेदका पौधा जिसके फूल सुगन्धित होते हैं।

मुश्किल–वि० (अ०) कठिन। दुष्कर। संज्ञा स्त्री० (बहु० मुश्किलात) १ कठिनता। दिक्कत। २ मुसीबत। विपत्ति।

मुश्किल-कुशा–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) (भाव० मुश्किलकुशाई) १ वह जो कठिनाइयाँ दूर करे। २ परमात्मा। परमेश्वर।

मुश्की–वि० दे० "मुश्की।"

मुश्की–वि० (फा०) १ जिसमें मुश्क या कस्तूरी मिली हो। २ मुश्क या कस्तूरीके रंगका। बहुत काला। संज्ञा पुं० एक प्रकारका घोड़ा।

मुश्कें–संज्ञा स्त्री० (दे०) कंधा और कोहनीके बीचका भाग। भुजा। बाँह। मुहा०–**मुश्कें कसना** या **बाँधना** = अपराधी आदिकी भुजाएँ पीठकी ओर कसकर बाँधना।

मुश्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) हाथकी बँधी हुई मुट्ठी।

मुश्तइल–वि० (अ०) लपटें निकालने और भड़कनेवाला। प्रज्वलित।

मुश्तक़–वि० (अ०) १ वह शब्द जो किसी दूसरे शब्दसे निकाला या बनाया गया हो। २ बहुत क्रुद्ध।

मुश्तबह–वि० (अ०) जिसमें किसी तरहका शुबहा या शक हो।

मुश्तमिल–वि० (अ०) जो शामिल हो। सम्मिलित। मिला हुआ।

मुश्तरक–वि० (अ०) जिसमें किसीकी शराकत या साझा हो। कई आदमियोंका संमिलित।

मुश्तरका–वि० (अ० मुश्तरकः) जिसपर कई आदमियोंका समान अधिकार हो। साझेका।

मुश्तरिक–संज्ञा पुं० (अ०) हिस्सेदार।

मुश्तरी–संज्ञा पुं० (अ०) १ खरीदनेवाला। माल लेनेवाला। ग्राहक। २ बृहस्पति ग्रह।

मुश्तहर–वि० (अ०) १ जिसकी शोहरत या प्रसिद्धि की गई हो। प्रकाशित।

मुश्तहिर–वि० (अ०) १ शोहरत या प्रसिद्ध करनेवाला। २ प्रकाशक।

मुश्तही–वि० (अ०) इश्तहा या कामना बढ़ानेवाला। संज्ञा पुं० क्षुधा और शक्ति बढ़ानेवाली औषध।

मुश्ताक़–वि० (अ०) (क्रि० वि० मुश्ताकाना) जिसको किसीका इश्तियाक़ हो। बहुत अधिक इच्छा या कामना रखनेवाला।

मुस्क़्क़ल वि० (अ०) जिसपर सिकली की गई हो। जो साफ करके चमकाया गया हो। (प्रायः हथियारोंके संबन्धमें प्रयुक्त।)

मुसख्खर–संज्ञा पुं० (अ०) जो

तस्वीर किया गया हो। वशमें लाया हुआ। अर्पण किया हुआ।

मुसज्जअ-वि० (अ०) १ गद्य-सा और नपा तुला। २ जिसमें तुक या अनुप्रास हो। संज्ञा पुं० एक प्रकारका अनुप्रासयुक्त गद्यवाक्य।

मुसत्तह-वि० (अ०) जिसकी सतह बराबर हो। समतल।

मुसद्दक़-वि० (अ०) जिसकी तसदीक़ हो गई हो। जिसकी शुद्धताकी परीक्षा हो चुकी हो।

मुसद्दी-संज्ञा पुं० दे० "मुतसद्दी।"

मुसद्दस-संज्ञा पुं० (अ०) १ जिसके छः पहलू या अंग हों। षट्कोण। २ एक प्रकारकी छः चरणवाली कविता।

मुसन्नफ़-वि० (अ०) (बहु० मुसन्नफ़ात) बनाया या लिखा हुआ। रचित (ग्रंथ)।

मुसन्ना-संज्ञा पुं०(अ०)लेख आदिकी दूसरी नकल। प्रतिलिपि। वि० (अ० मुसन्नअ) कृत्रिम। नकली।

मुसन्निफ़-संज्ञा पुं० (अ) ग्रंथकार। लेखक।

मुसफ़्फ़ा-वि० (अ०) साफ़ किया हुआ। शुद्ध।

मुसफ़्फ़ी-वि० (अ०) साफ़ करनेवाला। जैसे-**मुसफ़्फ़ी-ए-खून**= खून साफ़ करनेवाली दवा।

मुसब्बर-संज्ञा पुं० (अ०) एलुआ नामक ओषधि।

मुसब्बितह-वि० (अ०) मोहर किया हुआ।

मुसम्मत-संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारकी कविता जिसमें एक ही छंद और तुकान्तके अलग अलग कई बन्द होते हैं।

मुसम्मन-वि० (अ०) आठ कोष्ठवाला। अठकोनिया। आठ चरणोंकी कविता।

मुसम्मम-वि० (अ०) पक्का। दृढ़।

मुसम्मा-वि० (अ०) जिसका नाम रखा गया हो। नामी। नामक।

मुसम्मात-संज्ञा स्त्री० (अ०) एक शब्द जो स्त्रियोंके नामके पहले लगाया जाता है।

मुसम्मी-वि० (अ०) नामवाला। नामक। नामधारी।

मुसरिफ़-वि० (अ०) व्यर्थ और अधिक व्यय करनेवाला।

मुसरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) खुशी। प्रसन्नता। आनन्द।

मुसलमान-संज्ञा पुं० (अ०)वह जो मुहम्मद साहबके चलाये हुए मजहब या सम्प्रदायमें हो। मुहम्मदी।

मुसलमानी-वि० (अ०) मुसलमानसंबंधी। मुसलमानका। संज्ञा स्त्री० मुसलमानोंकी एक रसम जिसमें छोटे बालककी इंद्रियपरका कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत।

मुसलमीन-संज्ञा पुं० (अ० मुसलिमका बहु०) मुसलमान लोग।

मुसलसल-वि० (अ०) सिलसिलेवार। लगातार या क्रमसे लगा हुआ।

मुसलिम–संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमान।

मुसलेह–वि० (अ०) १ इस्लाह या सुधार करनेवाला। सुधारक। २ परामर्श देनेवाला। ३ मारक।

मुसल्लम–वि० (अ०) १ तसलीम किया हुआ। माना हुआ। २ साबुत या पूरा रखा हुआ। ३ पूरा। कुल।

मुसल्लस–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जिसमें तीन कोण या भुजाएँ हों। त्रिभुज। २ तीन तीन पंक्तियों या पदोंकी एक प्रकारकी कविता।

मुसल्लसी–वि० (अ०) तिकोना।

मुसल्लह–वि० (अ०) जिसके पास हथियार हों। हथियार-बन्द।

मुसल्ला–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह छोटी दरी आदि जिसपर बैठकर नमाज पढ़ते हैं। २ नमाज पढ़नेकी जगह।

मुसव्वदह–संज्ञा पुं० दे० "मसवदा।"

मुसव्वर–वि० (अ०) बनाया या अंकित किया हुआ। संज्ञा पुं० दे० "मुसव्विर।"

मुसव्विर–संज्ञा पुं० (अ०) तसवीर बनानेवाला। चित्रकार।

मुसव्विरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) तसवीरें बनानेका काम। चित्र-कला।

मुसहफ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ छोटी छोटी पुस्तकों या विषयोंका संग्रह। २ पृष्ठ। वरक। ३ कुरान शरीफ़।

मुसहिल–संज्ञा पुं० (अ०) दस्त लानेवाली दवा। रेचक पदार्थ।

मुसाफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दूरी। अंतर। २ परिश्रम।

मुसाफ़हा–संज्ञा पुं० (अ० मुसाफ़हः) भेंट होनेके समय मित्रसे हाथ मिलाना।

मुसाफ़ात–संज्ञा पुं० बहु० (अ०) मित्रता। दोस्ती।

मुसाफ़िर–संज्ञा पुं० (अ०) सफ़र करनेवाला। यात्री।

मुसाफ़िर-खाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) मुसाफ़िरोंके ठहरनेकी जगह।

मुसाफ़िरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सफ़र करना। २ विदेश। परदेश।

मुसाफ़िराना–वि० (अ० मुसाफिरसे फा०) मुसाफ़िरोंका। यात्री-सम्बन्धी।

मुसाफ़िरी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुसाफ़िरत।"

मुसावात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बराबरी। समानता। २ नित्य प्रतिकी सामान्य बातें या घटनायें। ३ लापरवाही। निश्चिन्तता। ४ गणितमें समीकरण।

मुसावी–वि० (अ०) बराबर। तुल्य।

मुसाहिब–संज्ञा पुं० (अ०) धनवान् या राजा आदिका पार्श्ववर्ती।

मुसाहिबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुसाहिबका काम। पास बैठना।

मुसाहिबी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुसाहिबत।"

मुसिन–वि० (अ०) जिसका सिन या उम्र ज्यादा हो। वृद्ध। बुड्ढा।

मुसिह्ह-वि० (अ०) सही या ठीक करनेवाला। भूल सुधारनेवाला।
मुसीबत-संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० मसायब) १ तकलीफ़। कष्ट। २ विपत्ति। संकट।
मुस्किर-संज्ञा पुं० (अ०) नशा पैदा करनेवाली चीज़।
मुस्किरात-संज्ञा पुं० (अ० मुस्किर का बहु०) नशा पैदा करनेवाली चीज़ें। मादक द्रव्य आदि।
मुस्तअद-वि० दे० "मुस्तैद।"
मुस्तअफ़ी-वि० (अ०) इस्तीफ़ा या त्याग-पत्र देनेवाला।
मुस्तअमल-वि० (अ०) १ जो अमल में लाया गया हो। प्रचलित। २ काममें लाया हुआ। इस्तेमाल किया हुआ।
मुस्तआर-वि० (अ०) उधार या मँगनी लिया हुआ।
मुस्तक़बिल-संज्ञा पुं० (अ०) आनेवाला समय। भविष्यत्काल।
मुस्तक़िल-वि० (अ०) १ दृढ़तापूर्वक स्थापित किया हुआ। २ दृढ़। मज़बूत। ३ स्थायी। यौ० **मुस्तक़िल मिज़ाज**=दृढ़निश्चयी।
मुस्तक़ीम-वि० (अ०) सीधा खड़ा हुआ।
मुस्तग़नी-वि० (अ०) १ स्वतंत्र। स्वच्छन्द। आज़ाद। २ बे-परवाह। मनमौजी। ३ धनवान्। ४ पूर्णकाम। सन्तुष्ट।
मुस्तग़फ़िर-वि० (अ०) इस्तग़फ़ार या दयाकी प्रार्थना करनेवाला।
मुस्तग़रक़-वि० (अ०) १ जो ग़र्क़ हो। डूबा हुआ। २ लीन।
मुस्तग़ीस-संज्ञा पुं० (अ०) दावा करनेवाला। दावेदार।
मुस्तज़ाद-वि० (अ०) बढ़ाया हुआ। अधिक किया हुआ। संज्ञा पुं० एक प्रकारका छन्द जिसके प्रत्येक चरणके अन्तमें कुछ और पद लगा रहता है।
मुस्तजाब-वि० (अ०) स्वीकृत। मानी हुई। कबूल (प्रार्थना आदि)।
मुस्ततील-संज्ञा पुं० (अ०) वह चौकोर क्षेत्र जो लम्बा ज़्यादा और चौड़ा कम हो। समकोण आयत।
मुस्तदई-वि० (अ०) इस्तदुआ या प्रार्थना करनेवाला। प्रार्थी।
मुस्तदीर-वि० (अ०) गोल। गोलाकार।
मुस्तनद-वि० (अ०) १ जो सनद या प्रमाणके रूपमें माना जाय। २ जिसने कोई सनद या प्रमाण-पत्र प्राप्त किया हो।
मुस्तफ़ा-वि० (अ०) जो साफ़ किया गया हो। संज्ञा पुं० वह जिसमें मनुष्योंका कोई दुर्गुण न हो (प्रायः पैग़म्बरके लिये प्रयुक्त)।
मुस्तफ़ीज़-वि० (अ०) फैज़ चाहनेवाला। लाभ या उपकारकी आशा रखनेवाला।
मुस्तफ़ीद-वि० (अ०) फ़ायदा चाहनेवाला। लाभका इच्छुक।

मुस्तरद्द–वि० (अ०) १ वापस या रद्द किया हुआ। २ दोहराया हुआ।

मुस्तवी–वि० (अ०) जिसकी सतह बराबर हो। समतल।

मुस्तस्ना–वि० (अ०) विशेष रूपसे अलग किया हुआ। पृथक् किया हुआ। मुक्त।

मुस्तहक़–वि० (अ०) १ जिसको हक़ हासिल हो। २ अधिकारी। पात्र।

मुस्तहकम–वि० (अ०) १ पक्का। दृढ़। मज़बूत। २ ठीक। वाजिब।

मुस्ताजिर–संज्ञा पुं० (अ०) १ इजारा या ठेका लेनेवाला। ठेकेदार। २ कृषक। खेतिहर।

मुस्ताजिरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ठेकदारी। २ ज़मीनका पट्टा। ३ पट्टे या इजारेपर लिया हुआ खेत।

मुस्तैद–वि० (अ० मुस्तअद)(संज्ञा मुस्तैदी) १ तत्पर। २ चालाक।

मुस्तैफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह जिसने इस्तीफ़ा या त्याग-पत्र दे दिया हो।

मुस्तौजिब–वि० (अ०) १ जिसपर सज़ा वाजिब हो। दण्ड-योग्य। २ जिसपर कोई बात वाजिब हो। किसी बातका पात्र।

मुस्तौफ़ी–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो पूरा ऋण चुकता या वापस लेता हो। २ आय-व्यय-परीक्षक।

मुस्बत–वि० (अ०) १ लिखा हुआ। लिखित। २ प्रमाणित किया हुआ। सिद्ध। संज्ञा पुं० जोड़। धन (गणित)।

मुहकम–वि० (अ०) दृढ़। मज़बूत। पक्का। पुख़्ता।

मुहकमा–संज्ञा पुं० दे० "महकमा।"

मुहक़्क़क़–वि० (अ०) १ जो जाँच करनेपर ठीक निकला हो। परीक्षित। आज़माया हुआ। २ पूरी तरहसे ठीक। संज्ञा पुं० एक प्रकारकी सुन्दर लिपि।

मुहक़्क़र–वि० दे० "हक़ीर।"

मुहक़्क़िक़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुहक़्क़क़ीन) वह जो सब बातोंकी हक़ीक़त या वास्तविकताकी जाँच करता हो।

मुहज़्ज़ब–वि० (अ०) तहज़ीबदार। शिष्ट। सभ्य।

मुहतमल–वि० (अ०) १ अस्पष्ट। संदिग्ध। २ हो सकने योग्य।

मुहतरम–वि० (अ०) १ पूज्य। मान्य। २ प्रतिष्ठित।

मुहतशिम–संज्ञा पुं० (अ०) वह जिसके पास बहुत धन और नौकर चाकर हों।

मुहतसिब–संज्ञा पुं० (अ०) वह कर्मचारी जो लोगोंके आचरण आदिके निरीक्षणके लिए नियुक्त हो।

मुहताज–वि० (अ०) १ जिसके पास कुछ न हो। दरिद्र। ग़रीब। २ जिसे किसी बातकी अपेक्षा या आवश्यकता हो।

मुहताज-ख़ाना–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) वह स्थान जहाँ मुहताज और ग़रीब रहते हों। अनाथालय।

मुहताजी–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुह-

ताज होनेका भाव । ग़रीबी ।

मुहताजगी–दे० "मुहताजी ।"

मुहद्दिस–संज्ञा पु० (अ०) १ वह जो हदीस (धर्मशास्त्र) का ज्ञाता हो । २ आविष्कारक । ३ व्याख्याता ।

मुहन्दिस–संज्ञा पुं० (अ०) गणित और ज्यामितका ज्ञाता ।

मुहब्बत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रेम । प्यार । २ मित्रता । दोस्ती ।

मुहब्बत-आमेज़–वि० (अ०+फा०) जिसमें मुहब्बत मिली हो । प्रेम-पूर्ण । मुहा०–**मुहब्बतका दम भरना**=स्पष्टरूपसे कहना कि मैं अमुकके साथ प्रेम करता हूँ ।

मुहम्मद-वि० (अ०) जिसकी बहुत अधिक प्रशंसा हो । संज्ञा पुं० इस्लाम के प्रवर्त्तक अरबके प्रसिद्ध पैगम्बर ।

मुहर्रफ–वि० (अ०) बदला और बिगाड़ा हुआ ।

मुहर्रम–संज्ञा पु० (अ०) १ मुसलमानी वर्षका पहला महीना जिसमें हुसेनकी मृत्यु हुई थी और जिसमें मुसलमान लोग शोक मनाते हैं । २ शोक । मातम । **मुहर्रमकी पैदाइश**=वह जो परिहास आदिसे दूर रहे । रोनी सूरत-वाला । यौ०–**मुहर्रमी सूरत**=हँसी मज़ाक़से सदा दूर रहने-वाला ।

मुहर्रिक–वि० (अ०) १ हरकत करने या हिलनेवाला । २ गति उत्पन्न करनेवाला । संचालक । ३ नेता । नायक । प्रधान

मुहर्रिर–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो तहरीर करता या लिखता हो । २ लिखनेवाला । लेखक ।

मुहर्रिरा–वि० (अ० मुहर्रिरः) लिखा हुआ । लिखित ।

मुहर्रिरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) मुहर्रिरका काम या पद ।

मुहल्ला–संज्ञा पुं० दे० "महल्ला ।"

मुहसिन–वि० दे० "मोहसिन ।"

मुहाजरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ अलग होना । पृथक् होना । २ एक स्थान छोड़कर बसनेके लिए दूसरी जगह जाना ।

मुहाजिर-संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुहाजिरीन) हिजरत करनेवाला । अपना देश छोड़कर दूसरे देशमें जा बसनेवाला ।

मुहाज़–संज्ञा पुं० (अ०) सामनेवाला भाग । मुक़ाबलेका हिस्सा ।

मुहाफ़ज़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) हिफ़ाज़त । रक्षा ।

मुहाफ़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुहाफ़ः) स्त्रियोंकी सवारीकी एक प्रकारकी पालकी या डोली ।

मुहाफ़िज़–संज्ञा पुं०(अ०) १ हिफ़ाज़त या रक्षा करनेवाला । रक्षक ।

मुहाफ़िज़-ख़ाना–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ किसी कार्यालय या न्यायालय आदिके काग़ज़-पत्र रहते हों ।

मुहाफ़िज़-दफ़्तर–संज्ञा पुं० (अ०) किसी कार्यालय या न्यायालय आदिके काग़ज़-पत्र क्रमसे रखने-वाला अधिकारी

मुहाबा–संज्ञा पुं० (अ०) १ रिआयत। २ मुरव्वत। ३ मदद।
मुहार–संज्ञा स्त्री० दे० "महार।"
मुहारबा–संज्ञा पुं० (अ० मुहारबः) १ लड़ाई झगड़ा। २ युद्ध।
मुहल–वि० (अ०) जो न हो सकता हो। असम्भव। ना-मुमकिन। संज्ञा पुं० दे० "महाल।"
मुहावरा–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मुहावरात) १ लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जो किसी एक ही भाषामें प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थसे विलक्षण हो। रोजमर्रा। बोल-चाल। २ अभ्यास। आदत।
मुहासबा–संज्ञा पुं० (अ० मुहास्बः) १ हिसाब। लेखा। २ पूछ-ताछ।
मुहासरा–संज्ञा पुं० (अ० मुहासरः) किले या शत्रुकी सेनाको चारों ओरसे घेरना। घेरा।
मुहासिब–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो हिसाब-किताब रखता हो। आय-व्ययका लेखा रखनेवाला। २ वह जो हिसाब जाँचता हो। आय-व्यय-परीक्षक।
मुहासिल–संज्ञा पुं० (अ०) कर या लगान आदिसे वसूल होनेवाली रकम।
मुहिब–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो प्रेम करता हो। प्रेमी। २ मित्र।
मुहिम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कठिन या बड़ा काम। २ लड़ाई। युद्ध। ३ फौजकी चढ़ाई। आक्रमण।

मुहीत–वि० (अ०) चारों ओरसे घेरनेवाला। संज्ञा पुं० १ घेरा। २ समुद्र जो पृथ्वीको चारों ओरसे घेरे हुए हैं।
मुहीब–वि० (अ० महीब) भयानक। डरावना।
मुहैया–वि० (अ०) तैयार। मौजूद।
मुह्र–संज्ञा स्त्री० दे० "मोहर।"
मू–संज्ञा पुं० (फा०) बाल। रोम। यौ०–**मू-ब-मू**= १ बाल बाल। २ बिलकुल ज्योंका त्यों।
मूए–संज्ञा पुं० (फा०) बाल। केश।
मूजिद–वि० (अ०) इजाद करनेवाला। आविष्कार करनेवाला।
मूजिब–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मूजिबात) कारण।
मूज़ी–वि० (अ०) १ इज़ा या कष्ट पहुँचानेवाला। पीड़क। २ दुष्ट।
मूनिस–संज्ञा पुं० (अ०) १ मित्र। दोस्त। २ सहायक। मददगार।
मू-ब-मू–क्रि० वि० (अ०) १ हर बालमें। बाल बालमें। २ सब बालोंमें।
मू-बाफ़–संज्ञा पुं० (फा०) बालोंमें बाँधनेका फीता या डोरा।
मूरिस–संज्ञा पुं० (अ० १ वह जो कुछ सम्पत्ति और उसका वारिस या उत्तराधिकारी छोड़ जाय। २ पूर्वज। पुरखा।
मूश–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० मूषक) चूहा। मूसा।
मू-शिगाफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) बालकी खाल निकालना। बहुत तर्क करना।

मूसी–वि० (अ०) (स्त्री० मूसिपः) वसीयत करनेवाला ।
मूसीक़ार–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक कल्पित पक्षी जो बहुत अच्छा गानेवाला माना जाता है। २ गड़ेरियोंकी एक प्रकारकी बाँसुरी ।
मूसीक़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) संगीत-शास्त्र ।
मेअराज–संज्ञा पुं० (अ०) १ ऊपर चढ़नेकी सीढ़ी । श्रेणी । २ मुहम्मद साहबका स्वर्गमें खुदाके पास जाना और वहाँसे लौटकर आना ।
मेख़–संज्ञा स्त्री० (फा०) कील । काँटा ।
मेख़चू-संज्ञा पुं० (फा०) हथौड़ा ।
मेज़–संज्ञा स्त्री० (फा०) वह लम्बी, चौड़ी और ऊँची चौकी जिसपर काग़ज़, किताब आदि रखकर लिखते पढ़ते हैं । टेबुल ।
मेज़बान–संज्ञा पुं० (फा०) (भाव० मेज़बानी) वह जिसके यहाँ कोई मेहमान आवे । आतिथ्य करनेवाला गृहस्थ ।
मेदा–संज्ञा(अ० मेअदः) पेट। उदर ।
मेमार–संज्ञा पुं० (अ० मेअमार) मकान बनानेवाला। राज । थवई ।
मेमारी–संज्ञा स्त्री० (अ० मेअमार) मेमार या राजका काम।
मेराज–संज्ञा पुं० दे० "मेअराज ।"
मेवा– संज्ञा पुं० (फा० मेवः) किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाये हुए बढ़िया फल ।
मेवा-फ़रोश–संज्ञा पुं० (फा०) मेवे या फल बेचनेवाला ।
मेश–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० मेष) भेड़ । गाडर ।
मेहतर–संज्ञा पुं० (फा०) १ बहुत बड़ा आदमी । महापुरुष । २ सरदार । नायक । ३ एक प्रकारके भंगी ।
मेहन–संज्ञा स्त्री० (अ०) मेहनतका बहु० ।
मेहनत–संज्ञा स्त्री० (अ० मिहनत) (बहु० मेहन) श्रम । प्रयास ।
मेहनताना–संज्ञा पुं० (अ० मिहनतानः) वह धन जो मेहनत या परिश्रमके बदलेमें दिया जाय ।
मेहनती–वि०(अ० मेहनत)मेहनत या परिश्रम करनेवाला । परिश्रमी ।
मेहमान–संज्ञा पुं० (फा०) पाहुना ।
मेहमान-ख़ाना–संज्ञा पुं० (फा०) मेहमानोंके ठहरनेकी जगह ।
मेहमानदार–संज्ञा पुं० (फा०) वह जिसके यहाँ कोई मेहमान आवे ।
मेहमानदारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) मेहमानकी खातिर । अतिथि-सत्कार ।
मेहमान-नवाज़–संज्ञा पुं० (फा०) मेहमानोंकी खातिर करनेवाला ।
मेहमान-नवाज़ी–संज्ञा स्त्री०(फा०) मेहमानदारी । आतिथ्य ।
मेहमानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मेहमान होनेकी क्रिया या भाव । २ दावत । भोज ।
मेहर–संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "मेह ।"
मेहरबान–संज्ञा पुं० (फा० मेहबान) १ दयालु । कृपालु । २ मित्र ।

मेहरबानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) मेहरबानी) कृपा। दया। अनुग्रह।

मेहराब–संज्ञा स्त्री० दे० "महराब।"

मेहर–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दया। कृपा। मेहरबानी। २ सहानुभूति। हमदर्दी। ३ सुख और सम्पन्नता। संज्ञा पुं० १ सूर्य्य। सूरज। २ एक प्रकारका सौर मास जो कार्तिकके लगभग पड़ता है।

मै–संज्ञा स्त्री० (फा०) शराब। मद्य। मदिरा। क्रि० वि० (अ०) साथ। सहित। यौ०–ब-मै=सहित। साथ।

मै-कदा–संज्ञा पुं० (फा० मै-कदः) मैख़ाना। मधुशाला। कलवरिया।

मै-कशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) शराब पीना। मद्य-पान।

मै-ख़ाना-संज्ञा पुं० (फा०) वह स्थान जहाँ शराब मिलती या बिकती हो।

मै-ख़्वार–संज्ञा पुं० (फा०) शराब पीनेवाला। मद्यप।

मै-ख़्वारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) शराब पीना। मद्य-पान।

मैदा–संज्ञा पुं० (फा० मैदः) बहुत महीन आटा।

मैदान–संज्ञा पुं० (फा०) १ लम्बा चौड़ा समतल स्थान जिसमें पहाड़ी या घाटी आदि न हो। सपाट भूमि। २ वह लम्बी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय। ३ किसी प्रकारका क्षेत्र।

मै-नोशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) शराब पीना। मद्य-पान।

मै-परस्त–संज्ञा पुं० (फा०) मद्यका उपासक। मद्यप। शराबी।

मै-परस्ती–संज्ञा स्त्री० (फा०) मद्यकी उपासना। मद्य-पान।

मै-फ़रोश–संज्ञा पुं० (फा०) शराब बेचनेवाला।

मैमनत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सम्पन्नता। २ सुख।

मैमूँ–संज्ञा पुं० (फा०) बन्दर। वानर। वि० १ भाग्यवान्। २ शुभ।

मैयत–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मृत्यु। मौत। २ मृत शरीर। शव।

मैल–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रवृत्ति। झुकाव। २ अनुराग। प्रेम। चाह ३ सुरमा लगानेकी सलाई।

मैलान–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रवृत्ति। झुकाव। २ अनुराग। चाह।

मोअस्सर–वि० दे० "मुअस्सिर।"

मोआयना–संज्ञा पुं० दे० "मुआयना।"

मोजज़ा–संज्ञा पुं० (अ० मुअजिज़ः) अद्भुत कृत्य। करामात।

मोज़ा–संज्ञा पुं० (फा० मोज़ः) १ पैरोंमें पहननेका एक प्रकारका बुना हुआ कपड़ा। पायताबा। जुर्राब। २ पैरमें पिंडलीके नीचेका भाग।

मोतक़िद–वि० (अ० मुअतक़िद) १ एतक़ाद या विश्वास करनेवाला। २ किसी धर्मका अनुयायी।

मोतमद–वि० (अ० मुअतमद) एतमाद या विश्वासके लायक। विश्वसनीय

मोतमिद–वि० (अ० मुअतमिद) एतमाद या विश्वास करनेवाला।
मोतरिज़–वि० (अ० मुअतरिज़) एतराज़ या आपत्ति करनेवाला।
मोताद–संज्ञा स्त्री० (अ० मुअताद) औषधादिकी निश्चित मात्रा।
मोविद–वि० (अ० मुअब्दि) इबादत या भजन करनेवाला। पूजक।
मोम–संज्ञा पुं० (फा०) (वि० मोमी) वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहदकी मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं।
मोमिन–संज्ञा पुं० (अ०) १ इस्लाम और खुदापर ईमान लानेवाला। २ धर्मनिष्ठ मुसलमान। ३ मुसलमान जुलाहा।
मोमियाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) नकली शिलाजीत।
मोमी–वि० (फा०) मोमका। मोमसम्बन्धी।
मोर–संज्ञा पुं० (फा०) च्यूँटी। पिपीलिका।
मोरचा–संज्ञा पुं० (फा० मोरचः) १ वह गड्ढा जो गढ़के चारों ओर रक्षाके लिये खोदा जाता है। २ वह स्थान जहाँसे सेना गढ़ या नगर आदिकी रक्षा करती है। मुहा०–**मोरचाबंदी करना**=गढ़के चारों ओर यथास्थान सेना नियुक्त करना। **मोरचा जीतना** या **मारना**=शत्रुके मोरचेपर अधिकार करना। **मोरचा बाँधना**=दे० "मोरचा बन्दी करना।" **मोरचा लेना**=युद्ध करना।
मोहकम–वि० दे० "मुहकम।"
मोहतमिम–संज्ञा पुं० (अ० मुहतमिम) प्रबन्ध-कर्त्ता। व्यवस्थापक।
मोहतमिल–वि० (अ० मुहतमिल) बरदाश्त करनेवाला। सहनशील।
मोहताज–वि० दे० "मुहताज"(मुहताजके विकारी और यौगिकके लिए दे० "मुहताज"के विकारी और यौगिक।)
मोहमिल–वि० (अ० मुहमिल) १ जिसका कोई अर्थ न हो। निरर्थक। २ छोड़ा हुआ। त्यक्त।
मोहमिला–संज्ञा स्त्री० (अ० मुहमिलः) एक प्रकारका शब्दालंकार जिसमें केवल बिना बिन्दी या नुक़तेवाले अक्षरोंका व्यवहार होता है।
मोहर–संज्ञा स्त्री० (फा० मुह्र) १ अक्षर, चिह्न आदि दबाकर अंकित करनेका ठप्पा। मुद्रा। २ कागज आदिपर ली हुई उपयुक्त वस्तुकी छाप। अशरफी। स्वर्ण-मुद्रा।
मोहरा–संज्ञा पुं० (फा० मुहरः) १ किसी बरतनका मुँह या खुला भाग। २ किसी पदार्थका ऊपरी या अगला भाग। ३ सेनाकी अगली पंक्ति। ४ फौजकी चढ़ाईका रुख। मुहा०–**मोहरा लेना**= १ सेनाका मुकाबला करना। ५ हड्डीकी गुरिया या दाना। ६ कौड़ी। घोंघा। ७ बड़ी कौड़ी जिससे रगड़ कर कोई चीज चमकाते हैं। ८ चमक।

पालिश । ६ शतरंज खेलनेकी गोटी ।

मोहलत–संज्ञा स्त्री० (अ०मुहलत) १ फ़ुरसत । छुट्टी । २ अवधि ।

मोहलिक–वि० (अ० मुहलिक) १ हलाक करने या मार डालने-वाला । २ घातक (रोग) ।

मोह्र–संज्ञा स्त्री० दे० "मोहर ।"

मोहसिन–वि० (अ० मुहसिन) एह-सान या उपकार करनेवाला ।

मोहसिन-कुश–वि० (अ०+फ़ा०) वह जो एहसान या उपकार न माने । कृतघ्न ।

मौक़ा–संज्ञा पुं०(अ० मौक़ः) (बहु० मवाक़ऽ) १ घटना-स्थल । वार-दातकी जगह । २ देश । स्थान । जगह । ३ अवसर । समय ।

मौक़ूफ़–वि० (अ०) १ रोका हुआ । बन्द किया हुआ । २ नौकरीसे अलग किया हुआ । बरख़ास्त । ३ रद किया हुआ । ४ अवलंबित ।

मौक़ूफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ० मौक़ूफ़) १ मौक़ूफ़ होनेकी क्रिया या भाव । २ बन्द किया जाना । ३ नौकरीसे हटाया जाना ।

मौज–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० अमवाज) १ पानीकी लहर । २ मनकी उमंग । जोश ।

मौज़ा–संज्ञा पुं० (अ० मौज़) (बहु० मवाज़ऽ) १ जगह । २ खेत । ३ गाँव ।

मौज़ूँ–वि० (अ०) (भाव० मौज़ू-नियत) ठीक । उचित ।

मौजूद–वि० (अ०) १ उपस्थित । हाज़िर । २ प्रस्तुत । तैयार ।

मौजूदगी–संज्ञा स्त्री० (अ०) उप-स्थिति । हाज़िरी ।

मौजूदा–वि० (अ० मौजूदः) । इस समयका । वर्तमान कालका ।

मौजूदात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सृष्टिकी सब वस्तुएँ और प्राणी । २ सेना आदिकी हाज़िरी ।

मौत–संज्ञा स्त्री० (अ०) मृत्यु ।

मौताद–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) मात्रा । ख़ुराक । (औषध)

मौरूसी–वि० (अ०) बाप-दादासे विरासतमें मिला हुआ । पैतृक ।

मौलवी–संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमान धर्मका आचार्य जो अरबी, फ़ारसी आदिका पंडित होता है ।

मौला–संज्ञा पुं० (अ०) १ मित्र । सहायक । २ स्वामी । ३ ईश्वर ।

मौलाना–संज्ञा पुं० (अ० मौला) बहुत बड़ा विद्वान् । मौलवी ।

मौलिद–वि० (अ०) जन्म-स्थान ।

मौलूद–संज्ञा पुं० (अ०) १ नवजात शिशु । १ मुहम्मद साहबके जन्म-का उत्सव ।

मौसिम–संज्ञा पुं० (अ०) १ उपयुक्त समय । २ ऋतु ।

मौसिमी–वि० (अ०) मौसिमका । ऋतुसम्बन्धी ।

मौसूफ़–वि० (अ०) १ जिसकी तारीफ़ या वर्णन किया गया हो । २ उल्लिखित । उक्त । कथित ।

मौसूम–वि० (अ०) नामधारी । नामक ।

मौसूल–वि० (अ०) १ मिला हुआ। सम्बद्ध। २ प्राप्त।

मौहूम–वि० (अ०) कल्पित।

(**य**)

यक–वि० (फा० मि० सं० एक) एक।

यक-क़लम–वि० (फा०+अ०) एक सिरेसे सब। पूरा। क्रि० वि० एक-बारगी। एक ही दफ़ामें।

यक ज़बाँ–वि० (फा०) (संज्ञा यक-ज़बानी) एक बात कहनेवाला। बातका पक्का। सच्चा।

यक-जहत–वि० (फा०) (संज्ञा यक-जहती) एक-मत। सहमत।

यक-जा–क्रि० वि० (फा०) एक ही स्थानमें इकट्ठा। एकत्र।

यक-जाई–वि० (फा०) जो सब मिलकर एक ही स्थानमें हों या रहते हों। एक स्थानपर मिले हुए।

यकता–वि० (फा०) जिसके जोड़का और कोई न हो। अनुपम।

यकताई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ यकता या एक होनेका भाव। २ अनुपमता। अनोखापन।

यक-दिगर–क्रि० वि० (फा०) एक दूसरेको। परस्पर।

यक-न-शुद दो शुद–(फा०) एक नहीं बल्कि दो। एक तो था ही, एक और भी हो गया।

यक बयक–दे० "यक-बारगी।"

यक-बारगी–क्रि० वि० (फा०) एक-बारगी। अचानक। सहसा।

यक-मुश्त–क्रि० वि० (फा०) एक ही बारमें। एक साथ (रुपया आदि चुकाना)।

यक-रंग–वि० (फा०) (संज्ञा यक-रंगी) १ अन्दर और बाहर एक-सा। २ निष्कपट।

यक-लख़्त–वि० दे० "यक-क़लम।"

यक-शंबा–संज्ञा पुं० (फा० यक-शंबः) रविवार। इतवार।

यक-सर–क्रि० वि० (फा०) निपट। नितान्त। बिलकुल।

यक-साँ–वि० (फा०) एक-सा। एक ही तरहका। समान।

यक-सू–वि० (फा०) (संज्ञा यकसूई) १ जो एक ही तरफ हो। २ ठहरा हुआ। स्थिर।

यकायक–क्रि० वि० (फा०) अचानक। सहसा। एक-बारगी।

यक़ीन-संज्ञा पुं० (अ०) विश्वास। एतबार। मुहा०–**यक़ीन लाना**= विश्वास करना। मानना।

यक़ीनन्–क्रि० वि० (अ०) निश्चित रूपसे। अवश्य।

यक़ीनी–वि० (अ०) बिलकुल। निश्चित। अवश्यम्भावी। ध्रुव।

यक्का-वि० (फा० यकः) १ एकसे संबंध रखनेवाला। २ अकेला। एकाकी। ३ अनुपम। बेजोड़। संज्ञा पुं० एक प्रकारकी एक घोड़े-की सवारी। एका।

यक्का-ताज़–वि० (फा०) जो अकेला ही शत्रुओंका सामना करनेको तैय्यार हो।

यक्कुम–वि० (फा०) प्रथम। पहला।

यख़–संज्ञा पुं० (फा०) जमा हुआ

पाला या बरफ़ । वि०—बरफ़की तरह ठंढा । बहुत ठंढा ।

यख़नी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) उबले हुए मांसका रसा । शोरबा ।

यग़मा—संज्ञा पुं० (फ़ा० यग़मः) १ लूट । डाका । २ तुर्किस्तानका एक नगर जहाँके निवासी बहुत सुन्दर होते हैं ।

यग़माई—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) डाकू । लुटेरा ।

यग़मान—संज्ञा पुं० दे० "यग़मा ।"

यगाँ—क्रि० वि० (फ़ा०) अकेले ।

यगानगत—संज्ञा स्त्री० (फ़ा० यगाँ) १ रिश्तेदारी । आपसदारी । सम्बन्ध । २ अनोखापन । अनुपमता । ३ एक होनेका भाव । एकता । ४ मेलजोल । एका ।

यगानगी—दे० "यगानगत ।"

यगाना—वि० (फ़ा० यगानः) १ पासका रिश्तेदार । सम्बंधी । अपना । २ अनुपम । बेजोड़ । संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जो किसी स्त्रीके साथ चपटी लड़ाना चाहती हो । दुगानाका उलटा ।

यज़दान—संज्ञा पुं० (फ़ा० यज़्दान) ईश्वरका एक नाम ।

यज़दान-परस्ती—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ ईश्वरकी उपासना । २ आस्तिकता ।

यज़दानी—वि० (फ़ा०) ईश्वर-सम्बन्धी । ईश्वरीय । संज्ञा पुं० अग्निपूजक । पारसी ।

यज़ीद—संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो ख़लीफ़ा बनना चाहता था और जिसने करबलामें हज़रत इमाम हुसेनकी हत्या कराई थी ।

यज़्द—संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ ईरानका एक प्रसिद्ध नगर । २ ईश्वर ।

यज़्दान—संज्ञा पुं० दे० "यज़दान ।"

यतीम—संज्ञा पुं० (अ०) १ वह बालक जिसका पिता मर गया हो । २ अनाथ ।

यतीम-ख़ाना—संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) यतीमोंके रहनेकी जगह । अनाथालय ।

यतीमी—संज्ञा स्त्री० (अ०) यतीम या अनाथ होनेकी दशा या भाव ।

यद—संज्ञा पुं० (अ०) हाथ । हस्त ।

यदे-तूला—संज्ञा पुं० (अ०) १ बहुत लम्बा हाथ । २ दक्षता । प्रवीणता ।

यदे-बैज़ा—संज्ञा पुं० (अ०) १ बहुत चमकता हुआ और गोरा चिट्टा हाथ । २ हज़रत मूसाका वह हाथ जो आगमें जल गया था और जिसमें ईश्वरीय प्रकाश आ गया था ।

यम—संज्ञा पुं० (फ़ा०) नदी । दरिया ।

यमन—संज्ञा पुं० (अ०) अरबके एक प्रसिद्ध प्रान्तका नाम ।

यमनी—वि० (अ०) यमन देशका । यमन-सम्बन्धी ।

यमान—वि० (अ०) यमन देशका । यमन-सम्बन्धी ।

यमानी—संज्ञा पुं० (अ०) यमन देशका निवासी । संज्ञा स्त्री० यमन देशकी भाषा । वि० यमन देशका ।

यमीन—संज्ञा पुं० (अ०) १ दाहिना हाथ । २ शपथ । कसम । सौगन्द ।

बल । शक्ति । ताक़त । वि० दाहिना । दायाँ । यौ०—**यमीन व यसार**= दाहिना और बायाँ ।

यरकान—संज्ञा पुं० (अ०) कमला या पाण्डु नामक रोग । पीलिया ।

यरग़माल—संज्ञा पुं० (फा० यर्ग़माल) १ किसी व्यक्ति या वस्तुको किसी दूसरेके पास उस समय तक जमानतमें रखना जब तक उस व्यक्तिको कुछ रुपया न दिया जाय या उसकी कोई शर्त न पूरी की जाय । ओल । ज़मानत । २ वह व्यक्ति या वस्तु जो किसीके पास इस प्रकार रखी जाय ।

यर्ग़माल—संज्ञा पुं० दे० "यरग़माल ।"

यलग़ार—संज्ञा स्त्री० (तु०) आक्रमण । चढ़ाई । धावा ।

यल्दा—संज्ञा स्त्री० (फा०) अँधेरी और लम्बी रात ।

यशब—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका हरा पत्थर जिसकी नादली बनती है ।

यशम—संज्ञा पुं० दे० "यशब ।"

यसार—संज्ञा पुं० (अ०) १ बायाँ हाथ । २ सम्पन्नता । अमीरी । ३ अभागा ।

यहूद—संज्ञा पुं० "यहूदी" का बहु० । संज्ञा पुं० वह देश जहाँ हज़रत ईसा पैदा हुए थे ।

यहूदी—संज्ञा पुं० (इब्रा०) यहूद देशका निवासी ।

याँ-क्रि० वि० हिं० "यहाँ" का संक्षिप्त रूप ।

या—अव्य० (फा०) अथवा । वा । अव्य० (अ०) एक प्रकारका सम्बोधन । हे । जैसे— या रब । खुदा या ।

याक़ूत—संज्ञा पुं० (अ०) लाल नामक रत्न । (इसकी उपमा प्रायः प्रेमिकाके होंठोंसे दी जाती है ।)

याक़ूती—वि० (अ०) याक़ूत या लालसम्बन्धी । संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकारकी बहुत पौष्टिक औषध । नोश-दारू । २ खीरकी तरहका एक व्यंजन ।

याजूज-संज्ञा पुं० (अ०) १ उपद्रवी । शरारती । फ़सादी । २ एक दुष्ट व्यक्ति जो याफ़िसका लड़का और नूहका पोता माना जाता है । इसका एक और भाई माजूज था और ये दोनों बहुत बड़े उपद्रवी थे । उत्तरी ध्रुवमें रहनेवाले एस्किमो लोग ।

याद—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ स्मरण-शक्ति । स्मृति । स्मरण करनेकी क्रिया ।

याद-आवरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ याद आना । स्मरण होना । २ किसीको स्मरण करके उससे मिलना या कुशल-मंगल पूछना । जैसे—मैं आपकी याद-आवरीका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ ।

यादगार—संज्ञा स्त्री० (फा०) स्मृति-चिह्न ।

यादगारी—संज्ञा स्त्री० दे० "यादगार"

यादगारे-ज़माना—संज्ञा स्त्री० (फा०)

ऐसी चीज़ या व्यक्ति जो लोगोंको बहुत दिनों तक याद रहे।

याद-दाश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ स्मरण-शक्ति। स्मृति। २ स्मरण रखनेके लिये लिखी हुई कोई बात।

याद-दिहानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) याद दिलाना। स्मरण कराना।

याद-दिही—संज्ञा स्त्री० (फा०) स्मरण रखना।

याद-फ़रामोश—संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी बाजी जिसमें यह बदा जाता है कि एक व्यक्तिको जब कोई चीज़ दे, तो पानेवाला कहे—याद है। और यदि वह यह कहना भूल जाय तो देनेवाला कहता है—फ़रामोश।

यादश-बख़ैर—(फा०+अ०) एक पद जिसका व्यवहार किसी अनुपस्थित मित्र या सम्बन्धीका उल्लेख करते समय होता है और जिसका अर्थ है—जिनको याद करते हैं, वे सकुशल रहें।

याद्दाश्त—दे० "याद-दाश्त।"

यानी—क्रि० वि० (अ० यअनी) अर्थात्। मतलब यह कि।

याने—क्रि० वि० दे० "यानी।"

याफ़्त—संज्ञा स्त्री०(फा०) १ पानेकी क्रिया। पाना। २ आय।

याफ़्तनी—संज्ञा स्त्री० (फा०) किसीके जिम्मे बाकी रक़म। प्राप्य धन।

याब—प्रत्य० (फा०) पानेवाला। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे—काम-याब, फ़तह-याब।)।

याबिन्दा—वि० (फा० याबिन्दः) पानेवाला।

याबी—संज्ञा स्त्री० (फा०) पानेकी क्रिया। पाना (यौगिक शब्दोंके अन्तमें। जैसे—काम-याबी, फ़तह-याबी।)।

याबू—संज्ञा पुं० (फा०) छोटा घोड़ा। टट्टू।

यार—संज्ञा पुं० (फा०) १ सहायक। साथी। मददगार। २ मित्र। दोस्त। ३ उप-पति। जार। ४ प्रिय। प्रेमी या प्रेमिका।

यार-बाज़—वि० स्त्री० (फा०) संज्ञा यारबाज़ी) दुश्चारिणी। पुंश्चली। वि० पुं० यार दोस्तोंमें ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करनेवाला।

यार-बाश—वि० (फा०) संज्ञा (यार-बाशी) १ यार-दोस्तोंमें ही अधिकांश समय व्यतीत करनेवाला। मिलनसार। २ कामुक।

यार-फ़रोश—वि०(फा०)(संज्ञा यार-फ़रोशी) खुशामदी। चापलूस।

यार-मार—वि० (फा० यार + हि० मारना) (संज्ञा यार-मारी) मित्रोंके साथ विश्वासघात करनेवाला।

यारा—संज्ञा पुं० (फा०) सामर्थ्य।

यारान—संज्ञा पुं० (फा०) "यार"-का बहु०।

याराना—क्रि० वि० (फा० यारानः) यार या मित्रकी तरह। वि० मित्रोंका-सा। संज्ञा पुं० १ मित्रता। २ स्नेह। प्रेम।

यारी–संज्ञा स्त्री०(फा०) १ मित्रता । २ स्त्री और पुरुषका अनुचित प्रेम ।

यारे-ग़ार–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) १ पहले ख़लीफ़ा अबूबक सिद्दीक जिन्होंने एक ग़ार या गुफ़ातकमें मुहम्मद साहबका साथ दिया था । सब प्रकारकी विपत्तियोंमें साथ देनेवाला सच्चा मित्र ।

यारे-जानी–वि० (फा०) परम प्रिय । प्राण-प्रिय । दिली दोस्त ।

याल–संज्ञा स्त्री० (तु०) १ गरदन । २ घोड़े, शेर आदिकी गरदनपरके बाल । अयाल । केसर ।

यावर–संज्ञा पुं० (फा०) सहायक ।

यावरी–संज्ञा स्त्री०(फा०)सहायता ।

यावा–वि० (फा० यावः) बे-सिर-पैरकी या ऊट-पटाँग (बात) ।

यावागो–वि० (फा०) (संज्ञा यावा-गोई) व्यर्थकी और ऊट-पटाँग बातें बकनेवाला । बकवादी ।

यास–संज्ञा स्त्री० (अ०) निराशा ।

यासमन–संज्ञा पुं० (फा०) चमेली ।

यासमीन–दे० "यासमन ।"

यासीन–संज्ञा स्त्री० (अ०) कुरानकी एक आयत या मन्त्र जो किसी मरणासन्न व्यक्तिको इसलिए पढ़कर सुनाया जाता है कि उसका पर-लोक सुधर जाय । क्रि० प्र० पढ़ना ।

याहू–(अव्य०) (अ०) हे ईश्वर । संज्ञा पुं० एक प्रकारका कबूतर जिसका शब्द "याहू" के समान होता है ।

युमन–संज्ञा पुं० (अ०) १ सौभाग्य । खुशकिस्मती । २ सफलता ।

यूज़–संज्ञा पुं० (फा०) चीता नामक जंगली पशु । वि०–सौ । शत ।

यूनस–संज्ञा पुं० (इब्रा०) १ स्तम्भ । खम्भा । २ एक पैगम्बरका नाम ।

यूनुस–संज्ञा पुं० दे० "यूनस ।"

यूरिश–संज्ञा स्त्री० (तु०) आक्रमण । चढ़ाई । धावा ।

यूसुफ़–संज्ञा पुं० (इब्रा०) हज़रत याकूबके पुत्र जो परम सुन्दर थे और जिन्हें भाइयोंने ईर्ष्या-वश बेच डाला था । आगे चलकर इनपर मिस्रकी जुलेखा आसक्त हो गई थी । इन्होंने बहुत दिनों तक मिस्रपर राज्य किया था ।

यूहा–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका कल्पित साँप । कहते हैं कि जब यह हजार बरसका हो जाता है, तब उसमें ऐसी शक्ति आ जाती है कि यह जो रूप चाहे, वह धारण कर ले ।

येलाक़–संज्ञा पुं० (तु० यीलाक़) वह स्थान जहाँ गरमीके दिनोंमें भी ठंडक रहती हो । ग्रीष्म निवास ।

योम–संज्ञा पुं० दे० "यौम ।"

यौम–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० ऐयाम) दिवस । दिन ।

यौम-उल्-हिसाब–संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानों आदिके अनुसार वह अन्तिम दिन जब प्रत्येक मनुष्यसे उसके कामोंका हिसाब माँगा जायगा ।

यौमिया–संज्ञा पुं० (अ० यौमियः)

एक दिनकी मजदूरी। वि० प्रति दिनका। वि० प्रति दिन।

(र)

रंग—संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० रंग) १ आकारसे भिन्न किसी दृश्य पदार्थका वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखोंसे होता है। वर्ण। जैसे—लाल, काला। २ वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीजको रंगनेके लिये होता है। ३ बदन और चेहरेकी रंगत। वर्ण। मुहा०—**चेहरेका रंग उड़ना या उतरना**=भय या लज्जासे चेहरेकी रौनकका जाता रहना। कान्तिहीन होना। **रंग निखरना**=चेहरा साफ और चमकदार होना। **रंग बदलना**=क्रुद्ध होना। नाराज होना। ४ जवानी। युवावस्था। मुहा०—**रंग चूना या टपकना**=युवावस्थाका पूर्ण विकास होना। यौवन उमड़ना। ५ शोभा। सौन्दर्य। ६ प्रभाव। असर। मुहा०—**रंग जमना**=प्रभाव या असर पड़ना। ७ गुण या महत्त्वका प्रभाव। धाक। मुहा०—**रंग जमाना या बाँधना**=प्रभाव डालना। **रंग लाना**=प्रभाव या गुण दिखलाना। ८ क्रीड़ा। कौतुक। आनंद। उत्सव। यौ०—**रंग-रलियाँ** = आमोद-प्रमोद। मौज। मुहा०—**रंग रलना**=आमोद-प्रमोद करना। **रंगमें भंग पड़ना**=आनन्दमें विघ्न पड़ना। ९ मनकी उमंग या तरंग। मौज। १० आनन्द। मजा। मुहा०—**रंग जमना**=आनन्दका पूर्णतापर आना। खूब मजा होना। ११ दशा। हालत। १२ अद्भुत व्यापार। कांड। दृश्य। १३ प्रेम। अनुराग। १४ ढंग। चाल। तर्ज। यौ०—**रंग ढंग**=१ दशा। हालत। २ चाल-ढाल। तौर तरीका। ३ व्यवहार। बरताव। ४ लक्षण। १५ चौपड़की गोटियोंके दो कृत्रिम विभागोंमें एक। मुहा०—**रंग मारना** = बाजी जीतना।

रंगत—संज्ञा स्त्री० (हिं० रंग+त प्रत्य०) १ रंगका भाव। २ मजा। आनन्द। ३ हालत। दशा।

रंग-महल—संज्ञा पुं० (फा०+अ०) भोग-विलास करनेका स्थान।

रंग-रली—संज्ञा स्त्री० (फा० रंग+हिं० रलना=मिलना) आमोद-प्रमोद। आनन्द। क्रीड़ा। चैन।

रंग-रेली—संज्ञा स्त्री० दे० 'रंग-रली।'

रंगरेज़—संज्ञा पुं० (फा०) वह जो कपड़े रँगनेका काम करता हो।

रंग-साज़—वि० (फा०) (संज्ञा रंग-साजी) १ वह जो चीजोंपर रंग चढ़ाता हो) २ रंग बनानेवाला।

रँगाई—संज्ञा स्त्री० (हिं० रंग) रँगनेकी क्रिया, भाव या मजदूरी।

रंगारंग—वि० (फा०) तरह तरहका। रंग-बिरंगा।

रंगीन—वि० (फा०) (संज्ञा रंगीनी) १ रँगा हुआ। रंगदार। २

विलास-प्रिय । आमोद-प्रिय । ३ चमत्कारपूर्ण । मज़ेदार ।

रंगीला—वि० (हिं० रंग) १ आनन्दी । रसिया । २ सुन्दर । प्रेमी।

रंज—संज्ञा पुं० (फा०) १ दुःख । खेद । २ शोक ।

रंजिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रंज होनेका भाव । २ मन-मुटाव । शत्रुता

रंजीदगी—संज्ञा स्त्री० दे० "रंजिश ।"

रंजीदा— वि० (फा० रंजीदः) (संज्ञा रंजीदगी) १ जिसे रंज हो । दुःखित । २ नाराज़ ।

रंजीदा-ख़ातिर—वि० (फा०+अ०) जिसका मन अप्रसन्न या दुःखी हो गया हो।

रअद—संज्ञा पुं० (अ०) मेघोंका गर्जन । बादलोंकी गड़गड़ाट ।

रअना—वि० (अ०) १ बनाव-सिंगार करके रहनेवाला । २ एक प्रकार-का फूल जो अन्दरसे लाल और बाहरसे पीला होता है। वि० १ बहुत सुन्दर । २ दो-रुखा । दो-रंगा ।

रअनाई—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बनाव-सिंगार । २ सुन्दरता । ३ दो-रुखापन ।

रअय्यत—संज्ञा स्त्री० (अ०)रिआया। प्रजा ।

रअशा—संज्ञा पुं० (अ० रअशः) १ काँपने या थरथरानेकी क्रिया । कम्प । २ एक प्रकारका रोग जिसमें हाथ-पैर काँपते रहते हैं।

रईस—संज्ञा पुं० (अ०) १ जिसके पास रियासत या इलाक़ा हो । तअल्लुक़ेदार । २ बड़ा आदमी। अमीर । धनी ।

रईसी—संज्ञा स्त्री० (अ० रईस) रईसका भाव । रईसपन ।

रऊनत—संज्ञा स्त्री० (अ०) अभि-मान । घमंड ।

रऊसा—संज्ञा पुं० (अ०) "रईस"का बहु० ।

रकअत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वक्रता । टेढ़ापन । झुकाव । २ नमाज़का आधा, तिहाई या चौथाई भाग । २ प्रसिद्ध ।

रक़बा—संज्ञा पुं० (अ० रक़बः) भूमि आदिका क्षेत्रफल ।

रक़म—संज्ञा स्त्री० (अ०)१ लिखने-की क्रिया या भाव । २ छाप । मोहर । ३ धन । सम्पत्ति । दौलत । ४ गहना । ज़ेवर । ५ चालाक । धूर्त ६ । प्रकार ।

रक़म-वार—क्रि० वि० (अ०+फा०) विवरण-युक्त । ब्योरेवार ।

रक़मी—वि० (अ०) १ लिखा हुआ । २ निशान किया हुआ ।

रकान—संज्ञा स्त्री० (देश०) १ युक्ति । तरीका । ढंग । जैसे—वह इस कामकी रकान खूब जानता है । २ किसीको वशमें करनेकी युक्ति । जैसे-तुम्हारी रकान मेरे हाथमें है ।

रकाब—संज्ञा स्त्री० (अ० रिकाब) घोड़ोंकी काठीका पावदान जिससे बैठनेमें सहारा लेते हैं। मुहा०- **रकाबपर या में पैर रखना**

=चलनेके लिये बिलकुल तैयार होना ।

रक़ाबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) रक़ीब या प्रतिद्वन्द्वी होनेका भाव ।

रकाब-दार–(अ०+फ़ा०) १ हल-वाई । २ खानसामाँ । ३ साईस ।

रकाबी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकारकी छिछली छोटी थाली । तश्तरी ।

रकाबी-मज़हब–संज्ञा पुं० (फ़ा०+अ०) वह जो उसीकी प्रशंसा और समर्थन करे जो उसे खिलाता हो । बे-पेंदीका लोटा ।

रकीक–वि० (अ०) १ दुर्बल । २ तुच्छ ।

रक़ीक़–वि० (अ०) १ पानीकी तरह पतला । २ कोमल । नरम । ३ दयालु । दयार्द्र ।

रक़ीब–संज्ञा पुं० (अ०) प्रेमिकाका दूसरा प्रेमी । प्रेम क्षेत्रका प्रति-द्वन्द्वी ।

रक़ीमा–संज्ञा पुं० (अ० रकीमः) चिट्ठी । पत्र । पुरजा ।

रक़्क़ास–संज्ञा पुं० (अ०) (स्त्री० रक़्क़ासा) नाचनेवाला । नर्तक ।

रक़्स–संज्ञा पुं०(अ०) नृत्य । यौ०–**रक़्से ताऊस**=मोरकी तरहका नाच ।

रख़ना–संज्ञा पुं० (फ़ा० रख़नः) १ दीवारमेंका मोखा आदि । दरीचा । छोटी खिड़की । २ बाधा । खलल । ३ दोष ढूँढ़ना । छिद्रान्वेषण । ४ ऐब । त्रुटि ।

रख़ना-अन्दाज़–वि० (फ़ा०) (संज्ञा रख़ना-अन्दाज़ी) १ बाधा डालने-वाला । २ खराबी पैदा करनेवाला ।

रख़्त–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ माल असबाब । सामग्री । २ पहननेके कपड़े आदि । पोशाक । ३ जूतेका चमड़ा । ४ सज-धज । ठाठ-बाट ।

रग–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ शरीर-मेंकी नस या नाड़ी । मुहा०–**रग दबना**=दबाव मानना । किसीके प्रभाव या अधिकारमें होना । **रग रग फड़कना**=शरीरमें बहुत अधिक उत्साह या आवेशके लक्षण प्रकट होना । **रग रगमें**=सारे शरीरमें । २ पत्तोंमें दिखाई पड़नेवाली नसें ।

रग-ज़न–वि० (फ़ा०) (संज्ञा रग-ज़नी) रग चीरकर खून निकालने-वाला । फ़स्द खोलनेवाला । जर्राह ।

रगदार–वि० (फ़ा०) जिसमें रग या रेशे हों ।

रग़बत–संज्ञा स्त्री० (अ० रग़्बत) १ प्रवृत्ति । रुचि । २ अनुराग । चाह ।

रग-जान–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) वह बड़ी और मुख्य रग जिससे सारे शरीरमें रक्त पहुँचता है । शाह रग । लाल रग ।

रज़–संज्ञा पुं० (फ़ा०) अंगूर यौ०–**दुख़्तरे-रज़**= १ अंगूरी शराब २ शराब । मद्य ।

रजअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रत्यावर्तन । लौटना । वापस आना । यौ०–**रजअत-पसन्द**=उन्नतिका विरोधी या बाधक ।

प्रतिक्रियावादी । २ तलाक़ दी हुई स्त्रीको फिर ग्रहण करना।

रजब-संज्ञा पुं० (अ०) अरबी चान्द्र वर्षका सातवाँ महीना जो आश्विनके लगभग पड़ता है ।

रजबी-वि० (अ०) इमाम मूसा अली रज़ासे सम्बन्ध रखनेवाला या उनका अनुयायी ।

रज़ा-संज्ञा स्त्री० (अ० रिज़ा) १ मरज़ी । इच्छा । २ रुखसत । छुट्टी । ३ आज्ञा । स्वीकृति ।

रज़ाअत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बच्चेको स्तन-पान कराना ।

रज़ाई-संज्ञा स्त्री० (सं० रजक= कपड़ा या अ० रज़ा) एक प्रकार का रुईदार ओढ़ना । लिहाफ़ । वि० (अ० रज़ाअत) जिसके साथ दूधका सम्बन्ध हो । जैसे- **रज़ाई भाई**=उन लड़कोंका पारस्परिक सम्बन्ध जो एक ही दाईका दूध पीकर पले हों ।

रज़ा-मन्द-वि० (अ० + फ़ा०) (संज्ञा रज़ामन्दी) जो प्रसन्न या राज़ी हो गया हो ।

रज़ील-संज्ञा पुं० (अ०) १ नीच । कमीना । २ छोटी जातिका ।

रज़्ज़ाक़-संज्ञा पुं० (अ०) १ रिज़्क़ या रोज़ी देनेवाला । २ ईश्वर ।

रज़्ज़ाक़ी-संज्ञा स्त्री० (अ० रज़्ज़ाक़) रिज़क या रोज़ी पहुँचाना । पालन-पोषण की क्रिया ।

रज़्म-संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) युद्ध ।

रज़्म-गाह-संज्ञा स्त्री०(फ़ा०) युद्ध । क्षेत्र । लड़ाईका मैदान ।

रज़्मिया-वि० (फ़ा० रज़्मियः) रज़्म या युद्ध-सम्बन्धी।

रतल-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शराबका प्याला । २ एक तौल ।

रतूबत-संज्ञा स्त्री० (अ० रुतूबत) नमी। तरी ।

रत्ब-वि० (अ०) १ सूखा । खुश्क । २ बुरा । खराब । यौ०-**रत्ब वयाबिस**= भला बुरा । अच्छा और खराब, सब ।

रद्द-वि० दे० "रद्द ।"

रदीफ़-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह जो घोड़ेपर किसी सवारके पीछे बैठे । २ गजल आदिमें वह शब्द जो हर शेरके अन्तमें क़ाफ़िएके बाद बार बार आता है । जैसे- "अच्छे बुरेका हाल खुले क्या नक़ाबमें" "नक़ाब' क़ाफ़िया और "में" रदीफ़ है ।

रदीफ़-वार-वि० (अ०+फ़ा०) अक्षर क्रमसे लगा हुआ ।

रद्द-संज्ञा पुं० (अ०) १ जो काट, छाँट, तोड़ या बदल दिया गया हो । यौ०-**रद्द बदल**=परिवर्तन फेर-फार । २ जो खराब या निकम्मा हो गया हो । संज्ञा स्त्री० कै । वमन ।

रद्दी-वि० (अ० रद्दी) निकम्मा । निष्प्रयोजन । बेकार ।

रन्दा-संज्ञा पुं० (फ़ा० रन्दः मि० सं० रदन) एक औज़ार जिससे लकड़ीकी सतह छीलकर चिकनी की जाती है ।

रफ़र-संज्ञा पुं० (अ०) वह सवारी

जिसपर मुहम्मद साहब ईश्वरके पास गये और वहाँसे वापस आये थे ।

रफ़ा–वि० (अ० रफ़ऽ) दूर किया हुआ । २ निवृत्त । शान्त । निवारित । संज्ञा पुं० १ ऊँचाई । २ छोड़ना । अलग रहना ।

रफ़ाक़त–संज्ञा स्त्री० (अ० रिफ़ाक़त) १ रफ़ीक़ या साथी होनेका भाव । २ संग-साथ । मेल-जोल । ३ निष्ठा ।

रफ़ा-दफ़ा–वि० दे० "रफ़ा ।"

रफ़ाह–संज्ञा स्त्री० (अ० रिफ़ाह) १ सुख । आराम । २ दूसरोंको सुखी करनेवाला काम । परोपकार । यौ०–**रफ़ाहे आम**=जन-साधारणके उपकारका काम ।

रफ़ाहियत–संज्ञा स्त्री० (अ०रिफ़ाहियत) आराम । सुख ।

रफ़ी–संज्ञा स्त्री० (देश०) वे सफ़ेद कण जो किसी चीजको झाड़नेसे गिरते हैं ।

रफ़ीक़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० रुफ़क़ा) १ साथी । संगी । २ सहायक । मददगार । ३ मित्र ।

रफ़ू–संज्ञा पुं० (अ०) फटे हुए कपड़ेके छेदमें तागे भरकर उसे बराबर करना ।

रफ़ू-गर–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा रफ़ूगरी) रफ़ू करनेका व्यवसाय करनेवाला । रफ़ू बनानेवाला ।

रफ़ू-चक्कर वि० (अ० + हिं०) चंपत । गायब ।

रफ़्त–वि० (फ़ा०) गया हुआ । गत । यौ०–**रफ़्त व गुज़श्त**=गया बीता । जिसकी ओर कुछ ध्यान न दिया जाय ।

रफ़्तगी–संज्ञा० स्त्री० (फ़ा० रफ़्तन=जाना) जानेकी क्रिया । गमन । मुहा०–**रफ़्तगी निकालना**=आगे जानेका सिलसिला शुरू करना ।

रफ़्तनी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ जानेकी क्रिया या भाव । २ मालका बाहर जाना । निर्यात ।

रफ़्तार–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) चलनेकी क्रिया या भाव । चाल । यौ०–**रफ़्तार व गुफ़्तार**=चाल-ढाल और बात-चीत ।

रफ़्ता रफ़्ता–क्रि० वि० (फ़ा० रफ़्तः रफ़्तः) धीरे धीरे । क्रम क्रमसे ।

रब–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो पालन-पोषण करता हो । २ ईश्वर । यौ०–**रब्बुल-आलमीन**=सारे संसारका पालन-पोषण करनेवाला, ईश्वर ।

रबाब–संज्ञा पुं० (अ०) सारंगीकी तरहका एक प्रकारका बाजा ।

रबाबी–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो रबाब बजाता हो ।

रबी–संज्ञा स्त्री० (अ० रबीअ) १ वसंत ऋतु । २ वह फसल जो वसंत ऋतुमें काटी जाती है ।

रबीअ–संज्ञा स्त्री० दे० "रबी ।"

रबी-उल्-अव्वल–संज्ञा पुं० (अ०) अरबी वर्षका तीसरा महीना जो जेठके लगभग पड़ता है ।

रबी-उल्-आख़िर-संज्ञा पुं० (अ०)

अरबी वर्षका चौथा महीना जो असाढ़के लगभग पड़ता है।

रबी-उस्मानी–संज्ञा पुं० दे० "रबी-उल्-आखिर।"

रबीब–संज्ञा पुं० (अ०) १ पाला-पोसा हुआ दूसरेका लड़का। २ स्त्रीके पहले पतिका लड़का।

रब्त–संज्ञा पुं० (अ०) १ अभ्यास। मश्क। मुहावरा। २ सम्बन्ध। मेल। यौ०–रब्त-जब्त=मेल-जोल।

रब्ब–संज्ञा पुं० दे० "रब।"

रब्बानी–वि० (अ०) ईश्वरी या दैवी।

रम–संज्ञा पुं० (फा०) दूर रहने या बचनेकी प्रवृत्ति। भागना।

रमक़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बची-खुची थोड़ी-सी जान। २ अन्तिम श्वास। ३ हलका प्रभाव। पुट। वि० थोड़ा-सा।

रमज़ान–संज्ञा पुं० (अ० रमज़ान) १ अरबी महीना जिसमें मुसल-मान रोजा रखते हैं।

रमज़ानी–वि० (अ० रमज़ान) १ रमजान-सम्बन्धी। २ रमजानमें उत्पन्न। अकालका मारा। भुक्खड़। पेटू।

रमल–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका फलित ज्योतिष जिसमें पाँसे फेंककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।

रमीदगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) बचने और हटे रहनेकी प्रवृत्ति। घृणा।

रमीम–वि० (अ०) पुराना और सड़ा-गला।

रमूज़–संज्ञा स्त्री० दे० "रुमूज़।"

रम्ज़–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० रुमूज़) १ आँखों आदिका संकेत। इशारा। २ ऐसी पेचीली बात जो जल्दी समझमें न आवे। सूक्ष्म बात। ३ रहस्य। ४ व्यंग्य। ५ आवाज़।

रम्माज़–वि० (अ०) १ रम्ज़ या संकेतसे बात करनेवाला। २ छायावादी।

रम्माल–संज्ञा पुं० (अ०) रमल फेंकनेवाला।

रवाँ–वि० (अ०) (संज्ञा रवानी) १ बहता हुआ। २ चलता हुआ। जारी। ३ जिसका अच्छा अभ्यास हो। ४ प्रचलित। संज्ञा पुं० तेजीके साथ पढ़नेकी क्रिया।

रवा–वि० (फा०) उचित। वाजिब।

रवाज–संज्ञा स्त्री० (अ० रिवाज) परिपाटी। चाल। प्रथा। रस्म।

रवाजी–वि० (अ० रिवाजी) जिसकी रवाज हो। प्रचलित।

रवादार–वि० (फा०) (संज्ञा रवा-दारी) १ साथी। संगी। २ शुभ-चिन्तक। सम्बन्ध रखनेवाला।

रवानगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) रवाना होनेकी क्रिया या भाव। प्रस्थान।

रवाना–वि० (फा० रवानः) १ जो कहींसे चल पड़ा हो। २ भेजा हुआ।

रवानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बहाव। प्रवाह। २ तेज़ी।

रवायत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दूसरेकी कही हुई बात जो

उद्धृत की जाय। २ कथानक। ३ मसल। कहावत।

रवा-रवी–संज्ञा स्त्री० (हिं० रौ) १ जल्दी। २ घबराहट। ३ हलचल।

रविश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ गति। २ रंग-ढंग। चाल-ढाल। ३ बागकी क्यारियोंके बीचका छोटा मार्ग।

रवैयत–संज्ञा स्त्री० (अ०) दिखाई देना। दर्शन।

रवैया–संज्ञा पुं० (फा० रवैयः) १ चाल-चलन। तौर-तरीका। २ रंग-ढंग।

रशीद–वि० (अ०) १ जो उपदेश देकर सीधे मार्गपर लगाया गया हो। २ शिक्षित और सभ्य।

रश्क–संज्ञा पुं० (फा०) १ ईर्ष्या। डाह। २ शत्रुता। ३ प्रेमिकाके दूसरे प्रेमीसे होनेवाली ईर्ष्या।

रश्के-परी·वि० स्त्री० (फा०+अ०) जिसका रूप देखकर परी भी ईर्ष्या करे। परम सुन्दरी।

रस–वि० (फा०) पहुँचनेवाला। यौ० के अन्तमें। जैसे–**दाद-रस**=न्यायकर्ता। **फरियाद-रस**=फरियाद सुननेवाला।

रसद-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ बाँट। बखरा। मुहा०–**हिस्सा-रसद**=बँटनेपर अपने अपने हिस्सेके अनुसार लाभ। २ कच्चा अनाज जो पकाया न गया हो। संज्ञा पुं० (अ०) नक्षत्रोंकी गति आदि देखनेकी क्रिया या यंत्र। यौ०–**रसद-गाह**=वेधशाला।

रसद-गाह–संज्ञा स्त्री०(अ०+फा०) नक्षत्रोंकी गति आदि देखनेका स्थान।

रसद-रसानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सेना आदिमें रसद पहुँचाना।

रसम–संज्ञा स्त्री० दे० "रस्म।"

रसाँ–वि० (फा० "रसानीदन" से) पहुँचनेवाला। जैसे–**चिट्ठी-रसाँ**=डाकिया।

रसा–वि० (फा०) १ पहुँचानेवाला २ ऊँचा होने या दूर जानेवाला।

रसाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) पहुँचनेकी क्रिया या भाव। पहुँच।

रसीद–संज्ञा स्त्री० (फा०) (भाव० रसीदगी) १ किसी चीजके पहुँचने या प्राप्त होनेकी क्रिया। पहुँच। २ किसी चीजके पहुचनेके प्रमाण रूपमें लिखा हुआ पत्र।

रसीदा–वि० (फा० रसीदः) पहुँचा हुआ। जैसे–**सिन-रसीदा**=बड़ी उम्र तक पहुँचा हुआ। वृद्ध।

रसीदी–वि० (फा० रसीदः) रसीद-सम्बन्धी। रसीदका। जैसे–रसीदी टिकट।

रसूख–संज्ञा पुं० दे० "रुसूख।"

रसूम–संज्ञा पुं (अ० रुसूम। "रस्म का बहु०) १ नियम। कानून। २ वह धन जो किसी प्रचलित प्रथाके अनुसार दिया जाता हो नेग। लाग।

रसूल–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसीकी ओरसे भेजा हुआ व्यक्ति

हुआ दूत । पैगम्बर । ३ मुहम्मद साहबकी उपाधि । ४ मार्ग-दर्शक ।

रस्ता–संज्ञा पुं० फा० "रास्ता" का संक्षिप्त रूप ।

रस्म–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० मरासिम) १ लेख आदिका चिह्न । २ रीति । परिपाटी । दस्तूर । यौ०–**रस्म व रवाज**=रीति-रस्म । ३ मेल-जोल । संज्ञा स्त्री० (फा०) वेतन । तनख़्वाह ।

रस्मी–वि० (अ०) १ साधारण । मामूली । २ रस्म-सम्बन्धी ।

रह–संज्ञा स्त्री० (फा०) "राह" का संक्षिप्त रूप । ("रह" के यौ० शब्दोंके लिए दे० "राह" के यौ०)

रहन–संज्ञा पुं० दे० "रेहन ।"

रहनुमा–वि० (फा०) (संज्ञा रहनुमाई) मार्ग-दर्शक । रहबर ।

रह-बर–वि० (फा०) (संज्ञा रहबरी) रास्ता दिखलानेवाला ।

रहम–संज्ञा पुं० (अ०) "रह्म" १ दया । कृपा । अनुग्रह । २ क्षमा । माफी । ३ करुणा । अनुकम्पा । संज्ञा पुं० (अ० रिहम) स्त्रीका गर्भाशय । बच्चेदानी ।

रहमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दया । मेहरबानी । वर्षा । वृष्टि ।

रहम-दिल–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा रहमदिली) दयालु ।

रहमान–वि० (अ०) दया करनेवाला । संज्ञा पुं० ईश्वरका एक नाम ।

रहल–संज्ञा स्त्री० दे० "रिहल ।"

रहवार–संज्ञा पुं० (फा०) कदम चलनेवाला अच्छा घोड़ा ।

रहाइश–संज्ञा स्त्री० (हिं० रहना) रहने सहनेका ढंग । २ रहनेका स्थान ।

रहीम–वि० (अ०) रहम या दया करनेवाला । दयालु । संज्ञा पुं० ईश्वरका एक नाम ।

रहे-रास्त–संज्ञा स्त्री० दे० "राहे-रास्त ।"

रांदा–वि० (फा० रांदः) निकाला हुआ । त्यक्त । बहिष्कृत ।

राक़िम–वि० (अ०) रक़म करने या लिखनेवाला । लेखक ।

राग़िब–वि० (अ०) रग़बत करनेवाला । प्रवृत्ति रखनेवाला ।

राज़–संज्ञा पुं० (फा०) रहस्य । भेद । यौ०–**राज़ व नियाज़**=प्रेमी और प्रेमिकाके नखरे और चोचले ।

राज़दार–संज्ञा पुं० (फा०) १ रहस्य या भेदकी बात जाननेवाला । २ साथी । संगी ।

राज़दारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रहस्य या भेद जानना । २ रहस्य या भेद प्रकट न होने देना ।

राज़िक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ रिज़्क़ या रोज़ी देनेवाला । जीविका लगानेवाला । २ ईश्वर ।

राज़ी– वि० (अ०) १ कही हुई बात माननेको तैय्यार । सम्मत । २ नीरोग । चंगा । ३ खुश । प्रसन्न । ४ सुखी । यौ०–**राज़ी-ख़ुशी**=

सही-सलामत । संज्ञा स्त्री० रज़ामन्दी । अनुकूलता ।

राज़ीनामा–संज्ञा पुं० (फा०) वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें ।

रातिब–संज्ञा पुं० (अ०) १ नित्य प्रतिका साधारण और बँधा हुआ भोजन । २ पशुओंका भोजन ।

रातिबा–संज्ञा पुं० (अ० रातिबः) वेतन या वृत्ति आदि ।

रान–संज्ञा स्त्री० (फा०) जंघा । जाँघ ।

राना–संज्ञा पुं० दे० "रअना ।"

रानाई–संज्ञा स्त्री० दे० "रअनाई ।"

रानी–संज्ञा स्त्री० (फा०) चलाने का काम । जैसे–जहाज़-रानी, हुक्म-रानी ।

राफ़िज़ी–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह सेना जो अपने सरदारको छोड़ दे । २ शीया मुसलमानोंका वह दल जिसने हज़रत अलीके लड़के ज़ैदका साथ छोड़ दिया था । ३ शीया मुसलमान । (इस अर्थमें सुन्नी लोग इस शब्दका व्यवहार उपेक्षापूर्वक करते हैं ।)

राबता–संज्ञा पुं० (अ० राबित) १ मेल-जोल । रब्त-ज़ब्त । २ सम्बन्ध । रिश्तेदारी ।

राबित–संज्ञा पुं० दे० "राबता ।"

राम–संज्ञा वि० (फा०) १ सेवक । अनुचर । २ आज्ञाकारी ।

रामिश–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ आनन्द २ संगीत ।

रामिशा–संज्ञा पुं० (फा०) गवैया ।

राय–संज्ञा स्त्री० (अ०) सम्मति । मत । सलाह ।

रायगाँ–वि० (फा०) व्यर्थ । निकम्मा । बेकार ।

रायज–वि० (अ०) जिसका रिवाज हो । प्रचलित । चलनसार । यौ०–**रायज-उल्-वक्त**=वर्तमान कालमें प्रचलित ।

रावी–वि० (अ०) रवायत करने या कोई बात कह सुनानेवाला । कथा आदिका लेखक या वक्ता ।

राशा–संज्ञा पुं० दे० "रअशा ।"

राशिद–वि० (अ०) ठीक मार्गपर चलनेवाला । धार्मिक ।

राशी–वि० (अ०) रिश्वत लेने-वाला । घूस-ख़ोर ।

रास–संज्ञा पुं० (अ०) १ ऊपरी भाग । सिरा । २ पशुओंकी संख्याका सूचक शब्द । जैसे–दो रास बैल । ३ स्थलका वह कोना जो जलसे दूर तक चला गया हो । अन्तरीप । जैसे–रास-कुमारी । संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रास्ता । २ घोड़ेकी बाग । ३ राहु ग्रह ।

रासिख़–वि० (अ०) दृढ़ । पक्का । संज्ञा पुं० नौशादर और गन्धककी सहायतासे फूँका हुआ ताँबा । संग रासिख़ ।

रास्त–वि० (फा०) १ दुरुस्त । सही । ठीक । २ सत्य । उचित । ३ दाहिना । दायाँ । अनुकूल । मुहा०–**रास्त आना**=अनुकूल रहना । विरोध छोड़ना ।

रास्त-गो–वि०(फा०) संज्ञा (रास्त,

गोई) सच या वाजिब बात कहनेवाला ।
रास्तबाज़-वि० (फा०) (संज्ञा रास्तबाज़ी) सच्चा । ईमानदार ।
रास्ता-संज्ञा पुं० (फा० रास्तः) १ मार्ग । २ उपाय । तरकीब ।
रास्ती-संज्ञा स्त्री० (फा०) सत्यता ।
राह-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रास्ता । मार्ग । २ मेल-जोल । संग-साथ । ३ ढंग । ३ तरीका । ४ प्रथा । चाल । ५ नियम । क़ायदा ।
राह-खर्च-संज्ञा पुं० (फा०) रास्तेमें होनेवाला खर्च । मार्ग-व्यय ।
राह-गीर-संज्ञा पुं० (फा०) रास्ता चलनेवाला । मुसाफ़िर । यात्री ।
राह-गुज़र-संज्ञा पुं०(फा०) रास्ता । मार्ग । सड़क ।
राह-ज़न--संज्ञा पुं० (फा०) डाकू । लुटेरा । बटमार ।
राह-ज़नी-संज्ञा स्त्री० (फा०) डाका । बटमारी ।
राहत-संज्ञा स्त्री० (अ०) सुख । आराम । यौ०-**राहते जान**=मनको प्रसन्न करनेवाली वस्तु ।
राह-दार-संज्ञा पुं० (फा०) वह जो किसी रास्तेकी रक्षा करता या आनेजानेवालोंसे महसूल वसूल करता हो ।
राह-दारी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वह महसूल जो किसी रास्तेसे होकर जानेके बदलेमें देना पड़ता है । यौ०-**परवाना राह-दारी**=वह आज्ञा-पत्र जिसके अनुसार किसी मार्गसे होकर जाने या माल ले जानेका अधिकार प्राप्त होता है । २ चुंगी । महसूल । ३ मेल-मिलाप ।
राह-नुमा-वि०(फा०) (संज्ञा राह-नुमाई)रास्ता दिखलानेवाला ।
राह-बर-वि० (फा०) (संज्ञा राहबरी) मार्ग-दर्शक ।
राह-रविश-संज्ञा स्त्री० (फा०) रंग ढंग । तौर-तरीका । चाल-चलन ।
राह-रौ-संज्ञा पुं० (फा०) रास्ता चलनेवाला । यात्री । बटोही ।
राह व रब्त-संज्ञा पुं० (फा०+अ०) मेल-जोल । राह-रस्म ।
राह व रस्म-संज्ञा स्त्री० (फा० + अ०) मेल-जोल ।
राहिन-संज्ञा पुं० (अ०) रेहन या गिरवी रखनेवाला ।
राहिब-संज्ञा पुं० (अ०) संसारको छोड़कर एकान्तमें रहनेवाला ।
राहिम-वि० (अ०)रहम करनेवाला ।
राहिला-संज्ञा पुं० (अ० राहिलः) यात्रियोंका गिरोह । काफ़िला ।
राही-संज्ञा पुं०(फा०) रास्ता चलनेवाला । मुसाफ़िर । यात्री ।
राहे-रास्त-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सीधा और सरल मार्ग । २ धर्म और न्यायका मार्ग ।
रिआयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कोमल और दयापूर्ण व्यवहार । नरमी । २ न्यूनता । कमी । ३ खयाल । विचार ।
रिआयती-वि० (अ०) रिआयत-

सम्बन्धी। जिसमें कुछ रिआयत हो।

रिआया–संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रजा।

रिकाब–संज्ञा स्त्री० दे० "रकाब।"

रिकाबी–संज्ञा स्त्री० दे० "रकाबी।"

रिक़्क़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कोमलता। मुलामियत। २ रोना-धोना। रुदन। ३ दया। अनुकम्पा। ४ आनन्द या प्रेम आदिके कारण आवेशपूर्ण होना। दिल भर आना। हाल। वज्द।

रिज़्क़–संज्ञा पुं० दे० "रिज़्क़।"

रिज़वाँ–संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानोंके अनुसार एक देव-दूत जो फिरदौस या स्वर्गका दरबान या दारोगा है।

रिज़ाला–संज्ञा पुं० (अ० रिज़ाल) १ कमीना। नीच। तुच्छ। २ दुष्ट। पाजी।

रिज़्क़–संज्ञा पुं० (अ०) नित्यका भोजन। रोज़ी। जीविका।

रिन्द–संज्ञा पुं० (फा०) १ धार्मिक बन्धनोंको न माननेवाला पुरुष। २ मनमौजी आदमी। स्वच्छन्द पुरुष। वि० (फा०) मतवाला। मस्त।

रिन्दा–संज्ञा पुं० (फा० रिन्द) बेहूदा और बेढब आदमी। वाहियात और शरारती।

रिन्दाना–वि० (फा०) रिन्दानः) रिन्दोंका-सा। रिन्दोंसे सम्बन्ध रखनेवाला।

रिन्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रिन्दका भाव। रिन्द-पन। २ लुच्चापन। शोहदापन। ३ धूर्तता।

रिफ़अत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ऊंचाई। २ उन्नत अवस्थाकी प्राप्ति। ३ महत्त्व। बड़प्पन।

रिफ़ाक़त–संज्ञा स्त्री० दे० "रफ़ाक़त"

रिफ़ाह–संज्ञा स्त्री० (दे०) 'रफ़ाह।"

रिफ़्ज़–संज्ञा पुं० (अ०) धर्मद्रोह। अधार्मिकता।

रियह–संज्ञा पुं० (अ०) फेफड़ा। फुफ्फुस।

रिया–संज्ञा स्त्री० (अ०) धोखा। छल। कपट।

रियाई–वि० (अ० रिया) धूर्त।

रिया-कार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा रियाकारी) धोखा देनेवाला।

रियाज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ रौज़ेका बहु०। वाटिकाएँ। बाग़। संज्ञा पुं० (अ० रियाज़तः) १ वह परिश्रम जो किसी प्रकारका अभ्यास या बारीक काम करनेमें होता है। मेहनत। २ तपस्या। तप। ३ अभ्यास। मश्क़।

रियाज़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ परिश्रम। २ कष्ट-सहन। ३ तपस्या। ४ अभ्यास।

रियाज़त-कश–वि० (अ०+फा०) परिश्रम करनेवाला। मेहनती।

रियाज़ती–वि० दे० "रियाज़त-कश।"

रियाज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) विज्ञानके तीन विभागोंमेंसे एक जिसमें सब प्रकारके गणित, ज्योतिष, संगीत आदि विद्याएँ सम्मिलित हैं।

रियाज़ी-दाँ–वि० (अ०+फा०) रियाजीका ज्ञाता।

रियासत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ राज्य। अमलदारी। २ अमीरी।

रियाह–संज्ञा स्त्री० (अ० "रेह" का बहु०) शरीरके अन्दरकी वायु। बाई।

रिवाज–संज्ञा स्त्री० दे० "रवाज।"

रिश्ता–संज्ञा पुं० (फा० रिश्तः) नाता। सम्बन्ध।

रिश्तेदार–संज्ञा पुं० (फा०) संबंधी।

रिश्तेदारी–संज्ञा स्त्री० (फा०रिश्तः+दार) सम्बन्ध। नाता।

रिश्वत–संज्ञा स्त्री० (अ०) घूस। उत्कोच। लाँच।

रिश्वत-खोर–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा रिश्वत खोरी) रिश्वत या घूस खानेवाला।

रिश्वत-सतानी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) रिश्वत खाना। घूस लेना।

रिसालत–संज्ञा स्त्री०(अ०) १ रसूल होनेका भाव। पैगम्बरी। यौ०–**रिसालत-पनाह**=मुहम्मद साहब का एक नाम। २ दूतत्व। एलची गरी।

रिसालदार–संज्ञा पुं० (फा०रिसाल: दार) घुड़सवार सेनाका एक अफ़सर।

रिसाला–संज्ञा पुं० (अ० रिसाल:) १ पत्र। खत। २ छोटी पुस्तक। पुस्तिका। ३ घुड़सवारोंकी सेना। अश्वारोही सेना।

रिहल–संज्ञा स्त्री० (अ० रिहिल) काठकी वह चौकी जिसपर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं।

रिहलत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रस्थान। कूच। रवानगी। २ मृत्यु। मौत। परलोक-गमन।

रिहा–वि० (फा०) (संज्ञा रिहाई) बंधन या बाधा आदिसे मुक्त।

रिहाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) छुटकारा। मुक्ति।

रिहाइश–संज्ञा स्त्री० दे० "रहाइश।"

रीम–संज्ञा स्त्री०(फा०)मवाद। पीब।

रीश–संज्ञा स्त्री० (फा०) ठोढ़ीपरके बाल। दाढ़ी। डाढ़ी।

रीशखन्द–संज्ञा पुं० (फा०) १ तीन प्रकारके हास्योंमेंसे एक। परिहास या मुस्कराहटके समयकी हँसी। २ परिहास। ठट्ठा। हँसी। मजाक।

रीश-काज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) भंग या शराब आदि छानने का कपड़ा (व्यंग्य)।

रीह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वायु। हवा। २ अपान वायु। पाद। ३ शरीरके अन्दरकी वायु। वात।

रुऊनत–संज्ञा स्त्री० दे० "रऊनत।"

रुकूअ–संज्ञा पुं० (अ०) १ नम्रता-पूर्वक झुकना। २ नमाजमें घुटनों-पर हाथ रखकर झुकना। ३ कुरानका एक प्रकरण।

रुक्क़ा–संज्ञा पुं०(अ० रुक्क़ः)(बहु० रुक्क़अत) छोटा पत्र या चिट्ठी। पुरजा। परचा।

रुक्न–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु०

अरकान) १ स्तम्भ। खम्भा। २ प्रधान कार्यकर्त्ता। जैसे—**रुक्ने-सलतनत** = साम्राज्यके प्रधान कार्यकर्त्ता या स्तम्भ।

रुख—संज्ञा पुं० (फा०) १ कपोल। गाल। २ मुख। मुँह। ३ आकृति। चेष्टा। ४ मनकी इच्छा जो मुखकी आकृतिसे प्रकट हो। ५ कृपादृष्टि। मेहरबानीकी नजर। ६ सामने या आगेका भाग। ७ शतरंजका एक मोहरा। क्रि० वि० १ तरफ। ओर। २ सामने।

रुखसत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आज्ञा। परवानगी। २ रवानगी। कूच। प्रस्थान। ३ काममे छुट्टी। ४ अवकाश। वि० जो कहींसे चल पड़ा हो।

रुखसताना—संज्ञा पुं० (फा० रुख-सतानः) वह धन जो किसीको रुखसत होनेके समय दिया जाय। बिदाई।

रुखसती—संज्ञा स्त्री० (अ० रुखसत) बिदाई, विशेषतः दुलहिनकी।

रुखसार—संज्ञा पुं० (फा०) कपोल।

रुखसारा—संज्ञा पुं० (फा० रुख-सारः) कपोल या गालका ऊपरी भाग। २ कपोल। गाल।

रुखाम—संज्ञा पुं० (फा०) संग-मरमर।

रुजू—वि० (अ० रुजूअ) जिसका मन किसी ओर लगा हो। प्रवृत्त। संज्ञा स्त्री० १ अनुरक्ति। प्रवृत्ति। २ लौटना। वापस आना। ३ ऊँची अदालतमेंकी दोबारा सुन-वाई। पुनर्विचार।

रुजूलियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) विषय या सम्भोगकी शक्ति। पुंसत्व।

रुतबा—संज्ञा पुं० (अ० रुतबः) १ ओहदा। पद। २ इज़्ज़त।

रुब—संज्ञा पुं० (अ०) पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। जैसे—रुब्बे जामुन।

रुबा—वि० (अ० रुबअ) चौथाई। चतुर्थांश। वि० (अ०) चुरानेवाला। जैसे—दिल-रुबा।

रुबाई—संज्ञा स्त्री० (अ०) चार चरणोंका पद्य। चौबोला।

रुमूज़—संज्ञा स्त्री० (अ०) "रम्ज़"-का बहु०।

रुसवा—वि० (फा०) १ अपमानित। २ बदनाम।

रुसवाई—संज्ञा स्त्री (फा०) १ अप्रतिष्ठा। २ बदनामी। कलंक।

रुसूख—संज्ञा पुं० (अ०) (भाव० रुसूखियत) १ दृढ़ता। मजबूती। २ धैर्य। अध्यवसाय। ३ पहुँच। मेल-जोल। ४ विश्वास। एतबार।

रुसूखियत—संज्ञा स्त्री० दे० "रुसूख।"

रुसूम—संज्ञा पुं० दे० "रसूम।"

रुस्तम—संज्ञा पुं० (फा०) १ फारस-का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहल-वान। २ भारी वीर। मुहा०—**छिपा रुस्तम**=वह जो देखनेमें सीधा सादा, पर वास्तवमें बहुत वीर हो।

रुस्तमी—संज्ञा स्त्री० (फा० रुस्तम)

१ बहादुरी । वीरता । २ जबर-दस्ती । बल-प्रयोग ।

रू–संज्ञा पुं० (फा०) मुख । चेहरा । आकृति । संज्ञा स्त्री० १ कारण । सबब । २ तल । सतह । ३ अगला भाग । ४ आशा ।

रूईदगी–संज्ञा स्त्री०(फा०)वनस्पति ।

रूए–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रू । चेहरा । आकृति । २ कारण ।

रूएदाद–संज्ञा स्त्री० दे० "रूदाद ।"

रू-कश–वि० (फा०) (संज्ञा रूकशी) सामने आनेवाला । सम्मुख होनेवाला ।

रू-गरदाँ–वि० (फा०) पीछेकी तरफ़ मुड़ा या उलटा हुआ ।

रूदबार–संज्ञा पुं० (फा०) १ बड़ा और चौड़ा जल-डमरूमध्य । २ बड़ी झील । ३ जल-पूर्ण देश ।

रू-दाद–संज्ञा स्त्री० (फा०रुएदाद) १ समाचार । वृत्तान्त । २ दशा । ३ विवरण । कैफ़ियत । ४ अदा-लतकी कार्रवाई ।

रू-नुमाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मुँह दिखलानेकी क्रिया । २ मुँह दिखलाने या देखनेकी रसम । मुँह-दिखाई ।

रू-पोश–वि० (फा०) (संज्ञा रूपोशी) १ जिसने अपना मुँह ढाँक या छिपा लिया हो । २ भागा हुआ ।

रू-बकार–संज्ञा पुं० (फा०) १ सामने उपस्थित करनेका भाव । २ अदालतका हुक्म । आज्ञापत्र ।

रू-बकारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) मुक़-दमेकी पेशी या सुनवाई ।

रू-बराह–वि० (फा०) १ प्रस्तुत । तैय्यार । २ दुरुस्त या ठीक किया हुआ ।

रू-बरू–क्रि० वि० (फा०) सम्मुख ।

रू-बाह–संज्ञा स्त्री०(फा०) लोमड़ी ।

रू-बाह-बाज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) धूर्तता । चालाकी ।

रूम–संज्ञा पुं० (फा०) टर्की या तुर्की देशका एक नाम ।

रूमाल–संज्ञा पुं० (फा०) १ कपड़े-का वह चौकोर टुकड़ा जिससे हाथ-मुँह पोंछते हैं । २ चौकोना शाल या दुपट्टा ।

रूमी–वि० (फा०) १ रूम देश-सम्बन्धी । २ रूम देशका निवासी ।

रू-रिआयत–संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) पक्षपात । तरफ़दारी ।

रू-सियाह–वि० (फा०) (संज्ञा रू-सियाही) १ काले मुँहवाला । २ पापी । ३ अपराधी । ४ अप-मानित । ज़लील ।

रू-शनास–वि० (फा०) (संज्ञा रू-शनासी) जान-पहचानका ।

रूह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आत्मा । जीवात्मा । २ सत्त । सार । ३ इत्रका एक भेद ।

रूह-अफ़ज़ा–वि० (अ०) चित्तको प्रसन्न करनेवाला ।

रूहानी–वि० (अ०) रूह या आत्मा-सम्बन्धी । आत्मिक ।

रेख़्ता–वि० (फा० रेख़्तः) १ गिरा या अपना हुआ । २ बिना बना-

वटके आपसे आप ज़बानसे निकला हुआ। ३ चूनेका बना हुआ (मकान, दीवार, छत आदि)। ४ इधर-उधर पड़ा या बिखरा हुआ। संज्ञा० पुं० १ चूनेकी बनी हुई दीवार या इमारत। २ दिल्लीकी ठेठ उर्दू भाषा।

रेख़्ती-संज्ञा स्त्री० (फा० रेख़्तः) स्त्रियोंकी बोलीमें की हुई कविता।

रेग-संज्ञा स्त्री० (फा०) रेत।

रेगज़ार-संज्ञा पुं० दे० "रेगिस्तान।"

रेग-माही-संज्ञा स्त्री० (फा०) साँडे या गोहकी तरहका एक छोटा जानवर जो प्रायः रेगिस्तानमें रहता है। शकनकुर।

रेगिस्तान-संज्ञा पुं० (फा०) बालूका मैदान। मरु-देश।

रेगे-रवाँ-वि० (फा०) उड़नेवाला बालू या रेत।

रेज़-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पक्षियोंका चहचहाना। कलरव। २ गिराना। बहाना। वि० गिराने या बहानेवाला। जैसे-अश्क-रेज़।

रेज़गारी-संज्ञा स्त्री० (फा० रेज़ः) दुअन्नी, चवन्नी आदि छोटे सिक्के।

रेज़गी-संज्ञा स्त्री० दे० "रेज़गारी।"

रेज़ा-संज्ञा पुं० (फा० रेज़ः) १ बहुत छोटा टुकड़ा। सूक्ष्म खंड। २ नग। थान। अदद।

रेज़िश-संज्ञा स्त्री० (फा०) सरदी। ज़ुकाम। नज़ला (रोग)।

रेब-संज्ञा पुं० (अ०) सन्देह। शक।

रेवन्द-संज्ञा पुं० (फा०) एक पहाड़ी पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी रेवन्द चीनीके नामसे बिकती और औषधके काममें आती है।

रेवन्द-चीनी-संज्ञा पुं० दे० "रेवंद।"

रेश-संज्ञा पुं० (फा०) ज़ख़्म। घाव।

रेशम-संज्ञा पुं० (फा० 'अबरेशम'का संक्षिप्त रूप) एक प्रकारका महीन चमकीला और दृढ़ तन्तु जो कोशमें रहनेवाले एक प्रकारके कीड़े तैयार करते हैं।

रेशमी-वि० (फा०) रेशमका बना हुआ।

रेशा-संज्ञा पुं० (फा० रेशः) तन्तु या महीन सूत जो पौधोंकी छालों आदिसे निकलता है।

रेशादार-वि० (फा०) जिसमें छोटे छोटे सूत या रेशे हों।

रेहन-संज्ञा पुं० (फा० रहन) महाजनसे क़र्ज़ लेकर उसके पास अपनी जायदाद इस शर्तपर रखना कि जब रुपया अदा हो जायगा, तब वह माल या जायदाद वापस कर देगा। बन्धक। गिरवी।

रेहनदार-संज्ञा पुं० (फा० रहनदार) वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो।

रेहन-नामा-संज्ञा पुं० (अ० रहन+फा० नामः) वह काग़ज़ जिसपर रेहनकी शर्तें लिखी हों।

रेहान-संज्ञा पुं० (अ०) १ तुलसीकी तरहका एक सुगन्धित पौधा। २ बालंगू। ३ एक प्रकारकी सुगन्धित घास। ४ एक प्रकारकी अरबी लेखप्रणाली।

रो-वि० (फा०) उगनेवाला। जैसे-

ख़ुद्-रो=आपसे आप उगनेवाला। जंगली।

रोग़न–संज्ञा पुं० (फ़ा० रौग़न) १ तेल। चिकनाई। २ वह पतला लेप जिसे किसी वस्तुपर पोतनेसे चमक आवे। पालिश। वारनिश। ३ वह मसाला जिसे मिट्टीके बरतनों आदिपर चढ़ाते हैं।

रोग़नी–वि० (फ़ा० रौग़नी) रोग़न किया हुआ।

रोग़ने-क़ाज़–संज्ञा पुं० (फ़ा०) राज-हंसकी चरबी जो बहुत चिकनी और चमकीली होती है। मुहा०–रोग़ने क़ाज़ मलना= १ चिकनी-चुपड़ी बातें या ख़ुशा-मद करना। २ अपने अनुकूल बनाना।

रोग़ने ज़र्द–संज्ञा पुं० (फ़ा०) घी। घृत। घीव।

रोग़ने-तल्ख़–संज्ञा पुं० (फ़ा०) कड़ुआ तेल।

रोग़ने-सियाह–संज्ञा पुं०(फ़ा०)तेल।

रोज़–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ दिन। दिवस। २ एक दिनकी मजदूरी। ३ मृत्युकी तिथि। अव्य० नित्य।

रोज़-अफ़ज़ूँ–वि० (फ़ा०) नित्य बढ़नेवाला।

रोज़गार–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ जीविका या धन संचयके लिये हाथमें लिया हुआ काम। व्यवसाय। धंधा। पेशा। कारबार। २ व्यापार। तिजारत।

रोज़गारी–संज्ञा पुं०(फ़ा०)व्यापारी।

रोज़-नामचा–संज्ञा पुं० (फ़ा० रोज़-नामचः) वह किताब जिसपर रोज़का किया हुआ काम लिखा जाता है।

रोज़-ब-रोज़–क्रि० वि० (फ़ा०) नित्य। प्रतिदिन।

रोज़-मर्रा–अव्य० (फ़ा०) प्रतिदिन। नित्य। संज्ञा पुं० नित्यके व्यव-हारमें आनेवाली भाषा। बोलचाल। चलती बोली।

रोज़ा–संज्ञा पुं० (फ़ा० रोज़ः) १ व्रत। उपवास। २ वह उपवास जो मुसलमान रमज़ानके महीनेमें करते हैं। संज्ञा पुं० दे० "रौज़ा।"

रोज़ा-कुशाई–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) दिन-भर रोज़ा रखनेके बाद कुछ खाकर रोज़ा खोलना या तोड़ना।

रोज़ा-ख़ोर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) वह जो रोज़ा न रखता हो।

रोज़ा-दार–संज्ञा पुं० (फ़ा०) वह जो रोज़ा रखता हो। उपवास करनेवाला।

रोज़ाना–क्रि० वि० (फ़ा०रोज़ानः) नित्य। प्रतिदिन।

रोज़ी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ नित्यका भोजन। २ जीवन-निर्वाहका अवलंब। जीविका।

रोज़ीना–संज्ञा पुं० (फ़ा० रोज़ीनः) १ एक दिनकी मजदूरी। २ मासिक वेतन या वृत्ति आदि।

रोज़ीनादार–वि० (फ़ा०) (संज्ञा रोज़ीनादारी) रोज़ीना या वृत्ति आदि पानेवाला।

रोज़ी-रसाँ–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १

रोज़ी पहुँचानेवाला । जीविकाकी व्यवस्था करनेवाला । २ ईश्वर ।

रोज़े-जज़ा–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) क़यामतका दिन जब जीवोंको उनके शुभ और अशुभ कर्मोंका फल मिलेगा ।

रोज़े-शुमार–दे० "रोज़ेजज़ा ।"

रोज़-रौशन–संज्ञा पुं० (फा०) १ प्रातःकाल । सबेरा । २ दिनका समय ।

रोज़-शुमार–दे० "रोज़े-जज़ा ।"

रोज़-सियह–संज्ञा पुं० (फा०) विपत्ति या दुर्भाग्यके दिन ।

रोब–संज्ञा पुं० (अ० रुअब) बड़प्पन-की धाक । आतंक । दबदबा । मुहा०–रोब जमाना=आतंक उत्पन्न करना । रोबमें आना= १ आतंकके कारण कोई ऐसी बात कर डालना जो यों न की जाती हो । २ भय मानना ।

रोबदार–वि० (अ०+फा०) रोब-दाबवाला । प्रभावशाली ।

रोया–संज्ञा पुं० (अ०) स्वप्न ।

रोशन–वि० (फा०) १ जलता हुआ । प्रकाशित । २ प्रकाशमान । चमकदार । ३ प्रसिद्ध । ४ प्रकट । ज़ाहिर ।

रोशन-चौकी–संज्ञा स्त्री० (फा० रोशन+हिं० चौकी) शहनाईका बाजा । नफीरी ।

रोशन-ज़मीर–वि० (फा०+अ०) बुद्धिमान् । समझदार ।

रोशन-दान–संज्ञा पुं० (फा०) प्रकाश आनेका छिद्र । गवाक्ष । मोखा

रोशन-दिमाग़–संज्ञा पुं० (फा०) १ वह जिसका दिमाग़ बहुत अच्छा और ऊँचा हो । २ सुँघनी । नस्य ।

रोशनाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ लिखनेकी स्याही । मसि । २ प्रकाश । रोशनी ।

रोशनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ उजाला । २ दीपक । चिराग़ । ३ दीपमालाका प्रकाश । ४ ज्ञानका प्रकाश ।

रौ–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ गति । चाल । २ प्रवाह । बहाव । ३ वेग । झोंका । ४ चाल । ढंग । ५ किसी बातकी धुन । त्रि०(फा०) चलनेवाला । जैसे–पेश-रौ=आगे चलनेवाला । नेता ।

रौग़न–संज्ञा पुं० दे० "रोग़न ।"

रौज़न–संज्ञा पुं० (फा०) १ छिद्र । सूराख़ । २ छोटी खिड़की । झरोखा ।

रौज़ा–संज्ञा पुं० (अ० रौज़:) १ वाटिका । बाग़ । २ किसी महात्मा या बड़े आदमीकी क़ब्र । मक़-बरा ।

रौज़ा-ख़्वाँ–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ मरसिया पढ़नेवाला । २ किसीके मक़बरेपर नियमित रूपसे दुआ पढ़नेवाला ।

रौज़े-रिज़वाँ–संज्ञा पुं० (अ०) स्वर्गकी वाटिका ।

रौनक़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वर्ण और आकृति । रूप । २ चमक-दमक । दीप्ति । कांति । ३ प्रफुल्लता । विकास । ४ शोभा । छटा । सुहावनापन ।

रौनक़-अफ़ज़ा–वि० (अ०+फा०)

(संज्ञा रौनक़ अफ़ज़ाई) रौनक़ या शोभा बढ़ानेवाला।

रौनक़-अफ़रोज़–वि० (अ०+फ़ा०) किसी स्थानपर उपस्थित होकर वहाँकी शोभा बढ़ानेवाला।

रौनक़-दार–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा रौनक़दारी) रौनक़ या शोभावाला। सुन्दर और सजा हुआ।

रौशन–वि० दे० "रोशन।"

(ल)

लंग–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ वह जिसका पैर टूटा हो। लँगड़ा। लूला।

लंगर–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ लोहेका एक प्रकारका बड़ा काँटा जिसकी सहायतासे जहाज़ या नावको जलमें एक स्थानपर स्थिर रखते हैं। २ कोई लटकने और हिलने वाली भारी चीज़। ३ बड़ा रस्सा या लोहेकी भारी जंज़ीर। ४ पहलवानोंका लँगोट। ५ कपड़ेकी कच्ची सिलाई या दूर दूरपर पड़े हुए बड़े टाँके। ६ वह स्थान जहाँ दरिद्रोंको भोजन बँटता है।

लअन-तअन–संज्ञा स्त्री० (अ०) गालियाँ और ताने। अपशब्द और व्यंग्य।

लअब–संज्ञा पुं० (अ०) खेल। यौ०–**लहो-लअब**=खेलवाड़।

लईन–वि० (अ०) जिसपर लानत भेजी जाय। जिसे शाप दिया या दुर्वचन कहा जाय। शापित।

लऊक़–संज्ञा पुं० (अ०) चाटकर खाई जानेवाली ओषधि। अवलेह। चटनी।

लक़लात–संज्ञा स्त्री० दे० "लुक़नत।"

लक़ब–संज्ञा पुं० (अ०) १ उपनाम। २ पदवी। ख़िताब।

लक़लाक़–संज्ञा पुं० (अ०) सारस पक्षी। बगला। वि० बहुत दुबला पतला। क्षीण।

लक़लक़ा–संज्ञा पुं० (अ० लक़लक़ः) १ सारसकी बोली। २ साँपों आदिकी बार बार जीभ हिलानेकी क्रिया। ३ उच्चाकांक्षा। ४ प्रभाव। दबदबा। रोब।

लक़वा–संज्ञा पुं० (अ० लक़वः) एक प्रकारका वात रोग। फ़ालिज।

लक़ा–संज्ञा पुं० (अ०) १ चेहरा। आकृति। शक्ल। यौ०–**माहे-लक़ा**=जिसका मुख चन्द्रमाके समान हो (प्रेम या प्रेमिकाका वाचक)। २ एक प्रकारका कबूतर जिसकी दुम मोरकी दुमकी तरह होती है।

लक़ो व दक़–वि० (अ०) १ उजाड़। सुनसान। (मैदान आदि) २ जिसमें बहुत आडंबर और शान शौकत हो।

लक़्क़ा–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका कबूतर जिसकी पूँछ पंखेकी तरह होती है।

लख़लख़ा–संज्ञा पुं० (अ० लख़लख़ः) कोई सुगंधित द्रव्य जिसका व्यवहार मूर्छा दूर करनेके लिए होता हो।

लख़्त–संज्ञा पुं० (फ़ा०) टुकड़ा।

खंड। यौ०-लख़्त ज़िगर या लख़्ते दिल=दिल या कलेजेका टुकड़ा। सन्तान। औलाद। यक लख़्त-ग्रव्य० दमसे। बिलकुल।

लग़ज़िश-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ फिसलने या रपटनेकी क्रिया। २ भूल। ग़लती। ३ ज़बानका लड़खड़ाना।

लगन-संज्ञा पुं० (फा०) ताँबेकी एक प्रकारकी बड़ी थाली या परात।

लगाम-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ लोहेका वह ढाँचा जो घोड़ेके मुँहमें लगाया जाता है। २ इस ढाँचेके दोनों ओर बँधा हुआ रस्सा या चमड़ेका तस्मा जिसकी सहायतासे घोड़ा चलाया, रोका और इधर उधर मोड़ा जाता है। रास। बाग। ३ नियन्त्रणमें रखनेवाली चीज़। मुहा०-**मुँहमें लगाम न होना**=बद-ज़बान होना। जो मुँहमें आवे, वह बकनेकी आदत होना।

लग़ायत-क्रि० वि० (अ०) १ साथमें लिये हुए। सहित। २ (अमुकके) अन्त तक। वहाँ तक। पर्यन्त।

लग़ो-वि० (अ० लग़्व) व्यर्थकी या वाहियात (बात)।

लग़वियात-संज्ञा स्त्री० (अ०) व्यर्थकी या वाहियात या झूठी बातें।

लजाजत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लड़ाई। झगड़ा। २ अत्युक्ति।

लज़ीज़-वि० (अ०) जिसमें लज़्ज़त हो। बढ़िया स्वादवाला। स्वादिष्ट।

लज़ूम-संज्ञा पुं० (अ०) लाज़िम या आवश्यक होना।

लज़्ज़त-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ स्वाद। ज़ायका। २ आनन्द।

लताफ़त-संज्ञा स्त्री० (अ०) ("लतीफ़"का भाव) १ सूक्ष्मता। कोमलता। २ स्वाद। ज़ायका। ३ बढ़ियापन। उत्तमता।

लतीफ़-वि० (अ०) १ मज़ेदार। स्वादिष्ट। ज़ायकेदार। २ अच्छा। बढ़िया। ३ सूक्ष्म। ४ कोमल।

लतीफ़ा-संज्ञा पुं० (अ० लतीफ़ः) (बहु० लताइफ़) छोटी चोज़भरी कहानी या बात। चुटकला।

लतीफ़ा-गो-संज्ञा पुं० (अ० लतीफ़ः+फा० गो) लतीफ़ा या चुटकला कहनेवाला।

लतीफ़ा-बाज़-दे० "लतीफ़ा-गो।"

लन्तरानी-संज्ञा स्त्री० (अ०) बहुत बढ़-बढ़कर की जानेवाली बातें। शेखी। डींग।

लफ़ंगा-संज्ञा पुं० (फा०) दुश्चरित्र। बदमाश। लुच्चा। लफंगा।

लफ़्ज़-संज्ञा पुं० (अ०) शब्द। मुहा०-**लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़**=शब्दशः।

लफ़्ज़ी-वि० (अ०) केवल लफ़्ज़ या शब्दसे सम्बन्ध रखनेवाला। शाब्दिक। यौ०-**लफ़्ज़ी मानी**=शब्दार्थ। शब्दका सामान्य अर्थ।

लफ़्फ़ाज़-वि० (अ० लफ़्ज़से) बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला। शेखी या डींग हाँकनेवाला।

लफ़्फ़ाज़ी-संज्ञा स्त्री० (अ० लफ़्फ़ाज़)

बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग हाँकना।

लब–संज्ञा पुं० (फा०) १ होंठ। ओष्ठ। २ थूक। लाला। ३ किनारा। पार्श्व। तट। जैसे–लबे दरिया, लबे सड़क।

लब-बंद–वि० (फा०) जिसके होंठ बंद हों। जो कुछ कह या बोल न सके।

लबरेज़–वि० (फा०) ऊपर या मुँह तक भरा हुआ। लबालब।

लबलबा–संज्ञा पुं० (फा० लबलबः) पशुओं आदिके पेटके नीचेकी एक गाँठ जिसमेंसे लसदार स्राव निकलता है।

लब व लहजा–संज्ञा पुं० (फा०) बोलनेका ढंग या प्रकार।

लबादा–संज्ञा पुं० (फा० लबादः) सबके ऊपर ओढ़ने या पहननेका एक प्रकारका वस्त्र।

लबालब–वि० (फा०) बिलकुल ऊपर या मुँहतक भरा हुआ। जैसे–गिलासमें पानी लबालब भरा हुआ है।

लबे-गोर–वि० (फा०) गोर या कब्रके किनारे तक पहुँचा हुआ। मरनेके किनारे। जिसके मरनेमें अधिक विलम्ब न हो। मरणासन्न।

लबे-दरिया–संज्ञा पुं० (फा०) नदीका किनारा। नदीका तट।

लबे-शीरीं–संज्ञा पुं० (फा०) मधुर होंठ।

लमहा–संज्ञा पुं० (अ० लमहः) बहुत थोड़ा समय। क्षण। पल।

लम्स–संज्ञा पुं० (अ०) स्पर्श। छूना।

लरज़ना–क्रि० अ० (फा० लरज़ः) काँपना। थरथराना।

लरज़ाँ–वि० (फा०) काँपता हुआ।

लरज़ा–संज्ञा पुं० (फा० लर्ज़ः) १ काँपने या थरथरानेकी क्रिया। कंप। यौ०–तपे लरज़ा=जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी। २ भूकम्प। भूडोल। भूचाल।

लरजिश–संज्ञा स्त्री० दे० "लरज़ा।"

लवाज़िम–संज्ञा पुं० (अ०) साथमें रहनेवाली आवश्यक सामग्री।

लवाहक़–संज्ञा पुं० (अ० लवाहिक़) १ सम्बन्धी। भाई-बन्द। रिश्ते-दार। २ साथ रहनेवाले लोग या सामग्री। ३ वह प्रत्यय जो किसी शब्दके अन्तमें लगता है।

लश्कर–संज्ञा पुं० (फा०) १ सेना। फौज। यौ०–लश्कर-कशी=१ सेना एकत्र करना। सैन्य-संग्रह। २ चढ़ाई। आक्रमण। धावा। ३ सेनाका पड़ाव। फौजके ठहरने या रहनेकी जगह।

लश्कर-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) लश्कर या सेनाके ठहरनेकी जगह। छावनी।

लश्करी–वि० (फा०) लश्कर या सेनासे सम्बन्ध रखनेवाला। सेना-सम्बन्धी। सैनिक। यौ०-लश्करी बोली=१ वह बोली जिसमें कई भाषाओंके शब्द मिले हों। २ उर्दू भाषा। ३ जहाजके खला-सियोंकी बोली।

लस्सान–वि० (अ०) अच्छा वक्ता।

लहजा—संज्ञा पुं० (अ० लहजः) १ बोलनेमें स्वरोंका उतार-चढ़ाव या ढंग। स्वर। यौ०—लब-व-लहज़ा=बोलनेका ढंग।

लहज़ा—संज्ञा पुं० (अ० लहज़ः) बहुत थोड़ा समय। क्षण। पल।

लहद—संज्ञा स्त्री० (अ०) क़ब्र जिसमें लाश गाड़ी जाती है।

लहन—संज्ञा स्त्री० (अ०) स्वर। आवाज़।

लहीम—वि० (अ०) मोटा। स्थूल।

ला—अव्य० (अ०) एक अव्यय जो शब्दोंके आरम्भमें लगकर निषेध या अभाव सूचित करता है। जैसे—ला-चार=जिसका वश न चले। ला-जवाब=जिसका जवाब या जोड़ न हो।

ला-इलाज—वि (अ०) १ जिसका कोई इलाज या चिकित्सा न हो सके। २ जिसका कोई प्रतिकार या उपाय न रह गया हो।

ला-इल्म—वि० (अ०) १ जिसको इल्म या ज्ञान न हो। जिसको जानकारी न हो। २ अज्ञान।

ला-इल्मी—संज्ञा स्त्री० (अ०) अज्ञान या अनजान होनेकी अवस्था।

ला-उम्मती—संज्ञा पुं० (अ०) वह जो किसी धर्मको न मानता हो।

ला-कलाम—वि० (अ०) १ जिसमें कुछ भी कहने-सुननेकी जगह बाकी न रह गई हो। २ बिलकुल ठीक। निश्चित। ध्रुव।

लाख़—संज्ञा पुं० (फा०) स्थान। जगह। जैसे—संग-लाख़, देव-लाख़।

ला-ख़िराज—वि० (अ०) (ज़मीन) जिसपर ख़िराज या लगान न लगता हो। कर-रहित। भूमि। माफ़ी ज़मीन। धर्मोत्तर।

लाग़र—वि० (फा०) दुबला-पतला।

लाग़री—संज्ञा स्त्री० (फा०) दुबलापन। क्षीणता।

लाचार—वि० (अ०) १ जिसका कुछ वश न चले। असमर्थ। असहाय। २ दीन। दुःखी। ३ जिसके लिए और कोई उपाय न रह गया हो।

लाचारी—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लाचार होनेकी अवस्था या भाव। २ असमर्थता। ३ दीनावस्था। ४ विवशता।

ला-ज़बान—वि० (अ० ला+फा० ज़बान) जो कुछ बोल न सकता हो। संज्ञा स्त्री० गाली।

लाजवर्द—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका प्रसिद्ध रत्न या क़ीमती पत्थर। राजवर्तक।

लाजवर्दी—वि० (फा०) १ लाजवर्दका बना हुआ। २ आसमानी।

ला-जवाब—वि० (अ०) १ जिसका जवाब या जोड़ न हो। अनुपम। बे-जोड़। २ जो उत्तर न दे सके।

ला-ज़वाल—वि० (अ०) १ जिसका ज़वाल (नाश या ह्रास) न हो। सदा एक-सा बना रहनेवाला।

लाज़िम—वि० (अ०) आवश्यक। यौ०—लाज़िम व मलज़ूम=जो आपसमें इस प्रकार सम्बद्ध हों कि अलग न किये जा सकें।

लाज़िमी—वि० (अ०) १ जिसका होना आवश्यक हो। अनिवार्य। ज़रूरी।

ला-दवा—वि० (अ०) जिसकी कोई दवा या इलाज न हो।

ला-दावा—वि० (अ०) जिसका कोई दावा, स्वत्व या अधिकार न रह गया हो। संज्ञा पुं० १ वह जिसने किसी पदार्थपरसे अपना दावा या स्वत्व हटा लिया हो। २ वह पत्र या लेख जिसके अनुसार किसी पदार्थपरसे अपना दावा या या स्वत्व हटा लिया जाय।

लानत—संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० लानती) धिक्कार। फिटकार।

लाफ़—संज्ञा स्त्री० (फा०) बढ़-बढ़कर बातें करना। शेखी बघारना। यौ०—लाफ़-गुज़ाफ़।

लाफ़-ज़नी—संज्ञा स्त्री०(फा०) शेखी हाँकना। अपने सम्बन्धमें बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना।

लाफ़-व-गिज़ाफ—संज्ञा पुं० (फा०) गाली-गलौज। दुर्वचन। अपशब्द।

लाबुद—वि० (अ०)ज़रूरी। आवश्यक। निश्चित।

ला-मकान—वि० (अ०) जिसके कोई मकान या रहनेकी जगह न हो।

लाम-काफ़—संज्ञा पुं० (फा० वर्णमालाके अक्षर लाम और काफ़) गाली-गलौज। दुर्वचन।

ला-मज़हब—वि० (अ०) जो धर्मको न मानता हो। धर्म भ्रष्ट।

लायक़—वि० (अ०) १ योग्य। क़ाबिल। २ उपयुक्त। जैसे—लायक़े सज़ा=दंड पानेके योग्य।

ला-यक़-मन्द—वि० (अ०) योग्य। क़ाबिल। अच्छे गुणोंवाला।

ला-यज़ाल—वि० (अ०) शाश्वत। स्थायी।

ला-यमूत—वि० (अ०) जो कभी न मरे। अमर।

ला-रैब—क्रि० वि० (अ० ला+रैब) बिना शकके। निस्सन्देह।

लाल—संज्ञा पुं० (फा० लअल) लाल रंगका सुप्रसिद्ध रत्न। माणिक। मुहा०—**लाल उगलना**=मुँहसे बहुत अच्छी अच्छी बात कहना। (व्यंग्य) यौ०—**लाले-बेबहा**=बहुमूल्य रत्न।

लाल-बेग—संज्ञा पुं० भंगियों और चमारोंके एक पीरका नाम।

लालबेगिया—वि० लाल बेगका अनुयायी।

लाला—संज्ञा पुं० (फा० लालः) १ पोस्तका फूल जो लाल रंगका होता है। २ एक प्रकारके पौधेका लाल फूल।

लाला-फ़ाम—वि० (फा०) लाल रंगका। रक्त वर्णका।

लाला-रुख़—वि० (फा०) १ जिसका मुख लाला फूलके रंगके समान लाल हो। बहुत सुंदर।

लाले—संज्ञा पुं० (सं० लालसा) लालच। अभिलाषा। मुहा०—**किसी चीज़के लाले पड़ना**—किसी चीज़का बहुत अप्राप्य होना। **जानके लाले पड़ना**=

प्राणोंपर संकट आना। प्राण बचना कठिन होना।

ला-वबाली-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ विचार-शीलताका अभाव। अविचार। २ लापरवाही। उपेक्षा।

लाव-लश्कर-संज्ञा पुं० (फा०) सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।

ला-वल्द-वि० (अ०) जिसकी कोई औलाद न हो। निस्सन्तान।

ला-वारिस-वि०(अ०) जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो।

ला-वारिसी-संज्ञा स्त्री० (अ०) वह सम्पत्ति जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो।

लाश-संज्ञा स्त्री० (तु०) मृत शरीर।

लाशा-संज्ञा पुं० दे० "लाश"।

ला सानी-वि० (अ०) १ जिसका सानी या जोड़ न हो। २ अनुपम।

लाहक़-वि० (अ०) १ मिला हुआ। २ सम्बद्ध। आश्रित। निर्भर।

ला-हासिल-वि०(अ०) १ जिसमें कुछ हासिल न हो। जिसमें कुछ लाभ या प्राप्ति न हो। २ निरर्थक। ३ अनावश्यक। फ़जूल।

लाहिक़-संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० लवाहिक़) १ रिश्तेदार। २ आश्रित।

लाहौल-(अ०) "लाहौल वला कूवत इल्ला ब इल्लाह" का संक्षिप्त रूप जिसका अर्थ है—'ईश्वरके सिवा और कोई शक्ति नहीं है।" इसका प्रयोग प्रायः घृणा या तिरस्कार सूचित करने अथवा भूत-प्रेत आदि दुष्ट आत्माओंको भगानेके लिये किया जाता है। मुहा०—**लाहौल पढ़ना या भेजना**=घृणा आदि सूचित करने अथवा दुष्ट आत्माओंको भगानेके लिये उक्त पदका पाठ करना।

लिफ़ाफ़ा-संज्ञा पुं० (अ० लिफ़ाफ़ः) १ कागज़का वह चौकोर आवरण या थैली जिसके अन्दर रखकर पत्र आदि भेजे जाते हैं। २ ऊपरी आडंबर। दिखावटी शोभा या साज़-सामान। ३ जल्दी खराब होनेवाली चीज़।

लिफ़ाफ़िया-वि० (अ० लिफ़ाफ़ः) केवल ऊपरी आडंबर रखनेवाला।

लिबास-संज्ञा पुं० (अ०) १ पहनने के कपड़े। वस्त्र। २ भेस। वेष।

लिबासी-वि० (अ०) १ भीतरी रूप छिपानेके लिये जिसपर कोई आवरण पड़ा हो। २ नक़ली।

लियाक़त-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कार्य करनेकी योग्यता। २ लायक होनेका भाव। ३ किसी विषयका अच्छा ज्ञान। विज्ञता।

लिल्लाह-क्रि० वि० (अ०) अल्लाह या खुदाके नामपर। ईश्वरके लिये।

लिसान-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ ज़बान। जिह्वा। जीभ। २ भाषा। ज़बान। बोली। जैसे—**लिसान-उल्-ग़ैब**=आकाश-वाणी।

लिहाज़-संज्ञा पुं० (अ०) १ व्यवहार या बरतावमें किसी बातका ध्यान। २ मेहरबानीका खयाल। कृपा-दृष्टि। ३ शील-संकोच।

मुलाहज़ा। मुरव्वत। ४ सम्मान या मर्यादाका ध्यान। ५ पक्षपात। तरफ़दारी। ६ लज्जा। शर्म। हया। मुहा०—ब-लिहाज़=लिहाज या मुलाहज़ेके साथ।

लिहाज़ा—क्रि० वि० दे० "लेहाजा।"

लिहाफ़—संज्ञा पुं० (अ०) जाड़ेमें रातको ओढ़नेका रूईदार ओढ़ना। रजाई।

लुंगी—संज्ञा स्त्री० (फा०) अँगोछीकी तरहका एक कपड़ा जो प्रायः कमरमें धोतीकी जगह लपेटा जाता है। तहमत।

लुआब—संज्ञा पुं० (अ०) १ थूक। लार। २ लस। लसी। लेर।

लुआबदार—वि० (अ० लुआब+फा० दार) जिसमें लुआब या लस हो। लसदार। चिपचिपा।

लुकनत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ रुक-रुककर बोलना। हकलापन। २ रोग या नशे आदिके कारण रुकरुककर बोलनेकी क्रिया।

लुक़मा—संज्ञा पुं० (अ० लुक़्मः) उतना भोजन जितना एक बार मुँहमें डाला जाय। ग्रास। कौर।

मुहा०—**लुक़मा करना**=खा जाना।

लुक़मान—संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रसिद्ध विद्वान् और दार्शनिक।

लुग़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ भाषा। जबान। २ ऐसा शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट या प्रसिद्ध न हो। ३ शब्द-कोश। अभिधान।

लुग़ात—संज्ञा स्त्री० (अ०) (लुग़त का बहु०) शब्दों और उनके अर्थोंका संग्रह। शब्द-कोश।

लुग़ज़—संज्ञा पुं० (अ०) १ पहेली। २ समस्या।

लुग़वी—वि० (अ०) शाब्दिक। शब्दोंका। जैसे—**लुग़वी मानी**=शब्दोंका पहला या सामान्य अर्थ।

लुत्फ़—संज्ञा पुं० (अ०) १ मजा। आनन्द। २ रोचकता। ३ स्वाद। ज़ायक़ा। ४ कृपा। दया। अनुग्रह। ५ भलाई। खूबी। उत्तमता।

लुत्फ़ी—वि० (अ०) दत्तक (पुत्र)।

लुब—संज्ञा पुं० (अ०) १ सार। तत्त्व। २ गिरी। मग़ज़। ३ आत्मा।

लुबूब—संज्ञा पुं० (अ०) १ लुबका बहुवचन। सार। तत्त्व। २ एक प्रकारका अवलेह या माजून।

लुब्बे-लुबाब—संज्ञा पुं० (अ०) सार। भाव। तत्त्व।

लुर—वि० (फा०) बेवकूफ़। मूर्ख।

लूती—संज्ञा पुं० (अ०) वह जो अस्वाभाविक रूपसे मैथुन करे। बालकोंके साथ संभोग करने-वाला। लौंडेबाज़।

लूलू—संज्ञा पुं० (फा०) १ बच्चोंको डरानेके लिये एक कल्पित जीवका नाम। हौवा। जूजू। २ मूर्ख। बेवकूफ़। गावदी। ३ पागल।

लेकिन—अव्य० (अ०) परन्तु। पर।

लेज़म—संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी कमान जिसमें लोहेकी जंजीर और झाँझें लगी रहती

हैं और जिसका व्यवहार व्यायाम-के लिए होता है।

लेहज़ा-लेहाज़ा–क्रि० वि० (अ०) इसलिए। इस वास्ते। इस कारण-से। अतः।

लैत व लअ़ल–संज्ञा पुं० (अ०) टाल-मटोल। बहाना। आज-कल करना।

लैल-संज्ञा पुं० (अ०) रात। यौ०–**लैलो-निहार**=रात-दिन।

लोबान–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका सुगन्धित गोंद जो प्रायः जलाने या औषध आदिके काममें आता है।

लोबिया–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारकी फली जिसकी तरकारी बनती है।

लौज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ बादाम। २ एक प्रकारकी मिठाई।

लौस–संज्ञा पुं० (अ०) १ मिला-वट। मेल। २ सम्पर्क। सम्बन्ध।

लौह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लकड़ी-का तख़्ता। २ काठकी वह तख़्ती जिसपर लिखते हैं। ३ पुस्तकका मुख्य पृष्ठ।

(व)

व-इल्ला–क्रि० वि० (अ०) नहीं तो। वरना।

वईद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बुरा-भला कहना। २ धमकी।

वक़अत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शक्ति। बल। ताक़त। २ ऊँचाई। ३ एतबार। साख। ४ महत्त्व। मूल्य। इज्ज़त।

वक़फ़ियत–संज्ञा स्त्री० दे० "वाक़-फ़ीयत।"

वक़र–संज्ञा पुं० (अ० वक़्र) १ भार बोझ। २ उत्तम स्वभाव। शील। ३ बड़प्पन। महत्त्व। ४ ठाट-बाट। वैभव।

वक़ाया–संज्ञा पुं० (अ० वक़ीयऽ का बहु०) घटनाएँ या उनके समाचार।

वक़ाया-निगार–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा वक़ाया-निगारी) समाचार आदि लिखनेवाला। संवाद-दाता।

वक़ार–संज्ञा पुं० (अ०) १ उत्तम स्वभाव। शील। २ विचारोंकी स्थिरता। स्थिरचित्तता। ३ शान-शौक़त। वैभव।

वकालत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दूत-कर्म। २ दूसरेकी ओरसे उसके अनुकूल बात-चीत करना। ३ मुक़दमेमें किसी फ़रीककी तरफ़से बहस करनेका पेशा। वकीलका काम।

वकालतन्–क्रि० वि० (अ०) वकील-के द्वारा। असालतन्‌का उलटा।

वकालत-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकीलको मुक़दमे-में बहस करनेके लिए मुक़र्रर करता है।

वक़ाहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ निर्लज्जता। बे-हयाई। २ उद्दंडता।

वकील–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० वकला) १ दूत। २ राजदूत।

एलची। ३ प्रतिनिधि। दूसरेका पक्ष मंडन करनेवाला। ५ वह आदमी जिसने वकालतकी परीक्षा पास की हो और जो अदालतोंमें मुद्दई या मुद्दालेहकी ओरसे बहस करे।

वक़ूअ–संज्ञा पुं० (अ०) १ घटना। २ दुर्घटना।

वक़ूआ–संज्ञा पुं० (अ०वुक़ूअ) वाक़ा होना। घटित होना।

वक़ूफ़–संज्ञा पुं० (अ०वुक़ूफ़) १ ज्ञान। जानकारी। २ अक़्ल। शऊर। यौ०–बे-वक़ूफ़=निर्बुद्धि।

वक़्त–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० औक़ात) १ समय। २ अवसर। ३ अवकाश। फ़ुरसत।

वक़्तन्-फ़वक़्तन्–क्रि० वि० (अ० वक़्तसे) कभी कभी। बीच बीचमें। समय समयपर।

वक़्फ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो। २ किसीके लिए कोई चीज़ छोड़ देना।

वक़्फ़-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जो कोई संपत्ति वक़्फ़ करनेके सम्बन्धमें लिख देता है।

वक़्फ़ा–संज्ञा पुं० (अ०वक़्फ़ः) १ ठहराव। स्थिरता। २ थोड़ी-सी देर।

वक़्फ़ी–वि० (अ०) वक़्फ़ या धर्मार्थ दान किया हुआ।

वक़्र–संज्ञा पुं० दे० "वक़र।"

वगर–अव्य दे० "अगर।"

वगर-ना–अव्य० (फा०) नहीं तो।

वग़ैरह–अव्य० (अ०) इत्यादि।

वज़न–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० औज़ान) १ भार। बोझ। तौल। २ मान। मर्यादा। गौरव।

वज़नदार–वि० दे० "वज़नी।"

वज़नी–वि० (अ० वज़नसे फा०) जिसका बहुत बोझ हो। भारी।

वजह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कारण। हेतु। २ सूरत। ३ तौर-तरीक़ा। ४ आयका साधन या द्वार।

वजह-तस्मियह–संज्ञा स्त्री० (अ०) नाम-करणका कारण।

वजा–संज्ञा पुं० (अ० वजऽ) पीड़ा। दर्द। टीस। जैसे–**वजा-उल्-क़लब**=दिलका दर्द। **वजा-मफ़ासिल**=गठिया रोग।

वज़ा–संज्ञा स्त्री० (अ० वज़ऽ) १ बनावट। रचना। २ सज-धज। ३ दशा। अवस्था। ४ रीति। प्रणाली। ५ मुजरा। मिनहा। ६ प्रसव करना। जनना। यौ०–**वज़ा-हमल**–गर्भ-पात।

वज़ाएफ़–संज्ञा पुं० दे० "वज़ायफ़।"

वज़ादार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा वज़ादारी) १ जिसकी बनावट या सजावट अच्छी हो। तरहदार। २ सिद्धान्तों और प्रतिज्ञाओंका पालन करनेवाला।

वज़ायफ़–संज्ञा पुं० (अ०) 'वज़ीफ़ा।' का बहु०।

वज़ारत–संज्ञा स्त्री० (अ०विज़ारत) १ वज़ीरका भाव, पद या कार्य। मंत्रित्व। २ वज़ीरका कार्यालय।

वजाहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १

सुन्दरता। सौन्दर्य। २ चेहरेका रोब। ३ प्रतिष्ठा।

वज़ाहत-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ स्पष्टता। सुन्दरता।

वज़ीअ-वि० (अ०) कमीना। नीच।

वज़ीफ़ा-संज्ञा पुं० (अ० वज़ीफ़ः) (बहु० वज़ायफ़) १ वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानों-छात्रों या त्यागियों आदिको दी जाती है। २ जप या पाठ। (मुसलमान)।

वज़ीर-संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० वुज़रा) १ मंत्री। अमात्य। २ शतरंजकी एक गोटी।

वज़ीरी संज्ञा स्त्री० (अ० वज़ीर) वज़ीरका काम या पद। संज्ञा पुं० घोड़ेकी एक जाति।

वज़ीरे-आज़म-संज्ञा पुं०(अ०)राज्य का प्रधान मन्त्री। प्रधान अमात्य।

वजीह-वि० (अ०) सुन्दर।

वज़ू-संज्ञा पु० (अ० वुज़ू) नमाज पढ़नेके पूर्व शुद्धिके लिये हाथ-पाँव आदि धोना।

वजूद-संज्ञा पुं० (अ० वुजूद) १ कार्यसिद्धि। मनोरथ सफल होना। २ शरीर। बदन। ३ अस्तित्व। मौजूदगी। ४ प्रकट होना। सामने आना। ५ ठहराव।

वजूह संज्ञा स्त्री०दे० "वजूहात।"

वजूहात-संज्ञा स्त्री० (अ० वुजूहात) वजहका बहु०। वजहें। कारण।

वज्द-संज्ञा पुं० (अ०) १ दुःखित और चिन्तित होनेकी अवस्था। २ वह तल्लीनता और तन्मयता जो धार्मिक उपदेश आदि सुनकर उत्पन्न होती है। हाल। जज़बा। बेखुदी। क्रि० प्र०—आना' में आना।

वतन-संज्ञा पुं० (अ०) जन्म-भूमि।

वतनी-वि० (अ० वतनसे फा०) अपने वतन या जन्म-भूमिका रहनेवाला। देशभाई।

वतर-संज्ञा पुं० (अ०) १ कमानका चिल्ला। २ बाजेके तार।

वतीरा-संज्ञा पुं० (अ० वतीर) रंग-ढंग। तौर-तरीका।

वदीयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) धरोहर। अमानत।

वन्द-प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर "वाला" या 'स्वामी" आदिका अर्थ देता है। जैसे—खुदा-वन्द।

वफ़ा-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वादा पूरा करना। बात निबाहना। २ निर्वाह। पूर्णता। ३ मुरौवत। सुशीलता।

वफ़ात-संज्ञा स्त्री० (अ०) मृत्यु।

वफ़ादार-वि० (अ०+फा०) (संज्ञा वफ़ादारी) वचन या कर्त्तव्यका पालन करनेवाला।

वफ़ा परस्त-वि० (अ० + फा०) (संज्ञा वफ़ा-परस्ती) वफ़ादार।

वफ़ूर-वि० (अ० वुफ़ूर) अधिकता। बहुतायत। ज़्यादती।

वफ़्द-संज्ञा पुं० (अ०) प्रतिनिधि-मंडल।

वबा-संज्ञा स्त्री० (अ०) फैलनेवाला भयंकर रोग। हैजा, प्लेग आदि।

बबाल–संज्ञा पुं० (अ०) १ बोझ। भार। २ आपत्ति। कठिनाई।

बर–प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर "वाला"-का अर्थ देता है। जैसे–हुनरवर, जानवर, बख़्तवर, ताजवर। वि० श्रेष्ठ। बढ़कर।

बरअ–संज्ञा स्त्री० (अ० वरऽ) सदाचार। पवित्र आचरण।

बरक़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० औराक़) १ पत्र। २ पुस्तकोंका पन्ना। पत्र। ३ सोने, चाँदी आदिके पतले पत्तर।

बरक़-साज़–वि० (अ० + फा०) (संज्ञा वरक-साज़ी) चाँदी, सोने आदिके वरक़ बनानेवाला। तबक़गर।

बरक़ा–संज्ञा पुं० (अ० वर्क़ः) १ काग़ज़। २ पत्र। चिट्ठी। ३ पृष्ठ।

बरग़लाना–क्रि० स० (देश०) १ बहकाना। भ्रममें डालना। २ उत्तेजित करना। उकसाना।

बरग़लालना–क्रि० स० दे० "बरग़लाना।"

बरज़िश–संज्ञा स्त्री० (फा० वर्ज़िश) शारीरिक व्यायाम। कसरत।

बरज़िशी–वि० (फा०) वर्ज़िश या व्यायामसम्बन्धी।

बरदी–वि० (अ० वर्दी) गुलाबी। संज्ञा स्त्री० (अ० वर्दी) १ वह पहनावा जो किसी विभागके सब कर्मचारियोंके लिए मुकर्रर होता है। २ वे बाजे जो राजाओं आदिके यहाँ निश्चित समयपर बजा करते हैं। नौबत।

बरना–क्रि० वि० (फा० वर्नः) यदि ऐसा न हुआ तो। नहीं तो।

बरम–संज्ञा पुं० (अ०) शरीरके किसी अंगका फूल या सूज जाना। सूजन। सोज़िश।

बरसा–संज्ञा पुं० (अ० वर्सः) उत्तराधिकारसे प्राप्त धन। मीरास। तरका। संज्ञा पुं० (अ० वरसः) "वारिस" का बहु०। उत्तराधिकारी लोग।

बरासत–संज्ञा स्त्री० (अ० विरासत) १ वारिस या उत्तराधिकारी होनेका भाव। उत्तराधिकार। २ उत्तराधिकारसे मिला हुआ धन या सम्पत्ति। तरका।

बरासतन्–क्रि० वि० (अ० विरासतन्) वरासत या उत्तराधिकारके रूपमें।

बरासत-नामा–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) उत्तराधिकार-पत्र।

बरूद–संज्ञा पुं० दे० "वुरूद।"

बर्क़–संज्ञा पुं० दे० "वरक़।"

बर्ज़िश–संज्ञा स्त्री० दे० "बरज़िश।"

बर्द–संज्ञा पुं० (अ०) गुलाबका फूल।

बर्दी–वि० संज्ञा स्त्री० दे० "बरदी।"

बर्ना–क्रि० वि० दे० "बरना।"

बलवला–संज्ञा पुं० (अ० वल्वलः) १ शोर-गुल। २ उमंग। आवेश। क्रि० प्र० उठना।

बलादत–संज्ञा स्त्री० (अ० विलादत) प्रसव करना। जनना।

वली–संज्ञा पुं० (अ०) १ मालिक । २ शासक । हाकिम । ३ साधु ।
वली-अल्लाह–संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वरतक पहुँचा हुआ साधु ।
वली-अहद–संज्ञा पुं०(अ०)राज्यका उत्तराधिकारी । युवराज ।
वली-नेमत–संज्ञा पुं०(अ०)मालिक।
वलीमा–संज्ञा पुं० (अ० वलीमः) विवाहसम्बन्धी भोज ।
वले–अव्य० (फा०) लेकिन। मगर।
वलेक–अव्य० दे० "व-लेकिन ।"
व-लेकिन–अव्य० (अ०) लेकिन । परन्तु । पर।
वल्द–संज्ञा पुं० (अ०) पुत्र । बेटा । लड़का । जैसे–**मोहन वल्द सोहन**=सोहनका लड़का मोहन ।
वल्द उज्ज़िना–वि० (अ०)हरामका पैदा । हरामी । वर्ण-संकर ।
वल्द-उल्-हराम–वि०(अ०)हरामका पैदा । हरामी । दोगला ।
वल्द-उल्-हलाल–वि (अ०) विवाहिता स्त्रीसे उत्पन्न । औरस ।
वल्दियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) पिताके नामका परिचय ।
वल्लाह–अव्य० (अ०) ईश्वरकी शपथ है ।
वल्लाह-आलम–(अ०) १ ईश्वर अच्छी तरह जानता है । २ ईश्वर जाने, मैं नहीं जानता ।
वल्लाह-बिल्लाह–दे० "वल्लाह ।"
वश–प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर समान या तुल्यका अर्थ देता है । जैसे–**परी-वश**=परीके समान ।
वसअ–संज्ञा स्त्री० दे० "वसअत ।"
वसअत–संज्ञा स्त्री० (अ० वुसअत) १ विस्तार । लम्बाई-चौड़ाई । फैलाव । प्रसार । २ क्षेत्र-फल । रक़बा। ३ सामर्थ्य । शक्ति । ४ गुंजाइश ।
वसमा–संज्ञा पुं० दे० "वस्म ।"
वसली–संज्ञा स्त्री० दे० "वस्ली।"
वसवसा–संज्ञा पुं०दे० "वसवास ।"
वसवास–संज्ञा पुं०(अ०) १ सन्देह । शक । २ आशंका । डर । भय । ३ आगा-पीछा । आना-कानी ।
वसवासी–वि० (अ०) १ जो जल्दी कुछ निश्चय न कर सके। २ शक्की ।
वसातत–संज्ञा स्त्री० (अ०)मध्यस्थता । वसीला ।
वसायल–संज्ञा पुं० (अ०)"वसीला"-का बहु० ।
वसी–संज्ञा पुं० (अ०) वह जिसके नाम कोई वसीअत की गई हो ।
वसीअ–वि० (अ०) लम्बा-चौड़ा । विस्तृत ।
वसीअत–संज्ञा स्त्री०दे०'वसीयत ।'
वसीक़–वि० (अ०) दृढ़ । पक्का ।
वसीक़ा–संज्ञा पुं० (अ० वसीक़:) १ वह धन जो इस उद्देश्यसे सरकारी खजानेमें जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवालेके सम्बन्धियोंको मिला करे । २ ऐसे धनसे आया हुआ सूद ।
वसीक़ादार–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) जिसे किसी तरहका वसीक़ा मिलता हो ।

वसीम–वि० (अ०) सुन्दर । मनोहर ।

वसीयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० वसाया) अपनी सम्पत्तिके विभाग और प्रबंध आदिके संबन्धमें की हुई वह व्यवस्था, जो मरनेके समय कोई मनुष्य लिख जाता है।

वसीयत-नामा–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी सम्पत्तिका विभाग और प्रबन्ध मेरे मरनेके पीछे किस प्रकार हो ।

वसीला–संज्ञा पुं० (अ० वसीलः) १ संबंध । २ आश्रय । सहायता । ३ ज़रिया । द्वार ।

वसूक़–संज्ञा पुं० (अ० वुसूक़) १ दृढ़ता । मज़बूती । २ विश्वास । भरोसा । एतबार । ३ अध्यवसाय ।

वसूल--संज्ञा पुं० (अ० वसूल) पहुँचना । प्राप्ति । वि० जो पहुँच या मिल गया हो । प्राप्त ।

वसूल-बाक़ी--संज्ञा पुं० (अ०) प्राप्त और प्राप्य धन ।

वसूली-संज्ञा स्त्री० (अ० वुसूलसे) १ वसूल होने या मिलनेकी क्रिया या भाव । प्राप्ति । २ वह धन जो वसूल होनेको हो ।

वस्क़-संज्ञा पुं० (अ०) १ शक्ति । ताक़त । २ दृढ़ विश्वास।

वस्त--संज्ञा पुं० (अ०) बीचका भाग । मध्य।

वस्ती–वि०(अ०) बीचका। मध्यका।

वस्फ़--संज्ञा पुं०(अ०) (बहु० औसाफ़) गुण । विशेषता । खूबी ।

वस्फ़ी--वि० (अ०) जिसमें वस्फ़ या गुण बतलाये गये हों । विवरणात्मक ।

वस्मा–संज्ञा पुं० (अ० वस्मः) १ नीलके पत्तोंका ख़िज़ाब जो प्रायः मुसलमान बालोंमें लगाते हैं । २ उबटन । बटना । ३ रुपहले या सुनहले वरक़ोंसे छपा हुआ कपड़ा ।

वस्ल--संज्ञा पुं० (अ०) १ दो चीज़ोंका मेल । मिलन । २ संयोग । मिलाप । मृत्यु ।

वस्लचा–संज्ञा पुं० (अ० वस्ल+ फा० चः प्रत्य०) कपड़े या काग़ज़ आदिका छोटा टुकड़ा।

वस्लत--संज्ञा स्त्री० दे० "वस्ल ।"

वस्ली संज्ञा स्त्री० (अ०) वह दोहरा या मोटा काग़ज़ जिसपर सुन्दर अक्षर लिखनेका अभ्यास किया जाता है । क्रि० प्र० लिखना ।

वस्साफ़–वि० (अ०) बहुत अधिक वस्फ़ या गुण बतलानेवाला । प्रशंसक ।

वहदत–संज्ञा स्त्री० (अ०) वाहिद या एक होनेका भाव । एकत्व ।

यौ०–**वहदत उल्-वजूद**= यह सिद्धान्त कि संसारकी सब वस्तुओंका कर्त्ता एक ईश्वर ही है ।

वहदानियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वाहिद या एक होनेका भाव । एकत्व । २ अनुपमता ।

वहब-संज्ञा पुं० (अ० वहब) उदारता ।

वहबी–वि० (अ० वहबी) १ प्रदत्त। दिया हुआ। २ ईश्वर-दत्त।

वहम–संज्ञा पुं० (अ० वह्म) १ मिथ्या धारणा। झूठा ख़याल। २ भ्रम। ३ व्यर्थकी शंका।

वहमी–वि० (अ० वहमी) वहम करनेवाला। जो व्यर्थ संदेहमें पड़े।

वहश–संज्ञा पुं० (अ० वह्श) (बहु० वहूश) जंगली जानवर।

वहशत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वहशी होनेका भाव। जंगलीपन। पागलपन। २ भीषणता। डर।

वहशत-अंगेज़–वि० (अ०+फा०) भयानक। भीषण। विकट।

वहशत-ज़दा–वि० (अ०+फा०) १ जिसपर वहशत सवार हो। २ बहुत घबराया हुआ। ३ पागल। सिड़ी।

वहशत-नाक–वि० (अ०+फा०) भीषण। भयानक।

वहशियाना–क्रि० वि० (अ० वह-शियानः) वहशियोंकी तरह।

वहशी–वि० (अ०) १ जंगली। २ बहुत घबराया हुआ और चंचल।

वहाब–वि० (अ० वह्हाब) बहुत क्षमा करनेवाला। संज्ञा पुं० ईश्वर।

वहाबी–संज्ञा पुं० (अ० वह्हाबी) १ अब्दुल वहाब नज्दीका चलाया हुआ मुसलमानोंका एक संप्रदाय। २ इस संप्रदायका अनुयायी।

वही–संज्ञा स्त्री० (अ०) ईश्वरकी वह आज्ञा जो उसके किसी दूत या पैग़म्बरके पास पहुँचे।

वहीद–वि० (अ०) अनुपम। बे-जोड़। निराला।

वा–वि० (फा०) खुला या फैला हुआ।

वाइज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ वाज़ या धर्मोपदेश करनेवाला। २ अच्छी बातोंकी नसीहत या शिक्षा देने-वाला।

वाइद–वि० (अ०) वादा करनेवाला।

वाक़ई–वि० (अ०) सच। वास्तव। अव्य० सचमुच। यथार्थमें।

वाकफ़ीयत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ जानकारी। ज्ञान। २ जानपहचान।

वाक़या–संज्ञा पुं० (अ० वाक़िअऽ) १ घटना। २ वृत्तांत। समाचार।

वाक़या-नवीस–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह जो घटनाओं आदिके समाचार लिखकर कहीं भेजता हो। संवाददाता।

वाक़ा–वि० (अ० वाक़िऽ) १ होने या घटनेवाला। २ स्थित। खड़ा।

वाक़िफ़–वि० (अ०) जाननेवाला। सब बातोंसे परिचित। यौ०—

वाक़िफ़-उल्-हाल=सारा हाल जाननेवाला।

वाक़िफ़-कार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा वाक़िफ़कारी) सब कामोंसे वाक़िफ़। अनुभवी। तजरुबेकार।

वाक़ियात–संज्ञा स्त्री० (अ०) "वाक़या" का बहु०।

वागुजाश्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) १

पीछे छोड़ना । २ छोड़ने या छुड़ानेकी क्रिया ।

वाज़–संज्ञा पुं० (अ० वअज़) १ उपदेश । शिक्षा । २ धार्मिक उपदेश । कथा । क्रि०वि० (फा०) खुला हुआ ।

वाज़ा–वि० (अ० वाज़िह) १ प्रकट । जाहिर । २ स्पष्ट । खुला हुआ । ३ विस्तृत । ब्योरेवार । वि० (अ० वाज़िअ) वज़अ करने या बनानेवाला । जैसे–**वाज़ा-कानून**=कानून बनानेवाला ।

वाजिब–वि० (अ०) १ मुनासिब । उचित । ठीक । २ योग्य । पात्र । संज्ञा पुं० १ वह जो अपने अस्तित्वके लिए किसी दूसरेपर निर्भर न हो । २ प्रतिदिन या मासका वेतन या वृत्ति ।

वाजिब-उत्तस्लीम–वि० (अ०) तस्लीम करने या माननेके योग्य ।

वाजिब-उत्ताज़ीर–वि० (अ०) ताज़ीर या दण्डके योग्य ।

वाजिब-उल्-अर्ज़–वि० (अ०) अर्ज़ या निवेदन करनेके योग्य ।

वाजिब-उल्-अदा–वि० (अ०) धन-आदि जो अदा करना या देना वाजिब हो ।

वाजिब-उल्-इज़हार–वि० (अ०) जाहिर या प्रकट करनेके योग्य ।

वाजिब-उल्-रहम–वि० (अ०) रहम या दयाके योग्य ।

वाजिब-उल्-वुजूद–वि० (अ०) जो अपने अस्तित्वके लिए किसी दूसरेपर निर्भर न हो । स्वयंभू ।

वाजिबात–संज्ञा स्त्री० बहु० (अ०) १ आवश्यक कार्यक्रम या कर्तव्य आदि । २ वे रकमें जो वसूल होनेको बाकी हों ।

वाजिबी–वि० (अ०) १ उचित । मुनासिब । ठीक । २ आवश्यक । ज़रूरी । ३ योग्य । संज्ञा पु० नित्य या प्रतिमास मिलनेवाला वेतन या वृत्ति आदि ।

वादा–संज्ञा पुं० (अ० वअदः) वचन । प्रतिज्ञा । इक़रार । मुहा०–**वादा-खिलाफ़ी करना**=कथनके विरुद्ध कार्य करना । **वादा कराना** = वचन लेना । प्रतिज्ञा कराना ।

वादी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पहाड़की घाटी । २ पहाड़ोंके पासकी नीची भूमि । ३ वन । जंगल । मुहा०–**वादीपर आना**=अपनी बात या हठपर आना ।

वापस–वि० वि० (फा०) लौटा हुआ । फिरता ।

वापसी–वि० (फा०) लौटा हुआ या फेरा हुआ । वापस होनेके सम्बन्धका । संज्ञा स्त्री० लौटनेकी क्रिया या भाव । प्रत्यावर्त्तन ।

वापसीन–वि० (फा०) अन्तिम । आख़िरी । जैसे–**दमे वापसीन**= अंतिम साँस ।

वाफ़िर–वि० (अ०) बहुत अधिक ।

वाफ़ी–वि० (अ०) १ यथेष्ट । पूरा । २ सच्चा । निष्ठ ।

वाबिस्तगान–संज्ञा पुं० (फा०) "वाबिस्ता" का बहु० ।

वाबिस्ता–वि० (फा० वाबिस्तः) (भाव० वाबिस्तगी) बँधा या लगा हुआ। सम्बद्ध। संज्ञा पुं० रिश्तेदार। सम्बन्धी।

वाम-संज्ञा पुं० (फा०) उधार।

वामाँदगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पीछे रहने या बच जानेकी क्रिया या भाव। २ थकावट। शिथिलता।

वामाँदा–वि० (फा० वामाँदः) बहु० वामाँदगान) १ बाकी बचा हुआ। २ जो थककर पीछे रह गया हो। ३ जूठा। उच्छिष्ट।

वामिक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ मित्र। दोस्त। २ चाहनेवाला। आशिक़।

वाय–अव्य० (फा०) दुःख, चिन्ता और कष्ट आदिका सूचक अव्यय। जैसे–वाय क़िस्मत।

वार–वि० (फा०) १ समान। तुल्य। (यौ० शब्दोंके अन्तमें) जैसे–मजनूँ-वार = मजनूँकी तरह। २ रखनेवाला। जैसे— उमेद-वार। प्रत्य० एक प्रत्यय जो शब्दोंके अंतमें लगकर "के अनुसार" का अर्थ देता है। जैसे–माह-वार।

वारदात-संज्ञा स्त्री० (अ० वारिदात) १ कोई भीषण कांड। दुर्घटना। २ मारपीट। दंगा-फ़साद।

वारफ़तगी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ आपेसे बाहर होनेकी अवस्था। २ तल्लीनता। ३ रास्ता भूलना। भटकना। ४ मार्गसे भ्रष्ट होना।

वारफ़ता–वि० (फा० वारफ़्तः) १ आपेसे बाहर। २ तल्लीन। ३ भटका हुआ।

वारस्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मुक्ति। छुटकारा २ स्वतंत्रता।

वारस्ता–वि० (फा० वारस्तः) (बहु० वारस्तगान) स्वेच्छाचारी। स्वतंत्रता। जैसे–**वारस्ता-मिज़ाज**=स्वतंत्र विचारोंवाला।

वारिद–वि० (अ०) आनेवाला। आगन्तुक। संज्ञा पुं० अतिथि। मेहमान। पत्रवाहक। दूत।

वारिदात-संज्ञा दे० "वारदात।"

वारिस–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० वुरसा) वह पुरुष जो किसीके मरनेके पीछे उसकी संपत्ति आदिका स्वामी हो। उत्तराधिकारी।

वारिसी–संज्ञा स्त्री० दे० "वरासत।"

वाला–वि० (फा०) १ उच्च। ऊँचा। २ श्रेष्ठ। महान्। जैसे–जनाबे वाला।

वाला-क़द्र–वि० (फा०) उच्च पदस्थ। माननीय।

वाला-जाह–वि० (फा०) उच्च पद-वाला।

वालिद-संज्ञा पुं०(अ०)पिता। यौ०–**वालिदे माजिद**=पूज्य पिताजी।

वालिदा–संज्ञा स्त्री० (अ० वालिदः) माता। माँ।

वालिदैन-संज्ञा पुं० बहु० (अ०) माता-पिता। माँ-बाप।

वाली-संज्ञा पुं० (अ०) १ मालिक। स्वामी। २ बादशाह। राजा। ३ सहायक। मददगार। ४ संरक्षक।

यौ०–वाली वारिस = स्वामी, रक्षक और सहायक।

वावेला–संज्ञा पुं० दे० "वावैला"।

वावैला–संज्ञा पुं०(अ०) १ विलाप। रोना पीटना। २ शोर-गुल।

वा-शुद–संज्ञा स्त्री०(फा०)प्रफुल्लता।

वासिक़–वि० (अ०) पक्का। दृढ़।

वासित–संज्ञा पुं० (अ०) १ मध्य-भाग। २ मध्यस्थ। बिचवई।

वासिल–वि० (अ०) (बहु० वासिलात) १ मिलनेवाला। २ वसूल या प्राप्त होनेवाला। ३ पहुँचा हुआ। यौ०–**वासिल-बाक़ी**= वसूल और बाकी रकम। ४ जिसका वस्ल हुआ हो। संयोगी।

वासिल-बाक़ी-नवीस–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह कर्मचारी जो वसूल और बाकी लगान आदिका हिसाब रखता हो।

वासिलात–संज्ञा स्त्री० (अ०वासिलका बहु०) १ रियासत या जमींदारी आदिकी। २ वसूल होनेवाली रकमें।

वासोख़्त–संज्ञा पुं० (फा०) १ जलना। ज्वाला। २ वह कविता जो प्रेमिकाके दुर्व्यवहारोंसे दुःखी होकर प्रेम आदिकी निन्दाके सम्बन्धमें की जाय।

वासोख़्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) दिलकी जलन। कुढ़न। मनस्ताप।

वासोज़–संज्ञा पुं०(फा०) १ जलन। ज्वाला। २ आवेश।

वास्ता–संज्ञा पुं० (अ० वासितः= मध्यस्थ या दूत) १ सम्बन्ध। लगाव। ताल्लुक। सरोकार। पाला। जैसे–ईश्वर तुमसे वास्ता न डाले। ३ दोस्ती। आशनाई। ४ सम्भोग।

वास्ते–अव्य० (अ० वासितः) १ लिये। निमित्त। २ हेतु। सबब।

वाह–अव्य० (फा०) १ प्रशंसासूचक शब्द। धन्य। २ आश्चर्यसूचक शब्द। ३ घृणा-द्योतक शब्द।

वाहिद–वि० (अ०) १ एक। २ अकेला। संज्ञा पुं० ईश्वर। यौ०–**वाहिद शाहिद**=ईश्वर साक्षी है।

वाहिबा–वि०(अ०)१ दाता। दानी। २ उदार।

वाहिमा–संज्ञा पुं० (अ० वाहिमः) १ वह शक्ति जिससे सूक्ष्म बातोंका ज्ञान होता है। २ कल्पना-शक्ति।

वाहियात–वि० (अ०) वाही+फा० इयात प्रत्य०) १ व्यर्थ। २ बुरा।

वाही–वि० (अ०) १ सुस्त। २ निकम्मा। ३ मूर्ख। ४ आवारा।

वाही-तबाही–वि० (अ० वाही+ तबाही) १ बेहूदा। २ आवारा। ३ अंडबंड। बेसिर पैरका। संज्ञा स्त्री० अंडबंड बातें। गाली-गलौजा।

विक़ार–संज्ञा स्त्री० दे० "वक़ार।"

विज़ारत–संज्ञा स्त्री० दे०'वज़ारत।'

विदा–संज्ञा स्त्री० (अ० विदाऽ मि० सं० विदाय) १ प्रस्थान। रवाना होना। २ कहींसे चलनेकी अनुमति।

विदाई–वि० (अ०) विदा या प्रस्थानसम्बन्धी।

विरासत–संज्ञा स्त्री० दे० 'वरासत।'

विर्द—संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० औराद) १ नित्यका कार्य । दैनिक कृत्य । मुहा०—**विर्द ज़बान होना**=ज़बानपर बार बार आना। २ कुरान आदिका पाठ।

विलादत—संज्ञा स्त्री० दे० "वलादत"

विलायत—संज्ञा पुं० स्त्री० (अ०) १ पराया देश । २ दूरका देश ।

विलायती—वि० (अ०) १ विलायतका विदेशी। २ दूसरे देशमें बना हुआ।

विसाल—संज्ञा पुं० (अ०) १ मिलाप । मिलना । २ प्रेमिका और प्रेमीका मिलाप । संयोग । ३ मृत्यु ।

वीरान—वि० (फा०) १ उजड़ा हुआ । जिसमें आबादी न रह गई हो । २ श्री-हीन ।

वीराना—संज्ञा पुं० (फा० वीरानः) १ उजाड़ । बस्तीका उलटा । २ जंगल ।

वीरानी—संज्ञा स्त्री० (फा०) वीरान-का भाव । उजाड़-पन ।

वुज़रा—संज्ञा पुं० (अ०) "वज़ीर"-का बहु० ।

वुज़ू—संज्ञा पुं० दे० "वज़ू ।"

वुजूद—संज्ञा पुं० दे० "वजूद ।"

वुरूद—संज्ञा पुं० (अ०) १ ऊपरसे नीचे आना । २ आना । पहुँचना ।

वुसूल—वि० दे० "वसूल ।"

(श)

शंगरफ़—संज्ञा पुं० दे० "शंजरफ़ ।"

शंजरफ़—संज्ञा पुं० (फा०) (वि० शंजरफ़ी) शिंगरफ । ईंगुर ।

शअबान—संज्ञा पुं० दे० "शाबान ।

शआर—संज्ञा पुं० (अ०) १ रंग-ढंग । तौरतरीक़ा । २ आदत । अभ्यास । जैसे—वफ़ा शआर=वफ़ाकी आदत रखनेवाला । वफ़ादार ।

शऊर—संज्ञा पुं० (अ०) १ काम करनेकी योग्यता । ढंग। २ बुद्धि ।

शऊर-दार—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा शऊर-दारी) जिसे शऊर या अक़्ल हो । दक्ष ।

शक—संज्ञा पुं० (अ०) शंका ।

शकर—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्कर ।"

शकर कंद—संज्ञा पुं० (फा० शकर+ हिं० कंद) एक प्रकारका प्रसिद्ध कंद ।

शकर-ख़ोर—(फा०) १ एक प्रकारका पक्षी । २ वह जो सदा अच्छी चीजें खाता हो ।

शकर-ख़ोरा—दे० "शकर-ख़ोर ।"

शकर-तरी—संज्ञा स्त्री० (फा० शकर) चीनी । शर्करा ।

शकर-पारा—संज्ञा पुं० (फा० शकर +पारः) १ एक प्रकारका फल जो नीबूसे कुछ बड़ा होता है । २ चौकोर कटा हुआ एक प्रकार-का प्रसिद्ध पकवान । ३ शकर-पारेके आकारकी चौकोर सिलाई ।

शकर-रंजी—संज्ञा स्त्री० (फा०) मित्रोंसे होनेवाला मन-मुटाव ।

शकर-लब—वि० (फा०) मीठी बात कहनेवाला । मिष्ट-भाषी ।

शकराना—संज्ञा पुं० (फा० शक्कर) चीनी मिला हुआ भात ।

शकरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारका मीठा फालसा (फल)।

शकल—संज्ञा स्त्री० (अ० शक्ल) १ मुखकी बनावट। आकृति। चेहरा। रूप। २ मुखका भाव। चेष्टा। ३ बनावट। गढ़न। ढाँचा। ४ आकृति। स्वरूप। ५ उपाय। तरकीब। ढब।

शकील—वि० (अ० "शक्ल"से) (स्त्री० शकीला) अच्छी शकल-वाला। सुन्दर।

शकोह—संज्ञा पुं० (फा०) १ महत्त्व। बड़प्पन। २ रोब-दाब। आतंक।

शक़्क़—वि० (अ०) बीचमें फटा हुआ। यौ० **शक़्क-उल्-क़मर**=चाँदका फटकर दो टुकड़े हो जाना। कहते हैं कि मुहम्मद साहबने अपनी करामात दिखाने-के लिए चाँदके दो टुकड़े कर दिये थे।

शक्कर—संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० शर्करा) १ चीनी। २ कच्ची चीनी।

शक्की—वि० (अ०) शक या सन्देह करनेवाला।

शक्ल—संज्ञा स्त्री० दे० "शकल।"

शख़्स—संज्ञा पुं० (अ०) १ मनुष्यका शरीर। बदन। २ व्यक्ति। जन।

शख़्सियत—संज्ञा स्त्री० (अ०) व्यक्तित्व।

शख़्सी—वि० (अ०) शख़्स या व्यक्तिसम्बन्धी। व्यक्तिगत।

शग़ल—संज्ञा पुं० (अ० शग़्ल) १ व्यापार। काम-धंधा। २ मनो-विनोद।

शग़ाल—संज्ञा पुं० (अ० मि० सं० शृगाल) गीदड़। सियार।

शगुन—संज्ञा पुं० दे० "शगून"।

शगुफ़्तगी—संज्ञा स्त्री० (फा० शिगु-फ़्तगी) १ शगुफ़्ता या खिले होनेका भाव। २ प्रफुल्लता।

शगुफ़्ता—वि० (फा० शिगुफ़्तः) १ खिला हुआ। विकसित। २ प्रफुल्लित। प्रसन्न। जैसे—शगुफ़्ता-रू=हँसमुख।

शगून—संज्ञा पुं० (सं० "शकुन" से फा०) १ किसी कामके समय दिखाई पड़नेवाले वे लक्षण जो उस कामके सम्बन्धमें शुभ या अशुभ माने जाते हैं। मुहा०—**शगून लेना**=लक्षणोंसे शुभाशुभ-का विचार करना। २ शुभ मुहूर्त या उसमें होनेवाला कार्य।

शगूनिया—संज्ञा पुं० (फा० शगून) शकुनोंका विचार करनेवाला ज्योतिषी या रम्माल आदि।

शगूफ़ा—संज्ञा पुं० (फा० शिगूफ़ः) १ बिना खिला हुआ फूल। कली। २ पुष्प। फूल। ३ कोई नई और विलक्षण घटना।

शग़्ल—संज्ञा पुं० दे० "शग़ल।"

शजर—संज्ञा पुं० (अ०) वृक्ष।

शजरदार—वि० (फा०) जिसपर बेल-बूटे बने हों; विशेषतः नगीना आदि।

शजरा—संज्ञा पुं० (अ० शजरः) १

वृक्ष या पेड़। २ वंशवृक्ष । ३ पटवारीका खेतोंका नक़शा।

शजरा व कुल्ला—संज्ञा पुं० (फ़ा०) पीरोंका शजरा और टोपी जो भक्तोंको प्रसाद रूपमें दी जाती है।

शतरंज—संज्ञा स्त्री० (अ० मि०सं० चतुरंग) एक प्रकारका प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानोंकी बिसातपर खेला जाता है।

शतरंज-बाज़—वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा शतरंज-बाज़ी) शतरंज खेलनेवाला।

शतरंजी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १ वह दरी जो कई प्रकारके रंग बिरंग सूतोंसे बनी हो। २ शतरंज खेलनेकी बिसात। ३ शतरंजका अच्छा खिलाड़ी।

शत्ताह—वि० (अ०) निर्लज्ज और उद्दण्ड। शोख़।

शदीद—वि० (अ०) १ कठिन। मुश्किल। २ दृढ़। पक्का। ३ कठोर। जैसे—**ज़रब-शदीद**=भारी चोट।

शद्द—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दृढ़ता। मज़बूती। २ सख़्ती। कठोरता। **शद्द व मद्द**=धूम-धाम। ठाट-बाट।

शद्दा—संज्ञा पुं० (अ० शद्दः) १ आक्रमण। चढ़ाई। २ वह झंडा जो मुहर्रममें ताज़ियोंके साथ निकलता है।

शद्दाद—संज्ञा पुं० (अ०) मिस्रका एक काफ़िर बादशाह जो अपने आपको ईश्वर कहता था और जिसने बहिश्त या स्वर्गके जोड़का अरमका बाग़ बनवाया था।

शनाख़्त—सं०स्त्री०(फ़ा०) पहचान।

शनास—वि० (फ़ा० शिनास) पहचाननेवाला। (यौगिक शब्दोंके अन्तमें) जैसे—**मर्दुम-शनास**= मनुष्योंको पहचाननेवाला।

शनीअ—वि० (अ०) १ बुरा। २ दुष्ट।

शनीआ—संज्ञा पुं० (अ० शनीअः) ख़राब काम या बात।

शफ़क़—संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रातःकाल अथवा सन्ध्याके समयकी आकाशकी लाली। मुहा०—**शफ़क़ खिलना या फूलना**=लालिमाका प्रकट होना। वि० बहुत सुंदर।

शफ़क़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) कृपा। दया। मेहरबानी।

शफ़तालू—संज्ञा पुं० दे० "शफ़्तालू।"

शफ़ा—संज्ञा स्त्री० (अ० शिफ़ा) आरोग्य। तन्दुरुस्ती।

शफ़ाअत—संज्ञा स्त्री० (अ० शिफ़ाअत) १ कामना। इच्छा। २ किसीके लिए की जानेवाली सिफ़ारिश।

शफ़ा-ख़ाना—संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) चिकित्सालय। औषधालय।

शफ़ी—वि० (अ० शफ़ीअ) १ शफ़ाअत या सिफ़ारिश करनेवाला। २ बीचमें पड़कर अपराध क्षमा करनेवाला।

शफ़ीक़—वि० (अ०) शफ़क़त या मेहरबानी करनेवाला। दयालु।

शफ़्फ़ा—संज्ञा पुं० दे० "शगूफ़ा।"

शफ़तल—वि० स्त्री० (अ०) दुष्ट। बाहियात। पाजी।
शफ़तालू—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका बड़ा आड़ू। सतालू।
शफ़्फ़ाफ़—वि० (अ०) (भाव० शफ़्फ़ाफ़ी) स्वच्छ। पारदर्शी।
शब—संज्ञा स्त्री० (फा०) रात्रि।
शब-कोर—वि० (फा०) (संज्ञा शब-कोरी) जिसे रातको दिखाई न दे। रतौंधीका रोगी।
शब-खेज़—वि० दे० "शब-बेदार।"
शब-ख़ूँ—संज्ञा पुं० (फा०) रातके समय शत्रुपर छापा मारना।
शब-ख़्वाबी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ रातको सोना। २ रातको सोनेके समय पहननेके वस्त्र।
शब-गीर—संज्ञा पुं० (फा०) १ रातके समय गानेवाला पत्ती। २ बुलबुल। ३ तड़का। प्रभात।
शब-गूँ—वि० (फा०) रातकी तरह अँधेरा या काला।
शब-चिराग—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका लाल (रत्न)। कहते हैं कि रातके समय यह बहुत चमकता है।
शब-दीज़—संज्ञा पुं० (फा०) मुश्की रंगका या काला घोड़ा।
शब-देग—संज्ञा स्त्री० (फा०) वह मांस जो किसी विशिष्ट क्रियाओंसे रात-भर पकाकर तय्यार किया जाता है।
शबनम—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ओस। २ एक प्रकारका बहुत महीन कपड़ा।
शबनमी—संज्ञा स्त्री०(फा०) मसहरी।
शब-बरात—संज्ञा स्त्री० (फा०) मुसलमानोंका एक त्योहार जिसमें आतिशबाजी छोड़ी और मिठाई आदि बाँटी जाती है। कहते हैं कि इस रोज़ रातको देवदूत लोगोंको जीविका और आयु देते हैं।
शब-बाश—वि० (फा०) (संज्ञा शब-बाशी) रातको ठहरकर विश्राम करनेवाला।
शब-बेदार—वि० (फा०) (संज्ञा शब-बेदारी) रातभर जागनेवाला।
शब-रंग—दे० "शबदीज़।"
शबाना—क्रि० वि० (फा० शबानः) रातके समय। यौ०—**शबाना रोज़**=दिन-रात।
शबाब—संज्ञा पुं० (अ०) १ यौवन-काल। युवावस्था। जवानी। २ सौन्दर्य। जोबन। ३ आरम्भ।
शबाहत—संज्ञा स्त्री० (अ०) आकृति। सूरत। शक्ल। यौ०—**शक्ल व शबाहत**
शबिस्ताँ—संज्ञा पुं० (फा०) १ रातको रहनेका स्थान। २ शयनागार।
शबीना—वि० (फा० शबीनः) १ रातका। रातसम्बन्धी। २ रातका बचा हुआ। बासी। संज्ञा पुं० वह काम जो रातभर कराया जाय।
शबीह—संज्ञा स्त्री० (अ०) तसवीर।
शबे-क़द्र—संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) रमज़ान महीनेकी २७ वीं तारीखकी रात। कहते हैं कि इस रोज़ आस्मानकी खिड़की खुलती है

और अल्लाह मियाँ आकर देखते हैं कि कौन कौन लोग मेरी उपासना करते हैं।

शबे-ज़फ़ाफ़–संज्ञा स्त्री० (फा०) वर और वधूके प्रथम मिलनकी रात। सुहाग-रात।

शबे तरा–संज्ञा स्त्री० (फा०) अँधेरी रात।

शबे-तारीक–दे० "शबे-तार।"

शबे-माह–संज्ञा स्त्री० (फा०) चाँदनी रात।

शबे-माहताब–संज्ञा स्त्री० दे० "शबे माह।"

शबे-यल्दार–संज्ञा० स्त्री० (फा०) अँधेरी और मनहूस रात।

शब्बीर–वि० (फा० या सुरयानी) १ भला नेक। २ सुन्दर।

शब्बो–संज्ञा स्त्री० (फा०) रजनी-गंधा नामक पौधा या उसका फूल। गुल शब्बो।

शमला–संज्ञा पुं० (अ० शम्लः) १ पगड़ी या दुपट्टेका कामदार पल्ला। २ एक प्रकारकी पगड़ी।

शमशाद–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका वृत्त जिससे प्रेमिका या माशूक़के क़दकी उपमा दी जाती है।

शमशेर–संज्ञा स्त्री० (फा०) तल-वार। खाँड़ा।

शमस–संज्ञा पुं० दे० "शम्स।"

शमा–संज्ञा स्त्री० (अ०शमऽ) १ मोम। २ मोमबत्ती।

शमादान–संज्ञा पुं० (फा०) वह आधार जिसमें मोमबत्ती लगाकर जलाते हैं।

शमायल–संज्ञा पुं० (अ० "शमाल"-का बहु०) आदतें।

शमा-रू–वि० (अ०+फा०) जिसका चेहरा शमाकी तरह प्रकाशमान हो।

शमीम–संज्ञा स्त्री० (अ०) सुगंध।

शम्बा–संज्ञा पु० (फा० शम्बः) शनिवार।

शम्मा–संज्ञा पुं० (अ० शम्मः) थोड़ी या हलकी सुगन्ध। वि० बहुत थोड़ा। तनिक।

शम्मास–संज्ञा पुं० (अ०) शम्स या सूर्यका उपासक। सूर्योपासक।

शम्स–संज्ञा पुं० (अ०) सूर्य।

शम्सा–संज्ञा पुं० (अ० शम्सः) कलाबत्तू आदिका वह फुँदना जो माला या तसबीहमें बीच बीचमें लगा रहता है।

शम्सी–वि० (अ०) शम्स या सूर्य-सम्बन्धी। सौर।

शयातीन–संज्ञा पुं० (अ०)"शैतान" का बहु०।

शर–संज्ञा पुं० स्त्री० (अ०) शरारत।

शरअ–संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० शरई) १ कुरानमें दी हुई आज्ञा। २ दीन। मजहब। ३ दस्तूर। तौर-तरीक़ा। ४ मुसलमानोंका धर्मशास्त्र।

शरअन्–क्रि० वि० (अ०) शरअ या इस्लामके क़ानूनोंके अनुसार।

शरअ-मुहम्मदी–संज्ञा स्त्री० (अ०) इस्लामका नियम या कानून।

शरई–वि० (अ०) जो शरअ या इस्लामके कानूनके अनुसार हो। जैसे–**शरई दाढ़ी**=खूब लम्बी दाढ़ी। **शरई पाजामा**–टखनों-तकका पाजामा।

शरक़ी–वि० दे० "शर्क़ी।"

शरत–संज्ञा स्त्री० दे० "शर्त्त।"

शरफ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ बड़प्पन। महत्त्व। बुजुर्गी। २ उत्तमता। खूबी। मुहा०–**शरफ़ ले जाना**=गुण आदिमें किसीसे बढ़ जाना। ३ सौभाग्य। जैसे–मैं आपकी खिदमतका शरफ़ हासिल करना चाहता हूँ।

शरफ़-याब–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा शरफ़-याबी) १ प्रतिष्ठित। मान्य। २ शरफ़ (बड़प्पन या सौभाग्य) प्राप्त करनेवाला।

शरबत–संज्ञा पुं० (अ०) १ पीनेकी मीठी वस्तु। रस। २ चीनी आदिमें पका हुआ किसी ओषधका अर्क। ३ वह पानी जिसमें शक्कर या खाँड़ घुली हुई हो।

शरबती–वि० (अ० शरबत) १ शरबतके रंगका हलका पीला। २ रसदार। रसभरा। संज्ञा पुं० (अ० शरबत) १ एक प्रकारका हलका पीला रंग। २ एक प्रकारका नीबू। ३ मलमलकी तरहका एक प्रकारका बढ़िया कपड़ा।

शरम–संज्ञा स्त्री० (फा० शर्म) १ लज्जा। हया। मुहा०–**शरमसे गड़ना या पानी पानी होना**=बहुत लज्जित होना। २ लिहाज़। संकोच। ३ प्रतिष्ठा।

शरम-गाह–संज्ञा स्त्री० (फा० शर्म+गाह) स्त्रीकी जननेन्द्रिय। योनि।

शरमनाक–वि० (फा० शर्मनाक) १ लज्जाशील। २ लज्जाजनक।

शरम-सार–वि० (फा० शर्मसार) (संज्ञा शरम-सारी) १ लज्जाशील। २ लज्जित। शरमिन्दा।

शरम-हुज़ूरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) किसीके सामने रहनेपर उत्पन्न होनेवाली लज्जा। मुँह-देखेकी लाज या शरम।

शरमाऊ–वि० दे० "शरमीला।"

शरमाना–क्रि० वि० (फा० शर्म) शर्मिन्दा होना। लज्जित होना। क्रि० स० शर्मिन्दा करना। लज्जित करना।

शरमालू–वि० दे० "शरमीला।"

शरमा-शरमी–क्रि० वि०(फा० शर्म) मारे शर्मके। लज्जावश।

शरमिन्दगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) शरमिन्दा होनेका भाव। नदामत।

शरमिन्दा–वि० (फा०) लज्जित।

शरमीला–वि० (फा० शर्म+हिं० प्रत्य० ईला) (स्त्री० शरमीली) जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे। लज्जालु। लज्जा-शील।

शरर–संज्ञा पुं० (अ०) आगकी चिनगारी।

शरह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ टीका। भाष्य। व्याख्या। २ दर। भाव।

शरह-बन्दी–संज्ञा स्त्री० (अ० शरह

+फा० बन्दी) दर या भावकी सूची।

शराकत–संज्ञा स्त्री० (अ० शिरकत) १ शरीक होनेका भाव। २ साझा। हिस्सेदारी।

शराकत-नामा–संज्ञा पुं० (अ० शिरकत+फा० नामः) वह पत्र जिसपर शराकत या साझेकी शर्तें लिखी रहती हैं।

शराफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) शरीफ़ होनेका भाव। सज्जनता।

शराब–संज्ञा स्त्री० (अ०) मदिरा।

शराब-ख़ाना–संज्ञा पुं०(अ०+फा०) वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

शराब-ख़्वार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा शराब-ख़्वारी) शराब पीनेवाला।

शराबी–संज्ञा पुं० (अ० शराब) वह जो शराब पीता हो। मद्यप।

शराबे-तहूर–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह पवित्र शराब जो मरनेपर लोगोंको बहिश्तमें मिलेगी (मुसल०)।

शराबोर–वि० (देश०) जल आदिमें बिल्कुल भींगा हुआ। लथ-पथ। तर-बतर।

शरायत–संज्ञा स्त्री०(अ०) "शर्त्त"-का बहु०।

शरार–संज्ञा पुं० (अ०) अग्नि-कण। चिनगारी।

शरारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) पाजी-पन। दुष्टता।

शरारतन्–क्रि० वि० (अ०) शरा-रत या पाजीपनसे।

शरारा–संज्ञा पुं० (अ० शरारः) चिनगारी। स्फुलिंग।

शरीअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ स्पष्ट और शुद्ध मार्ग। २ मनुष्योंके लिये बनाये हुए ईश्वरीय नियम। ३ मुसलमानोंका धर्मशास्त्र।

शरीक–वि० (अ०) शामिल। सम्मिलित। मिला हुआ। संज्ञा पुं० १ साथी। २ साझी। हिस्से-दार। ३ सहायक।

शरीफ़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० शुरफ़ा) १ कुलीन मनुष्य। २ सभ्य पुरुष। भला मानुस।

शरीयत–दे० "शरीअत।"

शरीर–वि० (अ०) (संज्ञा शरारत) दुष्ट। पाजी। नटखट।

शर्क़–संज्ञा पुं० (अ०) १ सूर्योदय। २ पूरब। पूर्व दिशा। मुहा०–**शर्क़से ग़र्बतक**=पूरबसे पच्छिमतक।

शर्क़ी–वि० (अ०) पूरबका। पूरबी।

शर्त्त–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० शरायत) १ वह बाज़ी जिसमें हार-जीतके अनुसार कुछ लेन-देन भी हो। दाँव। बदान। २ किसी कार्य्यकी सिद्धिके लिये आवश्यक या अपेक्षित बात या कार्य्य। यौ०–**बशर्त्ते कि**=शर्त यह है कि।

शर्त्तिया–क्रि० वि० (अ० शर्तियः) शर्त्त बदकर। बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक। वि० बिल्कुल ठीक।

शर्त्ती–वि० (अ० शर्त्त) जिसमें कोई शर्त्त हो। शर्त्तसम्बन्धी।

शर्फ़–संज्ञा पुं० दे० "शरफ़।"

शर्म–संज्ञा स्त्री० देखो० "शरम।"

शर्म-गाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) योनि।

शर्मसार—वि० (फा०) (संज्ञा शर्म-सारी) १ लज्जाशील। २ लज्जित। शरमिन्दा।

शलग़म—संज्ञा पुं० दे० "शलजम।"

शलजम—संज्ञा पुं० (फा०) गाजरकी तरहका एक कंद।

शलवार—संज्ञा पुं० (फा०) १ पाय-जामेके नीचे पहननेकी जाँघिया। २ एक प्रकारका पेशावरी पायजामा।

शलीता—संज्ञा पुं० (देश०) १ टाटका वह बड़ा थैला जिसमें खेमा आदि तह करके रखा जाता है। २ एक प्रकारका मोटा कपड़ा।

शलूका—संज्ञा पुं० (फा० शलूकः) आधी बाँहकी एक प्रकारकी कुरती।

शल्ल—वि० (अ०) शिथिल या सुन्न (हाथ-पैर आदि)।

शल्लक—संज्ञा स्त्री० (तु०) १ बन्दूकों या तोपोंकी बाढ़। मुहा०—**शल्लक उड़ाना**=गप्प हाँकना।

शव्वाल—संज्ञा पुं० (अ०) अरबी वर्षका दसवाँ महीना।

शश—वि० (फा० मि० सं० षष्ठ) छः। जैसे—**शश-पहलू** = छः पहलुओंवाला। षट्कोण। यौ०—शशो-पंज दे० "शश व पंज।"

शश-जहत—संज्ञा स्त्री० (फा०+अ०) १ उत्तर, दक्खिन, पूरब, पच्छिम ऊपर और नीचेकी छः दिशाएँ। २ सारा संसार।

शश-दर—संज्ञा पुं० (फा०) १ उत्तर दक्खिन, पूरब, पश्चिम, ऊपर और नीचेकी छः दिशाएँ। २ वह मकान जिसमें छः दरवाजे हों। ३ वह स्थान जहाँसे निकलना कठिन हो। ४ जूआ खेलनेका पासा। वि० चकित। हक्का-बक्का।

शश-दाँग—वि० (फा०) कुल। समस्त पूरा।

शश-माही—वि० (फा०) छमाही।

शश-व-पंज—संज्ञा पुं० (फा०) १ जूआ खेलनेका पासा। २ जूआ। ३ सोच-विचार। असमंजस।

शस्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अंगुष्ठ। अँगूठा। २ वह हड्डी या बालोंका छल्ला जो तीर चलानेवाले अपने अँगूठेमें रखते हैं। ३ मछली पकड़नेका काँटा। ४ सितार आदि बजानेकी मिज़राब। ५ दूरबीनकी तरहका वह यंत्र जिससे ज़मीन-की पैमाइशमें सीध देखते हैं। ६ वह चीज़ जिसपर निशाना लगाया जाय। निशाना। लक्ष्य।

शह—संज्ञा पुं०। (फा० "शाह"का संक्षिप्त रूप) १ बादशाह। २ वर। दूल्हा। संज्ञा स्त्री० १ शतरंजके खेलमें कोई मुहरा किसी ऐसे स्थानपर रखना जहाँसे बादशाह उसकी घातमें पड़ता हो। किश्त। २ गुप्त रूपसे किसीको भड़काने या उभारनेकी क्रिया या भाव। वि० चढ़ा बढ़ा। श्रेष्ठतर।

शह-ज़ादा—दे० "शाहज़ादा।"

शहज़ोर—वि० (फा०) बलवान्।

शहतीर–संज्ञा पुं० (फा०) लकड़ीका बहुत बड़ा और लम्बा लट्ठा।

शहतूत–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारका वृक्ष जिसमें फलियोंकी तरहके मीठे फल लगते हैं। २ इस वृक्षका फल।

शहद–संज्ञा पुं० (अ०) शीरेकी तरहका एक प्रसिद्ध मीठा, तरल पदार्थ, जो मधु-मक्खियाँ फूलोंके मकरन्दसे संग्रह करके अपने छत्तोंमें रखती हैं। मुहा०–**शहद लगाकर चाटना**=किसी निरर्थक पदार्थको व्यर्थ लिये रखना (व्यंग्य)।

शहना–संज्ञा पुं० (अ० शिहनः) १ शासक। २ कोतवाल। ३ चौकीदार। ४ कर-संग्रह करने-वाला चपरासी।

शहनशाह–संज्ञा पुं० दे० "शाह-न्शाह।"

शहनाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नफीरी बाजा। २ "रौशन-चौकी।"

शहबाज़–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका बड़ा बाज (पक्षी)।

शह-बाला–संज्ञा पुं० (फा० शाह + बाला) वह छोटा बालक जो विवाहके समय दूल्हेके साथ जाता है।

शहम–संज्ञा स्त्री०(अ०) १ चरबी। २ मोटाई। स्थूलता। ३ फलका गूदा। मगज।

शह-मात–संज्ञा स्त्री० (फा०) शतरंजके खेलमें एक प्रकारकी मात।

शहर–संज्ञा पुं० (फा०) मनुष्योंकी बड़ी बस्ती। नगर। पुर।

शहर-पनाह–संज्ञा स्त्री० (फा०) शहरकी चार-दीवारी। नगर-कोट।

शहरयार–संज्ञा पुं० (फा०) १ अपने समयका बहुत बड़ा बाद-शाह। २ नगरवासियोंकी सहा-यता और रक्षा करनेवाला।

शहरियत–संज्ञा स्त्री० (फा० शहर) नागरिकता। शहरीपन।

शहरी–वि०(फा०) १ शहरसम्बन्धी। शहरका। २ शहरमें रहनेवाला।

शहरे-खामोशाँ–संज्ञा पुं० (फा०=मौन रहनेवालोंकी बस्ती) कब्रि-स्तान।

शहला–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह स्त्री जिसकी आँखें भेड़की तरह काली या भूरी हों। २ एक प्रकारकी नरगिस जिसके फूलसे आँखोंकी उपमा दी जाती है।

शहवत–संज्ञा स्त्री० (अ०) संभोग या प्रसंगकी इच्छा। काम-वासना।

शहवत-अंगेज़–वि०(अ० +फा०) काम-वासना बढ़ानेवाला।

शहवत-परस्त–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा शहवत-परस्ती) कामुक।

शहादत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गवाही। २ प्रमाण। ३ शहीद होना।

शहाना–संज्ञा पुं० (फा० शाहानः) एक जातिका राग। वि० (फा०)

१ शाही। राजसी। २ बहुत बढ़िया। उत्तम।

शहाब–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका गहरा लाल रंग।

शहामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बड़प्पन। महत्त्व। २ वीरता।

शहीद–वि० (अ०) १ ईश्वर या धर्मके लिए प्राण देनेवाला। २ निहत। मारा गया।

शाइस्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शिष्टता। सभ्यता। २ भलमनसी।

शाइस्ता–वि० (फा० शाइस्तः) १ शिष्ट। सभ्य। तहज़ीबवाला। २ विनीत। नम्र।

शाक़–वि० (अ०) १ मुश्किल। कठिन। २ असह्य। दूभर। ३ दुःखी या अप्रसन्न करनेवाला। अप्रिय। क्रि० प्र०-गुजरना। होना।

शाकिर–वि० (अ०) शुक्र करने या धन्यवाद देनेवाला। उपकार माननेवाला।

शाकी–वि० (अ०) १ शिकायत करनेवाला। अपना दुःख सुनानेवाला। २ चुगली खानेवाला। चुगल-ख़ोर।

शाकूल–संज्ञा पुं० (फा०) मेमारोंका साहुल नामक औज़ार जिससे दीवारकी सीध नापी जाती है।

शाक़्क़ा–वि० (अ० शाक़्क़ः) कठिन। मुश्किल। कठोर। जैसे—मेहनत शाक़्क़ा।

शाख़–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० शाखा) १ टहनी। डाल। शाखा। मुहा०—**शाख़ निकालना**=दोष या ऐब निकालना। २ कटा हुआ टुकड़ा। खंड। फाँक। ३ किसी मूल वस्तुसे निकले हुए उसके भेद। प्रकार। ४ सहायक नदी। शाखा। ५ सींग। शृंग। ६ हाथ पैर आदि अंग। ७ विलक्षण या अनोखी बात। ८ एक प्रकारका पकवान। सुहाल। ९ सन्तान।

शाख़चा–संज्ञा पुं० (फा० शाख़चः) छोटी शाखा। टहनी।

शाख़-साना–संज्ञा पुं० (फा० शाख़+शानः) १ लड़ाई। हुज्जत। २ कलंक। ३ अभियोग। ४ सन्देह। शक। ५ ढकोसला। छलनेकी बातें।

शाख़सार–संज्ञा पुं० (फा०) १ वाटिका। २ शाखा। डाल।

शाख़े-आहू–दे० "शाख़े ग़ज़ाल।"

शाख़े-ग़ज़ाल–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ हिरनका सींग। २ धनुष। कमान। ३ द्वितीयाका चन्द्रमा।

शाख़े-ज़ाफ़रान–वि० (फा०+अ०) विलक्षण। अद्भुत। अनोखा।

शागिर्द–संज्ञा पुं० (फा०) १ सेवक। टहलुआ। २ शिष्य। चेला।

शागिर्द-पेशा–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) १ दफ़्तरमें काम करनेवाला। अहलकार। २ राजाओं आदिके आगे चलनेवाले नौकर-चाकरोंके रहनेका स्थान।

शागिर्दी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शिष्यता। चेलापन। २ सेवा।

शाग़िल–वि० (अ०) १ जो किसी शगल या काममें लगा हो। २ सदा ईश्वर-चिन्तन करनेवाला।

शाज़– वि० (अ०) १ अकेला। एकाकी। २ अनुपम। बेजोड़। ३ नियम-विरुद्ध। ४ असाधारण। अनोखा। क्रि० वि० कभी कभी।

शाज़-व-नादिर–क्रि० वि० (अ०) कभी कभी।

शातिर–संज्ञा पुं० (अ०) १ धूर्त। चालाक। २ पत्र-वाहक। दूत। ३ शतरंजका खिलाड़ी।

शाद–वि० (फा०) १ प्रसन्न। सुखी। २ भरा हुआ। पूर्ण।

शाद-बाश=अव्य० (फा०) १ प्रसन्न रहो। २ शाबाश।

शादमान–वि० (फा०) प्रसन्न।

शादान–वि० (फा० "शादमान" का संक्षिप्त रूप) १ उपयुक्त। योग्य। मुनासिब। २ वाजिब। ३ उत्तम।

शादाब–वि० (फा०) (संज्ञा शादाबी) हरा-भरा।

शादियाना–संज्ञा पुं० (फा० शादियानः) १ प्रसन्नताके समय बजनेवाले बाजे। मंगल वाद्य। २ बधाई। मुबारकबादी। ३ वह उपहार जो जमींदारके घर शादी-ब्याह होनेके समय किसान लोग देते हैं।

शादी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ खुशी। २ आनन्दोत्सव। ३ विवाह।

शादी-मर्ग–वि० (फा० शादी+मर्ग) जो मारे आनन्दके मर गया हो। संज्ञा स्त्री० ऐसी मृत्यु जो आनन्द-के आधिक्यके कारण हो।

शान–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ तड़क-भड़क। ठाट-बाट। सजावट। २ गर्वीली चेष्टा। ठसक। ३ भव्यता। विशालता। ४ शक्ति। करामात। विभूति। ५ प्रतिष्ठा। इज़्ज़त। मुहा०–**किसीकी शानमें**=किसी बड़ेके सम्बन्धमें।

शानदार–वि० (अ०+फा०) जिसमें शान या शोभा हो। शानवाला।

शान-शौकत–संज्ञा स्त्री० (अ०) तड़क-भड़क। ठाठ-बाट। सजावट।

शाना–संज्ञा पुं० (फा० शानः) १ कंघी। कंघा। २ कन्धा। भुज-मूल। मुहा०– **शानेसे शाना छिलना**=इतनी भीड़ होना कि कन्धेसे कन्धा छिले।

शाना-बीं–वि० (फा०) फ़ाल देखने या शकुन बतलानेवाला।

शाफ़ई–संज्ञा पुं० (अ०) सुन्नी सम्प्रदायके चार इमामोंमेंसे एक।

शाफ़ा–संज्ञा पुं० (अ० शाफ़ः) दवाकी वह बत्ती जो ज़ख्म या गुदा आदिमें रखी जाती है।

शाफ़ी–वि० (अ०) १ शफ़ा या नीरोग करनेवाला। २ सीधा। साफ़। पूरा। (उत्तर आदि)।

शाब–संज्ञा पुं० (अ०) २४ से ४० वर्ष तककी अवस्थाका पुरुष।

शाबान–संज्ञा पुं० (अ० शअबान) अरबी आठवाँ चांद्र मास जो रजबके बाद पड़ता है।

शाबाश–अव्य० (फा०) (संज्ञा शाबाशी) एक प्रशंसासूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह।

शाबाशी–संज्ञा पुं० (फा० शाबाश)

प्रशंसा। वाह-वाही। क्रि० प्र० देना। मिलना।

शाम–संज्ञा स्त्री० (फा०) सूर्यास्तका समय। सन्ध्या। मुहा०– **शाम फूलना**=सन्ध्याकी लाली प्रकट होना। २ अंतिम समय। संज्ञा पुं० अरबके उत्तरके एक प्रदेशका नाम।

शामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दुर्भाग्य। २ विपत्ति। आफ़त। ३ दुर्दशा। दुरवस्था। मुहा०– **शामतका घेरा या मारा**=दुर्दशाका समय आया हुआ हो। **शामत सवार होना या सिरपर खेलना**=दुर्दशाका समय आना।

शामत-ज़दा–वि० (अ०+फा०) शामतका मारा। विपत्तिग्रस्त।

शामती–वि० दे० "शामत-ज़दा।"

शामत-ऐमाल–संज्ञा स्त्री० (अ०) किये हुए कुकृत्योंका फल।

शामियाना–संज्ञा पुं० (फा० शाम) एक प्रकारका बड़ा तम्बू।

शामिल–वि० (अ०) जो साथमें हो। मिला हुआ। सम्मिलित।

शामिल-हाल–वि० (अ०) सब अवस्थामें साथ रहनेवाला। क्रि० वि० मिलकर एक साथ।

शामिलात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ "शामिल" का बहु०। २ हिस्सेदारी। साझा।

शामी–वि० (अ०) १ शाम देश-सम्बन्धी। जैसे–शामी कबाब। संज्ञा पुं० शाम देशका निवासी। संज्ञा स्त्री० शाम देशकी भाषा।

शामे-ग़रीबाँ–संज्ञा स्त्री० (फा०) यात्रियोंकी सन्ध्या जो प्रायः निर्जन निर्जल और भीषण स्थानोंमें पड़ती है।

शामे-ग़रीबी–संज्ञा स्त्री० दे० शामे-ग़रीबाँ।"

शाम्मा–संज्ञा पुं० (अ० शाम्मः) सूँघनेकी शक्ति। घ्राण-शक्ति।

शायक़–वि० (अ०) (बहु० शायक़ीन) इश्तियाक़ या शौक़ रखनेवाला। शौक़ीन। प्रेमी।

शायद–क्रि० वि० (फा०) कदाचित्। संभव है।

शायर–संज्ञा पुं० (अ० शाइर) वह जो शेर या उर्दू फ़ारसीकी कविता लिखता हो। कवि।

शायरा–संज्ञा स्त्री० (अ० शायर) स्त्री-कवि। कवयित्री।

शायरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) कविताएँ तैय्यार करना। काव्य-रचना।

शायाँ–वि० (फा०) उपयुक्त। अभीष्ट।

शाया–वि० (अ०) शाइऽ) १ प्रकट। जाहिर। प्रसिद्ध किया हुआ। २ छपा हुआ। प्रकाशित।

शारअ–संज्ञा पुं० (व० शारिअ) १ बड़ी सड़क। राजमार्ग। यौ०– **शारअ आम** = आम सड़क। २ लोगोंको धर्मका मार्ग बतलानेवाला। धर्मज्ञ।

शारक–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० सारिका) मैना (पक्षी)।

शारह—संज्ञा पुं० (अ० शारिह) शरह या टीका लिखनेवाला।
शारिक़—संज्ञा पुं० (अ०) सूर्य।
शाल—संज्ञा स्त्री० (फा०) बढ़िया ऊनी चादर। दुशाला।
शाल-दोज़—वि० (फा०) (संज्ञा शालदोज़ी) शाल या दुशालेपर बेल-बूटे बनानेवाला।
शाल-बाफ़—वि० (फा०) संज्ञा शाल-बाफ़ी) शाल या दुशाले बनानेवाला। संज्ञा पुं० एक प्रकारका लाल रेशमी कपड़ा।
शाली—वि० (फा०) शालका जैसे—शाली रूमाल।
शाशा—संज्ञा पुं० (फा० शाशः) पेशाब। मूत्र।
शाह—संज्ञा पुं० (फा०) १ मूल। जड़। २ स्वामी। मालिक। ३ बादशाह। ४ मुसलमान फकीरोंकी उपाधि। ५ दूल्हा। वर। वि० बड़ा। महान्।
शाहज़ादा—संज्ञापुं०(फा०शाहज़ादः) (स्त्री० शाहज़ादी) बादशाहका लड़का। महाराज-कुमार।
शाहतरा—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका साग जो दवाके काममें आता है।
शाह-दरिया-संज्ञा पुं० (फा०) स्त्रियोंका एक कल्पित भूत या प्रेत।
शाह-नामा—संज्ञा पुं० (फा०) १ राजाओंका इतिहास। २ एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ जिसमें फारसके बादशाहोंका इतिहास है।

शाहन्शाह—संज्ञा पुं० (फा०) बादशाहोंका बादशाह। सम्राट्।
शाहन्शाही—संज्ञा स्त्री० (फा०) शाहन्शाहका पद, भाव या कार्य।
शाह-बरहना—संज्ञा पुं० (फा०) स्त्रियोंका एक कल्पित भूत।
शाह-बलूत—संज्ञा पुं० (फा०+अ०) माजूफलकी तरहका एक बड़ा वृक्ष। सीता सुपारी।
शाह-बाज़—संज्ञा पुं० (फा०) बड़ा बाज (पक्षी)।
शाह-बाला—दे० "शहबाला।"
शाह-राह—संज्ञा स्त्री० (फा०) राजमार्ग। बड़ी सड़क।
शाहवार—वि० (फा०) बादशाहों या राजाओंके योग्य।
शाहाना—वि० (फा० शाहानः) १ बादशाही। राजकीय। २ राजाओंके योग्य। ३ बहुत बढ़िया। संज्ञा पुं० १ वे कपड़े जो वरको विवाहके समय पहनाते हैं। २ एक प्रकारका राग।
शाहिद—संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० शाहिदान) साक्षी। गवाह। वि० (फा०) बहुत सुन्दर।
शाहिद-बाज़—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा शाहिद-बाज़ी) सौन्दर्यका प्रेमी या उपासक।
शाहिदी—संज्ञा स्त्री० (अ०) शहादत। गवाही।
शाही—वि० (फा०) बादशाहोंका-सा। शाहसम्बन्धी। संज्ञा स्त्री० शासन। राज्य। जैसे—निज़ामशाही, सिक्ख-शाही।

शाहीन–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारका शिकारी पक्षी । सफ़ेद बाज़ । २ तराजूका काँटा ।

शिंगरफ़–संज्ञा पुं० (फा०) ईंगुर ।

शिश्रार–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह कपड़ा जो अन्दर या नीचे पहना जाता है । २ पोषाक । कपड़ा । वस्त्र । ३ दे० "शआर ।"

शिकंजा–संज्ञा पुं० (फा० शिकंजः) १ दबाने, कसने या निचोड़नेका यन्त्र । २ एक यन्त्र जिससे जिल्द बन्द किताबें दबाते और उसके पन्ने काटते हैं । ३ अपराधियोंको कठोर दंड देनेके लिये एक प्राचीन यन्त्र जिसमें उनकी टाँगें कस दी जाती थीं । मुहा०–**शिकंजेमें खिंचवाना**=घोर यंत्रणा दिलाना । भीषण करना ।

शिक़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आधा भाग । २ ओर । तरफ़ ।

शिकन–संज्ञा स्त्री० (फा०) सिकुड़नेसे पड़ी हुई धारी । सिलवट । बल । वि० तोड़नेवाला । जैसे–अहद-शिकन ।

शिकनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) तोड़ने या भंग करनेकी क्रिया ।

शिकम–संज्ञा पुं० (फा०) पेट ।

शिकम-परवर–वि० (फा०) संज्ञा (शिकम-परवरी) स्वार्थी । पेटू ।

शिकम-बन्दा–वि० दे० "शिकम-परवर ।"

शिकम-सेर–वि० (फा०) जिसका पेट अच्छी तरह भर गया हो ।

शिकमी–वि० (फा०) १ शिकम या पेटसम्बन्धी । २ जन्मसंबंधी । पैदाइशी । ३ भीतरी । अंतर्गत ।

शिकमी-काश्तकार–संज्ञा पुं०(फा०) वह काश्तकार जिसे दूसरे काश्तकारसे जोतनेके लिए खेत मिला हो ।

शिकरा–संज्ञा पुं० (फा० शिकरः) एक प्रकारका बाज़ पक्षी ।

शिकवा–संज्ञा पुं० (फा० शिकवः) शिकायत । गिला ।

शिकवा-गुज़ार–वि० (फा०) (संज्ञा शिकवा-गुज़ारी) शिकवा या शिकायत करनेवाला ।

शिकस्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ पराजय । हार । यौ०–**शिकस्त-फ़ाश**=बहुत बड़ी या गहरी हार । २ टूटने फूटनेकी क्रिया या भाव ।

शिकस्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) टूटनेकी क्रिया या भाव ।

शिकस्ता–वि० (फा० शिकस्तः) १ टूटा-फूटा । जैसे–**शिकस्ता-हाल** =दुर्दशा-ग्रस्त । २ घसीट (लिखावट) ।

शिकायत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० शिकायती) १ बुराई करना । गिला । चुगली । २ उपालंभ । उलाहना । ३ रोग । बीमारी ।

शिकार–संज्ञा पुं० (फा०) १ जंगली पशुओंको मारनेका कार्य या क्रीड़ा । आखेट । मृगया । २ वह जानवर जो मारा गया हो । ३ गोश्त । मांस । ४ आहार । भक्ष्य । ५ कोई ऐसा आदमी जिसके फँसनेसे बहुत लाभ हो । असामी ।

मुहा०—**शिकार खेलना**=शिकार करना। **किसीका शिकार होना**=१ किसीके द्वारा मारा जाना। २ वशमें आना। फँसना।

शिकार-गाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) शिकार खेलनेका स्थान।

शिकार-बन्द—संज्ञा पुं० (फा०) वह तस्मा जो घोड़ेकी पीठपर पीछेकी ओर इसलिए बँधा रहता है कि उसमें शिकार किया हुआ जानवर या इसी तरहकी और कोई चीज लटकाई जा सके।

शिकारी—संज्ञा पुं० (फा०) १ शिकार करनेवाला। २ शिकारमें काम आनेवाला।

शिकेब—संज्ञा पुं० (फा०) धैर्य। [illegible]।

शिकेबा—वि० (फा०) सहनशील।

शिकेबाई-संज्ञा स्त्री० दे० "शिकेब।"

शिकोह—संज्ञा पुं० दे० "शकोह।"

शिगाफ़—संज्ञा पुं० (फा०) १ चीरा। नश्तर। २ दरार। दर्ज। ३ छेद।

शिगाल-संज्ञा पुं० (फा० मि० सं०) गीदड़। सियार।

शिगुफ़्ता—वि० दे० "शगुफ़्ता।"

शिगूफ़ा—संज्ञा पुं० दे० "शगूफ़ा।"

शिताब-क्रि० वि० (फा०) जल्दी।

शिताब-कार—वि० (फा०) (संज्ञा शिताब-कारी) १ जल्दी काम करनेवाला। २ जल्दबाज।

शिताबी—संज्ञा स्त्री०(फा०) शीघ्रता।

शिद्दत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ तेजी। कठोरता। २ सख़्ती। उग्रता। ३ अधिकता। ४ बलप्रयोग।

शिनाख़्त-संज्ञा स्त्री० दे० "शनाख़्त।"

शिनास-वि० फा०) (संज्ञा शिनासी) पहचाननेवाला। जैसे—हक़-शिनास।

शिनासा—वि० (फा०) पहचाननेवाला।

शिनासाई-संज्ञा स्त्री० (फा०) पहचान। परिचय।

शिफ़ा—संज्ञा स्त्री० दे० "शफ़ा।"

शिफ़ाअत—दे० "शफ़ाअत।"

शिमाल—दे० "शुमाल।"

शिरकत—संज्ञा स्त्री०(अ०)१ साझा। शराकत। २ सहयोग।

शिरयान—संज्ञा स्त्री० (अ० मि० सं० शिरा) छोटी नस। नाड़ी। रग।

शिराकत-संज्ञा स्त्री० "शराकत।"

शिर्क—संज्ञा पुं० (अ०) किसी और (देवी-देवताओं) को भी ईश्वरके साथ सृष्टि आदिका कर्त्ता मानना जो इस्लामकी दृष्टिसे कुफ़्र (अधर्म) है।

शिलंग—संज्ञा पुं० (फा०) १ डग। कदम। २ उछलने या कूदनेकी क्रिया या भाव। छलाँग। क्रि० प्र० भरना। मारना।

शिलांग-संज्ञा पुं (देश०) दूर-दूरपर की जानेवाली मोटी सिलाई।

शिस्त-संज्ञा स्त्री० दे० "शस्त।"

शिहना—संज्ञा पुं० दे० "शहना।"

शिहाब—संज्ञा पुं० (अ०) १ आगकी लपट। २ आकाशसे टूटनेवाला तारा।

शीआ-संज्ञा पुं० (अ० शीअः) १ सहायक। मददगार। २ वह दल

जिसने हज़रत अली और उनके वंशजोंका बराबर साथ दिया था। २ इस दलके अनुयायी जिनका मुसलमानोंमें एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय है। राफ़िज़ी।

शीन–संज्ञा पुं० (अ०) अरबी वर्ण-मालाका तेरहवाँ अक्षर और उर्दू लिपिका अठारहवाँ अक्षर। मुहा०–**शीन-क़ाफ़ दुरुस्त होना**=बोलनेमें फारसी, अरबी आदिके शब्दोंका उच्चारण ठीक होना।

शीर–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० क्षीर) दूध। दुग्ध।

शीर-ख़िश्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी दस्तावर दवा जो वृक्षों और पत्थरोंपर दूधकी तरह जमी हुई मिलती है।

शीर-गर्म–वि० (फा०) साधारण गरम। कुनकुना।

शीरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "शीरीनी"

शीर-बिरंज–संज्ञा स्त्री० (फा०) दूधमें पके हुए चावल। खीर।

शीर-माल–संज्ञा स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी मैदेकी खमीरी रोटी।

शीर-व-शकर–वि० (फा०) दूध और चीनीकी तरह आपसमें बहुत मिले हुए।

शीरा–संज्ञा पुं० (फा० शीरः) १ रक्तकी छोटी नाड़ी। २ पानीका सोता या धारा। ३ चीनी आदिको पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी।

शीराज़–संज्ञा पुं० (फा०) फारसका एक प्रसिद्ध नगर।

शीराज़ा–संज्ञा पुं० (फा० शीराज़ः) १ पुस्तकोंकी सिलाईमें वह डोरा या फ़ीता जो जिल्दके पुट्ठोंसे सटाया रहता है। २ व्यवस्था।

शीराज़ी–वि० (फा०) शीराज़ नगरका। संज्ञा पुं० एक प्रकारका कबूतर।

शीरीं–वि० (फा०) १ मीठा। मधुर। २ प्रिय। प्यारा।

शीरीनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मिठास। मीठापन। २ मिठाई।

शीशए साइत–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) पुराने ढंगकी वह घड़ी जिसमें बालू भर दिया जाता था और कुछ निश्चित समयमें वह बालू नीचेके छेदसे गिरता जाता था।

शीशा–संज्ञा पुं० (फा० शीशः) १ एक पारदर्शी मिश्र धातु, जो बालू या रेह या खारी मिट्टीको आगमें गलानेसे बनती है। काँच। दर्पण। ३ झाड़, फानूस आदि काँचके बने हुए सामान।

शीशा गर–संज्ञा पुं० (फा०) (भाव० शीशा-गरी) शीशा या उसकी चीजें बनानेवाला।

शीशी–संज्ञा स्त्री० (फा० शीशः) शीशेका छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं। मुहा०–**शीशी सुँघाना**=दवा सुँघाकर बेहोश करना (अस्त्र-चिकित्सा आदिमें)।

शुअबा–संज्ञा पुं० दे० "शोबा।"

शुआअ–संज्ञा स्त्री० (अ०) वि० शुआई) सूर्यकी किरण। रश्मि।

शुआर–संज्ञा पुं० दे० "शिआर।"

शुकराना–संज्ञा पुं० (फा० शुक्र, १

शुक्रिया। कृतज्ञता। २ वह धन जो कार्य हो जानेपर धन्यवादके रूपमें दिया जाय।

शुक्का–संज्ञा पुं॰ (अ॰ शुक्क़ः) वह पत्र जो बादशाहकी ओरसे किसी अमीर या सरदारके नाम लिखा जाय।

शुक्र–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ कृतज्ञता। २ धन्यवाद। मुहा॰–**शुक्र बजा लाना**=कृतज्ञता प्रकट करना।

शुक्र-गुज़ार–वि॰ (अ॰+फा॰) (संज्ञा शुक्र-गुज़ारी) एहसान माननेवाला। आभारी। कृतज्ञ।

शुग़ल–संज्ञा पुं॰ दे॰ "शग़ल।"

शुजाअ–वि॰ (अ॰) वीर। बहादुर।

शुजाअत–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) वीरता।

शुतरी–वि॰ (फा॰) १ शुतुर या ऊँटके रंगका। २ ऊँटके बालोंका बना हुआ। संज्ञा पुं॰ ऊँटकी पीठपर रखकर बजाया जानेवाला नक्कारा या धौंसा।

शुतुर–संज्ञा पुं॰ (फा॰ शुत्र मि॰ सं॰ उष्ट्र) ऊँट नामक पशु। यौ॰–**शुतुर-बे-महार**=१ बिना नकेलका ऊँट। २ बिना सोचे-समझे किसी तरफ़ चल पड़नेवाला।

शुतुर-कीना–संज्ञा पुं॰ (फा॰) वह जिसके मनमें वैरका भाव सदा बना रहे।

शुतुर-ग़मज़ा–संज्ञा पुं॰ (फा॰) १ छल। धोखा। चालाकी। २ नामुनासिब नख़रा।

शुतुर-गाव–संज्ञा पुं॰ (फा॰) जुरफ़ा नामक पशु।

शुतुर-नाल–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) ऊँटपर रखकर चलाई जानेवाली तोप।

शुतुर-बान–वि॰ (फा॰) (संज्ञा शुतुरबानी) ऊँट हाँकनेवाला।

शुतुर-मुर्ग़–संज्ञा पुं॰ (फा॰) एक प्रकारका बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँटकी तरह बहुत लंबी होती है।

शुद–वि॰ (फा॰) गया-बीता। संज्ञा पुं॰ किसी कार्यका आरम्भ। यौ॰–**शुद-बुद**=किसी विषयका बहुत सामान्य या अल्प ज्ञान।

शुदनी–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) होनेवाली बात। भावी। होनहार। वि॰ होने या हो सकने योग्य। संभाव्य।

शुफ़ा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ शुफ़अऽ) पड़ोस। पार्श्ववर्त्ती। यौ॰–**हक़्क़े शुफ़ा**=किसी मकान या ज़मीनको ख़रीदनेका वह हक़ जो उसके पड़ोसमें रहनेसे हासिल होता है।

शुबहा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ शुबः) १ संदेह। शक। २ धोखा। वहम।

शुभा–संज्ञा पुं॰ दे॰ "शुबहा।"

शुमार–संज्ञा पुं॰ (फा॰) १ संख्या। गिनती। २ लेखा। हिसाब।

शुमार-कुनिन्दा–वि॰ (फा॰) शुमार या गिनती करनेवाला।

शुमारी–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) गिननेकी क्रिया। गिनती। जैसे मर्दुम-शुमारी।

शुमाल–संज्ञा स्त्री० पुं० (अ०) उत्तर दिशा।

शुमाली-वि०(अ०)उत्तरका। उत्तरी।

शुमूल–वि० (अ०) पूरा। सब। कुल। यौ०–**ब-शुमूलियत** = सहायता या सहयोगसे।

शुरका–संज्ञा पुं० (अ०) "शरीक"-का बहु०।

शुरफ़ा–संज्ञा पुं० (अ०) "शरीफ़"-का बहु०।

शुरू–संज्ञा पुं० (अ० शुरूअ) १ आरंभ। २ वह स्थान जहाँसे किसी वस्तुका आरंभ हो। उत्थान।

शुर्ब–संज्ञा पुं० (अ०) पीना।

शुस्त-व-शू–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ नहाना धोना। २ धोकर पवित्र और शुद्ध करना।

शुस्ता–वि० (फा० शुस्तः) १ धोया हुआ। २ साफ़। स्वच्छ। ३ शुद्ध। जैसे-शुस्ता ज़बान।

शुहूद–संज्ञा पुं० (अ०) मनकी वह अवस्था जिसमें संसारकी सब चीज़ोंमें ईश्वर ही ईश्वर दिखाई देता है।

शूम–वि० (अ०) (संज्ञा शूमी) (भाव० शूमियत) १ मनहूस। २ अभागा। ३ कंजूस।

शेख़–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० मशायख़) १ पैगम्बर मुहम्मदके वंशजोंकी उपाधि। २ मुसलमानोंके चार वर्गोंमेंसे सबसे पहला वर्ग। ३ इस्लाम धर्मका आचार्य।

शेख़-उल्-इस्लाम–संज्ञा पुं० (अ०) अपने समयका इस्लामका सबसे बड़ा नेता और धर्माधिकारी।

शेख़ चिल्ली–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ कल्पित मूर्ख व्यक्ति। २ बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला।

शेख़ी–संज्ञा स्त्री० (अ० शेख़) १ गर्व। अहंकार। घमंड। २ शान। ऐंठ। अकड़। ३ डींग। मुहा०–**शेख़ी बघारना**, **हाँकना या मारना**=बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग मारना।

शेफ़्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) शेफ़्ता या आशिक़ होनेका भाव। आसक्ति।

शेफ़्ता–वि० (फा० शेफ्तः) आसक्त।

शेर–संज्ञा पुं० (फा०) १ बिल्लीकी जातिका एक भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु। व्याघ्र। नाहर। मुहा०–**शेर होना**=निर्भय और धृष्ट होना। २ अत्यन्त वीर और साहसी पुरुष। संज्ञा पुं० (अ० शेअर) उर्दू कविताके दो चरण। **शेर-आबी**=संज्ञा स्त्री० (फा०) घड़ियाल। मगर।

शेर-ख़्वानी–संज्ञा स्त्री० (अ० शिअर+फा० ख़्वानी) शेर या कविता पढ़ना।

शेर-गोई–संज्ञा स्त्री० दे० "शेर-ख़्वानी।"

शेर-दहाँ–वि० (फा०) १ जिसका मुँह शेरका-सा हो। २ जिसके छोरोंपर शेरका मुँह बना हो। संज्ञा पुं० १ वह जिसकी घुंडी शेरके मुँहकी आकारकी बनी हो।

२ वह मकान जो आगे चौड़ा और पीछे सँकरा हो।

शेर-पंजा–संज्ञा पुं० (फा० शेर+पंजः) शेरके पंजेके आकारका एक अस्त्र। बघनहा।

शेर-बबर–संज्ञा पुं० (फा०) सिंह।

शेर-मर्द–वि० (फा० संज्ञा शेरमर्दी) बहुत बड़ा बहादुर।

शेवन–संज्ञा पुं० (फा०) १ रोना चिल्लाना। २ रोकर दुःख प्रकट करना।

शेवा–संज्ञा पुं० (फा० शेवः) १ तरीक़ा। ढंग। २ दस्तूर। प्रथा। प्रणाली।

शै–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वस्तु। पदार्थ। चीज़। २ भूत-प्रेत।

शैतनत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शैतानी। शैतान-पन। २ दुष्टता।

शैतान–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० शयातीन) १ तमोगुण-मय देवता जो मनुष्योंको बहकाकर धर्मके मार्गसे भ्रष्ट करता है। मुहा०–

शैतानकी आँत=बहुत लम्बी वस्तु। २ दुष्ट देव-योनि। भूत। प्रेत। ३ दुष्ट।

शैतानी–संज्ञा स्त्री० (अ० शतान) १ दुष्टता। शरारत। पाजीपन। २ नटखटी। दुष्टतापूर्ण। वि० शैतान-सम्बन्धी। शैतानका।

शैदा–वि० (फा०) आशिक़ होने-वाला। आसक्त। आशिक़।

शैदाई–संज्ञा पुं० (फा०) वह जो किसीपर शैदा या आशिक़ हो।

शोअरा–"शायर" का बहु०।

शोख़–वि० (फा०)(संज्ञा शोख़ी) १ ढीठ। धृष्ट। २ शरीर। नटखट। ३ चंचल। चपल। ४ गहरा और चमकदार (रंग)।

शोख़-चश्म–वि० (फा०) (संज्ञा शोख़-चश्मी) १ धृष्ट। ढीठ। २ निर्लज्ज। बेहया।

शोख़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ धृष्टता। ढिठाई। २ दुष्टता। शरारत। ३ चंचलता। ४ रंग आदिकी चमक।

शोब–संज्ञा पुं० (फा०) धुलनेकी क्रिया या भाव। धुलाई।

शोबदा–संज्ञा पुं० (अ० शुअबदः) १ जादू। इंद्रजाल। २ धोखा।

शोबदा-गर–संज्ञा पुं० दे० "शोबदाबाज़।

शोबदा-बाज़–संज्ञा पुं० (फा०) (संज्ञा शोबदा-बाज़ी) १ जादूगर। २ धोखेबाज़।

शोबा–संज्ञा पुं० (अ० शुअबः) १ समूह। झुंड। २ शाखा विभाग। ३ नहर।

शोर–संज्ञा पुं० (फा०) १ क्षार। २ नमक। ३ रेह। ४ ऊसर। ज़मीन। वि० खारा। क्षार-युक्त। संज्ञा पुं० (फा०) १ ज़ोरकी आवाज़। गुल-गपाड़ा। कोलाहल। २ प्रसिद्धि।

शोर-पुश्त–वि० दे० "शोरा-पुश्त।"

शोर-बख़्त–वि० (फा०) अभागा। कमबख़्त।

शोरबा–संज्ञा पुं० (फा० शोर्बः) किसी

उबली हुई वस्तुका पानी । जूस । रसा ।

शोरा–संज्ञा पुं० (फा० शोरः) एक प्रकारका क्षार जो मिट्टीसे निकलता है ।

शोरा-पुश्त–वि० (फा०) (संज्ञा शोरा-पुश्ती) १ उद्दंड । २ झगड़ालू ।

शोराबा–संज्ञा पुं० (फा० शोराबः) खारा पानी ।

शोरिश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ शोर-गुल । हुल्लड़ । २ झगड़ा । फ़साद । ३ खलबली । हलचल ।

शोरीदा–वि० (फा० शोरीदः) व्याकुल । विकल ।

शोरीदा-सर–वि० (फा०) (संज्ञा शोरीदा-सरी) पागल । विक्षिप्त ।

शोला–संज्ञा पुं० (अ० शुअलः) आगकी लपट ।

शोला-ख़ू–वि (अ०+फा०) उग्र स्वभाववाला ।

शोला-रू–वि० (अ०+फा०) बहुत ही सुन्दर । स्वरूपवान् ।

शोशा–संज्ञा पुं० (फा० शोशः) १ निकली हुई नोक । २ अद्भुत या अनोखी बात ।

शोहदा–संज्ञा पुं० (फा० शुहदा) "शहीद" का बहु० । १ व्यभिचारी । लम्पट । २ गुंडा ।

शोहरत–संज्ञा स्त्री० (अ० शुहरत) प्रसिद्धि । ख्यात ।

शोहरा–संज्ञा पुं० (अ० शुहरः) प्रसिद्ध । ख्यात । यौ०-**शोहरए-आफ़ाक़**=जगत्-प्रसिद्ध ।

शौक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसी वस्तुकी प्राप्ति या भोगके लिए होनेवाली तीव्र अभिलाषा । प्रबल लालसा । मुहा०–**शौक़ करना**=किसी वस्तु या पदार्थका भोग करना । **शौक़से**=प्रसन्नता-पूर्वक । २ आकांक्षा । लालसा । हौसला । ३ व्यसन । चसका । ४ प्रवृत्ति । झुकाव ।

शौकत=संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बल । ताक़त । २ रोब । आतंक । ३ ठाठ । शान । यौ०–**शान-शौकत** ठाठ-बाट ।

शौक़िया–वि० (अ० शौक़ियः) शौक़से भरा हुआ । शौक़वाला । क्रि० वि० शौक़से ।

शौक़ीन–संज्ञा पुं० (अ० शौक़) १ वह जिसे किसी बातका बहुत शौक़ हो । शौक़ करनेवाला । २ सदा बना-ठना रहनेवाला ।

शौक़ीनी–संज्ञा स्त्री० (अ० शौक़) शौकीन होनेका भाव या काम ।

शौहर–संज्ञा पुं० (फा०) स्त्रीका पति । स्वामी । खाविंद । मालिक ।

शौहरा–संज्ञा पुं० (फा० शौहरः) वरके सिरपर बाँधा जानेवाला सेहरा ।

(स)

संग–संज्ञा पुं० (फा०) १ पत्थर । प्रस्तर । २ भार । बोझ । वज़न ।

संग-जाँ–वि० (फा०) (भाव० संग-जानी) १ जिसकी जान बहुत कठिनतासे निकले । २ निर्दय ।

संग-तराश–संज्ञा पुं० (फा०) वह

जो पत्थरकी चीज़ काट-छाँटकर बनाता हो।

संग-तराशी–संज्ञा स्त्री० (फा०) संग-तराशका काम। पत्थरको काट-छाँटकर चीजें बनाना।

संग-दाना–संज्ञा पुं० (फा०) पक्षीका पेट जिसमेंसे प्रायः कंकड़-पत्थर भी निकलते हैं।

संग-दिल–वि० (फा०) (संज्ञा संग-दिली) जिसका दिल पत्थरकी तरह हो। कठोर-हृदय।

संग-पारस–संज्ञा पुं० (फा०+हिं०) पारस पत्थर। स्पर्श-मणि।

संग-पुश्त–संज्ञा पुं० (फा०) कछुआ।

संग-बसरी–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) एक प्रकारका सफ़ेद पत्थर जो दवाके काममें आता है।

संग-मरमर–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका मुलायम बढ़िया पत्थर।

संग-मूसा–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) एक प्रकारका काला मुलायम बढ़िया पत्थर।

संग-रेज़ा–संज्ञा पुं० (फा०) कंकड़। रोड़ा।

संग-लाख–संज्ञा पुं० (फा०) पथरीला या पहाड़ी स्थान। वि० कड़ा। कठोर।

संग शोई–संज्ञा स्त्री० (फा०) चावल या दाल आदिमें पानी डालकर नीचे बैठे हुए कंकड़ आदि चुनना।

संग-साज़–वि० (फा०) (संज्ञा संग-साज़ी) वह जो लीथो या पत्थरके छापेमें पत्थरपरके अक्षर आदि बनाकर अशुद्धियाँ दूर करता है।

संग-सार–संज्ञा पुं० (फा०) इस्लामी धर्म्म-शास्त्रके अनुसार एक प्रकारका दंड जिसमें व्यभिचारीको ज़मीनमें कमर तक गाड़ देते थे और उसके सिरपर पत्थरोंकी वर्षा करके उसके प्राण लेते थे।

संग-सारी–दे० "संग-सार।"

संगीन–संज्ञा पुं० (फा०) लोहेका एक नुकीला अस्त्र जो बन्दूकके सिरेपर लगाया जाता है। वि० १ पत्थरका बना हुआ। २ मोटा। ३ टिकाऊ। ४ विकट।

संगीन-दिल–वि० (फा०) कठोर-हृदय। संग-दिल।

संगीनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मज़बूती। २ गुरुता। भारीपन।

संगे-असवद–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) काबेमें रखा हुआ वह काला पत्थर जिसे मुसलमान पवित्र समझते और हज करते समय चूमते हैं।

संगे-आस्ताँ–संज्ञा पुं० (फा०) देहलीजका पत्थर।

संगे-खारा–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका नीला पत्थर।

संगे-मज़ार–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) क़ब्रपर लगा हुआ वह पत्थर जिसपर मृतकका नाम और मृत्युकाल आदि लिखा होता है।

संगे-मसाना–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) वह पत्थर जो पथरी नामक रोगमें मनुष्यके मूत्राशयमें होता है।

संगे-माही–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका पत्थर। कहते हैं कि यह मछलीके सिरमेंसे निकलता है।

संगे-मिक़नातीस–संज्ञा पुं० (फा० +अ०) चुम्बक पत्थर।

संगे-यशब–संज्ञा पुं० (फा०) हरे रंगका एक प्रकारका पत्थर जिसके टुकड़े गलेमें हृदयसम्बन्धी रोग दूर करनेके लिए पहनते हैं। हौलदिली।

संगे-राह–संज्ञा पुं० (फा०) १ रास्तेमें पड़ा हुआ पत्थर जिससे ठोकर लगे। २ बाधा। विघ्न।

संगे-लरज़ाँ–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका लचीला पत्थर जो हिलानेसे लचकता है।

संगे-लोह–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) क़ब्रपर लगा हुआ पत्थर जिसपर किसी मृतककी मरण-तिथि या नाम आदि लिखा होता है।

संगे-शजर–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) नदियों या समुद्रमेंसे निकलनेवाला एक प्रकारका पत्थर।

संगे-शजरी–दे० "संगे-शजर।"

संगे-सिमाक़–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) एक प्रकारका सफ़ेद पत्थर।

संगे-सीना–संज्ञा पुं० (फा०) १ छातीपरका पत्थर। २ अप्रिय वस्तु या बात।

संगे-सुरमा–संज्ञा पुं० (फा०) सुरमेकी डली।

संगे-सुर्ख़–संज्ञा पुं० (फा०) लाल रंगका पत्थर।

संगे-सुलेमानी–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) एक प्रकारका दोरंगा पत्थर जिसकी मुसलमान फ़क़ीर माला बनाकर गलेमें पहनते हैं।

संज–वि० (फा०) समझने या जाननेवाला। जैसे—**नग़्मा-संज**=गवैया। **सुख़न-संज**=वक्ता या कवि।

संजाफ़–संज्ञा स्त्री० (फा०) (वि० संजाफ़ी) गोट। किनारा। हाशिया।

संजीदा–वि० (फा० संजीदः) (संज्ञा संजीदगी) १ जँचा या तुला हुआ। उपयुक्त। २ ठीक तरहसे निशाना लगानेवाला। ३ धीर। गम्भीर।

सअद–संज्ञा पुं० (अ०) १ सौभाग्य। ख़ुशकिस्मती। २ ग्रहों आदिका शुभ प्रभाव। वि० शुभ। मुबारक।

सअब–वि० (अ०) १ कठिन। कठोर। २ अप्रिय।

सआदत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सौभाग्य। ख़ुशकिस्मती। २ नेकी। भलाई।

सआदत-मन्द–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सआदत-मन्दी) १ भाग्यवान्। २ आज्ञाकारी और सुयोग्य (प्रायः पुत्रके लिए)।

सई–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दौड़-धूप। २ परिश्रम। प्रयत्न। कोशिश। ३ सिफ़ारिश। यौ०—**सई-सिफ़ारिश**=प्रयत्न। कोशिश।

सईद–वि० (अ०) १ शुभ। मुबारक। २ भाग्यवान्।

सईस–संज्ञा पुं० दे० "साईस।"

सऊबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कठिनता। दिक़्क़त। २ आफ़त।

सकता–संज्ञा पुं० (अ० सक्तः) १ एक प्रकारका मूर्च्छारोग। मिरगी। २ चकित या स्तम्भित होनेकी अवस्था। ३ कवितामें यति। ४ यति-भंगका दोष।

सक़न-क़ूर–संज्ञा पुं० (यू०) १ गोह-की तरहका एक जानवर। २ रेग-माही।

सक़मूनिया–संज्ञा पुं० (यू०) एक प्रकारकी यूनानी दवा।

सक़र–संज्ञा स्त्री० (अ०) जहन्नुम। दोजख। नरक।

सक़ालत–संज्ञा स्त्री०(अ०) १ भार। बोझा। २ गरिष्ठता। गुरु-पाकत्व।

सक़ीम–वि० (अ०) १ बीमार। रोगी। २ दूषित। ऐबदार।

सक़ील–वि० (अ०) भाव० (सिक़्ल, सक़ालत) १ भारी। वजनी। २ गरिष्ठ। गुरु-पाक। जल्दी न पचनेवाला।

सकूत–संज्ञा पुं० दे० "सुकूत"

सकून–संज्ञा पुं० (अ० सुकून) १ ठहरना। २ मनकी शान्ति।

सकूनत–संज्ञा स्त्री० (अ० सुकूनत) रहनेकी जगह। निवासस्थान।

सक़्क़ा–संज्ञा पुं०(अ०)मशकमें पानी भरकर लानेवाला। भिश्ती।

सक़्क़ाबा–संज्ञा पुं० (अ० सक़्क़ा) पानी रखनेका हौज या टाँका।

सक़्फ़–संज्ञा पुं० (अ०) मकानकी छत या ऊपरी भाग। कोठा।

सख़ावत–संज्ञा स्त्री० (अ०) उदा-रता। दान शीलता।

सख़ी–वि० (अ०) दानी। उदार।

सख़ुन–संज्ञा (फा० सुख़न) १ कथन। उक्ति। २ वचन। क़ौल। वादा। ३ बात-चीत। ४ कविता। ५ कहावत।

सख़ुन-चीन–वि० (फा०) (संज्ञा सख़ुन-चीनी) चुगलखोर।

सख़ुन-तकिया–संज्ञा पुं०(फा०)वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगोंके मुँहसे प्रायः निकला करता है। तकियाकलाम।

सख़ुन-दाँ–वि० (फा०) (संज्ञा सख़ुन-दानी) १ उक्तियोंका मर्म समझनेवाला। २ कवि। शायर।

सख़ुन-परवर–वि० (फा०) (संज्ञा सख़ुन-परवरी) १ अपने वचनका पालन या निर्वाह करनेवाला। २ हठी।

सख़ुन-फ़हम–वि० (फा०) (संज्ञा सख़ुन-फ़हमी) बातोंका मर्म समझनेवाला। चतुर।

सख़ुन-रस–दे० "सख़ुन-फ़हम।"

सख़ुन-वर–वि० दे० "सख़ुन-दाँ।"

सख़ुन-शिनास–वि०(फा०) (संज्ञा सख़ुन-शिनासी) बातोंका तत्त्व या रहस्य समझनेवाला।

सख़ुन-संज–वि० दे० "सख़ुन-दाँ।"

सख़ुन-साज़–(फा०) (संज्ञा सख़ुन-साज़ी) १ बातोंको अच्छी तरह बनाकर या सुन्दर रूपमें कहने-वाला। सु-वक्ता। २ झूठी बातें बनानेवाला।

सख़्त–वि० (फा०) १ कठोर। कड़ा। "मुलायम" का उलटा। २ भारी। संगीन। ३ मुश्किल।

कठिन । ४ कठोर-हृदय । निर्दय । क्रि॰ वि॰ बहुत अधिक ।

सख़्त-जान–वि॰ (फा॰) (संज्ञा सख़्त-जानी) १ कठोर-हृदय । निर्दय । २ जिसके प्राण बहुत कठिनतासे निकलें । ३ कष्ट-सहिष्णु ।

सख़्त-दिल–वि॰(फा॰)(संज्ञा सख़्त-दिली) कठोर-हृदय । निर्दय ।

सख़्ती–संज्ञा स्त्री॰(फा॰) १ कठोरता । कड़ापन । "नरमी" का उलटा । २ दृढ़ता। ३ कठोर व्यवहार । ४ तीव्रता । तेजी । ५ डाँट-डपट । ६ कष्ट ।

सग–संज्ञा पुं॰ (फा॰) कुत्ता ।

सग़ीर–वि॰(अ॰) (बहु॰ सिग़ार) छोटा । जैसे–**सग़ीर-सिन**=कम उम्रका । अल्प-वयस्क । **सग़ीर-सिनी**=अल्पवयस्कता । कम-सिनी । नाबालिग़ी ।

सग्र–संज्ञा पुं॰ (अ॰) छोटापन ।

सजा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ सजऽ) १ पक्षियोंका मनोहर कलरव । २ ऐसा वाक्य या पद जिसका कुछ अर्थ भी हो और जिससे किसी व्यक्तिका नाम भी सूचित हो । ३ कविता । छन्द ।

सज़ा–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ दंड । २ कारागारमें रखनेका दंड ।

सज़ाए-क़त्ल–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰+अ॰) प्राण-दंड ।

सज़ाए-मौत–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ " सज़ाए-क़त्ल ।"

सज़ा-याफ़्ता–वि॰ (फा॰ सज़ा-याफ़्तः) वह जो सज़ा पा चुका हो । कारागारमें रह चुका हो ।

सज़ा-याब–वि॰ (फा॰) १ सज़ा पानेके लायक । २ सज़ा-याफ़्ता ।

सज़ावार–वि॰ (फा॰) १ उचित । उपयुक्त । वाजिब । २ शुभ फल देनेवाला ।

सज़ावुल–संज्ञा पुं॰ (तु॰) सरकारी रुपए वसूल करनेवाला । तह-सीलदार ।

सज्जाद–वि॰ (अ॰) सिजदा करने-वाला ।

सज्जादा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ सज्जादः) १ वह कपड़ा जिसपर बैठकर नमाज पढ़ते हैं । जानमाज़ । मुसल्ला । २ पीर या फ़क़ीरकी गद्दी ।

सज्जादा-नशीन–संज्ञा पुं॰ (अ॰+फा॰) वह जो किसी पीर या फ़क़ीरकी गद्दीपर बैठा हो ।

सतर–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) (बहु॰ सतूर) १ लकीर । रेखा । २ पंक्ति । अवली । कतार । वि॰ १ टेढ़ा । वक्र । २ कुपित । क्रुद्ध । संज्ञा स्त्री॰ (अ॰ सत्र) १ मनुष्य-की गुह्य इंद्रिय । २ ओट । आड़ । परदा ।

सतह–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ किसी वस्तुका ऊपरी भाग । तल । २ वह विस्तार जिसमें केवल लम्बाई-चौड़ाई हो ।

सतह-ज़मीन–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰+फा॰) १ पृथ्वी-तल । मैदान ।

सताइश–संज्ञा स्त्री० (फा० सिताइश) प्रशंसा। तारीफ़।

सतून–संज्ञा पुं० (फा० सुतन) स्तम्भ। खम्भा।

सत्त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मनुष्यकी गुप्त इंद्रिय। २ ओट। परदा। संज्ञा स्त्री० दे० "सतर।"

सद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ परदा। आड़। ओट। २ दीवार। ३ बाधा। मुहा०–**सद्दे राह होना**=किसीके मार्गमें कंटक या बाधक होना। वि० (फा० मि० सं० शत) सौ। शत। यौ०–**सद-आफ़रीन या सद-रहमत**=बहुत बहुत शाबाशी। धन्य।

सदक़ा–संज्ञा पुं० (अ० सद्क़ः) १ खैरात। २ निछावर। उतारा।

सदफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह सीपी जिसमेंसे मोती निकलता है। शुक्ति। सीप।

सदमा–संज्ञा पुं० (अ० सद्मः) १ आघात। धक्का। चोट। २ रंज।

सदर–संज्ञा० पुं० (अ० सद्र) १ छाती। कलेजा। २ सामने या आगेका भाग। ३ आँगन। सहन। ४ प्रधान। मुख्य। ५ प्रधान, मुख्य या सभापति आदिके बैठने या रहनेका स्थान। ६ छावनी। लश्कर। वि०–१ खास। विशिष्ट। २ बड़ा। श्रेष्ठ।

सदर-आज़म–संज्ञा पुं०(अ० सद्रे-आज़म) प्रधान मंत्री या अमात्य।

सदर-आला–संज्ञा पुं० (अ० सद्रे आला) अदालतका वह हाकिम जो जजके नीचेका हो। छोटा जज।

सदर-जहान–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) एक कल्पित जिन या प्रेत जिसे स्त्रियाँ पूजती हैं।

सदर-नशीन–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) सभापति। प्रधान।

सदर-नशीनी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) सभापतित्व।

सदर-सदूर–संज्ञा पुं० (अ० सद्रे सदूर) प्रधान न्यायकर्त्ता।

सदरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) बिना आस्तीनकी एक प्रकारकी कुरती।

सदहा–वि० (फा०) सैकड़ों। बहुत।

सदा–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गूँजनेकी आवाज़। प्रतिध्वनि। २ आवाज़। शब्द। ३ माँगने या पुकारनेकी आवाज़।

सदाक़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सत्यता। सचाई। २ गवाही।

सदारत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सद्र या प्रधानका भाव, पद या कार्य। २ सभापतित्व।

सदी–संज्ञा स्त्री० (अ०)सौ वर्ष। शताब्दी।

सद्दे-याजूज–संज्ञा स्त्री० (अ०) दे० "सद्दे-सिकन्दर।"

सद्दे-सिकन्दर–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) चीनकी प्रसिद्ध दीवार जो सिकन्दर बादशाहकी बनवाई हुई मानी जाती है।

सद्र–संज्ञा पुं० दे० "सदर।"

सन–संज्ञा पुं० (अ०) १ साल। वर्ष। २ संवत्।

सनअत–संज्ञा स्त्री० (अ०)(वि० सनअती) कारीगरी । शिल्प-कौशल्य ।

सन-जुलूस-संज्ञा पुं० (अ०) राज्यारोहणका संवत् ।

सनद–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बड़ा तकिया । गाव-तकिया । २ वह जिसपर भरोसा या विश्वास किया जा सके । प्रामाणिक बात । ३ आदर्श । ४ प्रमाणपत्र । जैसे-सनदे मुआफी, सनदे लियाकत ।

सनदन्–क्रि० वि० (अ०) सनदके तौरपर । प्रमाण-रूपमें ।

सनम-संज्ञा पुं० (अ०) १ मूर्ति । २ प्रिय । माशूक ।

सनम-कदा–संज्ञा पुं० दे० "सनम-खाना ।"

सनमका खेल–संज्ञा पुं० (अ०+हिं० एक प्रकारका खेल जिसमें अनेक प्रश्नोंके उत्तर किसी एक ही अक्षर (अ, क, म, ल आदि) से आरम्भ होनेवाले शब्दोंमें दिये जाते हैं ।

सनम-खाना–संज्ञा पुं०(अ०+फा०) १ मन्दिर । २ प्रिय या प्रेमिकाके रहनेका स्थान ।

सना–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रशंसा । तारीफ । २ स्तुति । ३ एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं । सनाय ।

सनाअत–संज्ञा स्त्री० (अ० सनाअत)कारीगरी ।

सना-गर–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) प्रशंसा या स्तुति करनेवाला ।

सनाया–संज्ञा पुं० बहु० (अ० सनायऽ) कला-कौशल । कारीगरी ।

सनोबर–संज्ञा पुं० (अ०) एक झाड़ । चीड़का वृक्ष ।

सन्दल–संज्ञा पुं० (अ० मि० सं० चन्दन) चन्दन ।

सन्दली- वि० (फा०) १ चन्दनका बना हुआ । २ चन्दनके रंगका । लाली लिये हुए पीला । संज्ञा स्त्री० (फा०) छोटी चौकी ।

सन्दूक-संज्ञा पुं० (अ०) (अल्पा० सन्दूकचा) लकड़ी आदिका बना हुआ चौकोर पिटारा । पेटी । बकस ।

सन्दूकचा--संज्ञा पुं० (अ० "सन्दूक से फा०) छोटा सन्दूक ।

सन्दूकची–दे० "सन्दूकचा ।"

सन्दूकी–वि० (अ० सन्दूक)सन्दूकको तरह या आकारका ।

सन्नाअ संज्ञा पुं० (अ०) बहुत बड़ा कारीगर ।

सपिस्ताँ–संज्ञा पुं० दे०"लिसोड़ा।"

सपुर्द–संज्ञा स्त्री० (फा० सिपुर्द) किसीको रक्षापूर्वक रखनेके लिये देना सौंपना ।

सपुर्दगी–संज्ञा स्त्री० (फा० सिपुर्दगी) सौंपे जानेकी क्रिया । जैसे-सब चीजें उन्हींकी सपुर्दगीमें हैं ।

सपेद -वि० (फा० मि० सं० श्वेत) १ श्वेत । सफेद । उज्ज्वल । २ गोरा । ३ कोरा । सादा ।

सफ़--संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० सफ़ूफ़) १ पंक्ति । क़तार । २ लंबी सीतल-पाटी ।

सफ़-आरा–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा सफ़-आराई) युद्धके लिए सेनाओंकी पंक्तियाँ या स्थान निर्धारित करनेवाला।

सफ़-जंग–संज्ञा स्त्री० (अ०+फ़ा०) युद्धके लिए सैनिकोंकी स्थापना। व्यूह-रचना।

सफ़र संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रस्थान। यात्रा। २ रास्तेमें चलनेका समय या दशा। ३ छुट्टी होना। अवकाश। ४ एक प्रकारका उद्-[illegible]। ५ संज्ञा पुं० (अ०) अरबोंका दूसरा चान्द्र मास जो मुहर्रमके बाद पड़ता है।

सफ़र-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) यात्रा-विवरण।

सफ़रा–संज्ञा पुं० (अ० सफ़्रः) पित्त।

सफ़रावी–वि० (अ०) पित्तसंबंधी।

सफ़री–वि० (फ़ा०) सफ़रमें का। सफ़रमें काम आनेवाला। संज्ञा पुं० १ राह-खर्च। २ अमरूद।

सफ़वी–संज्ञा पुं० (अ०) फ़ारस या ईरानका एक राजवंश जो शाह सफ़ी नामक एक फ़क़ीरसे चला था।

सफ़हा–संज्ञा पुं० (अ० सफ़्हः) १ ऊपर या सामने पड़नेवाला अंश। जैसे-**सफ़हए-हस्ती**=पृथ्वी तल। २ विस्तार। ३ पृष्ठ। पन्ना।

सफ़ा–वि० (अ०) १ पवित्र। शुद्ध। २ साफ़। स्वच्छ। ३ चमकीला। संज्ञा पु० दे० "सफ़हा।"

सफ़ाई–संज्ञा स्त्री० (अ० सफ़ा) १ स्वच्छता। निर्मलता। २ मैल या कूड़ा-करकट आदि हटानेकी क्रिया। ३ मनमें मैल न रहना। स्पष्टता। ४ कपट या कुटिलताका अभाव। ५ दोषारोपका हटना। निर्दोषिता। ६ मामलेका निपटारा। निर्णय।

सफ़ा-चट–वि० (अ०+हिं०) एकदम स्वच्छ। बिल्कुल साफ़।

सफ़ाया–संज्ञा पुं० (अ० सफ़ा) १ कुछ भी बाकी न रह जाना। पूरी सफ़ाई। २ पूर्ण विनाश।

सफ़ी–वि० (अ०) १ शुद्ध। पवित्र। २ साफ़। स्वच्छ। संज्ञा पुं० फ़ारसके एक प्रसिद्ध फ़कीरका नाम जिससे वहाँका सफ़वी नामक राज-वंश चला था।

सफ़ीना–संज्ञा पुं० (अ० सफ़ीनः) १ किश्ती। नाव। २ वह कागज जिसपर स्मरण रखनेके लिए कोई बात लिखी जाय। ३ अदालती परवाना। इत्तिलानामा। समन।

सफ़ीर–संज्ञा पुं० (अ०) एलची। राजदूत। संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पक्षियोंका कल-रव। २ वह सीटी जो पक्षियोंको बुलाने आदिके लिए बजाई जाती है।

सफ़ेद–वि० (फ़ा०) १ चूनेके रंगका। धौला। श्वेत। चिट्टा। २ जिसपर कुछ लिखा न हो। कोरा। सादा। मुहा०–**स्याह-सफ़ेद**=भला-बुरा। इष्ट-अनिष्ट।

सफ़ेद-पोश–वि० (फ़ा०) (संज्ञा सफ़ेद-पोशी) १ साफ़ कपड़े पहनने-वाला। २ भला मानस। शिष्ट।

सफ़ेदा–संज्ञा पुं० (फा० सफ़ेदः) १ जस्तेका चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रँगाईके काम आता है । २ आमका एक भेद । खरबूजेका एक भेद ।

सफ़ेदी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सफेद होनेका भाव । श्वेतता । धवलता । मुहा०–**सफ़ेदी आना**= बुढ़ापा आना । २ दीवार आदिपर सफेद रंग या चूनेकी पोताई । चूनाकारी ।

सफ़े-मातम–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) वह चटाई या फर्श जिसपर मातम करनेके लिए बैठते हैं ।

सफ़ूफ़–संज्ञा पुं० (अ० सुफ़ूफ़) पीसी या कूटी हुई सूखी चीज । चूर्ण ।

सफ़्फ़ा–वि० (अ० सफ़ा) १ साफ़ । २ विनष्ट । बरबाद ।

सफ़्फ़ाक–वि० (अ०) (संज्ञा सफ़्फ़ाकी) १ क़ातिल । खूनी । २ निर्दय ।

सबक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसी काममें किसीसे आगे बढ़ जाना । २ ग्रंथका उतना अंश जितना एक बार पढ़ा जाय । पाठ । २ शिक्षा । उपदेश ।

सबक़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) किसी काममें किसीसे आगे बढ़ जाना । क्रि० प्र० ले जाना ।

सबब–संज्ञा पुं० (अ०) १ कारण । वजह । हेतु । २ द्वार । साधन ।

सबल–संज्ञा पुं० (अ०) आँखोंका एक रोग ।

सबहा–संज्ञा पुं० (अ० सबहः) मालाके दाने या मनके ।

सबा–वि० (अ० सबऽ) सात । सप्त । यौ०–**सबा-सैयारा**= सप्तर्षि । संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रभातके समय चलनेवाली पूरबकी हवा ।

सबात–संज्ञा पुं० (अ०) १ स्थिरता । ठहराव । २ दृढ़ता । मज़बूती ।

सबाह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रातःकाल । सबेरा । २ प्रभात । तड़का ।

सबाहत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गोरापन । गोराई । २ सौन्दर्य ।

सबील–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मार्ग । सड़क । २ उपाय । ३ प्याऊ ।

सबीह–वि० (अ०) १ गौर वर्णका । गोरा । २ सुन्दर । खूबसूरत ।

सबू–संज्ञा पुं० (फा०) घड़ा । मटका ।

सबूचा–संज्ञा पुं० (फा० सबूचः) सबूका अल्पार्थक रूप । छोटा घड़ा । मटकी ।

सबूत–संज्ञा पुं० (अ०) १ स्थिरता । ठहराव । २ दृढ़ता । ३ प्रमाण ।

सबूरा–संज्ञा पुं० (अ० सब्र) गुह्य इन्द्रियके आकारका कपड़ेका बनाया हुआ पदार्थ जिससे कुछ स्त्रियाँ अपनी कामवासना तृप्त करती हैं ।

सबूरी–संज्ञा स्त्री० दे० "सब्र ।"

सबूस–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चोकर । २ भूसी ।

सबूह–संज्ञा स्त्री० (अ०) सबेरेके समय पीयी जानेवाली शराब ।

सबूही–संज्ञा स्त्री० (अ०) सबेरेके समय शराब पीना।

सब्ज़–वि० (फा०) १ कच्चा और ताजा (फल फूल आदि)। मुहा०–**सब्ज़ बाग़ दिखलाना**=काम निकालनेके लिए बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना। २ हरा। हरित (रंग)। ३ शुभ। उत्तम।

सब्ज़-क़दम–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) वह जिसका आगमन अशुभ समझा जाय। मनहूस।

सब्ज़-पोश–वि० (फा०)(संज्ञा सब्ज़-पोशी) हरे रंगके कपड़े पहननेवाला। (मुसलमानोंमें हरे रंगके कपड़े सोग या मातमके सूचक होते हैं)।

सब्ज़-बख़्त–वि० (फा०) भाग्यवान्। किस्मतवर।

सब्ज़ा–संज्ञा पुं० (फा० सब्ज़ः) १ हरियाली। २ भंग। भाँग। ३ पौसला। पन्ना नामक रत्न। ४ घोड़ेका रंग जिसमें सफ़ेदीके साथ कुछ कालापन भी होता है।

सब्ज़ी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ वनस्पति आदि। हरियाली। २ हरी तरकारी। ३ भाँग।

सब्त–संज्ञा पुं० (अ०) १ लिखावट। लेख। २ मोहर जो लेखों आदि-पर लगाई जाती है।

सब्बाग़–संज्ञा पुं० (अ०) रँगरेज।

सब्र–संज्ञा पुं० (अ०) १ सन्तोष। धैर्य। २ सहनशीलता। मुहा०–**किसीका सब्र पड़ना**=किसीके सहन किये हुए कष्टका बुरा प्रतिफल होना।

सम–संज्ञा पुं० (अ० सम्म) विष।

समअ–संज्ञा पुं० (अ०) कान।

समअ-ख़राशी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) दिमाग़ चाटना। व्यर्थकी बातें करके सिर खाना।

समद–संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर। वि० स्थायी। शाकत।

समन–संज्ञा पुं० (अ०) १ मूल्य। दाम। २ अदालतका वह आज्ञा-पत्र जिसमें किसीको हाजिर होनेके लिये बुलाया जाता है। (इस अर्थमें यह शब्द अँगरेजीसे लिया गया है।) संज्ञा स्त्री० (फा०) चमेली।

समन-अन्दाम–वि० (फा०) जिसका शरीर चमेलीके समान गोरा हो।

समन्द–संज्ञा पुं० (फा०) १ बादामी रंगका घोड़ा। २ घोड़ा। अश्व।

समन्दर–संज्ञा पुं० (फा०) १ एक प्रकारका कल्पित चूहा जिसकी उत्पत्ति आगसे मानी जाती है। २ दरिया। समुद्र।

समर–संज्ञा पुं० (अ०) १ फल। २ लाभ। ३ धन-सम्पत्ति। ४ सन्तान। औलाद।

समरा–संज्ञा पुं० (अ० समरः) १ फल। २ लाभ। ३ परिणाम। ४ बदला।

समसाम–संज्ञा स्त्री० (अ० सम्साम) नंगी तलवार।

समा–संज्ञा पुं० (अ०) आकाश।

समाअ–संज्ञा पुं० (अ०) १ सुनना। २ गीत आदि श्रवण करना।

समाअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) सुननेकी क्रिया। सुनवाई।

समाई–वि० (अ०) सुना हुआ। दूसरोंका कहा हुआ।

समाक़–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका संग-मरमर (पत्थर)।

समाजत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शरमिन्दगी। लज्जा। २ विनय। ३ खुशामद। लल्लोचप्पो।

समावी–वि० (अ०) ऊपरसे आया हुआ। आकाशीय। दैवी। जैसे–समावी आफ़त।

समूम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ जहरीली हवा। २ गरम हवा। लू।

समूर–संज्ञा पुं० (अ०) लोमड़ीकी तरहका एक पशु जिसकी खालसे पहननेके वस्त्र आदि भी बनाते हैं।

सम्त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सीधा। २ ओर। तरफ़। ३ दिशा। यौ०-**सम्त-उल्-रास** = १ शीर्षबिन्दु। २ उन्नतिकी चरम सीमा।

सम्बुल–संज्ञा पुं० (अ० सुम्बुल) एक प्रकारकी सुगंधित वनस्पति। बाल छड़। जटामाँसी। (उर्दूके कवि इसकी उपमा जुल्फ़ या बालोंकी लटसे देते हैं।)

सम्म–संज्ञा पुं० (अ०) जहर। विष। यौ०-**सम्मे क़ातिल** = घातक विष।

सर-संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ सिर। शीर्ष। मुहा०–**सरपर कफ़न बाँधना** = मरनेके लिये तैयार होना। **सर हथेलीपर लेना**= मरनेके लिये तैयार होना। २ ऊपरी या अगला भाग। ३ सरदार। नेता। ४ आरम्भ। शुरू। ५ शक्ति। बल। ६ ताशका पत्ता जो खेला जाय। वि० १ दमन किया हुआ। २ जीता हुआ। क्रि० वि० १ सामने। २ ऊपर।

सर-अंजाम–संज्ञा पुं० (फ़ा०) १ कार्यकी समाप्ति। २ सामग्री। सामान। ३ व्यवस्था। प्रबन्ध।

सर-आमद–वि० (फ़ा०) १ समाप्त करनेवाला। २ पूरा। पूर्ण। ३ श्रेष्ठ। बड़ा। अच्छा।

सर-कश–वि० (फ़ा०) (संज्ञा सरकशी) १ विद्रोही। बाग़ी। २ उद्दंड।

सरक़ा–संज्ञा पुं० (अ० सर्क़ः) चोरी। यौ०–**सरक़ए बिल्जब्र**= डाका।

सरकार–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) (वि० सरकारी) १ मालिक। प्रभु। २ राज्यसंस्था। शासन-सत्ता। ३ रियासत।

सरकारी–वि० (फ़ा०) १ सरकार या मालिकका। २ राज्यका। राजकीय। यौ०–**सरकारी काग़ज़** = १ राज्यके दफ़्तरका काग़ज़। २ प्रामिसरी नोट।

सर-कोबी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा० सर+अ० कोब) १ सिर कुचलना। २ दंड देना।

सर-खत–संज्ञा पुं० (फ़ा०+अ०) १ वह दस्तावेज़ जिसपर मकान

आदि किरायेपर दिये जानेकी शर्तें लिखी होती हैं । २ दिये और चुकाये हुए ऋण आदिका ब्योरा । ३ आज्ञापत्र । परवाना ।

सर-खुश–वि॰ (फा॰) सब प्रकारकी सुख-सामग्रीसे सम्पन्न । सुखी ।

सर-खेल–संज्ञा पुं॰ (फा॰) वंश या जातिका प्रधान । सरग़ना ।

सरग़ना–संज्ञा पुं॰ (फा॰ सरग़नः) नेता । प्रधान । मुखिया ।

सर-गरदाँ–वि॰ (फा॰) १ घबराया हुआ और स्तंभित । २ निछावर ।

सर-गरम–वि॰ (फा॰ सरगर्म) (संज्ञा सरगरमी) तत्पर । सन्नद्ध ।

सर-गरोह–संज्ञा पुं॰ (फा॰) जाति या समूहका प्रधान नेता । मुखिया ।

सर-गश्ता–वि॰ (फा॰ सरगश्तः) (संज्ञा सर-गश्तगी) दुर्दशा-ग्रस्त और घबराया हुआ । विकल ।

सर-गिराँ–वि॰ (फा॰) (संज्ञा सर-गिरानी) १ जिसका सिर नशे आदिके कारण भारी हो । २ अप्रसन्न । नाराज़ ।

सर-गुज़श्त–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ सिरपर बीती हुई बात । २ हाल । वर्णन । ३ जीवन-चरित्र ।

सर-गोशी–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ कानमें कुछ बात कहना । २ पीठ पीछे शिकायत करना । ३ काना-फूसी । ४ चुगली । निन्दा ।

सर-चश्मा–संज्ञा पुं॰ (फा॰ सरे-चश्मः) १ नदी आदिका उद्गम । २ जल-स्रोत । पानीका चश्मा ।

सर-चोट–वि॰ (फा॰ सर+हिं॰ चोट) जो सिरपर चोटके समान लगे । अप्रिय । नागवार ।

सर-ज़द–वि॰ (फा॰ "सर-ज़दन"से) १ प्रकट । ज़ाहिर । २ कृत ।

सर-ज़नी–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰ "सर-ज़दन" से) प्रयत्न । कोशिश ।

सर-ज़निश–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) धिक्कार । लानत-मलामत ।

सर-ज़मीन–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ देश । मुल्क । २ भूमि । ज़मीन ।

सर-ज़ोर–वि॰ (फा॰) (संज्ञा सर ज़ोरी) १ बलवान् । ताक़तवर । २ प्रबल । ज़बरदस्त । ३ दुष्ट । नटखट । उद्दंड । ४ विद्रोही ।

सर-डूब–वि॰ (फा॰ सर+हिं॰ डूबना) १ सिरसे पैरतक डूबा हुआ । शराबोर । लथपथ । २ जल आदि इतना गहरा जिसमें सिर तक आदमी डूब जाय ।

सर-ताज–संज्ञा पुं॰ (फा॰+अ॰) १बहुत श्रेष्ठ । २परम माननीय या पूज्य ।

सरतान–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ केंकड़ा या कर्कट नामक जल-जन्तु । २ कर्क राशि । ३ एक प्रकारका फोड़ा जो बहुत कड़ा होता और बहुत शीघ्रतासे बढ़ता है ।

सर-ता-पा–क्रि॰ वि॰ (फा॰) सिरसे पैरतक । आदिसे अन्त तक ।

सर-ताब–वि॰ दे॰ "सरकश ।"

सरताबी–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) १ विद्रोह । २ उद्दंडता । ३ नमक-हरामी ।

सर-दवाल–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰)

घोड़ेके मुँहपरका वह साज जिसमें लगाम अटकी रहती है । मोहरी । नुकता ।

सरदा–संज्ञा पुं० (फा० सर्दः) एक प्रकारका बहुत बढ़िया खरबूजा ।

सर-दाबा–संज्ञा पुं० (फा० सर्द-आबः) १ ठंडे जलका स्नान । २ पानी ठंडा रखनेका स्थान । ३ ज़मीनके नीचे बना हुआ कमरा । तहख़ाना ।

सरदार–संज्ञा पुं० (फा०) १ नायक । अगुआ । श्रेष्ठ व्यक्ति । २ शासक । ३ अमीर । रईस ।

सरदारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सरदारका पद या भाव ।

सरदी–संज्ञा स्त्री० दे० "सर्दी ।"

सर-नविश्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भाग्यका लेख । २ भाग्य ।

सरनाम–वि० (फा०) प्रसिद्ध ।

सर-नामा–संज्ञा पुं० (फा० सर-नामः) लिफाफे या पत्रके ऊपर लिखा हुआ पता ।

सर-निगूँ–वि० (फा०) १ जिसका मुँह नीचेकी ओर हो । औंधा । २ लज्जित । शरमिन्दा ।

सर-पंच–संज्ञा पुं० (फा०+हिं०) पंचोंमें प्रधान । प्रधान पंच ।

सर-परस्त–वि० (फा०+अ०) (संज्ञा सर-परस्ती) संरक्षक ।

सरे-पेच–संज्ञा पुं० (फा०) पगड़ीके ऊपर लगानेका एक जड़ाऊ गहना ।

सर-पोश–संज्ञा पुं० (फा०) ढकना ।

सर-फ़राज़–वि० (फा०) (संज्ञा सर-फ़राज़ी) १ प्रतिष्ठित । माननीय । २ (वेश्या) जिसके साथ प्रथम समागम हो ।

सरफ़ा–संज्ञा पुं० दे० "सर्फ़ा ।"

सर-ब-मुहर–वि० (फा०) १ जिसपर मोहर लगी हो । बन्द । २ पूरा पूरा । कुल ।

सर-बराह–संज्ञा पुं० (फा०) १ प्रबन्धकर्त्ता । कारिंदा । २ मज़दूरों आदिका सरदार ।

सर-बराह-कार–संज्ञा पुं० (फा० सरबराह+कार) किसी कार्य्यका २ प्रबन्ध करनेवाला । कारिंदा ।

सर-बराही–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सरबराहका कार्य्य या पद । प्रबन्ध । व्यवस्था । बन्दोबस्त ।

सर-ब-सर–क्रि० वि० (फा०) एक सिरेसे । बिलकुल । सरासर ।

सर-बस्ता–वि० (फा० सर-बस्तः) छिपा हुआ । गुप्त ।

सर-बाज़–वि० (फा०) (संज्ञा सर-बाज़ी) १ जानपर खेलनेवाला । २ वीर । बहादुर ।

सर-बुलन्द–वि० (फा०) (संज्ञा सर-बुलन्दी) १ प्रतिष्ठित । माननीय । २ भाग्यवान् ।

सर-मग़ज़न–संज्ञा पुं० स्त्री० (फा० सर+मग़ज़) १ कठिन परिश्रम । २ माथा-पच्ची । सिर-खपाई । ३ चिन्ता । फ़िक्र ।

सरमद–वि० (अ०) १ मिला हुआ । सम्बद्ध । २ शाश्वत और अनन्त । ३ ईश्वरके प्रेममें मग्न । ४ मस्त । मत्त ।

सर-मस्त–वि० (फा०) (संज्ञा सर-मस्ती) मतवाला। मत्त।

सरमा–संज्ञा पुं० (फा०) जाड़ेके दिन। शीत-काल।

सरमाई–संज्ञा स्त्री० (फा०) जाड़ेमें पहननेके कपड़े। जड़ावर। वि० जाड़ेका। शीत-कालसम्बन्धी।

सरमाया–संज्ञा पुं० (फा० सरमायः) १ मूल-धन। पूँजी। २ धन-दौलत। सम्पत्ति। ३ कारण।

सर-मुख–वि० (फा० सर+हिं० मुख या सं० सन्मुख) सामने।

सरवत–संज्ञा स्त्री० (अ०) सम्पन्नता। वैभव।

सरवर–संज्ञा पुं० (फा०) नेता। नायक। संज्ञा स्त्री० बराबरी।

सरवरे-कायनात–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) १ सारी सृष्टिका प्रधान या नेता। २ मुहम्मद साहबकी एक उपाधि।

सर-शार–वि० (फा०) १ मुँह तक भरा हुआ। लबालब। २ नशेमें चूर। ३ मदमत्त।

सर-सब्ज़–वि० (फा०) (संज्ञा सर-सब्ज़ी) १ हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २ सफल-मनोरथ। ३ प्रसन्न और सन्तुष्ट।

सर-सर–संज्ञा स्त्री० (अ०) आँधी। तेज-हवा।

सरसरी–क्रि० वि० (फा० सरासरी) १ जमकर या अच्छी तरह नहीं। जल्दीमें। २ स्थूल रूपमें। मोटे तौरपर।

सरसाम–संज्ञा पुं० (फा०) सन्निपात नामक रोग।

सरहंग–संज्ञा पुं० (फा०) १ सेना-नायक। २ पहलवान। मल्ल। ३ चोबदार। ४ कोतवाल। ५ सिपाही।

सरहतन्–क्रि० वि० (अ०) स्पष्ट रूपसे। खुल्लम-खुल्ला।

सर-हद–संज्ञा स्त्री० (फा० सर+अ० हद) १ सीमा। २ किसी भूमिकी चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा।

सरा–संज्ञा पुं० (अ०) ज़मीनके नीचेकी मिट्टी। यौ०–**तहत-उस्सरा**=पाताल लोक। संज्ञा स्त्री० दे० "सराय।"

सराई–संज्ञा स्त्री० (फा०) गानेकी क्रिया। गान। यौगिकके अन्तमें। जैसे–**मद्ह-सराई**=गुण-गान।

सराचा–संज्ञा पुं० (फा० सराचः) १ बड़ा खेमा। २ खाँचा।

सरात–संज्ञा स्त्री० दे० "सिरात।"

सरा-परदा–संज्ञा पुं० (फा० सरा-पर्दः) १ शाही दरबार या खेमा। २ वह ऊँची कनात जो खेमेके चारों तरफ परदेके लिये लगाई जाती है। ३ खेमा। डेरा।

सरापा–क्रि० वि० (फा०) सिरसे पैरतक। आदिसे अन्त तक। संज्ञा पुं० वह कविता जिसमें किसीके सिरसे पैर तकके अंगोंका वर्णन हो। नख-शिख।

सराफ़–संज्ञा पुं० (अ० सर्राफ़) १ सोने-चाँदीका व्यापारी। २ बदलेके

लिये रुपये-पैसा रखकर बैठनेवाला दूकानदार।

सराफ़ा—संज्ञा पुं० (अ० सरीफ़ः) १ सराफ़ी काम। रुपये-पैसे या सोने-चाँदीके लेन-देनका काम। २ सराफ़ोंका बाज़ार। कोठी। बैंक।

सराफ़ी—संज्ञा स्त्री० (अ० सर्राफ़ी) चाँदी-सोने या रुपये-पैसेके लेन-देनका रोज़गार। २ महाजनी लिपि। मुंडा।

सराब—संज्ञा पुं०(अ०)१ मरीचिका। मृग-तृष्णा। २ धोखा। छल।

सराय—संज्ञा स्त्री० (अ०) २ घर। मकान। २ यात्रियोंके ठहरनेका स्थान। मुसाफ़िर-ख़ाना।

सरायत—संज्ञा स्त्री०(देश०)१ प्रवेश करना। घुसना। २ प्रभाव। असर

सरासर—अव्य० (फा०) १ एक सिरेसे दूसरे सिरे तक। २ बिल-कुल। ३ साक्षात्। प्रत्यक्ष।

सरासरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तेजी। फुरती। २ शीघ्रता। जल्दी। ३ मोटा अंदाज़। क्रि० वि० १ जल्दीमें। हड़बड़ीमें। २ मोटे तौरपर।

सरासीमा—वि० (फा० सरासीमः) (संज्ञा सरासीमगी) १ चकित। भौचक्का। २ परेशान। विकल।

सराहत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ व्याख्या। टीका। २ स्पष्टता। ३ विशुद्धता।

सरिश्त—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ प्रकृति। स्वभाव। २ गुण। वि० मिला हुआ। मिश्रित।

सरिश्ता—संज्ञा पुं० (फा० सरिश्तः) २ रस्सी। डोरी। २ अदालत। कचहरी। ३ कार्य्यालयका विभाग। महकमा। दफ़्तर। ४ नौकर-चाकर। अहलकार। ५ सम्बन्ध। ताल्लुक़। ६ मेल-जोल।

सरिश्तेदार—संज्ञा पुं० (फा० सर-रिश्तःदार) १ किसी विभागका कर्मचारी। २ अदालतोंमें देशी भाषाओंमें मुक़दमोंकी मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तेदारी—संज्ञा स्त्री०(फा० सर-रिश्तःदारी) सरिश्तेदारका काम, पद या कार्य्यालय।

सरीअ—वि० (अ०) जल्दी या शीघ्रता करनेवाला। संज्ञा पुं० एक प्रकारका छन्द।

सरीअ-उत्तासीर—वि०(अ०) जल्दी तासीर दिखानेवाला। शीघ्र प्रभाव दिखानेवाला।

सरीर—संज्ञा पुं० (अ०) राज-सिंहा-सन। संज्ञा स्त्री० (अ०) वह शब्द जो लिखते समय कलमसे या खोलते-बन्द करते समय किवाड़ोंसे निकलता है।

सरीर-आरा—वि० (अ०+फा०) राजसिंहासनकी शोभा बढ़ाने-वाला।

सरीह—वि० (अ०) प्रकट। स्पष्ट।

सरीहन्—क्रि० वि० (अ०) स्पष्ट रूपसे। साफ़ साफ़। ज़ाहिरा।

सरूर—संज्ञा पुं० दे० "सुरूर।

सरे-दस्त—क्रि० वि० (फा०) १ इस समय। २ तुरन्त।

सरे-नौ—क्रि० वि० (फा०) नये सिरेसे। बिलकुल आरम्भसे।
सरे-मू—वि० (फा०) बालकी नोकके बराबर। ज़रा-सा। बहुत थोड़ा।
सरे-रिश्ता—संज्ञा पुं० दे० "सरिश्ता।"
सरेश—संज्ञा पुं० दे० "सरेस।"
सरे-शाम—संज्ञा स्त्री० (फा०) सन्ध्या। क्रि० वि० सन्ध्या होते ही।
सरेस—संज्ञा पुं (फा० सरेश) एक लसदार वस्तु जो ऊँट भैंस आदिके चमड़े या मछलीके पोटेको पकाकर निकालते हैं। सद्रेस।
सरो—संज्ञा पुं० (फा०) एक सीधा पेड़ जो बगीचोंमें शोभाके लिये लगाया जाता है। बनझाऊ।
सरो-आज़ाद—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका सरो जिसकी शाखाएँ बिलकुल सीधी होती हैं और जो कभी फलता नहीं।
सरो-क़द—वि० (फा० + अ०) जिसका कद या आकार सरोके समान सुन्दर हो (प्रायः प्रेमिकाके लिये प्रयुक्त)।
सरो-क़ामत—वि० दे० "सरो-क़द।"
सरो-कार—संज्ञा पुं० (फा०) १ परस्पर व्यवहारका संबन्ध। २ लगाव।
सरो-चिराग़ाँ—संज्ञा पुं० (फा०) शीशेका एक प्रकारका झाड़ जिसमें बहुत-सी बत्तियाँ जलती हैं।
सरोद—संज्ञा पुं० (फा० सुरोद मि० सं० स्वरोदय) १ गीत। राग। २ कथन। ३ गाना-बजाना। ४ एक प्रकारका बाजा जिसमें बजानेके लिये तार लगे रहते हैं।
सरोश—संज्ञा पुं० दे० "सुरोश।"
सरो-सामान—संज्ञा पुं० (फा० सर व सामान) आवश्यक सामग्री। ज़रूरी चीज़ें या असबाब।
सर्द—वि० (फा०) १ ठंढा। २ सुस्त। काहिल। ढीला। ३ मंद। धीमा। ४ नपुंसक। नामर्द।
सर्द-मिज़ाज—वि० (फा०) (संज्ञा सर्द-मिज़ाजी) १ जिसका मन मुरझाया हुआ हो। २ कठोर-हृदय।
सर्दमेहर—वि० (फा०) (संज्ञा सर्द-मेहरी) निर्दय। कठोर-हृदय।
सर्दाबा—संज्ञा पुं० दे० "सरदाबा।"
सर्दी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सर्द होनेका भाव। ठंढक। शीतलता। २ जाड़ा। शीत। ३ जुकाम। नज़ला।
सर्फ़—संज्ञा पुं० (अ०) १ व्यय। खर्च। २ वह शास्त्र जिसमें वाक्योंकी शुद्धताका विवेचन रहता है। ३ व्याकरण। ४ व्यर्थका और अधिक व्यय। अपव्यय। ५ व्यय। खर्च।
सर्फ़ा—संज्ञा पुं० (अ० सर्फः) १ वृद्धि। अधिकता। २ मितव्यय। कम-खर्ची। ३ खर्च। व्यय।
सर्राफ़—संज्ञा पुं० दे० "सराफ़।"
सलतनत—संज्ञा स्त्री० (अ० सलतनत) १ राज्य। बादशाहत। २ साम्राज्य। ३ इंतज़ाम। प्रबन्ध। ४ सुभीता। आराम।
सलफ़—वि० (अ०) (बहु० असलाफ़) गुज़रा हुआ। बीता

हुआ। गत । संज्ञा पुं० पुराने जमानेके लोग।

सलम–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गल्ले आदिके तैय्यार होनेसे पहले ही उसका मूल्य दे देना जिसमें तैय्यार होनेपर उसका मिलना निश्चित हो जाय। २ शान्ति। ३ सलाम।

सलवात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शुभ कामनाएँ। शुभाकांक्षाएँ। २ सलाम। ३ दुर्वचन। गालियाँ।

सलसल-बोल–संज्ञा पुं० (अ०)मधुमेह नामक रोग।

सला–संज्ञा स्त्री० (अ०) निमन्त्रण। आवाहन।

सलातीन-संज्ञा पुं० (अ०) "सुलतान" का बहु०।

सलाबत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दृढ़ता। मजबूती। २ आतंक।

सलाम–संज्ञा पुं० (अ०) प्रणाम करनेकी क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब। मुहा०–**दूरसे सलाम करना**=किसी बुरी वस्तुके पास न जाना। **सलाम लेना**=सलामका जवाब देना। **सलाम देना**=सलाम करना।

सलाम-अलैकुम–संज्ञा स्त्री०(अ०) सलाम। बन्दगी।

सलामत–वि० (अ०) १ सब प्रकारकी आपत्तियोंसे बचा हुआ। रक्षित। २ जीवित और स्वस्थ। तन्दुरुस्त और जिन्दा। ३ कायम। बर-करार। क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियतसे।

सलामत-रवी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) १ मध्यम मार्गसे चलना। २ कम खर्च करना। मितव्यय।

सलामत-रौ–वि० (अ०+फा०) १ मध्यम मार्गपर चलनेवाला। २ कम खर्च करनेवाला। मितव्ययी।

सलामती–संज्ञा स्त्री०(अ०सलामत) १ रक्षा। बचाव। २ कुशल क्षेम। ३ अस्तित्व। अवस्थिति। ४ एक प्रकारका मोटा कपड़ा।

सलामी–संज्ञा स्त्री० (अ०सलाम+ई प्रत्य०) १ प्रणाम करनेकी क्रिया। सलाम करना। २ सैनिकोंकी प्रणाम करनेकी प्रणाली। ३ तोपों या बन्दूकोंकी बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्तिके आनेपर दागी जाती है। मुहा०–**सलामी उतारना**=किसी के स्वागतार्थ बन्दूकों या तोपोंकी बाढ़ दागना।

सलासत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सलीस होनेका भाव। २ समतल होनेका भाव। ३ कोमलता। नरमी। ४ सुगमता। सहूलियत।

सलासिल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ "सिलसिला" का बहु०। २ बेड़ियाँ। ३ शृंखलाएँ।

सलासी–वि० (अ०) तिकोन।

सलाह–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ नेकी। भलाई। अच्छापन। २ धर्म और नीतिपूर्ण आचरण। ३ सम्मति। परामर्श। राय। मशवरा। ४ विचार। मन्सूबा।

सलाहकार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०)

१ धर्म और नीतिपूर्ण आचरण करनेवाला। २ परामर्श देनेवाला।

सलाहियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ भलाई। अच्छापन। २ समाचार। ३ समझदारी। ४ मुलामियत।

सलीक़ा–संज्ञा पुं० (अ० सलीक़ः) १ काम करनेका अच्छा ढंग। शऊर। तमीज़। २ हुनर। लियाक़त। ३ चाल-चलन। बरताव। ४ तहज़ीब। सभ्यता।

सलीक़ा-मन्द–वि० (अ० सलीक़+फा० मंद प्रत्य०) १ शऊरदार। तमीज़दार। २ हुनरमंद। ३ सभ्य।

सलीब–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सूली। २ उस सूलीका चिह्न जिसपर चढ़ाकर ईसाके प्राण लिए गये थे।

सलीम–वि० (अ०) १ ठीक। दुरुस्त। २ साफ़ दिलका। शुद्ध-हृदय। ३ तन्दुरुस्त। ४ गम्भीर। शांत। ५ सहनशील।

सलीम-उत्तबा–वि० (अ० सलीम-उत्तबऽ) १ कोमल-हृदय। २ धीर और गम्भीर। ३ बुद्धिमान्।

सलीस–वि० (अ०) १ सहज। सुगम। २ मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक–संज्ञा पुं० (अ० सुलूक) १ सीधा मार्ग। २ बरताव। व्यवहार। आचरण। ३ मिलाप। मेल। ४ भलाई। नेकी। उपकार।

सल्ख़–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ खाल खींचनेकी क्रिया। २ शुक्ल पक्षकी द्वितीया।

सल्ब–वि० (अ०) नष्ट। बरबाद।

सल्ले-अला–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक दुरूद या मंत्रका आरंभिक शब्द, जिसका प्रयोग किसी उत्तम वस्तुको देखकर किया जाता है और जिसका अर्थ है—हम अपने पैग़म्बर साहबकी प्रशंसा करते हैं, क्योंकि संसारकी सारी उत्तमताएँ उन्हींकी दयासे प्राप्त होती हैं।

सवाद–संज्ञा पुं० (अ०) १ कालिमा। स्याही। २ नगरके आसपासके स्थान। ३ समझदारी। जहन।

सवानह–संज्ञा पुं० (अ०) "सानहा" का बहु०। घटनाएँ।

सवानह-उमरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) जीवन-चरित्र। जीवनी।

सवानह-निगार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सवानह-निगारी) घटनाएँ या विवरण आदि लिखकर किसी बड़ेके पास भेजनेवाला। संवाद-दाता।

सवाब–संज्ञा पुं० (अ०) १ सत्यता। उत्तमता। २ शुभ कृत्यका फल जो स्वर्गमें मिलेगा। पुण्य। ३ भलाई। वि० ठीक। दुरुस्त।

सवाब-अन्देश–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सवाब-अन्देशी) १ ठीक और वाजिब बात सोचनेवाला। २ परोपकारी।

सवाबिक़–संज्ञा पुं० (अ०) उपसर्ग

जो किसी शब्दके पहले लगता है। जैसे—"सपूत" में "स"।

सवाबित—संज्ञा पुं० बहु० (अ०) आकाशके वे पिंड जो सदा एक ही स्थानपर स्थित रहते हैं। स्थिर तारे।

सवार—संज्ञा पुं० (फा०) १ वह जो घोड़ेपर चढ़ा हो। अश्वारोही। २ अश्वारोही सैनिक। ३ वह जो किसी चीजपर चढ़ा हो। वि० किसी चीजपर चढ़ा या बैठा हुआ।

सवारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ किसी चीजपर विशेषतः चलनेके लिए चढ़नेकी क्रिया। २ सवार होनेकी वस्तु। चढ़नेकी चीज। ३ वह व्यक्ति जो सवार हो। ४ जलूस।

सवाल—संज्ञा पुं० (अ०) १ पूछनेकी क्रिया। २ वह जो कुछ पूछा जाय। प्रश्न। ३ दरखास्त। माँग। ४ निवेदन। प्रार्थना। ५ गणितका प्रश्न जो उत्तर निकालनेके लिए दिया जाता है।

सवालात—संज्ञा पुं०(अ०)"सवाल" का बहु०।

सहन—संज्ञा पुं० (अ०) १ मकानके बीच या सामनेका मैदान। आँगन। २ एक प्रकारका बढ़िया रेशमी कपड़ा।

सहनक—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ छोटा सहन। २ छोटी रकाबी। ३ मुहम्मद साहबकी कन्या बीबी फ़ातिमाके नामकी नियाज़ या फातिहा जिसमें सच्चरित्रा सुहागिनोंको भोजन कराया जाता है।

सहनची—संज्ञा स्त्री० (अ०"सहन" से फा०) दालानके इधर-उधरवाली छोटी कोठरी।

सहन-दार—वि० (अ०+फा०) (मकान) जिसमें सहन या आँगन हो।

सहबा—संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारकी अंगूरी शराब।

सहम—संज्ञा पुं० (फा० सहम) भय। डर। खौफ़। संज्ञा पुं० (अ०) १ तीर। २ भाग। अंश।

सहर—संज्ञा स्त्री० (अ०) (वि० सहरी) १ प्रातःकाल। २ तड़का।

सहर-खेज़—वि० (अ०+फा०) तड़के उठकर लोगोंकी चीजें उठा ले जानेवाला। चोर। उचक्का।

सहर-गही—संज्ञा स्त्री० (अ० सहर+फा० गह) वह भोजन जो निर्जल व्रत करनेके दिन बहुत तड़के किया जाता है। सहरी।

सहरा—संज्ञा पुं० (अ०) १ खाली मैदान। २ जंगल। वन।

सहराई—वि० (अ०) जंगली।

सहरी—वि० (अ०) सवेरेका। संज्ञा स्त्री० दे० "सहर-गही।"

सहल—वि० (अ० सहल) सहज। आसान।

सहल-अंगार—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सहल-अंगारी) १ आलसी। २ *आराम-तलब*।

सहाब—संज्ञा पुं०(अ०)मेघ। बादल।

सहाबा—संज्ञा पुं० (अ० सहाबः) १

मित्र । दोस्त । २ मुहम्मद साहबके घनिष्ठ मित्र । यौ०—**मद्रहे-सहाबा**=दे० "मद्दह ।"

सहाबी-संज्ञा पुं० (अ०) मुहम्मद साहबके घनिष्ठ मित्र और उनके वंशज ।

सहाम-संज्ञा पुं० (अ०) १ भाग । खंड । टुकड़ा । २ तीर ।

सहायफ़-संज्ञा पुं० (अ० "सहीफ़." का बहु०) ग्रन्थ आदि या उनके पृष्ठ ।

सही-वि० (अ० सहीह) १ सत्य । सच । २ प्रामाणिक । यथार्थ । ३ शुद्ध । ठीक । मुहा०—**सही भरना**=मान लेना । ४ हस्ताक्षर । दस्तखत । वि० (फा०) सीधा ।

सहीफा-संज्ञा पुं० (अ० सहीफ़ः) १ पुस्तक । २ पृष्ठ । पेज ।

सही-सलामत-वि० (अ०) १ आरोग्य । भला-चंगा । तन्दुरुस्त । २ जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो ।

सही-सालिम-वि० (अ०) ठीक और पूरा । ज्योंका त्यों ।

सहूलत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ आसानी । २ अदब-कायदा ।

सहूलियत-संज्ञा स्त्री० दे० 'सहूलत ।'

सहो-संज्ञा पुं० (अ० सह्व) भूल-चूक । ग़लती ।

सहो-क़लम-संज्ञा पुं० (अ० सह्व-कलम) भूलसे और का और लिखा जाना ।

सहो-कातिब-संज्ञा पुं० (अ० सह्व-कातिब) लेखककी वह भूल जो प्रतिलिपि करनेवालेसे हो जाय ।

सह्व-संज्ञा पुं० दे० "सहो ।"

सह्वन्- क्रि० वि० (अ०) भूलसे ।

साअत-संज्ञा स्त्री० दे० "साइत ।"

साइक़ा-संज्ञा स्त्री० (अ० साइक़ः) विद्युत् । बिजली ।

साइत- संज्ञा स्त्री० (अ० साअत) १ एक घंटे या ढाई घड़ीका समय । २ पल । लहमा । ३ मुहूर्त । शुभ लग्न ।

साइद-संज्ञा स्त्री० पुं० (अ०) १ बाहु । बाँह । २ कलाई ।

साइब-वि० (अ०) १ पहुँचनेवाला । २ दुरुस्त । ठीक ।

साई-पुं० (अ०) प्रयत्न करनेवाला । उद्योग करनेवाला । संज्ञा स्त्री० (अ० साअत) वह धन जो पेशकारोंका, किसी अवसरके लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है । पेशगी । बयाना ।

साईस -संज्ञा पुं० (फा० सईस) घोड़ोंकी खबरदारी करनेवाला नौकर ।

साक़-संज्ञा स्त्री० (अ०) घुटनेके नीचेका भाग । पिंडली ।

साक़िन-संज्ञा स्त्री० दे० 'साकिन ।'

साकित-वि० (अ०) १ चुप । मौन । २ चुपचाप एक स्थानपर ठहरा हुआ । गति-रहित ।

साक़ित-वि० (अ०) १ गिरने या नष्ट होनेवाला । २ गिरा हुआ । पतित । ३ त्यक्त । निरर्थक ।

साकिन–वि० (अ०) १ एक स्थानपर चुपचाप ठहरा हुआ। २ रहनेवाला। निवासी। ३ (अक्षर) जिसके आगे स्वर न हो। हलन्त।

साक़िन–संज्ञा स्त्री० (अ० साक़ी) वह दुश्चरित्र स्त्री जो लोगोंको भंग और हुक्का आदि पिलाकर जीविका चलाती हो।

साक़िब–वि० (अ०) प्रकाशमान्। चमकता हुआ।

साक़ी–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो दूसरोंको शराब पिलाता हो। २ वह जो हुक्का पिलाता हो। ३ प्रेमिका या प्रियके लिए प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द।

साकूल–संज्ञा पुं० (तु० शाक़ूल) दीवारकी सीध नापनेका साहुल नामक यंत्र।

साख़्त–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ गढ़ने या बनानेकी क्रिया या भाव। बनावट। २ मन-गढ़न्त बात।

साख़्ता–वि० (फा० साख़्तः) बनाया या गढ़ा हुआ।

साग़र–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्याला। कटोरा। २ शराब पीनेका कटोरा या पात्र। मुहा०–**साग़र चलना**=मद्य-पान होना।

सागरी–संज्ञा स्त्री० गुदा।

साचक़–संज्ञा स्त्री० (तु०) मुसलमानोंमें विवाहकी एक रस्म जिसमें विवाहके एक दिन पहले वधूके यहाँ मेंहदी, फूल और सुगंधित द्रव्य भेजे जाते हैं।

साचिक़–संज्ञा स्त्री० दे० "साचक़।"

साज़–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० सज्जा) १ सजावटका काम। २ ठाट-बाट या सजावटका सामान। उपकरण। सामग्री। जैसे–घोड़ेका साज़। ३ वाद्य। बाजा। ४ लड़ाईमें काम आनेवाले हथियार। ५ मेल-जोल। वि० मरम्मत करने या तैयार करनेवाला। बनानेवाला। (यौगिक शब्दोंके अंतमें। जैसे–घड़ी साज़, जिल्दसाज़।)

साज़गार–वि० (फा०) (संज्ञा साज़गारी) १ शुभ। २ ठीक।

साज़-बाज़–संज्ञा पुं० (फा० साज़+बाज़) (अनु०) १ तैयारी। २ मेल-जोल।

साज़-सामान–संज्ञा पुं० (फा०) १ सामग्री। असबाब। २ ठाट-बाट।

साजिद–वि० (अ०) सिजदा या प्रणाम करनेवाला।

साज़िन्दा–संज्ञा पुं० (फा० साज़िन्दः) १ साज़ या बाजा बजानेवाला। सपरदाई। २ समाजी।

साज़िश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ मेल-मिलाप। २ किसीके विरुद्ध कोई काम करनेमें सहायक होना। षड्यंत्र।

साद–संज्ञा पुं० स्त्री० (अ०) अरबी लिपिका चौदहवाँ और उर्दूका उन्नीसवाँ अक्षर। २ ठीक या स्वीकृत होनेका चिह्न। ३ आँख। नेत्र।

सादगी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) १सादा-पन। सरलता। २ निष्कपटता।

सादा–वि० (फ़ा० सादः) १ जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। २ जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। ३ बिना मिलावटका। खालिस। ४ जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। ५ जो कुछ छल-कपट न जानता हो। सरल-हृदय। सीधा। ६ मूर्ख।

सादा-कार–वि० (फ़ा०+अ०) (संज्ञा सादाकारी) हलका, सादा और बढ़िया काम बनानेवाला।

सादात–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ "सैयद" का बहु०। २ सैयद जाति जिसकी उत्पत्ति हज़रत अली और बीबी फ़ातिमासे हुई थी।

सादा-दिल–वि० (फ़ा०) (संज्ञा सादा-दिली) शुद्ध हृदयका।

सादापन–संज्ञा पुं० (फ़ा०+हिं०) सादा होनेका भाव। सादगी। सरलता।

सादा-मिज़ाज–वि० (फ़ा०) (संज्ञा सादा-मिज़ाजी) शुद्ध और सादे स्वभाववाला।

सादा-रू–वि० (फ़ा०) जिसके चेहरे-पर दाढ़ी-मूँछें न हों।

सादा-लौह–वि० (फ़ा०+अ०) (संज्ञा सादा-लौही) १ सीधा-सादा। भोला। २ मूर्ख।

सादिक़–वि०(अ०) (भाव० सादिक़ी) १ सच्चा। २ सत्यनिष्ठ। ३ उपयुक्त। ठीक।

सादिक़-उल-एतक़ाद–वि० (अ०) धर्म्म आदिपर सच्चा और पूरा विश्वास रखनेवाला।

सादिर–वि० (अ०) १ निकलने-वाला। २ जारी होनेवाला। जैसे–हुक्म सादिर होना।

सान–वि० (फ़ा०) समान। तुल्य।

साना–संज्ञा पुं० दे० "सानिअ।"

सानिअ–संज्ञा पुं० (अ०) १ बनाने-वाला। रचयिता। २ कारीगर। यौ०–**सानिअ कुदरत** या **सानिअ मुतलक़**=सृष्टिकर्त्ता। ईश्वर।

सानिया–संज्ञा पुं० (अ० सानियः) पल। क्षण।

सानिहा–संज्ञा पुं० (अ० सानिहः) दुर्घटना।

सानी–वि० (अ०) १ दूसरा। २ जोड़का। मुक़ाबलेका।

साफ़–वि० (अ०) १ जिसमें किसी प्रकारका मल आदि न हो। स्वच्छ। निर्मल। २ शुद्ध। खालिस। ३ निर्दोष। बे-ऐब। ४ स्पष्ट। ५ उज्ज्वल। ६ जिसमें कोई बखेड़ा या झंझट न हो। ७ स्वच्छ। चमकीला। ८ जिसमें छल-कपट न हो। निष्कपट। ९ समतल। हमवार। १० सादा। कोरा। ११ जिसमेंसे अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो। १२ जिसमें कुछ तत्त्व न रह गया हो। मुहा०–**साफ़ करना**= मार डालना। हत्या करना। २ नष्ट करना। बरबाद करना। ३ लेन-देन आदिका निपटना। चुकती। क्रि० वि० १ बिना किसी

प्रकारके दोष, कलंक या अपवाद आदिके। २ बिना किसी प्रकारकी हानि या कष्ट उठाये हुए। ३ इस प्रकार जिसमें किसीको पता न लगे। बिलकुल।

साफ़ा–संज्ञा पुं० (अ० साफ़ः) १ पगड़ी। मुरेठा। मुँड़ासा। २ नित्य पहननेके वस्त्रोंको साबुन लगाकर साफ़ करना। कपड़े धोना।

साफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ रूमाल। दस्ती। २ वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलमके नीचे लपेटते हैं। भाँग छाननेका कपड़ा। छनना।

साबिक़-वि० (अ०) पूर्वका। पहले का। यौ०–**साबिक़-दस्तूर**=जैसा पहले था वैसा ही।

साबिक़ा–संज्ञा पुं० (अ० साबिक़ः) १ मुलाकात। भेंट। २ संबंध। वि० (अ०) पहलेका। साबिक़।

साबित–वि० (अ०) १ साबूत। पूरा। कुल। २ दुरुस्त। ठीक। ३ दृढ़। मज़बूत। जैसे-साबित-कदम। ४ जिसका सबूत मिल चुका हो। प्रामाणिक। ५ एक ही स्थानपर रहनेवाला। स्थिर।

साबिर–वि० (अ०) सब्र करनेवाला। संतोषी। धीरजवाला।

साबुन–संज्ञा पुं० (अ० साबून) रासायनिक क्रियासे प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ़ किये जाते हैं।

साबून–संज्ञा पुं० दे० "साबुन।"

सामा–संज्ञा पुं० (अ० सामिऽ) सुननेवाला। श्रोता।

सामान–संज्ञा पुं० (फा०) १ किसी कार्य्यके साधनकी आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २ माल। असबाब। ३ बंदोबस्त।

सामिरी–संज्ञा पुं० (अ०) सामरा नगरका एक प्रसिद्ध जादूगर।

सायबान–संज्ञा पुं० (फा० सायः-बान) मकानके आगेकी वह छाजन या छप्पर आदि जो छायाके लिये बनाई गई हो।

सायर–वि० (अ० साइर) १ पूरा। सब। २ बाकी बचा हुआ। संज्ञा पुं० १ वह जो खूब सैर करता हो। २ व्यर्थ मारा मारा फिरनेवाला। आवारा। ३ बाहरसे आनेवाले मालका नगरमें लिया जानेवाला महसूल। चुंगी।

सायल-संज्ञा पुं० (अ०) १ सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २ माँगनेवाला। ३ भिखारी। फ़क़ीर। ४ प्रार्थना करनेवाला। उम्मीदवार। आकांक्षी।

साया–संज्ञा पुं० (फा० सायः मि०सं० छाया) १ छाया। मुहा०–**सायेमें रहना**=शरणमें रहना। २ परछाईं। ३ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि। असर। प्रभाव। संज्ञा पुं० (अ० सेमीज) घाँघरेकी तरहका एक जनाना पहनाव।

सायादार–वि० (फा०) जिसकी छाया पड़ती हो। छाया-दार। जैसे–सायादार पेड़।

सार–संज्ञा पुं० (फा०) ऊँट । प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर वाला, समान, पूर्ण और स्थान आदिका अर्थ देता है । जैसे–शर्मसार, खाकसार, शाखसार और कोहसार ।

सार-बान–संज्ञा पुं०(फा०) १ ऊँट हाँकनेवाला । ऊँटपर सवारी करनेवाला ।

सारिक़–संज्ञा पुं० (अ०) चोर । तस्कर ।

साल–संज्ञा पुं० (फा०) वर्ष । बरस । यौ०–**साल-ब-साल**=हर साल ।

साल-खुर्दा–वि० (फा० सालखुर्दः) १ बहुत दिनोंका । २ बुड्ढा ।

साल-गिरह्-संज्ञा स्त्री० (फा०) जन्म-दिवस । बरस-गाँठ ।

साल-तमाम–संज्ञा पुं० (फा०) वर्षका अन्तिम भाग । वर्षकी समाप्ति ।

सालब मिसरी-संज्ञा स्त्री० (अ० सअलब मिस्री) एक प्रकारके पौधेका कन्द जो पौष्टिक होता और दवाके काममें आता है । सुधा-मूली । वीरकन्दा ।

सालम-मिसरी–संज्ञा स्त्री० दे० "सालब मिसरी ।"

सालहा-साल–क्रि० वि० (फा०) बहुत वर्षोंतक । बहुत दिनोंतक ।

साला–वि० (फा० सालः) साल या वर्षका । जैसे–**दो-साला**=दो वर्षका ।

सालाना–वि० (फा० सालानः) सालका । वार्षिक ।

सालार–संज्ञा पुं० (फा०) मार्ग-दर्शक । प्रधान नेता ।

सालार-जंग–संज्ञा पुं० (फा०) १ सेनापति । २ स्त्रीका भाई । साला (परिहास) ।

सालिक–संज्ञा पुं० (अ०) १ यात्री । बटोही । २ धर्म और नीतिपूर्वक आचरण करनेवाला ।

सालिम–वि० (अ०) १ सम्पूर्ण । पूरा । सब । २ नीरोग । तन्दुरुस्त ।

सालियाना–वि० दे० "सालाना ।"

सालिस–वि० (अ०) (भाव० सालिसी) तीसरा । तृतीय । संज्ञा पुं० दो पक्षोंमें समझौता आदि कराने-वाला तीसरा व्यक्ति । पंच ।

सालिस-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) पंच-नामा ।

सालिसी–संज्ञा स्त्री० (अ०) दो पक्षोंमें समझौता करानेका काम । पंचायत ।

साले-कबीसा–संज्ञा पुं० (फा० साले-कबीसः) वह वर्ष जिसमें अधिक मास पड़े । लौंदका साल ।

साले पैवस्ता–संज्ञा पुं० (फा०) विगत वर्ष ।

साले-रवाँ-संज्ञा पुं० दे० "साले-हाल ।"

सालेह–वि० (अ० सालिह) (स्त्री० सालेहा) १ नेक । भला । अच्छा । २ सदाचारी । ३ भाग्यवान् ।

साले-हाल–संज्ञा पुं० (फा०+अ०) प्रचलित वर्ष ।

साहब–वि० (अ० साहिब) (बहु० साहबान) १ वाला । रखनेवाला ।

जैसे—साहबे-इक़बाल, साहबे-जमाल, साहबे-हैसियत । २ स्वामी । मालिक । जैसे—साहबे-तख़्त । संज्ञा पुं० (अ० साहिब) (स्त्री० साहिबा) १ मित्र । दोस्त । २ मालिक । स्वामी । ३ परमेश्वर । ४ एक सम्मानसूचक शब्द । महाशय । ५ गोरी जातिका कोई व्यक्ति ।

साहब-ज़ादा—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) (स्त्री० साहब-ज़ादी) १ भले आदमीका लड़का । २ पुत्र । बेटा ।

साहब-सलामत—संज्ञा स्त्री० (अ०) परस्पर अभिवादन । बंदगी ।

साहबा—संज्ञा स्त्री० (अ०) "साहब" का स्त्री० ।

साहबान—संज्ञा पुं० (अ०) "साहब" का फा० बहु० ।

साहबाना—वि० (अ० साहिब) साहबोंका-सा । साहबोंकी तरहका ।

साहबी—वि० (अ० साहिबी) साहब का । संज्ञा स्त्री० १ साहब-होनेका भाव । २ प्रभुता । ३ बड़ाई । बड़प्पन ।

साहबे-आलम—संज्ञा पुं० (अ०) दिल्लीके मुग़ल शाहज़ादोंकी उपाधि ।

साहबे-क़िरान—संज्ञा पुं० (अ०) १ वह व्यक्ति जिसके जन्मके समय बृहस्पति और शुक्र एक ही राशि में हों । कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा बादशाह होता है । २ तैमूरलंगका एक नाम ।

साहबे-ख़ाना—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) घरका मालिक । गृहस्वामी ।

साहिब—संज्ञा पुं० दे० "साहब" ।

साहिबा—संज्ञा स्त्री० (अ०) "साहबका" स्त्री० ।

साहिबी—संज्ञा स्त्री० (अ० साहिब) १ साहबका भाव । २ स्वामित्व ।

साहिर—संज्ञा पुं० (अ०) (स्त्री० साहिरा) (भाव० साहिरी) जादूगर ।

साहिल—संज्ञा पुं० (अ०) समुद्र या नदी आदिका तट । किनारा ।

सिजाफ़—संज्ञा पुं० (फा० सिजाफ़) १ कपड़ोंपरका हाशिया । गोट । किनारा । २ वह घोड़ा जो आधा सब्ज़ा और आधा सफ़ेद हो ।

सिंजाब—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका पशु जिसकी खालकी पोस्तीन बनती है ।

सिकंजबीन—संज्ञा स्त्री० (फा०) सिरके या नीबूके रसमें पका हुआ शरबत ।

सिक़ा—संज्ञा पुं० (अ० सिक़ः) विश्वसनीय व्यक्ति । मातबर आदमी ।

सिक्कए-क़ल्ब—संज्ञा पुं० (अ०) जाली या नक़ली सिक्का ।

सिक्का—संज्ञा पु० (अ० सिक्कः) १ मुहर । छाप । ठप्पा । २ रुपये-पैसे आदिपरकी राजकीय छाप । मुद्रित । चिह्न । ३ टकसालमें ढला हुआ धातुका वह टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्यका धन माना जाता है । रुपया, पैसा

आदि । मुद्रा । मुहा०—**सिक्का बैठना या जमना**=अधिकार स्थापित होना । २ आतंक जमना । ३ रोब जमना । ४ पदक । मुहरपर अंक बनानेका ठप्पा ।

सिक्का-रायज-उल्-वक्त—संज्ञा पुं० (अ०) वह सिक्का जो इस समय प्रचलित हो । प्रचलित सिक्का ।

सिक़्ल—संज्ञा पुं० (अ०) १ भार । बोझ । २ गरिष्ठता ।

सिग़र—संज्ञा पुं० (अ०) छोटाई । छोटापन । यौ०—**सिग़र-सिन**=छोटी उम्रका । ना-बालिग़ ।

सिजदा—संज्ञा पुं० (अ० सिज्दः) प्रणाम । दंडवत । नमस्कार । यौ०—**सिजदए शुक्र**—ईश्वरको धन्यवाद देनेके लिये उसे नमस्कार करना ।

सिजदा-गाह—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) १ सिजदा या दंडवत करनेका स्थान । लकड़ी या मिट्टी आदिकी वह गोल टिकिया जिसपर शीया लोग नमाज़ पढ़ते समय सिजदा करते हैं ।

सितम—संज्ञा पुं० (फा०) १ ग़ज़ब । अनर्थ । २ जुल्म । अत्याचार ।

सितम ज़दा—वि० (फा०) जिसपर सितम हुआ हो । अत्याचार-पीड़ित ।

सितम-ज़रीफ़—वि० (फा०+अ०) (संज्ञा सितम-ज़रीफ़ी) हँसी-हँसीमें ही भारी अत्याचार करनेवाला ।

सितम-गर—वि० (फा०) सितम या अत्याचार करनेवाला । संज्ञा पुं० (फा०) ज़ालिम । अन्यायी ।

सितम-गार—वि० दे० "सितम-गर ।"

सितम-शिआर—वि० (फा०+अ०) बराबर सितम करनेवाला । अत्याचारी ।

सितम-रसीदा—दे० "सितम-ज़दा ।"

सितार—संज्ञा पुं० (फा० सेह+तार सं० सप्त + तार) एक प्रकारका प्रसिद्ध बाजा जो तारोंको उँगलीसे झनकारनेसे बजता है ।

सितारा—संज्ञा पुं० (फा० सितारः) १ तारा । नक्षत्र । २ भाग्य । प्रारब्ध । नसीब । मुहा०—**सितारा चमकना या बलंद होना**=भाग्योदय होना । अच्छी किस्मत होना । ३ चाँदी या सोनेके पत्तरकी बनी हुई छोटी गोल बिंदी जो शोभाके लिए चीज़ोंपर लगाई जाती है । चमकी । संज्ञा पुं० दे० "सितार ।"

सितारा-शनास—संज्ञा पुं० (फा०) तारे पहिचाननेवाला । ज्योतिषी ।

सितार-हिन्द—संज्ञा पुं० (फा० सितारए-हिन्द) एक उपाधि जो सरकारकी ओरसे दी जाती है ।

सिद्क़—संज्ञा पुं० (अ०) सत्यता ।

सिद्दीक़—वि० (अ०) बहुत ही सच्चा । परम सत्यनिष्ठ ।

सिन—संज्ञा पुं० (अ०) उमर । अवस्था । वयस ।

सिन-बुलूग़त—संज्ञा पुं० (अ०) १ वयस्क होनेकी अवस्था । बालिग़ होनेकी उम्र । २ यौवन । जवानी ।

सिन-रसीदा—वि० (अ०+फा०) बुड्ढा। वृद्ध। बुजुर्ग।

सिन-शऊर—दे० "सिन-बुलूग़।"

सिनान—संज्ञा स्त्री० (फा०) तीर या बरछी आदिकी नोक।

सिन्दान—संज्ञा पुं० (फा०) निहाई। घन।

सिपन्द—संज्ञा पुं० दे० "अस्पन्द।"

सिपर—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ ढाल। २ रक्षा करनेवाली वस्तु। आड़।

सिपस्ताँ—संज्ञा पुं० (फा०) लिसोड़ा या लसूड़ा नामक फल।

सिपह—संज्ञा स्त्री० (फा०) सेना।

सिपह-गरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) सैनिकका काम।

सिपह्र—संज्ञा पुं० (फा०) १ गोला। गोल। २ आकाश।

सिपह-सालार—संज्ञा पुं० (फा०) सेनापति।

सिपारा—संज्ञा पुं० (फा० सीपारः) कुरानके तीस विभागों या अध्यायों-मेंसे कोई एक विभाग या अध्याय।

सिपास—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कृतज्ञता। धन्यवाद। २ प्रशंसा।

सिपास-गुज़ारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) कृतज्ञता प्रकट करना। धन्यवाद देना।

सिपास-नामा—संज्ञा पुं० (फा०) अभिनन्दन-पत्र।

सिपाह—संज्ञा स्त्री० (फा०) सेना।

सिपाह-गरी—संज्ञा स्त्री० (फा०) सिपाहीका काम या पेशा।

सिपाहियाना—वि० (फा० सिपाहियानः) सिपाहियोंकी तरहका।

सिपाही—संज्ञा पुं० (फा०) १ सैनिक। शूर। २ कान्स्टेबिल। तिलंगा।

सिपुर्द—संज्ञा स्त्री० दे० "सपुर्द।"

सिफ़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० सिफ़ात) १ विशेषता। गुण। २ लक्षण। ३ स्वभाव।

सिफ़र—संज्ञा पुं० (अ०) १ खाली होनेका भाव। अवकाश। २ शून्य। सुन्ना। बिन्दी।

सिफ़लगी—संज्ञा स्त्री० (अ० सिफलः) सिफ़ला होनेका भाव। पाजीपन। कमीनापन।

सिफ़ला—वि० (अ० सिफ़लः) नीच। कमीना। पाजी।

सिफ़ली—वि० (अ०) घटिया। छोटे दरजेका।

सिफ़ात—संज्ञा स्त्री० (अ०) "सिफ़त" का बहु०।

सिफ़ाती—वि० (फा०) सिफ़त या गुणसम्बन्धी।

सिफ़ारत—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सफ़ीर या दूतका पद, भाव या कार्य। २ वे राजदूत आदि जो सन्धि अथवा किसी विषयका निर्णय करनेके लिये एक राज्यकी ओरसे दूसरे राज्यमें भेजे जायँ।

सिफ़ारिश—संज्ञा स्त्री० (फा०) किसीके दोष क्षमा करनेके लिये या किसीके पक्षमें कुछ कहना सुनना।

सिफ़ारिशी—वि० (फा०) १ जिसमें सिफ़ारिश हो। २ जिसकी सिफ़ारिश की गई हो।

सिक़्ल–वि० (फा०) मोटा। दबीज़। गफ़।

सिब्त–संज्ञा पुं० (अ०) वंशज। सन्तान औलाद।

सिम्त–संज्ञा स्त्री० दे० "सम्त।"

सियह–वि० (फा०) १ "सियाह"का संक्षिप्त रूप। काला। कृष्ण। २ अशुभ। बुरा। ख़राब। ("सियह"-के यौगिक शब्दोंके लिये दे० "सियाह" के यौगिक।)

सियाक़–संज्ञा पुं०(अ०) १ गणित। हिसाब। २ लिखने या बोलने आदिका ढंग।

सियादत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ नेतृत्व। सरदारी। २ शासन। हुकूमत। ३ बीबी फ़ातिमाके वंशज। सैयदोंकी जाति।

सियासत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ देशकी रक्षा और शासन। २ शासन। प्रबन्ध। ३ धमकी आदि देकर सचेत करना। तंबीह। ४ आतंक। ५ राजनीति।

सियासतदाँ–संज्ञा पुं०(अ०+फा०) (भाव० सियासतदानी) राजनीतिज्ञ।

सियाह–वि० (फा०) १ काला। कृष्ण। २ अशुभ।

सियाह-कार–वि० (फा०) संज्ञा सियाह-कारी) पाप या दुष्कर्म करनेवाला।

सियाह-गोश–संज्ञा पुं०(फा०)चीतेकी तरहका एक छोटा जानवर जिसकी सहायतासे शिकार करते हैं। बन-बिलाव।

सियाह-ज़बाँ–संज्ञा पुं० (फा०) वह जिसके मुँहसे निकली हुई अशुभ बात शीघ्र फलीभूत हो। कलजीभा।

सियाहत–संज्ञा स्त्री०(अ०) यात्रा।

सियाह-ताब–संज्ञा पुं० (फा०) सफ़ेदी या चूनेमें पीसकर मिलाया हुआ कोयला जो दीवारोंपरसे धूएँका रंग दूर करनेके लिये पोता जाता है।

सियाह-पोश–वि०(फा०) जो सोग या मातमके काले या नीले कपड़े पहने हो।

सियाह-बख़्त–वि० (फा०) संज्ञा सियाह-बख़्ती)अभागा। कम्बख़्त।

सियाह-बातिन–वि० (फा०+अ०) जिसका दिल साफ़ न हो। कलुषित-हृदय

सियाह-मस्त–वि० (फा०) (संज्ञा सियाह-मस्ती) बहुत अधिक मस्त। बहुत मतवाला। नशेमें चूर।

सियाहा–संज्ञा पुं० (फा० सियाहः) १ आय-व्ययकी बही। रोज़नामचा। २ सरकारी ख़ज़ानेका वह रजिस्टर जिसमें ज़मींदारोंसे प्राप्त मालगुज़ारी लिखी जाती है।

सियाही–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कालिमा। कालिख। २ लिखनेकी रोशनाई। मसि। स्याही। ३ अन्धकार। अँधेरा। ४ काजल। ५ कलंक। बदनामी।

सिरकंगबीन–संज्ञा स्त्री० (फा०) सिरकेका बनाया हुआ शरबत। सिकंजबीन।

सिरका-संज्ञा पुं० (फा० सिर्कः) धूपमें पकाकर खट्टा किया हुआ ईख आदिका रस।

सिराज-संज्ञा पुं० (अ०) १ सूर्य। २ दीपक। चिराग।

सिरात-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सीधी सड़क। २ दोज़ख़में बना हुआ एक कल्पित पुल जिसे पार करके अच्छे मुसलमान बहिश्त पहुँचेंगे।

सिरिश्क-संज्ञा पुं० (फा०) आँसू।

सिर्फ़-क्रि० वि० (अ०) केवल। वि० १ एकमात्र। अकेला। २ शुद्ध।

सिल-संज्ञा स्त्री० (अ०) क्षय नामक रोग। तपेदिक।

सिलफ़ची-दे० "सिलबची।"

सिलबची-संज्ञा स्त्री० (फा०सैलाबची) हाथ मुँह धोनेका एक प्रकारका बरतन। चिलमची।

सिलसिला-संज्ञा पुं०(अ०सिल्सिलः) १ बँधा हुआ तार। क्रम। परंपरा। २ श्रेणी। पंक्ति। ३ शृंखला। जंजीर। लड़ी। ४ व्यवस्था। तरतीब।

सिलसिला-बन्दी-संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) सिलसिला लगानेकी क्रिया।

सिलसिलेवार-वि० (अ०+फा०) तरतीबवार। क्रमानुसार।

सिलह-संज्ञा पुं० (अ०) १ हथियार। अस्त्र-शस्त्र। २ औज़ार।

सिलह-ख़ाना-संज्ञा पुं० (अ०+फा०)शस्त्रागार।

सिलह-पोश-वि० (अ०+फा०) शस्त्रधारी। हथियार-बन्द।

सिला-संज्ञा पुं० (अ० सिलः) १ पारितोषिक। इनाम। २ प्रभाव। असर। ३ शुभ कार्यका फल या पुरस्कार।

सिलाह-संज्ञा पुं० (अ०) १ युद्ध करनेके अस्त्र-शस्त्र। २ कारीगरोंके औज़ार। संज्ञा स्त्री० मेल-मिलाप।

सिलाह-ख़ाना-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह स्थान जहाँ हथियार रहते हों। शस्त्रागार।

सिलाह-बन्द-वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सिलाह-बन्दी) जो हथियार लिये हुए हो। सशस्त्र।

सिलाह-साज़-वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सिलाह-साज़ी) हथियार या अस्त्र-शस्त्र बनानेवाला।

सिल्क-संज्ञा पुं० (अ०) १ मोतियों आदिकी लड़ी। हार। २ वह तागा जिसमें लड़ी पिरोई रहती है। ३ पंक्ति। ४ सिलसिला।

सिवा-अव्य० (अ०) अतिरिक्त। वि० अधिक। ज़्यादा। फालतू।

सिवाय-अव्य० दे० "सिवा।"

सिह-वि० दे० "सेह।"

सिहर-संज्ञा पुं० दे० "सेहर।"

सी-वि० (फा०) तीस।

सीख़-संज्ञा स्त्री० (फा०) लोहेका लम्बा पतला छड़। तीली।

सीख़चा-संज्ञा पुं० (फा० सीख़चः) १ लोहेकी वह सींक जिसपर मांस लपेटकर भूनते हैं। २ लोहेका छड़।

सीग़ा-संज्ञा पुं० (अ० सीग़ः) १

साँचेमें ढालनेकी क्रिया। २ विभाग। महकमा। ३ व्याकरणमें कारक, पुरुष, लिंग और वचन। मुहा०—**सीग़ा गरदानना**=किसी क्रियाके भिन्न भिन्न रूप कहना (व्या०)।

सीना—संज्ञा पुं० (फा० सीनः) १ छाती। वक्षस्थल। २ स्तन।

सीना-काबी—सज्ञा स्त्री० (फा०) बहुत कठोर परिश्रम।

सीना-कोबी—संज्ञा स्त्री० (फा०) छाती पीटकर मातम करना या सोग मनाना।

सीना-ज़न—संज्ञा पुं० (फा०) जो मुहर्रममें छाती पीटनेका काम करता हो।

सीना-ज़नी—दे० "सीना-कोबी।"

सीना-ज़ोर—वि० (फा०)(संज्ञा सीना-ज़ोरी) जबरदस्त। अत्याचारी।

सीना-बन्द—संज्ञा पुं० (फा०) १ स्त्रियोंके पहननेकी चोली। अँगिया। २ एक प्रकारकी कुरती जिससे छाती गरम रहती है। ३ घोड़ेकी पेटी या तंग।

सीना-सिपर—क्रि० वि० (फा०)सीना सामने करके। मुक़ाबलेमें।

सीनी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक प्रकारकी थाली। २ किश्ती।

सी-पारा—संज्ञा पुं० (फा० सी-पारः) कुरानका कोई तीसवाँ अंश या अध्याय।

सीम—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ चाँदी। रूपा। २ सम्पत्ति। दौलत।

सीम तन—वि० (फा०) जिसका रंग चाँदीकी तरह सफ़ेद या गोरा हो (प्रेमिकाके लिए प्रयुक्त)।

सीमाब—संज्ञा पुं० (फा०) पारा।

सीमाबी—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका कबूतर।

सीमीं—वि० (फा०) चाँदीका।

सी-मुर्ग़—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकार-का कल्पित पक्षी।

सीरत—संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० सियर) १ स्वभाव। आदत। २ गुण। विशेषता।

सुक़्म—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ रोग। बीमारी। २ दुःख। ३ दोष।

सुकूत—संज्ञा पुं० (अ०) मौन। चुप्पी। खामोशी।

सुक़ूत—संज्ञा पुं० (अ०) १ गिरना। च्युत होना। २ किसी शब्दका छन्दकी लयमें ठीक न बैठना।

सुकून—संज्ञा पुं० (अ०) १ स्थिर होना। ठहरना। २ मनकी शान्ति।

सुकूनत—संज्ञा स्त्री० दे० "सकूनत।"

सुकूरा—संज्ञा पुं० (फा० मि० हिं० सकोरा) मिट्टीका छोटा प्याला। सकोरा। कसोरा।

सुक्कान—संज्ञा पुं० (अ०) नावकी पतवार।

सुक्र—संज्ञा पुं० (अ०) नशेकी मस्ती। खुमार।

सुख़न—संज्ञा पुं० दे० "सख़ुन।"

सुख़ुन—संज्ञा पुं० दे० "सख़ुन।"

सुग़रा—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ छोटी कन्या। २ छोटी वस्तु।

सुतून—संज्ञा पुं० (फा०) स्तम्भ।

सुदूर-संज्ञा पुं० (फा०) १ "सद्र" का बहु०। २ जारी या प्रचलित होना।
सुद्दा-संज्ञा पुं० (अ० सुद्दः) पेटके अन्दर जमा हुआ सूखा मल।
सुन्नत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रथा। प्रणाली। २ वह बात या कार्य जो मुहम्मद साहबने किया हो। ३ मुसलमानोंकी वह प्रथा जिसमें बालककी इन्द्रियका ऊपरी चमड़ा काटा जाता है। मुसलमानी। खतना।
सुन्नी-संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानोंका एक भेद जो चारों खलीफाओंको प्रधान मानता है। चारयारी।
सुपुर्द-संज्ञा स्त्री० दे० "सपुर्द।"
सुपेद-वि० दे० "सफ़ेद।"
सुपेदा-संज्ञा पुं० (फा० सपेदः) जस्ते या राँगेका फुँका हुआ चूर्ण जो प्रायः दवा और रँगाईके काममें आता है। सफ़ेदा।
सुपेदी-संज्ञा स्त्री० (फा०) सुपेद) "सुपेद"का भाव०।
सुफ़रा-संज्ञा पुं० (अ० सुफ़रः) १ दस्तर ख़्वान। २ वह पात्र जिसमें खाद्य-पदार्थ रखे जाते हैं। संज्ञा पुं० (फा०) गुदा।
सुफ़ूफ़-संज्ञा पुं० (अ०) "सफ़"का बहु० संज्ञा पुं० दे० "सफ़ूफ़।"
सुबह-संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रातः काल। सबेरा।
सुबह काज़िब-संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रभात या सुबह सादिक़से पहलेका समय, जब कुछ प्रकाश होनेके बाद कुछ देरके लिये फिर अँधेरा हो जाता है।
सुबह-खेज़-वि० (अ० +फा०) १ वह जो बहुत सबेरे उठे। २ वह चोर जो तड़के उठकर यात्रियोंका माल चुरा ले जाता हो।
सुबह दम-क्रि० वि० (अ०+फा०) बहुत सबेरे। तड़के।
सुबह सादिक़-संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रभात जिसके बाद सूर्य निकलता है।
सुबहा-संज्ञा स्त्री० (अ० सुबहः) छोटी जप-माला। सुमिरनी। तसबीह।
सुबहान-वि० (अ०) १ पवित्र। २ स्वतन्त्र। यौ०-**सुबहान-अल्लाः**=मैं पवित्रतापूर्वक ईश्वरका स्मरण करता हूँ। ३ हर्ष या आश्चर्य प्रकट करनेवाला अव्यय।
सुबुक-वि० (फा०) १ हलका। भारीका उलटा। २ सुंदर।
सुबुक-दस्त-वि० (फा०) (संज्ञा सुबुक-दस्ती) बहुत जल्दी काम करनेवाला। फुरतीला।
सुबुक-पोश-वि० (फा०) (संज्ञा सुबुक-पोशी) जिसके कंधेपर कोई भार न हो।
सुबुक-बार-वि० (फा०) (संज्ञा सुबुक-बारी) जिसके ऊपर कोई भार आदि न हो।
सुबुक-सर-वि० (फा०) (संज्ञा सुबुक-सरी) ओछा। तुच्छ। नीच।
सुबुकी-संज्ञा स्त्री० (फा०) १ हलकापन। २ अप्रतिष्ठा। अपमान।

सुबूत–संज्ञा पुं० दे० "सबूत।" संज्ञा पुं० (अ०) वह जिससे कोई बात साबित हो। प्रमाण।

सुभान–वि० दे० "सुबहान।"

सुम–संज्ञा पुं० (फा०) पशुओंका खुर।

सुम्बा–संज्ञा पुं० (फा० सुंबः) १ बढ़इयोंका छेद करनेका बरमा। २ तोपमें बारूद भरनेका गज।

सुम्बुल–संज्ञा पुं० दे० "सम्बुल।"

सुम्बुला–संज्ञा पुं० (अ० सुंबुलः) १ गेहूँ या जौ आदिकी बाल। २ कन्या राशि।

सुम्माक़–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारकी दवा।

सुरअत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ शीघ्रता। तेज़ी। फुरती।

सुरखा–संज्ञा पुं० (फा० सुर्खः) १ वह सफेद घोड़ा जिसकी दुम लाल हो। २ वह घोड़ा जिसका रंग सफेदी या भूरापन लिये काला हो। ३ लाल रंगका कबूतर। ४ मद्य। शराब।

सुरखाब–संज्ञा पुं० (फा०) चकवा। मुहा०–**सुरखाबका पर लगना**=विलक्षणता या विशेषता होना। अनोखापन होना।

सुरना–संज्ञा पुं० (फा०) रौशन-चौकीके साथ बजनेवाली नफीरी।

सुरनाई–संज्ञा पुं० (फा०) सुरना या नफीरी बजानेवाला।

सुरफ़ा–संज्ञा पुं० (फा० सुर्फः) खाँसी। कास रोग।

सुरमई–वि० (फा०) सुरमेके रंगका नीला। संज्ञा पुं० एक प्रकारका नीला रंग।

सुरमगीं–वि० (फा०) (आँख) जिनमें सुरमा लगा हो।

सुरमा–संज्ञा पुं० (फा० सुरमः) नीले रंगका एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखोंमें लगाया जाता है।

सुराग़–संज्ञा पुं० (तु०) १ टोह। पता। ढूँढ़नेकी क्रिया। तलाश।

सुराग़-रसाँ–वि० (तु०+फा०) (संज्ञा सुराग-रसानी) टोह या पता लगानेवाला।

सुराग़ी–वि० दे० "सुराग-रसाँ।"

सुराही–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ जल रखनेका एक प्रकारका प्रसिद्ध पात्र। २ बाजू, जोशन आदिमें घुंडीके ऊपर लगानेवाला सुराहीके आकारका छोटा टुकड़ा।

सुराही-दार–वि० (अ०+फा०) सुराहीकी तरहका गोल और लम्बोतरा।

सुरीन–संज्ञा पुं० (फा०) १ चूतड़। नितम्ब। २ पुट्ठा।

सुरूर–संज्ञा पुं० (फा०) १ आनंद। प्रसन्नता। २ हलका नशा।

सुरैया–संज्ञा पुं० (अ०) कृत्तिका-पुंज। झुमका (नक्षत्र)।

सुरोद–संज्ञा पुं० दे० "सरोद।"

सुरोश–संज्ञा पु० (फा०) १ शुभ समाचार लानेवाला। देवदूत। २ हज़रत जिबरईलका एक नाम।

सुर्ख़–वि० (फा०) रक्त वर्णका। लाल। संज्ञा पुं० गहरा लाल रंग।

सुर्ख़-बेद—संज्ञा स्त्री० (फा०) बेद-मजनूँ नामक वृक्ष ।

सुर्ख़-रू—वि० (फा०) (संज्ञा सुर्ख़-रूई) १ तेजस्वी । कांतिवान् । २ प्रतिष्ठित । ३ सफलता प्राप्त करनेके कारण जिसके मुँहकी लाली रह गई हो ।

सुर्ख़ी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ लाली । अरुणता । २ लेख आदिका शीर्षक । ३ रक्त । लहू । खून । ४ दे० "सुरखी ।"

सुर्रा—संज्ञा पुं० (अ० सुर्र:) रुपये रखनेकी थैली । तोड़ा ।

सुलतान—संज्ञा पुं० (अ० सुल्तान) बादशाह ।

सुलताना—संज्ञा स्त्री० (अ० सुल्तान:) सुलतानकी पत्नी । सम्राज्ञी ।

सुलतानी—वि० (अ०) सुलतान-सम्बंधी । सुलतानका ।

सुलफ़ा—संज्ञा पुं० (फा० सुल्फ़:) १ वह तमाखू जो चिलममें बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है । २ चरस ।

सुलह—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मेल । २ वह मेल जो किसी प्रकारकी लड़ाई समाप्त होनेपर हो ।

सुलह-कुल—संज्ञा स्त्री० (अ०) यह मानकर कि सब धर्मोंका उद्देश्य एक ईश्वर-प्राप्ति है, किसी धर्मके अनुयायीसे शत्रुता या विरोध न करना । संज्ञा पुं० १ उक्त सिद्धांत-को माननेवाला आदमी । २ वह जो सबसे मेल-मिलाप रखता हो ।

सुलह-नामा—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह काग़ज़ जिसपर परस्पर लड़ने-वाले राजाओं, राष्ट्रों, दलों या व्यक्तियोंकी ओरसे मेलकी शर्तें लिखी रहती हैं । संधि-पत्र ।

सुलूक—संज्ञा पुं० दे० "सलूक ।"

सुलेमान—संज्ञा पुं० (अ०) १ यहूदियोंका एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैग़म्बर माना जाता है । २ एक पहाड़ जो बलोचिस्तान और पंजाबके बीचमें है ।

सुलेमानी—संज्ञा पुं० (अ०) १ वह घोड़ा जिसकी आँखें सफेद हों । २ एक प्रकारका दोरंगा पत्थर । वि० सुलेमानका । सुलेमान-सम्बन्धी ।

सुल्तान—संज्ञा पुं० दे० "सुलतान ।"

सुल्ब—संज्ञा पुं० (अ०) १ रीढ़की हड्डियाँ । २ कुलीनता । ३ सन्तान । वंश ।

सुवैदा—संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकार-का कल्पित काला बिन्दु जो हृदय या दिलपर माना जाता है ।

सुस्त—वि० (फा०) १ दुर्बल । कम-जोर । २ चिन्ता आदिके कारण निस्तेज । उदास । हत-प्रभ । ३ जिसकी प्रबलता या गति आदि घट गई हो । ४ जिसमें तत्परता न हो । आलसी । ५ धीमा ।

सुस्ती—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सुस्त होनेका भाव । २ आलस्य ।

सुहेल—संज्ञा पुं० (अ०) एक कल्पित तारा, जिसके विषयमें प्रसिद्ध है कि यह यमन देशमें दिखाई देता

है और उसके उदित होनेपर चमड़ेमें सुगंधि आ जाती है और सब जीव मर जाते हैं ।

सू–वि० (अ० सूऽ) बुरा । खराब । संज्ञा स्त्री० १ बुराई । खराबी । दोष । २ विपत्ति । आफ़त । संज्ञा स्त्री० (फा०) १ दिशा । २ ओर । तरफ़ ।

सूए-ज़न–संज्ञा पुं० (अ०) किसीके सम्बन्धमें मनमें द्वेष या बुरा विचार रखना । बद-गुमानी ।

सूए-मिज़ाजी–संज्ञा स्त्री० (अ०) रुग्णावस्था । बीमारी ।

सूए-हज़्मी-संज्ञा स्त्री० (अ०) बदहज़मी । अनपच ।

सूज़ाक– संज्ञा पुं० (फा०) मूत्रेंद्रियका एक प्रदाह-युक्त रोग । औपसर्गिक प्रमेह ।

सूद–संज्ञा पुं० (फा०) १ फ़ायदा । लाभ । २ भलाई । खूबी । ३ ब्याज । वृद्धि ।

सूदी–वि० (फा०) सूदपर लिया या दिया जानेवाला (रुपया) ।

सूफ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ ऊन । २ ऊनी कपड़ा । ३ एक प्रकारका पशमीना । ४ वह कपड़ा जो देशी स्याहीकी दावातमें रहता है ।

सूफ़-पोश–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) फ़क़ीर जो प्रायः कम्बल ओढ़ते हैं ।

सूफ़ार–संज्ञा पुं० (फा०) १ तीरमेंका वह छेद या शिगाफ़ जो पीछेकी ओर होता है। तीरकी चुटकी । सूईका छेद या नाका ।

सूफ़ियाना–वि० (अ० "सूफ़ी" से फा० सूफ़ियानः) १ सूफ़ियोंसे सम्बन्ध रखनेवाला। सूफ़ियोंकासा। २ हलका, बढ़िया और सुन्दर ।

सूफ़ी–संज्ञा पुं० (अ०) १ वह जो कम्बल या पशमीना ओढ़ता हो । २ बहुत उदार विचारोंवाले मुसलमानोंका एक सम्प्रदाय ।

सूबा–संज्ञा पुं० (अ० सूबः) १ किसी देशका कोई भाग । प्रान्त । प्रदेश । २ दे० "सूबेदार ।"

सूबाजात–"सूबा" का बहु० ।

सूबेदार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ किसी सूबे या प्रांतका शासक । २ एक छोटा फ़ौजी ओहदा ।

सूबेदारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) सूबेदारका ओहदा या पद ।

सूरंजान–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारकी जड़ी । जंगली सिंघाड़ा ।

सूर–संज्ञा पुं० (अ०) १ नरसिंहा नामक बाजा जो फूँककर बजाया जाता है । करनाई। २ मुसलमानोंके अनुसार वह नरसिंहा जो हज़रत असाफ़ील प्रलय या क़यामतके दिन सब मुरदोंको जिलानेके वास्ते बजावेंगे । संज्ञा पुं० (फा०) १ खुशी । आनन्द । प्रसन्नता। २ लाल रंग । ३ घोड़े, ऊँट आदिका वह खाकी रंग जो कुछ कालापन लिये होता है ।

सूरए-इखलास–संज्ञा पुं०स्त्री० (अ०) कुरानका ११२ वाँ सूरा या अध्याय ।

सूरए-यासीन–संज्ञा स्त्री०पुं० (अ०) क़ुरानका एक अध्याय जो उस

समय पढ़ा जाता है जब किसीको मरनेके समय विशेष कष्ट होता है।

सूरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ रूप। आकृति। शक्ल। मुहा०—**सूरत बिगड़ना**=चेहरेकी रंगत फीकी पड़ना। **सूरत बनाना**=१ रूप बनाना। २ भेस बदलना। ३ मुँह बनाना। नाक-भौं सिकोड़ना। **सूरत दिखाना**=सामने आना। २ छवि। शोभा। ३ उपाय। युक्ति। ढंग। ४ अवस्था। दशा। संज्ञा स्त्री० (सं० स्मृति) सुध। स्मरण। वि० (सं० सुरत) अनुकूल। मेहरबान।

सूरत-दार–वि० (अ०+फा०) सुन्दर। खूबसूरत।

सूरतन्–क्रि० वि०(अ०) देखनेमें। ऊपरसे।

सूरत-परस्त–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सूरत-परस्ती) १ केवल रूपकी उपासना करनेवाला। २ मूर्त्ति-पूजक। ३ सौन्दर्योपासक।

सूरत-हराम–वि० (अ०+फा०) जो देखनेमें तो अच्छा पर अन्दरसे निस्सार हो।

सूरा–संज्ञा पुं० (अ० सूरः) कुरान-का कोई अध्याय।

सूराख–संज्ञा पुं० (फा०) छेद।

सूस– संज्ञा स्त्री० (अ०) मुलेठी।

सेब–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध बढ़िया फल जो देखनेमें अमरूद-की तरह पर उससे बहुत बढ़िया होता है।

सेबे-जनखदाँ–संज्ञा पुं०(फा०) छोटी और सुन्दर ठोढ़ी।

सेर–वि० (फा०) १ जिसका पेट भरा हो। २ जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो।

सेर-चश्म–वि० (फा०) (संज्ञा सेर-चश्मी) १ जिसे और कुछ देखने-की अभिलाषा न हो। जो सब कुछ देख चुका हो। २ उदार।

सेर-हासिल–वि० (अ०+ फा०) उपजाऊ। उर्वरा।

सेराब–वि० (फा०) (संज्ञा सेराबी) १ पानीसे सींचा हुआ। २ हरा-भरा। फूला-फला।

सेरी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ "सेर' होनेका भाव। २ तृप्ति। तुष्टि। ३ तसल्ली। इतमीनान।

सेह–वि० (फा० सिह) तीन।

सेहत–संज्ञा स्त्री० (अ० सिहत) १ आरोग्य। तन्दुरुस्ती। २ भूलों आदिकी शुद्धि। सही करना।

सेहत-खाना–संज्ञा पुं०(अ०+फा०) पाखाना। शौचागार।

सेहत-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) १ वह पत्र जिसमें भूलें ठीक की गई हों। शुद्धि-पत्र। आरोग्य-सूचक प्रमाणपत्र।

सेहत-बख्श–वि० (अ०+फा०) आरोग्य-प्रद।

सेह-बन्दी– संज्ञा स्त्री० (फा० सिह-बन्दी) वह किस्त-बन्दी जिसमें प्रति तीसरे मास कुछ नियत धन दिया जाय। संज्ञा पुं० वह कर्म-

चारी जो उक्त प्रकारकी किस्त वसूल करें।

सेह-बरगा–संज्ञा पुं० (फा० सिह-बर्गः) वह फूल जिसमें तीन पत्तियाँ या पँखुड़ियाँ हों।

सेह-मंजिला-वि०(फा०सिह-मंजिलः) तीन खंडका (मकान)।

सेह-माही–वि० (फा०) हर तीसरे महीने होनेवाला। त्रैमासिक।

सेहर–संज्ञा पुं० (अ० सिह्र) जादू। टोना। इंद्रजाल।

सेहर-बयाँ–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा सेहर-बयानी) जिसकी बातोंमें जादूका-सा असर हो।

सेह-शम्बा–संज्ञा पुं० (फा० सिह-शम्बः) मंगलवार।

सैक़ल–संज्ञा पुं० (अ०) हथियारोंको साफ़ करने और उनपर सान चढ़ानेका काम।

सैक़ल-गर-वि०(अ०+फा०) (संज्ञा सैक़लगरी) तलवार, छुरी आदि-पर बाढ़ रखनेवाला। सिकलीगर।

सैद–संज्ञा पुं० (अ०) १ शिकार। आखेट। २ कबूतर-बाजोंका दूसरे के कबूतरको पकड़कर अपने यहाँ बन्द रखना।

सैदानी–संज्ञा स्त्री० (अ० सैयद) सैयद जातिकी स्त्री।

सैदी–संज्ञा पुं० (अ० सैद) १ वे कबूतर-बाज जो आपसमें एक दूसरेके कबूतरको पकड़कर अपने यहाँ बन्द कर रखते हैं। २ शत्रु।

सैफ़–संज्ञा स्त्री० (अ०) तलवार।

सैफ़-ज़बाँ–वि० (अ०+फा०) १ जिसकी बातोंमें विशेष प्रभाव हो। २ व्यर्थकी बातें बकनेवाला। मुँह-फट।

सैफ़ा–संज्ञा पुं० (फा० सैफ़ः) एक प्रकारका बड़ा चाकू।

सैफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकार-का मन्त्र जो पढ़कर नंगी तलवारकी पीठपर इसलिये फूँकते हैं कि शत्रु मर जाय (मुसल०)।

सैयद–संज्ञा पुं० (अ०) १ नेता। सरदार। २ मुहम्मद साहबके नाती हुसैनका वंशज। ३ मुसल-मानोंके चार वर्गोंमेंसे एक।

सैयद-ज़ादा–संज्ञा (अ०+फा०) हुसैनका वंशज। सैयद।

सैयदानी–संज्ञा स्त्री० (अ० सैयद) सैयद जातिकी स्त्री।

सैयाद–संज्ञा पुं० (अ०) (भाव० सैयादी) १ शिकारी। अहेरी। २ कवितामें प्रेमी या प्रेमिकाके लिये प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

सैयार–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो खूब सैर करता हो। सैर करने या घूमने-फिरनेवाला।

सैयारा–संज्ञा पुं० (अ० सैयारः) चलनेवाला तारा या नक्षत्र।

सैयाल–वि० (अ०) बहनेवाला। पानीकी तरह। तरल। पतला।

सैयाह–वि० (अ०) यात्रा करने-वाला। यात्री।

सैयाही–संज्ञा स्त्री० (अ०) यात्रा।

सैर–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मन बहलानेके लिये घूमना-फिरना। २ बहार। मौज। आनन्द। ३

मित्र-मंडलीका कहीं बगीचे आदिमें खान-पान और नाच-रंग। ४ मनोरंजक दृश्य। तमाशा।

सैर-गाह–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) सैर करनेका स्थान। सुन्दर और दर्शनीय स्थान।

सैल–संज्ञा पुं० स्त्री० (अ०) पानीका बहाव। प्रवाह।

सैलाब–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) जलकी बाढ़। जल-प्लावन।

सैलाबची–संज्ञा स्त्री० दे० "चिलमची।"

सैलाबी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ तरी। नमी। २ वह भूमि जो नदीकी बाढ़से सींची जाती हो। ३ जल-प्लावन। बाढ़।

सोख़्त–संज्ञा पुं० (फा०) १ सूजन। शोक। २ ताश या गंजीफेका एक प्रकारका जूआ। वि० निकम्मा।

सोख़्तगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ सूजन। शोथ। २ कष्ट। पीड़ा। ३ रंज। खेद। दुःख।

सोख़्तनी–संज्ञा स्त्री० (फा०) जलने या जलानेके योग्य।

सोख़्ता–वि० (फा० सोख़्तः) १ जला हुआ। दग्ध। २ जिसका जी जला हो। बहुत दुःखी। संज्ञा पुं० १ एक प्रकारका खुरदुरा काग़ज़ जो स्याही सोख लेता है। २ बारूदमें रँगा हुआ वह कपड़ा जिसपर चकमक रगड़नेसे बहुत जल्दी आग लग जाती है।

सोख़्ती–संज्ञा० स्त्री० दे० "सोख़्तगी।"

सोग–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० शोक) १ किसीके मरनेका दुःख। शोक। २ मानसिक कष्ट। रंज।

सोगवार–वि० (फा०) दुःखी।

सोगवारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) किसीके मरनेका शोक। मातम।

सोगी–वि० (फा०) शोक मनानेवाला। शोकाकुल। दुःखित।

सोज़–संज्ञा पुं० (फा०) १ जलन। तपिश। २ कष्ट। दुःख। रंज। ३ वे पद्य जो मरसिया आरम्भ होनेसे पहले पढ़े जाते हैं। ४ मरसिया पढ़नेका एक ढंग। यौ०–**सोज़ख़्वाँ**=इस ढंगसे मरसिया पढ़नेवाला।

सोज़न–संज्ञा स्त्री० (फा०) कपड़ा सीनेकी सूई।

सोज़न-कारी–संज्ञा स्त्री० (फा०) सूईका काम।

सोज़नाक–वि० (फा०) जलता हुआ।

सोज़नी–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ एक प्रकारकी बिछानेकी गद्दी जिसपर सूईसे बेल-बूटे बने होते हैं। २ वह कपड़ा जिसपर सूईका बारीक काम किया हो।

सोज़ाँ–वि० (फा०) जलता हुआ।

सोज़िश–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ जलन। २ मानसिक कष्ट।

सोफ़ता–संज्ञा पुं० (हिं० सुभीता) १ एकान्त स्थान। निराली जगह। २ रोग आदिमें कुछ कमी होना।

सोफ़्ता–संज्ञा पुं० दे० "सोफ़ता।"

सोसन–संज्ञा पुं० (फा० सौसन) फ़ारसकी ओरका एक प्रसिद्ध फूलवा पौधा।

सोसनी–वि० (फा० सौसनी) सोसन के फूलके रंगका। लाली लिये नीला।

सोहन–संज्ञा पुं० दे० "सोहान।"

सोहबत–संज्ञा स्त्री० (अ० सुहबत) १ संग। साथ। मुहा०–**सोहबत उठाना**=अच्छे लोगोंकी संगतिमें रहकर कुछ सीखना। २ सम्भोग। स्त्री-संग।

सोहबत दारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) स्त्री-प्रसंग। सम्भोग।

सोहबत-याफ़्ता–वि० (अ०+फा०) जो अच्छे लोगोंकी सोहबतमें बैठ चुका हो। शिक्षित, सभ्य और अनुभवी।

सोहबती–वि० (अ० सुहबत) साथी।

सोहान–संज्ञा पुं० (फा०) रेती नामक औज़ार।

सौगन्द–संज्ञा स्त्री० (फा० मि० हिं० सौगन्ध) शपथ। कसम।

सौगात–संज्ञा स्त्री० (तु०) वह वस्तु जो परदेशसे इष्ट मित्रोंके लिये लाई जाय। भेंट। उपहार।

सौगाती–वि० (तु० सौगात) सौगात या उपहारके रूपमें भेजने योग्य। बहुत बढ़िया।

सौदा–वि० (अ०) काला। स्याह। संज्ञा पुं० शरीरके अन्दरका एक प्रकारका रस। संज्ञा पुं० (फा०) १ पागलपनका रोग। उन्माद। २ प्रेम। प्रीति। इश्क़। ३ ख़याल। धुन। संज्ञा पुं० (तु०) १ क्रय-विक्रयकी चीज़। २ लेन-देन। व्यवहार। ३ क्रय-विक्रय। व्यापार। यौ०–**सौदा-सुलफ़**= ख़रीदनेकी चीज़ें।

सौदाई–संज्ञा पुं० (अ० सौदा) पागल। बावला।

सौदागर–संज्ञा स्त्री० (फा०+तु०) व्यापारी। व्यवसायी। तिजारत करनेवाला।

सौदागरी–संज्ञा पुं० (फा०) व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। रोज़गार।

सौदावी–वि० (अ०) १ जिसके मिज़ाजमें सौदा नामक रस बहुत बढ़ गया हो। २ पागल। ३ दुःखी।

सौर–संज्ञा पुं० (अ०) १ बैल या साँड। २ वृष-राशि।

सौसन–संज्ञा पुं० दे० "सोसन।"

सौसनी–वि० दे० "सोसनी।"

स्तान–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० स्थान) स्थान। जगह। यौगिक शब्दोंके अंतमें। जैसे–हिन्दोस्तान। बोस्तान। बलोचिस्तान।

स्याह–वि० दे० "सियाह।"

स्याही–संज्ञा स्त्री० दे० "सियाही।"

(ह)

हंग–संज्ञा पुं० (फा०) १ गुरुत्व। भारीपन। २ विचार। इरादा। ३ शक्ति। बल। ताक़त। ४ बुद्धिमत्ता। समझदारी। ५ सेना।

हंगाम–संज्ञा पुं० (फा०) १ समय। काल। २ ऋतु। मौसिम। ३ दे० "हंगामा।"

हंगामा–संज्ञा पुं० (फा० हंगामः) १ जन-समूह। भीड़-भाड़। २ वह स्थान जहाँ बाजीगर आदि इकट्ठे

होकर अपना करतब दिखलाते हैं। दंगल। ३ लड़ाई-झगड़ा। दंगा-फ़साद। ४ हो-हल्ला।

हंगामा-आरा-वि० (फा०) (संज्ञा हंगामा-आराई) हंगामा करनेवाला।

हंगामा-परदाज़-दे० "हंगामाआरा।"

हंजार-संज्ञा पुं० (फा०) १ रास्ता। २ रंग-ढंग। ३ चलना। गति।

हइयात-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ बनाया जाना। तैयार किया जाना। २ आकृति। ३ बनावट। ४ ज्योतिष।

हक-संज्ञा पुं० (अ०) खुरचना। छीलना।

हक़-संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० हुक़ूक़) १ किसी वस्तुको अपने कब्ज़ेमें रखने, काममें लाने या लेनेका अधिकार। स्वत्व। २ कोई काम करने या किसीसे करानेका अधिकार। इख़्तियार। मुहा०-हक़में=विषयमें। पक्षमें। ३ कर्त्तव्य।

हक़-उल्लाह-वि० (अ०) ठीक। सत्य। जैसे-हक़-उल्लाह बात कहो।

हक़-तलफ़ी-संज्ञा स्त्री० (अ०) हकका मारा जाना। अन्याय।

हक़-ताला-संज्ञा पुं० (अ० हक़्-तअला) सर्व-श्रेष्ठ, ईश्वर।

हक़ना-संज्ञा पुं० दे० "हुक़ना।"

हक़-नाहक़-क्रि० वि० (अ० "हक़" से उर्दू) अकारण। यों ही। व्यर्थ।

हक़-परस्त-वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हक़-परस्ती) ईश्वरको माननेवाला। आस्तिक।

हकम-संज्ञा पुं० (अ०) न्यायकर्त्ता।

हक़-रसी-संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) न्याय। इन्साफ़।

हक़-शफ़ा-संज्ञा पुं० (अ० हक़-शफ़अऽ) किसी मकान या जायदादको खरीदनेका वह अधिकार जो उसके पड़ोसी होनेके कारण औरोंसे पहले प्राप्त होता है।

हक़-शिनास-वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हक़-शिनासी) १ गुणग्राहक। २ न्यायशील। ३ आस्तिक।

हक़ारत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ घृणा। २ अप्रतिष्ठा। बेइज़्ज़त।

हक़ीक़त-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ तत्त्व। सचाई। असलियत। २ तथ्य। ठीक बात। ३ असल हाल। सत्य-वृत्त। मुहा०-**हक़ीक़तमें**=वास्तवमें। **हक़ीक़त खुलना**=असल बातका पता लगना।

हक़ीक़तन्-क्रि० वि० (अ०) हक़ीक़तमें। वास्तवमें।

हक़ीक़ी-वि० (अ०) १ असली। २ सम्बन्धमें। सगा। अपना। जैसे-**हक़ीक़ी भाई**=सगा भाई।

हकीम--संज्ञा पुं० (अ०) १ बुद्धिमान्। चतुर। २ दार्शनिक। ३ यूनानी चिकित्सा करनेवाला।

हकीमी-संज्ञा स्त्री० (अ० हकीम) यूनानी चिकित्सा।

हक़ीयत-संज्ञा स्त्री० (अ०) हक़दार। या अधिकारी होनेका भाव।

हक़ीर--वि० (अ०) १ दुबला-पतला। दुर्बल। २ तुच्छ। हीन। घृणित।

हकूमत-संज्ञा स्त्री० दे० "हुकूमत।"

हक्का–क्रि० वि० (अ०) ईश्वरकी सौगन्द। परमेश्वरकी शपथ।

हक्काक–संज्ञा पुं० (अ०) नगों आदिपर अक्षर या मोहर खोदनेवाला।

हक्कियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) "हक"-का भाव। हकदारी।

हक्के-तस्नीफ़–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) लेखकका वह अधिकार जो उसकी लिखित पुस्तक या लेख आदिपर होता है।

हक्के-चहारुम–वि० (अ० + फा०) चौथाई हिस्सा या प्राप्य अंश।

हज–संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानोंका काबेके दर्शनके लिये मक्के जाना।

हज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ सौभाग्य। खुश-किस्मती। २ आनन्द। खुशी। ३ मज़ा। लुत्फ़। ४ स्वाद।

हज़फ़–संज्ञा पुं० (अ०) दूर करना। निकालना या हटाना।

हज़म–संज्ञा पुं० दे० "हज़म।"

हजर–संज्ञा पुं० (अ०) पत्थर। प्रस्तर। संग।

हज़र–संज्ञा पुं० (अ०) किसी बातसे बचना। परहेज। संज्ञा पुं० (अ०) व्यर्थकी बकवाद।

हजर-उल्-यहूद–संज्ञा पुं० (अ०) एक प्रकारका पत्थर जो प्रायः दवाके काममें आता है।

हज़रत–संज्ञा पुं० (अ०) १ सामीप्य। नज़दीकी। २ बादशाहों और महात्माओं आदिकी उपाधि। ३ दुष्ट। पाजी (व्यंग्य)।

हज़रत-सलामत–संज्ञा पुं० (अ०) श्रीमान्। हुज़ूर।

हज़रात–संज्ञा पुं० (अ०) "हज़रत"-का बहु०।

हजरे-असवद–संज्ञा पुं० (अ०) एक बड़ा काला पत्थर जो मक्केकी दीवारमें लगा हुआ है और जिसे हज करनेवाले यात्री चूमते हैं।

हज़ल–संज्ञा पुं० (अ० हज़्ल) भद्दा परिहास। फूहड़ दिल्लगी।

हज़ा–सर्व० (अ० हाज़ा) यह। जैसे–**ख़त हज़ा**=यह ख़त।

हजाब–संज्ञा पुं० दे० "हिजाब।"

हजामत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हज्जामका काम। बाल बनानेका काम। क्षौर। २ बाल बनानेकी मज़दूरी। ३ सिर या दाढ़ीके बढ़े हुए बाल जिन्हें कटाना या मुँड़ाना हो। मुहा०–**हजामत बनाना**=१ दाढ़ी या सिरके बाल साफ़ करना या काटना। २ लूटना। धन हरण करना। ३ मारना पीटना।

हज़ार–वि० (फा०) १ जो गिनतीमें दस सौ हो। सहस्र। बहुतसे। अनेक। संज्ञा पुं०–दस सौकी संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००।

हज़ार-चश्म–संज्ञा पुं० (फा०) कर्कट। केंकड़ा।

हज़ार-चश्मा–संज्ञा पुं० (फा०) पीठपर होनेवाला एक प्रकारका बड़ा और भीषण फोड़ा।

हज़ार-दास्ताँ–संज्ञा पुं० (फा०) एक

प्रकारकी बढ़िया बुलबुल। वि०—अच्छी और बढ़िया बातें कहनेवाला। एक कहानीकी पुस्तक।

हज़ार-पा—संज्ञा पुं० (फा०) कनखजूरा।

हज़ारहा—वि० (फा०) हजारों।

हज़ारा—संज्ञा पुं० (फा० हज़ार:) १ एक प्रकारका बड़ा गेंदा (फूल)। २ सीमा प्रान्तकी एक जातिका नाम।

हज़ारी—संज्ञा पुं० (फा०) एक हजार सैनिकोंका सेनापति।

हज़ारी-रोज़ा—संज्ञा पुं० (फा०) रज्जब मासकी सत्ताइसवीं तारीखका रोजा (प्रायः स्त्रियाँ यह रोजा रखती हैं और यह मानती हैं कि इस दिन रोजा रखनेसे हजारों रोजोंका पुण्य होता है।)

हज़ी—वि० (अ०) दुःखी। चिन्तित।

हज़ीमत—संज्ञा स्त्री० (अ०) पराजय। हार।

हजूम—संज्ञा पुं० दे० "हुजूम।"

हजूर—संज्ञा पुं० दे० "हुजूर।"

हजो—संज्ञा स्त्री० (अ०) निन्दा। शिकायत। बुराई।

हज्ज—संज्ञा पुं० दे० "हज।"

हज्ज़—संज्ञा पुं० दे० "हज्ञ।"

हज्जाम—संज्ञा पुं० (अ०) हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।

हज्जामी—संज्ञा स्त्री० (अ० हज्जाम) हज्जामका काम या पेशा।

हज्जे अकबर—संज्ञा पुं० (अ०) वह हज जो शुक्रवारको पड़नेके कारण बड़ा माना जाता है।

हज्जे-असगर—संज्ञा पुं० (अ०) छोटा या मामूली हज जो शुक्रवारको छोड़कर किसी और दिन पड़े।

हज़्म—संज्ञा पुं० (अ०) मोटाई।

हज़्म—वि० (अ०) १ पेटमें पचा हुआ। २ बेईमानी या अनुचित रीतिसे अधिकार किया हुआ।

हतक—संज्ञा स्त्री (अ०) हेठी। बेइज्जती।

हतक-इज़्ज़त—संज्ञा स्त्री० (अ०) मान-हानि। अप्रतिष्ठा।

हत्ता—अव्य० (अ०) यहाँ तक कि।

हत्तुल्-इमकान—क्रि० वि० (अ०) जहाँतक हो सके। यथा-साध्य।

हत्तुल्-मक़दूर—क्रि०वि०दे० "हत्तुल्-इमकान।"

हद—संज्ञा स्त्री० (अ० हद्द) (बहु० हुदूद) १ किसी चीजकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराईकी सबसे अधिक पहुँच। सीमा। मर्यादा। मुहा०—**अज़-हद**=हदसे ज्यादा। **हद बाँधना**=सीमा निर्धारित करना। २ किसी वस्तु या बातका सबसे अधिक परिमाण जो ठहराया गया हो। मुहा०—**हदसे ज़्यादा**=बहुत अधिक। अत्यन्त। **हद व हिसाब नहीं**=बहुत ज़्यादा। अत्यन्त। ३ किसी बातकी उचित सीमा। मर्यादा।

हदफ़—संज्ञा पुं० (अ०) निशाना। चोट। मार।

हद-बन्दी—संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) बनाना या बाँधना।

हदाया—(अ०) "हदिया"का बहु०।

हदिया–संज्ञा पुं॰ (अ॰ हदियः) (बहु॰ हदाया) १ भेंट । उपहार । नजर । २ वह उत्सव जो किसी विद्यार्थीके कुरानका अध्ययन समाप्त करनेपर होता है और जिसमें उस्तादको पीले कपड़े आदि भेंट किये जाते हैं ।

हदीस–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) (बहु॰ अहादीस) १ नई बात । २ मुसलमानोंके लिये मुहम्मद साहबके बचन और कार्य । मुहा॰-**हदीस खींचना**=शपथ खाना ।

हदूद–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰ हुदूद) "हद" का बहु॰ ।

हद्द–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हद ।"

हनज़ल–संज्ञा पुं॰ (अ॰ हजल) इंद्रायनका फल । इनारू ।

हनोज़–क्रि॰ वि॰ (फा॰) अभीतक । अबतक । इस समयतक ।

हफ़्नज़र–(फा॰ नजर) ईश्वर करे, नजर न लगे । ईश्वर नजर या कुदृष्टिसे बचावे ।

हफ़्त–वि॰ (फा॰ मि॰ सं॰ सप्त) छः और एक । सात ।

हफ़्त अकलीम–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰ +अ॰) सातों देश । सारा संसार ।

हफ़्त-इमाम–संज्ञा पुं॰ (फा॰+अ॰) इस्लामके सात बड़े इमाम ।

हफ़्त-क़लम–संज्ञा पुं॰ (फा॰+अ॰) १ अरबीकी सात प्रकारकी लेख प्रणालियाँ । २ सातों प्रकारकी लेख-प्रणालियाँ जाननेवाला ।

हफ़्त-ज़बान–वि॰ (फा॰) सात जबानें या भाषाएँ जाननेवाला । सप्तभाषाभिज्ञ ।

हफ़्त-दोज़ख़–संज्ञा पुं॰ (फा॰+अ॰) मुसलमानोंके अनुसार सात दोजख या नरक ।

हफ़्तम–वि॰ (फा॰ मि॰ सं॰ सप्तम) गिनतीमें सातके स्थान पर पड़नेवाला । सातवाँ ।

हफ़्ता–संज्ञा पुं॰ (फा॰ हफ़्तः मि॰ सं॰ सप्ताह) सप्ताह ।

हफ़्ताद–वि॰ (फा॰) सत्तर । साठ और दस ।

हब–संज्ञा पुं॰ (अ॰) दाना । बीज ।

हबक़–वि॰ (अ॰) मूर्ख । बेवकूफ़

हबल संज्ञा पुं॰ (अ॰) मक्केकी एक प्राचीन मूर्त्तिका नाम ।

हब्श–संज्ञा पुं॰ (अ॰) हबशियों-के रहनेका देश ।

हबशी–संज्ञा पुं॰ (अ॰) हबश देशका निवासी जो बहुत काला होता है ।

हबाब–संज्ञा पुं॰ दे॰ "हुबाब ।"

हबीब–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ मित्र । दोस्त । २ प्रिय । प्यारा ।

हबूब–संज्ञा पुं॰ (अ॰ "हब" का बहु॰) १ दाने । २ गोलियाँ । संज्ञा पुं॰ (अ॰) हवाका चलना । वायु-प्रवाह ।

हबूत–संज्ञा पुं॰(अ॰) १ ऊपरसे नीचे आना । अवतरण । अवरोह । २ नीची भूमि । ३ रोगके कारण होनेवाली दुर्बलता । ४ हानि ।

हब्बा–संज्ञा पुं॰(अ॰ हब्बः) १ अन्न का दाना । २ बहुत ही अल्प अंश ।

हब्शी–संज्ञा पुं० दे० "हबशी।"
हब्स–संज्ञा पुं० (अ०) १ बन्द या क़ैद रहनेकी अवस्था। २ क़ैद-ख़ाना। कारागार। ३ वह गरमी जो हवा न चलनेके कारण होती है। उम्मस।
हब्स-दम–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) १ दमा या श्वास नामक रोग। २ प्राणायाम।
हब्स-बेजा–संज्ञा पुं० (अ०+फ़ा०) अनुचित रूपसे किसीको कहीं बन्द कर रखना।
हम–क्रि० वि० (फ़ा०) १ भी। २ आपसमें। परस्पर। प्रत्य० (फ़ा० मि० सं० सम) एक प्रत्यय जो शब्दोंके साथ लगकर साथी या शरीकका अर्थ देता है। जैसे–**हम-दर्द**=दर्द या विपत्तिमें साथ देनेवाला।
हम-असर- वि० (फ़ा०+अ०) सम-कालीन।
हम-अहद–वि० (फ़ा०+अ०) सम-कालीन।
हम-आग़ोश–वि० (फ़ा०) (संज्ञा हम-आग़ोशी) गलेसे लगा हुआ। जो आलिंगन किये हो।
हम-आवाज़–वि० (फ़ा०) १ साथमें मिलकर शब्द निकालनेवाला। २ साथ मिलकर बोलनेवाला।
हम-आवुर्द–वि० (फ़ा०) प्रतिपक्षी। प्रतिद्वन्द्वी।
हम-आहंग-वि०दे०"हम-आवाज़।"
हम-उम्र–वि० (फ़ा०+अ०) सम-वयस्क।
हम-कनार–वि०दे०"हम-आग़ोश।"
हम-क़दम-वि० (फ़ा०+अ०) साथी।
हम-कलाम–वि० (फ़ा०+अ०) साथमें बातें करनेवाला।
हम-कलामी–संज्ञा स्त्री० (फ़ा०+अ०) बात-चीत।
हम-कासा–वि० दे० "हम-प्याला।"
हम-क़ौम–वि० (फ़ा० + अ०) सजातीय।
हम-ख़ाना–वि० (फ़ा० हम+ख़ानः) १ घरमें साथ रहनेवाला। एक ही घरमें किसीके साथ रहने-वाला। जोड़ा।
हम-चश्म–वि० (फ़ा०) (संज्ञा हम-चश्मी) बराबरीका दरजा रखने-वाला।
हम-ज़बान–वि० (फ़ा०) बोलने या सम्मति देनेमें साथ देनेवाला।
हम-जलीस–वि० (फ़ा०+अ०) सब कामोंमें साथ उठने-बैठनेवाला। घनिष्ठ मित्र।
हम-ज़ात–वि० (फ़ा०+अ०) एक ही जातिका। सजातीय।
हम-जिन्स–वि० (फ़ा०+अ०) एक ही जाति या प्रकारका।
हम-ज़ुल्फ़–संज्ञा पुं० (फ़ा०)सालीका पति। साढ़ू।
हम-जोली–वि० (फ़ा० हम+जोड़ी) सम-वयस्क।
हम-ता–वि० (फ़ा०) (भाव० हम-ताई) समान। तुल्य।
हम-दम–वि० (फ़ा०) दम या प्राण रहतेतक साथ देनेवाला।
हम-दर्द–वि० (फ़ा०) (संज्ञा हम-

दर्दी) दर्द या विपत्तिमें साथ देनेवाला । सहानुभूति रखनेवाला ।

हम-दस्त—वि० (फा०) १ साथ रहने या काम करनेवाला । २ बराबरीका । साथी ।

हम-दिगर—क्रि० वि० (फा०) आपसमें । परस्पर ।

हम-दीवार—वि० (फा०) पड़ोसी ।

हम-दोश—वि० (फा०) कन्धेसे कन्धा मिलाकर साथ चलनेवाला । बराबरीका । साथी ।

हम-नफ़स—वि० (फा० + अ०) साथी । मित्र ।

हम-नशीं—वि० (फा०) (संज्ञा हम-नशीनी) साथमें उठने-बैठनेवाला ।

हम-नस्ल—वि० (फा०+अ०) एक ही नस्ल या ख़ान्दानका ।

हम-नाम—वि० (फा०) एक ही-सा नाम रखनेवाला ।

हम-निवाला—वि० (फा० हम + निवाल:) साथ बैठकर ख़ानेवाला ।

हम-पल्ला—वि० (फा० हम-पल्ल:) बराबरीका । जोड़का ।

हम-पहलू—वि० (फा०) १ पहलूमें या बराबर बैठा हुआ । २ साथी ।

हम-पा—वि० (फा०) साथ चलनेवाला । साथी ।

हम-पाया—वि० (फा० हम-पाय:) बराबरीका पाया या पद रखनेवाला । समान मर्य्यादा या पदका । बराबरीका ।

हम-पेशा—वि० (फा० हम-पेश:) बराबरीका पेशा करनेवाला । सहव्यवसायी ।

हम-प्याला—वि० (फा० हम प्याल:) एक ही प्यालेमें साथ खाने या पीनेवाला । यौ०—**हम प्याला व हम-निवाला**=साथ १ बैठकर खाने-पीनेवाला । २ घनिष्ठ-मित्र ।

हम-बिस्तर—वि० (फा०) (संज्ञा हम-बिस्तरी) एक ही बिस्तरपर साथमें सोनेवाला । सम्भोग करनेवाला ।

हमम—वि० (अ०) "हिम्मत" का बहु० ।

हम-मकतब—वि० (फा०+अ०) सह पाठी ।

हम-मज़हब—वि० (फा०+अ०) सह-धर्मी ।

हम-रंग—वि० (फा०) समान रंग-रूपवाला ।

हम-राज़—वि० (फा०) राज़ या रहस्य जाननेवाला । (ऐसा घनिष्ठ मित्र) जो सब रहस्य जानता हो ।

हम-राह—वि० (फा०) (संज्ञा हम-राही) राह या रास्तेमें साथ चलनेवाला । सह-यात्री ।

हमल—संज्ञा पुं० (अ०) १ भार । बोझ । २ गर्भ । यौ०—**इस्क़ाते हमल**=गर्भ-पात । ३ मेष राशि ।

हमला—संज्ञा पुं० (अ० हमल:) १ आक्रमण । चढ़ाई । धावा । २ वार । चोट । आघात ।

हमला-आवर—वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हमला-आवरी) आक्रमण-कारी । चढ़ाई करनेवाला

हम-वतन–वि० (फा०+अ०) अपने देशका निवासी। स्वदेशी।

हम-वार–वि० (फा०) समतल। चौरस। क्रि० वि० सदा। नित्य।

हम-वारा–क्रि० वि० (फा० हम-वार:) १ सदा। हमेशा। २ निरन्तर। लगातार।

हम-शक्ल–वि०(फा०+अ०) समान आकृति या रूपवाला।

हम-शीर–संज्ञा स्त्री० दे० "हमशीरा।"

हम-शीरा–संज्ञा स्त्री० (फा० हम+शीर:) बहन। भगिनी।

हम-संग–वि० (फा०) तौल या वज़नमें बराबर।

हम-सदा–वि० (फा०+अ०) साथ मिलकर सदा या आवाज़ देनेवाला।

हम-सफ़र–वि० (फा०+अ०) सफ़र में साथ देनेवाला। सहयात्री।

हम-सफ़ीर–वि० (फा०+अ०) एक ही प्रकारकी बोली बोलनेवाले (पक्षी आदि)।

हम-सबक़–वि० (फा०+अ०) साथमें सबक या पाठ पढ़नेवाला।

हम-सर–वि० (फा०) (संज्ञा हम-सरी) बराबरका। टक्करका।

हम-साज़–संज्ञा पुं० (फा०) मित्र।

हम-सायगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) पड़ोसी होनेका भाव।

हम-साया–संज्ञा पुं०(फा० हम-साय:) (स्त्री० हम-साई) पड़ोसी।

हम-सिन–(फा०+अ०) बराबरकी उमरवाला। सम-वयस्क।

हम-सोहबत–दे० "हम-नशीन।"

हमा–वि० (फा० हम:) कुल। सब।

हमा-तन–क्रि० वि० (फा० हम: तन) १ सिरसे पैरतक। २ कुल। सब।

हम-दाँ–वि० (फा०) (संज्ञा हमा-दानी) सब बातें जाननेवाला। सर्वज्ञ।

हमाम-दस्ता–संज्ञा पुं० दे० "हावन"

हमायल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह परतला जो गलेमें पहना जाता है और जिसमें तलवार लटकती है। २ यज्ञोपवीत या इसी प्रकारकी और कोई वस्तु जो गलेमें पहनी जाय। ३ बहुत छोटे आकारका वह कुरान जो गलेमें तावीजकी तरह पहना जाय।

हमा-शुमा–वि० (हिं० हम+फा० शुमा) हमारे तुम्हारे जैसे सामान्य (लोग)।

हमीदा–वि० (अ० हमीद:) जिसकी प्रशंसा हो। प्रशंसनीय।

हमेशगी–संज्ञा स्त्री० (फा०) हमेशा बना रहनेका भाव।

हमेशा–क्रि० वि० (फा० हमेश:) सदा। नित्य।

हमैयत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रतिष्ठा। इज़्ज़त। २ लज्जा। शर्म।

हम्द–संज्ञा स्त्री० (अ०) ईश्वरकी स्तुति। तारीफ़।

हम्माम–संज्ञा पुं० (अ०) नहानेका स्थान। स्नानागार।

हम्मामी–संज्ञा पुं० (अ०) वह जो हम्माममें लोगोंको स्नान कराता हो।

हम्माल–संज्ञा पुं० (अ०) भार०

हम्माली) बोझ ढोनेवाला । मज़दूर । कुली ।

हया–संज्ञा स्त्री० (अ०) लज्जा ।

हयात–संज्ञा स्त्री० (अ०) जीवन ।

हया-दार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हयादारी) लज्जाशील। शर्मवाला ।

हयामन्द–वि० दे० "हयादार ।"

हयूला–संज्ञा पुं० (अ०) "हइयते उल्ला" का संक्षिप्त रूप । किसी वस्तुका वास्तविक तत्त्व या प्रकृति ।

हर–वि० (फा०) प्रत्येक ।

हर-आईना-क्रि० वि० (फा०) अलबत्ता । अवश्य ।

हरकत–संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० हरकात) १ गति । चाल । हिलना-डोलना । २ चेष्टा । क्रिया । ३ दुष्ट व्यवहार । नटखटपन ।

हरकारा–संज्ञा पुं० (फा० हरकारः) १ चिट्ठी-पत्री ले आनेवाला । २ चिट्ठी रसाँ । डाकिया ।

हर-गाह–क्रि० वि० (फा०) जिस अवस्थामें । जबकि । चूँकि ।

हरगिज़–क्रि० वि० (फा०) कदापि ।

हरचन्द–क्रि० वि० (फा०) यद्यपि । अगरचे ।

हरज–संज्ञा पुं० दे० "हर्ज ।"

हरजा–संज्ञा पुं० दे० "हर्ज ।"

हरज़ा–वि० (फा० हरज़ः) निरर्थक । व्यर्थका । वाहियात । खराब ।

हर-जाई–वि० (फा०) १ जो कभी कहीं और कभी वहीं रहे । इधर-उधर मारा मारा फिरनेवाला । आवारा । २ जो कभी किसीसे और कभी किसीसे प्रेम करे । दुश्चरित्र स्त्री ।

हरजाना–संज्ञा पुं० (अ० हर्ज+फा० प्रत्य० आनः) हानिका बदला । क्षतिपूर्ति ।

हरज़ा-गर्द–वि० (फा०) (संज्ञा हरज़ा-गर्दी) व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला ।

हरज़ा-गो–वि० दे० "हरज़ा-सरा ।"

हरज़ा-सरा–वि० (फा०) (संज्ञा हरज़ा-सराई) व्यर्थकी बातें करनेवाला ।

हर-दिल-अज़ीज़–वि०(फा०)(संज्ञा हर-दिल-अज़ीज़ी) जिसे सब लोग अच्छा समझें । सर्व-प्रिय ।

हरफ़–संज्ञा पुं० (अ० हर्फ़) १ वर्ण-मालाका अक्षर। २ हाथकी लिखावट । ३ दोष । कलंक । मुहा०–हरफ़ आना=दोष लगना ।

हरफ़गीर-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) भाव० हरफ़गीरी) दोष निकालने या आलोचना करनेवाला ।

हरफ़ा–संज्ञा दे० "हिरफ़त ।"

हरबा–संज्ञा पुं० (अ० हर्बः) १लड़ाई का हथियार । अस्त्र-शस्त्र । २ आक्रमण । चढ़ाई । धावा । ३ पुरुषकी इंद्रिय । (बाज़ारू) ।

हरम-संज्ञा पुं० (अ०) १ काबेकी चार-दीवारी । २ मकानके अन्दर स्त्रियोंके रहनेका स्थान । अन्तः-पुर । ३ रखेली स्त्री ।

हरमज़दगी-संज्ञा स्त्री०(अ० हराम +फा० ज़ादा) १ हरामीपन । २ दुष्टता । पाजीपन । शरारत ।

हरमज़ी–संज्ञा स्त्री॰(अ॰ हिरमिज़ी) एक प्रकारकी लाल मिट्टी जो कपड़े आदि रँगनेके काममें आती है।

हरम-सरा–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) अन्तःपुर। जनान-खाना।

हराम–वि॰ (अ॰) १ निषिद्ध। विधिविरुद्ध। २ बुरा। अनुचित। दूषित। संज्ञा पुं॰ १ वह वस्तु या बात जिसका धर्मशास्त्रमें निषेध हो। २ सूअर। (मुसल॰) मुहा॰–(कोई बात) **हराम करना**=किसी बातका करना मुश्किल कर देना। (**कोई बात**) **हराम होना**=किसी बातका मुश्किल हो जाना। ३ बेईमानी। अधर्म। मुहा॰–**हरामका**=१ जो बेईमानीसे प्राप्त हो। मुफ्तका। ४ स्त्री-पुरुषका अनुचित सम्बन्ध। व्यभिचार।

हराम-कार–वि॰ (अ॰+फा॰) (संज्ञा हरामकारी) व्यभिचारी।

हराम-खोर–वि॰ (अ॰+फा॰) (संज्ञा हराम-खोरी) १ पापकी कमाई खानेवाला। २ मुफ्तखोर। ३ आलसी। निकम्मा।

हराम-मग्ज़–संज्ञा पुं॰ (अ॰+फा॰) रीढ़की हड्डीके अन्दरका गूदा जिसका खाना वर्जित है।

हराम-ज़ादा–वि॰ (अ॰+फा॰) (स्त्री॰ हराम-ज़ादी) १ दोगला। वर्णसंकर। २ दुष्ट। पाजी।

हरामी–वि॰ (अ॰) १ व्यभिचारसे उत्पन्न। २ दुष्ट। पाजी।

हरामीपन–संज्ञा पुं॰ (अ॰+हिं॰) दुष्टता। पाजीपन।

हरारत–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) १ गर्मी। ताप। २ हलका ज्वर।

हरारा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ हरारः) १ आवेश। जोश। २ तीव्रता।

हरावल–संज्ञा पुं॰ (तु॰ हरावुल) वह थोड़ी-सी सेना जो लश्करके आगे चलती है। २ इस प्रकार आगे चलनेवाली सेनाके सेनापति।

हरास–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हिरास।"

हरासत–दे॰ "हिरासत।"

हरासाँ–वि॰ दे॰ "हिरासाँ।"

हरीफ़–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ समान व्यवसाय करनेवाला। सम व्यवसायी। हम-पेशा। २ शत्रु। दुश्मन। ३ धूर्त्त। चालाक। ४ विरोधी। प्रतिद्वन्द्वी।

हरीर–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ रेशम। २ रेशमी कपड़ा।

हरीरा–संज्ञा पुं॰ (अ॰ हरीरः) एक प्रकारका पतला हलुआ।

हरीरी–वि॰ (अ॰) रेशमी। यौ॰–**हरीरी कागज़**=एक प्रकारका बहुत पतला कागज।

हरीस–वि॰ (अ॰) १ हिर्स या लालच करनेवाला। लोभी। लालची। २ ईर्ष्या करनेवाला। ईर्ष्यालु। ३ पेटू। भुक्खड़। ४ प्रतिद्वन्द्वी।

हरूफ़–(अ॰) "हर्फ़" का बहु॰।

हर्ज–संज्ञा पुं॰ (अ॰) १ झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव। गड़बड़ी। २ हानि। नुकसान। ३ बाधा।

हर्जाना–संज्ञा पुं॰ दे॰ "हरजाना।"

हर्फ़–संज्ञा पुं० (अ०) दे० "हरफ़।"

हर्फ़-गीर–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हर्फ़गीरी) दोष-दर्शी।

हर्फ़-ब-हर्फ़–क्रि० वि० (अ०) अक्षरशः।

हर्फ़े इख़्तसास–संज्ञा पुं० (अ०) वह अक्षर जो शब्दमें किसी प्रकारकी विशेषता उत्पन्न करनेके लिये लगाया जाय।

हर्फ़े-इज़ाफ़त–संज्ञा पुं० (अ०) वह अक्षर जिससे एक संज्ञाका दूसरी संज्ञाके साथ सम्बन्ध सूचित हो।

हर्फ़े-नफ़ी–संज्ञा पुं० (अ०) वह अक्षर या शब्द जिसका प्रयोग अस्वीकृति या इन्कारके लिये हो।

हर्फ़े-निदा–संज्ञा पुं० (अ०) वह अक्षर या शब्द जिसका प्रयोग किसीको बुलाने या पुकारनेके लिये हो। सम्बोधन।

हर्राफ़–वि० (अ०) (स्त्री० हर्राफ़ा) धूर्त। चालाक।

हल–संज्ञा पुं० (अ०) १ समस्याकी मीमांसा या निराकरण। २ कठिन कार्यको सरल करना। ३ अच्छी तरह मिलना। घुलना। ४ गणितका प्रश्न निकालनेकी क्रिया।

हलक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ गरदन। गला। २ गलेकी नली। कंठ।

हलक़ा–संज्ञा पुं० (अ० हल्क़ः) १ वृत्ति। कुंडल। गोलाई। २ घेरा। परिधि। ३ मंडली। झुण्ड। दल। ४ हाथियोंका झुण्ड। ५ गाँवों या क़सबोंका समूह।

हलकान–वि० (अ० हलाकत) १ अधमरा। २ थका हुआ। शिथिल। ३ हैरान। परेशान।

हलक़ा ब-गोश–संज्ञा पुं० (अ० + फा०) वह जिसके कानोंमें गुलामीका हलक़ा या दासताका कुंडल पड़ा हो। दास। गुलाम।

हलफ़–संज्ञा पुं० (अ०) शपथ। सौगन्द। कसम। मुहा०-**हलफ़ उठाना**=शपथ खाना। **हलफ़ देना**=शपथ खिलाना।

हलफ़न्–क्रि० वि० (अ०) शपथपूर्वक। हल्फ़से।

हलवा–संज्ञा पुं० (अ० हल्वा) १ एक प्रकारका प्रसिद्ध मीठा और मुलायम व्यंजन। २ बढ़िया और मुलायम चीज़।

हलवाई–संज्ञा पुं० (अ०) मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

हलवाए-मग़ज़ी–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) एक प्रकारका हलवा जिसमें बहुत अधिक मेवे पड़ते हैं।

हलवाए-मर्ग–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह भोजन जो किसीके मरनेपर लोगोंको कराया जाता है। भत्ती। कड़वी खिचड़ी।

हलवाए-मिक़राज़ी-संज्ञापुं०(अ०) एक प्रकारका हलवा जिसमें मेवेके बहुत बारीक कटे हुए टुकड़े डाले जाते हैं।

हलवान–संज्ञा पुं० (अ० हुल्लान या हुल्लाम) १ बकरी या भेड़का

छोटा बच्चा । २ ऐसे बच्चेका मुलायम गोश्त ।

हलाक–वि० (अ०) १ विनष्ट । २ मरा हुआ । मृत । ३ थका हुआ शिथिल ।

हलाकत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ नष्ट करना । विनाश । २ मृत्यु ।

हलाकी–संज्ञा स्त्री० दे० "हलाकत" ।

हलाकू–संज्ञा पुं० (तु०) चंगेजखाँ के पोते एक बादशाहका नाम जो बहुत बड़ा अत्याचारी था । वि० १ अत्याचारी । २ हत्यारा ।

हलाल–वि० (अ०) जो शरअ या मुसलमानी धर्म-पुस्तकके अनुकूल हो । जायज । संज्ञा पुं० वह पशु जिसका मांस खानेकी मुसलमानी धर्म-पुस्तकमें आज्ञा हो । मुहा०–**हलाल करना**=खानेके लिये पशुओंको मुसलमानी शरअके मुताबिक (धीरे-धीरे गला रेतकर) मारना । जबह करना । **हलालका**= ईमानदारीसे पाया हुआ । संज्ञा पुं० दे० "हिलाल ।"

हलावत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मधुरता । मिठास । २ स्वाद । जायका । ३ सुख । चैन । आराम ।

हलाहल–संज्ञा पुं० (फा० मि० सं० हलाहल) घातक विष । जहर । वि० बहुत ही कड़ुआ । कटु ।

हलीम–वि० (अ०) १ जिसमें हिल्म या सहनशीलता हो । सहनशील । २ गम्भीर और कोमल स्वभाव-वाला । संज्ञा पुं० (अ० लहीम) एक प्रकारका मांस जो हसन और हुसेनके वास्ते पकाया जाता है ।

हलुआ–संज्ञा पुं० दे० "हलवा"

हलूका–संज्ञा स्त्री० (देश०) वमन या कैका उतना अंश जितना एक बार मुँहसे निकले ।

हलूफ़ा–संज्ञा पुं० दे० "अलूफ़ा ।"

हलेला–संज्ञा पुं० (फा० हलेलः) हर्रे । हड़ ।

हल्क़–संज्ञा पुं० दे० "हलक़ ।"

हल्वा–संज्ञा पुं० दे० "हलवा ।"

हवन्नक़–वि० दे० "हबन्नक़ ।"

हवलदार–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकारका छोटा सैनिक अफसर ।

हवस–संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकारका पागलपन । संज्ञा स्त्री० (फा०) १ कामना । इच्छा । २ लोभ । ३ कामवासना । ४ हौसला । दिलका अरमान ।

हवस-नाक–वि० (फा०) १ लालची । लोभी । २ कामुक ।

हवा–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ इन्द्रियोंको तृप्त करनेकी वासना । २ इच्छा । कामना । चाह । ३ वह सूक्ष्म प्रवाहरूप पदार्थ जो भूमण्डलको चारों ओरसे घेरे हुए है और जो प्राणियोंके जीवनके लिये सबसे अधिक आवश्यक है । वायु । पवन । मुहा०–**हवा उड़ना**=खबर फैलना । **हवाके घोड़ेपर सवार**=बहुत उतावलीमें । बहुत जल्दीमें । **हवा खाना**=१ शुद्ध वायुके सेवनके लिये बाहर निकलना । टहलना । २ प्रयोजन-

सिद्धितक न पहुँचना । अकृत-कार्य होना । **हवा बताना**=किसी वस्तुसे वंचित रखना । टाल देना। **हवा बाँधना**=१ लम्बी चौड़ी बातें कहना । शेखी हाँकना। २ डींग हाँकना। **हवा पलटना, फिरना या बदलना**=दूसरी स्थिति या अवस्था होना । हालत बदलना । **हवा बिगड़ना**=१ संक्रामक रोग फैलना । २ रीति या चाल बिगड़ना । बुरे विचार फैलना । **हवासे बातें करना**=१ बहुत तेज दौड़ना या चलना । २ आप ही आप या व्यर्थ बहुत बोलना । **किसीकी हवा लगना**=किसीकी संगतिका प्रभाव पड़ना । **हवा हो जाना**=१ झटपट चल देना । भाग जाना । २ न रह जाना । ३ एक बारगी गायब हो जाना । ४ भूत-प्रेत । ५ अच्छा नाम । प्रसिद्धि । ख्याति । ६ बड़प्पन या उत्तम व्यवहारका विश्वास । साख । मुहा०– **हवा बाँधना**=१ अच्छा नाम हो जाना । २ बाजारमें साख होना । किसी बातकी सनक । धुन ।

हवाई–वि० (फा०) १ हवा-सम्बन्धी । हवाका । जैसे–हवाई जहाज । २ तेज । चपल । ३ व्यर्थ इधर उधर घूमनेवाला । आवारा । संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकारकी आतिश-बाजी । २ वह कतरा हुआ मेवा जो शरबत या मिठाईके ऊपर डाला जाता है । मुहा०–(मुँहपर) **हवाइयाँ उड़ना**=चेहरेका रंग फीका पड़ जाना । विवर्णता होना ।

हवा-ख्वाह–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हवा-ख्वाही) शुभ-चिन्तक । भला चाहनेवाला ।

हवा-ज़दगी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) जुकाम । सरदी ।

हवा-दार–वि० (अ०+फा०) १ चाहनेवाला । इच्छुक । २ प्रेमी । आसक्त । ३ जिसमें हवा आती हो । खुला हुआ । संज्ञा पुं० एक प्रकारकी सवारी जिसे कहार उठाकर ले चलते हैं ।

हवा-दारी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) शुभचिन्तना । खैर-ख्वाही ।

हवा-परस्त–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हवा-परस्ती) केवल इन्द्रियोंका सुख-भोग चाहनेवाला । इन्द्रिय-लोलुप ।

हवा-बाज़–संज्ञा पुं० (फा०) १ हवाई जहाज । २ हवाई जहाज चलानेवाला ।

हवारी–संज्ञा पुं० (अ०) हजरत ईसा मसीहके मित्र और साथी ।

हवाला–संज्ञा पुं० (अ० हवाल:) १ प्रमाणका उल्लेख । २ उदाहरण । दृष्टान्त । मिसाल । ३ सुपुर्दगी । जिम्मेदारी । मुहा०–(**किसीके**) **हवाले करना**=किसीके सुपुर्द करना । सौंपना । **बड़े घरके हवाले करना**=मृत्युके हाथ सौंप देना । किसीको मरा हुआ समझना या मानना ।

हवालात–संज्ञा स्त्री० (अ० हवालः) १ पहरेके अन्दर रखे जानेकी क्रिया या भाव। नज़र-बन्दी। २ अभियुक्तकी वह साधारण क़ैद जो मुकदमेंके फैसलेके पहले उसे भागनेसे रोकनेके लिये दी जाती है। हाजत। ३ वह मकान जिसमें ऐसे अभियुक्त रखे जाते हैं।

हवालाती–वि० (अ० हवालः) १ हवालात-सम्बन्धी। २ जो हवालातमें रखा गया हो।

हवालादार–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) सैनिकोंका वह छोटा अफ़सर जिसकी अधीनतामें कुछ सैनिक हों। हवलदार।

हवाली–संज्ञा स्त्री० (अ०) आस-पासके स्थान।

हवास–संज्ञा पुं० (अ०) १ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ। २ होश। ज्ञान। यौ०– **होश-हवास**=ज्ञान। होश और अक़्ल।

हवास-बाख़्ता–वि० (अ०+फा०) घबराहटके कारण जिसका होश-हवास ठिकाने न हो। हक्का-बक्का।

हवासिल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ "हौसला" का बहु०। २ एक प्रकारका सफ़ेद जल-पक्षी।

हवेली–संज्ञा स्त्री० (अ० हवाली) १ पक्का बड़ा मकान। २ पत्नी।

हवैदा–वि० दे० "हुवैदा।"

हव्वा–संज्ञा स्त्री० (अ०) हज़रत आदमकी पत्नीका नाम जो मनुष्य जातिकी माता मानी जाती है। संज्ञा पुं० भीषण आकारका एक कल्पित व्यक्ति जिसका नाम बच्चोंको डरानेके लिये लिया जाता है। हौआ।

हशमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ सेवकोंका समूह। नौकर-चाकर। २ सम्पत्ति। ३ शान-शौकत।

हशर–संज्ञा पुं० दे० "हश्र।"

हशरात–संज्ञा पुं० (अ० हश्रात) छोटे छोटे कीड़े-मकोड़े। यौ०– **हशरात-उल्-अर्ज़** = पृथ्वीपर रहनेवाले कीड़े-मकोड़े। संज्ञा पुं० (अ० हश्र) शोर। हल्ला-गुल्ला।

हश्त–वि० (फा० मि० सं० अष्ट) आठ। सात और एक।

हश्त-पहलू–वि० (फा०+अ०) अठ-कोना।

हश्त-बहिश्त–संज्ञा पुं० (फा०) मुस-लमानोंके अनुसार आठों बहिश्त।

हश्तुम–वि० (फा० मि० सं० अष्टम) गिनतीमें आठके स्थानपर पड़ने-वाला। आठवाँ।

हश्मत–संज्ञा स्त्री० दे० "हशमत।"

हश्र–संज्ञा पुं० (अ०) १ क़यामत जब कि सब मुरदे उठकर खड़े होंगे और उनके शुभ तथा अशुभ कामोंका हिसाब होगा। २ शोक। विलाप। ३ बहुत बड़ा शोर। मुहा०–**हश्र बरपा करना**= बहुत शोर करके आफ़त मचाना **हश्र टूटना**=१ आफ़त मचाना २ कोप होना।

हश्रात–संज्ञा पुं० दे० "हशरात

हश्शाश-वि० (अ०) बहुत ही प्रसन्न और हँसता हुआ। यौ०-हश्शाश बश्शाश=परम प्रसन्न।

हसद-संज्ञा पुं० (अ०) ईर्ष्या। डाह। रश्क।

हसन-वि० (अ०) अच्छा। भला। उत्तम। संज्ञा पुं० १ उत्तमता। भलाई। खूबी। २ सौन्दर्य। खूबसूरती। ३ मुसलमानोंके दूसरे इमामका नाम जिनकी हत्या जहर मिला हुआ पानी देकर की गई थी।

हसब-क्रि० वि० दे० "हस्ब।" संज्ञा पुं० (अ०) माताकी ओरका वंश। ननिहाल। "नसब" का उलटा। यौ०-हसब-नसब=माता और पिताका वंशानुक्रम। नाना और दादाका खान्दान।

हसरत संज्ञा स्त्री० (अ० हस्रत) १ किसी वस्तुके न मिलनेपर होनेवाला दुःख। २ कामना।

हसीन-वि० (अ०) सुन्दर। खूबसूरत।

हसीर-संज्ञा पुं० (अ०) चटाई।

हसूल-संज्ञा पुं० दे० "हुसूल।"

हस्त-संज्ञा स्त्री० (फा० मि० सं० अस्ति) १ वर्तमान होनेकी अवस्था। अस्तित्व। २ जीवन। ज़िन्दगी। यौ०-हस्त व ममात=जीवन और मृत्यु।

हस्ती संज्ञा स्त्री० (फा०) १ अस्तित्व। २ जीवन। ३ सम्पत्ति।

हस्ब-क्रि० वि० (अ०) अनुसार। मुताबिक। जैसे-हस्ब-ख्वाह=इच्छानुसार। हस्बे-इत्तिफ़ाक़=संयोगसे। हस्बे-तौफ़ीक़=श्रद्धा या सामर्थ्यके अनुसार। हस्बे-हाल=अवस्था या समयके अनुसार। उपयुक्त।

हस्रत-संज्ञा स्त्री० दे० "हसरत।"

हा-प्रत्य० (फा०) एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर बहुवचनका सूचक होता है। जैसे-मुर्गसे मुर्गहा। दरख्तसे दरख्तहा। अव्य० -कष्ट या दुःख-सूचक अव्यय।

हाकिम-संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० हुक्काम) १ हुकूमत करनेवाला। शासक। २ बड़ा अफ़सर।

हाकिमी-संज्ञा स्त्री० (अ० हाकिम) हाकिमका काम। हुकूमत।

हाजत-संज्ञा स्त्री० (अ०) (बहु० हाजात) १ इच्छा। ख्वाहिश। २ आवश्यकता। मुहा०-**हाजत रफ़ा करना**=१ आवश्यकता पूरी करना। २ मल त्याग करना। ३ पुलिस या जेलकी हवालात।

हाजत-मन्द-वि० (अ०+फा०) १ हाजत या इच्छा रखनेवाला। ख्वाहिश-मन्द। २ दरिद्र। ग़रीब।

हाजती-संज्ञा स्त्री० (अ० हाजत) वह बर्तन जिसमें रोगी चारपाईपर पड़ा पड़ा मल-मूत्र आदिका त्याग करता है। वि० दे० "हाजत-मन्द।"

हाज़मा-संज्ञा पुं० (अ० हाज़िमः) पाचन-शक्ति। पचानेकी ताक़त।

हाजरा-संज्ञा स्त्री० (अ० हाजरः) ठीक दोपहरका समय जब चील अंडे देती है।

हाज़ा–सर्व० (अ०) यह। जैसे–**ख़ते-हाज़ा**=यह ख़त।

हाजात–संज्ञा स्त्री० (अ०) "हाजत"-का बहु०

हाज़िक़–वि० (अ०) प्रवीण। विचक्षण। दक्ष (प्रायः हकीमके लिये प्रयुक्त होता है।)

हाज़िम–वि० (अ०) हज़म करने या पचानेवाला। पाचक।

हाज़िमा–संज्ञा पुं० दे० "हाज़मा।"

हाजिर–वि० (अ०) १ हिजरत करनेवाला। अपना देश छोड़कर दूसरे देशमें जा बसनेवाला। २ मक्केमें जाकर निवास करनेवाला।

हाज़िर–वि० (अ०) (बहु० हाज़िरीन) १ सम्मुख। उपस्थित। २ मौजूद। विद्यमान।

हाज़िर-जवाब–वि० (अ०) (संज्ञा हाज़िर-जवाबी) बातका चटपट अच्छा जवाब देनेमें होशियार। प्रत्युत्पन्न-मति।

हाज़िर-बाश–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हाज़िर-बाशी) हाज़िर या उपस्थित रहनेवाला।

हाज़िरात–संज्ञा स्त्री० (अ०) वह क्रिया जिससे भूत-प्रेत या जिन आदि कुछ प्रश्नोंके उत्तर देनेके लिये बुलाये जाते हैं।

हाज़िरी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हाज़िर रहनेकी क्रिया या भाव। उपस्थिति। २ अँगरेज़ोंका दोपहरके समयका भोजन।

हाज़िरीन–संज्ञा पुं० (अ०) "हाज़िर"-का बहु०।

हाजी–संज्ञा पुं० (अ०) १ हिजो या निन्दा करनेवाला। निन्दक। २ दूसरोंकी नकल उतारकर उन्हें हास्यास्पद बनानेवाला। नक्क़ाल। भाँड़। संज्ञा पुं० (अ०) वह जो हज कर आया हो।

हातिफ़–संज्ञा पुं० (अ०) १ आवाज़ देने या पुकारनेवाला। २ आकाशवाणी। ३ फ़रिश्ता। देवदूत।

हातिम–संज्ञा पुं० (अ०) अरबका एक बहुत प्रसिद्ध दाता और परोपकारी। मुहा०–**हातिमकी क़ब्रपर लात मारना**=बहुत बड़ी उदारता या परोपकारका काम करना। (व्यंग्य) वि० दाता। उदार।

हादसा–संज्ञा पुं० (अ० हादिसः) १ नई बात। २ घटना। ३ दुर्घटना।

हादिम–वि० (अ०) गिराने, तोड़ने या नष्ट करनेवाला। नाशक।

हादिस-वि० (अ०) १ नया। नवीन। २ नश्वर।

हादिसा–संज्ञा पुं० दे० "हादसा।"

हादी–संज्ञा पुं० (अ०) १ हिदायत करनेवाला। मार्ग दर्शक। २ मुखिया। नेता।

हाफ़िज़–संज्ञा पुं० (अ०) वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठ हो।

हाफ़िज़ा–संज्ञा पुं० (अ० हाफ़िज़ः) स्मरण-शक्ति।

हाबील–संज्ञा पुं० (अ०) हज़रत

आदमके पुत्रका नाम जिसे क़ाबील-ने मार डाला था।

हामान–संज्ञा पुं० (अ०) फ़रऊनके प्रधान मन्त्री या वज़ीरका नाम।

हामिद–वि० (अ०) हम्द या प्रशंसा करनेवाला।

हामिल–वि० (अ०) १ भार या बोझ ढोनेवाला। २ कोई चीज़ ले जानेवाला।

हामिला–वि० स्त्री० (अ० हामिलः) जिसे हमल या गर्भ हो। गर्भवती।

हामी–वि० (अ०) हिमायत करने-वाला। सहायक। संज्ञा स्त्री० हाँ करनेकी क्रिया। स्वीकारोक्ति। मुहा०–**हामी भरना**=कोई काम करना मंजूर करना।

हामी-कार–वि० (अ०+फ़ा०) हिमायती। मददगार।

हामूँ–संज्ञा पुं० (अ०) उजाड़ मैदान।

हामूँ-नवर्द–वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा हामूँ-नवर्दी) जंगलों और उजाड़ जगहोंमें मारा मारा फिरनेवाला।

हायल–वि० (अ०) १ भयानक। भीषण। २ कठोर। कठिन। ३ बाधा उत्पन्न करनेवाला। बाधक। ४ बीचमें आड़ करनेवाला।

हार–वि० (अ०) हरारत या गरमी रखनेवाला।

हारिज–वि० (अ०) हर्ज करनेवाला।

हारूँ–संज्ञा पुं० (अ०) १ दुष्ट और उद्दण्ड घोड़ा। २ किसी फ़िरक़ेका सरदार या नेता। ३ एक पैग़म्बर जो हज़रत मूसाके बड़े भाई थे। ४ बग़दादके एक ख़लीफ़ा जो हारूँ-रशीदके नामसे प्रसिद्ध हैं। ५ दूत। हरकारा। ६ रक्षक। पासबान।

हारूँ-रशीद–संज्ञा पुं० दे० "हारूँ।"

हारूत–संज्ञा पुं० (अ०) ज़ोहराके प्रेमी उन दो फ़रिश्तोंमेंसे एक जो बाबुलके कूएँमें कोपके कारण अबतक औंधे लटके हुए माने जाते हैं। इसके दूसरे साथीका नाम मारूत है।

हारूत-फ़न–संज्ञा पुं० (अ०) जादू-गर। इंद्रजालिया।

हारून–संज्ञा पुं० दे० हारूँ।"

हारूनी–संज्ञा स्त्री० (अ० हारूँसे फ़ा०) निगहबानी। पासबानी। वि० दुष्ट और उद्दंड।

हाल–संज्ञा पुं० (अ०) (बहु० हालात) १ दशा। अवस्था। २ परिस्थिति। ३ माजरा। संवाद। समाचार। वृत्तान्त। ४ ब्योरा। विवरण। कैफ़ियत। ५ कथा। आख्यान। चरित्र। ६ ईश्वरमें तन्मयता। लीनता। (मुसल०) वि० वर्तमान। चलता। उपस्थित। मुहा०–**हालमें**-थोड़े ही दिन हुए। **हालका**=नया। ताज़ा। अव्य० १ इस समय। अभी। संज्ञा स्त्री० (हिं० हिलना) १ हिलनेकी क्रिया या भाव। कंप। २ लोहेका वह बंद जो पहियेके चारों ओर घेरेमें चढ़ाया जाता है।

हालत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ दशा।

अवस्था। २ आर्थिक दशा। ३ संयोग। परिस्थिति।

हालते-नज़ा-संज्ञा स्त्री० (अ०) मरनेके समय दम तोड़नेकी अवस्था।

हालाँकि-क्रि० वि० (अ० हाल फा० औंकि) यद्यपि। अगरचे।

हाला-संज्ञा पुं० (अ० हालः) १ कुँडल। मंडल। चन्द्रमाके चारों ओर दिखाई पड़नेवाला मंडल।

हालात-संज्ञा पुं० (अ०) "हाल"-का बहु०।

हावन-संज्ञा स्त्री० (फा०) हाँडी या ऊखलीकी तरहका लोहेका वह पात्र जिसमें दवा आदि कूटते हैं। यौ०-**हावन-दस्ता**=हावन या ऊखली और उसमें कूटनेका दस्ता या लोढ़ा।

हाविया-संज्ञा पुं० (अ० हावियः) दोज़खका सबसे नीचेका और सातवाँ प्रांत।

हावी-वि० (अ०) १ चारों ओरसे घेरने या वशमें रखनेवाला। २ प्रवीण। कुशल। दक्ष।

हाशा-अव्य० (अ०) १ कदापि। हरगिज़। मगर। २ सिवा। यौ०-**हाशा-लिल्लाह या हाशा रहमान**=१ ईश्वर न करे। २ मैं कुछ नहीं जानता। **हाशा व कल्ला**=न ऐसा कुछ है ही और न होगा। कदापि नहीं।

हाशिया-संज्ञा पुं० (अ० हाशियः) १ किनारा। पाड़। २ गोट। मगजी। ३ हाशिए या किनारे परका लेख। नोट। मुहा०-**हाशिएका गवाह**=वह गवाह जिसका नाम किसी दस्तावेज़के किनारे दर्ज हो। **हाशिया चढ़ाना**=किसी बातमें मनोरंजन आदिके लिए कुछ और बात जोड़ना।

हासिद-वि० (अ०) १ हसद या डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु। २ अशुभचिन्तक। शत्रु।

हासिल-संज्ञा पुं० (अ०) १ गणित करनेमें किसी संख्याका वह भाग या अंक जो शेष भागके कहीं रखे जानेपर बच रहे। २ उपज। पैदावार। ३ लाभ। नफ़ा। ४ गणितकी क्रियाका फल। जमा। लगान।

हासिल-कलाम-क्रि० वि० (अ०) तात्पर्य यह कि। सारांश यह कि।

हासिल-ज़र्ब-संज्ञा पुं० (अ०) वह संख्या जो ज़र्ब देने या गुणा करनेसे निकले। गुणन-फल।

हासिल-जमा-संज्ञा पुं० (अ०) जोड़। योग। मीज़ान। कुल।

हिकमत-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ विद्या। तत्त्वज्ञान। २ कला-कौशल्य। निर्माणकी बुद्धि। ३ युक्ति। तदबीर। ४ चतुराईका ढंग। चाल। हकीमका काम या पेशा। हकीमी। वैद्यक।

हिकमत-अमली-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ चालाकी। होशियारी। २ कूट-नीति।

हिकमती-वि० (अ० हिकमत) १ दार्शनिक । २ चतुर । चालाक ।

हिकायत-संज्ञा स्त्री० (अ०) बहु० हिकायात) कहानी । किस्सा ।

हिक़ारत-दे० "हक़ारत" ।

हिजरत-संज्ञा स्त्री० (अ०) अपना देश छोड़कर दूसरे देशमें जा बसना ।

हिजराँ-संज्ञा पुं० (अ० "हिज्र"से फा०) वियोग । जुदाई ।

हिजराँ नसीब-वि०(फा०+अ०) जिसके भाग्यमें सदा अपने प्रियसे अलग रहना लिखा हो ।

हिजरी-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हज़रत मुहम्मदका मक्का छोड़कर मदीने जाना। २ वह सन् जो हज़रत मुहम्मदके मक्का छोड़नेकी तिथिसे चला था ।

हिजाब-संज्ञा पुं०(अ०) १ परदा । ओट । २ लज्जा । शरम । लिहाज़ ।

हिज्जे-संज्ञा पुं० (अ०) किसी शब्दके संयोजक अक्षरोंको अलग अलग उनका सम्बन्ध बतलाते हुए कहना ।

हिज्र-संज्ञा- पु० (अ०) वियोग । बिछोह । जुदाई ।

हिज्रत- संज्ञा स्त्री०दे०"हिजरत ।"

हिदायत-सज्ञा स्त्री० (अ०) १ सीधा रास्ता बतलाना । मार्गदर्शन । २ यह बतलाना कि "आगेसे यह काम इस तरह होना चाहिए " अथवा "ऐसा काम न होना चाहिए ।"

हिदायत-नामा-संज्ञा पुं० (अ०+ फा०) वह पत्र या पुस्तका जिसमें किसी कामके बारेमें हिदायतें लिखी हों ।

हिना-संज्ञा स्त्री० (अ०) मेंहदी ।

हिनाई-वि० (अ० हिना) १ मेंहदी का-सा लाल रंग । २ जिसमें मेंहदी लगी हो ।

हिना-बन्दी-संज्ञा स्त्री० (अ०+ फा०) मुसलमानोंमें ब्याहसे पहलेकी एक रसम । मेंहदी ।

हिन्द-संज्ञा पुं० (फा०) भारतवर्ष ।

हिन्दसा-संज्ञा पुं० (फा० "हिन्द" से अ०) १ गणित । २ रेखागणित ।

हिन्दसा-दाँ-वि० (फा०) गणितज्ञ।

हिन्दी-वि० (फा०) हिन्दका । भारतीय । संज्ञा स्त्री० (फा०) हिन्दुस्तानकी भाषा ।

हिन्दोस्तान-संज्ञा पुं० (फा०) भारतवर्ष ।

हिफ़ाज़त-संज्ञा स्त्री० (अ०) १ किसी वस्तुको इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे । रक्षा । २ देख-रेख । खबरदारी ।

हिफ़्ज़-वि० (अ०) १ कंठस्थ । मुखाग्र । संज्ञा पुं० १ हिफ़ाज़त । २ अदब । लिहाज़ ।

हिफ़्ज़े-मरातिब-संज्ञा पुं० (अ०) बड़ेकी मर्यादाका ध्यान ।

हिफ़्ज़े-मातक़द्दुम-संज्ञा पुं० (अ०) आपत्ति आदिसे बचनेके लिये पहलेसे किया जानेवाला बचाव ।

हिफ़्ज़े सेहत-संज्ञा पुं० (अ०) सेहत या स्वास्थ्यकी रक्षा ।

हिब्बा–संज्ञा पुं० (अ० हिब्बः) १ पुरस्कार । इनाम । २ दान ।

हिब्बा-नामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसमें किसी वस्तुके किसीको प्रदान किये जानेका उल्लेख हो । दान-पत्र ।

हिमयानी–संज्ञा स्त्री० (अ० हिमयान) एक प्रकारकी पतली थैली जो रुपये आदि भरकर कमरमें बाँधी जाती है । वमनी ।

हिमाक़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) मूर्खता । बे-वकूफ़ी ।

हिमायत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पक्षपात । मदद । २ शरण । रक्षा ।

हिमायती–संज्ञा पुं० (अ०) १ हिमायत या तरफ़दारी करनेवाला । पक्षपाती । २ रक्षक । निगहबान ।

हिम्मत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ कठिन या कष्ट-साध्य कर्म करनेकी मानसिक दृढ़ता । साहस । २ बहादुरी । पराक्रम । मुहा०-**हिम्मत हारना**=साहस छोड़ना ।

हिरफ़त–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ हस्त-कौशल । कारीगरी । गुण । २ विद्या । हुनर । ३ धूर्तता ।

हिरफ़ा–संज्ञा पुं० (अ० हरफ़ः) कारीगरी । हस्त-कौशल । शिल्प ।

हिरमिज़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ एक प्रकारकी लाल मिट्टी । २ इस मिट्टीकी तरहका । लाल-सा ।

हिरास–संज्ञा स्त्री० (फा०) १ भय । डर । २ निराशा । ना-उम्मेदी ।

हिरासत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पहरा । चौकी । २ क़ैद । नजरबंदी ।

हिरासाँ–वि० (फा०) १ भयभीत । डरा हुआ । २ निराश ।

हिर्ज़–संज्ञा पुं० (अ०) १ शरण लेनेका स्थान । २ यंत्र । तावीज़ ।

हिर्स–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ लालच । तृष्णा । लोभ । २ इच्छाका वेग ।

हिलाल–संज्ञा पुं० (अ०) द्वितीयाका चन्द्रमा । (इसकी उपमा नायिकाके नाखूनों और भौंहोंसे दी जाती है ।)

हिलाली–वि० अ० हिलाल या द्वितीयाके चन्द्रमासे सम्बन्ध रखनेवाला । संज्ञा पुं० एक प्रकारका तीर ।

हिल्म–संज्ञा पुं० (अ०) १ सहनशीलता । बरदाश्त । २ स्वभावकी कोमलता ।

हिस–संज्ञा स्त्री (अ०) १ इन्द्रियके द्वारा अनुभव करना । २ गति ।

हिसाब–संज्ञा पुं० (अ०) १ गिनती । गणित । लेखा । २ लेन-देन या आमदनी-खर्च आदिका लिखा हुआ ब्योरा । लेखा । उचापत । **मुहा० हिसाब चुकाना या चुकता करना**=जो कुछ ज़िम्मे निकलता हो, वह दे देना । **हिसाब देना**=जमा-खर्चका ब्योरा बताना । **बेहिसाब**=बहुत अधिक । अत्यंत । **हिसाब बैठना**=१ ठीक ठीक जैसा चाहिए, वैसा प्रबन्ध होना । २ सुभीता होना । सुपास होना । **हिसाबसे**=१ संयमसे । परिमित । २ लिखे हुए ब्योरेके मुताबिक़ । **टेढ़ा हिसाब**=१ कठिन कार्य ।

मुश्किल काम। २ अव्यवस्था। गड़बड़। ३ वह क्रिया जिसके द्वारा संख्या, मान आदि निर्धारित हों। गणित विद्याका प्रश्न। ४ भाव। दर। मुहा०—**हिसाबसे**= १ परिमाण क्रम या गतिके अनुसार। २ विचारसे। ध्यानसे। ३ नियम। क़ायदा। व्यवस्था। ४ धारणा। समझ। मत। विचार। ५ हाल। दशा। अवस्था। ६ चाल। व्यवहार। रहन-सहन। ७ ढंग। तरीक़ा।

हिसाबी—वि० (अ० हिसाब) हिसाब जाननेवाला। गणितज्ञ। २ जो नियमके अनुसार हो। क़ायदेका। ठीक।

हिसार—संज्ञा पुं० (अ०) १ नगरका पर-कोटा। शहर-पनाह। २ क़िला। कोट। गढ़।

हिस्सा—संज्ञा पुं० (अ० हिस्सः) १ भाग। अंश। २ टुकड़ा। खंड। ३ उतना अंश जितना प्रत्येकको विभाग करनेपर मिले। बखरा। ४ विभाग। तक़सीम। ५ अंग। अवयव। अंतर्भूत वस्तु। ६ साझा।

हिस्सा-रसद—क्रि० वि० (अ० + फ़ा०) हिस्सेके मुताबिक़; अंश या भागके अनुसार।

हिस्सा-रसदी—संज्ञा स्त्री० दे० "हिस्सा-रसद।"

हिस्सेदार—वि० (अ०+फ़ा०) किसी हिस्सेका मालिक। जो अंश या भाग पानेका अधिकारी हो।

हिस्से-मुश्तरक—संज्ञा स्त्री० (अ०) वह भीतरी शक्ति जो इंद्रियोंके अनुभवका ज्ञान करती है।

हीन—संज्ञा पुं० (अ०) समय। काल। यौ०—**हीन-ह्यात** = आजन्म। सारी उमर। उम्र-भर।

हीलतन्—क्रि० वि० (अ०) हीलेसे। छलपूर्वक।

हीला—संज्ञा पुं० (अ० हीलः) १ बहाना। मिस। यौ०—**हीला-हवाला** = बहाना। २ निमित्त। द्वार। वसीला।

हीला-गर—वि० दे० "हीला-बाज़।"

हीला-बाज़—वि० (अ० + फ़ा०) (संज्ञा हीला-बाज़ी) हीला करने वाला। चालाक। फ़रेबिया।

हीला-साज़—वि० दे० "हीला-बाज़।"

हुक़ना—संज्ञा पुं० (अ० हुक़न.) दस्त लानेके लिए गुदाके मार्गसे पिचकारी आदिके द्वारा कोई दवा चढ़ाना। बस्ति-कर्म।

हुकुम—संज्ञा पुं० दे० "हुक्म।"

हुकूक़—संज्ञा पुं० (अ०) "हक़" का बहु०।

हुकूमत—संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रभुत्व। २ शासन। ३ राज्य-शासन। राजनीतिक आधिपत्य।

हुक्का—संज्ञा पुं० (अ० हुक्क़ः) तम्बाकू का धुआँ खींचने या तम्बाकू पीनेके लिए विशेष रूपसे बना हुआ एक प्रकारका नल-यन्त्र। गड़गड़ा। फरशी।

हुक्का-बरदार—वि० (अ०+फ़ा०) (संज्ञा हुक्का-बरदारी) हुक्का

भरने या हुक्का साथ लेकर चलनेवाला (सेवक)।

हुक्काम–संज्ञा पुं० (अ०) "हाकिम" का बहु०।

हुक्म–संज्ञा पुं० (अ०) बड़ेका वचन जिसका पालन कर्तव्य हो। आज्ञा। आदेश। मुहा०–**हुक्मकी तामील**=आज्ञाका पालन। **हुक्म चलाना या जारी करना**=आज्ञा देना। **हुक्म तोड़ना**=आज्ञा भंग करना। **हुक्म मानना**=१ आज्ञा पालन करना। २ स्वीकृति। अनुमति। इजाजत। ३ अधिकार। ४ विधि। नियम। शिक्षा। ५ ताशका एक रंग।

हुक्म-अन्दाज़–वि० (अ० +फा०) (संज्ञा हुक्म-अन्दाजी) अचूक निशाना लगानेवाला।

हुक्मनामा–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) वह पत्र जिसमें कोई हुक्म या आज्ञा लिखी हो।

हुक्म-बरदार–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हुक्म-बरदारी) हुक्म माननेवाला। आज्ञाकारी।

हुक्म-राँ–वि० (अ०+फा०) १ हुक्म देनेवाला। २ शासक। राजा।

हुक्म-रानी–संज्ञा स्त्री० (अ०+फा०) शासन। हुकूमत।

हुक्मी–वि० (अ०) १ अपने निशाने-पर लगकर ठीक काम करे। अचूक। जैसे–हुक्मी दवा। २ हुक्म माननेवाला। आज्ञाकारी। मुहा०–हुक्मी बन्दा ... वि०

हुज़न–संज्ञा पुं० (अ०) रंज। दुःख।

हुजरा–संज्ञा पुं० (अ० हुजरः) १ कोठरी। छोटा कमरा। २ मसजिदकी वह कोठरी जिसमें लोग एकान्तमें बैठकर ईश्वरा-राधन करते हैं।

हुजूम–संज्ञा पुं० (अ०) जन-समूह। भीड़-भाड़।

हुजूर–संज्ञा पुं० (अ०) १ किसी बड़ेका सामीप्य। समक्षता। २ बादशाह या हाकिमका दरबार। कचहरी। ३ बहुत बड़े लोगोंके संबोधनका शब्द।

हुजूर-वाला–संज्ञा पुं० (अ०)जनाब-आली। श्रीमान्।

हुजूरी–संज्ञा स्त्री० (अ०)१ सामीप्य। निकटता। नजदीकी। २ बाद-शाही दरबार।

हुज्जत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ व्यर्थ का तर्क। २ विवाद। झगड़ा।

हुज्जती–वि० (अ० हुज्जत) हुज्जत या झगड़ा करनेवाला।

हुदहुद–संज्ञा पुं० (अ०) कठफोड़वा नामक पक्षी। खुट-बढ़ई।

हुदा–संज्ञा पुं० (अ०) १ सीधा रास्ता। २ मोक्षका मार्ग।

हुदूद–संज्ञा स्त्री० (अ०) "हद" का बहु०। सीमाएँ।

हुदूद-अरबा–संज्ञा स्त्री० (अ०हुदूद-अर्बअ) चारों ओरकी हदें।

हुनर–संज्ञा पुं० (फा०) १ कला कारीगरी। २ गुण। करतब

हुनर-मन्द–वि० (फा०) (संज्ञा हुनर-मन्दी) हुनर जाननेवाला ।

हुनूद–संज्ञा पुं० (अ०) 'हिन्दू' का बहु० ।

हुब–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ प्रेम प्रीति । मुहब्बत । २ दोस्ती । मित्रता । ३ इच्छा । चाह । ४ मरज़ी । यौ०–**हुबका अमल**= वह क्रिया या यंत्र-मंत्र जिसकी सहायतासे किसीके मनमें अपने प्रति प्रेम उत्पन्न किया जाय ।

हुबल–संज्ञा पुं० (अ०) मक्केकी एक प्राचीन मूर्ति जो वहाँ इस्लामका प्रचार होनेके पहले पूजी जाती थी ।

हुबाब–संज्ञा पुं० (अ०) १ पानीका बुलबुला । बुद्बुदा । २ हाथमें पहननेका एक प्रकारका गहना । ३ शीशेका वह गोला जो सजावटके लिये छतमें लटकाया जाता है । गोला ।

हुब्ब–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्रेम । मुहब्बत । २ आकांक्षा । ३ मित्रता ।

हुब्ब-उल-वतन–संज्ञा स्त्री० (अ०) देश-प्रेम ।

हुमक़–संज्ञा पुं० (अ०) मूर्खता ।

हुमा–संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रसिद्ध कल्पित पक्षी कहते हैं कि यह केवल हड्डियाँ खाता है और जिसके सिरपर इसकी छाया पड़ जाती है, वह राजा हो जाता है ।

हुमायूँ–वि० (फा०) १ शुभ । मुबारक । २ सफल-मनोरथ । संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मुगल सम्राट् जो बाबरका पुत्र और अकबरका पिता था ।

हुरमत–संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रतिष्ठा । इज़्ज़त । आबरू ।

हुरमुज़–संज्ञा पुं० (फा०) सौर मासका प्रथम दिन । इस दिन यात्रा करना और नये वस्त्र पहनना शुभ समझा जाता है ।

हुरूफ़–संज्ञा पुं० दे० "हरफ़ ।"

हुलिया–संज्ञा पुं० (अ० हुलियः) १ आभूषण । गहना । २ वह बढ़िया वस्त्र जो राजाओं आदिके दरबारमें लोगोंको पहननेके लिये मिलते हैं । खिलअत । ३ रूप-रेखा । चेहरेकी बनावट । मुहा०–**हुलिया होना** = सेनामें नाम लिखा जाना । **हुलिया लिखाना**= भागे हुए अपराधी या खोये हुए व्यक्तिकी रूप-रेखा पुलिसमें लिखाना ।

हुवैदा–वि० (फा०) प्रकट । स्पष्ट ।

हुशियार–वि० दे० "होशियार ।"

हुशियारी–दे० "होशियारी ।"

हुसूल-संज्ञा पुं० (अ०) हासिल । फायदा । लाभ ।

हुसेन–संज्ञा पुं० दे० "हुसैन ।"

हुसैन संज्ञा पुं० (अ०) मुसलमानोंके तीसरे इमामका नाम जो यज़ीदकी आज्ञासे करबला नामक स्थानके युद्धमें मारे गये थे । मुहर्रम इन्हींकी मृत्युके शोकमें मनाया जाता है ।

हुसैन-बन्द-संज्ञा पुं० (अ०+फा०) चाँदीकी बिना नगीनेकी छो

अंगूठियाँ जो शीया लोग अपने बच्चोंके हाथोंमें पहनाते हैं ।

हुस्न–संज्ञा पुं० (अ०) १ उत्तमता। भलाई। खूबी । २ सौन्दर्य । खबसूरती । जैसे–हुस्ने इन्तजाम । हुस्ने तदबीर ।

हुस्न-तलब–संज्ञा पुं० (अ०) उत्तम या अच्छे संकेतसे कोई वस्तु पानेकी इच्छा प्रकट करना । जैसे–किसीकी कोई सुन्दर वस्तु देखकर कहना–वाह ! यह कैसी बढ़िया है ।

हुस्न-दान–संज्ञा पुं० (अ०+फा०) एक प्रकारका छोटा पान-दान ।

हुस्न-परस्त–वि० (अ०+फा०) (संज्ञा हुस्न-परस्ती) हुस्न या सौन्दर्यकी उपासना करनेवाला ।

हुस्ने मतला–संज्ञा पुं० (अ०) हुस्ने मतलऽ) गजलमें मतले या पहले शेरके बाद दूसरा ऐसा शेर जो मतलेकी ही तरह हो और जिसके दोनों चरणोंमें अनुप्रास हो ।

हुस्ने-महफ़िल–संज्ञा पुं०(अ०) एक प्रकारका हुक्का ।

हू–संज्ञा पुं० (अ०) १ "अल्लाहहू"-का संक्षिप्त रूप । ईश्वरका एक नाम जो प्रायः ग्रन्थों या पृष्ठोंके ऊपर शुभ समझकर लिखा जाता है । २ डर। भय । यौ०–**हूका आलम** ऐसा उजाड़ जहाँ कहीं कुछ भी न दिखाई दे ।

हूत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ मत्स्य । मछली । २ मीन राशि ।

हूदा–वि० (फा० हूदः) ठीक । दुरुस्त । यौ०–**बे-हूदा**=१ जो ठीक न हो । २ वाहियात । उजड्ड ।

हूर–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ गौरवर्णकी वह स्त्री जिसकी आँखोंकी पुतलियाँ और सिरके बाल बहुत काले हों । २ स्वर्गमें रहनेवाली सुन्दरियाँ । अप्सराएँ । वि०–बहुत अधिक सुन्दर ।

हू हक़–संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वरका भजन या स्मरण । मुहा०–**हू-हक़ हो जाना** । नष्ट हो जाना । जाना ।

हेच–वि० (फा०) १ तुच्छ । हीन । २ बहुत थोड़ा । ३ निरर्थक । निकम्मा । ४ घृणित । अव्य०–कोई । कुछ ।

हेच-कस–वि० (फा०) निकम्मा । निरर्थक । अयोग्य ।

हेचकारा–वि० दे० "हेचकस ।"

हेच-मदाँ–वि० (फा०) (संज्ञा हेच-मदानी) जो कुछ न जानता हो । अनभिज्ञ । अज्ञान ।

हेमा–संज्ञा स्त्री० (फा० हेमः) जलानेकी लकड़ी । ईंधन ।

हैकल–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ वह मूर्ति जो किसी ग्रहके नामपर बनाई जाय। २ मन्दिर। ३ शोभा । ४ यन्त्र । तावीज़ । ५ गलेमें पहननेका एक गहना । हुमायल । हुमेल । हमेल । ६ डील-डौल । ७ चिह्न । लक्षण ।

हैज़–संज्ञा पुं० (अ०) स्त्रियोंका मासिक धर्म ।

हैजा–संज्ञा स्त्री० (अ०) युद्ध ।

हैज़ा–संज्ञा पुं० (अ० हैजः) दस्त और क़ैकी बीमारी । विसूचिका ।

हैजान–संज्ञा पुं० (अ०) १ आवेश । जोश । २ तेज़ी । वेग ।

हैज़ी-वि० (अ० हैज) १ हरामी । दोगला । वर्णसंकर । २ दुष्ट ।

हैज़ुम–संज्ञा स्त्री० (फा०) जलानेकी सूखी लकड़ी । ईंधन ।

हैफ़-संज्ञा पुं० (अ०) १ अफ़सोस । दुःख । २ अत्याचार । ज़ुल्म ।

हैबत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ डर । भय । २ आतंक । रोब । धाक ।

हैबत-ज़दा–वि० (अ०+फा०) भयभीत । डरा हुआ ।

हैबत-नाक-वि० (अ०+फा०) भयानक । भीषण । डरावना ।

हैयत–संज्ञा स्त्री० दे० "हइयत।"

हैरत–संज्ञा स्त्री० (अ०) आश्चर्य ।

हैरान––वि० (अ०) (संज्ञा हैरानी) १ आश्चर्यसे स्तब्ध । चकित । भौंचक्का । २ परेशान । व्यग्र ।

हैरानी–संज्ञा स्त्री० (अ० हैरान) हैरान होनेकी क्रिया या भाव ।

हैवान–संज्ञा पुं० (अ०) १ प्राणी । जीव । २ पशु । जानवर । ३ मूर्ख ।

हैवान-नातिक़–संज्ञा पुं० (अ०) बोलनेवाला पशु अर्थात् मनुष्य ।

हैवान-मुतलक़–संज्ञा पुं० (अ०) १ पूरा पशु । निरा जानवर । २ बहुत बड़ा मूर्ख ।

हैवानियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ पशुता । पशुत्व । जानवरपन २ मूर्खता । बेवकूफ़ी ।

हैवानी–वि० (अ०) हैवानोंका-सा । पशुओं जैसा ।

हैस-बैस–संज्ञा स्त्री०(अ०) लड़ाई । झगड़ा । तकरार ।

हैसियत–संज्ञा स्त्री० (अ०) १ योग्यता । सामर्थ्य । शक्ति । २ वित्त । बिसात । आर्थिक दशा । ३ श्रेणी । दरजा । ४ धन दौलत ।

हैसियत-उरफ़ी–संज्ञा स्त्री० (अ०) बाहरी और बनी हुई प्रतिष्ठा ।

हैहात–अव्य० (अ०) १ दूर हो । हाय । अफ़सोस ।

होश-संज्ञा पुं० (फा०) बोध या ज्ञानकी वृत्ति । चेतना । चेत । यौ०--**होश व हवास**=चेतना और बुद्धि । मुहा० **होश उड़ना या जाता रहना**=भय या आशंकासे चित्त व्याकुल होना । सुध-बुध भूल जाना । **होश करना**=सचेत होना । बुद्धि ठीक करना । **होश दंग होना**=चित्त चकित होना । आश्चर्यसे स्तब्ध होना । **होश सँभालना** = अवस्था बढ़नेपर सब बातें समझने-बूझने लगना । सयाना होना । **होशमें आना**=चेतना प्राप्त करना । बोध या ज्ञानकी वृत्ति फिर लाभ करना । **होशकी दवा करो**=बुद्धि ठीक करो । समझ बूझकर बोलो । **होश ठिकाने होना**=१ बुद्धि ठीक होना । भ्रांति या मोह दूर होना । २ चित्तकी अधीरता या व्याकुलता मिटना । ३ दंड पाकर भूलका पछतावा होना । ४ स्मरण । सुध ।

याद। मुहा०—होश दिलाना=याद दिलाना। ५ बुद्धि। समझ।

होशियार—वि० (फा०) १ चतुर। समझदार। बुद्धिमान्। २ दक्ष। निपुण। ३ सचेत। सावधान। ४ जिसने होश सँभाला हो। सयाना। ५ चालाक। धूर्त।

होशियारी—संज्ञा स्त्री० (फा०) १ समझदारी। चतुराई। २ निपुणता। कौशल। ३ सावधानी।

हौआ—संज्ञा स्त्री० दे० "हव्वा।"

हौज़—संज्ञा पुं० (अ०) पानी जमा रहनेका चहबच्चा। कुंड।

हौदज—संज्ञा पुं० (अ०) १ हाथीकी पीठपर रखी जानेवाली अम्मारी। हौदा। २ ऊँटकी पीठपर रखा जानेवाला कजावा।

हौल—संज्ञा पुं० (अ०) १ डर। भय। २ विकलता। घबराहट।

हौल-ज़दा—वि० (अ०+फा०) १ डरा हुआ। २ घबराया हुआ।

हौल-दिल—संज्ञा पुं० (अ०+फा०) कलेजेकी धड़कनका रोग।

हौल-दिला—वि० (अ० हौल+फा० दिल) डरपोक। कायर।

हौल-नाक—वि० (अ०+फा०) भयानक। भीषण। डरावना।

हौवा—संज्ञा स्त्री० पुं० दे० 'हव्वा।'

हौसला—संज्ञा पुं० (अ० हौसलः) १ पक्षीका पेट। २ साहस। हिम्मत ३ समाई। सामर्थ्य। ४ कामना। आकांक्षा। अरमान।

समाप्त

*